दस्तावेज़ : मंटो

कहानियाँ

पाताल
नया कानून से फुँदने तक
बराए नाम

सआदत हसन मंटो

दस्तावेज़

1

CIFTED BY

चयन, संयोजन एवं परिचय

बलराज मेनरा, शरद दत्त

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
1-बी, नेताजी सुभाष मार्ग,
नई दिल्ली-110 002
माइस कालिज के सामने, पटना-800 006

प्रथम सस्करण · 1963

मूल्य
का पूरा सैट रु 1000 00

आवरण नद कत्याल

पाठ्य भाग मेहरा आफसेट प्रेस, चाँदनी महल, नई दिल्ली-110 002 मे और आवरण एवं चित्र अभिषेक प्रिंटिंग सर्विस, असारी रोड, नई दिल्ली-110 002 मे मद्रित

मोपासाँ के नाम
सौ बरस पहले जिसके बस जिस्म को मौत आई थी

अनुक्रमणिका

→

मंटो – 1954

जहाँ मंटो ने आखिरी साँस ली—31, लक्ष्मी मैंशन, लाहौर

लाहौर का पागलखाना
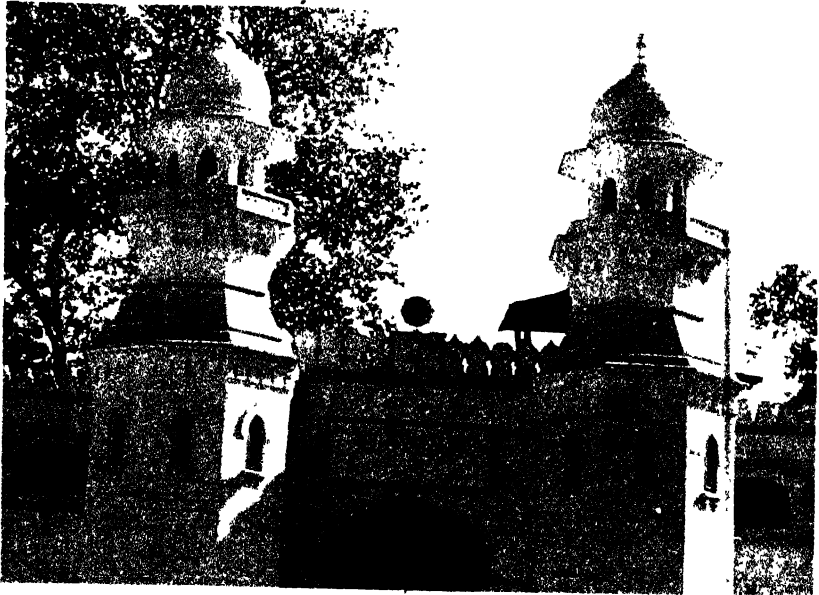
मग् कोचवान
का ताँगा

वो बाजार, लाहौर

میری قبر کا کتبہ
یہ
لوح
سعادت حسن منٹو
کی
قبر کی ہے
جو اب بھی سمجھتا ہے کہ اس کا نام
لوحِ جہاں پہ
حرفِ مکرر نہیں تھا
(منٹو)
پیدائش ۱۱ مئی ۱۹۱۲ء وفات ۱۸ جنوری ۱۹۵۵ء

कत्बा

पहला शब्द

सच के कई पहलू होते हैं लिबास, वज़अ-कतअ, बातचीत, लेखन, भाषण, रोजमर्रा की जिंदगी के तौर-तरीके, विचार, आस्थाएँ और मूल्य।

सौंदर्यशास्त्रीय दृष्टिकोण, छंद और भाषाई ढाँचा साहित्यकार के लिए सच का ही एक पहलू है। मानव-इतिहास में इस सच ने कई रूप धारण किए हैं--इंकार, विरोध, विद्रोह, स्वीकार, स्वीकार्यता, समर्पण।

सदियाँ बीती जब प्रागैतिहासिक काल की धुंध में खोए हुए आदमी ने ऊँचे पर्वतों के पीछे जंगलों में आकाश की ओर लपकती आग को देखा, और शोर की जबान में जो लफ़्ज़ उस तक पहुँचे वे अस्पष्ट थे। उसने सोचा हो न हो, यह रहस्यमयी ज्वाला किसी ऐसी सच्चाई की त्रासदी है जो गहरे भेदों की कोख में छिपी हुई है। उसने इसे कुछ नाम दिए। उसने अपने अनुभव को सच्चाई की सतह तक लाने के जतन किए। लेकिन कई सदियों बाद जब वह सतह दरियाफ्त हुई तो पता चला कि अनुभव सच्चा था, मगर उसकी बुनियादें जिस यथार्थ पर कायम थीं वह एक फरेब के सिवा और कुछ नहीं था।

सबसे बड़ा सच समय है,
और आदमी
समय के निर्धारण और उसके हिसाब-किताब का बुनियादी साधन है।

समय के साथ कितनी ही सचाइयाँ फरेब बन जाती हैं और कितने ही सपने सच्चाई में ढल जाते हैं। समय न तो अँधेरों का सिलसिला है, न इतिहास और सभ्यता के किसी अनदेखे रास्ते पर एक अंधी दौड़। समय एक पारलौकिक, यथार्थ से परे, दैवी शक्ति भी नहीं है।

इन सबके विपरीत
समय एक तलाश है, संज्ञान है, विजन है,
और एक कुरुक्षेत्र या कर्मभूमि है।

समय का ओर-छोर, उसके निर्धारण की कोई सीमा अगर कायम की जा सकती है, और उसे एक नाम दिया जा सकता है, तो वह दीवार, वह सीमा, वह नाम आदमी है।

मानव-इतिहास ने समय की जिन धागाओं को, उन धागाओं से चिपकी हुई जिन मानव-छायाओं को, चिंतन की जिन लहरों और फुसफुसी आस्थाओं और भ्रामक धारणाओं और मूल्यों को रद्द किया, उनकी हैसियत अतीत के गड्ढे मे पडे कूड़े-करकट के ढेर से अधिक कुछ भी नही। इस ढेर मे उन इसानो के चेहरे भी दिखाई देते हैं, जिन्होंने दूसरे इसानो से जानवरो जैसा सुलूक किया। सोने और चाँदी और सगमरमर और पत्थरों के वो बुत और महल-दोमहले भी दिखाई देते हैं जिनकी नींवो मे इसानी लहू की पाइपलाइन बिछी हुई थी। इस ढेर में वे सामाजिक विद्वेष और प्रतिरक्षात्मक कार्रवाइयाँ, वे सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक, समष्टिगत और व्यष्टिगत दृष्टिकोण भी नजर आते हैं जो फरेब से भरे और झूठे थे। इस ढेर मे वे आदर्श भी छिपे हुए नजर आते हैं, जिनका इंस्पिरेशन सिर्फ क्षुद्र स्वार्थ या हितसाधन था।

संस्था, अपने-आपमे, एक निष्पक्ष, न्यूट्रल और सीधा-सादा मासूम-सा शब्द है। संस्थाएँ शैक्षिक भी होती हैं, सामाजिक, सांस्कृतिक और मानसिक भी। लेकिन जब किसी सस्था से किसी एक व्यक्ति, राष्ट्र, वर्ग या विचारधारा की रक्षा का काम जुड जाता है, या सस्था जब विद्वेष और सकुचित दृष्टि या रूढि का चोला पहन लेती है, या जब किसी सस्था से व्यक्तिगत या सामाजिक सत्ता का हित जुड जाता है, उस समय सस्थाएं षड्यत्र भी बन जाती हैं और दूसरे इसानो के लिए एक कहर भी। फिर उनकी निगाह में उस इकाई की कोई कद्रो-कीमत नही रह जाती जिसमे मनुष्य की सत्ता, मानव-जीवन, सभ्यता और सस्कृति की एकता परिभाषित होती है।

आदमी सच्चाई है, कोई अमूर्त्त इकाई नही कि अपने स्वार्थ या अपने व्यक्तिगत और राष्ट्रीय हितों की खातिर उसके साथ मनमानी की जा सके। ऐसी तमाम संस्थाएँ जिनका निर्माण कुछ व्यक्तियो, वर्गो, सप्रदायो की सुरक्षा को मजबूत बनाने के लिए या कुछ उपयोगी विद्वेषों की पुष्टि के लिए किया जाता है—उन्हे धर्म का नाम दिया जाए या राजनीति का—सिर्फ पाखड हैं। ऐसी सस्थाएँ चाहे समाज-सुधार के नाम पर स्थापित की जाएँ, चाहे किसी एक समूह या समुदाय के कल्याण के लिए, उनके उद्देश्य सीमित होते हैं। उद्देश्यो का सीमित होना भी कोई बुराई नहीं, बशर्ते कि उनका पोषण केवल इसलिए न किया जा रहा हो कि उससे किसी व्यक्ति, या आस्था, या विचारधारा की साप्रदायिकता की जडे मजबूत हों।

हम तटस्थ रहकर आदमी को उसके अधिकार नही दिला सकते। समय के हर मोड पर हमे अपनी निर्णय-शक्ति, अपनी चयन-दृष्टि का व्यवहार करने की जरूरत पडती है। हमे सच्चाई और फरेब, उजाले और अँधेरे के बीच किसी न किसी सीमा की तलाश करनी होती है। जिदगी एक जटिल यौगिक सही, मगर हमे उसकी संयोग-क्रिया के तत्वों को अलग करके, उन्हें पहचानकर कुछ फैसले करने होते हैं। इन्हीं फैसलों पर मानव-संस्कृति की

उन्नति, उसकी दिशा और गति का निर्धारण निर्भर होता है।

जिस सुबह फिरंगी व्यापारियों ने इस उपमहाद्वीप की धरती पर कदम रखा था, उनके सरो पर एक सीमित, स्वघोषित, राष्ट्रीय लक्ष्य का सायबान था। वे उस सायबान को आकाश में बदलना चाहते थे, और यह भी चाहते थे कि वह आकाश धरती के उस छोटे से टुकडे के लिए हो जिसका नाम बर्तानिया है। वे एशिया मे, अफ्रीका में, पूरे दक्षिण-पूर्व मे उसी छोटे से टुकडे के विस्तार के लिए साधन ढूँढते फिर रहे थे। कार्ल मार्क्स के शब्दो में, अगर वे इतिहास के अचेतन उपकरण बन गए, तो यह कारनामा उनका नही, बल्कि उस युग के कुछ ऐसे मानसिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोणों का था जिनकी लगाम उन्होने मजबूती से पकड रखी थी। अपने उद्देश्यो की पूर्ति और उन्नति के लिए उन्होने शिक्षा और चिंतन के नाम पर कुछ ऐसे विचारो, आदर्शों, जीवन की कुछ ऐसी शैलियो को प्रचलित करना चाहा जो उनके फरेब का मुलम्मा बन सके। जब राजनीतिक सत्ता हाथ आ गई तो उनके वे ही विचार, आदर्श और शैलियाँ कानून बन गई।

यह सच है कि कानून सामाजिक ढाँचे और सामाजिक संगठन को बरकरार रखने के लिए अपरिहार्य होते हैं। लेकिन कानून बनाए जाते हैं जीवन और चिंतन और सभ्यता के द्वंद्ववाद को सामने रखकर, और उनके समष्टिगत उद्विकास के साथ-साथ कानूनो मे कुछ परिवर्तन भी लाए जाते हैं। बीसवी शताब्दी के नवे दशक में किसी नैतिक अपराधी को पत्थर मारना, किसी सामाजिक विद्रोही को सरे-आम कोडे लगाना बर्बरियत और वहशत के उस युग में साँस लेने के समान है जो इतिहास की धुंध मे कब का गायब हो चुका है—

हम अतीत से अपने-आपको अलग नही कर सकते,
मगर वर्तमान
कुली नहीं कि अतीत के बोझ को उठाए,
हाँफता-काँपता, भविष्य की ओर बढ़ता रहे।
वे लोग जिनके कंधे इस बोझ के नीचे दबे रहते है—
उनका एक अतीत होता है,
उनका एक वर्तमान,
मगर उनका कोई भविष्य नही होता।

उनका भविष्य इसलिए नही होता कि उनके वर्तमान की चारदीवारी मे सिर्फ एक दरवाजा खुला होता है—पीछे का दरवाज़ा। इसी दरवाजे से उन तक अतीत की दुर्गन्ध, अतीत के जंग खाए हुए नैतिक और सामाजिक नियमो की बुझती हुई आवाज़ें पहुँचती हैं।

साहित्य की रचना करनेवाला, जो एक साथ तीन युगो—अतीत, वर्तमान और भविष्य—की डोर का सिरा अपनी पकड मे रखता है, उन लोगों की समझ मे नहीं आ सकता

जो समय को केवल अतीत और वर्तमान के दायरो मे सिमटा हुआ और ठहरा हुआ देखते हैं। वे इस भ्रम के शिकार, अपनी खुशफहमियो की गत पर नाचते रहते हैं कि राजनीतिक या सामाजिक सत्ता ने उन्हें अपने समय का स्वामी बना दिया है, मगर समय को पकडने की कोशिश या बचकानी इच्छा हवा को मुट्ठी मे कैद करने के समान है। समय आगे बढ जाता है क्योंकि समय सिलसिला है—एक ऐसा सिलसिला जिसका अत कही नहीं।

समय निरतरता है,
एक अतहीन सिलसिला, जिसकी माला मे
व्यक्ति और घटनाएँ और विचार
मनकों की तरह पिरोए हुए हैं
समय एक शक्ति है, कभी न समाप्त होनेवाली।
इस शक्ति को खुराक मिलती है
जीवन के उस द्वद्ववाद मे जो विकासोन्मुखी है—
समय,
नाम और स्थान और भाषा और आस्था और
प्रतिरक्षाओं के शिकजो मे मुक्त,
हवा के झोंके की तरह
एक स्थायी और शाश्वत लहर है
जो एक साथ दसो दिशाओ मे सफर करती है,
और इस सफर का सिलसिला तो अटूट है ही।

मटो एक आदमी था।

वह एक विज़न, एक सज्ञान, एक तलाश, एक शक्ति, हवा के एक झोके की तरह चिंतन की एक शाश्वत लहर भी था। इस लहर के सफर का सिलसिला अटूट है।

वह आज भी हमारे साथ है,
और कल भी
वे जो हमारे बाद आएँगे,
उसे अपने साथ पाएँगे।

मटो यह जानता था कि आदमी सबसे बडा सच है, और सच अटूट होता है। इसलिए मंटो ने आदमी को खानों मे बाँटने का कोई जतन नही किया। वह जानता था कि आदमी अपने-आपमे एक ऐसी सृष्टि है, एक माइक्रोकॉज्म, जिसमें समय के तमाम आयाम अपना केंद्रबिंदु पाते हैं।

इस सृष्टि में अँधेरे और उजाले की लड़ाई कितने युगों से जारी है। मंटो ने इस लड़ाई का दृश्य उन आदमियों के हृदय के कुरुक्षेत्र में भी देखा जो अँधेरों के वासी थे। हमारे परांपराबद्ध और नैतिक मूल्यों के टिमटिमाते हुए दिये, जिन्होंने अंधे क़ानूनों को जन्म दिया था, उस अँधेरी दुनिया तक उन दियों की रौशनी पहुँचने में असमर्थ थी। शायद इसीलिए मंटो उर्दू भाषा का सबसे ज़्यादा बदनाम साहित्यकार है, जिसे सबसे ज्यादा गलत समझा गया। कानून अंधे थे, मगर वे आँखें जिनसे फ़िरंगी हुकूमत या खुदा की बस्ती के तथाकथित बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, नैतिक उत्तरदायित्व की झूठी और पाखंडपूर्ण धारणा का झंडा ऊँचा करनेवाले नागरिकों तथा साहित्यिक पत्रिकाओं के सपादकों के चेहरे सजे हुए थे, क्या वे आँखें भी अंधी थी? और वे साहित्य समालोचक, नैतिकता के वे प्रचारक जिन्होंने साहित्य को अपने विद्वेषों के प्रकाशन का एक आसानी-से-उपलब्ध माध्यम समझ रखा था, और जो लकडी की तलवारो से मंटो का सर कलम करने की धुन में मगन रहे, आखिर वे क्या देख रहे थे?

यह सवाल हमारा नही, और न ही नवयुग के सांस्कृतिक मूल्यो का है।

यह सवाल मंटो की प्रताड़ित कहानियों, उन कहानियों के चरित्रो—

'काली शलवार' की सुलताना और खुदाबख्श और शंकर और मुख्तार,

'धुआँ' के मसऊद और कुलसूम,

'बू' के रणधीर और बेनाम घाटन लडकी,

'ठडा गोश्त' के ईशर सिह और कुलवंत कौर,

'खोल दो' की सकीना और सिराजुद्दीन,

और

'ऊपर, नीचे और दरम्यान' के मियाँ साहब, बेगम साहिबा, मिस सिन्नढाना, डाक्टर जलाल, नौकर और नौकरानी—

इन सबका है।

और इस सवाल का रुख सिर्फ उन अदालतों या इन्साफ की कुर्सी पर बैठे हुए उन इसानो की तरफ नहीं, जिन्होने मटो को मुजरिमो के कटघरे में खडा किया, बल्कि उन सामाजिक विद्वेषों की तरफ है जो सच के अस्तित्व से इंकार करने के आदी थे। यह सच मटो की अपनी कल्पना की उपज न था। यह सच हमारे सामाजिक ढाँचे की देन था। मटो ने सिर्फ़ यह किया कि इस सच पर चढे हुए गिलाफ अपने कलम की नोक से चाक कर दिए—इसलिए कि उसकी आँख पर्दों मे छिपी हुई सच्चाई को देखनेवाली आँख थी।

वह सच्चाई जिसे मंटो देख रहा था, हमारे सामाजिक जीवन का हिस्सा है। मंटो ने अपने संज्ञान की प्रयोगशाला में इन परिस्थितियों को एक नए, धृष्टतापूर्ण वस्तुपरक परिप्रेक्ष्य में देखने की कोशिश की। यह वस्तुपरकता भी अपने-आपमे एक बहुत कडवा सच था; मटो

के युग तक उर्दू के किसी भी दूसरे कहानीकार ने इस सच को अपना अनुभव नहीं बनाया था। इसीलिए वह सच, जो हमारे सामाजिक जीवन का एक अंग था, हमारे समाज के लिए एक अनहोनी वारदात बन गया।

मंटो का क़ुसूर यह था कि उसने एक ऐसे सच के चेहरे से नक़ाब उठाई जिसे देखने की हिम्मत हमारा समाज अपने-आपमे पैदा नहीं कर सका। सो मंटो और उसके समाज की लडाई हौसलामंदी और बुजदिली की लडाई है।

समाज के पास कानून के हथियार थे, और मंटो के पास एक साहित्यकार का क़लम। यह लडाई इस तरह हुई कि हमारा समाज एक साहित्यकार से युद्ध के नियमो की एक सिरे से अनदेखी करके उस पर हावी होने की कोशिश करता रहा। और मंटो की मजबूरी यह थी कि उसे एक साथ दो जिम्मेदारियाँ निभानी थी—एक तो समाज के एक ऐसे होशमद और सच्चाई को पहचाननेवाले नागरिक की जिम्मेदारियाँ जो अपनी आँख पर समाज की दी हुई ऐनक लगाए बिना वास्तविकता को अपनी नंगी आँख से देखने की कोशिश करता है; दूसरी वे जिम्मेदारियाँ जो एक कहानीकार के रूप में उसने अपनी इच्छा और चुनाव से स्वीकार की थी। मंटो अगर चाहता तो अपने-आपको एक सुधारगृह का प्रबंधक बना बैठता और उन नंगी सच्चाइयो को जो उसकी नंगी आँखो की पलको पर थीं, कुछ ऐसे दाँव-पेच से बयान करता कि बात सिरे से बदल जाती। आखिर रंडियो और नैतिक अपराधियो और यौन के मामले मे भटके हुए पात्रों की कहानियाँ उसके अलावा उर्दू के दूसरे कहानीकारों ने भी तो लिखी है!

मंटो और दूसरो मे सबसे बडा फर्क यही था कि मंटो कडवी सच्चाई को मीठे फरेबो के कैप्सूल मे बंद नहीं करता। वह सच्चाइयो का रिपोर्टर नही था, और उसे यह गुर भी आता था कि एक सच्चाई, जो हमारे सामाजिक जीवन का हिस्सा हो, उसे एक रचनात्मक सत्य किस तरह बनाया जाए। सो उसने पत्रकारिता के बजाय साहित्य का रास्ता चुना, और उन सच्चाइयो को एक ऐसी दुनिया मे खींच लाया जिसकी चौहद्दी मे सिर्फ उसका सिक्का चलता था। वह दुनिया उसकी कला की दुनिया थी—एक ऐसी दुनिया जिसमें उसकी कल्पनाओ, उसके शब्दों और उसके कलाकारवाले विजन की हुक्मरानी थी।

वे साहित्यकार जो इस दुनिया मे हर तरह की मनमानी को उचित समझते हैं, अपने साथ सच्चे हो तो हो, उस समाज के साथ सच्चे नही रह सकते जो उन कहानियो को एक तार्किक और वस्तुगत आधार प्रदान करता है। सच्चाई की इन दोनो सतहों पर एक साथ सफर सिर्फ इस सूरत मे मुमकिन हो सकता है जब वह आदमी जो कहानीकार है, उन आदमियों को जो उसकी कहानियो के पात्र बनते है, बराबर की सतह पर देख सके। इसके लिए कहानीकार को अपनी कल्पित ऊँचाइयो से उतरकर गदी गलियो, अँधेरी बस्तियो और ठुकराए हुए लोगों को सीने से लगाना पडता है ताकि वे अपने दिल की धडकनों मे दूसरो के दिल की

धड़कन का सुराग़ भी पा सकें।

मंटो ने अपनी कला की दुनिया के चारों ओर कोई दीवार खड़ी नहीं की। इसलिए उस तक वे भटके हुए, बहके हुए, बुरे और ठुकराए हुए पात्र भी आज़ादी से पहुँच जाते हैं जिनके लिए हमारे साहित्य, समाज और हमारे रूढ़िग्रस्त सामाजिक मूल्यों ने अपने दरवाजे बद कर रखे थे। उन्होंने जो एक दरवाजा खुला छोड़ रखा था वह बैकडोर था। इस दरवाजे से प्रवेश की सुविधा सिर्फ उन मूल्यों और मानदंडों और परंपराओं को प्राप्त थी जिनका जन्म अतीत की कोख से हुआ था।

और मंटो,
वह एक साथ तीन युगो की दिशा देख रहा था—
अतीत, वर्तमान और भविष्य,
क्योंकि जिस तरह
समय की इकाई और उसका सिलसिला अटूट और अंतहीन है,
उसी तरह
आदमी भी एक अटूट सच्चाई है।

बलराज मेनरा, शरद दत्त

पाताल

Long is the way
And hard, that out of hell leads upto light.
John Milton

पाताल

"हर शहर मे बदरूएँ[1] और मोरियाँ मौजूद हैं जो शहर की गदगी को बाहर ले जाती हैं—हम अगर अपने मरमरी गुस्लखानो की बात कर सकते है, अगर हम साबुन और लैवेंडर का जिक्र कर सकते हैं तो उन मोरियो और बदरूओ का जिक क्यो नही कर सकते जो हमारे बदन का मैल पीती हैं।"

मंटो

अफसानानिगार और जिसी मसाइल (कहानीकार और यौन-समस्या) के शीर्षक से बात करते हुए मटो ने कहा था "नीम के पत्ते कडवे सही, मगर खून जरूर साफ करते हैं " लेकिन मटो ने न तो कभी मसीहाई का दावा किया, न कहानी लिखनेवालो पर यह बोझ डाला कि बुरे लोगो को वे अच्छाई का रास्ता दिखाएँ। यह रवैया जिस मानसिक श्रेष्ठता की सतह पर सामने आता है, मटो ने अपनी सृजन-शक्ति से परिचित होते हुए भी स्वय को उस सतह से हमेशा दूर रखा। उसका कहना था "हम मर्ज बताते हैं, लेकिन दवाखानो के मुहतमिम (प्रबधक) नहीं हैं ।" सो उसने अपने कर्म की सीमा निर्धारित कर ली और सुधारक या निर्माता की भूमिका से अलग, साहित्यकार के रूप मे अपनी गतिविधियो मे सतुष्ट रहा।

पारपरिक नैतिकता ने मनुष्यो और मानवीय अनुभवो की जो श्रेणियाँ बना रखी थी, और हमारे कुछ सफल लिखनेवाले भी अँधेरे और उजाले, नेकी और बदी, अच्छे लोगो और बुरे लोगो के जिस विभाजन मे विश्वास रखते थे, उसे सृजन की सतह पर एक तरह की जाति-प्रथा का नाम दिया जा सकता है।

हमारे सास्कृतिक और रचनात्मक इतिहास मे मटो की विशिष्टता यह है कि उसने सबसे पहले ऐसे चरित्रो की पहचान की और उनको समझने का बोझ उठाया, जिनसे साधारण लिखनेवाले बचकर चलने के आदी थे। मटो ने सबसे पहले यह देखने और दिखाने की कोशिश की कि कोठे पर बैठनेवाली कस्बी भी एक औरत होती है। यह औरत जीवन का जो ढर्रा अपनाती है वह उसका अपना चयन नही होता, समाज की सरचना भी अधिकाश स्थितियो में उसे इस राह पर लगाने की जिम्मेदार ठहरती है। अपराध और दड, अच्छाई

और बुराई की वे तमाम धारणाएँ जो सदियों से हमारे समाज में प्रचलित रही हैं, मंटो उन्हें रद्द करता है।

कोठे पर बैठनेवाली औरत को समाज ने कोई भी नाम दिया हो, किसी भी नाम से पुकारा हो, मंटो का सरोकार बहुत साफ़ है। मंटो की कस्बियाँ जिस्म का कारोबार करनेवाली वे औरतें हैं जो शुद्ध मानवीय सतह पर अपने ग्राहकों से संबंध स्थापित करती हैं और जिनकी मानवीयता का मर्म एक अमानवीय और अधोनैतिक परिवेश के माध्यम से निर्धारित होता है। इस तरह एक नैतिक आयाम स्वयं प्रकट हो जाता है। मंटो हमें बताता है कि शरीर का व्यापार अनिवार्यतः अस्तित्व के व्यापार का पर्याय नहीं होता।

मानवता से मंटो की प्रतिबद्धता इतनी गहरी और मजबूत थी कि किसी चरित्र के जीवन में पतन की कोई भी सीमा उस प्रतिबद्धता को कमज़ोर न कर सकी। जो लोग मंटो की कहानियों में विषय और अंतर्तत्व के चयन के आधार पर 'पतनशीलता' का तत्व ढूँढ़ निकालते हैं, उनकी साहित्यिक समझ के साथ-साथ उनकी इंसान की समझ भी संदिग्ध दिखाई पड़ती है। मंटो की चेतना में मनुष्यों की समानता की एक ताकतवर लहर उस चेतना की जीवनरेखा के रूप में हमेशा सक्रिय रही। मंटो जीवन के किसी भी अनुभव, मानव-अस्तित्व की किसी भी अभिव्यक्ति से न तो कभी भयभीत होता है, और न ही उससे घृणा और ऊब का प्रदर्शन करता है। इस दृष्टि से देखा जाए तो मंटो की समझदारी प्रगतिशीलता की पुरानी धारणा से अलग, एक नई परिभाषा की माँग करती है।

मुहम्मद हसन अस्करी ने कहा था :

> *"(मंटो) की दृष्टि में कोई भी मनुष्य मूल्यहीन नहीं था। वह हर मनुष्य से इस आशा के साथ मिलता था कि उसके अस्तित्व में अवश्य कोई-न-कोई अर्थ छिपा होगा जो एक-न-एक दिन प्रकट हो जाएगा। मैंने उसे ऐसे अजीब आदमियों के साथ हफ़्तों घूमते देखा है कि हैरत होती थी। मंटो उन्हें बर्दाश्त कैसे करता है! लेकिन मंटो बोर होना जानता ही न था। उसके लिए तो हर मनुष्य जीवन और मानव-प्रकृति का एक मूर्त रूप था; सो, हर व्यक्ति दिलचस्प था। अच्छे और बुरे, बुद्धिमान और मूर्ख, सभ्य और असभ्य का प्रश्न मंटो के यहाँ ज़रा न था। उसमें तो इंसानों को क़ुबूल करने की क्षमता इतनी अजीब थी कि जैसा आदमी उसके साथ हो, वह वैसा ही बन जाता था।"*

'पाताल' मंटो के लिए केवल पारंपरिक समाजशास्त्र और औपचारिक नीतिशास्त्र द्वारा परिकल्पित जनसंख्या का भाग है। मंटो अनुभव की इस सतह पर भी अपनी मानवता और अपने 'मरदूद-ओ-मक़हूर'[1] पात्रों की मानवता, दोनों से अपनी समझ का संबंध सुरक्षित रखता है।

---

1 ठुकराए हुए, कहर के शिकार।

लाइसेंस

अब्बू कोचवान बडा छैल-छबीला था; उसका ताँगा-घोडा भी शहर मे नंबर वन था; वह कभी मामूली सवारी नहीं बिठाता था; उसके लगे-बँधे गाहक थे, जिनसे उसको रोजाना दस-पंद्रह रुपए वसूल हो जाते थे, जो उसके लिए काफी थे—दूसरे कोचवानो की तरह नशा-पानी की उसे आदत नहीं थी, लेकिन साफ-सुथरे कपडे पहनने और हर वक्त बाँका बने रहने का उसे बेहद शौक था।

जब उसका ताँगा किसी सडक पर से घुँघरू बजाता हुआ गुजरता तो लोगों की आँखे खुद ब खुद उसकी तरफ उठ जातीं : "वह बाँका अब्बू जा रहा है देखो तो किस ठाट से बैठा है जरा पगडी देखो, कैसी तिरछी बँधी है"

वह लोगों की निगाहों से यह बाते सुनता तो उसकी गर्दन मे एक बडा बाँका खम पैदा हो जाता और उसके घोडे की चाल और ज्यादा पुरकशिश हो जाती; उसके हाथो ने घोडे की बागे कुछ इस अंदाज से पकडी होती, जैसे उनको पकडने की कोई जरूरत ही नही, ऐसा लगता, जैसे घोडा उसके इशारों के बगैर चला जा रहा है, जैसे घोडे को अपने मालिक के हुक्म की जरूरत ही नही, बाज़ औकात तो ऐसा महसूस होता कि अब्बू और उसका घोडा चन्नी, दोनो बस एक हैं, बल्कि सारा ताँगा एक हस्ती है—और वह हस्ती अब्बू के सिवा और कौन हो सकती थी।

वे सवारियाँ, जिनको वह कुबूल नहीं करता था, दिल ही दिल मे उसको गालियाँ देती, बाज़ बददुआएँ भी देती, 'खुदा करे इसका घमंड टूट जाए खुदा करे इसका ताँगा-घोडा दरिया मे जा गिरे'

उसके होंठो पर, जो हल्की-हल्की मूँछों की छाँव मे रहते थे, खुद-एतमाद मुसकराहट नाचती रहती; उसको देखते ही कई कोचवान जल-भुन जाते—उसकी देखादेखी चंद कोचवानों ने इधर-उधर से कर्ज लेकर नए ताँगे बनवाए; ताँगो को पीतल के साजो-सामान से सजाया, फिर भी अब्बू के ताँगे-सी शान पैदा न हो सकी, और न ही उन्हे वह गाहक नसीब हो सके, जो अब्बू और उसके ताँगे-घोडे के शैदाई थे।

एक दिन दोपहर को अब्बू दरख्त की छाँव में ताँगे पर बैठा ऊँघ रहा था कि एक आवाज उसके कानो में भिनभिनाई; उसने आँखे खोलकर देखा एक औरत ताँगे के बंब के पास खडी थी।

उसने औरत को बमुश्किल एक नजर देखा, मगर औरत की तीखी जवानी एकदम उसके दिल मे खुब गई वह औरत नही, जवान लडकी थी, सोलह-सतरह बरस की, दुबली-पतली, लेकिन मजबूत, रग साँवला, मगर चमकीला, कानो मे चाँदी की छोटी-छोटी बालियाँ, सीधी माँग और सुतवाँ नाक, नाक की फुग पर एक छोटा-सा चमकीला तिल, लबा कुर्ता और नीला लाचा, सिर पर चदरिया।

लडकी ने कुँवारी आवाज मे पूछा "वीरा, टेशन का क्या लोगे?"

उसके होठो की मुसकराहट शरारत इख्तियार कर गई "कुछ नही!"

लडकी के चेहरे की सँवलाहट सुर्खी माइल[1] हो गई "क्या लोगे टेशन का?"

उसने लडकी को अपनी नजरो मे समोते हुए कहा "तुझसे क्या लेना भाग-भरिए चल आ, बैठ ताँगे मे।"

लडकी ने घबराए हुए हाथो से अपना ढका हुआ मजबूत सीना ढाँका "कैसी बाते करते हो तुम!"

वह मुसकराया "चल आ, अब बैठ भी जा जो तू देना चाहे, दे देना।"

लडकी कुछ देर सोचती रही, फिर पायदान पर पाँव रख ताँगे मे बैठ गई "चल जल्दी ले चल टेशन!"

उसने पीछे मुडकर देखा "बडी जल्दी है तुम्हे सोणिए!"

"हाए-हाए, तू तो " लडकी कुछ और कहते-कहते रुक गई।

ताँगा चल पडा और चलता रहा, कई सडके घोडे की सुमो के नीचे से निकल गईं।

उसके होठो पर शरारत-भरी मुसकराहट नाच रही थी लडकी सहमी हुई बैठी थी।

जब बहुत देर हो गई तो लडकी ने डरी हुई आवाज मे पूछा "टेशन नही आया अभी?"

"आ जाएगा तेरा-मेरा टेशन एक ही है।" उसने मानीखेज[2] अदाज मे जवाब दिया।

"क्या मतलब?"

उसने पलटकर लडकी की तरफ देखा और कहा "अल्हडिए, क्या तू इतना भी नही समझती कि तेरा-मेरा टेशन एक है उसी वक्त एक हो गया था, जब अब्बू ने तेरी तरफ देखा था तेरी जान की कसम, तेरा यह गुलाम झूठ नहीं बोलता।"

लडकी ने सिर पर पल्लू ठीक किया उसकी आँखें साफ बता रही थी कि वह अब्बू की बात का मतलब समझ चुकी है, उसके चेहरे से यह भी पता चलता था कि उसने अब्बू की बात का बुरा नही माना है।

वह कशमकश मे थी, दोनो का टेशन एक हो, या न हो, अब्बू बाँका सजीला तो है; क्या वह अपनी बात का पक्का भी है, क्या वह अपना टेशन छोड दे?

अब्बू की आवाज ने उसको चौंका दिया "क्या सोच रही है भागभरिए?"

घोडा मस्त खरामी से दुलकी चाल चल रहा था; हवा खुनुक थी; सडक के दो रूया[3] उगे हुए दरख्त भाग रहे थे और उनकी टहनियाँ झूम रही थी, घुँघरुओ की यक आहग झनझनाहट के सिवा और कोई आवाज नही थी।

वह गर्दन मोड़े लड़की के साँवले हुस्न को निगाहों मे चूम रहा था कुछ देर के बाद उसने घोड़े की बागें जँगले की सलाख़ के साथ बाँध दीं और उचककर पिछली सीट पर लडकी के साथ आन बैठा।

लड़की ख़ामोश रही।

उसने लड़की के दोनों हाथ पकड लिए . "दे-दे अपनी बागें मेरे हाथों मे!"

लड़की ने सिर्फ इतना कहा . "छोड़ भी दे मेरे हाथ " लेकिन दूसरे ही लम्हे वह अब्बू के बाज़ुओं में थी और उसका दिल जोर-ज़ोर से फडफडा रहा था।

अब्बू ने हौले-से प्यार भरे लहजे में कहा : "यह ताँगा-घोडा मुझे अपनी जान से ज़्यादा अज़ीज़ है कसम ग्यारहवे पीर की, मैं तांगा-घोडा बेच दूँगा और तेरे लिए सोने के कडे बनवाऊँगा ख़ुद फटे-पुराने कपडे पहनूँगा, लेकिन तुझे रानी बनाकर रखूँगा क़सम वहदुलशरीक[4] की, जिदगी मे यह मेरा पहला प्यार है तू मेरी न बनी तो मैं तेरे सामने अपना गला काट लूँगा " उसने लडकी को अपने बाज़ुओ के हलक़े से अलग किया "जाने क्या हो गया है मुझे चल तुझे टेशन छोड आऊँ।"

लड़की ने हौले-से कहा "नही अब तू मुझे हाथ लगा चुका है।"

उसकी गर्दन झुक गई . "मुझे माफ कर दे मुझसे गलती हो गई।"

"निभा लोगे इस गलती को ?"

लडकी के लहजे मे चैलेंज था, जैसे किसी ने अब्बू से कहा हो 'ले जाओगे अपना ताँगा उस ताँगे से आगे निकालकर ? "

उसका झुका हुआ सिर उठा, उसकी आँखे चमक उठी "भागभरिए " यह कहकर उसने अपने मजबूत सीने पर हाथ रखा "अब्बू अपनी जान दे देगा "

लड़की ने अपना दायाँ हाथ बढ़ाया . "तो यह ले मेरा हाथ।"

उसने लडकी का हाथ मजबूती से पकड लिया "क़सम अपनी जवानी की, अब्बू तेरा गुलाम रहेगा "

दूसरे रोज अब्बू और उस लडकी का निकाह हो गया।

नाम लडकी का इनायत, यानी नीति था और वह जिला गुजरात की मोचन थी।

वह अपने रिश्तेदारो के साथ आई थी; उसके रिश्तेदार स्टेशन पर उसका इंतजार करते ही रह गए और वह मुहब्बत की सारी मंजिलें तय कर गई।

अब्बू और नीति, दोनों बहुत ख़ुश थे न नीति ने चाहा, न अब्बू ने ताँगा-घोड़ा बेचा, न नीति के लिए सोने के कडे बने, लेकिन अब्बू ने अपनी जमा-पूँजी से नीति को सोने की बालियाँ ख़रीद दीं और कई रेशमी जोडे बनवा दिए नीति के लिए यह कम न था।

लिश-लिश करते हुए रेशमी लाचे में जब वह अब्बू के सामने आती तो अब्बू का दिल नाचने लगता . "कसम पंच तन पाक की, दुनिया में तुझ-सा सुंदर और कोई नहीं " वह नीति को अपने सीने के साथ लगा लेता : "नीति, तू मेरे दिल की रानी है।"

दोनो जवानी की मस्तियों मे गर्क़ थे दोनों को गाते, हँसते, सैरें करते और एक-दूसरे की बलाएँ लेते हुए एक महीना ही गुजर पाया था कि दफ़अतन एक रोज़ पुलिस ने अब्बू को

गिरफ़्तार कर लिया, नीति भी पकडी गई।

अब्बू पर अगवा का मुक़द्दमा चला कि नीति बालिग नहीं थी, नीति के अदालत मे साबत कदम रहने के बावजूद अब्बू को दो बरस की सजा हो गई।

जब नीति ने अदालत का हुक्म सुना तो वह अब्बू के साथ लिपट गई, उसने रोते हुए सिर्फ इतना कहा "मैं अपने माँ-बाप के साथ नही जाऊँगी तेरे घर में बैठकर तेरा इतजार करूँगी "

अब्बू ने उसकी पीठ पर थपकी दी " जीती रह मैंने ताँगा-घोडा दीने के सुपुर्द किया हुआ है उससे किराया वसूल करती रहना।"

नीति के माँ-बाप ने बहुत जोर लगाया, मगर वह उनके साथ न गई, थक-हारकर उन्होने नीति को उसके हाल पर छोड दिया।

नीति अकेली अब्बू के घर में रहने लगी हर शाम दीना उसे पाँच रुपए दे जाता, जो उसकी जरूरतों के लिए काफी थे, इसके अलावा कुछ थोडे-से रुपए उसने जमा भी कर रखे थे।

हफ्ते मे एक बार अब्बू से उसकी मुलाकात जेल मे होती, यह मुलाकात बहुत ही मुख़्तसर होती।

उसके पास जितनी जमा-पूँजी थी, वह उसने अब्बू को जेल में आसाइशें पहुँचाने में सर्फ़ कर दी एक मुलाकात मे अब्बू ने उसके बूच्चे कानो की तरफ देखा और पूछा "तेरी बालियाँ कहाँ गई नीति ?"

वह संतरी की तरफ़ देखकर मुसकराई : "गुम हो गईं कहीं !"

अब्बू ने कदरे-ग़ुस्से होकर कहा "तू मेरा इतना ख़याल न रखा कर मैं जैसे भी हूँ, ठीक हूँ।"

उसने कुछ न कहा और मुसकराती हुई चली आई कि मुलाकात का वक्त पूरा हो चुका था घर पहुँचकर वह बहुत रोई, घंटों आँसू बहाती रही उस मुलाकात मे उसने बडे जब्त से काम लिया था और मुसकराती रही थी, उसने महसूस किया था कि अब्बू की सेहत बुरी तरह गिर चुकी है; वह ग्रांडयील अब्बू घुल-घुलकर आधा रह गया है; वह उसे पहचान न सकी थी।

उसने सोचा 'अब्बू को मेरा गम खा रहा है जुदाई ने अब्बू की यह हालत कर दी है !'

गम, जुदाई, जेल, जेल का घटिया खाना, जेल की कडी मशक्कत, इतना कुछ तो उसको मालूम था, यह मालूम नहीं था कि दिक का मर्ज अब्बू को विरसे मे मिला है।

अब्बू का बाप अब्बू से कहीं ज्यादा ग्रांडयील था, लेकिन दिक ने उसे चद हफ्तो में कब्र के अंदर पहुँचा दिया था, अब्बू का बडा भाई कड़ियल जवान था, मगर ऐन जवानी में इस मर्ज़ ने उसे दबोच लिया था अब्बू इस हकीकत से गाफिल था।

जब वह जेल के हस्पताल में आख़िरी साँसे ले रहा था, उसने अफ़सोस भरे लहजे में नीति से कहा : "मुझे मालूम होता कि मैं इतनी जल्दी मर जाऊँगा तो कसम वहदुल-

शरीक की, तुझे कभी अपनी बीवी न बनाता मैंने तेरे साथ जुल्म किया है, मुझे माफ कर दे देख, मेरी एक ही निशानी है, मेरा ताँगा-घोडा, उसका खयाल रखना और चन्नी बेटे के सिर पर हाथ फेरकर कहना कि अब्बू ने प्यार भेजा है "

अब्बू मर गया, नीति का सबकुछ मर गया; इतनी जल्दी सबकुछ मर गया।

नीति हौसलेवाली औरत थी; उसने सदमा बर्दाश्त कर ही लिया वह तमाम दिन घर मे तन-तन्हा[7] पडी रहती।

शाम को दीना आता, पाँच रुपए उसके हवाले करता, उसे दम दिलासा देता और कहता : "भाभी, अल्लाह मियाँ के आगे किसी की पेश नही चलती अब्बू मेरा दोस्त ही नही, भाई भी था मुझसे जो हो सकेगा, खुदा के हुक्म से जरूर करूँगा "

जब नीति की इद्दत के दिन पूरे हो गए तो एक दिन दीने ने साफ-साफ लफ्जों में नीति से कहा कि वह उससे शादी कर ले नीति के जी मे आई कि वह दीने को धक्के मारकर बाहर निकाल दे, मगर उसने सिर्फ इतना कहा : "भाई, मुझे शादी नही करनी।"

उसी दिन से दीने के रवैये मे फर्क आ गया पहले वह बिला नागा शाम को पाँच रुपए दे जाता था, अब वह कभी चार रुपए देने लगा, कभी तीन कि बहुत मदा है, फिर वह दो-दो, तीन-तीन दिन गायब रहने लगा, बहाना यह कि बीमार था, इसलिए ताँगा जोत न सका; ताँगे का कोई कल-पुर्जा खराब हो गया था, मरम्मत के चक्कर मे सारा दिन बर्बाद हो गया।

जब पानी सिर से निकल गया तो नीति ने दीने से कहा "भाई दीने, अब तुम तकलीफ न करो ताँगा-घोडा मेरे हवाले कर दो।"

बडी लीतो-लाल[8] के बाद बिल-आखिर[9] दीने ने बादिलेनाख्वास्ता[10] ताँगा-घोडा नीति की तहवील[11] मे दे दिया।

कई दिन तक सोचते रहने के बाद नीति ने ताँगा-घोडा अब्बू के एक और गहरे दोस्त माँझे के सुपुर्द कर दिया, चद दिनो के बाद माँझे ने भी शादी की दरख्वास्त की; नीति ने इनकार किया तो माँझे की आँखे भी बदल गई थक-हारकर नीति ने ताँगा-घोडा एक अनजाने कोचवान के हवाले कर दिया; एक शाम वह अनजाना कोचवान पैसे देने आया तो नशे मे धुत था, उसने ड्योढी मे कदम रखते ही नीति पर हाथ डालने की कोशिश की; नीति ने उसको खरी-खरी सुनाई और घर से बाहर निकाल दिया।

नीति अजीब उलझन मे गिरफ्तार थी।

आठ-दस रोज से ताँगा-घोडा बेकार तबेले मे पडा हुआ था, घास-दाने का खर्च एक तरफ, तो तबेले का किराया दूसरी तरफ कोचवान थे कि कोई शादी की दरख्वास्त करता था, कोई उसकी इस्मत पर हाथ डालने की कोशिश करता था और कोई पैसे मार लेता था।

नीति सोच-सोचकर पागल हो गई एक दिन बैठे-बैठे उसे खयाल आया 'क्यों न ताँगा मै आप ही जोतूँ, आप ही चलाऊँ ' जब वह अब्बू के साथ घूमने के लिए निकला करती थी तो ताँगा वह खुद ही चलाया करती थी, शहर के रास्तो से भी वह वाकिफ थी।

उसने सोचा : 'लोग क्या कहेंगे ?'

फिर, ख़ुद ही उसने अपने सवाल का जवाब दिया : 'क्या औरतें मेहनत-मज़दूरी नहीं करतीं ? दफ़्तरों में जानेवाली औरतें कोयले चुननेवालियाँ घरों में बैठकर भी तो हज़ारों औरतें काम करती हैं हरज ही क्या है, फिर पेट तो किसी हीले से पालना ही है '

उसने कुछ दिन सोच-विचार किया और आख़िर में फैसला कर लिया कि ताँगा वह ख़ुद चलाएगी उसको ख़ुद पर पूरा ऐतमाद[12] था।

एक दिन अल्लाह का नाम लेकर वह तबेले पहुँच गई।

उसने पीतल का साजो-सामान चमकाया; घोडे को नहलाया-धुलाया और खूब प्यार किया; ताँगा जोतने लगी तो सारे कोचवान हक्का-बक्का रह गए अभी सारे कोचवान हैरतजदा ही थे कि वह अब्बू से दिल ही दिल मे प्यार की बाते करती हुई तबेले से बाहर निकल गई उसके हाथ रवाँ थे, जैसे वह ताँगा चलाने के फन पर हावी हो।

शहर मे एक तहलका बरपा हो गया कि एक खूबसूरत औरत ताँगा चला रही है, हर जगह इसी बात की चर्चा था लोग सुनते थे और उस वक्त का इतजार करते थे, जब नीति और उसका ताँगा उनकी सड़क पर से गुजरेगा।

शुरू-शुरू मे तो सवारियाँ नीति के ताँगे मे बैठने से झिझकी, मगर चद ही दिनो मे उनकी यह झिझक दूर हो गई अब एक मिनट के लिए भी नीति का ताँगा खाली न रहता, इधर एक सवारी उतरती, उधर दूसरी सवारी बैठ जाती; कभी-कभी तो सवारियाँ आपस मे लड़ने-झगड़ने भी लग जातीं कि किस सवारी ने पहले नीति को बुलाया था नीति को ख़ूब आमदन हो रही थी।

उसने महसूस किया कि ताँगा दिन-भर चलता रहता है, न उसको और न अब्बू के चन्नी को सुस्ताने का कोई वक़्त मिलता है उसने सोच-समझकर ताँगा जोतने के औकात मुक़र्रर[13] कर लिए; वह सुबह सात बजे से बारह बजे तक और दोपहर दो बजे से शाम छ बजे तक ताँगा जोतने लगी; अब आराम भी मिलने लगा, आमदन तो थी ही।

वह जानती थी कि बेशतर लोग सिर्फ उसकी कुर्बत हासिल करने के लिए उसके ताँगे में बैठते हैं; वह बेमतलब, बेमकसद उसे ताँगा इधर-उधर घुमाने-फिराने को कहते हैं, ताँगे में बैठकर आपस में गदे-गदे मजाक करते हैं; उसको सुनाने के लिए अजीब-अजीब बाते करते हैं।

वह अक्सर महसूस करती कि वह तो ख़ुद को नही बेचती, लेकिन लोग चुपके-चुपके उसे खरीद लेते हैं वह यह भी जानती थी कि शहर के सारे कोचवान उसको बुरा समझते हैं इन तमाम एहसासात के बावजूद वह मुज्तरिब[14] नहीं थी; अपनी ख़ुद एतमादी के बायस वह पुरसुकून थी।

एक दिन शहर की कमेटी ने उसको बुलाया और कहा : "तुम ताँगा नही चला सकतीं।"

उसने पूछा : "जनाब, मैं ताँगा क्यो नही चला सकती ?"

"लाइसेंस के बगैर तुम ताँगा नही चला सकती अगर तुमने लाइसेंस के बगैर ताँगा

चलाया तो तुम्हारा ताँगा-घोड़ा जब्त कर लिया जाएगा और औरत को ताँगा चलाने का लाइसेंस नहीं मिल सकता " शहर की कमेटी ने जवाब दिया।

उसने कहा : "हुजूर, आप मेरा ताँगा-घोड़ा जब्त कर ले, पर मुझे यह तो बताएँ कि औरत ताँगा क्यों नही चला सकती औरते चर्खा चलाकर अपना पेट पाल सकती हैं; औरतें टोकरी ढोकर रोज़ी कमा सकती है; औरतें कोयले चुन-चुनकर अपनी रोटी पैदा कर सकती है मैं ताँगा चलाकर क्यो अपना पेट नहीं भर सकती ? मुझे और कोई काम करना आता ही नहीं ताँगा-घोड़ा मेरे खाविंद का है, मैं उसे क्यों नहीं चला सकती ? हुजूर, आप मुझ पर रहम करे आप मुझे मेहनत-मजदूरी से क्यों रोकते हैं ? मैं अपना गुजारा कैसे करूँगी बताइए ना मुझे, बताइए ?"

शहर की कमेटी ने जवाब दिया "जाओ, बाजार में जाकर बैठ जाओ वहाँ कमाई ज्यादा है "

नीति के अदर जो नीति थी, जलकर राख हो गई—उसने हौले-से 'अच्छा जी' कहा और चली गई।

उसने औने-पौने दामो ताँगा-घोड़ा बेचा और सीधी अब्बू की कब्र पर गई।

एक लहजे के लिए वह खामोश खड़ी रही उसकी आँखे बिलकुल खुश्क थी, जैसे बारिश के बाद चिलचिलाती धूप ने सारी नमी चूस ली हो।

फिर उसके भिचे हुए होठ वा हुए और वह अब्बू से मुखातिब हुई "अब्बू, आज तेरी नीति कमेटी के दफ्तर मे मर गई ।"

दूसरे दिन उसने शहर की कमेटी के दफ्तर मे अर्जी दी।

और उसको अपना जिस्म बेचने का लाइसेंस मिल गया।

1 लिए हुए, 2 अर्थपूर्ण, 3 तरफ, ओर, 4 वह एक है, उसका कोई शरीक नही, 5 सुख-सुविधा, 6 खर्च, 7 बिलकुल अकेली, 8 हीलो-हुज्जत, 9 अनन्त, 10 मजबूरन 11 सुपुर्दगी, 12 विश्वास, 13 समय नियत करना, 14 आतुर, व्याकुल।

डरपोक

वहाँ कोई न था, मगर म्युनिसिपल कमेटी की लालटेन, जो दीवार में गड़ी हुई थी, जावेद को घूर रही थी। बार-बार वह उस चौड़े सहन को, जिस पर नानकशाही ईंटों का ऊँचा फ़र्श बना हुआ था, तय करके उस नक्कड़वाले मकान तक पहुँचने का इरादा करता, जो दूसरी इमारतों से बिलकुल अलग-थलग था, मगर वह लालटेन, जो मस्नूई आँख की तरह हर तरफ़ टिकटिकी बाँधे देख रही थी, उसके इरादे को मुतज़्लज़ल[1] कर देती और वह उस मोरी के उस तरफ़ हट जाता, जिसको फाँदकर वह सहन को चंद कदमों में तय कर सकता था, सिर्फ़ चंद कदमों में।

उसका घर उस जगह से काफ़ी दूर था, मगर वह यह फ़ासला बड़ी तेज़ी से तय करके वहाँ पहुँच गया था, उसके ख़यालात की रफ़्तार उसके कदमों की रफ़्तार से ज़्यादा तेज़ थी। रास्ते में उसने बहुत-सी चीज़ों पर गौर किया था—वह बेवकूफ़ नहीं था, उसे अच्छी तरह मालूम था कि वह एक वेश्या के पास जा रहा है, और उसको इस बात का भी पूरा शऊर था कि वह किस ग़रज़ से वेश्या के पास जा रहा है।

वह एक औरत चाहता था, औरत, ख़्वाह वह किसी शक्ल में भी हो—औरत की ज़रूरत उसकी ज़िंदगी में यकायक पैदा नहीं हुई थी, एक ज़माने से यह ज़रूरत उसके अंदर आहिस्ता-आहिस्ता शिद्दत[2] इख़्तियार करती रही थी, और अब दफ़अतन[3] उसने महसूस किया था कि अब वह औरत के बगैर एक लम्हा भी ज़िंदा नहीं रह सकता—उसे औरत ज़रूर मिलनी चाहिए, ऐसी औरत, जिसकी रान पर वह हौले-से तमाँचा मार सके और आवाज़ सुन सके, ऐसी औरत, जिससे वह वाहियात किस्म की गुफ़्तगू कर सके।

वह पढ़ा-लिखा होशमंद आदमी था, वह हर बात की ऊँच-नीच समझता था, मगर औरत के मामले में अब वह मज़ीद गौरो-फ़िक्र करने के लिए तैयार नहीं था—उसके दिल में एक ऐसी ख़्वाहिश पैदा हो चुकी थी, जो उसके लिए नई न थी, औरत की कुर्बत हासिल करने की ख़्वाहिश इससे पहले भी कई बार उसके दिल में पैदा हुई थी, और उस ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए इन्तिहाई[4] कोशिशों के बाद जब उसे नाउम्मीदी का सामना करना पड़ा था तो वह इस नतीजे पर पहुँचा था कि उसकी ज़िंदगी में सालिम औरत कभी नहीं आएगी, और अगर उसने सालिम औरत के लिए तलाश जारी रखी तो वह किसी रोज़ दीवाने कुत्ते की तरह किसी राह चलती औरत को काट खाएगा।

किसी राह चलती औरत को काट खाने की नौबत अभी नहीं आई थी; अब उसके दिल में एक नई ख़्वाहिश ने करवट बदली थी—अब किसी औरत के बालों में अपनी उँगलियों से कघी करने का खयाल उसके दिमाग से निकल गया था; औरत का तसव्वुर उसके दिमाग़ मे मौजूद था और औरत के बाल भी उसके दिमाग मे थे, मगर अब उसकी ख्वाहिश थी कि वह उन बालो को वहशियो की तरह खीचे, नोचे, उखाड़े।

उसके दिमाग में से वह औरत निकल चुकी थी, जिसके होठो पर वह अपने होंठ इस तरह रखने का आरज़ूमद था जैसे तिल्ली फूलो पर बैठती है; अब वह उन होठों को अपने गरम-गरम होठो से दागना चाहता था—हौले-हौले सरगोशियो मे बाते करने का खयाल भी उसके दिमाग से निकल चुका था; अब वह बुलद आवाज मे बातें करना चाहता था, ऐसी बाते, जो उसके मौजूदा इरादे की तरह नगी हो।

अब सालिम औरत उसके पेशे-नजर नहीं थी। वह ऐसी औरत चाहता था, जो घिस-घिसाकर शकिस्ता[4] हाल सूरत इख्तियार कर चुकी हो; ऐसी औरत जो आधी औरत हो, और आधी कुछ भी न हो।

एक ज़माना था, जब वह औरत कहते वक्त अपनी आंखो में एक खास किस्म की ठडक महसूस किया करता था, जब औरत का तसव्वुर उसे चाँद की ठडी दुनिया मे ले जाता था; वह बडी एहतियात से 'औरत' कहता था, जैसे उसको उस नाजुक लफ्ज के टूट जाने का डर हो—एक अर्से तक वह ख्वाबो की उस दुनिया की सैर करता रहा था, मगर अजामकार[5] उसे महसूस हुआ कि औरत, जिसकी तमन्ना उसके दिल मे है, उसकी जिंदगी का ऐसा ख़्वाब है, जो वह खराब मेदे के साथ देख रहा है।

वह अब ख्वाबो की दुनिया से बाहर निकल आया था—बहुत दिनों तक जेहहनी तौर पर वह अपने आपको बहलाता रहा था, मगर अब उसका जिस्म ख़ौफनाक हद तक बेदार हो चुका था; उसके तसव्वुर की शिद्दत ने उसकी जिस्मानी हिसयात की नोक-पलक कुछ इस तौर पर निकाल दी थी कि अब जिंदगी उसके लिए सुइयों का बिस्तर बन गई; हर खयाल एक नश्तर बन गया; और औरत उनकी नजरो मे ऐसी शक्ल इख़्तियार कर गई, जिसको वह बयान करना चाहता तो न कर सकता।

जावेद ख़ुद को कभी इसान समझता था, मगर अब उसे इसानो से नफरत हो चुकी थी, इस क़दर कि वह अपने आपसे भी मुतनफ्फर[6] हो चुका था, वह ख़ुद को ज़लील करना चाहता था, इस तौर पर कि उसके ख़ूबसूरत खयाल जिनको वह अपने दिमाग में फूलो की तरह सजा के रखता रहा था, गिलाजत में लुथडे[7] जाएं : 'क्या हुआ, अगर मैं नफासत तलाश करने में नाकाम रहा हूँ गिलाज़त तो है, जो मेरे चारो तरफ फैली हुई है मेरी जी चाहता है कि अपनी रूह और जिस्म के हर जर्रे को इस गिलाजत से आलूदा कर दूँ मेरी नाक जो ख़ुशबुओ की मुतर्जास्सिम[8] रही है, अब बदबूदार और मुतअफ्फन[9] चीज़े सूँघने के लिए बेताब है मैंने अपने पुराने ख़यालात का चोगा उतारकर आज इस महल्ले का रुख किया है यहाँ हर शै एक पुरइसरार तअफ़्फ़ुन[10] में लिपटी हुई नज़र आ रही है यह दुनिया किस क़दर भयानक तौर पर हसीन है ।'

नानकशाही ईंटो का नाहमवार फ़र्श उसकी नज़रों के सामने था; लालटेन की बीमार रोशनी में जब उसने फर्श की तरफ़ ग़ौर से देखा तो उसे महसूस हुआ कि बहुत-सी नंगी औरतें औंधी लेटी हुई हैं और उनकी हड्डियाँ जा-बजा उभरी हुई हैं—उसने फिर इरादा बाँधा कि उस फ़र्श को तय करके उस नुक्कडवाले मकान की सीढ़ियों तक पहुँच जाए और कोठे पर चढ़ जाए, मगर म्युनिसिपल कमेटी की लालटेन गैर मुख़्तातिम[11] टिकटिकी बाँधे उसकी तरफ घूर रही थी, उसके क़दम उठ न सके और वह भिन्ना-सा गया : 'यह लालटेन मुझे क्यों घूर रही है? यह मेरे रास्ते मे क्यों रोड़े अटकाती है?'

वह जानता था कि लालटेन की आँख महज एक वाहमा[12] है और उसका हकीकत मे कोई ताल्लुक नहीं; फिर भी उसके कदम रुक जाते और वह अपने दिल में भयानक इरादे भरे, मोरी के उस तरफ खडा रह जाता, उसे महसूस होता कि उसकी ज़िंदगी के सत्ताईस बरसो की झिझक, जो उसे विरसे मे मिली थी, उस लालटेन में आन बैठी है और उसका रास्ता रोक रही है—मगर उसे तो वहाँ अपनी जिंदगी का सबसे भद्दा खेल खेलना है, ऐसा खेल, जो उसे कीचड में लथपथ कर दे, जो उसकी रूह को मुलव्वस[13] कर दे।

नुक्कड के उस मकान में एक मैली-कुचैली औरत रहती थी; उस औरत के पास चार-पाँच जवान औरते थीं, जो दिन के उजाले और रात के अँधेरे में यकसाँ भद्देपन से पेशा करती थीं; वे औरतें गदी मोरी से गिलाजत निकालनेवाले पप की तरह चलती थी—जावेद को उस कहवाखाने के मुताल्लिक उसके एक दोस्त ने बताया था, जो हुस्नो-इश्क़ की ताश कई मर्तबा उस कब्रिस्तान मे दफन कर चुका था; उसके दोस्त ने कहा था : "तुम औरत-औरत पुकारते हो, पर औरत है कहाँ? मुझे तो अपनी जिदगी मे सिर्फ एक औरत नजर आई है : वह मेरी माँ थी : मुझे तो जब कभी औरत की जरूरत महसूस हुई है, मैंने माई जीवाँ के कोठे को अपना बेहतरीन रफीक[14] पाया है : बख़ुदा माई जीवाँ औरत नहीं, फरिश्ता है : खुदा उसको खिज्र की उम्र अता फरमाए!"

माई जीवाँ और उसके यहाँ की चार-पाँच पेशा करनेवाली औरतों के मुताल्लिक वह बहुतकुछ सुन चुका था—उसको मालूम था कि उन चार-पाँच औरतों मे से एक हर वक्त गहरे रंग के शीशोवाला चश्मा पहने रहती है, इसलिए कि किसी बीमारी के बायस उसकी आँखे खराब हो चुकी है, एक काली-कलूटी लौंडिया है, जो हर वक्त हँसती रहती है—उस काली-कलूटी लौंडिया के मुताल्लिक वह जब भी सोचता तो एक अजीबो-गरीब तस्वीर उसकी आँखो के सामने खिंच जाती : 'हाँ, मुझे ऐसी ही औरत चाहिए, जो हर वक्त हँसती रहे : ऐसी औरतों को हर वक्त हँसते ही रहना चाहिए : जब वह हँसती होगी तो उसके काले-काले होंठ यूँ खुलते होंगे, जैसे बदबूदार गदे पानी में मैले-मैले बुलबुले उठते हैं और फटते हैं।'

माई जीवाँ के यहाँ एक छोकरी ऐसी भी थी, जो बाक़ायदा तौर पर पेशा करने से पहले गलियों और बाजारों में भीख माँगा करती थी; वह एक बरस से उस नुक्कड़वाले मकान मे थी, जहाँ पिछले अठारह बरसों से यही काम हो रहा था; वह लड़की अब पाउडर और सुर्ख़ी लगाती थी—वह सोचता : 'उसके सुर्ख़ी लगे गाल बिलकुल दागदार सेबों के मानिंद होंगे,

जिन्हें हर कोई ख़रीद सकता है '

उन चार-पाँच औरतों में से उसके जेहन में कोई एक ख़ास औरत नहीं थी : 'मुझे तो कोई भी मिल जाए मैं चाहता हूँ कि मुझसे दाम लिए जाएँ और खट-से एक औरत मेरी बगल में थमा दी जाए एक सैकेंड की देर न हो किसी किस्म की गुफ्तगू न हो, कोई नर्मोनाज़ुक जुमला मुँह से न निकले बस कदमों की चाप सुनाई दे, दरवाजा खुलने की खड़खड़ाहट उभरे, रुपए खनखनाएँ और औरत मेरी बगल मे हो फिर मुलाकात हो हैवानों की तरह तहजीबो-तमद्दुन के सदूक म ताला लग जाए, और थोडी देर के लिए एक ऐसी दुनिया आबाद हो जाए, जिसमे सूँघने, देखने और सुनने की नाज़ुक हिसयात जंग लगे उस्तरे की मानिंद कुंद हो जाएँ '

वह बेचैन हो गया, एक उलझन-सी उसके दिमाग मे पैदा हो गई, इरादा उसके अंदर इतनी शिद्दत इख्तियार कर चुका था कि अगर पहाड भी उसके रास्ते मे होते तो वह उनसे भिड जाता, मगर म्युनिसिपल कमेटी की एक अंधी लालटेन, जिसको हवा का एक झोका बुझा सकता था, उसकी राह में बुरी तरह हाइल[15] हो गई थी ।

उसकी बगल मे पान की दूकान खुली हुई थी, तेज रोशनी मे उस छोटी-सी दूकान का असबाब इस कदर नुमायाँ हो रहा था कि बहुत-सी चीजें नजर नही आ रही थीं; कुमकुमे के इर्द-गिर्द मक्खियाँ इस अदाज से उड रही थी, जैसे उनके पर बोझिल हो रहे हों—उसने जब उनकी तरफ देखा तो उसकी उलझन मे इजाफा हो गया, वह नहीं चाहता था कि उसे कोई सुस्त रफ्तार चीज नजर आए; उसका कर गुजरने का इरादा, जो वह अपने घर से लेकर यहाँ आया था, उन मक्खियों के साथ बार-बार टकराया; वह उस टकराव के एहसास मे इस कदर परेशान हुआ कि उसके दिमाग़ में एक हुल्लड़-सा मच गया 'मैं डरता हूँ, मैं खौफ खाता हूँ उस लालटेन से मुझे डर लगता है उस लालटेन ने मेरे तमाम इरादे तबाह कर दिए हैं मैं डरपोक हूँ मैं डरपोक हूँ लानत है मुझ पर '

उसने कई लानतें अपने-आप पर भेजी, मगर खातिरख्वाह[16] असर पैदा न हुआ; उसके कदम आगे न बढ़ सके—नानकशाही ईंटों का नाहमवार फर्श उसके सामने लेटा रहा ।

गर्मियों के दिन थे; निस्फ[17] रात गुजरने पर भी हवा ठडी नहीं हुई थी; बाजार मे आमदो-रफ्त बहुत कम थी; गिनती की सिर्फ चंद दूकाने खुली थी; फज़ा खामोशी मे लिपटी हुई थी—कभी-कभी हवा के किसी गर्म झोंके के साथ किसी कोठे से थकी हुई मौसीकी का कोई टुकडा उधर आ निकलता और गाढी खामोशी मे घुल जाता ।

माई जीवाँ के कहवाखाने मे जरा इधर हटकर, सामने, बडे बाजार में दूकानो के ऊपर कोठो की एक कतार थी; कोठो मे कई जगह जिंदगी के आसार नज़र आ रहे थे; एक खिड़की में तेज रोशनी के कुमकुमे के नीचे एक सियाहफाम औरत बैठी पंखा झल रही थी; उसके सिर के ऊपर बिजली का बल्ब जल रहा था, और ऐसा दिखाई दे रहा था कि सफेद आग का एक गोला है, जो पिघल-पिघलकर उस वेश्या पर गिर रहा है ।

अभी उसने उस सियाहफाम औरत के मुताल्लिक़ कुछ गौर करना शुरू किया ही था कि बाजार के उस सिरे से, जो उसकी आँखों से ओझल था, बडे भद्दे नारों की सूरत में चंद

आवाजे बुलंद हुईं—थोड़ी ही देर में तीन आदमी झूमते-झामते, शराब के नशे में चूर, नमूदार हुए, तीनों के तीनों उस सियाहफाम औरत के कोठे के नीचे पहुँचकर खड़े हो गए।

उसके कानो ने ऐसी-ऐसी वाहियात बाते सुनीं कि उसके तमाम इरादे उसके अंदर सिमटकर रह गए।

एक शराबी ने, जिसके कदम बहुत ही ज़्यादा लड़खड़ा रहे थे, अपने पूँछों भरे होंठों से बडी भद्दी आवाज के साथ एक बोसा नोचकर उस काली वेश्या की तरफ उछाला और एक ऐसा जुमला फेका कि उसकी सारी हिम्मत पस्त हो गई।

कोठे पर बर्क़ी लैंप की रोशनी में बैठी उस सियाहफ़ाम औरत के होंठ एक आबनूसी कहकहे ने वा किए और उस शराबी के जुमले का जवाब यूँ दिया, जैसे उसने टोकरी-भर कूडा नीचे फेक दिया हो।

गैर मरबूत कहकहों का एक फव्वारा-सा छूट पड़ा और उसके देखते-देखते वे तीनो शराबी कोठे पर चढ गए—और वह निशस्त[18], जहाँ वह काली वेश्या बैठी हुई थी, खाली हो गई।

वह अपने-आपसे और ज़्यादा मुतनफ़्फ़र हो गया : 'तुम तुम क्या हो ? मैं पूछता हूँ, आखिर तुम क्या हो ? न तुम यह हो, न तुम वह हो न तुम इंसान हो, न तुम हैवान हो तुम्हारी जहानत व जकावत[19] सब धरी की धरी रह गई है तीन शराबी आते हैं, उनके दिल में शायद तुम्हारे दिल की तरह कोई इरादा नहीं होता, फिर भी वे बेधड़क उस वेश्या से बाते करते हैं, हँसते हैं, क़हक़हे लगाते हैं और कोठे पर चढ़ जाते हैं और तुम और तुम कि अच्छी तरह समझते हो, तुम्हें क्या करना है, यूँ बेवक़ूफों की तरह बीच बाजार मे खड़े हो और एक बेजान लालटेन से ख़ौफ खा रहे हो तुम्हारा इरादा इस क़दर साफ और शफ़ाफ है, फिर भी तुम्हारे क़दम आगे नहीं बढ़ते लानत है तुम पर '

यकायक उसके अंदर एक लम्हे के लिए ख़ुदइंतक़ामी का जज़्बा पैदा हुआ; उसी लम्हे उसके कदमों में जुंबिश हुई और वह मोरी फलाँदकर माई जीवाँ के कोठे की तरफ बढ़ा; वह सीढ़ियो के पास पहुँचा ही था कि उसे ऊपर से एक आदमी उतरता हुआ दिखाई दिया, वह जरा पीछे हट गया; गैर इरादी तौर पर उसने अपने-आपको छुपाने की कोशिश भी की—लेकिन कोठे पर से नीचे आनेवाले आदमी ने उसकी तरफ़ कोई तवज्जोह न दी।

उस आदमी ने अपना मलमल का कुर्ता उतारकर काँधे पर धरा हुआ था और अपनी दाहिनी कलाई में मोतिए के फूलों का मसला हुआ हार लपेटा हुआ था; उसका बदन पसीने मे शराबोर हो रहा था—उसके वजूद से बेखबर वह आदमी अपने तहमद को दोनों हाथों से घुटनों तक ऊँचा किए नानकशाही ईंटों का ऊँचा-नीचा फर्श तय करके मोरी के उस पार चला गया।

उसने सोचा कि उस आदमी ने उसकी तरफ़ क्यों नहीं देखा, फिर उसकी नज़रें लालटेन से जा टकराईं : 'तुम कभी अपने मक़सद में कामयाब नहीं हो सकते, इसलिए कि तुम डरपोक हो याद है तुम्हें, पिछले बरस बरसात में जब तुमने उस हिंदू लड़की इंदिरा से अपनी मुहब्बत का इजहार करना चाहा था तो तुम्हारे जिस्म में सकत न रही थी; कैसे-कैसे

भयानक ख़याल तुम्हारे दिमाग में पैदा हो गए थे; याद है; तुमने हिंदू-मुस्लिम फ़साद के मुताल्लिक भी सोचा था और डर गए थे; डर के मारे तुमने उस लड़की को भुला दिया था और हमीदा से तुम इसलिए मुहब्बत न कर सके कि वह तुम्हारी रिश्तेदार थी और तुम्हे इस बात का ख़ौफ़ था कि तुम्हारी मुहब्बत को ग़लत नज़रों से देखा जाएगा; कैसे-कैसे वहम उन दिनों तुम्हारे ऊपर मुसल्लत[20] थे फिर तुमने बिलकीस से मुहब्बत करना चाही, मगर बिलक़ीस को सिर्फ एक बार देखकर तुम्हारे सब इरादे गायब हो गए, और तुम्हारा दिल वैसे का वैसा बंजर रहा क्या तुम्हे इस बात का एहसास नहीं कि हर बार तुमने अपनी बेलौस मुहब्बत को खुद आप ही शक की नजरों से देखा तुम्हें इस बात का कभी पूरी तरह यकीन न आ सका कि तुम्हारी मुहब्बत ठीक फितरी रग में है तुम हमेशा डरते रहे हो इस वक्त भी तुम ख़ाइफ़ हो. यहाँ घरेलू औरतों और लड़कियों का कोई सवाल नहीं है, हिंदू-मुस्लिम फसाद का भी इस जगह कोई खदशा नहीं है, इसके बावजूद तुम कभी इस कोठे पर नहीं जा सकोगे मैं देखूँगी, तुम किस तरह ऊपर जाते हो '

उसकी रही-सही हिम्मत भी पस्त हो गई; उसने महसूस किया कि वह वाकई परले दर्जे का डरपोक है—बीते हुए वाक़आत तेज़ हवा में रखी हुई किताब के औराक़ की तरह उसके दिमाग में देर तक फडफड़ाते रहे, और पहली मर्तबा उसको बड़ी शिद्दत के साथ एहसास हुआ कि उसके वजूद की बुनियादो मे एक ऐसी झिझक बैठी हुई है, जिसने उसे काबिले-रहम हद तक डरपोक बना दिया है।

फिर किसी के सीढियो से उतरने की आवाज आई तो वह चौंक पड़ा।

वही, जो गहरे रंग के शीशोवाला चश्मा पहनती थी, और जिसके मुताल्लिक वह कई बार अपने दोस्त से सुन चुका था, नीचे, सीढ़ियों के इख़्तितामी[21] चबूतरे पर खड़ी थी।

वह घबरा गया—इससे पहले कि वह पीछे हटता, गहरे रंग के शीशोंवाली ने बडे भद्दे तरीके पर उसे आवाज दी . ''आओ, आओ मेरी जान, घबराओ नहीं आओ, आओ '' फिर उसने पुचकारा ''चले आओ आ भी जाओ ''

उसे महसूस हुआ कि अगर वह कुछ देर और वहाँ ठहरा तो उसकी पीठ मे दुम उग आएगी और उस वेश्या के पुचकारने पर हिलना शुरू कर देगी।

उसने घबराई हुई नजरो से देखा—माई जीवाँ के कहवाखाने की उस चश्मा चढ़ी लौंडिया ने कुछ इस तरह अपने बालाई जिस्म को हरकत दी कि उसके तमाम इरादे पके हुए बेरों की मानिंद झड़ गए।

चश्मेवाली ने फिर पुचकारा : ''आओ मेरी जान अब आ भी जाओ ''

वह तेज़ी से मुड़ा और भाग उठा; मोरी फाँदकर वह बाज़ार में पहुँचा ही था कि उसने एक ऐसे क़हक़हे की आवाज़ सुनी, जो ख़तरनाक तौर पर भयानक था—वह काँप उठा।

जब वह अपने घर के पास पहुँचा तो ख़यालात के हुजूम में से दफ़अतन एक ख़याल ने आगे बढ़कर उसे तस्कीन[22] दी . 'जावेद, तुम एक बहुत बड़े गुनाह से बच गए ख़ुदा का शुक्र बजा लाओ।

1 कंपित, 2 तीव्रता, 3. सहसा, 4. जर्जर; 5 परिणामस्वरूप; 6. घृणा, 7. सने; 8. तलाश, 9 दुर्गंधयुक्त; 10 दुर्गंध, 11 ख़त्म करना,, 12 भ्रम; 13 गंदा करना; 14 साक्षी; 15 रुकावट, 16. ठीकठाक, 17 आधी, 18 गोष्ठी, 19 बुद्धिमत्ता, 20 लादा हुआ, 21. अंत में, 22. तसल्ली।

पहचान

एक निहायत ही थर्ड क्लास होटल में देसी व्हिस्की की बोतल खत्म करने के बाद यह तय हुआ कि बाहर घूमा जाए और एक ऐसी औरत की तलाश की जाए, जो होटल और व्हिस्की के पैदा कर्दा तकद्दुर[1] को दूर कर सके; कोई ऐसी औरत ढूँढ़ी जाए, जो होटल की कसाफत[2] के मुक़ाबले मे नफ़ासत पसद और बदज़ाइक़ा व्हिस्की के मुकाबले मे लजीज़ हो।

फ़ख्र ने होटल की गलीज़ फ़ज़ा से बाहर निकलते ही मुझसे और मसऊद से कहा "कोई दानेदार औरत हो अच्छे गवैए के गले की तरह उसमें बड़े-बड़े दाने हों खुदा की कसम, तबीयत साफ़ हो जाए।"

व्हिस्की दानों से बिलकुल ख़ाली थी; सोडा भी बिलकुल बेजान था; गालिबन इसी वजह से फ़ख्र दानेदार औरत का क़ायल हो रहा था।

हम तीनों औरत चाहते थे—फ़ख्र दानेदार औरत चाहता था, मुझे ऐसी औरत मतलूब[3] थी, जो बड़े सलीके से वाहियात बातें करे, और मसऊद को ऐसी औरत की जरूरत थी, जिसमें बनियापन न हो, जो अपने दाम के रुपए लेकर ट्रंक में, या जहाँ उसका जी चाहे, रखे और कुछ अर्से के लिए भूल जाए कि उसने कोई सौदा किया है।

उस बाज़ार का रास्ता हम जानते थे, जहाँ औरते मिल सकती हैं, काली, नीली, पीली, लाल और जामुनी रग की औरतें; पेडो की तरह उनके मकान एक क़तार में दूर तक दौडते चले गए हैं; यह रंगबिरगी औरतें पके हुए फलो के मानिंद लटकती रहती हैं; आप नीचे से ढेले मारकर उन्हें गिरा सकते हैं—हमे ये औरते मतलूब नही थी, दरअसल हम अपने-आपको धोका देना चाहते थे; हम ऐसी औरत या औरते चाहते थे, जो उर्फ़े-आम मे प्राइवेट हों, यानी जो मंडी के हुजूम से दूर शरीफ मुहल्लो मे अपना कारोबार चला रही हों।

हम तीनों में फख्र सबसे ज्यादा तजुर्बेकार था, कुव्वते-इरादी[4] भी उसमें हम सबसे ज्यादा थी—एक ताँगा जब हमारे पास से गुजरा तो उसने हाथ के इशारे से उसे रोका और बगै़र किसी झिझक के मानीख़ेज़ लहजे में ताँगेवाले से कहा: "हम सैर करना चाहते हैं चलोगे?"

ताँगेवाले ने, जो संजीदा और मतीन[5] आदमी मालूम होता था, हम तीनो की तरफ बारी-बारी देखा—मैं झेंप गया—खामोशी ही ख़ामोशी में वह हमसे कह गया था: 'तुम नौजवानों को शराब पीकर यह क्या हो जाता है?'

फ़ख़ ने दुबारा ताँगेवाले से कहा : "हम सैर करना चाहते हैं चलोगे ?" फिर फ़ौरन ही उसे कुछ ख़याल आया और उसने अपना मतलब और ज्यादा वाजेह[6] कर दिया : "कोई माल-वाल है तुम्हारी निगाह मे ?"

मसऊद और मै, हम दोनो, एक तरफ खिसक गए थे—मसऊद ने घबराकर मुझसे कहा · "यह फख़ कैसा आदमी है इसे कुछ समझाओ।"

मसऊद से मैं कुछ कहने ही वाला था कि फख़ ने हम दोनों को आवाज दी : "आओ भई, आओ बैठो ताँगे मे।"

हम तीनो ताँगे मे बैठ गए—मुझे अगली निशस्त पर जगह मिली।

दिसबर के आखिरी दिन थे, रात के आठ बज चुके थे; व्हिस्की पीने के बावजूद हमें सर्दी महसूस हो रही थी; मैं अगली निशस्त पर बैठा था और तीनो मे सबसे कमजोर था, इसलिए मेरे कान सुन्न हो रहे थे—जब ताँगा डफरिन ब्रिज के नीचे उतरा तो मैंने मफ़लर निकालकर कानो और सिर पर लपेट लिया और ओवरकोट का कॉलर भी ऊचा कर लिया।

साँस घोडे के नथनो से भाप बनकर निकल रहा था—हम तीनों खामोश थे—ताँगेवाला मोटे और खुरदुरे कबल मे लिपटा खामोशी से ताँगा चला रहा था—मैंने उसकी तरफ गौर से देखा, सजीदगी उसके चेहरे पर ठिठर-सी रही थी जो मुझे बहुत बुरी मालूम हुई, मैंने फख़ से कहा "फख़, यह आदमी कैसा है कोई बात ही नही करता ऐसा मालूम होता है, कास्ट्रॉयल पीकर बैठा है।"

ताँगेवाला मेरे इस रिमार्क पर भी खामोश रहा—फख़ ने कहा "ज्यादा बाते करनेवाले ठीक नही होते हमारा मतलब समझ गया है जहाँ अच्छी चीज होगी, वही ले चलेगा।"

मसऊद, जो सिगरेट सुलगा रहा था, एकदम बोला "वल्लाह, औरत कितनी अच्छी चीज है औरत, औरत,कम चीज ज्यादा है "

मैंने मसऊद की बात को जरा और खूबसूरत बनाकर कहा "मसऊद, चीज नही, चीजी "

मसऊद कि शाइर था, बस फडक उठा "वल्लाह, क्या बात पैदा की है चीज नही, चीजी मियाँ तांगेवाले, चीज और चीजी मे जो फर्क है उसका ध्यान रखना "

ताँगेवाला खामोश रहा—अब मैंने और गौर से उसकी तरफ देखा, मजबूत जिस्म का आदमी था, उम्र पैतीस बरस के लगभग होगी; पतली-पतली मूँछे थीं, जिनके बाल नीचे को झुके हुए थे; सर्दी के बायस उसने कबल का ठाटा-सा बना रखा था, इसलिए उसका पूरा चेहरा नजर नही आ रहा था—मैंने उसकी तरफ देखकर फख़ से पूछा · "कहाँ ले जा रहा है यह हमे ?"

फख़ ने, जो ज्यादा सोच-विचार का आदी नही था, जवाब दिया "इतने बेताब क्यों होते हो अभी थोड़ी देर के बाद चीज तुम्हारे सामने आ जाएगी।"

मसऊद ने फख़ से कहा : "तुमसे कोई बात हुई है इसकी ?"

फ़ख़ ने जवाब दिया "रोशनआरा रोड पर कुछ मेमें रहती हैं कहता है, हमारे काम की हैं।"

मेमों का ज़िक्र सुनकर मसऊद को अपने एक दोस्त की नज़्म याद आ गई—नज़्म का हवाला देकर उसने कहा : "तो चलो, आज लगे हाथों अर्बाबे-वतन[7] की बेबसी का इंतक़ाम भी ले लिया जाए वल्लाह, ऐसा मालूम होता है कि हमारा ताँगेवाला साहबे-ज़ौक़ है वह नज़्म जरूर पढ़ी होगी इसने "

इसके बाद देर तक मेमों के मुताल्लिक़ गुफ्तगू होती रही—मैं और मसऊद मेमों के बिलकुल कायल न थे, लेकिन फख़ को औरतों की यह किस्म पसंद थी "इनका इल्म साइंटिफिक होता है इनके मुक़ाबले में मशरिक़ी औरतो को रखिए तो वही फर्क़ नजर आएगा, जो हमारी रेवड़ी और इनकी टॉफी मे है दरअसल बात यह है कि मेमों का पैकिंग बडा अच्छा होता है।"

मैंने कहा . "फ़ख़, मुमकिन है, तुम्हारा नजरिया दुरुस्त हो मगर मेरे भाई, मैं ऐसे नाजुक मौको पर जबान की मुश्किलात बर्दाश्त नहीं कर सकता मैं अपने दफ्तर में बडे साहब के साथ अँग्रेजी बोल सकता हूँ, यहाँ दिल्ली मे रहते हुए इस ताँगेवाले से उर्दू मे बातचीत करना गवारा कर सकता हूँ, मगर उस नाज़ुक मौक़े पर मैं अँग्रेजी में गुफ्तगू नही कर सकता मेरी पतलून अँग्रेजी, मेरी टाई अँग्रेजी, मेरा जूता अँग्रेजी यह सब चीजे अँग्रेजी हो सकती हैं मगर बाल्दा, वह चीज मुझमे अँग्रेजी में नहीं हो सकती "

फख़ मेमो के बारे मे अपना नजरिया भूल गया और हँसने लगा—मसऊद शायद अभी तक अपने दोस्त की लिखी हुई नज्म पर गौर कर रहा था, जिसमें शाइर ने एक फिरगी औरत के होठ चूमकर अर्बाबे-वतन की बेबसी का इंतकाम लिया था—दफअतन चौंककर उसने कहा "क्यो भई, यह ताँगा कब तक चलता रहेगा ?"

ताँगेवाले ने एकदम बागे खीचकर ताँगा ठहरा दिया और फ़ख़ से कहा "वह जगह आ गई साहब आप अकेले चलिएगा या "

हम तीनो ताँगेवाले के पीछे-पीछे हो लिए।

हमे वह एक नीम रोशन गली मे ले गया—यह गली दिल्ली की आम गलियों से कुछ मुख्तलिफ[8] थी कि बहुत चौडी थी; दाएँ हाथ को एकमंजिला मकान था, जिसकी खिड़कियो और दरवाजों पर चिक़ें लटकी हुई थी—एक दरवाजे की चिक उठाकर ताँगेवाला अंदर दाखिल हो गया, फिर चद लम्हात के बाद वह बाहर आया और हमें अंदर ले गया।

कमरे मे घुप्प अँधेरा था—मैंने जब कहा, "भाई, हम कहीं औंधे मुँह न गिर पड़ें" तो दूसरे कमरे से किसी औरत की भद्दी-सी आवाज आई : "लालटेन तो ले गया होता तू !"

थोड़ी-सी देर के बाद ताँगेवाला एक अधी-सी लालटेन लेकर नमूदार हुआ : "चलिए, अंदर तशरीफ ले चलिए।"

हम तीनों अंदर तशरीफ ले गए—हमे दो काली भुजंगी इंतिहाई बदसूरत औरतें नज़र आईं, जिन्होंने फ्रॉक पहन रखे थे।

यह मेमें थीं—मैंने बमुश्किल अपनी हँसी रोककर फ़ख़ से कहा : "क्या लजीज़ टॉफ़ियाँ हैं !"

मेरी बात सुनकर उन मेमों में से एक, जिसका सियाह चेहरा सुर्ख़ी थुपी होने के बायस

ज्यादा पकी हुई ईट की-सी रगत इख्तियार कर गया था, हँसी—मैं भी हँस दिया और मैंने वड प्यार से पूछा "क्या नाम है आपका ?

उसने कहा . "लूसी ।"

मसऊद ने आगे बढ़कर दूसरी से पूछा "और आपका ?"

उसने जवाब दिया "मेरी ।"

फख्र भी थोडा आगे बढ़ा "क्यो साहब, आप काम क्या करती हैं ?"

दोनो लजा गईं—एक ने अदा से कहा "कैसा बात करता है तुम ?"

दूसरी ने कहा "चलो जल्दी करो रहना माँगता है या नही हमे रोटी पकाना है ।"

मैंने उसके हाथों की तरफ देखा—उसके हाथ गीले आटे से भरे हुए थे और वह हाथ मल रही थी, उसके मलते हुए हाथों मे से कच्चे फर्श पर मरोडियाँ गिर रही थी—मुझे ऐसा मालूम हुआ कि अनाज रो रहा है, मरोडियाँ अनाज के आँसू हैं ।

ताँगेवाला हमें कतई तौर पर गलत जगह ले आया था । हम तीनों के तीनो उस मकान मे पहुँचकर सख्त परेशान हो गए, मगर हम अपनी परेशानी उन दो औरतों पर जाहिर करना नही चाहते थे—हमे सख्त नाउम्मीदी हुई थी, अगर हम उनसे साफ लफ्जो मे कह देते कि वह हमारे मतलब की नहीं हैं तो जरूर उनके जज्बात को ठेस पहुँचती—औरत, जिसके हाथ आटे मे लुथडे हो, जज्बात से आरी नही हो सकती ।

मैंने उन दोनों औरतो की तारीफ की, फख्र ने भी मेरा साथ दिया, फिर हम तीनों बहुत जल्द वापस आने का वादा करके वहाँ से निकल आए ।

ताँगेवाला हमारा मतलब समझ गया था, उसे चद लम्हात के लिए वहाँ ठहरना पडा—जब वह बाहर निकला तो फख्र ने उससे कहा "तुम इन्हें मेमें कहते हो ?"

ताँगेवाले ने बडी मतानत[9] के साथ जवाब दिया " सब लोग यही कहते हैं साहब !"

"लोग झख मारते हैं मैंने सोचा था कि तुम मेरा मतलब समझ गए होगे अब खुदा के लिए किसी ऐसी जगह ले चलो, जहाँ चद घडियाँ हम अपना दिल बहला सकें "

मसऊद ने हम तीनो का अजतमाई[10] मकसद और ज्यादा वाजेह करने की कोशिश की 'देखो, हम ऐसी जगह जाना चाहते हैं, जहाँ हम कुछ देर बैठ सकें हमें ऐसी औरत के पास ले चलो, जो बातें करने का सलीक़ा रखती हो भाई, हम कोरे नही हैं, किसी फौज के सिपाही नहीं हैं हम तीन शरीफ आदमी हैं, जिन्हे औरत से बातचीत किए बरसों गुजर चुके हैं समझे ?"

ताँगेवाले ने इस्बात[11] में सिर हिला दिया "तो चलिए बैठिए आपको सदर बाजार ले चलता हूँ ।"

फख्र ने पूछा "वहाँ कौन है ?"

ताँगेवाले ने घोडे की बागें थामकर जवाब दिया " एक पजाबन है बहुत लोग आते हैं उसके पास ।"

ताँगे ने पजाबन के घर का रुख इख्तियार कर लिया ।

रास्ते मे उन दो मेमों का जिक्र छिड गया, हम में से हर एक को वहाँ जाने का अफसोस

था, हम तो उनसे नाउम्मीद हुए ही थे, शायद हमसे कही ज्यादा वह नाउम्मीद हुई थी, मैंने उनको कुछ रुपए दे दिए होते, मगर यह भीख होती, उनकी तजलील[12] होती।

फख ने हमारी इस गुफ्तगू में ज्यादा हिस्सा न लिया, वह चाहता था कि उनका जिक्र न किया जाए, लेकिन जब तक ताँगा पजाबन के घर तक न पहुँचा, न चाहने के बावजूद उनका जिक्र होता रहा।

ताँगा एक फराख बाजार मे फुटपाथ के पास रुका।

तवेले के साथवाला मकान उस पजाबन का था—ताँगेवाले के पीछे-पीछे हम तीनो ने उधर का रुख किया, जीना तय करके हम ऊपर पहुँचे, सामने पाखाना था, दरवाजे से बेनियाज, उसके साथ पुरानी वजा का मुगलई कमरा था—हम चारो उस कमरे मे दाखिल हुए, कमरे के आखिरी सिरे पर चार आदमी फ्लैश खेलने मे मसरूफ थे, जो हमारी आमद से गाफिल रहे, अलबत्ता एक औरत जो उनके पास खडी थी और उनमे से एक के पत्तो मे दिलचस्पी ले रही थी, आहट पाकर हमारी तरफ आई।

यहाँ भी कमरे मे एक लालटेन जल रही थी, जो फ्लैश खेलनेवालो के घेरे मे थी, रोशनी मद्धिम थी—जब वह औरत फख के करीब पहुँची और अपने कूल्हे पर हाथ रखकर खडी हो गई तो मैंने उसे गौर से देखा—उसकी उम्र कम अज कम पैंतीस बरस थी, छातियाँ बडी-बडी थी, जो उसने बडे ही बेहूदा और फहश अदाज से ऊपर को उठा रखी थीं, तग माथे पर नीले रग का चाँद खुदा हुआ था—जब वह मसऊद की तरफ देखकर मुसकराई तो मुझे उसके सामने के दाँतो मे सोने की कीले नजर आईं।

उसने फख को आँख मारी और पूछा कहो, क्या बात है?

फख ने बच्चे की तरह कहा "आपका नाम?"

उसने फिर अपने कूल्हे पर हाथ रखे, जरा फैली, हम तीनों को बारी-बारी देखा और कहा "गुलजार।"

फख ने फौरन ही माजरत[13] की "माफ कीजिएगा, हम गुलाब के यहाँ आए थे, गलती से इधर चले आए।"

वह जरा आगे बढ़ी, फख के हाथ से सिगरेट छीना, कश लगाया और फ्लैश खेलनेवालों के पास चली गई, जो अभी तक हमारी आमद से गाफिल थे।

बडी खौफनाक औरत थी, उसका मुँह कुछ इस अदाज से खुलता था, जैसे नीबू निचोडनेवाली मशीन का खुलता है।

ताँगे में बैठते ही हम तीनो ने ताँगेवाले को फिर अपना मतलब समझाया कि हम किस किस्म की औरत चाहते हैं। उसने हम तीनों का लैक्चर सुना और कहा "आप थोडे लफ्जों मे मुझे बताइए कि आप कहाँ जाना चाहते हैं?"

मैंने तग आकर फख से कहा "भई, तुम ही इसे उन थोडे-से लफ्जों में समझाओ, जो तुम्हारे पास बाकी रह गए हैं।"

फख ने उसे समझाया " देखो, हमें किसी लडकी के पास ले चलो ऐसी औरत के पास, जो सोलह-सतरह बरस की हो इससे ज्यादा की हर्गिज न हो समझे?"

ताँगेवाले ने कबल की बक्कल मारकर बागे थामी और कहा "आपने पहले ही कह दिया होता चलिए, अब आपको ठीक जगह पर ले चलता हूँ।"

आधे घंटे के बाद वह ठीक जगह भी आ गई।

खुदा मालूम कौन-सा बाजार था, एक मकान की दूसरी मंजिल पर एक बैठक-सी थी, जिसके दरवाजे पर मोटा और मैला टाट लटक रहा था—जब हम अंदर दाखिल हुए तो सामने आँगन में एक देहाती बुढ़िया चूल्हा झोंक रही थी, मिट्टी के कूँडे में गूँधा हुआ आटा पास ही पड़ा था, धुआँ इस कदर था कि अंदर दाखिल होते ही हमारी आँखों में आँसू आ गए।

बुढ़िया ने चूल्हे में लकड़ियाँ झाड़कर हमारी तरफ देखा और ताँगेवाले से देहाती लहजे में कहा "इन्हें अंदर ले जाओ।"

ताँगेवाले ने दियासलाई जलाकर हमें अँधेरे कमरे में दाखिल किया और कील से लटकी हुई लालटेन को रोशन करके बाहर चला गया।

मैंने कमरे का जायजा लिया—कोने में एक बहुत बड़ा पलंग था, जिसके पाए रंगीन थे, पलंग पर मैली-सी चादर बिछी हुई थी, तकिया भी पड़ा था, जिस पर सुर्ख रंग के फूल कढ़े हुए थे, पलंग के साथवाली दीवार की कार्निस पर सरसों के तेल की एक मैली बोतल और लकड़ी की कंघी पड़ी थी, लकड़ी की कंघी में सिर का मैल और बालों का एक गुच्छा फँसा हुआ था, पलंग के नीचे एक टूटा हुआ ट्रंक था, ट्रंक पर एक काली गुरगाबी रखी हुई थी।

मसऊद और फख्र दोनों, पलंग पर बैठ गए—मैं खड़ा रहा।

थोड़ी देर के बाद एक पस्त क़द लड़की अपने से दुगना दुपट्टा ओढ़ने की कोशिश करती हुई अंदर दाखिल हुई—फख्र और मसऊद, दोनों उठ खड़े हुए।

जब वह लड़की लालटेन की रोशनी में आई तो मैंने उसे देखा—उसकी उम्र बमुश्किल चौदह बरस के करीब होगी, उसकी छातियाँ आड़ू के बराबर थीं, मगर उसके चेहरे से मालूम होता था कि वह अपने जिस्म को पीछे छोड़कर बहुत आगे निकल चुकी है, बहुत आगे, जहाँ शायद उसकी माँ भी न पहुँच सकी हो, उसकी माँ, जो शायद बाहर आँगन में चूल्हा झोंक रही थी, उसके नथुने फड़क रहे थे और वह इस अंदाज से अपना एक हाथ हिला रही थी, जैसे वह अभी मक्कार दूकानदार की तरह डंडी मारेगी और पूरा तौल नहीं तौलेगी।

हम तीनों उसको हैरत भरी नजरों से देखते रहे—फख्र शर्म महसूस कर रहा था और मसऊद की सारी शाइरी सिमटकर शायद उसके नाखूनों में आ गई थी; वह बुरी तरह अपने नाखून दाँतों से काट रहा था।

मैंने एक बार फिर उस लड़की की तरफ गौर से देखा, जैसे मुझे अपनी आँखों पर यक़ीन न आया हो—वह ठिगनी-सी लड़की थी, जो एक बहुत बड़ा मैला दुपट्टा ओढ़ने की कोशिश कर रही थी; उसका रंग गहरा साँवला था, उसके बदन की साख़्त से मालूम होता था कि वह बड़ी तेज़ चलती हुई गाड़ी थी, जो अब एकदम रुक गई है, पहियों में बुरी तरह ब्रेक लगे हुए हैं और वहीं खड़े-खड़े धूप और बारिश में उसका रंग-रोग़न उड़ गया है—उस उम्र में भद्दी

से भद्दी लड़की के जिस्म में भी वह जो एक किस्म की शोख जाजबियत[14] होती है, वह उसमें बिलकुल नही थी; कपडों के बावजूद वह नगी दिखाई देती थी, बहुत ही बेहूदा और नावाजिब तरीक़े पर नंगी—उसके जिस्म का निचला हिस्सा कतई तौर पर गैर नुसवानी[15] था।

मैं कुछ कहने ही वाला था कि उस लडकी के अकब[16] से एक बुड्ढा नमूदार हुआ—बिलकुल सफेद दाढी; उसका सिर जोअफ[17] के बायस हिल रहा था।

लड़की ने देहाती ज़बान मे बुड्ढे से कुछ कहा तो मैंने नतीजा निकाला कि वह बुड्ढा उस लड़की का नाना है।

हम तीनों सही मानो मे उठ भागे—नीचे बाजार मे पहुँचे तो हमारा तकद्दुर[18] कुछ दूर हुआ।

लडकी और बुड्ढे को देखकर हमारे जमालियाती जौक[19] को बहुत ही शहीद सद्मा पहुँचा था—देर तक हम चुपचाप रहे।

फख़ टहलता रहा; मसऊद एक कोने मे बैठ गया; मैं ओवरकोट की जेबो मे हाथ डाले आसमान की तरफ देखता रहा। आसमान पर नामुकम्मल चाँद बिलकुल उस ज़र्द बेसवा लौंडिया की तरह, जिसके जिस्म का निचला हिस्सा क़तई तौर पर ग़ैर नुसवानी था, बादल के एक बहुत बडे टुकडे का दुपट्टा ओढने की कोशिश कर रहा था, उसके जरा कुछ दूर बादल का एक छोटा-सा सफेद टुकडा उस लडकी के नाना के जईफ[20] सिर की तरह लरज[21] रहा था—मेरे बदन पर झुरझुरी तारी हो गई।

हम गालिबन दस-बारह मिनट तक बाजार मे गुमसुम-से रहे।

फिर ताँगेवाला नीचे आया—फख़ के पास जाकर उसने कहा "आपने आठ बजे ताँगा लिया था, अब ग्यारह बजे हैं तीन घंटो के पैसे दे दीजिए "

फख़ ने कुछ कहे बगैर उसको दो रुपए दे दिए।

रुपए लेकर वह मुसकराया "साहब, आपको कुछ पहचान नहीं ऐसी करारी लौंडिया तो शहर भर मे नही मिलेगी आपको खैर, आपको इख्तियार है ताँगे में बैठिए, मैं अभी आया।"

ताँगेवाले को फिर ऊपर जाने की जहमत[22] न उठाना पडा कि वह सफ़ेद रेश बुड्ढा उसके पीछे-पीछे चला आया था और मोरी के पास खडा अपना ज़ईफ़ सिर हिला रहा था।

बुड्ढे को दो रुपए देने के बाद जब ताँगेवाले ने बागे थामीं तो उसकी सजीदगी गायब हो चुकी थी; 'चल बेटा' कहकर उसने अपनी भद्दी, मगर मसर्रत[23] भरी आवाज़ में गाना शुरू कर दिया : "सावन के नज़ारे हैं लला लला ला !"

---

1 मस्तिष्क का बोझिलपन; 2. मैलापन, 3 वांछित, चाहिए, 4 इच्छाशक्ति, 5 गंभीर; 6 स्पष्ट; 7 वतन के लोगो, 8 अलग, 9. गंभीरता; 10 सामूहिक, 11 स्वीकारोक्ति, 12 बेइज्जती; 13 क्षमा चाहना; 14 आकर्षण, 15 जिसमे नारीत्व न हो, 16 पीछे, 17 वृद्धावस्था; 18. उदासी; 19 सौंदर्य-प्रेम; 20 वृद्ध, 21 काँपना, 22. तकलीफ, 23 प्रसन्नता।

दस रुपए

वह गली के उस नुक्कड पर छोटी-छोटी लड़कियों के साथ खेल रही थी।

उसकी माँ उसे चाल में ढूँढ़ रही थी—किशोरी को अपनी खोली में बैठाकर और बाहरवाले से चाय लाने के लिए कहकर वह चाल की तीनों मंज़िलों में अपनी बेटी को तलाश कर चुकी थी, मगर जाने वह कहाँ मर गई थी। मैंडाम के पास जाकर भी उसने आवाज दी थी "रे सरिता सरिता!" मगर वह मैंडाम में तो थी ही नही और जैसाकि उसकी माँ समझ रही थी, अब सरिता को पेचिश की शिकायत भी नहीं थी कि दवा पिए बग़ैर उसको आराम आ चुका था।

वह बाहर गली के उस नुक्कड पर, जहाँ कचरे का ढेर पडा रहता है, छोटी-छोटी लड़कियों के साथ खेल रही थी और हर किस्म के फिक्रो-तरद्दुद[1] से आजाद थी।

उसकी माँ बहुत मुतफिक्कर[2] थी—वह किशोरी को अदर खोली मे बिठा आई थी। किशोरी ने कहा था : "तीन सेठ बाहर बड़े बाजार मे मोटर लिए खडे हैं।" सरिता कहाँ ग़ायब हो गई है मोटरवाले सेठ हर रोज़ तो आते नही यह तो किशोरी की मेहरबानी है कि महीने में एक-दो बार मोटी आसामी ले आता है वरना ऐसे मुहल्ले मे, जहाँ पान की पीकों और जली हुई बीडियों की मिली-जुली बू से किशोरी खुद घबराता हो, वहाँ भला सेठ लोग कैसे आ सकते हैं किशोरी होशियार है, इसीलिए वह किसी आदमी को मकान पर नहीं लाता, बल्कि सरिता को कपडे-वपडे पहनाकर बाहर ले जाता है वह उन लोगों से कह दिया करता है कि साहब, आजकल जमाना बड़ा नाज़ुक है; पुलिस के सिपाही हर वक्त घात में लगे रहते हैं; अब तक दो सौ धधा करनेवाली छोकरियाँ पकडी जा चुकी हैं; कोर्ट मे मुझ पर भी एक केस चल रहा है; इसलिए फूँक-फूँककर कदम रखना पडता है

सरिता की माँ को बहुत गुस्सा आ रहा था—जब वह नीचे उतरी तो सीढ़ियो के पास रामदेई बैठी बीडियो के पत्ते काट रही थी।

सरिता की माँ ने पूछा "तूने सरिता को कही देखा है ? जाने कहाँ मर गई है ! बस, *आज मुझे मिल जाए, वह चार चोट की मार मारूँ कि बद-बद ढीला हो जाए लोठा की लोठा हो गई है, पर सारा दिन लौंडों के साथ कुदक्कडे लगाती रहती है !"*

रामदेई बीड़ियों के पत्ते काटती रही। उसने सरिता की माँ को कोई जवाब न दिया।

सरिता की माँ ने रामदेई से खासतौर पर कुछ पूछा ही नहीं था, वह तो बस यूँही बड़बड़ाती हुई रामदेई के पास से गुजर गई थी—आमतौर पर यही होता था कि हर

दूसरे-तीसरे दिन उसे सरिता को ढूँढ़ना पड़ता था, और वह रामदेई को, जो सारा दिन सीढ़ियों के पास पिटारी सामने रखे बीड़ियों पर लाल और सफ़ेद धागे लपेटती रहती थी, मुख़ातिब[3] करके यही अल्फ़ाज़ दोहराया करती थी।

एक और बात वह चाल की सारी औरतों से कहा करती : 'मैं तो अपनी सरिता का किसी बाबू के साथ ब्याह करूँगी इसीलिए तो उससे कहती हूँ कि कुछ पढ़-लिख ले ! पास ही मुनसीपालटी ने एक स्कूल खोला है, सोचती हूँ कि उसमें सरिता को दाख़िल करा दूँ बहन, इसके पिता को बडा शौक था कि मेरी लड़की पढी-लिखी हो !' इसके बाद वह एक लंबी आह भरकर अपने मरे हुए शौहर का किस्सा छेड देती, जो चाल की हर औरत को ज़बानी याद था।

सरिता की माँ की बात तो जाने दीजिए, अगर रामदेई से पूछा जाता कि जब सरिता के बाप को (जो रेलवाई मे काम करता था) बडे साहब ने गाली दी तो क्या हुआ था, रामदेई फौरन बता देती कि सरिता के बाप के मुँह मे झाग भर आया था; वह साहब से कहने लगा 'मैं तुम्हारा नौकर नहीं हूँ, सरकार का नौकर हूँ तुम मुझ पर रोब नही जमा सकते देखो, अगर फिर गाली दी तो तुम्हारे ये दोनो जबडे हलक के अदर कर दूँगा , बस फिर क्या था, साहब ताव मे आ गया और उसने एक और गाली दे दी इस पर सरिता के बाप ने गुस्से मे साहब के गर्दन पर ऐसी धौल जमाई कि साहब का टोप दस गज परे जा गिरा और उसको दिन में तारे नजर आ गए मगर फिर भी वह बडा आदमी था, आगे बढकर उसने सरिता के बाप के पेट मे अपने फौजी बूटो से इस जोर की ठोकर मारी कि सरिता के बाप की तिल्ली फट गई और वही लाइनो के पास गिरकर उसने जान दे दी सरकार ने साहब पर मुकद्दमा चलाया और साहब से पूरे पाँच सौ रुपए सरिता की माँ को दिलवाए मगर सरिता की माँ की किस्मत बुरी थी, उसको सट्टा की चाट पड गई और पाँच महीने के अदर-अदर सारा रुपया बर्बाद हो गया '

सरिता की माँ की जबान पर हर वक्त यह कहानी जारी रहती थी, लेकिन किसी को यकीन नही था कि कहानी सच है या झूठ—चाल मे किसी आदमी को भी सरिता की माँ से हमदर्दी न थी, शायद इसलिए कि वह सबके-सब खुद हमदर्दी के काबिल थे, कोई किसी का दोस्त नही था। उस बिल्डिग मे अक्सर ऐसे आदमी रहते थे, जो दिन भर सोते थे और रात को जागते थे कि उन्हे रात को पासवाली मिल मे काम पर जाना होता था, उस बिल्डिग मे सब आदमी बिलकुल पास-पास रहते थे, लेकिन किसी को एक-दूसरे मे दिलचस्पी न थी।

चाल मे करीब-करीब सब लोग जानते थे कि सरिता की माँ अपनी जवान बेटी से पेशा कराती है। जब वह कहा करती 'मेरी बेटी को तो दुनिया की कुछ खबर ही नही ' ना कोई उसको झुठलाने की कोशिश न करता था कि वह किसी के साथ अच्छा-बुरा सलूक करने के आदी ही न थे—बस, एक बार ऐसा हुआ था कि सुबह-सवेरे नल के पास तुकाराम ने सरिता को छेडा था और सरिता की माँ तुकाराम की बीवी को पुकारते हुए बहुत चीखी-चिल्लाई थी 'इस मुए गजे को तू सँभाल के क्यो नही रखती परमात्मा करे यह दोनो आँखो से अधा

हो जाए, जिनसे इसने मेरी कुँआरी बेटी की तरफ बुरी नजरों से देखा है सच कहती हूँ, एक रोज़ ऐसा फ़साद होगा कि तेरी इस गंजी सौगात का मारे जूतों के सिर पिलपिला कर दूँगी ... बाहर जो चाहे करता फिरे पर यहाँ इसे भले मानसों की तरह रहना होगा सुना तूने ?' और तुकाराम की भैंगी बीवी धोती बाँधते-बाँधते बाहर निकल आई थी : 'खबरदार मुई चुड़ैल, जो तूने एक लफ़्ज़ भी और ज़बान से निकाला यह तेरी सरिता तो होटल के छोकरों से भी आँख-मिचौली खेलती है और तू क्या हम सबको अंधा समझती है क्या हम सब जानते नहीं कि तेरी सरिता आए दिन बन-सँवर के बाहर क्यों जाती है बडी आई इज़्ज़तवाली जा जा, दूर दफ़न हो यहाँ से ' फिर सरिता की माँ ने बहुत जोर देकर नफरत भरे लहजे मे कहा था 'और वह तेरा यार घासलेटवाला दो-दो घटे उसे खोली मे बिठाकर क्या तू उसका घासलेट सूँघती रहती है '

तुकाराम की भैंगी बीवी के मुताल्लिक[4] बहुत-सी बाते मशहूर थी और यह बात तो खासतौर पर सब लोगो को मालूम थी कि जब घासलेटवाला आता है, तो वह उसे अदर बुलाकर दरवाजा बद कर लेती है—तुकाराम की बीवी से सरिता की माँ की बोलचाल ज़्यादा देर तक बद न रही थी और फिर दोनो का आपस मे समझौता हो गया था कि एक रोज़ रात को सरिता की माँ ने तुकाराम की बीवी को घुप अँधेरे में किसी से मीठी-मीठी बाते करते पकड़ लिया था और दूसरे रोज रात को तुकाराम की बीवी ने सरिता को एक जैंटेलमेन आदमी के साथ मोटर में बैठे देख लिया था।

सरिता की माँ बड़बडाते हुए सरिता को इधर-उधर खोज रही थी कि सामने से तुकाराम की बीवी आ गई—सरिता की माँ ने पूछा . "तूने कही सरिता को तो नही देखा ?"

तुकाराम की बीवी ने भैंगी आँखो से गली के नुक्कड की तरफ देखा "वहाँ घूरे के पास पनवाड़ी की लौंडिया के साथ खेल रही है " फिर उसने आवाज़ धीमी करके पूछा "अभी-अभी किशोरी ऊपर गया था क्या तुमसे मिला ?"

सरिता की माँ ने इधर-उधर देखकर हौले से कहा "ऊपर बिठा आई हूँ पर यह सरिता हमेशा वक्त पर कहीं गायब हो जाती है कुछ सोचती नही, कुछ समझती नही, बस दिन भर खेलती-कूदती रहती है " यह कहकर वह तेजी से घूरे की तरफ बढी और जब वह सीमेट की बनी हुई सतरी के पास पहुँची तो उसे देखकर सरिता फौरन उठ खडी हुई।

सरिता के चेहरे पर अफसुर्दगी[5] के आसार पैदा हो गए—उसकी माँ ने उसका बाजू पकडते हुए और उसे खीचते हुए खस्म आलूद[6] लहजे मे कहा ' चल घर चलकर मर तुझे तो सिवाय उछल-कूद के और कोई काम ही नही " फिर रास्ते मे उसकी माँ ने हौले-से कहा "किशोरी बडी देर से आया बैठा है एक मोटरवाले सेठ को लाया है चल तू भाग के ऊपर चल और जल्दी-जल्दी तैयार हो जा और सुन, वह नीली जार्जेट की साडी पहनियो और देख, यह तेरे बाल बहुत बुरी तरह बिखर रहे है तू जल्दी से तैयार हो जा, कंघी मैं कर दूँगी।"

यह सुनकर कि कोई मोटवाले सेठ आए हैं, सरिता बहुत खुश हुई; उसे सेठ से इतनी दिलचस्पी नही थी, जितनी मोटर से। मोटर की सवारी उसे बहुत पसद थी, जब मोटर

फर्राटे भरती हुई खुली-खुली सडको पर चलती और उसके मुँह पर हवा के तमाचे पडते तो उसके दिल मे एक नाकाबिले-बयान मसर्रत[7] उबलना शुरू हो जाती, मोटर मे बैठकर उसको हर शै एक हवाई चक्कर दिखाई देती और वह समझती कि वह खुद एक बगूला है, जो सड़को पर उड़ता चला जा रहा है।

सरिता की उम्र ज्यादा से ज्यादा पद्रह बरस की होगी, मगर उसमे भपना[8] तेरह बरस की लड़कियो का-सा था; वह औरतो से मिलना-जुलना और उनसे बाते करना बिलकुल पसंद नहीं करती थी; वह सारा-सारा दिन छोटी-छोटी लड़कियो के साथ ऊटपटाँग खेलो मे मसरूफ रहती, ऐसे खेल जिनका कोई मतलब ही न हो; मिसाल के तौर पर वह गली की काली लुकफिरी सडक पर खड़िया मिट्टी से लकीरे खीचने मे बहुत दिलचस्पी लेती थी और इस खेल मे वह इस इन्हिमाक[9] से मसरूफ[10] रहती थी, जैसे सडक पर यह टेढी-तिरछी लकीरे अगर न खीची गईं तो आमदो-रफ्त बद हो जाएगी; कभी-कभी खोली मे पुराने टाट उठाकर, अपनी नन्ही-नन्ही सहेलियों के साथ कई-कई घटे उन टाटो को फुटपाथ पर झटकने, साफ़ करने, बिछाने और फिर उन टाटों पर बैठे रहने के गैर दिलचस्प खेल मे मशगूल रहती थी।

सरिता खूबसूरत नही थी; रग उसका सियाही माइल गदमी था; बबई के मरतूब मौसम के बायस उसके चेहरे की जिल्द हर वक्त चिकनी रहती थी; उसके पतले-पतले होठो पर, जो चीकू के छिलके दिखाई देते थे, हर वक्त एक खफ़ीफ-सी[11] लरजिश[12] तारी रहती थी और ऊपर के होठ पर पसीने की तीन-चार नन्ही-नन्हीं बूँदे हमेशा कँपकँपाती रहती थी—उसकी सेहत अच्छी थी, कि गलाजत में रहने के बावजूद उसका जिस्म सुडौल और मुतनासिब[13] था; ऐसा मालूम होता था कि उस पर जवानी का हमला बडी शिद्दत[14] से हुआ है; जब वह सडक पर फुर्ती से इधर-उधर चलती थी और जब उसकी मैली घघरी ऊपर को उठ जाती थी तो कई राह चलते मर्दों की निगाहें उसकी पिडलियो की तरफ उठ जाती थी, जिनमे जवानी के हमले के बायस ताजा रदा की हुई सागवान की लकडी-जैसी चमक दिखाई देती थी, उन पिडलियो पर, जो बालो से बिलकुल बेनियाज[15] थी, मुसामों के नन्हे-नन्हे निशान देखकर उन सगतरो के छिलके याद आ जाते थे, जिनके छोटे-छोटे खलियो में तेल भरा होता है और जो थोड़ा-सा दबाव पडने पर ऊपर की तरफ उठकर आँखो में घुस जाया करता है—उसकी बाँहे भी सुडौल थीं; कधो पर उनकी गोलाई, मोटे और बडे बेढब तरीके से सिले हुए ब्लाउज के बावजूद, बाहर झाँकती थी—उसके बाल बडे घने और लबे थे और उनमे से खोपड़े के तेल की बू आती रहती थी, वह अपने बालो की लबाई से खुश नहीं थी कि खेलकूद के दौरान मे उसकी चोटी उसे बहुत तकलीफ दिया करती थी, जो एक मोटे कोडे के मानिद उसकी पीठ को थपकती रहती थी; उसे अपनी चोटी को मुख्तलिफ[16] तरीकों से काबू मे रखना पडता था।

सरिता का दिलो-दिमाग़ हर क़िस्म के फिक्रो-तरद्दुद से आज़ाद था। दोनो वक्त उसे खाने को मिल जाता था। उसकी माँ घर का सब काम-काज करती थी। हाँ, सुबह को सरिता दो बालटियाँ पानी से भरकर अंदर रख देती और शाम को हर रोज लैंप मे एक पैसे

का तेल भरवा लाती—कई बरसो से वह यह काम बड़ी बाक़ाइदगी से कर रही थी; हर शाम आदत के बायस खुद ब खुद उसका हाथ उस प्याले की तरफ बढ़ता, जिसमे पैसे पडे होते और फिर वह लैंप उठाकर नीचे चली जाती।

कभी-कभी, यानी महीने में चार या पाँच बार जब किशोरी सेठ लोगों को लिए आता था तो सेठ लोगो के साथ होटलो मे या कहीं अँधेरे मुकामों पर जाने को वह तफ़रीह ख़याल करती थी; उसने इस बाहर जाने के सिलसिले के दूसरे पहलुओं पर कभी गौर नही किया था, वह समझती थी कि दूसरी लडकियों के घरो में भी किशोरी-जैसे आदमी आते होगे और उन्हे भी सेठ लोगो के साथ बाहर जाना पडता होगा, और रात को वरली के ठडे-ठडे बैंचों पर या जुहू की गीली रेत पर जो कुछ होता है, सबके साथ होता होगा। एक बार उसने अपनी माँ से कहा था 'माँ, अब तो शांता भी काफी बडी हो गई है उसको भी मेरे साथ भेज दिया करो ना यह सेठ लोग मुझे अडे खाने को देते हैं शाता को अंडे बहुत अच्छे लगते हैं ' और उसकी माँ ने गोलमोल बात कही थी · 'हाँ-हाँ, उसको भी किसी रोज तुम्हारे साथ भेज दूँगी उसकी माँ तो पूना से वापिस आ जाए ' और दूसरे ही रोज उसने शाता को, जो उस वक्त सडास से निकल रही थी, यह खुशखबरी सुनाई थी 'तेरी माँ पूना से आ जाए तो सब मामला ठीक हो जाएगा तू भी मेरे साथ वरली जाया करेगी ' फिर उसने पिछली रात की बात शाता को कुछ इस तरीके से सुनाना शुरू की थी, जैसे उसने कोई बहुत ही प्यारा सपना देखा हो। शाता को, जो सरिता से दो बरस छोटी थी, सरिता की बाते सुनकर कुछ ऐसा लगा था, जैसे उसके सारे जिस्म के अदर नन्हे-नन्हे घुँघरू बज रहे हो, सरिता की सब बाते सुनकर भी उसकी तसल्ली न हुई थी, और उसने सरिता का बाज़ू खीचकर कहा था 'चल, नीचे चलते हैं वहाँ बातें करेगे ।' फिर वे दोनों मृतरी के पास, जहाँ गिरधारी बनिए ने बहुत-से टाटो पर खोपडे के मैले टुकडे सुखाने के लिए डाल रखे थे, बैठकर देर तक कँपकँपी पैदा करनेवाली बाते करती रही थी।

धोती के परदे के पीछे सरिता नीली जार्जेट की साडी पहन रही थी और साडी के मस ही से उसके बदन मे गुदगुदी हो रही थी, मोटर की सैर का खयाल उसके दिमाग मे परिंदो की-सी फडफडाहटें पैदा कर रहा था—अबकी बार सेठ कैसा होगा और उसे कहाँ ले जाएगा यह और इस किस्म के दूसरे सवाल उसके दिमाग में नही आ रहे थे, जल्दी-जल्दी कपडे बदलते हुए उसने एक-दो मर्तबा यह जरूर सोचा कि ऐसा न हो, मोटर चले और चद ही मिनटो मे किसी होटल के दरवाजे पर रुक जाए, फिर एक बद कमरे मे सेठ शराब पीना शुरू कर दे और उसका दम घुटना शुरू हो जाए—उसे होटलो के बद कमरे पसद नही थे कि उनमे आमतौर पर लोहे की दो चारपाइयाँ इस तौर पर बिछी होती हैं, गोया उन पर जी भरकर सोने की इजाजत नही है।

जल्दी-जल्दी उसने जार्जेट की साडी पहनी और शिकने दुरुस्त करती हुई एक लम्हे के लिए किशोरी के सामने आ खडी हुई "किशोरी, जरा देखो, पीछे से साडी ठीक है न?" और जवाब का इतजार किए बगैर वह लकडी के उस टूटे हुए बक्स की तरफ बढ़ी, जिसमे उसने जापानी सुर्खी रखी हुई थी, एक धुँधले आईने को खिडकी की सलाखो मे अटकाने के

बाद दोहरी होकर उसके गालो पर पाउडर मला, फिर जब सुर्खी लगाकर वह बिलकुल तैयार हो गई तो मुसकराकर उसने किशोरी की तरफ दाद तलब[17] निगाहो से देखा—शोख रग की नीली साडी में, होठो पर बेतरतीबी से सुर्खी की धडी जमाए और साँवले गालो पर प्याजी रग का पाउडर मले वह मिट्टी का एक ऐसा खिलौना मालूम हो रही थी, जो दीवाली के दिनो मे खिलौने बेचनेवालो की दूकान में सबसे ज्यादा नुमायाँ दिखाई दिया करता है।

इतने में उसकी माँ आ गई—उसने जल्दी-जल्दी सरिता के बाल दुरुस्त किए और कहा "देखो बेटा, अच्छी-अच्छी बाते करना जो कुछ वह कहे, मान लेना यह सेठ जो हैं, बडे आदमी हैं मोटर इनकी अपनी है" फिर किशोरी से मुखातिब होकर उसने कहा . "अब तू जल्दी से ले जा इसे बेचारे कब के खडे राह देख रहे होगे।"

दूसरे ही लम्हे किशोरी और सरिता गली मे थे।

बाहर बड़े बाजार मे, जहाँ एक कारखाने की लबी-सी दीवार दूर तक चली गई है, एक पीले रग की मोटर 'यहाँ पेशाब करना मना है' के छोटे-से बोर्ड के पहलू मे खडी थी और मोटर मे तीन हैदराबादी नौजवान अपनी-अपनी नाक पर रूमाल रखे किशोरी का इतजार कर रहे थे—वह मोटर और आगे कहाँ ले जाते कि दीवार भी दूर तक चली गई थी और पेशाब का सिलसिला भी।

जब गली के मोड पर उस नौजवान को, जो मोटर का हैंडिल थामे बैठा था, को किशोरी नजर आया तो उसने अपने बाकी दो साथियो से कहा "लो भई, वह आ गए वह रहा किशोरी और और" उसने गली के मोड की तरफ निगाहे जमाए रखी "अरे यह तो बिलकुल छोटी-सी लडकी है जरा तुम भी देखो न—अरे भई, वो नीली साडी मे" और जब किशोरी और सरिता मोटर के पास पहुँच गए तो पिछली सीट पर बैठे दो नौजवानो ने सीट के दरमियान में से अपने-अपने हैट उठा लिए और जगह बना दी—किशोरी ने आगे बढकर मोटर का पिछला दरवाजा खोला और फुर्ती से सरिता को अदर दाखिल कर दिया। दरवाजा बद करने के बाद किशोरी ने उस नौजवान से, जो मोटर का हैंडिल थामे हुए था, कहा "माफ कीजिएगा, जरा देर हो गई यह बाहर अपनी किसी सहेली के पास गई हुई थी तो तो"

उस नौजवान ने मुडकर सरिता की तरफ देखा और फिर किशोरी से कहा "ठीक है लेकिन" उसने मोटर की खिडकी मे से अपना सिर बाहर निकाला और हौले-से कहा "शोर-वोर तो नही मचाएगी ना ?"

किशोरी ने अपने सीने पर हाथ रखकर कहा "सेठ, आप मुझ पर भरोसा रखिए"

उस नौजवान ने जेब म स दो रुपए निकाले और किशोरी के हाथ मे थमा दिए "जाओ, ऐश करो।"

किशोरी ने सलाम किया और नौजवान ने मोटर स्टार्ट कर दी।

शाम के पाँच बज रहे थे।

बबई के बाजारो म गाडियो, ट्रामो, बसो और लोगो की आमदो-रफ्त[18] बहुत ज्यादा थी—सरिता खामोशी म दो नौजवानो के बीच मे दुबकी-सी बैठी हुई थी; बार-बार वह

अपनी रानों को जोड़कर उन पर अपने हाथ रख देती, वह कुछ कहते-कहते रुक-सी जाती शायद वह मोटर चलानेवाले नौजवान से कहना चाहती थी : 'सेठ, जल्दी-जल्दी मोटर चलाओ यूँ तो मेरा दम घुट जाएगा।'

बहुत देर तक किसी ने कोई बात न की—अगली सीट पर बैठा नौजवान मोटर चलाता रहा और पिछली सीट पर दोनों हैदराबादी नौजवान दाएँ और बाएँ कोनो मे सिमटे अपनी-अपनी अचकनों में वह इज्तिराब[19] छुपाते रहे, जो अबकी दफा एक जवान लडकी को बिलकुल अपने पास देखकर उन्हें महसूस हो रहा था, ऐसी जवान लडकी जो कुछ वक्त के लिए उनकी अपनी थी, यानी जिससे वह बिला खौफो-खतर[20] छेडछाड कर सकते थे।

वह नौजवान, जो मोटर चला रहा था, दो बरस मे बबई मे कयामपजीर[21] था और सरिता-जैसी कई लडकियाँ दिन के उजाले और रात के अँधेरे मे देख चुका था; उसकी पीली मोटर मे मुख्तलिफ रग व नस्ल की छोकरियाँ दाखिल हो चुकी थीं, इसलिए उसे कोई खास बेचैनी महसूस नही हो रही थी—हैदराबाद से उसके दो दोस्त आए हुए थे और उनमे एक, जिसका नाम शहाब था, बंबई में पूरी तरह सैरो-तफरीह करना चाहता था और उसी के लिए किफायत ने, यानी बबई में कयामपजीर मोटर के मालिक ने अजराहे[22] दोस्तनवाजी किशोरी के जरिए सरिता हासिल कर ली थी, दूसरे हैदराबादी दोस्त अनवर मे इखलाकी कुव्वत[23] कम थी, इसलिए वह मारे शर्म के किफायत से यह न कह सका कि उसके लिए भी एक हो जाए।

किफायत ने सरिता को पहले कभी नहीं देखा था कि किशोरी बहुत देर के बाद यह नई छोकरी कही से निकालकर लाया था, इस नएपन के बावजूद उसने अभी तक सरिता मे दिलचस्पी न ली थी, शायद इसलिए कि वह एक वक्त मे सिर्फ एक काम कर सकता था, शायद मोटर चलाने के साथ-साथ वह सरिता की तरफ ध्यान नही दे सकता था।

जब शहर पीछे रह गया और मोटर मजाफात[24] की एक सडक पर चलने लगी तो सरिता उछल पडी, वह दबाव जो अब तक उसने अपने ऊपर डाल रखा था, ठडी हवा के झोंको और उडती हुई मोटर ने एकदम उठा दिया, उसके अदर बिजलियाँ-सी दौड गईं और वह सर-ता-पा[25] हरकत बन गई; उसकी टाँगें थिरकने लगी, बाजू नाचने लगे, उँगलियाँ कँपकँपाने लगी और वह अपने दोनो तरफ भागते हुए दरख्तो को दौडती हुई निगाहो से देखने लगी।

अब शहाब और अनवर भी आराम महसूस कर रहे थे—शहाब ने, जो सरिता पर अपना हक समझता था, हौले-से अपना बाजू उसकी कमर मे हाइल करना चाहा तो एकदम सरिता के गुदगुदी उठी और वह तडपकर अनवर पर जा गिरी, पर पीली मोटर की खिडकियों मे से बाहर उछलकर दूर तक पीछे की जानिब उसकी हँसी लुढकती चली गई। शहाब ने जब एक बार फिर उसकी कमर की तरफ हाथ बढाया तो वह दोहरी हो गई और हँसते-हँसते उसका बुरा हाल हो गया—अनवर कोने मे दुबका पडा बैठा रहा और अपने मुँह मे थूक पैदा करने की कोशिश करता रहा।

शहाब के दिलो-दिमाग मे शोख रग भर गए। उसने किफायत से कहा : "वल्लाह,

बडी करारी लौंडिया है '' यह कहकर उसने जोर से सरिता की रान मे चुटकी भर ली।

सरिता ने इसके जवाब में अनवर का कान हौले-से मरोड दिया, शायद इसलिए कि वह उसके बिलकुल पास था—मोटर मे कहकहे उबलने लगे।

किफायत बार-बार मुड-मुडकर देख रहा था, हालाँकि उसे अपने सामने लगे छोटे-से आईने में सबकुछ दिखाई दे रहा था—कहकहो के जोर का साथ देने की खातिर उसने मोटर की रफ्तार तेज़ कर दी।

सरिता का जी चाहा कि वह बाहर, सामने, मोटर के मुँह पर बैठ जाए, वहाँ, जहाँ हवा के टकराव से काँपती हुई परी फंसी पडी थी—वह आगे की तरफ झुकी हुई थी, शहाब ने उसे छेडा तो सँभलने की खातिर उसने किफायत के गले मे अपनी बाँहे हमाइल[26] कर दी, किफायत ने गैर इरादी तौर पर उसके हाथ चूम लिए, एक सनसनी-सी उसके जिस्म मे दौड गई और वह फाँदकर अगली सीट पर किफायत के पास बैठ गई और उसकी टाई मे खेलने लगी ''तुम्हारा नाम क्या है ?'' उसने किफायत से पूछा।

''मेरा नाम ?'' किफायत ने कहा ''मेरा नाम किफायत है।'' यह कहकर उसने दस रुपए का एक नोट सरिता के हाथ मे थमा दिया।

सरिता ने उसके नाम की तरफ कोई तवज्जोह[27] न दी और नोट अपनी चोली मे उडसकर बच्चो की तरह खुश होकर कहा ''तुम बहुत अच्छे आदमी हो तुम्हारी यह टाई बहुत अच्छी है।'' उस वक्त सरिता को हर शै अच्छी नजर आ रही थी, वह चाहती थी कि जो कुछ बुरा है, अच्छा हो जाए और और फिर ऐसा हो कि मोटर तेजी से दौडती रहे और हर शै हवाई बगूला बन जाए, एकदम उसका जी चाहा कि गाए—उसने किफायत की टाई छोड दी और गाना शुरू कर दिया 'तुम्ही ने मुझको प्रेम सिखाया सोए हुए हृदय को जगाया 'कुछ देर वह यह फिलमी गीत गाती रही, फिर एकदम पिछली सीट की तरफ घूम गई और अनवर को गुमसुम देखकर कहने लगी ''तुम चुपचाप क्यों बैठे हो कोई बात करो, कोई गीत गाओ '' यह कहती हुई वह उचककर पिछली सीट पर चली गई और फिर शहाब के बालों मे अपनी उँगलियो से कघी करने लगी ''आओ, हम दोनो गाएँ तुम्हे याद है वह गाना, जो देविका रानी ने गाया था मैं बन की चिडिया बन के बन बन डोलूँ रे—देविका रानी कितनी अच्छी है '' उसने दोनो हाथ जोडकर अपनी ठोढी के नीचे रख लिए और आँखे झपकाते हुए कहा ''देविका रानी और अशोक कुमार पास-पास खडे थे देविका रानी कहती थी मैं बन की चिडिया बन के बन बन डोलूँ रे और अशोक कुमार कहता था तुम कहो ना '' सरिता ने गाना शुरू कर दिया ''मै बन की चिडिया बन के बन बन डोलूँ रे ''

शहाब ने अपनी भद्दी आवाज बुलद की ''मैं बन का पछी बन के बन बन डोलूँ रे ''

और फिर बाक़ाइदा ड्यूएट[28] शुरू हो गया; किफायत ने हॉर्न बजाकर ताल का साथ दिया, सरिता ने तालियाँ बजानी शुरू कर दीं—सरिता का बारीक सुर, शहाब की फटी हुई आवाज, हॉर्न की पों-पो, हवा की साँय-साँय और मोटर के इजन की फडफडाहट, सब मिल-जुलकर एक आरकेस्ट्रा बन गए।

सरिता ख़ुश थी, शहाब ख़ुश था, किफ़ायत ख़ुश था इन सबको ख़ुश देखकर अनवर को भी ख़ुश होना पड़ा; वह दिल मे बहुत शर्मिंदा हुआ कि उसने ख़्वाहमख़्वाह अपने को क़ैद कर रखा है; उसके बाज़ुओ में हरकत पैदा हुई, उसके सोए हुए जज़्बात ने अँगड़ाइयाँ लीं और वह सरिता, शहाब और किफ़ायत की शोर-अफ़शाँ[29] ख़ुशियों में शरीक होने के लिए तैयार हो गया।

गाते-गाते सरिता ने अनवर के सिर पर से उसका हैट उतारकर अपने सिर पर रख लिया, जो बेध्यानी मे अनवर ने पहन लिया था यह देखने के लिए कि हैट उसके सिर पर कैसा लगता है, सरिता उचककर अगली सीट पर चली गई और नन्हे-से आईने मे अपना हैट से ढका हुआ सिर और चेहरा देखने लगी।

अनवर सोचने लगा, क्या वह मोटर में शुरू ही से हैट पहने बैठा है।

सरिता ने जोर से किफायत की मोटी रान पर तमाचा मारा "अगर मैं तुम्हारी पतलून पहन लूँ और कमीज पहनकर तुम्हारी-ऐसी टाई लगा लूँ तो क्या मैं पूरा साहब न बन जाऊँगी ?"

किफायत की समझ मे कुछ न आया कि वह क्या कहे, क्या करे—उसने यूँही अनवर से कहा . "अनवर, वल्लाह तुम निरे चुगद हो"

अनवर ने महसूस किया कि वह वाकई बहुत बडा चुगद है।

किफायत ने सरिता से पूछा "तुम्हारा नाम क्या है ?"

"मेरा नाम ?" सरिता ने हैट के फीते को अपनी ठोढी के नीचे जमाते हुए कहा "मेरा नाम सरिता है।"

शहाब पिछली सीट मे बोला "सरिता, तुम लडकी नही फुलझडी हो।"

अनवर ने कुछ कहना चाहा, मगर कुछ कह न सका।

सरिता ने ऊँचे सुरों मे गाना शुरू कर दिया "प्रेम नगर मैं बनाऊँगी घर मे तज के सब मन-सा-आ-र"

किफायत और शहाब के दिल मे बयक-वक्त यह ख्वाहिश पैदा हुई कि उनकी यह मोटर यूँही सारी उम्र चलती रहे।

अनवर फिर सोच रहा था कि वह चुगद नही है, तो क्या है।

'प्रेम नगर में बनाऊँगी घर मैं तज के सब मन-सा-आ-र' के टुकडे देर तक उडते रहे।

सरिता के बाल, जो उसकी ढीली चोटी की गिरफ्त मे अब आजाद हो गए थे, यूँ लहरा रहे थे, जैसे गाढ़ा धुआँ हवा के दबाव से बिखर रहा हो—वह खुश थी।

शहाब खुश था, किफायत खुश था और अब अनवर फिर खुश होने का इरादा कर रहा था।

गीत खत्म हुआ तो सबको थोडी देर के लिए महसूस हुआ कि जो जोर की बारिश हो रही थी, एकाएकी थम गई है। किफायत ने सरिता से कहा "कोई और गीत गाओ।"

सरिता ने गाना शुरू कर दिया . ''मोरे अँगना में आए आली मैं चाल चलूँ मतवाली ''

मोटर भी मतवाली चाल चल रही थी।

आखिरकार सडक के सारे पेच खत्म हो गए और समंदर का किनारा आ गया।

दिन ढल रहा था और समंदर से आनेवाली हवा खुनुकी इख़्तियार[30] कर रही थी।

मोटर रुकी तो सरिता ने हैट उतारकर सीट पर रख दिया और दरवाजा खोलकर बाहर निकल आई; फिर उसने साहिल[31] के साथ-साथ बेमक़सद दौडना शुरू कर दिया।

किफायत और शहाब भी दौड़ने लगे।

खुली फजा में, बेपायाँ समदर के पास, ताड़ के ऊँचे-ऊँचे पेडो तले, गीली-गीली रेत पर सरिता समझ न सकी कि वह क्या चाहती है, उसका जी चाह रहा था कि बयकवक्त[32] फजा में घुल जाए, समदर में फैल जाए, इतनी ऊँची उठ जाए कि ताड के दरख्तों को ऊपर से देख सके, साहिल की रेत की सारी नमी पैरो के ज़रिए अपने अदर जज्ब[33] कर ले और फिर और फिर वही मोटर हो, वही उडाने, वही तेज-तेज झोके और वही मुसलसल[34] पौं-पौं—वह बहुत ख़ुश थी।

जब तीनों हैदराबादी नौजवान साहिल की गीली-गीली रेत पर बैठकर बीयर पीने की तैयारी करने लगे तो किफायत के हाथ से सरिता ने बोतल छीन ली ''ठहरो, मैं डालती हूँ '' उसने इस तरह गिलास मे बीयर उँडेली कि झाग ही झाग पैदा हो गए; वह यह तमाशा देखकर बहुत खुश हुई, साँवले-साँवले झागों मे उसने अपनी एक उँगली खबोई और अपने मुँह मे डाल ली, जब कडवाहट महसूस हुई तो बुरा मुँह बनाया।

किफायत और शहाब बेइख़्तियार हँस पडे—अनवर भी हँस रहा था।

बीयर की छः बोतलें कुछ तो झाग बनकर साहिल की रेत में जज्ब हो गईं और कुछ किफायत, शहाब और अनवर के पेट में चली गईं।

सरिता गाती रही।

अनवर ने एक बार निगाहें जमाकर सरिता की तरफ देखा—उसे महसूस हुआ कि वह बीयर की बनी हुई है; उसके साँवले गाल समदर की नम आलूद हवा के मस[35] से गीले हो रहे थे, वह बेहद मसरूर[36] थी अब अनवर भी खुश था; उसके दिल में यह ख्वाहिश पैदा हो रही थी कि समंदर का सारा पानी बीयर बन जाए और वह उसमें गोते लगाए, सरिता उसमें डुबकियाँ ले।

सरिता ने एक-एक खाली बोतल अपने दोनों हाथो में थामी और धीरे-से एक दूसरी से टकरा दी; झकार पैदा हुई तो उसने जोर-जोर से हँसना शुरू कर दिया—किफायत, शहाब और अनवर भी हँसने लगे।

हँसते-हँसते सरिता ने किफ़ायत से कहा ''आओ मोटर चलाएँ ''

सब उठ खड़े हुए।

खाली बोतलें गीली-गीली रेत पर औंधा पडी रह गईं और वे सब भागकर मोटर में बैठ गए।

फिर वही हवा के तेज-तेज झोके आने लगे, वही मुसलसल पौं-पौं शुरू हो गई, वही सरिता के गाढा धुआँ-से बाल बिखरने लगे—गीतों का सिलसिला फिर शुरू हो गया।

मोटर हवा में आगे की तरह चलती रही और सरिता गाती रही—वह पिछली सीट पर शहाब और अनवर के दरमियान बैठी हुई थी; अनवर ऊँघ रहा था, उसने शरारत से शहाब के बालों में अपने दाएँ हाथ की उँगलियों से कंघी करना शुरू कर दी और वह उसके देखते-देखते सो गया; उसने अनवर की तरफ रुख किया तो उसे भी सोया हुआ पाया—वह दोनों के बीच में से उठकर अगली सीट पर किफायत के पास बैठ गई और आवाज दबाकर होले-से कहने लगी : 'आपके दोनो दोस्तो को सुला आई हूँ . अब आप भी सो जाइए . ''

किफायत मुसकराया : ''फिर मोटर कौन चलाएगा ?''

सरिता भी मुसकराई : ''अपने-आप चलती रहेगी।''

फिर वह बाजार आ गया, जहाँ किशोरी ने सरिता को मोटर के अंदर दाखिल किया था, फिर वह दीवार आ गई, जहाँ 'यहाँ पेशाब करना मना है' का बोर्ड लगा हुआ था।

सरिता ने कहा : ''बस यहाँ रोक दो।''

मोटर रुकी ही थी और पेशतर इसके कि किफायत कुछ सोच सकता या कह सकता, सरिता मोटर से बाहर निकल चुकी थी, उसने इशारे से सलाम किया और गली की तरफ चल दी।

किफ़ायत हैंडिल पर हाथ रखे हुए सरिता को जाता हुआ देख रहा था और साथ ही अपने जेहन में सारी शाम को ताज़ा करने की कोशिश कर रहा था कि सरिता के कदम रुक गए, वह मुडी; उसकी तरफ बढी; करीब पहुँची और चोली में से दस रुपए का नोट निकालकर उसने किफायत के पास सीट पर रख दिया।

किफायत ने हैरत से नोट की तरफ देखा और कहा : ''सरिता, यह क्या . ''

''यह रुपए . लेकिन किस बात के ?'' यह कहकर वह फुर्ती से दौड गई।

किफायत सीट के गद्दे पर पड़े हुए नोट की तरफ देखता रह गया—फिर उसने मुडकर पिछली सीट की तरफ देखा—शहाब और अनवर भी नोट की तरह पड़े हुए थे।

---

1 चिंता, 2 चिंतित, 3 संबोधित, 4 संबोधित, 5 दुख, 6 क्रोधित होकर; 7 प्रसन्नता, 8 शारीरिक विकास, 9 तन्मयता, 10 व्यस्त, 11 हल्की-सी, 12 कँपकँपी, 13 सुगठित, 14 तीव्रता, 15 आज़ाद, 16 विभिन्न, 17 प्रशंसा पाने की इच्छुक, 18 आवागमन, 19. आतुरता, व्याकुलता, 20 बगैर किसी डर के, 21 ठहरा हुआ, 22 वास्ते, 23 शिष्टाचार, 24. शहर के पास की बस्ती, 25 सिर से पैर तक, 26 डालना, 27 ध्यान, 28. युगल गीत; 29 शोर-शराबा, 30. अधिकार, 31 किनारा, 32 उसी समय, एक ही समय, 33 सोख लिया जाना, 34 निरंतर, 35 स्पर्श, 36 प्रसन्नचित्त।

बर्मी लडकी

ज्ञान की शूटिंग थी, इसलिए किफायत जल्दी सो गया।

फ्लैट मे और कोई था नही, बीवी-बच्चे रावलपिंडी चले गए थे, हमसायो से उसे कोई दिलचस्पी नही थी; यूँ भी बबई में लोगो को अपने हमसायों से कोई सरोकार नही होता—किफायत ने ब्राडी के चार पैग पिए, खाना खाया, नौकरों को नीचे बाज़ार मे सोने के लिए भेजा और दरवाजा बंद करके सो गया।

सुबह पाँच बजे के करीब उसके खुमार आलूद कानों को 'धक' की आवाज सुनाई दी, उसने आँखे खोली, उसी वक्त नीचे बाजार में से एक ट्राम दनदनाती हुई गुजरी—चंद लम्हात के बाद दरवाज़े पर बडे ज़ोरो की दस्तक हुई।

वह उठा; पलंग से उतरा तो उसके नगे पैर टख़नो तक पानी में चले गए; उसको सख्त हैरत हुई कि कमरे मे इतना पानी कहाँ से आ गया, बाहर कॉरीडोर मे कमरे से भी ज्यादा पानी था।

दरवाजे पर दस्तक जारी थी—उसने पानी के मुताल्लिक सोचना छोडा और दरवाजा खोला।

ज्ञान ने जोर से कहा "इतनी देर ? यह सब क्या है?"

किफायत ने जवाब दिया "पानी "

"पानी नही, लडकी ।" यह कहकर ज्ञान नीम अँधेरे कॉरीडोर मे दाखिल हुआ—उसके पीछे एक छोटे-से कद की लडकी थी।

ज्ञान को फर्श पर फैले हुए पानी का कुछ एहसास न हुआ, लेकिन लडकी ने कॉरीडोर मे दाखिल होते ही अपना पाजामा जरा ऊपर उठा लिया और छोटे-छोटे कदम उठाती ज्ञान के पीछे चली गई।

किफायत के जेहन मे पहले पानी था, अब वह लड़की दाखिल हो गई और डुबकियाँ लगाने लगी . 'यह लड़की कौन है शक्लो-सूरत और लिबास से बर्मी मालूम होती है लेकिन ज्ञान इसे कहाँ से ले आया?'

ज्ञान अंदर कमरे में जाकर कपडे तब्दील किए बग़ैर पलग पर लेटा और लेटते ही सो गया—किफायत ने उससे बात करना चाही, मगर ज्ञान ने सिर्फ़ 'हूँ हाँ' में जवाब दिया, आँखे न खोलीं।

वह लडकी सामनेवाले दूसरे पलंग पर बैठी थी—किफ़ायत ने एक नजर लडकी की तरफ देखा और कमरे से बाहर निकल गया।

बावर्चीखाने मे जाकर उसे मालूम हुआ कि रबड का वह पाइप, जो रात को बडा ड्रम भरा करता था, ड्रम से बाहर निकला हुआ है; तीन बजे के करीब जब नल मे पानी आया तो उसने तमाम घर सेराब[1] कर दिया।

तीनो नौकर नीचे बाजार में सो रहे थे; उसने तीनो को जगाया और पानी खारिज करने के काम पर लगा दिया और खुद भी उनके साथ शरीक हो गया, सब कटोरियों मे पानी उठाने लगे और बालटियों मे डालने लगे—उस बर्मी लडकी ने जब सबको काम करते देखा तो वह भी अपने सैंडिल उतारकर उनका हाथ बँटाने लगी।

उसके हाथ छोटे और गोरे थे, उँगलियों के नाखून बढ़े हुए थे, मगर उन पर सुर्खी लगी हुई नहीं थी, उसके बाल छोटे और कटे हुए थे, जिनमे हल्की-हल्की लहरें थीं; वह मर्दाना वजा[2] का खुला, मगर रेशमी पाजामा पहने हुए थी; ऊपर उसने सियाह रग का कुर्ता पहन रखा था, जिसमे उसकी छोटी-छोटी छातियाँ छुपी हुई थीं।

जब उसने उनका हाथ बँटाना शुरू किया तो किफायत ने उसे मना किया "आप तकलीफ न कीजिए।"

उसने कोई जवाब न दिया, वह छोटे-छोटे सुर्खी लगे होंठों मे मुसकराई और काम में लगी रही।

आध-पौन घंटे के अंदर-अंदर तमाम घर से पानी निकाल दिया गया। किफायत ने सोचा "चलो यह भी अच्छा ही हुआ इसी बहाने सारा घर धुलकर साफ तो हो गया"

बर्मी लडकी हाथ धोने के लिए ग़ुस्लखाने में चली गई।

किफायत कमर सीधी करने के लिए पलग पर लेटा ही था कि सो गया।

नौ बजे के करीब उसकी आँख खुली, जागते ही उसे पानी का खयाल आया, फिर उसने बर्मी लडकी के मुताल्लिक सोचा, जो ज्ञान के साथ आई थी—'कहीं सब ख्वाब तो नही था' लेकिन उसके सामने पलग पर ज्ञान सो रहा था और फर्श धुला हुआ था।

किफायत ने गौर से ज्ञान की तरफ देखा—ज्ञान पतलून, कोट, जूतो समेत औंधा पडा सो रहा था।

किफायत ने उसको जगाया।

उसने एक आँख खोली और पूछा : "क्या है?"

"यह लडकी कौन है?"

ज्ञान एकदम चौंका. "लडकी कहाँ है?" फिर वह फ़ौरन ही चित लेट गया : "ओह बकवास न करो सब ठीक है" और फिर सो गया।

किफायत ने ज्ञान को फिर जगाने की कोशिश की, मगर वह सोया रहा।

उसको साढ़े नौ बजे अपने काम पर जाना था; उसने जल्दी-जल्दी ग़ुस्ल किया, शेव भी ग़ुस्लखाने के अंदर ही की—जब वह ड्राइंगरूम में गया तो उसे नाश्ते की मेज सजी हुई नज़र आई।

सुबह नाश्ते मे उसके यहाँ आमतौर पर बहुत ही मुख्तसर चीजे होती थी; दो उबले हुए अडे, दो तोस, मक्खन और चाय—मगर उस दिन मेज रगीन थी।

उसने गौर से देखा—छिले हुए अडे अजीबो-गरीब अदाज मे कटे हुए थे कि फूल मालूम हो रहे थे, सलाद मौजूद था, बडी खूबसूरती से प्लेट में सजा हुआ; तोसो पर मीनाकारी की हुई थी।

वह चकरा गया—फिर वह बावर्चीखाने में गया।

वह बर्मी लडकी चौकी पर बैठी, सामने अंगीठी रखे कुछ कह रही थे और तीनो नौकर उसके इर्द-गिर्द बैठे हँस रहे थे।

किफायत को देखकर वह उठ खडे हुए, बर्मी लडकी ने आँखे घुमाकर उसकी तरफ देखा और मुसकरा दी।

उसने बर्मी लडकी से बात करना चाही, लेकिन वह कैसे बात करता, क्या बात करता, वह उसे जानता तक नहीं था; उसने अपने एक नौकर से सिर्फ इतना पूछा "आज नाश्ता किसने तैयार किया है बशीर?"

बशीर ने बर्मी लडकी की तरफ इशारा किया "बाई जी ने।"

बर्मी लड़की मुसकरा रही थी।

उसने जल्दी-जल्दी बाँका-सजीला नाश्ता खाया और कपडे पहनकर अपने दफ्तर रवाना हो गया।

शाम को जब वह घर वापस आया तो उसने देखा, वह बर्मी लडकी उसके स्लीपिंग सूट का बचा हुआ इकलौता पाजामा पहने हुए अपना कुर्ता इस्तिरी कर रही है—वह पीछे हट गया कि बर्मी लडकी सिर्फ पाजामा पहने हुए थी।

"आ जाइए!"

बर्मी लड़की का लहजा बडा साफ-सुथरा था—जब वह कमरे में दाखिल हुआ तो बर्मी लडकी ने अपने छोटे-छोटे होठों पर मुस्कराहट पैदा करके उसको सलाम किया; उसकी मौजूदगी मे बर्मी लडकी ने कोई हिजाब[3] महसूस न किया, वह बडे सुकून से अपना सियाह कुर्ता इस्तिरी करती रही— उसने देखा कि बर्मी लडकी की छोटी-छोटी गोल छातियों के दरमियाने हिस्से में इस्तिरी की तपिश के बायस पसीने की नन्ही-नन्ही बूँदें जमा हो गई हैं।

उसने ज्ञान के बारे में पूछने के लिए बशीर को आवाज देना चाही, मगर रुक गया; उसने बशीर को बुलाना मुनासिब न समझा कि बर्मी लडकी आधी नंगी थी। उसने हैट उतारकर एक तरफ रख दिया और थोडी देर तक बर्मी लडकी की नीम उरियानी[4] देखता रहा; उसने खुद मे कोई हीजान[5] महसूस न किया— बर्मी लडकी का बदन बेदाग था; जिल्द निहायत ही मुलायम थी कि निगाहे फिसल-फिसल जाती थीं।

जब कुर्ता इस्तिरी हो गया तो बर्मी लडकी ने स्विच ऑफ कर दिया, फिर उसने कुर्ता तह किया और इस्तिरीशुदा पाजामे पर रख दिया "मैं नहाने जा रही हूँ।" उसने कहा और कपड़े और इस्तिरी उठाकर चली गई।

वह सिर खजलाने लगा 'कौन है यह लडकी ?' उसके दिमाग में बड़ी खुदबुद हो रही थी।

वह उस लडकी के मुताल्लिक सोचता तो सारा वाकया उसकी आँखो के सामने आ जाता, दस्तक सुनकर रात को उसका उठना, कमरे मे पानी ही पानी होना; उसका दरवाजा खोलना और ज्ञान को जवाब देना 'पानी । ' ज्ञान का कहना 'पानी नही, लडकी ' और एक नन्ही-सी गुडिया का छम-से अदर आ जाना।

उसने दिल मे कहा 'हटाओ ना अब यह सब ज्ञान आएगा तो सबकुछ मालूम हो जाएगा वैसे लौंडिया है दिलचस्प इतनी छोटी है कि जी चाहता है, जेब मे रख लो चलो ब्रांडी पीते हैं '

बशीर ने गिलास, ब्राडी और बर्फ वगैरह सबकुछ मुलाकाती कमरे मे रख दिया तो उसने कपडे बदले और पीना शुरू कर दी—उसने पहला पैग खत्म किया तो उसे गुस्लखाने का दरवाजा खुलने की 'चूँ' सुनाई दी, दूसरा पैग बनाकर वह इतजार करने लगा, उसे उम्मीद थी कि वह बर्मी लडकी उस मुलाकाती कमरे मे जरूर आएगी, उसके मुकर्रर[6] चार पैग खत्म हो गए, मगर वह न आई, ज्ञान भी न आया—वह झुँझला गया।

उसने बेडरूम मे जाकर देखा—बर्मी लडकी इस्तिरी किए हुए कपडे पहने, अपनी गोल-गोल छोटी-छोटी छातियो पर हाथ रखे बडे इत्मीनान से सो रही थी; पास ही मेज पर उसके अपने स्लीपिंग सूट का बचा हुआ इकलौता पाजामा बडी अच्छी तरह तह किया हुआ रखा था।

उसने वापिस मुलाकाती कमरे मे आकर ब्रांडी का डबल पैग गिलास मे डाला और एक ही घूँट मे नीट ही चढा गया—थोडी देर के बाद उसका सिर घूमने लगा; उसने बर्मी लड़की के मुताल्लिक सोचने की कोशिश की, उसने महसूस किया कि बर्मी लडकी कटोरी मे पानी भर-भर के उसके दिमाग मे डाल रही है।

खाना खाए बगैर वह सोफे पर लेट गया और बर्मी लडकी के मुताल्लिक कुछ सोचने की कोशिश करते हुए सो गया।

सुबह हुई तो उसने देखा कि वह मुलाकाती कमरे में सोफ़े के बजाय अंदर बेडरूम में अपने पलंग पर है—उसने अपने हाफिजे[7] पर जोर दिया "मैं रात को कब यहाँ आया क्या मैंने खाना खाया था ?"

उसे कोई जवाब न मिल सका—सामनेवाला पलंग खाली था।

उसने जोर से बशीर को आवाज़ दी—बशीर भागा-भागा अंदर आया।

उसने पूछा : "ज्ञान साहब कहाँ हैं ?"

"जी, वह रात को नहीं आए।" बशीर ने जवाब दिया।

"क्यों ?"

"मालूम नहीं साहब !"

"वह बाई जी कहाँ हैं ?"

"मछली तल रही हैं।"

उसके दिमाग मे मछलियाँ तली जाने लगी—वह उठकर बावर्चीखाने में गया।

बर्मी लडकी चौकी पर बैठी सामने अँगीठी रखे मछली तल रही थी—उसको देखकर बर्मी लड़की के होंठों पर एक छोटी-सी मुसकराहट पैदा हुई और उसने हाथ उठाकर उसे सलाम किया और फिर अपने काम मे मश्ग़ूल[8] हो गई—उसने देखा कि नौकर बेहद मसरूर[10] थे और बडी मुस्तैदी[11] मे बर्मी लड़की का हाथ बँटा रहे थे।

उसने बशीर से कहा "इधर आओ बशीर, अपनी तनख्वाह ले लो मैं कल दफ्तर से कुछ रुपए ले आया था"

बशीर को कुछ दिनो की छुट्टी पर अपने मुल्क जाना था, वह कई दिनो से कह रहा था कि उसकी वालिदा बीमार है, घर मे कई खत आ चुके हैं, उसे तनख्वाह दे दी जाए।

बशीर ने तनख्वाह संभाल ली तो उसने कहा "नौ बजे गाडी जाती है, उसीसे चले जाओ।"

"जी अच्छा" बशीर ने जवाब दिया।

नाश्ता बेहद लजीज था, खासतौर पर मछली के टुकडे—नाश्ता शुरू करने से पहले उसने बशीर के जरिए बर्मी लडकी को बुलवाया था, मगर वह नहीं आई थी; बशीर ने कहा था "जी, वह कहती है, वह बाद मे नाश्ता करेंगी"

किफायत की माली हालत बहुत पतली थी; ज्ञान भी आसूदा[11] हाल नहीं था; दोनों इधर-उधर से पकडकर गुजारा कर रहे थे, ब्राडी का बदोबस्त ज्ञान कर देता था, बाकी खाने-पीने का सिलसिला भी किसी न किसी तरह चल ही रहा था—जिस फिल्म कपनी मे ज्ञान काम कर रहा था, उस कपनी का दीवाला निकलने के क़रीब था, मगर ज्ञान को यकीन था कि कोई मो'जिजा[12] जरूर रूनुमा[13] होगा और कपनी सँभल जाएगी—शूटिग हो रही थी, गालिबन इसीलिए ज्ञान रात को न आ सका था।

नाश्ता करने के बाद उसने झाँककर बावर्चीखाने मे देखा—बर्मी लडकी काम मे मश्गूल थी; तीनो मुलाजिम हँस-हँसकर बर्मी लडकी से बाते कर रहे थे।

उसने बशीर से कहा "मछली बहुत अच्छी थी।"

बर्मी लडकी ने मुडकर देखा—उसके होठो पर छोटी-सी मुसकराहट थी।

वह दफ्तर चला गया—उसको उम्मीद थी कि कुछ रुपयों का बदोबस्त जरूर हो जाएगा, लेकिन वह शाम को खाली जेब वापस आया।

बर्मी लडकी अदर बेडरूम मे पलग पर लेटी कोई तसवीरोंवाला रिसाला[14] देख रही थी— उसको देखकर वह बैठ गई और फिर सलाम किया।

उसने बर्मी लडकी के सलाम का जवाब दिया और पूछा "ज्ञान साहब आए थे?"

"दोपहर को आए थे और खाना खाकर चले गए थे फिर अभी शाम को आए थे चंद मिनटों के लिए" यह कहकर बर्मी लडकी ने एक तरफ हटकर तकिया उठाया और काग़ज़ में लिपटी हुई बोतल उठाई "यह दे गए थे आपके लिए।"

उसने बोतल थाम ली—कागज पर ज्ञान की तहरीर में चंद अल्फाज़ मौजूद थे: 'कमबख़्त यह चीज किसी न किसी तरह मिल ही जाती है, लेकिन पैसा नहीं

मिलता बहरहाल ऐश करो '

उसने बोतल पर लिपटा हुआ काग़ज़ अलग किया—ब्राडी की बोतल थी ।

बर्मी लडकी ने उसकी तरफ देखा और मुसकराई ।

वह भी मुसकरा दिया "आप पीती हैं ?"

बर्मी लड़की ने जोर से अपना सिर हिलाया · "नही !"

उसने नजर भरकर बर्मी लड़की को देखा और सोचा 'क्या छोटी-सी नन्ही-मुन्नी गुडिया है ' उसका जी चाहा कि बर्मी लडकी उसके साथ बैठे, बातें करे ।

उसने कहा "आइए, उधर दूसरे कमरे मे बैठते हैं "

"नही मैं कपडे धोऊँगी ।"

"इस वक्त ?"

"इस वक्त अच्छा होता है रात को धोए, सुबह तक सूख गए फिर उठते ही इस्तिरी कर लिए ।"

किफायत थोडी देर खडा रहा, जब उसे कोई बात न सूझी तो मुलाकाती कमरे में बैठकर उसने ब्राडी पीनी शुरू कर दी—खाने का वक्त हुआ तो उसने बर्मी लडकी को बुलवाया, मगर बर्मी लडकी ने कहलवा भेजा कि वह ज्ञान के साथ खाना खाएगी ।

उसने खाना खाया और बेडरूम मे अपने पलग पर जाकर सो गया । रात के तकरीबन एक बजे उसकी आँख खुल गई—चाँदनी रात थी, हल्की-हल्की रोशनी कमरे मे फैली हुई थी; बडे मजे की हवा चल रही थी ।

उसने करवट बदली तो देखा, सामने के पलग पर एक छोटी-सी सुडौल गुडिया ज्ञान के चौडे बालो भरे सीने के साथ चिंमटी हुई है—उसने आँखें बद कर ली ।

थोडे वक्फे[15] के बाद उसने ज्ञान की आवाज सुनी "अब मुझे सोने दो जाओ कपडे पहन लो "

सुबह छ बजे के करीब वह उठ बैठा—वह रात को सोचकर सोया था कि सुबह जल्दी उठेगा, उसे ट्राम का बहुत लबा सफर तय करके एक आदमी के पास जाना था, जिससे उसे कुछ मिलने की उम्मीद थी ।

वह पलग पर से उतरा तो उसने देखा कि बर्मी लडकी नगे फर्श पर उसके स्लीपिंग सूट का बचा हुआ इकलौता पाजामा पहने अपने छोटे-से सुडौल बाजू को सिर के नीचे रखे नीम उरियानी में बड़े सुकून से सो रही है ।

उसने बर्मी लडकी को जगाया—बर्मी लडकी ने अपनी काली-काली आँखे खोली ।

उसने कहा . "आप यहाँ फर्श पर क्यो लेटी हैं ?"

बर्मी लडकी के छोटे-छोटे होंठो पर नन्ही-सी मुसकराहट पैदा हुई "ज्ञान साहब को आदत नहीं है किसी को अपने साथ सुलाने की "

उसको ज्ञान की इस आदत का इल्म था । उसने कहा "जाइए, मेरे पलग पर लेट जाइए ।"

बर्मी लड़की उठी और उसके पलग पर लेट गई ।

वह गुस्लखाने मे चला गया—वहाँ रस्सी पर बर्मी लड़की के कपडे लटक रहे थे।

जब उसने अपने बदन पर साबुन मला तो उसका ख़याल बर्मी लड़की के मुलायम जिस्म की तरफ चला गया, जिस पर से निगाहे फिसल-फिसल जाती थीं।

गुस्ल से फारिग होकर उसने कपडे पहने और घर से निकल आया।

सुबह-सवेरे का निकला वह रात के ग्यारह बजे वापस आया—उसकी जेबें ख़ाली थीं।

बेडरूम मे गया तो उसने देखा कि ज्ञान और बर्मी लडकी, इकट्ठे लेटे हुए हैं।

उसने मुलाकाती कमरे में बैठकर ब्राडी पीना शुरू कर दी—वह बहुत ज्यादा थका हुआ था, बहुत ज्यादा मायूस था, बर्मी लडकी के मुताल्लिक सोचते-सोचते वह वही सोफे पर सो गया।

वह सुबह पाँच बजे उठा—तिपाई पर उसका चौथा पैग पडा-पडा बासी हो चुका था।

वह बेडरूम मे गया—बेडरूम के नंगे फर्श पर बर्मी लडकी सो रही थी और अलमारी के आईने के सामने ज्ञान खडा टाई बाँध रहा था।

टाई की गिरह ठीक करने के बाद ज्ञान ने अपन दोनो हाथो मे बर्मी लडकी को उठाया और अपने पलग पर लिटा दिया। जब ज्ञान ने उसको देखा तो कहा "हाँ, तो कुछ बदोबस्त हुआ रुपयो का?"

उसने बडी मायूसी से कहा "नही।"

"अच्छा तो मै जा रहा हूँ देखो शायद कुछ हो जाए।"

पेशतर इसके कि वह ज्ञान को रोकता, ज्ञान तेजी से बाहर निकल गया, फिर कॉरीडोर से ज्ञान की आवाज आई "तुम भी कोशिश करना किफायत "

उसने पलटकर पलग की तरफ देखा—बर्मी लडकी बडे सुकून के साथ सो रही थी, उसके नन्हे-से सीने पर छोटी-छोटी गोल-गोल छातियाँ चमक रही थी।

वह कमरे से निकलकर गुस्लखाने मे चला गया—गुस्लखाने मे रस्सी पर बर्मी लडकी के धुले हुए कपडे लटक रहे थे।

गुस्लखाने से फारिग होकर वह बाहर निकला तो उसने देखा कि बर्मी लडकी नौकरो के साथ बैठी नाश्ता तैयार करने मे मसरूफ[10] है—उसने नाश्ता किया और घर स बाहर निकल गया।

इसी तरह चार दिन और गुजर गए—उसको बर्मी लडकी के मुताल्लिक कुछ मालूम न हो सका।

ज्ञान कभी रात को देर से आता था और कभी सुबह बहुत जल्दी निकल जाता था—खुद उसका अपना भी यही हाल था।

पाँचवे रोज सुबह जब वह उठा तो बशीर ने उसको ज्ञान का एक रुक्का दिया 'खुदा के लिए किसी न किसी तरह दस रुपए पैदा करो और बर्मी लडकी को दे दो '

बर्मी लड़की इस्तिरी कर रही थी, कुरते की सिर्फ एक आस्तीन बाकी रह गई थी, जिस पर वह बडे सलीके से इस्तिरी फेर रही थी—उसने बर्मी लडकी की तरफ देखा, बर्मी लडकी ने भी उसकी तरफ देखा, जब उनकी निगाहे चार हुई तो बर्मी लडकी मुसकरा दी।

उसने सोचा कि वह दस रुपए कहाँ से पैदा करे—वह सोचते-सोचते कॉरीडोर में चला गया।

थोडी देर के बाद बशीर ने आकर कहा : "साहब "

उसने चौंककर पूछा : "क्या बात है ?"

"जी, कुछ कहना है " बशीर ने दस रुपए का एक नोट जैब में से निकाला और उसकी तरफ बढ़ा दिया : "मैं मुल्क नहीं गया साहब "

उसने गैर इरादी तौर पर नोट ले लिया . "लेकिन तुम गए क्यों नहीं अभी तक ?"

"साहब, चला जाऊँगा कल-परसो "

उसने नोट जेब में डाल लिया : "अच्छा मैं रुपए शाम को लौटा दूँगा तुम्हे "

बर्मी लडकी ने फिर खूबसूरत नाश्ता तैयार किया, उसने फिर भरपूर नाश्ता किया—जब उसे यक़ीन हो गया कि बर्मी लड़की भी नाश्ता कर चुकी है तो वह बावर्चीखाने में गया और उसने बर्मी लडकी को दस रुपए का नोट दिया . "ज्ञान साहब मुझे दे गए थे कि आपको दे दूँ "

बर्मी लड़की ने नोट लेकर बशीर को आवाज दी। बशीर आया तो बर्मी लडकी ने कहा : "जाओ, टैक्सी ले आओ "

बशीर चला गया तो उसने पूछा : "आप जा रही हैं ?"

"जी हाँ !" यह कहकर वह बेडरूम मे चली गई।

बशीर आया तो वह हाथ में रूमाल लिए बेडरूम से बाहर निकली और सलाम करने के बाद बोली : "अच्छा जी, अब मैं चलती हूँ ज्ञान साहब को मेरा सलाम बोल देना "

उसने डूबती नज़रों से देखा—बर्मी लडकी के होठो पर एक छोटी-सी मुसकराहट थी।

बर्मी लडकी ने तीनों नौकरो के साथ हाथ मिलाया और चली गई—उसने देखा कि तीनो नौकरों के चेहरों पर उदासी छा गई है।

जाने कब ज्ञान आया और आते ही पूछने लगा "कहाँ है वह बर्मी लडकी ?"

"चली गई !"

"कैसे ? दस रुपए दिए थे तुमने उसे ?"

"हाँ।"

"तब ठीक है तब ठीक है।" ज्ञान सोफे पर बैठ गया।

उसने पूछा "कौन थी यह बर्मी लडकी ?"

"मुझे मालम नही !"

वह सर-ता-पा हैरत बन गया "क्या मतलब ?"

ज्ञान ने जवाब दिया "मतलब यही कि मैं नही जानता, कौन थी ?"

"झूठ न बोलो यार "

"तुम्हारी कसम, सच कहता हूँ किफायत।"

उसने पूछा · "फिर तुम्हें कहाँ मिल गई थी वह ?"

ज्ञान ने अपनी टाँगे मेज पर रख दीं और मुसकराया "अजीब दास्तान है यार पानी

का सैलाब आनेवाली रात मैं शकर के यहाँ चला गया था, वहाँ मैंने बहुत पी ली अँधेरी स्टेशन से गाडी में सवार होते ही मैं सो गया और गाडी मुझे सीधा चर्च गेट ले गई चर्च गेट पर मुझे एक मुसाफिर ने जगाया मैंने कहा 'मुझे ग्राट रोड जाना है ' वह हँसा 'हुजूर, आप तीन स्टेशन आगे निकल आए हैं ' दूसरे प्लेटफार्म पर अँधेरी जानेवाली गाडी खडी थी, मैं उसमे सवार हो गया, गाडी चली तो मुझे फिर नीद आ गई और मैं वापस अँधेरी पहुँच गया ''

उसने पूछा ''मगर तुम्हारी नीद और गाडी का लडकी से क्या ताल्लुक है ?''

''यार, तुम सुन तो लो '' ज्ञान ने सिग्रेट सुलगाया ''अँधेरी पहुँचा, यानी जब मेरी आँख खुली तो क्या देखता हूँ, मैं एक छोटी-सी लौंडिया के साथ चिमटा हुआ हूँ पहले तो मैं डर गया कि वह जाग रही थी मैंने पूछा 'कौन हो तुम ?' वह मुसकराई, मैंने फिर पूछा 'भई, कौन हो तुम ?' वह फिर मुसकराई और कहने लगी 'इतनी देर से मुझे चूम रहे हो और अब पूछते हो कि मैं कौन हूँ ।' मैंने हैरत से कहा 'अच्छा ' वह हँसने लगी, मैंने उसे अपने साथ भीच लिया, सुबह तीन बजे तक हम दोनो प्लेटफार्म की एक बेच पर लिपटे पडे रहे साढे तीन बजे सुबह की पहली गाडी आई तो हम उसमे सवार हो गए मैंने सोचा था कि एक-आध दिन मे बदोबस्त करके कुछ रुपए उसको दे दूँगा यहाँ पहुँचे तो पानी का तूफान आया हुआ था है ना दिलचस्प दास्तान।''

उसने कहा ''हाँ, दास्तान तो खासी दिलचस्प है, मगर वह इतने दिन यहाँ क्यो रही ?''

ज्ञान ने सिगरेट फर्श पर फेक दिया ''वह कहाँ रही, मैंने ही उसे जाने न दिया मेरे पास कुछ था ही नही, जो उसे देता और चलता करता बस दिन गुजरते गए मैं बेहद शर्मिंदा था कल रात मैंने उसे साफ-साफ कहा 'देखो दिन बढते जा रहे हैं, तुम अपना एड्रैस मुझे दो, मैं तुम्हारा हक तुम्हे पहुँचा दूँगा, आजकल मेरा हाल बहुत पतला है ''

उसने बडे जब्त[18] के साथ पूछा ''तुम्हारी बात सुनकर उसने क्या कहा ?''

ज्ञान ने अपने सिर को जुंबिश दी ''कुछ अजीब लडकी थी कहने लगी 'क्या कहते हो ? मैंने तुमसे कुछ माँगा है ? हाँ, मुझे दस रुपए जरूर दे देना मेरा घर यहाँ से बहुत दूर है, मैं टैक्सी मे जाऊँगी, मेरे पास एक भी पैसा नही है ' ''

उसने बडी मुश्किल से पूछा 'नाम क्या है उसका ?''

ज्ञान सोचने लगा।

''भूल गए क्या ?''

ज्ञान ने अपनी टाँगे मेज पर से हटा ली ''नही यार, भूल क्या गया, मैंने तो उससे नाम ही नहीं पूछा भई, हद हो गई '' यह कहकर ज्ञान हँसने लगा।

किफायत उदास हो गया।

---

1 जलमग्न, 2 ढग, 3 झिझक, 4 अधनगापन, 5 उत्तेजना, 6 निश्चित, 7 स्मरण, 8 व्यस्त, 9 प्रसन्नचित्त, 10 चुस्ती, 11 खुशहाल, 12 चमत्कार, 13 प्रकट होना, 14 पत्रिका, 15 अतराल, 16. व्यस्त; 17. सिर से पैर तक, 18 सहन करना।

शादी

जमील को अपना शेफर लाइफ टाइम कलम मरम्मत के लिए देना था।

उसने टेलीफोन डायरेक्टरी मे शेफर कपनी का नबर तलाश किया, फोन करने से उसे मालूम हुआ कि उनके एजेंट मैसर्ज डी जे रमेवेयर हैं, जिनका दफ्तर ग्रीन होटल के पास वाके[1] है।

उसने टैक्सी ली और फोर्ट की तरफ चल दिया, ग्रीन होटल पहुँचकर उसे मैसर्ज डी जे रमेवेयर का दफ्तर तलाश करने मे दिक्कत न हुई: पास ही था, तीसरी मंजिल पर।

लिफ्ट के जरिए वह तीसरी मंजिल पर पहुँचा—कमरे मे दाखिल होते ही चौबी दीवार की छोटी-सी खिड़की के पीछे उसे एक खुशशक्ल एंग्लो इंडियन लड़की नजर आई, जिसकी छातियां ग़ैर मामूली तौर पर नमायाँ[2] थी।

उसने कलम उस खिड़की के अदर दाखिल कर दिया—वह मुँह से कुछ न बोला।

लड़की ने कलम उसके हाथ मे ले लिया, खोलकर एक नजर देखा, एक चिट पर कुछ लिखा और चिट उसके हवाले कर दी—मुँह से वह भी कुछ न बोली।

उसने चिट देखी—कलम की रसीद थी।

वह चलने ही वाला था कि पलटकर उसने लड़की से पूछा, "मेरा खयाल है दस-बारह रोज मे तैयार हो जाएगा?"

लड़की बड़े जोर से हँसी।

वह कुछ खिसियाना-सा हो गया "मै आपकी हँसी का मतलब नही समझा।"

लड़की ने खिड़की के साथ मुँह लगाकर कहा "मिस्टर, आजकल वार है वार यह कलम अमरीका जाएगा तुम नौ महीने के बाद तपास[3] करना।"

वह बौखला गया "नौ महीने?"

लड़की ने अपने बुरीदा[4] बालोंवाला सिर हिलाया—उसने फौरन लिफ्ट का रुख किया।

'यह नौ महीने का सिलसिला खूब है नौ महीने इतनी मुद्दत के बाद तो औरत गलगूथना बच्चा पैदा करके एक तरफ रख देती है नौ महीने नौ महीने तक इस छोटी-सी चिट को संभाले रखो और यह भी कौन वसूक[5] से कह सकता है कि नौ महीने तक आदमी याद रख सकता है कि उसने एक कलम मरम्मत के लिए दिया था हो सकता है, इस दौरान मे वह कमबख्त मर-खप ही जाए साला सब ढकोसला है कलम मे मामूली-सी खराबी है, उसका फीडर जरूरत से ज्यादा रोशनाई सप्लाई करता है; इसके

लिए उसे अमरीका भेजना मशीहन[6] चालबाजी है   फिर उसने सोचा . लानत भेजो जी उस क़लम पर   अमरीका जाए या अफ्रीका   '

उसने वह क़लम ब्लैक मार्केट से एक सौ पचहत्तर रुपए में खरीदा था और एक बरस तक उसे खूब इस्तेमाल किया था: हजारो सफ़े काले कर डाले थे—वह एकदम कनूती[7] से रजाई[8] बन गया, और रजाई बनते ही उसे खयाल आया कि वह फोर्ट में है और फोर्ट में शराब की बेशुमार दूकानें हैं: व्हिस्की तो, जाहिर है, नही मिलेगी, लेकिन फ्रांस की बेहतरीन ब्रांडी मिल जाएगी

उसने करीबवाली शराब की दूकान का रुख किया।

ब्रांडी की एक बोतल खरीदकर वह लौट रहा था कि ग्रीन होटल के पास आकर रुक गया—होटल के नीचे कदे-आदम शीशों का बना हुआ कालीनो का शो-रूम था, जो उसके दोस्त पीर साहब का था।

उसने सोचा   'चलो अंदर चले   '

चंद लम्हात के बाद वह शो-रूम में था और अपने दोस्त पीर साहब से, जो उम्र में उससे काफ़ी बड़े थे, हँसी-मजाक की गुफ़्तगू कर रहा था।

बारीक काग़ज़ मे लिपटी ब्रांडी की बोतल दबीज ईरानी कालीन पर लेटी हुई थी—पीर साहब ने बोतल की तरफ इशारा करते हुए कहा   ''यार जमील, इस दुल्हन का घूँघट तो खोलो   जरा इससे छेड़खानी तो करो।''

वह मतलब समझ गया   ''तो पीर साहब, गिलास और सोडे मँगवाइए   फिर देखिए क्या रंग जमता है।''

फौरन ही गिलास और यखबस्ता[9] सोडे आ गए।

पहला दौर हुआ—दूसरा दौर शुरू होने ही वाला था कि पीर साहब के एक राजरानी दोस्त अंदर चले आए और बड़ी बेतकल्लुफी से कालीन पर बैठ गए।

इत्तिफ़ाक से होटल का छोकरा दो के बजाय तीन गिलास उठा लाया था—पीर साहब के राजरानी दोस्त ने बड़ी साफ उर्दू मे चंद इधर-उधर की बाते की, तीसरे गिलास मे एक बड़ा पैग डाला, गिलास को सोडे से लबालब भरा, तीन-चार लंबे-लंबे घूँट लिए, रूमाल से मुँह साफ किया और कहा   ''सिगरेट निकालो यार!''

पीर साहब से माना गैर शराबी[10] थे, मगर वह सिगरेट नही पीते थे—उसने अपना सिगरेटकेस निकाला और कालीन पर रख दिया साथ ही लाइटर भी।

पीर साहब ने राजरानी का तआरुफ़ कराया   ''मिस्टर नटवरलाल   आप मोतियो की दलाली करते है।''

उसने एक लहजे के लिए सोचा   कोयलो की दलाली मे तो आदमी का मुँह काला होता है   मोतियो की दलाली मे

पीर साहब ने उसकी तरफ इशारा करते हुए कहा   ''मिस्टर जमील   मशहूर मौसम राइटर।''

उसने नटवरलाल के साथ हाथ मिलाया और फिर नया दौर शुरू हुआ और ऐसा शुरू हुआ कि बोतल खाली हो गई।

उसने सोचा 'यह कमबख्त मोतियो का दलाल बला का पीनेवाला है मेरी प्यास और मेरे सुरूर की सारी ब्रांडी चढा गया खुदा करे, इसे मोतियाबिंद हो जाए '

ज्यूँ ही आखिरी दौर के पैग ने उसके पेट मे कदम जमाए, उसने नटवरलाल को माफ कर दिया और कहा · "मिस्टर नटवरलाल, उठिए, एक बोतल और हो जाए ।"

नटवरलाल फौरन उठा, उसने अपने सफेद डगले[11] की शिकने दुरुस्त कीं, धोती की लाँग ठीक की और कहा : "चलिए !"

वह पीर साहब से मुखातिब हुआ "हम अभी हाजिर होते हैं ।"

उसने और नटवरलाल ने बाहर निकलकर टैक्सी ली और शराब की दूकान पर पहुँचे ।

उसने टैक्सी रुकवाई ही थी कि नटवरलाल ने कहा · "मिस्टर जमील, यह दूकान ठीक नही सारी चीजें महँगी मिलती हैं " फिर वह टैक्सी ड्राइवर से मुखातिब हुआ · "देखो, कोलाबा चलो !"

कोलाबा पहुँचकर नटवरलाल उसे शराब की एक छोटी-सी दूकान में ले गया—ब्रांडी का जो ब्राड उसने फोर्ट से लिया था, वह तो न मिला लेकिन एक दूसरा मिल गया, जिसकी नटवरलाल ने बहुत तारीफ की कि नंबर वन चीज है ।

नबर वन चीज खरीदकर दोनों बाहर निकले ।

साथ ही बॉर थी । नटवरलाल रुक गया · "मिस्टर जमील, क्या खयाल है आपका एक-दो पैग यहीं से पीकर चलते हैं "

उसे भला क्या एतराज हो सकता था—उसका नशा हालते-नज़अ[12] में था ।

दोनों बॉर के अंदर दाखिल हुए—उसको खयाल आया कि बॉरवाले तो कभी बाहर की शराब पीने की इजाजत नहीं दिया करते "मि नटवरलाल, हम यहाँ कैसे पी सकते हैं यह लोग इजाज़त नही देंगे ।"

नटवरलाल ने जोर से आँख मारी "सब चलता है ।" यह कहकर वह एक केबिन के अंदर घुस गया ।

वह भी नटवर लाल के पीछे था ।

नटवरलाल ने ब्राडी की बोतल सगीन तिपाई पर रखी और बैरे को आवाज़ दी—जब बैरा आया तो उसको भी आँख मारी · "देखो, दो सोडे रोजर्ज, ठडे और दो गिलास, एकदम साफ !"

बैरा आर्डर लेकर चला गया और फौरन सोडे और गिलास लेकर आ गया ।

नटवरलाल ने दूसरा आर्डर दिया "फर्स्ट क्लास चिप्स, फर्स्ट क्लास कटलस और टोमाटो सॉस "

बैरा चला गया तो नटवरलाल उसकी तरफ देखकर मुसकराया, फिर उसने बोतल का कार्क अलग किया; एक गिलास में उससे पूछे बगैर एक डबल पैग डाला और उसकी तरफ बढा दिया; दूसरे गिलास में डबल पैग से कुछ ज्यादा बडा बनाया, दोनों गिलासों में सोडा हल किया और अपना गिलास उठा लिया—दोनों ने गिलास टकराए ।

वह प्यासा था, एक ही जुरऐ[13] मे उसने आधा गिलास खत्म कर दिया—सोडा बहुत

ठंडा और तेज था, वह फूँ-फूँ करने लगा।

दस-पद्रह मिनट के बाद चिप्स और कटलस आ गए—वह सुबह घर से नाश्ता करके निकला था, लेकिन ब्रांडी की वजह से उसे भूख लग गई थी, चिप्स भी गर्म-गर्म थे और कटलस भी, वह पिल पडा, नटवरलाल ने उसका साथ दिया—दो ही मिनट में प्लेटें साफ़ हो गईं।

दो प्लेटें और मँगवाई गईं—दो घंटे इसी तरह गुजर गए, बोतल तीन चौथाई ग़ायब हो चुकी थी। उसने सोचा कि अब पीर साहब के पास जाना बेकार है।

सुरूर बढ़ रहा था, नशा जम रहा था, वह और नटवरलाल हवा के घोडो पर सवार थे—ऐसे सवारो को आमतौर पर ऐसी वादियो में जाने की बड़ी ख्वाहिश होती है, जहाँ उन्हे उरियाँ[14] बदन हसीन औरतें मिलें; वह इनकी कमर में हाथ डालकर उन्हे घोडे पर बिठा लें और यह जा, वह जा।

उसका दिलो-दिमाग उस वक्त किसी ऐसी ही वादी के मुताल्लिक सोच रहा था, जहाँ उसकी मुठभेड किसी ऐसी खूबसूरत औरत से हो जाए, जिसको वह अपने तपते हुए सीने के साथ भीच सके, इतनी जोर से कि उसकी हड्डियाँ तक चटख जाएँ।

उसको इतना तो मालूम था ही कि वह ऐसी जगह पर है, ऐसे इलाक़े में है, जो अपने कहवाखानो की वजह से सारी बबई मे मशहूर है; जिन्हें ऐयाशी करना होती है, वह उधर ही का रुख करते है; जिस लडकी को लुक-छुपकर पेशा करना होता है, वही आती है।

उसने नटवरलाल से कहा "मैंने कहा, वह वह, मेरा मतलब है, इधर कोई छोकरी-वोकरी नही मिलती ?"

नटवरलाल ने अपने गिलास मे एक और बडा पैग उँडेला और हँसा · "मिस्टर जमील, एक नही, हजारो हजारों हजारो "

शायद नटवरलाल की 'हजारो, हजारों' की गर्दान[15] जारी रहती, अगर उसने काट न दी होती ' इन हजारो मे से आज एक ही मिल जाए तो हम समझें कि नटवर भाई ने कमाल कर दिया।"

नटवरलाल मजे मे था; उसने झूमकर कहा "जमील भाई, एक नही, हज़ारो चलो गिलास खत्म करो "

बोतल मे जो कुछ बचा था, दोनों ने ख़त्म किया, बिल अदा करने और बैरे को तगड़ी टिप देने के बाद दोनो बाहर निकले—केबिन मे हल्की रोशनी थी और बाहर तेज धूप चमक रही थी, उसकी आँखें चौंधिया गईं, एक लहज़े के लिए उसे कुछ नजर न आया; जब उसकी आँखें तेज धूप को कबूल करने लगी तो उसने नटवरलाल से कहा : "चलो भई !"

नटवरलाल ने तलाशी लेनेवाली निगाहो से उसकी तरफ़ देखा : "माल-पानी है ना ?"

उसके होठो पर नशीली मुसकराहट नमूदार हुई; नटवरलाल की पसलियों में कुहनी से ठोका देकर उसने कहा · "बहुत माल है नटवर भाई, बहुत " उसने जेब में से सौ-सौ के पाँच नोट निकाले · "क्या इतने काफ़ी नही ?"

नटवरलाल की बाछे खिल गईं . "काफी ? बहुत ज़्यादा हैं ! चलो आओ, पहले एक

बोतल खरीद लें वहाँ जरूरत पडेगी।''

उसने सोचा 'बात बिलकुल ठीक है वहाँ जरूरत नही पड़ेगी तो क्या किसी मस्जिद में पडेगी ?'

फौरन बोतल खरीदी गई, फौरन टैक्सी ली गई, और वह दोनों उस वादी की सैयाही[16] के लिए निकल पडे।

सैकडो कहवाखाने थे—बीस-पच्चीस का जाइज़ा लिया गया, मगर जमील को कोई औरत पसद न आई।

सब औरते मेकअप की मोटी और शोख तहों के अंदर छुपी हुई थीं—वह चाहता था कि ऐसी लडकी मिले, जो मरम्मतशुदा मकान मालूम न हो; जिसको देखकर यह एहसास न हो कि जगह-जगह उखडे हुए पलस्तर के टुकडो पर बड़े अनाडीपन से सुर्खी और चूना लगाया गया है।

नटवरलाल तग आ गया—उसके सामने जो भी औरत आती, वह कहता ''जमील भाई, चलेगी ?''

मगर 'जमील भाई' उठ खडा होता ''हाँ चलेगी और हम भी चलेंगे।''

दो जगहे और देखी गईं, उसे फिर मायूसी का मुँह देखना पडा—वह सोच रहा था 'इन औरतो के पास कौन आता होगा, जो सुअर के सूखे हुए गोश्त के टुकडो की तरह दिखाई देती है इनकी अदाएँ कितनी मक्रूह[17] हैं उठने-बैठने का अदाज कितना फहश[18] है और कहने को यह प्राइवेट हैं दरपर्दा पेशा करनेवाली औरते ' उसकी समझ में नही आता था कि वह पर्दा है कहाँ, जिसके पीछे वह धधा करती है ?

वह सोच ही रहा था कि नटवरलाल ने टैक्सी रुकवाई और चला गया—उसे कोई जरूरी काम याद आ गया था।

अब वह अकेला था; टैक्सी तीस की रफ़्तार से चल रही थी, साढे चार बज चुके थे।

उसने ड्राइवर से पूछा ''यहाँ वह चीज़ मिलेगी ?''

ड्राइवर ने जवाब दिया ''मिलेगी जनाब।''

''तो चलो उसके पास।''

ड्राइवर ने इधर-उधर दो-तीन मोड घूमे और एक पहाडी बॅगलानुमा बिल्डिंग के पास टैक्सी खडी कर दी; फिर उसने दो-तीन मर्तबा हॉर्न बजाया।

उसका सिर नशे के बायस सख्त बोझिल हो रहा था और आँखो के सामने धुंध-सी छाई हुई थी—उसे मालूम ही न हो सका कि वह कैसे और किस तरह वहाँ पहुँचा; जब उसने अपने सिर को जरा झटका तो उसने देखा कि वह एक पलंग पर बैठा हुआ है और उसके पास ही एक जवान लड़की, जिसकी नाक की फुनँग पर एक छोटी-सी फुसी थी, अपने बुरीदा बालों में कंघी कर रही है।

उसने लडकी को ग़ौर से देखा—वह सोचना चाहता था कि वहाँ कैसे पहुँचा है, मगर उसने सोचा कि सोचना फ़िज़ूल है—उसने अपनी जेब में हाथ डालकर अंदर ही अंदर नोट गिने, फिर उसने पास ही पड़ी हुई तिपाई पर ब्रांडी की सालिम बोतल देखी—उसकी

तशफ्फी[19] हो गई कि सब ठीक है, और उसने महसूस किया कि नशा किसी कदर नीचे उतर गया है।

वह उठा और उस जरख़रीदा[20] लड़की के पास गया, जब उसकी समझ में और कुछ न आया तो उसने मुसकराकर कहा, "कहिए, मिजाज कैसा है ?"

लड़की ने कंघी मेज पर रखी और कहा, "आप कहिए, आपका मिजाज कैसा है ?"

"बस ठीक हूँ।" उसने लड़की की कमर में हाथ डाला, "आपका नाम ?"

"बता तो चुकी हूँ एक दफा। मेरा खयाल है, आपको यह भी याद न रहा होगा कि आप टैक्सी में यहाँ आए थे। आप जाने कहाँ-कहाँ घूमते रहे होंगे। टैक्सी का बिल अट्ठाईस रुपए था। आपने बिल अदा किया और एक शख्स नटवरलाल को बेशुमार गालियाँ दीं।"

वह अपने अंदर डूबकर सारे मामले की तह तक जाना चाहता था, लेकिन उसने सोचा कि इसकी कोई जरूरत नहीं, वह अक्सर भूल जाया करता है, वह सिर्फ इतना याद कर सका कि टैक्सी का बिल अट्ठाईस रुपए बना था, जो उसने अदा किया था।

लड़की पलंग पर बैठ गई, "मेरा नाम तारा है।"

उसने तारा के कंधे पकड़े, तारा को पलंग पर लिटाया और अपने हाथों और होंठों से उसे प्यार करने लगा।

थोड़ी देर के बाद उसको प्यास महसूस हुई—उसने कहा, "दो यखबस्ता सोडे और गिलास तो मँगवाओ।"

तारा ने दोनों चीजें फौरन मँगवा दीं।

उसने बोतल खोली, दो पैग बनाए, और फिर वह और तारा, दोनों पीने लगे।

तीन पैग पीने के बाद उसने महसूस किया कि उसकी हालत बेहतर हो गई है—वह बहुत देर तक तारा को चूमता-चाटता रहा, फिर उसने सोचा कि किस्सा मुख्तसर करना चाहिए, "तारा, कपड़े उतार दो !"

"सारे कपड़े ?"

"हाँ, सारे !"

तारा ने सारे कपड़े उतार दिए और पलंग पर लेट गई।

उसने तारा के नंगे जिस्म को एक नजर देखा और महसूस किया कि अच्छा जिस्म है। उसका निकाह हो चुका था और उसने अपनी बीवी को बस दो-तीन मर्तबा देखा था। उसके दिमाग़ में खयालात का एक ताँता बँध गया, 'उसका बदन कैसा होगा? क्या वह तारा की तरह एक मर्तबा कहने पर अपने सारे कपड़े उतारकर उसके साथ लेट जाएगी? क्या वह उसके साथ ब्राँडी पिएगी? क्या उसके बाल कटे हुए हैं?'

ख़यालात के ताँते में उसका जमीर[21] जाग उठा, 'निकाह का यह मतलब है कि तुम्हारी शादी हो चुकी है। सिर्फ एक मरहला[22] बाक़ी है कि तुम अपनी ससुराल जाओ और लड़की का हाथ पकड़कर ले आओ। क्या यह तुम्हारे लिए वाजिब है कि एक बाजारू औरत को अपनी आग़ोश की ज़ीनत[23] बनाओ, ख़ुम के ख़ुम लुटाते फिरो ?'

वह बहुत ख़फ़ीफ़[24] हुआ; उसकी आँखें मुँदना शुरू हो गईं और वह सो गया—थोड़ी ही

देर मे तारा भी ख्वाबे-गफलत[25] के मजे लने लगी।

उसने कई बेरब्त, ऊटपटाँग ख्वाब देखे. कोई दो घटे के बाद एक बहुत ही डरावना ख्वाब देखते हुए वह हडबडा के उठ जैठा—जब उसकी आँखे अच्छी तरह खुलीं तो उसने देखा कि वह एक अजनबी कमरे मे है और एक अलिफ नगी जवान लडकी उसके साथ लेटी हुई है।

वह खुद भी अलिफ नगा था—वह बौखला गया, उसने पाजामा उलटा पहन लिया और उसको एहसास तक न हुआ, कुर्ता पहनकर उसने जेबे टटोली—सबके-सब नोट मौजूद थे।

उसने सोडा खोला और एक पैग बनाकर पिया, फिर उसने तारा को हौले-से झँझोडा उठो उठो ना "

तारा आँखे मलती हुई उठ बैठी।

उसने कहा "कपडे पहन लो।'

तारा ने कपडे पहन लिए।

बाहर गहरी शाम रात बनने की तैयारियाँ कर रही थी।

उसने सोचा 'अब कूच करना चाहिए ' लेकिन वह तारा से कुछ पूछना चाहता था कि बहुत-सी बाते उसके जेहन से निकल गई थी, उसने हिचकिचाते हुए तारा से पूछा 'क्यो तारा जब हम लेटे मेरा मतलब है, जब मैंने तुमसे कपडे उतारने को कहा तो उसके बाद क्या हुआ?"

"कुछ नही आपने अपने कपडे उतारे और मेरे बाजू पर हाथ फेरते-फेरते सो गए " तारा ने जवाब दिया।

"बस?"

"हाँ लेकिन सोते-सोते आप दो-तीन मर्तबा बडबडाए 'मैं गुनाहगार हूँ, मैं गुनाहगार हूँ '" तारा पलग पर से उठी और अपने बाल सँवारने लगी।

उसने एक डबल पैग अपने हलक मे जल्दी-जल्दी उँडेला, बोतल को कागज़ में लपेटा और दरवाज़े की तरफ बढ़ा—यकायक वह रुका, उसने अपनी जेब से सौ रुपए का एक नोट निकाला और आगे बढ़कर तिपाई पर रख दिया।

तारा ने पूछा "चले?"

"हाँ फिर कभी आऊँगा " यह कहकर वह लोहे की पेचदार सीढ़ियों से नीचे उतर गया।

बडे बाजार की तरफ उसके कदम उठने ही वाले थे कि हॉर्न बजा। उसने मुड़कर देखा तो एक टैक्सी खडी थी, उसने सोचा 'चलो अच्छा हुआ यहीं मिल गई पैदल चलने की जहमत से बच गए '

उसने ड्राइवर से पूछा "क्यों भाई, ख़ाली है?"

ड्राइवर ने जवाब दिया "ख़ाली है ? क्या मतलब?"

"तो फिर " वह मुडा।

"किधर जाता है सेठ?" ड्राइवर ने उसको पुकारा।

उसने जवाब दिया : "कोई और टैक्सी देखता हूँ।"

ड्राइवर दरवाज़ा खोलकर बाहर निकल आया : "मस्तक तो नहीं फिरेला · यह टैक्सी तुम्हीं ने तो ले रखी है।"

वह बौखला गया : "मैंने ?"

ड्राइवर बड़े गँवारपने पर उतर आया · "हाँ तूने साला दारू पीकर सबकुछ भूल गया "

इस पर तू-तू मैं-मैं शुरू हो गई; इधर-उधर से लोग इकट्ठे हो गए।

उसने टैक्सी का दरवाजा खोला और अंदर बैठ गया : "चलो!"

ड्राइवर ने टैक्सी स्टार्ट की : "किधर ?"

उसने कहा . "पुलिस स्टेशन!"

ड्राइवर ने वाही-तबाही बकना शुरू कर दी।

वह सोच में पड़ गया : 'जो टैक्सी मैंने ली थी, उसका बिल अड़तीस रुपए बना था और जो मैंने अदा कर दिया था वह दूसरी टैक्सी कहाँ से आन टपकी मैं नशे की हालत में ज़रूर हूँ, मगर यक़ीनी तौर पर कह सकता हूँ कि न यह वह टैक्सी है और न यह वह ड्राइवर है, मुझे वहाँ ले गया था '

जब टैक्सी पुलिस स्टेशन पहुँची तो उसके कदम बुरी तरह लड़खडा रहे थे।

सब-इंस्पेक्टर फ़ौरन भाँप गया कि मामला क्या है—उसने उसे कुर्सी पर बैठने के लिए कहा।

ड्राइवर ने अपनी दास्तान बयान की, जो सर-ता-पा गलत थी।

वह उस दास्तान की तर्दीद[26] करता, मगर उसमें ज्यादा बोलने की हिम्मत नहीं थी—उसने सब-इंस्पेक्टर से कहा : "जनाब, मेरी समझ में नहीं आता, यह क्या क़िस्सा है जो टैक्सी मैंने ली थी, उसका बिल अड़तीस रुपए बना था, जो मैंने अदा कर दिया था अब मुझे मालूम नहीं, यह कौन है और मुझसे कैसा किराया माँगता है "

ड्राइवर ने कहा : "हुज़ूर इंस्पेक्टर बहादुर, यह दारू पिएला है "

वह झुँझला गया : "अरे भई कौन सूअर कहता है कि उसने नहीं पी सवाल तो यह है कि आप कहाँ से तशरीफ़ ले आए "

सब-इंस्पेक्टर ग़ैर-मुतवक़्क़े[27] तौर पर शरीफ आदमी था; उसने ड्राइवर के बार-बार बयालीस रुपए कहने के बावजूद पंद्रह रुपए तय कर दिए—ड्राइवर बहुत चीख़ा-चिल्लाया, मगर सब-इंस्पेक्टर ने उसे डाँट-डपटकर पुलिस स्टेशन से बाहर निकलवा दिया, फिर उसने एक सिपाही को दूसरी टैक्सी ले आने के लिए कहा।

टैक्सी आई तो सब-इंस्पेक्टर ने एक सिपाही उसके साथ कर दिया कि उसे घर तक छोड़ आए।

उसने लुकनत[28] भरे लहजे में बहुत-बहुत शुक्रिया अदा किया और पूछा : "जनाब, क्या ग्रांट रोड पुलिस स्टेशन है ?"

सब-इंस्पेक्टर ने ज़ोर का क़हक़हा लगाया और अपने पेट पर हाथ रखते हुए कहा :

"मिस्टर, तुमने वाक़ई ख़ूब पी रखी है   यह कोलाबा पुलिस स्टेशन है   जाओ, अब घर जाकर सो जाओ   "

वह घर पहुँचा और खाना खाए बिना, कपड़े उतारे बगैर सो गया—ब्राडी की बोतल भी उसके साथ सोती रही।

दूसरे रोज़ सुबह दस बजे के क़रीब वह उठा—उसके जोड-जोड में दर्द था, सिर मे जैसे बडे-बड़े वज़नी पत्थर भरे पड़े थे; मुँह का ज़ाइका ख़राब था—उसने जूँ-तूँ उठकर फ़्रूट साल्ट[29] के दो-तीन गिलास पिए; फिर चार-पाँच प्याले चाय के पिए, तब कही शाम को जाकर उसकी तबीयत क़दरे-बहाल[30] हुई और उसने ख़ुद को गुजिश्ता[31] वाकिआत के मुताल्लिक़ सोचने के काबिल महसूस किया।

वाक़ियात की बहुत लंबी जजीर थी; बाज़ कड़ियाँ तो सलामत थीं, मगर बाज गायब; वाक़िआत का तसल्सुल[32] शुरू से लेकर ग्रीन होटल तक और ग्रीन होटल से कोलाबा के बॉर तक बिलकुल साफ था; फिर नटवरलाल के साथ उस वादी की सैयाही शुरू होनी थी और मामला गडमड हो जाता था; चद झलकियाँ दिखाई देती थी, बडी वाज़ेह, मगर फौरन ही मुबहम[33] परछाइयो का सिलसिला शुरू हो जाता था; वह कैसे उस लड़की के घर पहुँचा; उस लड़की का नाम उसके हाफ़िजे[34] से फिसलकर किस खड्ड मे जा गिरा—लडकी की शक्लो-सूरत उसे बड़ी अच्छी तरह याद थी।

वह उस लडकी के घर कैसे पहुँचा था, उसने महसूस किया कि यह जानना उसके लिए बडा अहम है—अगर उसका हाफिजा उसकी मदद करता तो बहुत-सी कडियाँ मिल जाती, मगर बसद[35] कोशिश वह किसी नतीजे पर न पहुँच सका—और यह टैक्सियो का क्या सिलसिला था; उसने पहली को तो छोड दिया था, मगर वह दूसरी कहाँ से टपक पडी थी -सोच-सोचकर उसका दिमाग पाश-पाश[36] हो गया; उसने महसूस किया कि जितने वज़नी पत्थर उसके दिमाग में भरे पड़े थे, सब आपस मे टकरा-टकराकर चूर-चूर हो गए हैं।

रात को उसने ब्राडी के तीन पैग पिए, थोडा-सा हल्का खाना खाया और गुज़िश्ता वाक़िआत के मुताल्लिक़ सोचता-सोचता सो गया।

वह कडियाँ, जो गुम थी, उनको तलाश करना अब उसका मसलक[37] हो गया—वह चाहता था कि जो कुछ उस रोज हुआ था, मिनो-अन[38] उसकी आँखो के सामने आ जाए और रोज-रोज की मगज़पाशी दूर हो—अब उसको इस बात का भी बडा कलक था कि उसका गुनाह नामुकम्मल रह गया था।

वह सोचता था : 'यह अधूरा गुनाह जाएगा किस खाते मे   ' वह चाहता था कि उसके अधूरे गुनाह की भी तकमील[39] हो जाए।

तलाशे-बिसयार[40] के बावजूद वह पहाड़ी बंगलानुमा बिल्डिंग उसकी आँखों से ओझल रही—जब वह थक-हार गया तो एक दिन उसने सोचा : 'क्या वह सब ख़्वाब तो नहीं था ?'

फिर उसने सोचा : 'मगर ख़्वाब में आदमी रुपए तो ख़र्च नहीं करता   उस रोज़ मेरे

कम से कम ढाई सौ रुपए ख़र्च हुए थे '

एक रोज उसने पीर साहब से नटवरलाल के मुताल्लिक पूछा तो उन्होंने बताया कि नटवरलाल उस रोज के बाद दूसरे ही दिन कहीं समंदर पार चला गया है गालिबन मोतियो के सिलसिले में — उसने नटवरलाल पर हजार लानतें भेजी और फिर तलाश शुरू कर दी ।

एक दिन अचानक ही उसे अपने हाफिजे में उस पहाडी बँगलानुमा बिल्डिंग की दीवार पर पीतल की एक नेमप्लेट नजर आई 'डॉक्टर डॉक्टर बैराम जी '

कोलाबा की गलियो मे चलते-चलते आखिर वह एक ऐसी गली में जा निकला, जो उसे जानी-पहचानी-सी लगी — दो रूया[41] उसी किस्म की पहाडी बँगलानुमा बिल्डिंगें थीं, हर बिल्डिंग के बाहर पीतल की छोटी-छोटी नेमप्लेटे लगी हुई थी, किसी बिल्डिंग पर चार, किसी पर पाँच, किसी पर तीन ।

वह दाएँ-बाएँ गौर से देखता हुआ आगे बढ रहा था और उसके दिमाग मे वह खत भी घूम रहा था, जो उसे सुबह उसकी मांग की तरफ से मौसूल[42] हुआ था कि इतजार की हद हो गई है, तारीख मुकर्रर[43] कर दी गई है, अब वह आ जाए और अपनी दुल्हन को ले जाए "और मैं इधर खोई हुई एक कडी ढूँढ रहा हूँ अपने एक नामुकम्मल[44] गुनाह को मुकम्मल करने की कोशिश मे मारा-मारा फिर रहा हूँ "

एकदम उसे अपने दाहिने हाथ पीतल की नेमप्लेट नजर आई, जिस पर खुदा हुआ था 'डॉक्टर एम बैराम जी, एम डी ।'

वह कांपने लगा "वही बिल्डिंग, बिल्कुल वही रंग , वही लोहे की पेचदार सीढियाँ "

वह सँभला और फिर बेधडक सीढियाँ चढ गया — अब उसके लिए हर चीज जानी-पहचानी थी ।

कॉरीडोर के सिरे पर उसने सामनेवाले दरवाजे पर दस्तक दी ।

थोडी देर के बाद एक लडके ने दरवाजा खोला — उसने फौरन पहचान लिया कि वही लडका है, जो उस रोज सोडे और गिलास लाया था ।

उसने अपने होठों पर मसनूई मुसकराहट पैदा करते हुए लडके से पूछा : "बेटा, बाई जी हैं ?"

लडके ने इस्बात[45] में सिर हिलाया : "जी हाँ ।"

"जाओ उनसे कहो, साहब मिलने आए हैं ।" उसके लहजे में बेतकल्लुफी थी ।

लडका दरवाजा भेडकर अंदर चला गया ।

थोडी देर के बाद दरवाजा खुला और तारा नमूदार हुई — तारा को देखते ही उसने पहचान लिया कि वही लडकी है; अब तारा की नाक पर फुर्सी नहीं थी ।

उसने कहा . "नमस्ते ।"

"नमस्ते कहिए मिजाज कैसा है ?' तारा ने अपने कटे हुए बालो को एक खफीफ-सा झटका दिया ।

उसने जवाब दिया : "अच्छा है मैं पिछले दिनों बहुत मसरूफ रहा, इसलिए न आ

सका "कहिए फिर, क्या इरादा है ?"

तारा ने बड़ी संजीदगी से कहा : "माफ़ कीजिए, मेरी शादी हो चुकी है"

विह बौखला गया · "शादी ·? कब"

तारा ने फिर संजीदगी से जवाब दिया : "जी आज सुबह ·· आइए, आपको अपने पति से मिलाऊँ ·"

वह चकरा गया और कुछ कहे-सुने बगैर खटाखट सीढ़ियाँ उतर गया।

सामने टैक्सी खड़ी थी—उसका दिल एक लहज़े के लिए साकित[46] हो गया।

तेज़ क़दम उठता वह बड़े बाज़ार की तरफ बढ़ा ही था कि ड्राइवर ने जोर से कहा : "सेठ साहब, टैक्सी ।"

उसने झुँझलाकर कहा : "नहीं कमबख़्त, शादी"

---

1. स्थिर. 2 प्रकट. 3 मालूम. 4 कटे हुए. 5 विश्वास. 6 जानबूझकर की गई. 7 निगाहा. 8 आशावादी. 9 ठंड से जमा हुआ. 10 इस्लामी कानून के अनुसार. 11 वस्त्र. 12 मरणावस्था. 13 घूँट. 14 नग्न. 15 रट. 16 सैर. 17 बुरी. 18 अश्लील. 19 तसल्ली: 20 कटे हुए बाल. 21 अंतरात्मा: 22 मंजिल. 23. शोभा: 24 हल्का. 25 स्वप्नों भरी गहरी नींद. 26 खंडन. 27. अप्रत्याशित. 28. हकलाहट. 29 फलों का नमक: 30 पहले से कुछ बेहतर. 31 गश्त. 32 सिलसिला. 33 अस्पष्ट. 34 स्मरण-शक्ति. 35 सैकड़ों बार. 36 टुकड़े-टुकड़े: 37. धर्म. 38. हू-ब-हू. 39. पूर्ति. 40 बहुत ज्यादा खोजना. 41. दोनों तरफ. 42. प्राप्त. 43. निश्चित: 44. अधूरे; 45. स्वीकारोक्ति. 46. स्पंदन रहित।

शारदा

बडे डाकख़ाने से कुछ आगे, बदरगाह के फाटक मे कुछ इधर, सिगरेटवाले की दूकान से नज़ीर को स्कॉच मुनासिब दामों पर मिल जाती थी—जब उसने पैंतीस रुपए अदा करके कागज में लिपटी हुई बोतल थामी तो उस वक्त दिन के ग्यारह बजे थे; यूँ तो वह रात को पीने का आदी था, मगर उस रोज मौसम खुशगवार होने के बायस वह चाहता था कि सुबह ही से शुरू कर दे और रात तक पीता रहे।

बोतल हाथ मे पकड वह खुश-खुश घर की तरफ रवाना हुआ; उसका इरादा था कि वह बोरीबंदर के स्टैंड से टैक्सी पकड़ेगा, एक पैग टैक्सी में बैठकर पिएगा और हल्के-हल्के सुरूर मे घर पहुँच जाएगा; बीवी पीने से मना करेगी तो वह कहेगा : 'देखो मौसम कितना अच्छा है । ' फिर वह उसे वह भोंडा-सा शोर सुनाएगा

'की फरिश्तो की राह अब्र ने बद,
जो गुनाह कीजै सवाब है आज ।'

वह कुछ देर जरूर चख करेगी, लेकिन बिल आखिर खामोश हो जाएगी, और फिर उसके कहने पर कीमे के पराँठे बनाना शुरू कर देगी।

वह कोई बीस-पच्चीस कदम ही चला होगा कि एक आदमी ने उसको सलाम किया।

नजीर का हाफिजा कमजोर था, उसने सलाम करनेवाले आदमी को न पहचाना, लेकिन उस पर यह जाहिर न किया कि वह उसको नही जानता—बड़े अख्लाक से उसने कहा "क्यो भई, कहाँ होते हो ? कभी नजर ही नही आए!"

उस आदमी ने मुसकराकर कहा "हुजूर, मै तो यही होता हूँ आप ही कभी तशरीफ नही लाए!"

नजीर ने उस आदमी को फिर भी न पहचाना : "मैं अब जो तशरीफ ले आया हूँ।"

"तो चलिए मेरे साथ "

नजीर उस वक्त बडे अच्छे मूड मे था . "चलो "

उस आदमी ने नजीर के हाथ मे बोतल देखी और मानीखेज तरीके पर मुसकराया : "बाकी सामान तो आपके पास है।"

नजीर ने फौरन ही जान लिया कि वह आदमी दलाल है : "तुम्हारा नाम क्या है ?"

"करीम आप भूल गए थे !"

नजीर को याद आ गया कि उसकी शादी से पहले करीम उसके लिए अच्छी-अच्छी

लडकियाँ लाया करता था, बडा ईमानदार दलाल था वह करीम—उसने गौर से देखा तो सूरत जानी-पहचानी मालूम हुई, फिर पिछले तमाम वाकिआत उसके जेहन में उभर आए।

उसने करीम से माज़रत चाही "यार, मैं तुम्हे पहचान नही सका था मेरा खयाल है, गालिबन छः बरस हो गए हैं तुमसे मिले हुए।"

"जी हाँ!"

"तुम्हारा अड्डा तो पहले ग्राट रोड का नाका हुआ करता था?"

करीम ने बीडी सुलगाई और जरा फख्र से कहा "वह मैंने छोड दिया है आपकी दुआ से अब यहाँ एक होटल में धंधा शुरू कर रखा है।"

नजीर ने दाद दी "यह बहुत अच्छा किया है तुमने।"

करीम ने और ज्यादा फख्रिया लहजे मे कहा "दस छोकरियाँ हैं एक बिलकुल नई है।"

नजीर ने छेडने के अदाज मे कहा "तुम लोग यही कहा करते हो।"

करीम को बुरा लगा "कसम कुरान की, मैंने कभी झूठ नही बोला सुअर खाऊँ, अगर वह छोकरी बिलकुल नई न हो " फिर उसने अपनी आवाज धीमी की और नजीर के कान के साथ मुँह लगाकर कहा "आठ दिन हुए हैं जब पहला पैसेजर आया था झूठ बोलूँ तो मेरा मुँह काला हो।"

नज़ीर ने पूछा "कुँवारी थी?"

"जी हाँ दो सौ रुपए लिए थे उस पहले पैसेजर से।"

नजीर ने करीम की पसलियो मे एक ठोका दिया "तुम तो यही भाव पक्का करने लगे।"

करीम को नजीर की बात फिर बुरी लगी "कसम कुरान की, सुअर हो जो आपसे भाव करे आप तशरीफ ले चलिए आप जो भी देंगे, मुझे कुबूल होगा करीम ने आपका बहुत नमक खाया है।"

नजीर की जेब में उस वक्त साढे चार सौ रुपए थे, मौसम अच्छा था, मूड भी अच्छा था, उसके जी मे आया कि वह छः बरस पीछे के जमाने में चला जाए—वह बिन पिए मगरूर था "चलो यार, आज फिर तमाम ऐयाशियाँ हो जाएँ लेकिन एक और बोतल का बदोबस्त होना चाहिए।"

करीम ने पूछा "आप कितने मे लाए हैं यह बोतल?"

"पैंतीस रुपए मे।"

"कौन-सा ब्राड है?"

"जानीवाकर!"

करीम ने छाती पर हाथ मारकर कहा "मैं आपको तीस मे ला दूँगा।"

नजीर ने दस-दस के तीन नोट निकाले और करीम के हवाले कर दिए "नेकी और पूछ-पूछ यह लो मुझे होटल में बिठाकर तुम पहला काम यही करना तुम जानते हो,

मैं ऐसे मौकों पर अकेला नहीं पिया करता।"

करीम मुसकराया "और आपको याद होगा, मैं डेढ़ पैग से ज्यादा नहीं पिया करता।"

नज़ीर को याद आ गया कि करीम छः बरस पहले सिर्फ डेढ़ पैग पिया करता था. वह मुसकराया: "आज दो हो जाएँ?"

"जी नहीं, डेढ़ से ज़्यादा एक क़तरा भी नहीं "

करीम एक थर्ड क्लास बिल्डिंग के पास ठहर गया, जिसके एक कोने में छोटे-से मैले बोर्ड पर लिखा था 'मैरीना होटल' नाम ख़ूबसूरत था, मगर इमारत निहायत ही गलीज़ थी. सीढ़ियाँ शिकस्ता[1]—ग्राउंड फ़्लोर पर सूदख़ोर पठान बडी-बडी शलवारें पहने खाटो पर लेटे हुए थे; पहली मंज़िल पर क्रिश्चियन आया लोग नज़र आ रही थीं और दूसरी मंजिल पर जहाजों के बेशुमार ख़लासी; तीसरी मंज़िल 'मैरीना होटल' थी और चौथी मंज़िल पर कोने का एक कमरा करीम के पास था, जिसमे कई लड़कियाँ मुर्गियों की तरह अपने दड़बे में बैठी हुई थीं।

करीम ने होटल के मालिक से चाबी मँगवाई और तीसरी मंजिल का एक बडा, लेकिन बेहंगम-सा कमरा खोला, जिसमें लोहे की एक चारपाई, एक कुर्सी और एक तिपाई पडी थी; तीन अतराफ़[5] से यह कमरा खुला था; बेशुमार खिडकियाँ थी, जिनके शीशे टूटे हुए थे, और कुछ था या नहीं, हाँ हवा की बहुत इफ़रात थी।

करीम ने आरामकुर्सी, जो बेहद मैली थी, एक कुर्सी से भी ज्यादा मैले कपडे से साफ की और नजीर से कहा. "तशरीफ़ रखिए लेकिन अर्ज यह है कि इस कमरे का किराया दस रुपए होगा।"

अब नजीर ने कमरे को गौर से देखा "दस रुपए ज्यादा है यार।"

करीम ने कहा "बहुत ज्यादा हैं लेकिन क्या किया जाए, साला होटल का मालिक बनिया है, एक पैसा कम नही करता और नजीर साहब, मौज-शौक करनेवाले भी कम-ज्यादा की परवाह नही करते।"

नजीर ने कुछ सोचकर कहा "तुम ठीक कहते हो किराया पेशगी दे दूँ?"

"जी नही आप पहले छोकरी तो देख लीजिए" यह कहकर वह कमरे से निकल गया।

थोडी देर के बाद वह वापिस आया तो उसके साथ एक निहायत ही शर्मीली-सी लडकी थी, घरेलू किस्म की हिंदू लडकी, जो सफेद धोती बाँधे हुए थी, उम्र चौदह बरस के लगभग होगी, वह खुशशक्ल तो नही थी, लेकिन भोली-भाली थी।

करीम ने लडकी से कहा "बैठ जाओ यह साहब मेरे दोस्त है बिलकुल अपने आदमी है।"

लडकी नजरें नीची किए लोहे की चारपाई पर बैठ गई।

"अपना इत्मीनान कर लीजिए नजीर साहब, मैं गिलास और सोडा लाता हूँ!"

करीम चला गया तो नज़ीर आरामकुर्सी पर से उठकर लड़की के पास बैठ गया और उसने अपने छः बरस पहले के अंदाज़ में पूछा: "आपका नाम?"

लडकी ने कोई जवाब न दिया—नज़ीर ने ज़रा सरककर उसके हाथ पकडे और फिर पूछा : "आपका नाम क्या है जनाब ?"

लड़की ने हाथ छुड़ाकर कहा : "शकुंतला।"

नजीर को वह शकुंतला याद आ गई, जिस पर राजा दुष्यंत आशिक हुआ था "मेरा नाम दुष्यंत है।" वह मुकम्मल ऐयाशी पर तुला हुआ था।

लडकी ने उसकी बात सुनी और मुसकरा दी।

इतने में करीम आ गया—उसने नज़ीर को सोडे की चार बोतलें दिखाईं, जो ठंडी होने के बायस पसीना छोड़ रही थीं. "मुझे याद है कि आप रोजर्ज़ का सोडा पसंद करते थे मैं रोजर्ज ही का बर्फ़ मे लगा हुआ सोडा लेकर आया हूँ।"

नजीर ख़ुश हो गया : "तुम कमाल करते हो करीम" फिर वह लडकी से मुख़ातिब हुआ. "जनाब आप भी शौक़ फ़र्माएँगी ?"

लडकी ने कुछ न कहा।

करीम ने जवाब दिया. "नज़ीर साहब, यह नहीं पीती दस दिन ही तो हुए हैं इसको यहाँ आए हुए।"

नजीर को अफसोस हुआ : "यह तो बहुत बुरी बात है।"

करीम ने जानीवाकर की बोतल खोलकर नजीर के लिए एक बडा पैग बनाया और आँख मारकर कहा "आप राज़ी कर लीजिए इसे।"

नजीर ने एक ही जुरअे में गिलास खाली कर डाला।

करीम ने अपना पैग पिया तो फौरन ही उसकी आवाज नशा-आलूद[6] हो गई—ज़रा झूमकर उसने नजीर से पूछा "छोकरी तो पसद है ना आपको ?"

नजीर ने सोचा कि लडकी उसे पसद है या नहीं, लेकिन वह कोई फैसला न कर सका—उसने शकुंतला की तरफ गौर से देखा। अगर उसका नाम शकुंतला न होता तो बहुत मुम्किन है, वह उसे पसद कर लेता—वह शकुतला, जिस पर राजा दुष्यत शिकार खेलते-खेलते आशिक हो गया था, बहुत ही खूबसूरत थी. कम से कम किताबों में तो यही दर्ज था कि वह चंदे आफताब, चदे माहताब थी, आहूचश्म थी—उसने फिर शकुंतला की तरफ देखा—उसकी आँखें बुरी नही थी. वह आहूचश्म भी नहीं थी. लेकिन उसकी आँखें उसकी अपनी आंखे थीं, काली-काली और बडी-बड़ी।

उसने और कुछ न सोचा और करीम से कहा "बोलो मामला कहाँ तय होता है ?"

करीम ने गिलास में अपने लिए आधा पैग और उँडेला और कहा "सौ रुपए।"

नजीर ने फिर कुछ न सोचा "ठीक है"

करीम ने अपना आधा पैग पिया और खिसक लिया।

नजीर ने उठकर दरवाजा बद कर दिया—वह शकुतला के पास बैठा तो वह घबरा-सी गई; उसने प्यार लेना चाहा तो वह खडी हो गई। नजीर को शकुंतला की यह हरकत नागवार महसूस हुई, लेकिन उसने फिर कोशिश की; बाज़ू से पकडकर उसने शकुंतला को अपने पास बिठाया और जबर्दस्ती चूमा—बडा ही बेकैफ सिलसिला था, लेकिन जानीवाकर

का नशा अच्छा था—उसको अफसोस हुआ कि इतनी महँगी चीज अच्छे नशे के बावजूद बेकार जा रही है—शकुतला बिलकुल अल्हड थी, उसको ऐसे मामलो के आदाब की कोई वाकफियत ही नही थी—नजीर एक अनाडी तैराक के साथ इधर-उधर बेकार हाथ-पाँव मार रहा था, आखिर वह उकता गया।

दरवाजा खोलकर उसने करीम को आवाज दी।

करीम लपकता हुआ आया "क्या बात है नजीर साहब ?"

नजीर ने बडी नाउम्मीदी से कहा "कुछ नही यार, यह छोकरी अपने काम की नही है!"

"क्यों ?"

"कुछ समझती ही नहीं।"

करीम ने शकुतला को एक तरफ ले जाकर बहुत समझाया, मगर वह कुछ न समझ सकी और शर्माती, लजाती, धोती सँभालती कमरे से बाहर निकल गई।

करीम ने कहा "मैं अभी हाजिर होता हूँ।"

नजीर ने उसको रोका "जाने दो यार कोई और छोकरी ले आओ" यकायक उसने कुछ और सोच लिया "वह रुपए जो मैंने तुम्हें दिए थे, उनकी एक जानीवाकर ले आओ और शकुतला के अलावा जितनी लडकियाँ इस वक्त मौजूद हैं, उन सबको यहाँ भेज दो मेरा मतलब है, वह लडकियाँ जो पीती हैं आज कोई और सिलसिला नही होगा मैं बस बातें करूँगा।"

करीम बहुत अच्छी तरह से नजीर को समझता था—उसने चार लडकियाँ कमरे मे भेज दी।

नजीर ने चारो लडकियो को सरसरी नजर से देखा—वह फैसला कर चुका था कि अब प्रोग्राम सिर्फ पीने का होगा।

उसने लडकियो के लिए गिलास मँगवाए और उनके साथ पीना शुरू कर दी, होटल मे दोपहर का खाना मँगवाकर उन लडकियों के साथ खाया और शाम के छः बजे तक बाते करता रहा, बडी फिजूल किस्म की बाते—वह खुश था कि जो कोफ्त शकुतला ने पैदा की थी, दूर हो गई है।

जानीवाकर की एक बोतल आधी बच गई थी, उसे वह साथ लेकर घर चला आया।

पद्रह रोज के बाद फिर मौसम की वजह से उसका जी चाहा कि सारा दिन पीता रहे—सिगरेटवाले की दूकान से जानीवाकर खरीदने के बजाय उसने सोचा, क्यों न करीम से मिला जाए, वह तीस मे ले देगा।

वह मैरीना होटल पहुँचा—इत्तिफाक़ से करीम मौजूद था।

करीम ने मिलते ही बहुत हौले-से कहा, "नजीर साहब, शकुतला की बडी बहन आई

हुई है   आज ही सुबह की गाड़ी से पहुँची है   बहुत हठीली है, मगर आप उसको जरूर राजी कर लेंगे।"

नजीर कुछ न सोच सका—फिर उसने अपने दिल में कहा : 'चलो देख लो   !'

उसने करीम से कहा : "यार, पहले तुम जानीवाकर ले आओ।" उसने जेब में से तीस रुपए निकालकर करीम को दे दिए। करीम ने नोट लेकर नजीर मे कहा . "मैं बोतल ले आता हूँ   आप अंदर कमरे में बैठिए।"

नजीर के पास सिर्फ़ दस रुपए बाक़ी बचे थे, लेकिन वह कमरा खुलवाकर बैठ गया। उसने सोचा था कि जानीवाकर लेकर, एक नजर शकुतला की बहन को देखकर वह चल देगा और जाते वक्त दो रुपए करीम को दे देगा।

तीन तरफ से खुले हुए हवादार कमरे में निहायत ही मैली आरामकुर्सी पर बैठकर उसने सिगरेट सुलगाया और टाँगे फैला दीं।

थोडी देर के बाद आहट हुई और करीम दाखिल हुआ—उसने नजीर के कान के साथ मुँह लगाकर हौले-से कहा · "नजीर साहब, आ रही है, लेकिन आप ही राम[x] कीजिएगा उसे   !" यह कहकर वह चला गया।

पाँच-सात मिनट के बाद एक लडकी, जिसकी शक्लो-सूरत करीब-करीब शकुतला मे मिलती थी, तेवरी चढ़ाए, शकुतला के-से अदाज में सफेद धोती पहने कमरे मे दाखिल हुई; बडी बेपरवाई से उसने माथे के करीब हाथ ले जाकर नजीर को 'आदाब' कहा और लोहे के पलंग पर बैठ गई।

नजीर ने यूँ महसूस किया, जैसे वह उससे लडने आई है—छ बरस पीछे के जमाने मे डुबकी लगाकर उसने पूछा : "आप शकुतला की बहन हैं ?"

उसने बडे तीखे और खफगीआमेज[9] लहजे में कहा "जी हाँ।"

नजीर खामोश हो गया—उसने उस लडकी को, जिसकी उम्र शकुतला से गालिबन तीन बरस बडी थी, बडे गौर से देखा।

नजीर की यह हरकत उस लड़की को बहुत नागवार लगी—उसने बडे जोर से टाँगे हिलाकर कहा "आप मुझसे क्या कहना चाहते हैं ?"

नजीर अपने होठों पर छ बरस पीछे की मुसकराहट ले आया "जनाब, आप इस कदर नाराज क्यो हैं ?"

वह बरस ही तो पडी "मैं नाराज क्यों न हूँ   ? यह आपका करीम मेरी बहन को जयपुर मे उडा लाया है   बताइए आप, मेरा खून नहीं खौलेगा   ? मुझे मालूम हुआ है, मेरी बहन आपको भी पेश की गई थी   !"

नजीर की जिंदगी में ऐसा मामला कभी नही हुआ था, कुछ देर सोचकर उसने बडे खुलूस के साथ उस लडकी मे कहा : "शकुतला को देखते ही मैंने सोच लिया था कि वह मेरे काम की नहीं है   वह बहुत अल्हड है   मुझे ऐसी लडकियाँ पसद नही   आप शायद बुरा मानें, लेकिन यह हकीकत है कि मैं उन औरतो को पसंद करता हूँ, जो मर्द की ज़रूरियात को समझती हैं   "

वह ख़ामोश रही।

नज़ीर ने पूछा : "आपका नाम ?"

उसने मुख़्तसरन[10] कहा : "शारदा।"

नज़ीर ने फिर पूछा . "आपका वतन ?"

"जयपुर।" उसका लहजा बहुत तीखा और ख़फगीआलूद[11] था।

नज़ीर ने मुसकराकर कहा : "देखिए आपको मुझसे नाराज होने का कोई हक नहीं है करीम ने अगर कोई ज्यादती की है तो आप उसको सजा दे सकती हैं भला मेरा इसमें क्या कुसूर है " वह उठा और यकायक उसने शारदा को अपने बाजुओं में समेट लिया और उसके होंठो को चूम लिया · "हाँ, इस जुर्म की सजा मैं भुगतने के लिए तैयार हूँ।"

शारदा कुछ कह न पाई, उसके माथे पर बेशुमार तब्दीलियाँ नमूदार हुई, उसने फिर कुछ कहना चाहा, लेकिन वह फिर कुछ न कह सकी; वह उठ खड़ी हुई, लेकिन फौरन ही बैठ गई।

नजीर उसे देख रहा था और कहना चाहता था · 'बताइए आप मुझे क्या सजा देना चाहती हैं ?' कि ऊपर से किसी बच्चे के रोने की आवाज आई।

शारदा उठी—नजीर ने उसे रोका "कहाँ जा रही हैं आप ?"

"मेरी मुन्नी रो रही है दूध के लिए " वह एकदम माँ बन गई और कमरे से बाहर निकल गई।

नजीर ने शारदा के बारे मे सोचने की कोशिश की, मगर कुछ सोच न सका।

थोडी देर के बाद करीम आ गया, जानीवाकर, सोडे और गिलास वह साथ लाया था—उसने अपने और नजीर के लिए पैग बनाए और नजीर से राजदाराना लहजे मे पूछा "कुछ बाते हुई शारदा से मैंने तो समझा था कि आपने उसे पटा लिया होगा ?"

नजीर ने मुसकराकर जवाब दिया "बडी गुमीली औरत है।"

"जी हां सुबह आई है और अब तक मेरी जान खा गई है आप जरा उसको राम करें सच कहता हूँ, शकुंतला खुद यहाँ आई थी उसका बाप उसकी माँ को छोड चुका है शारदा का मामला भी ऐसा ही है उसका पति शादी के चंद माह बाद उसको छोड़कर खुदा मालूम कहां चला गया है अब अपनी बच्ची के साथ अपनी माँ के पास रहती है खुदा के लिए आप मना लीजिए ना उसको।"

नजीर ने कहा . "इसमे मनाने की क्या बात है ?"

करीम ने आँख मारी "साली मुझसे तो मानती नही जब से आई है डाँट ही रही है।"

तभी शारदा अपनी एक साल की बच्ची को गोद मे उठाए कमरे मे दाखिल हुई—उसने गुस्से से करीम को देखा।

करीम ने जल्दी से अपना पैग पिया, और बाहर चला गया।

शारदा की बच्ची को सख्त जुकाम था. उसकी नाक बहुत बुरी तरह बह रही

थी—नजीर ने करीम को बुलाया और उसको पाँच रुपए का नोट देकर कहा : "जाओ विक्स ले आओ।"

'जी अच्छा' कहकर करीम चला गया।

नजीर अब शारदा की बच्ची की तरफ मुतवज्जेह[12] हुआ; उसको बच्चे वैसे भी बहुत अच्छे लगते थे—बच्ची खुशशक्ल तो नही थी, लेकिन कमसिनी के बायस दिलकश थी—उसने बच्ची को गोद मे ले लिया, और जिसे उसकी माँ न सुला सकी थी, उसके बालों मे हौले-हौले उँगलियाँ फेरकर उसे सुला दिया और शारदा से कहा · "मुन्नी की माँ तो मैं हूँ।"

शारदा पहली बार मुसकराई "लाइए, मैं मुन्नी को ऊपर छोड आऊँ।"

चद ही मिनट के बाद वह लौट आई—उसके चेहरे पर गुस्से के आसार नही थे।

नजीर उठा और शारदा के पास बैठ गया, थोडी देर वह खामोश रहा, फिर उसने कहा "क्या आप मुझे अपना पति बनने की इजाजत दे सकती हैं " और शारदा के जवाब का इन्तजार किए बगैर उसने शारदा को अपने सीने के साथ लगा लिया—शारदा ने गुस्से का कोई इजहार न किया।

नजीर ने कहा "जवाब दीजिए जनाब!"

शारदा खामोश रही—नजीर ने एक पैग बनाया तो शारदा ने नाक सिकोडकर कहा "मुझे इस चीज से बडी नफरत है।"

नजीर ने पैग मे सोडा हल किया और कहा "आपको इस चीज से बडी नफरत है लेकिन क्यो?"

शारदा ने मुख्तसर-सा जवाब दिया : "बस है!"

"तो आज से नही रहेगी यह लीजिए!" उसने गिलास शारदा की तरफ बढ़ा दिया।

"मैं हर्गिज नही पियूँगी!"

"मैं कहता हूँ, तुम हर्गिज इनकार नही करोगी।"

शारदा ने गिलास थाम लिया—थोड़ी देर तक वह गिलास को अजीब निगाहो से देखती रही; फिर उसने मजलूमाना[13] निगाहों से नजीर की तरफ देखा और बाएँ हाथ से नाक बद करके सारा गिलास गटागट पी गई; उसका जी जरा की जरा मतला, मगर उसने जब्त कर लिया, फिर उसने धोती के पल्लू मे अपनी भीगी आँखे पौंछकर कहा . "यह पहली और आखिरी बार है लेकिन मैंने क्यो पी है?"

नजीर ने उसके गीले होंठ चूम लिए और कहा "यह मत पूछो " फिर उसने उठकर दरवाजा बद कर दिया।

शाम को सात बजे के करीब नजीर ने दरवाजा खोला।

सामने करीम खडा था।

शारदा नजरे झुकाए ऊपर चली गई।

करीम बहुत खुश था, उसने नजीर से कहा "आपने कमाल कर दिया आप सौ नही, सिर्फ़ पचास दे दीजिए।"

नजीर बेहद मुतमइन[14] था, इस कदर मुतमइन कि वह गुजिश्ता[15] तमाम औरतो को भूल चुका था, शारदा उसके जिसी सवालात का सौ फीसदी जवाब थी। उसने कहा "तुम्हे पैसे मैं कल दूँगा होटल का किराया भी कल चुकाऊँगा जानीवाकर और विक्स के बाद अब मेरे पास सिर्फ पाँच रुपए बाकी बचे हैं।"

करीम ने कहा "कोई वादा[16] नही मैं तो इस बात से खुश हूँ कि आपने शारदा से मामला फिट कर लिया हुजूर, वह मेरी जान खा गई थी अब वह शकुतला से कुछ नही कह सकती।"

नजीर जाने ही वाला था कि शारदा आ गई—शारदा को देखते ही करीम खिसक गया—उसकी गोद मे मुन्नी थी।

नजीर ने मुन्नी की नन्ही-नन्ही उँगलियों मे पाँच रुपए का नोट फँसाया तो शारदा ने 'ना ना नही ' की—नजीर ने मुसकराकर कहा "यह तुम क्या कर रही हो मैं इसका बाप हूँ।"

शारदा खामोश हो गई, रुपए उसने मुन्नी की उँगलियो ही मे फँसे रहने दिए—चद घटे पहले उसके तेवर ही कुछ और थे, ऐसा लगता था कि तेज-तर्रार बातो के दरिया बहा देगी, मगर अब वह बात करने मे भी गुरेज कर रही थी।

नजीर ने मुन्नी को गोद मे लेकर प्यार किया और शारदा से कहा "लो भई शारदा, मैं अब चला कल नही तो परसो जरूर आऊँगा।"

लेकिन नजीर दूसरे ही रोज मैरीना होटल पहुँच गया—शारदा के जिस्मानी खुलूस[17] ने उस पर जादू-सा कर दिया था।

उसने करीम के आगे-पीछे के सब रुपए दिए, जानीवाकर की एक बोतल मँगवाई, अपने पसदीदा सिगरेटो का एक डिब्बा मँगवाया और होटल के उसी तीन तरफ से खुले हवादार कमरे मे शारदा के साथ बद हो गया।

उसने शारदा से पीने के लिए कहा तो वह हौले-से बोली "मैंने कल ही कह दिया था कि यह पहली और आखिरी बार है "

नजीर अकेला पीता रहा—सुबह ग्यारह बजे से शाम के सात बजे तक वह शारदा के साथ रहा।

जब वह घर लौटा तो बेहद मुतमइन था, पहले रोज से भी ज्यादा मुतमइन—शारदा अपनी वाजिबी-सी शक्लो-सूरत और कमगोई के बावजूद उसके शहवानी हवास पर छा गई थी।

वह बार-बार सोचता 'शारदा कैसी औरत है मैंने अपनी जिंदगी मे ऐसी खामोश, मगर जिस्मानी तौर पर ऐसी पुर-गो[18] औरत नही देखी '

अब उसने हर दूसरे रोज मैरीना होटल जाना शुरू कर दिया—उसको रुपए-पैसे से कोई खास दिलचस्पी नही थी—वह करीम को साठ रुपए देता। वह जानता था कि करीम दस रुपए होटलवाले को देता होगा, पचास मे से बारह-तेरह रुपए अपनी कमीशन के वजअे[19] कर लेता होगा, बाकी के शारदा के पास जाते होगे, लेकिन न कभी उसने शारदा से

और न कभी शारदा ने उससे रुपए-पैसे की बात की।

अभी दो महीने ही गुजरे थे कि उसके सरमाए ने जवाब दे दिया; इसके अलावा उसने बड़ी शिद्दत से महसूस किया कि शारदा उसकी अज़्दवाजी ज़िंदगी में बहुत बुरी तरह हाइल हो रही है, वह बीवी के साथ सोता है तो उसको एक कमी-सी महसूस होती है और वह चाहने लगता है कि बिस्तर में उसकी बीवी के बजाय शारदा मौजूद हो। उसको शदीद[21] एहसास था कि यह बुरी बात है; इसी एहसास की शिद्दत के सबब उसने कोशिश की कि शारदा से उसका सिलसिला किसी न किसी तरह खत्म हो जाए।

एक रोज उसने शारदा से कहा "शारदा, मैं शादीशुदा हूँ मेरी जितनी जमा पूँजी थी, सब खत्म हो गई है समझ मे नहीं आता, मैं क्या करूँ तुम्हे छोड भी नही सकता और यह भी चाहता हूँ कि इधर का कभी रुख न करूँ "

शारदा ने उसकी बात सुनी और खामोश रही, फिर थोडी देर के बाद उसने कहा "जितने रुपए मेरे पास हैं, आप ले सकते हैं मुझे सिर्फ़ जयपुर तक का किराया दे दीजिए कि मैं शकुतला को लेकर वापस चली जाऊँ।"

नजीर ने उसका प्यार लिया और कहा · "बकवास न करो तुम मेरा मतलब नही समझी बात यह है कि मेरा सारा रुपया खर्च हो गया है; बल्कि यूँ कहो कि खत्म हो गया है मै यह सोच रहा हूँ कि तुम्हारे पास कैसे आ सकूँगा ?"

शारदा ने कोई जवाब न दिया।

दूसरे रोज एक दोस्त से कर्ज लेकर नजीर जब होटल में पहुँचा तो करीम ने उसे बताया कि शारदा जयपुर जाने के लिए तैयार बैठी है। नजीर ने शारदा को बुलवा भेजा, मगर वह न आई। शारदा ने करीम के हाथ बहुत-से रुपए भिजवाए और कहलवाया कि नजीर यह रुपए रख ले और उसे अपना एड्रेस दे दे।

नजीर ने करीम को अपना एड्रेस लिखकर दे दिया और रुपए वापस कर दिए—वह जाने ही वाला था कि शारदा आ गई; उसकी गोद में मुन्नी थी, उसने कहा . "मैं आज शाम को जयपुर जा रही हूँ!"

नजीर ने पूछा "क्यों ?"

शारदा ने मुख्तसर-सा जवाब दिया "मुझे मालूम नही " और यह कहकर वह चली गई।

नज़ीर ने करीम से कहा कि वह शारदा को बुला लाए, मगर वह न आई—नजीर चला आया; उसको यूँ महसूस हुआ कि जैसे उसके बदन की हरारत चली गई है, जैसे उसके जिस्मानी सवाल का जवाब चला गया है।

शारदा चली गई, वाकई चली गई—करीम को शारदा के चले जाने का बहुत अफ़सोस था।

एक इत्तिफाकिया[22] मुलाक़ात के दौरान करीम ने नज़ीर से शिकायत के तौर पर कहा · "नज़ीर साहब, आपने शारदा को क्यों जाने दिया ?"

नजीर ने कहा "भाई, मैं कोई सेठ तो हूँ नहीं हर दूसरे रोज पचास एक, दस एक,

बोतल के तीस अलग और ऊपर का ख़र्च अलहदा मेरा तो दीवाला पिट गया है ख़ुदा की कसम मकरूज़[23] हो गया हूँ "

करीम खामोश रहा।

नज़ीर ने फिर कहा . "मैं मजबूर था कहाँ तक यह किस्सा चलाता ?"

करीम ने कहा "नजीर साहब, शारदा को आपसे मुहब्बत थी।"

नजीर नहीं जानता था कि मुहब्बत क्या होती है, वह फकत इतना जानता था कि शारदा में जिस्मानी खुलूस था; वह उसके मर्दाना सवालात का बिलकुल सही जवाब थी; इसके अलावा वह और कुछ नहीं जानता था—शारदा के कुछ थोड़े-से हालात वह जरूर जानता था; यही कि उसका खाविंद ऐयाश था और शादी के चंद माह बाद ही उसे छोडकर चला गया था और कि मुन्नी की शक्ल अपने बाप पर है।

शारदा अपने साथ शकुंतला को जयपुर ले गई थी कि वह शकुंतला का ब्याह करना चाहती थी, उसकी ख्वाहिश थी कि शकुंतला शरीफाना जिंदगी बसर करे; वह शकुंतला से बहुत मुहब्बत करती थी—करीम ने बहुत कोशिश की थी कि शकुंतला पेशा करे; कई पैसेंजर एक-एक रात के दो-दो सौ रुपए देने के लिए तैयार थे, मगर शारदा नही मानती थी. वह करीम से लडना शुरू कर देती थी। करीम कहता 'तुम जानती नही हो, तुम क्या कर रही हो 'वह जवाब देती मै जानती हूँ, मैं क्या कर रही हूँ अगर तुम बीच मे न होते तो मै नजीर साहब का एक पैसा भी खर्च न होने देती '

एक बार शारदा ने नजीर से उसका फोटो मांगा था, जो उसने अगली ही मुलाकात पर शारदा को दे दिया था. शारदा ने कभी नजीर से मुहब्बत का इजहार नही किया था—जब वे दोनो साथ-साथ बिस्तर पर लेटे होते, वह बिलकुल खामोश रहती, वह उसे बोलने के लिए उकसाता, मगर वह कुछ न कहती। नजीर उसके जिस्मानी खुलूस का कायल था; जहाँ तक जिस्म का ताल्लुक था, वह इख्लास[24] का मुजस्समा[25] थी।

शारदा के जाने के बाद चंद दिन तक तो वह उदास रहा, फिर उसके सीने का बोझ हल्का हो गया—वह उसकी घरेलू जिंदगी मे बहुत बुरी तरह हाइल हो गई थी; वह अगर कुछ दिन और बंबई मे रहती तो बहुत मुम्किन था, वह अपनी बीवी से बिलकुल गाफिल हो जाता—अब वह अपनी असली हालत पर आने लगा था, शारदा का जिस्मानी लम्स[26] आहिस्ता-आहिस्ता उसके जिस्म से दूर हो रहा था।

एक दिन कि जब वह घर मे बैठा दफ्तर का काम कर रहा था, उसकी बीवी ने सुबह की डाक उसके सामने रखी और खोलना शुरू की—सारी डाक वही खोला करती थी—एक लिफाफा उसने खोला और कहा "मालूम नही, यह खत गुजराती मे है या हिंदी मे ?"

नजीर ने खत लेकर देखा; उसे भी मालूम न हो सका कि ज़बान हिंदी है या गुजराती; उसने खत ट्रे मे रख दिया और अपने काम में मशगूल हो गया।

थोडी देर के बाद उसकी बीवी ने अपनी छोटी बहन नईमा को आवाज दी; वह आई तो उसने ख़त उठा कर नईमा को दिया और कहा "जरा पढ़ो तो क्या लिखा है तुम तो हिंदी और गुजराती पढ़ सकती हो।"

नईमा ने ख़त देखा और कहा : ''हिंदी में है '' फिर उसने ख़त पढ़ना शुरू किया .

'जयपुर प्रिय नज़ीर साहब '

इतना पढ़कर वह रुक गई ।

नज़ीर चौंका ।

नईमा ने एक सतर पढ़ी ·

'आदाब आप तो मुझे भूल चुके होंगे, मगर जब से मैं यहाँ आई हूँ, आपको याद करती रहती हूँ 'नईमा का चेहरा सुर्ख़ हो गया, उसने खत पलटा और दूसरा रुख देखा . ''कोई शारदा है ''

नज़ीर उठ खडा हुआ; उसने हाथ बढ़ाकर नईमा से खत लिया और अपनी बीवी से कहा : ''खुदा मालूम कौन है मैं एक ज़रूरी काम से बाहर जा रहा हूँ '' उसने बीवी को कुछ कहने का मौक़ा ही न दिया और घर से बाहर निकल गया ।

एक दोस्त के पास जाकर उसने शारदा का ख़त सुना; फिर शारदा के खत-जैसे काग़ज़ मँगवाए और हिंदी में वैसी ही रोशनाई से अपने नाम शारदा की तरफ से खत लिखवाया ; पहला फ़िक़्रा शारदा के खत का ही रखा और बाद का मजमून बदलवा दिया, मजमून कुछ इस किस्म का लिखवाया कि वह उसे बंबे सैंट्रल पर इत्तफाक़ से मिली थी और इतने बडे मुसव्विर[27] से मिलकर बहुत खुश हुई थी, वगैरह-वगैरह—बीवी का मामला था, पेशबदी जरूरी थी ।

खत के झमेले मे फारिग होकर नजीर ने शारदा को अर्जेंट तार दिया कि वह उसके नए पते का इतजार करे, और नया पता मिलने तक उसे खत न लिखे ।

शाम को दिल मे खदशा[28] लिए जब वह घर पहुँचा तो उसकी बीवी ने उससे शारदा के मुतान्लिक पूछा ।

उसने कहा ''अर्सा हुआ, मैं एक दोस्त को छोडने गया था मेरा दोस्त शारदा को जानता था और वही प्लेटफार्म पर उससे तआरुफ हुआ था शारदा को मुसव्विरी का शौक है ''

बात आई-गई हो गई—चद दिन बाद उसने शारदा को एक दोस्त का पता भेज दिया, और फिर शारदा के खत आना शुरू हो गए ।

मैरीना होटल के उस मैले और तीन तरफ से खुले कमरे मे उसकी मुलाक़ातें जिस शारदा से हुई थीं, वह बहुत कम गो थी, लेकिन अब वह बहुत लबे खत लिखती थी । शारदा ने कभी उसके सामने अपनी मुहब्बत का इजहार नही किया था, लेकिन अब उसके खत मुहब्बत के इजहार से पुर होते थे, वही गिले-शिकवे, हिज्रो-फिराक[29] और उसी किस्म की आम बातें, जो इश्किया खतों मे होती हैं—नजीर को शारदा से वह मुहब्बत नही थी, जिस मुहब्बत का जिक्र अफसानो और नाविलो मे अक्सर होता है; उसकी समझ में नहीं आता था कि वह जवाब में क्या लिखवाए; जवाब लिखने का काम उसका एक दोस्त करता था; वह हिंदी मे जवाब लिखकर नजीर को सुना देता और नजीर कह देता ''ठीक है !''

शारदा बंबई आने के लिए बेकरार थी, लेकिन वह मैरीना होटल मे करीम के पास नहीं

ठहरना चाहती थी। नजीर उसकी रिहाइश का कही और बदोबस्त नही कर सकता था कि उन दिनो मकान मिलते ही नही थे, उसने किसी और होटल के बारे में सोचा, मगर फिर अपना खयाल रद्द कर दिया और शारदा को लिखवा दिया कि वह अभी कुछ दिन और इतजार करे।

उन्ही दिनो फिरकावाराना फसाद शुरू हो गए, बँटवारे से पहले की अजीब अफरा-तफरी थी।

नजीर की बीवी ने कहा कि वह लाहौर जाना चाहती है "मैं कुछ दिन वहाँ रहूँगी अगर हालात ठीक हो गए तो वापस आ जाऊँगी, वरना आप लाहौर चले आइएगा।"

नजीर ने कुछ दिन तो उसे रोका, मगर जब उसकी बीवी का भाई लाहौर जाने के लिए तैयार हो गया तो वह भी तैयार हो गई, और फिर अपने भाई और बहन के साथ लाहौर चली गई।

वह अब अकेला था—उसने शारदा को सरसरी तौर पर लिखवाया कि वह अब अकेला है। जवाब मे शारदा का तार आया कि वह आ रही है, तार के मज्मून के मुताबिक वह जयपुर से चल चुकी थी।

नजीर एक लम्हे के लिए तो सिटपिटाया मगर दूसरे ही लम्हे उसने महसूस किया कि उसका जिस्म बहुत खुश है, वह शारदा के जिस्म का खुलूस चाहता है, वह फिर वही दिन माँगता है, जब वह शारदा के साथ चिमटा होता था, सुबह ग्यारह बजे से शाम के सात बजे तक।

उसने सोचा कि अब रुपयो का मसला नही होगा, करीम नही होगा, होटल नही होगा, बस एक नौकर को राजदार बनाना पडेगा और नौकर का मुँह बद करने के लिए दस-पद्रह रुपए काफी होगे।

दूसरे रोज सुबह वह स्टेशन पहुँचा, फ्रंटियर मेल आई तो तलाश के बावजूद शारदा उसे न मिली, उसने सोचा कि शायद किसी वजह से वह जयपुर ही मे रुक गई है।

वही स्टेशन पर उसने नाश्ता किया और फिर लोकल ट्रेन पकडकर अपने दफ्तर के लिए रवाना हो गया।

वह महालक्ष्मी उतरा करता था—गाडी रुकी तो उसने देखा कि शारदा प्लेटफार्म पर गेट के पास खडी है।

उसने जोर से पुकारा "शारदा!"

शारदा ने चौंककर उसकी तरफ देखा "नजीर साहब!"

"तुम यहाँ कहाँ?"

"आप मुझे लेने नही आए तो मैं आपके दफ्तर पहुँच गई वहाँ पता चला कि आप अभी तक दफ्तर नही आए हैं मैं यहाँ प्लेटफार्म पर आपका इतजार कर रही थी।" शारदा ने शिकायतन कहा।

नज़ीर ने कुछ देर सोचने के बाद कहा : "तुम यही ठहरो   मैं अभी दफ्तर से छुट्टी लेकर आता हूँ।"

शारदा को एक बेंच पर बिठाकर वह जल्दी-जल्दी दफ्तर पहुँचा, एक अर्जी लिखकर चपरासी के हवाले की और लौटकर शारदा को अपने घर ले चला—रास्ते में दोनो ने कोई बात न की, लेकिन उनके जिस्म आपस में ग़ुफ्तगू करते रहे, एक-दूसरे की तरफ खिंचते रहे।

घर पहुँचकर उसने कहा . "तुम नहा लो, मैं तुम्हारे नाश्ते का बदोबस्त करता हूँ।"

शारदा ग़ुस्लखाने में दाखिल हुई तो उसने अपने नौकर से कहा कि उसके एक दोस्त की बीवी आई है, वह जल्दी से नाश्ता तैयार कर दे, फिर उसने अलमारी मे से जानीवाकर निकाली; दो के बराबर एक पैग गिलास मे उँडेला और पानी मिलाकर गटागट पी गया—वह उसी होटलवाले ढग मे शारदा से इख्तिलात[30] चाहता था।

शारदा नहा-धोकर बाहर निकली—वह नाश्ता करने लगी तो नजीर ने नौकर को बहुत दूर बिला वजह एक काम पर भेज दिया।

शारदा इधर-उधर की बेशुमार बाते कर रही थी—नजीर ने महसूस किया, जैसे वह बदल गई है, पहले वह बहुत कम गो थी, अक्सर खामोश रहती थी, अब वह बात-बात पर अपनी मुहब्बत का इजहार कर रही थी।

नजीर ने सोचा 'यह मुहब्बत क्या है   अगर शारदा मुहब्बत का इजहार न करे तो कितना अच्छा हो   मुझे शारदा की ख़ामोशी पसद थी   उसकी खामोशी के जरिए मुझ तक बहुत-सी बाते पहुँच जाती थी   शारदा को अब जाने क्या हो गया है   बातें कर रही है और ऐसा मालूम हो रहा है कि इश्किया खत पढकर सुना रही है

शारदा ने नाश्ता खत्म किया तो नजीर ने एक छोटा पैग तैयार किया और शारदा को पेश किया, लेकिन उसने इंनकार कर दिया।

नज़ीर ने इसरार[31] किया तो उसने तेवरी चढ़ाकर, नाक बद करके पैग अपने अदर उँडेल लिया और मुँह बुरा बनाया—नजीर को अफ़सोस हुआ कि शारदा ने पैग क्यो पी लिया; उसके इसरार पर भी न पिया होता तो अच्छा होता।

उसने इस बारे मे गौर करना मुनासिब न समझा और उठकर दरवाजा बद कर दिया; फिर शारदा को गोद में उठाकर बिस्तर पर ले गया और उसके साथ लेट गया : "तुमने लिखा था कि वह दिन फिर कब आएँगे   लो वह दिन फिर आ गए हैं   वही दिन, बल्कि रातें भी   उन दिनों रातें नहीं होती थीं, सिर्फ दिन होते थे, होटल के मैले-कुचैले दिन   यहाँ हर चीज़ उजली है, हर चीज़ साफ़ है   होटल का किराया नहीं, करीम नही   यहाँ हम अपने मालिक आप हैं ."

शारदा ने अपने फ़िराक़ की बातें शुरू कर दीं—वह ज़माना उसने कैसे काटा; वही किताबों और अफ़सानोंवाली फ़िज़ूल-फ़िज़ूल बातें; गिले-शिकवे, आहें; रातें तारे गिन-गिनकर काटना।

नज़ीर उठा, उसने एक और पैग पिया और सोचा : 'कौन तारे गिनता है, गिन भी कैसे

सकता है इतने सारे तारों को बिलकुल फ़िज़ूल बात है, बेहूदा और बकवास '

सोचते-सोचते उसने शारदा की तरफ़ देखा और उसे अपने साथ लगा लिया—बिस्तर उजला था, शारदा उजली थी, वह ख़ुद उजला था, कमरे की फ़ज़ा भी उजली थी, लेकिन उसके दिलो-दिमाग पर वह कैफ़ियत तारी नहीं हो पा रही थी, जो मैरीना होटल के गलीज कमरे में लोहे की चारपाई पर शारदा की कर्बत ' में तारी हो जाती थी।

नजीर ने फिर सोचा कि शायद उसने कम पी है—उसने एक और पैग बनाया और एक ही जरऐ[33] में ख़त्म करके शारदा के साथ लेट गया।

शारदा ने फिर वही लाख मर्तबा कही हुई बातें शुरू कर दी, वही हिज्रो-फिराक की बातें, वही गिले-शिकवे—नजीर उकता गया और उस उकताहट ने उसके जिस्म का कद कर दिया, उसने महसूस किया कि शारदा की सान घिसकर बेकार हो गई है, वह अब उसके जिस्म के जज़्बात तेज नहीं कर सकती।

उसने बड़ी मुश्किल से ख़ुद को अपनी सोच से अलग किया, बड़ी मुश्किल से शारदा की बातें न सुनीं—काफी देर के बाद वह शारदा के जिस्म में उलझ सका।

जब वह फ़ारिग हुआ तो उसका जी चाहा कि टैक्सी पकड़े और अपने घर चला जाए, अपनी बीवी के पास, मगर जब उसने सोचा कि वह अपने घर में है और उसकी बीवी लाहौर में है तो वह दिल ही दिल में बहुत झुंझलाया—फिर उसके मन में यह ख़्वाहिश पैदा हुई कि उसका घर होटल बन जाए, वह दस रुपए कासर को दे, पचास रुपए करीम को दे और चला जाए।

शारदा के जिस्म का ख़ुलूस बदस्तूर बरकरार था, मगर वह फ़ज़ा नहीं थी, वह सौदा नहीं था, वह गिलाजत[34] नहीं थी, वह सब चीजें मिलकर जो एक माहौल बनाती थीं, वह माहौल नहीं था; वह ख़ुद नहीं था—वह अपने घर में था; घर में उस बिस्तर पर था, जिस पर उसकी बीवी उसके साथ सोती थी।

घर और बीवी, होटल और शारदा, घर और शारदा, उसकी समझ में कुछ न आ रहा था कि मामला क्या है—कभी वह सोचता कि जानीवाकर ख़राब थी, कभी वह सोचता कि शारदा ने इल्तिफ़ात[35] नहीं बरता; कभी वह ख़याल करता कि शारदा ख़ामोश रहती तो सब ठीक रहता; फिर वह सोचता कि शारदा इतने दिनों के बाद मिली है, उसे दिल की भड़ास तो निकालना ही थी, एक-दो दिन में ठीक हो जाएगी, वही पुरानी शारदा बन जाएगी।

पंद्रह दिन गुजर गए, मगर नजीर को शारदा, वह पुरानी होटलवाली शारदा महसूस न हुई।

शारदा की बच्ची मुन्नी जयपुर में थी; होटलवाले दिनों में मुन्नी उसके साथ होती थी—नज़ीर मुन्नी के ज़ुकाम के लिए, उसकी फुंसियों के लिए, उसके गले के लिए दवाएँ मँगवाया करता था; अब ऐसा कुछ न था, शारदा अकेली थी; और वह शारदा को और उसकी मुन्नी को बिलकुल एक समझता था—उन दिनों एक बार शारदा की दूध से भरी हुई छातियों पर दबाव पड़ने के बायस नजीर के बालों भरे सीने पर दूध के कई क़तरे चिमट गए

थे और उसने एक अजीब क़िस्म की लज्जत महसूस की थी. उसने सोचा था 'माँ बनना कितना अच्छा है और यह दूध मर्दो मे कितनी बडी कमी है कि वह खा-पीकर सबकुछ हजम कर जाते हैं औरते खाती हैं और खिलाती हैं किसी को पालना, अपने बच्चे ही को सही, कितनी शानदार चीज है 'मुन्नी शारदा के साथ नही थी और शारदा नामुकम्मल थी, उसकी छातियाँ भी नामुकम्मल थी, अब उनमें दूध नहीं था, वह सफेद-सफेद आबे-हयात—वह शारदा को अपने सीने के साथ भीचता था तो वह उसको मना नही करती थी, शारदा अब वह शारदा नही थी—नहीं, शारदा वही शारदा थी; वह उस शारदा से कुछ ज्यादा ही थी. इतने दिनों की जुदाई के बाद उसका जिस्मानी खुलूस और तेज हो गया था; अब वह रूहानी तौर पर भी उसे चाहती थी. लेकिन नजीर को महसूस होता था कि शारदा मे अब वह पहली-सी कशिश, या जो कुछ भी उन दिनों इसमे था, अब नहीं रहा था।

लगातार पद्रह दिन शारदा के साथ गुजारने के बाद नजीर इस नतीजे पर पहुँचा कि दफ्तर मे पद्रह दिन की गैरहाजिरी बहुत काफी है—उसने दफ्तर जाना शुरू कर दिया।

वह सुबह दफ्तर जाता और शाम को लौटता—शारदा ने बिलकुल बीवियो की तरह उसकी खिदमत शुरू कर दी, बाजार से ऊन खरीदकर उसके लिए एक स्वेटर बुन दिया, शाम को वह दफ्तर से आता तो उसके लिए सोडे रखे होते; बर्फ से थर्मस भरी होती; सुबह शेव का सामान मेज पर रखा होता; गुस्लखाने मे गरम पानी पडा होता—वह खुद झाड़ू देती; खुद घर साफ करती—वह और भी ज्यादा उकता गया।

रात को वह और शारदा इकट्ठे सोते थे; मगर अब उसने इस बहाने कि वह कुछ सोच रहा है, कुछ सोचना चाहता है, अलग सोना शुरू कर दिया।

उसकी उलझन और बढ़ गई—शारदा गहरी नीद सो जाती और वह जागता रहता और सोचता रहता कि यह सबकुछ आखिर है क्या; शारदा आखिर यहाँ क्यों है; मैरीना होटल मे शारदा के साथ चंद दिन बडे अच्छे गुजरे हैं, मगर अब वह उसके साथ क्यो चिमट गई है, आखिर इसका अंजाम क्या होगा; मुहब्बत वगैरह सब बकवास है; वह जो एक बात उनके बीच थी, अब नहीं रही है, और अब शारदा को जयपुर लौट जाना चाहिए—उकताहट और उलझन का एहसास कुछ दिनों के बाद गुनाह के एहसास में तब्दील हो गया; गुनाह वह मैरीना होटल में करता रहा था और शादी से पहले भी उसने ऐसे बेशुमार गुनाह किए थे, मगर उसको महसूस तक न हुआ था, अब उसने बडी शिद्दत से महसूस करना शुरू कर दिया कि वह अपनी बीवी के साथ दगा कर रहा है, अपनी सादा लोह[36] बीवी के साथ, जिसको उसने शारदा के खत के सिलसिले में चकमा दिया था—शारदा और भी ज़्यादा बेकशिश हो गई।

वह शारदा के साथ रूखा बर्ताव करने लगा, मगर शारदा के इल्तिफ़ात में कोई फ़र्क़ न आया—वह सिर्फ़ इतना जानती थी कि आर्टिस्ट लोग मौजी होते हैं, इसलिए वह नज़ीर की बेइल्तिफ़ाती का गिला नहीं करती थी।

पूरा एक महीना बीत गया—नज़ीर ने जब दिनों का हिसाब किया तो उसको बहुत

उलझन हुई 'यह औरत क्या पूरा एक महीना यहाँ इस घर मे रही है मैं किस कदर जलील आदमी हूँ जैसे इस औरत के बिना मेरी जिंदगी अजीरन[17] है मैं कितना बडा फ्राड हूँ मैं क्यो उससे साफ-साफ नहीं कह देता कि अब मुझे कोई लगाव नही रहा है क्या मुझे लगाव नही रहा, या उसमे अब वह पहली-सी बात नही रही ? '

वह सोचता, मगर उसे कोई जवाब न मिलता—उसके जेहन मे एक अजीब अफरा-तफरी फैली हुई थी, जब कभी इख्लाकियात[18] का सवाल उसके दिमाग़ में गूँजता, बीवी से दगाबाजी का एहसास उस पर गालिब हो जाता—कुछ दिन और गुजरे तो यह एहसास और भी ज्यादा शदीद हो गया और उसे खुद अपने-आपसे नफरत होने लगी 'मैं बहुत ज़लील हूँ यह औरत मेरी दूसरी बीवी क्यो बन गई है यह क्यो मेरे साथ चिपक गई है वह जो कुछ करती है, सब बनावट है वह मुझे इस बनावट से मेरी बीवी से जुदा करना चाहती है '

उसकी नजरो मे शारदा और गिर गई और उसका सलूक और ज्यादा रूखा हो गया।

नजीर के रूखेपन को देखकर शारदा बहुत ज्यादा मुलायम हो गई—उसने नजीर के हर आरामो-आसाइश का खयाल रखना शुरू कर दिया।

नजीर को शारदा के रवैये से बहुत ज्यादा उलझन होने लगी और वह शारदा से बेहद नफरत करने लगा।

एक दिन उसकी जेब खाली थी, बैंक से रुपए निकलवाने उसको याद नहीं रहे थे, तबीयत खराब होने के सबब जब वह बहुत देर से दफ्तर जाने लगा तो शारदा ने उसे कुछ कहना चाहा, वह शारदा पर बरस पडा "बकवास करने की कोई जरूरत नही मैं ठीक हूँ बैंक से रुपया निकलवाना भूल गया हूँ और मेरे सारे सिगरेट खत्म हो गए है "

दफ्तर के पास की दूकान से उसको गोल्ड फ्लैक का डिब्बा मिला; यह सिगरेट उसको पसद नही थे, मगर उधार मिल गए थे; उसने दो-तीन सिगरेट मजबूरन पिए—शाम को घर आया तो उसने देखा कि तिपाई पर उसके मनभाते सिगरेटो का डिब्बा पडा हुआ है—उसने खयाल किया कि खाली होगा; फिर सोचा, शायद एक-दो सिगरेट पडे हो, डिब्बा खोलकर देखा तो भरा हुआ पाया।

उसने शारदा से पूछा : "यह डिब्बा कहाँ से आया ?"

शारदा ने मुसकराकर जवाब दिया : "अदर अलमारी मे पडा था।"

नज़ीर ने कुछ न कहा, उसने सोचा कि शायद उसने कभी डिब्बा खोलकर अदर अलमारी मे रख दिया था और फिर भूल गया था; लेकिन दूसरे दिन फिर तिपाई पर एक सालिम डिब्बा मौजूद था—उसने जब शारदा से इस डिब्बे की बाबत पूछा तो उसनें मुसकराकर वही जवाब दिया : "अंदर अलमारी में पडा था।"

नज़ीर ने बड़े गुस्से के साथ कहा : "शारदा, तुम बकवास करती हो तुम्हारी यह हरकतें मुझे पसद नहीं मैं अपनी चीज़ें ख़ुद ख़रीद सकता हूँ मैं भिखारी नहीं हूँ कि तुम हर रोज मेरे लिए सिगरेट खरीदा करो "

शारदा ने बडे प्यार से कहा "आप भूल जाते हैं, इसीलिए मैंने दो मर्तबा गुस्ताखी की।"

नजीर ने और ज्यादा गुस्से से कहा "मेरा दिमाग खराब है और मुझे यह गुस्ताखी पसंद नही।"

शारदा का लहजा बहुत ही मुलायम हो गया "मैं आपसे माफी माँगती हूँ।"

एक लहजे के लिए नजीर ने सोचा कि शारदा की कोई गलती नही है, उसे तो आगे बढकर शारदा का मुँह चूम लेना चाहिए कि वह उसका इतना खयाल रखती है, लेकिन फौरन ही उसको अपनी बीवी और घर का खयाल आ गया कि वह दगा कर रहा है, उसने शारदा से बडे नफरत भरे लहजे मे कहा "बकवास न करो मेरा खयाल है कि मैं कल तुम्हे यहाँ से रवाना कर दूँ जितने रुपए तुम्हे दरकार होगे, मैं कल सुबह दे दूँगा" उसके दिल का बोझ हल्का तो हो गया, मगर उसने महसूस किया कि वह बडा कमीना और रजील है।

शारदा ने कुछ न कहा।

रात को नजीर की हिचकिचाहट के बावजूद शारदा उसके साथ ही सोई—वह सारी रात नजीर को प्यार करती रही।

नजीर तमाम रात उलझन में रहा, मगर उसने अपनी उलझन का कोइ इजहार न किया।

सुबह नाश्ते मे बेशुमार लजीज चीजे मौजूद थी—नजीर ने शारदा से कोई बात न की नाश्ते से फारिग होकर वह सीधा बैंक पहुँचा।

बैंक जाने मे पहले उसने शारदा से सिर्फ इतना कहा था "मैं बैंक जा रहा हूँ थोडी देर मे वापिस आ जाऊँगा।"

बैंक की वह शाख, जिसमें उसका रुपया जमा था, बिलकुल नजदीक थी—वह दो सौ रुपए निकलवाकर फौरन ही वापस आ गया।

उसने सोचा था कि वह दो सौ रुपए शारदा के हवाले कर देगा और टिकट वगैरह दिलवाकर उसे रुख्सत कर देगा।

जब वह घर पहुँचा तो उसके नौकर ने, जिसे वह इस तमाम अर्से मे तकरीबन भूल चुका था, कहा "वह चली गई हैं "

उसने पूछा "कहाँ?"

नौकर ने कहा "जी, मुझसे उन्होंने कुछ नही कहा अपना ट्रंक और बिस्तर वह साथ ले गई हैं।"

वह बुझे-बुझे दिल के साथ अदर कमरे मे दाखिल हुआ तो उसने देखा कि तिपाई पर उसके पसंदीदा सिगरेटो का डिब्बा पडा है, भरा हुआ।

1 याददाश्त, स्मरणशक्ति; 2 क्षमा, 3 टूटी-फूटी, 4 बेढब-सा, 5 आगे और 6 नशायुक्त, 7 हिरनी-जैसी आँख, 8 वशीभूत, 9 क्रोधयुक्त, 10 संक्षिप्त में 11 क्रोधयुक्त, 12 आकर्षित, 13 पीडित, 14 सतुष्ट, 15 गत, 16 चिंता, 17 अपनत्व, 18 अधिक बोलनेवाली, 19 रचना, 20 दांपत्य, 21 तीव्र, 22 संयोगवश, 23 कर्जदार, 24 अपनत्व, स्नेह, 25 मूर्ति, 26 स्पर्श 27 चित्रकार, 28 शंका, 29 वियोग, 30 मिलन 31 प्रार्थना, 32 सामीप्य, 33 घूंट, 34 गंदगी, 35 ध्यान देना, 36. सीधी-सादी, 37 दंभर 38 नैतिकता।

फ़ोभा बाई

हैदराबाद से शहाब आया तो बाबे सैंट्रल के प्लेटफार्म पर पहला कदम रखते ही उसने हनीफ से कहा · ''देखो, आज शाम को वह मामला जरूर होगा   वर्ना याद रखो, मैं फौरन वापिस चला जाऊँगा   !''

हनीफ को मालूम था कि वह मामला क्या है—शाम को उसने टैक्सी ली, शहाब को साथ लिया, ग्रांट रोड के नाके पर एक दलाल को बुलाया और उससे कहा ''मेरे दोस्त हैदराबाद से आए हैं   उनके लिए एक अच्छी-सी छोकरी चाहिए   !''

दलाल ने अपने कान में उडसी हुई बीडी निकाली और उसको होंठो मे दबाकर कहा ''दक्कनी चलेगी ?''

हनीफ ने शहाब की तरफ़ सवालिया नजरो से देखा।

शहाब ने कहा ''नही भाई   मुझे कोई मुसलमान छोकरी चाहिए।''

''मुसलमान ?'' दलाल ने बीडी को चूसा ''अच्छा चलिए   !'' यह कहकर वह टैक्सी की अगली निशस्त[1] पर बैठ गया और उसने ड्राइवर से कुछ कहा।

टैक्सी स्टार्ट हुई और मुख्तलिफ बाजारो मे होती हुई फोरजट स्ट्रीट की साथवाली गली मे दाखिल हुई—यह गली एक पहाडी पर थी, बहुत ऊँचान थी, ड्राइवर ने टैक्सी को फर्स्ट गेयर मे डाला तो हनीफ को महसूस हुआ कि टैक्सी रास्ते ही मे रुककर पीछे की तरफ चलना शुरू कर देगी; मगर ऐसा न हुआ—दलाल ने ड्राइवर को ऊँचान के ऐन आखिरी सिरे पर, जहाँ चौक-सा था, रुकने के लिए कहा।

हनीफ उस तरफ कभी नही आया था।

एक ऊँची पहाडी थी, जिसके दाएँ तरफ एकदम ढलान थी—जिस बिल्डिंग मे दलाल दाखिल हुआ वह दो मंजिला थी, हालाँकि दूसरी तरफ की बिल्डिंगें सबकी-सब चार मंजिला थी, हनीफ को बाद मे मालूम हुआ कि ढलान के बायस उस बिल्डिंग की तीन मंजिलें नीचे थी, और उन तक लिफ्ट जाती थी।

शहाब और हनीफ, दोनो, खामोश बैठे रहे—रास्ते मे दलाल ने उस लडकी की बहुत तारीफ की थी; उसने कहा था, 'बडे अच्छे खानदान की लडकी है   स्पेशल तौर पर आपके लिए निकाल रहा हूँ।'

दोनो सोच रहे थे कि वह लडकी कैसी होगी, जो स्पेशल तौर पर उनके लिए निकाली जा रही है।

थोडी देर के बाद दलाल नमूदार हुआ—वह अकेला था।

ड्राइवर ने उससे कहा "गाडी वापस करो।" यह कहकर वह अगली सीट पर बैठ गया। टैक्सी एक चक्कर लेकर मुडी, तीन-चार बिल्डिगो के बाद उसने ड्राइवर से कहा "यहाँ रोक लो !" फिर वह हनीफ से मुखातिब हुआ "आ रही है पूछ रही थी, कैसे आदमी हैं ? मैंने कहा, नबर वन ।"

दस-पद्रह मिनट के बाद एकदम टैक्सी का पिछला बायाँ दरवाजा खोलकर एक औरत हनीफ के साथ बैठ गई।

रात का वक्त था और गली मे रोशनी कम थी शहाब और हनीफ, दोनो, उस औरत को अच्छी तरह देख न सके।

पिछली निशस्त पर बैठते ही उस औरत ने ड्राइवर से कहा "चलो।"

टैक्सी तेजी से नीचे उतरने लगी।

हनीफ़ के पास ऐसी कोई जगह न थी, जहाँ वह मामला हो सकता, इसलिए, जैसा कि तय पाया था, वह डॉक्टर खान की तरफ हो लिए।

डॉक्टर खान मिलिट्री हॉस्पिटल मे मुतऐयिन[2] थे और हॉस्पिटल ही मे उसको दो रिहाइशी कमरे मिले हुए थे—शहाब ने बबई पहुँचते ही डॉक्टर खान को फोन कर दिया था कि वह रात को हनीफ के साथ आएगा और मामला उनके साथ होगा।

टैक्सी मिलिट्री हॉस्पिटल पहुँची,—दलाल रास्ते ही मे सौ रुपए लेकर ग्राट पर उतर गया था।

रास्ते मे शहाब और हनीफ उस औरत को अच्छी तरह देख न सके थे, और न उनके बीच कोई खास बाते हुई थी। शहाब ने जब अपने ठेठ हैदराबादी लहजे मे उस औरत से पूछा था 'आपकाद इस्मे-गिरामी[3] ?' तो उस औरत ने कहा था 'फोभा बाई !'—हनीफ सोचता रह गया था 'फोभा बाई ? यह कैसा नाम है।'

डॉक्टर खान उनका इतजार कर रहा था—सबसे पहले शराब कमरे में दाखिल हुआ—दोनो गले मिले और दोनो ने एक-दूसरे को खूब गालिया दी।

डॉक्टर खान ने जब एक जवान औरत को दरवाजे मे खडा देखा तो एकदम खामोश हो गया; फिर उसने कहा "आइए-आइए " उसने अपने सीने पर हाथ रखा "मैं डॉक्टर खान हूँ और आप ?" उसने शहाब की तरफ देखा।

शहाब ने उस औरत की तरफ देखा—औरत ने कहा "फोभा बाई।"

डॉक्टर खान ने बढकर उस औरत से हाथ मिलाया "आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।"

फोभा बाई मुसकराई "मुझे भी खुफी हुई।"

शहाब और हनीफ ने एक-दूसरे की तरफ देखा।

डॉक्टर खान ने दरवाजा बद कर दिया और अपने दोस्तो से कहा "आप दूसरे कमरे मे चले जाइए मुझे यहाँ कुछ काम करना है।"

शहाब ने जब फोभा बाई से कहा "चलिए" तो फोभा बाई ने डॉक्टर खान का हाथ

पकड लिया ''नही, आप भी तफरीफ लाइए।''

''आप तशरीफ ले चलिए, मैं अभी आता हूँ।'' डॉक्टर खान ने अपना हाथ छुडा लिया।

शहाब, हनीफ और फोभा बाई अदर दूसरे कमरे मे चले गए।

थोडी-सी गुफ्तगू के बाद शहाब और हनीफ को मालूम हो गया कि फोभा बाई की जबान मोटी है, वह सीन और शीन अदा नही कर सकती, सीन और शीन के बदले उसके मुँह से फे निकलती है, सीन और शीन की जगह फे की अदाइगी ने उसे शोभा बाई से फोभा बाई बना दिया है—कुछ देर और बाते करने के बाद उनको पता चला कि शोभा भी उसका असली नाम नहीं है, वह मुसलमान है और जयपुर उसका वतन है, चार साल हुए, वह भागकर बबई चली आई थी—इससे ज्यादा, दोनो दोस्त, फोभा बाई के बारे मे न जान सके।

शोभा बाई मामूली शक्लो-सूरत की थी—आँखे बडी नही थी, नाक खुश वजह थी, बालाई होठ के ऐन दरमियान एक छोटे-से जख्म का निशान था जब वह बात करती तो यह निशान थोडा-सा फैल जाता—शोभा बाई ने गले मे जडाऊ नैकलेस पहना हुआ था और उसके दोनो हाथो मे सोने की चूडियाँ थी।

बहुत ही बातूनी औरत थी—थोडी ही देर मे उसने इधर-उधर की बातें शुरू कर दी।

हनीफ और शहाब सिर्फ 'हू हाँ' करते रहे।

फिर शोभा बाई ने दोनो दोस्तो के बारे मे पूछना शुरू कर दिया—वह क्या करते हैं, कहाँ रहते हैं उम्र कितनी है, फादीफुदा हैं या गैर फादीफुदा, हनीफ इतना दुबला क्यो है फहाब ने दो मफनूई दाँत क्यो लगवा रखे ह अगर वह गोफ्तखोरा है तो डॉक्टर खान मे इलाज क्यो नही करवाता, फरमाता क्यो है, फेर क्यों नही गाता ।

शहाब ने शोभा को कई शेर सुनाए और शोभा ने बडे जोरो की दाद दी।

जब शहाब ने यह शेर सुनाया

खेतो को दे लो पानी अब बह रही है गगा,
कुछ कर लो नौजवानो उठती जवानियाँ हैं।

तो शोभा उछल पडी।

वाह जनाब वाह बहुत अच्छा फेर है उठती जवानियाँ हैं वाह वा ।''

फिर शोभा ने बेशुमार शेर सुनाए, बिलकुल बेजोड, बेतुके, जिनका सिर था न पैर। शेर सुनाकर उसने शहाब से पूछा ''फहाब फाहब, मजा आया आपको?''

शहाब ने जवाब दिया ''बहुत।''

शोभा ने शरमाकर कहा ' यह फर मेरे हैं मुझे फायरी का बहुत फौक हैं।''

शहाब और हनीफ, दोनो ने एक-दूसरे की तरफ देखा और मुसकरा दिए।

इसक बाद शोभा ने एक सही शेर सुनाया

कभी तो मेरे दर्दे-दिल की खबर ले
मेरे दर्द फ आफना होनेवाले।

हनीफ़ यह शेर कई बार सुन चुका था और शायद कहीं पढ़ भी चुका था।

शोभा ने कहा : "हनीफ़ फ़ाहब, यह फेर भी मेरा है।"

हनीफ़ ने ख़ूब दाद दी :" "माफाल्ला, आप तो कमाल करती हैं।"

शोभा चौंकी : "माफ़ कीजिएगा मेरी जुबान में तो कुछ खराबी है, लेकिन आपने क्यों माफ़ाल्लाह के बदले माफाल्लाह कहा?"

हनीफ़ और शहाब, दोनों बेइख़्तियार हँस पड़े—शोभा भी हँसने लगी।

इतने में डॉक्टर ख़ान आ गया—उसने अंदर दाखिल होते ही शोभा से कहा "क्यो जनाब, इतनी हँसी किस बात पर आ रही है?"

ज़्यादा हँसने की बायस शोभा की आँखो में आँसू आ गए थे—उसने रूमाल से आँसू पोछे और डॉक्टर खान से कहा : "एक ऐफी बात हुई कि हम फब हँफ पड़े।"

डॉक्टर खान ने हँसना शुरू कर दिया।

शोभा ने कहा · "आइए बैठिए " चारपाई के एक तरफ सरककर उसने डॉक्टर खान का हाथ पकडा और उसे अपने पास बिठा लिया।

फिर शेरो-शाइरी शुरू हो गई—शोभा ने लबी-लबी चार बेनकी गजले सुनाई और सबने दाद दी।

अब शहाब उकता गया—वह मामला चाहता था।

शहाब के बदलते हुए तेवर देखकर हनीफ भाँप गया—उसने कहा "अच्छा भई शहाब, मैं रुख़्सत चाहता हूँ इशाअल्लाह कल सुबह मुलाकात होगी।"

हनीफ कुर्सी पर से उठा तो शोभा ने उसका हाथ पकड लिया "नही, आप नही जा फकते।"

हनीफ ने जवाब दिया "मैं माजरत[5] चाहता हूँ बीवी मेरा इनजार कर रही होगी।"

"ओह ! लेकिन नही आप थोडी देर और जरूर बैठे, अभी तो फिर्फ ग्यारह बजे हैं " शोभा ने इसरार किया।

शहाब ने एक जम्हाई ली : "बहुत वक़्त हो गया है।"

शोभा ने मुसकराकर शहाब की तरफ देखा "मैं फारी रात आपके पाफ हूँ "

शहाब का तकद्दुर दूर हो गया।

हनीफ थोडी देर और बैठा, फिर रुख़्सत लेकर चला आया।

दूसरे रोज सुबह नौ बजे के करीब शहाब आया और उसने रात की बात सुनाई "अजीबो-गरीब औरत है यह फोभा बाई उसके पेट पर बालिश्त भर ऑपरेशन का निशान है रात कहने लगी कि वह एक लकडीवाले सेठ की दाश्ता[7] थी, सेठ ने उसे एक फिल्म कंपनी खोल दी थी, चेकों पर उसी के दस्तखत होते थे, सेठ ने उसे एक मोटर ले दी थी, जो अब तक मौजूद है; बहुत-से नौकर-चाकर थे लकडीवाला सेठ उससे बेहद मुहब्बत करता था जब उसके पेट का ऑपरेशन हुआ था तो सेठ ने एक हज़ार रुपया खैरात के तौर पर यतीमखाने को दिया था "

हनीफ ने पूछा · "लकडीवाला सेठ अब कहाँ है?"

शहाब ने जवाब दिया : "दूसरी दुनिया में टाल खोले बैठा है ''खूब औरत है यह फोभा बाई जमकर मामला हुआ मैं सोने लगा तो वह दूसरे कमरे में डॉक्टर ख़ान के साथ लेट गई सुबह पाँच बजे डॉक्टर ख़ान ने कहा : 'शोभा, सुबह हो रही है, अब जाओ ' शोभा ने कहा : 'अच्छा मैं जाती हूँ लेकिन मेरे यह जेवर तुम अपने पाफ रख लो मैं अकेली इनके फाथ बाहर नहीं निकलती ' "

हनीफ़ ने पूछा : "और डॉक्टर ख़ान ने ज़ेवर रख लिए ?"

शहाब ने सिर हिलाया "हाँ हमारा खयाल था कि नक़ली हैं मगर जब दिन की रोशनी में देखे तो असली निकले।"

"और वह चली गई ?"

"हाँ चली गइ यह कहकर कि वह किसी रोज आकर अपने जेवर वापफ ले जाएगी !"

"शहाब, यह तुमने बडे अचभे की बात सुनाई!"

"ख़ुदा की कसम, यह हकीकत है " शहाब ने सिगरेट सुलगाया "इसीलिए तो मैंने कहा कि अजीबो-गरीब औरत है यह फोभा बाई !"

हनीफ ने पूछा "वैसे औरत कैसी है ?"

शहाब ने कहा ' यह तुम डॉक्टर ख़ान से पूछना वह एक्सपर्ट है।"

शाम को दोनों दोस्त डॉक्टर ख़ान से मिले—जेवर डॉक्टर ख़ान के पास महफूज थे।

डाक्टर ख़ान ने कहा "मेरा ख़्याल है, शोभा किसी दिमागी सदमे का शिकार है।"

शहाब ने पूछा "तुम्हारा मतलब है, पागल है ?"

डॉक्टर ख़ान ने कहा "नहीं, पागल नहीं है, लेकिन उसका दिमाग यक़ीनन नार्मल नहीं है बेहद मुख़्लिस[8] औरत है एक लडका है उसका जयपुर मे उसको बराबर दो सौ रुपए माहवार भेजती है हर तीसरे महीने उससे मिलने जाती है जयपुर पहुँचते ही बुर्का ओढ लेती है कि वहाँ उसे परदा करना पडता है "

हनीफ ने कहा "यह तुमने कैसे समझा कि उसका दिमाग नार्मल नहीं ?"

डॉक्टर ख़ान ने जवाब दिया "भई, यह मेरा ख़याल है नार्मल औरत होती तो अपने डेढ़-दो हजार के जेवर एक अजनबी के पास क्यो छोड जाती फिर उसको मॉर्फिया के इंजेक्शन लेने की भी आदत है।"

शहाब ने पूछा "क्या यह नशा होता है एक क़िस्म का ?"

डॉक्टर ने जवाब दिया "बहुत ही ख़तरनाक क़िस्म का शराब से भी बदतर!"

"इसकी आदत कैसे पड गई उसे ?" शहाब ने मेज पर से पेपरवेट उठाकर दवात पर रख दिया।

"मेरा ख़याल है, उसका ऑपरेशन बिगड गया था और शिद्दत के दर्द का एहसास कम करने के लिए डॉक्टर उसे मॉर्फिया का इंजेक्शन देते रहे थे, तकरीबन दो महीने तक बस यूँ आदत पड गई होगी।" फिर डॉक्टर ख़ान ने मॉर्फिया और उसके ख़तरनाक असरात पर एक लैक्चर-सा शुरू कर दिया।

एक हफ्ता गुजर गया और शोभा न आई।

शहाब वापस हैदराबाद चला गया।

एक दिन डॉक्टर खान जेवर लेकर हनीफ के पास पहुँचा "चलो दे आएँ!"

दोनो ने ग्रांट रोड के नाके के पास उस दलाल को बहुत तलाश किया, जो शोभा को शहाब और हनीफ के पास लाया था, मगर वह न मिला। हनीफ को इतना मालूम था कि गली कौन-सी है और बिल्डिंग कौन-सी है।

डॉक्टर खान ने कहा "इतना काफी है हम पता लगा लेंगे यह जेवर मैं अब और अपने पास नहीं रख सकता चोरी हो गए तो क्या करूँगा वह तो अजीब बेपरवाह औरत है।"

दोनो टैक्सी मे उसी बिल्डिंग के पास पहुँच गए—हनीफ ने बिल्डिंग की तरफ इशारा किया और डॉक्टर खान से कहा "तुम जाकर तलाश करो उसे मैं नही जाऊँगा।"

डॉक्टर खान अकेला उस बिल्डिंग मे दाखिल हो गया—उसने एक-दो आदमियो से शोभा के बारे में पूछा, मगर किसी को कुछ पता न था।

जब लिफ्ट नीचे से ऊपर आई तो किसी होटल का एक छोकरा प्यालियाँ उठाए बाहर निकला—डॉक्टर खान ने छोकरे से पूछा तो उसने बताया कि वह सबसे निचली मंजिल के आखिरी फ्लैट मे चला जाए।

लिफ्ट के जरिए डॉक्टर खान नीचे पहुँचा और फिर उसने आखिरी फ्लैट की घंटी बजाई—थोडी देर के बाद एक बुढ़िया ने दरवाजा खोला।

डॉक्टर खान ने पूछा "शोभा बाई हैं?"

बुढ़िया ने जवाब दिया "हाँ, हैं!"

डॉक्टर खान ने कहा "जाओ उनसे कहो, डॉक्टर खान आए हैं।

अंदर से शोभा की आवाज आई "आइए डॉक्टर साहब, आ जाइए।

डॉक्टर खान अंदर दाखिल हुआ—छोटा-सा ड्राइंगरूम था चमकीले फर्नीचर से भरा हुआ, फर्श पर कालीन बिछा हुआ था।

बुढ़िया दूसरे कमरे मे चली गई तो शोभा की आवाज आई "डॉक्टर साहब, अंदर आ जाइए मैं बाहर नही आ सकती।"

डॉक्टर खान दूसरे कमरे मे दाखिल हुआ—शोभा चादर ओढे लेटी हुई थी।

डॉक्टर खान ने पूछा "क्या बात है?"

शोभा मुसकराई "कुछ नही डॉक्टर साहब तेल मालिश करवा रही थी।"

डॉक्टर खान पलंग के पास ही कुर्सी पर बैठ गया—उसने जेब मे रूमाल मे बँधे हुए जेवर निकाले और फिर रूमाल खोलकर पलंग पर रख दिए "भई कब तक मै तुम्हारे इन जेवरो की हिफ़ाजत करता रहूँगा तुम तो ऐसी गईं कि फिर हमारी तरफ का रुख तक न किया।"

शोभा हँसी "मुझे बहुत काम थे लेकिन आपने क्यो तकलीफ की मैं खुद आके ले जाती" फिर उसने बुढ़िया से कहा "चाय मँगवाओ डॉक्टर साहब के लिए।"

डॉक्टर खान ने कहा "नही, मुझे अब जाना है।"

"कहाँ?"

"हॉस्पिटल।"

"टैक्सी मे आ आए हैं आप?"

"हाँ।"

"बाहर खडी है?"

डॉक्टर खान ने सिर के इशारे से 'हाँ' की।

"तो आप चलिए मैं अभी आती हूँ।" यह कहकर शोभा ने जेवर तकिए के नीचे रख दिए और रूमाल डॉक्टर खान को दे दिया।

डॉक्टर खान गली मे हनीफ के पास पहुँचा तो हनीफ ने पूछा "मिल गई?"

डॉक्टर खान मुसकराया "मिल गई आ रही है।"

पद्रह-बीस मिनट के बाद शोभा ने टैक्सी का दरवाजा खोला और अदर बैठ गई।

फिर डॉक्टर खान के कमरे मे देर तक फिजूल किस्म की शेरबाजी होती रही—शोभा ने हिज्रो-विसाल[9] और इश्को-महब्बत के बेशुमार आमियाना[10] अशआर सुनाए और अपने नाम से मनसब किए।

डॉक्टर खान और हनीफ ने खूब दाद दी।

शोभा बहुत खुश हुई "याकूब सेठ घटो मुझसे शे'र सुना करते थे।"

याकूब सेठ वही लकडीवाला सेठ था, जिसने शोभा के लिए एक फिल्म कपनी खोली थी।

डॉक्टर खान और हनीफ हँस पडे—शोभा भी हँसने लगी।

बस डॉक्टर खान और शोभा की दोस्ती हो गई—शुरू-शुरू मे तो वह हफ्ते मे दो बार आती थी, फिर करीब-करीब हर रोज आने लगी; रात को आती, सुबह सवेरे चली जाती, बिला नागा मॉर्फिया का इजेक्शन लेती, डॉक्टर खान इजेक्शन लगाने से पहले उसके बाज़ू पर बेहिस करनेवाली दवा लगाता, शोभा को यह ठडी-ठडी चीज बहुत पसद थी।

तीन महीने गुजरे तो शोभा अपने लडके से मिलने जयपुर जाने के लिए तैयार हो गई—उसने अपनी मोटर डॉक्टर खान के हवाले कर दी कि वह उसकी गैर मौजूदगी मे मोटर का ध्यान रखे।

डॉक्टर खान उसे स्टेशन तक छोडने गया; देर तक दोनो एक-दूसरे से बाते करते रहे।

गाडी चलने लगी तो शोभा ने एकदम डॉक्टर का हाथ पकडकर कहा "मुझे क्यो एकदम ऐसा लगा है कि कुछ होनेवाला है।"

डॉक्टर खान ने कहा "क्या होनेवाला है?"

शोभा के चेहरे से वहशत[11] बरसने लगी "मालूम नही मेरा दिल बैठा जा रहा है।"

डॉक्टर खान ने उसे दम-दिलासा दिया—गाडी चल पडी तो दूर तक शोभा का हाथ हिलता रहा।

जयपुर से डॉक्टर खान को शोभा के दो खत मिले कि वह खैरियत से पहुँच गई है और कि जब वह वापस आएगी तो डॉक्टर खान के लिए बहुत-से तोहफे लाएगी। फिर कई दिन

के बाद उसका एक पोस्ट कार्ड आया, जिस पर लिखा था

'मेरी अँधेरी ज़िंदगी मे सिर्फ़ एक दीया था, वह कल, ख़ुदा ने बुझा दिया भला हो उसका !'

डॉक्टर ख़ान से पोस्ट कार्ड लेकर हनीफ ने यह अल्फाज पढ़े तो उसकी आँखो में आँसू आ गए—'भला हो उसका' में बेपनाह गम था।

बहुत अर्सा गुजर गया, मगर शोभा का कोई ख़त न आया—फिर एक बरस बीत गया और डॉक्टर खान को शोभा का कोई पता न चला।

शोभा अपनी मोटर डॉक्टर खान के हवाले कर गई थी—डॉक्टर खान उस बिल्डिग में गया, जिसकी सबसे निचली मज़िल के आख़िरी फ्लैट में वह रहा करती थी; फ्लैट पर अब कोई और ही काबिज था, एक दलाल किस्म का आदमी।

डॉक्टर ख़ान आख़िर थक-हारकर ख़ामोश हो गया—मोटर उसने एक गेराज में रखवा दी।

एक दिन हनीफ घबराया हुआ हॉस्पिटल पहुँचा, उसका चेहरा जर्द था।

डॉक्टर खान ड्यूटी पर था।

एक तरफ ले जाते हुए हनीफ ने डॉक्टर खान से कहा "मैंने आज शोभा को देखा !"

डॉक्टर खान ने हनीफ का बाज़ू पकडकर एकदम पूछा "कहाँ ?"

"चौपाटी पर मैं उसे मुश्किल से पहचान सका वह हड्डियो का एक ढाँचा है "

"हड्डियों का ढाँचा ?" डॉक्टर ख़ान की आवाज खोखली थी।

हनीफ ने सर्द आह भरी "वह शोभा नहीं है, उसका साया है आँखे अदर को धँसी हुईं, बाल परेशान और गर्द आलूद[12] यूँ चल रही थी, जैसे अपने-आपको घसीट रही हो मेरे पास आई और कहने लगी. 'मुझे पाँच रुपए दो ' मैं उसे पहचान न सका, मैंने पूछा. 'क्या करोगी पाँच रुपए लेकर—' वह बोली 'मॉर्फिया का टीका लगवाऊँगी ' एकदम मैंने गौर से उसकी तरफ़ देखा; उसके बालाई होंठ पर ज़ख़्म का निशान मौजूद था, मैं चिल्लाया 'शोभा ' उसने थकी हुई वीरान आँखों से मुझे देखा और पूछा 'कौन हो तुम ' मैंने कहा : 'मैं हनीफ़ हूँ ' उसने जवाब दिया : 'मैं किफ़ी हनीफ को नहीं जानती ' मैंने तुम्हारा जिक्र किया, मैंने कहा : 'डॉक्टर खान ने तुम्हे बहुत तलाश किया है, बहुत ढूँढा है ' मेरी बात सुनकर उसके होंठों पर ख़फ़ीफ़-सी मुसकराहट पैदा हो गई और वह कहने लगी. 'उफ फे कह दो मत ढूँढ़े मुझे मेरी तरफ देखो मैं इतनी मुद्दत फे अपना खोया हुआ लाल ढूँढ़ रही हूँ यह ढूँढना बिलकुल बेकार है कुछ नहीं मिलता लाओ, पाँच रुपए दो मुझे ' मैंने उसे पाँच रुपए दिए और कहा : 'अपनी मोटर तो ले लो डॉक्टर ख़ान से ' लेकिन वह कमजोर कहकहे लगाती हुई चली गई "

डॉक्टर ख़ान ने कहा "कहाँ ?"

हनीफ़ ने जवाब दिया "मालूम नही किसी डॉक्टर के पास गई होगी !"

डॉक्टर खान ने बहुत तलाश किया मगर शोभा का कुछ पता न चला।

---

1 सीट, 2 नियुक्त, 3 शुभनाम, 4 मांसाहारी, 5 क्षमा, 6 उदासी, 7 रखैल: 8 निश्छल। 9. संयोग-वियोग, 10. घटिया शेर; 11. भय, त्रास; 12 धूल मे भरे हुए।

सिराज

नागपाडा पुलिस चौकी के उस तरफ़ जो छोटा-सा बाग है, उसके बिलकुल सामने, ईरानी होटल के बाहर, खंबे के साथ लगकर ढूँडू खडा था—दिन ढले, मुकर्ररा वक्त पर ढूँडू वहाँ पहुँच जाता और सुबह चार बजे तक अपने धंधे में मसरूफ रहता।

मालूम नहीं, उसका असली नाम क्या था, मगर सब उसे ढूँडू कहते थे; इस लिहाज से तो यह नाम बहुत मुनासिब था कि उसका काम अपने मुवक्किलो के लिए उनकी ख्वाहिश और पसंद के मुताबिक हर नस्ल और हर रग की लड़कियाँ ढूँढना था।

वह यह धधा करीब-करीब दस बरस से कर रहा था—इस दौरान मे हजारो लडकियाँ उसके हाथों मे गुजर चुकी थी; हर मजहब की, हर नस्ल की, हर मिजाज की।

उसका अड्डा शुरू ही से वही रहा था; नागपाडा पुलिस चौकी के उस तरफ, बाग के बिलकुल सामने, ईरानी होटल के बाहर खंबे के साथ।

वह खबा उसका निशान बन गया था, मुझे तो वह खबा ढूँडू ही मालूम होता था—मैं जब कभी उधर से गुजरता, मेरी नजर उस खबे पर जरूर पडती, जिस पर जगह-जगह चूने और कत्थे मे लथडी हुई उँगलियाँ पोंछी गई थी; मुझे ऐसा लगता कि ढूँडू खडा है और काली कांडी और सेंके की सुपारीवाला पान चबा रहा है।

वह खबा काफी ऊँचा था—ढूँडू भी दराज क़द था।

खबे के ऊपर तारों का जाल-सा बिछा हुआ था, कोई तार दूर तक दौडता चला गया था और दूसरे खंबे के तारों के उलझाव में मदगम[1] हो गया था; कोई तार किसी बिल्डिग मे और कोई तार किसी दूकान में चला गया था, ऐसा लगता था कि उस खंबे की पहुँच दूर-दूर तक है और वह दूसरे खंबों के साथ मिलकर सारे शहर पर छाया हुआ है। उस खंबे के साथ टेलीफोन के महकमे ने एक बक्स लगा रखा था, जिसके जरिए से वक्तन-फवक्तन[2] तारों की दुरुस्ती वगैरह की जाँच-पडताल की जाती थी—मैं अक्सर सोचता था कि ढूँडू भी उसी किस्म का एक बक्स है, जो लोगों की जिसी जाँच-पडताल के लिए खबे के साथ लगा रहता है, उसे आसपास के इलाके के अलावा दूर-दूर के उन तमाम सेठों का भी पता था, जिनको थोडे-थोडे वक्फों के बाद या हमेशा ही अपनी जिंसी ख्वाहिशात के तने हुए या ढीले तार दुरुस्त कराने की जरूरत महसूस होती थी।

उसे उन तमाम छोकरियों का भी पता था, जो उस धधे में थी, वह उनके जिस्म के हर

खद्दोखाल[3] मे वाकिफ था, उनकी हर नब्ज से आश्ना[4] था, कौन किस मिजाज की है और किस वक्त और किस गाहक के लिए मौजूँ है, उसको इसका बखूबी अदाजा था—एक सिर्फ उसको सिराज के मुताल्लिक अभी तक कोई अदाजा नही हुआ था, वह अभी तक सिराज की गहराई तक नही पहुँच सका था।

ढूँडू कई बार मुझसे कह चुका था "साली का मस्तक फिरेला है समझ मे नही आता मटो साहब, कैसी छोकरी है घडी मे माशा, घडी मे तोला, कभी आग, कभी पानी अभी हँस रही है, कहकहे लगा रही है, फिर एकदम रोना शुरू कर देती है साली की किसी से नही बनती, बडी झगडालू है, हर पैसिजर से लडती है, साली से कई बार कह चुका हूँ कि देख, अपना मस्तक ठीक कर, वरना जा, जहाँ से आई है, अग पर तेरे कोई कपडा नही, खाने को तेरे पास डेढ़या नही, मारा-मारी और धाँधली से तो मेरी जान, काम चलेगा नही पर वह भी एक तुखम है मटो साहब, कुछ सुनती ही नही।"

मैंने सिराज को एक-दो मर्तबा देखा था बडी दुबली-पतली लडकी थी, मगर खूबसूरत, उसकी आँखे जरूरत से ज्यादा बडी थी, ऐसा लगता था कि वह उसके बैजवी[5] चेहरे पर सिर्फ अपनी बडाई जताने की खातिर छाई हुई हैं। मैंने जब उसको पहली मर्तबा क्लेयर रोड पर देखा था तो मुझे बडी उलझन हुई थी, मेरे दिल मे यह ख्वाहिश पैदा हुई थी कि उसकी आँखो से कहूँ, भई तुम थोडी देर के लिए एक तरफ हट जाओ कि मैं सिराज को देख सकूँ लेकिन मेरी इस ख्वाहिश के बावजूद, जो यकीनन मेरी आँखो ने उसकी आँखो तक पहुँचा दी होगी, वे उसी तरह उसके सफेद बैजवी चेहरे पर छाई रही सिराज मुख्तसर-सी थी, मगर इस इख्तिसार के बावजूद बडी जामे[6] मालूम होती थी, ऐसा लगता था कि वह एक सुराही है, जिसमें उसके हुजूम से ज्यादा पानी मिली शराब भरने की कोशिश की गई है, और नतीजे के तौर पर वह मैयाल[7] चीज दबाव के बायस इधर-उधर तडपकर बह निकली है मैंने पानी मिली शराब इसलिए कहा है कि सिराज में तल्खी थी वही तल्खी, जो तेजो-तद शराब में होती है, ऐसा लगता था, किसी धोखेबाज ने उसमे पानी मिला दिया है कि मिकदार ज्यादा हो जाए, मगर सिराज मे निसाइयत[8] की जो मिकदार थी, वैसी की वैसी मौजूद थी, और उसकी झुँझलाहट से, जो उसके घने बालों से, उसकी तीखी नाक से, उसके भिंचे हुए होठो से और उसकी उँगलियो से, जो नक्शानवीसो की नुकीली और तेज-तेज पेंसिले मालूम होती थी, मैंने यह अदाजा लगाया था कि वह हर चीज से नाराज है, ढूँडू से, उस खबे से, जिसके साथ लगकर वह खडा रहता था, उन गाहको से, जो उसके लिए लाए जाते थे, अपनी बडी बडी आँखो से भी जो उसके सफेद बैजवी चेहरे पर कब्जा जमाए रखती थी, वह हर चीज से नाराज थी—वह अपनी पतली-पतली उन उँगलियो से भी, जो नक्शानवीसो की पेंसिलों की तरह तेज थी, नाराज थी, शायद इसलिए कि जो नक्शा वह बनाना चाहती थी, उसकी उँगलियाँ नही बना सकती थी।

यह तो खैर एक अफसानानिगार के तास्सुरात[9] हैं, जो छोटे-से तिल मे रगे-अस्वद[10] की तमाम सख्तियाँ बयान कर सकता है, आप ढूँडू की जबानी सिराज के मुताल्लिक कुछ सुनिए।

ढूँडू ने एक दिन मुझसे कहा : ''मटो साहब, आज साली ने फिर टटा कर दिया वह तो जाने किस दिन का सवाब काम आ गया और आपकी दुआ से यूँ भी नागपाड़ा चौकी के सब अफ़सर मेहरबान हैं, वरना आज ढूँडू अदर होता आज उसने वह धमाल मचाई है कि मैं तो बाप रे बाप कहता रह गया ''

मैंने पूछा : ''बात क्या हुई थी ?''

''वही, जो हुआ करती है मैंने लाख लानत भेजी अपनी हश्त-पुश्त[11] पर कि हरामी, जब तू उस छोकरी को अच्छी तरह जानता है तो फिर क्यो उँगली लेता है, क्यों उसको निकालकर लाता है तेरी माँ लगती है या बहन मेरी तो अक्ल काम नहीं करती मटो साहब !''

हम दोनो ईरानी के होटल मे बैठे हुए थे—ढूँडू ने कॉफी मिली चाय पिर्च में उँडेली और सडप-सडप पीने लगा ''असल बात यह है कि साली से मुझे हमदर्दी है !''

मैंने पूछा : ''क्यो ?''

ढूँडू ने सिर को एक झटका दिया ''जाने क्यो ? यह साला मालूम हो जाए तो रोज-रोज़ का टटा न खत्म हो जाए '' फिर उसने एकदम पिर्च मे प्याली औंधी करके मुझसे कहा ''आपको मालूम है अभी तक कुँआरी है !''

यकीन मानिए, मैं एक लहजे के लिए चकरा गया ''कुँआरी ?''

''आपकी जान की कसम ।''

मैंने चाहा कि वह अपनी बात पर नजरसानी[12] करे । मैंने कहा : ''नही ढूँडू !''

ढूँडू को मेरा यह शक नागवार मालूम हुआ : ''मैं आपसे झूठ नहीं कहता मटो साहब सोलहा आने कुँआरी है आप मुझसे शर्त लगा लीजिए !''

मैं सिर्फ इसी कदर कह सका ''मगर ऐसा क्यों कर हो सकता है ?''

ढूँडू ने बडे वसूक[13] के साथ कहा : ''ऐसा क्यों होने को नहीं सकता सिराज-जैसी छोकरी तो इस धंधे मे रहकर भी सारी उम्र कुँआरी रह सकती है साली किसी को हाथ ही नही लगाने देती मुझे उसकी सारी हिशटरी मालूम नही; इतना जानता हूँ कि पंजाबन है लैमिगटन रोड पर एक मेम साहब के पास थी; वहाँ से निकाली गई कि हर पैसिंजर से लड़ती थी, फिर भी वहाँ उसने दो-तीन महीने निकाल लिए कि मडाम के पास दस-बीस और छोकरियाँ थीं, पर मंटो साहब, कोई कब तक किसी को खिलाता है; मडाम ने एक दिन उसे तीन कपडों में निकाल बाहर किया वहाँ से निकाली गई तो वह फ़ारस रोड पर एक दूसरी मडाम के पास जा पहुँची; यहाँ भी उसका माथा वैसे का वैसा था; यहाँ उसने एक पैसिंजर को काट खाया ! बड़ी मुश्किल से दो-तीन महीने यहाँ गुज़ारे ''साली के मिज़ाज में तो जैसे आग भरी हुई है, अब कौन इसे ठंडा करता फिरे फिर, खुदा आपका भला करे, खेतवाडी के एक होटल में रही; पर यहाँ भी वही धमाल; होटल के मैनेजर ने आख़िर तंग आकर उसे चलता किया क्या बताऊँ मंटो साहब, न साली को खाने का होश है, न पीने का, कपड़ों में जुएँ पडी हैं; सिर दो महीने से नहीं धोया चरस के दो-एक सिगरेट कहीं से

मिल जाएँ तो फूँक लेती है, या किसी होटल के बाहर खडी होकर फिल्मी रिकार्ड सुनती रहती है ''

मेरे लिए यह तफसील काफी थी, मैं अपने रद्दे-अमल मे आपको आगाह नही करना चाहता कि अफसानानिगार की हैसियत से यह नामुनासिब है।

मैंने ढूँडू से महज सिलसिला-ए-गुफ्तगू कायम रखने के लिए पूछा "जब उसे इस धंधे मे कोई दिलचस्पी ही नही तो तुम उसे वापस क्यो नही भेज देते किराया तुम मुझसे ले लो।'

ढूँडू को मेरी बात नागवार मालूम हुई मटो साहब, किराए साले की क्या बात है क्या मैं नही दे सकता ?"

मैंने टोह लेना चाही "फिर तुम उसे वापस क्यो नही भेजते ?"

ढूँडू कुछ अर्से के लिए खामोश हो गया फिर उसने कान मे उडसा हुआ सिगरेट का टुकडा निकालकर सुलगाया और धुएँ को नाक के दोनो नथुनो से बाहर फेककर सिर्फ इतना कहा "मैं नही चाहता कि वह जाए।"

मैंने सोचा कि उलझे हुए धागे का एक सिरा मेरे हाथ मे आ गया है "क्या तुम उससे मुहब्बत करते हो ?"

ढूँडू पर शदीद रद्दे-अमल हुआ "आप कैसी बाते करते हैं मटो साहब।" फिर उसने अपने दोनों कान पकडकर खीचे "कुरआन की कसम, मेरे दिल मे ऐसा पलीद खयाल कभी नही आया मुझे तो सब " वह रुक गया, फिर उसने कहा मुझे बस वह कुछ अच्छी लगती है ''

मैंने बडा सही सवाल किया "क्यो ? '

ढूँडू ने भी बडा सही जवाब दिया 'इसलिए इसलिए कि वह दूसरा-जैसी नही बाकी जितनी हैं, सब पैसे की पीर हैं हरामी हैं अव्वल दर्जे की पर सिराज है ना कुछ अजीबो-गरीब है निकाल के लाता हूँ तो राजी हो जाती है, सौदा हो जाता है टैक्सी या विक्टोरिया मे बैठ जाती है अब मटो साहब पैसिंजर साला मौज शौक के लिए आता है, माल-पानी खर्च करता है, जरा दबा के देखना चाहता है या वैसे ही छूना चाहता है बस फिर एक धमाल मच जाती है, सिराज मारा-मारी शुरू कर देती है पैसिंजर शरीफ हो तो भाग जाता है, पियेला हो, या मवाली हो तो आफत हर मौके पर मुझे पहुँचना पडता है पैसे वापस करने पडते हैं और हाथ-पैर अलग जोडने पडते हैं कसम कुरआन की, सिर्फ सिराज की खातिर और मटो साहब, आपकी जान की कसम, इसी साली सिराज की वजह से मेरा धधा आधा रह गया है ''

मेरे ज़ेहन ने सिराज का जो अकबी[14] मजर तैयार किया था, मैं उसका जिक्र नही करना चाहता, हाँ इतना जरूर कहना चाहता हूँ कि ढूँडू ने जो कुछ बताया, वह मेरे जेहन के तैयार किए हुए अकबी मजर के साथ कुछ ठीक तौर पर जमता नही था, मैंने एक दिन सोचा कि ढूँडू को बताए बगैर सिराज से मिला जाए।

सिराज बाईकल्ला स्टेशन के पास ही एक निहायत वाहियात जगह मे रहती थी, जहाँ

कूड़े-करकट के ढेर थे, आसपास का तमाम फ़ुज़्ला था—कॉरपोरेशन ने यहाँ गरीबों के लिए जस्त के बेशुमार झोंपड़े बना रखे थे।

मैं यहाँ उन बुलंद बाम इमारतों का ज़िक्र नहीं करना चाहता, जो उस ग़िलाज़तगाह से थोडी ही दूर इस्तादा[15] थीं कि उन बुलंद बाम इमारतों का इस अफसाने से कोई ताल्लुक़ नहीं; दुनिया नाम ही नशेबो-फ़राज़[16] का है, या रफअतों और पस्तियों का।

ढूँढ़ से मुझे सिराज के झोंपड़े का अता-पता मालूम था—मैं वहाँ गया, अपने ख़ुश वज़ह कपडों को उस माहौल से छुपाते हुए; लेकिन यहाँ मेरी जात मुताल्लिक़[17] नहीं।

बहरहाल मैं वहाँ गया—झोपडे के बाहर एक बकरी बँधी हुई थी; उसने मुझे देखा तो मिमियाई। अब अंदर से एक बुढ़िया निकली, जैसे पुरानी दास्तानों के करम ख़ुर्दा अंबार से कोई कुटनी लाठी टेकती हुई निकलती है।

मैं लौटने ही वाला था कि टाट के जगह-जगह से फटे हुए परदे के पीछे मुझे दो बड़ी आँखे नजर आईं, बिलकुल उसी तरह फटी हुईं, जिस तरह टाट का वह परदा फटा हुआ था; फिर मैंने सिराज का सफेद बैजवी चेहरा देखा और मुझे उन ग़ालिब आँखों पर बड़ा गुस्सा आया।

सिराज ने मुझे देख लिया था—मालूम नहीं, वह अदर क्या काम कर रही थी, लेकिन वह सब काम छोड-छाडकर बाहर आ गई, उसने बुढिया की तरफ कोई तवज्जोह न दी और मुझसे कहा. "आप यहाँ कैसे आ गए?"

मैंने मुस्करसन कहा. "तुमसे मिलना था!"

उसने भी इख़्तिसार[18] ही के साथ कहा· "तो अदर आ जाइए!"

मैंने कहा. "नही, तुम मेरे साथ चलो।"

मैंने सिराज को साथ चलने के लिए कहा तो करम ख़ुर्दा दास्तानों की करम ख़ुर्दा कुटनी बड़े दूकानदाराना अंदाज़ में बोली: "दस रुपए लगेंगे!"

मैंने बटुआ निकालकर दस रुपए बुढ़िया को दे दिए और सिराज से कहा: "आओ सिराजे!"

उसकी बड़ी-बड़ी आँखों ने एक लहज़े के लिए मेरी निगाहों को रास्ता दिया कि उसके चेहरे की सड़क पर चंद क़दम चल सकें—मैं एक बार फिर उसी नतीजे पर पहुँचा कि वह ख़ूबसूरत है, सिकुड़ी हुई ख़ूबसूरती, हनूत[19] लगी ख़ूबसूरती, सदियों की महफ़ूज़ो-मामून[20] और मदफ़ून[21] की हुई ख़ूबसूरती—मैंने एक लहज़े के लिए यूँ महसूस किया कि मैं मिस्र में हूँ और पुराने दफ़ीनों[22] की ख़ुदाई पर मामूर[23] किया गया हूँ।

मैं ज्यादा तफ़सील में नहीं जाना चाहता।

सिराज मेरे साथ थी; हम दोनों एक होटल में थे। वह मेरे सामने अपने ग़लीज़ कपड़ों में मलबूस[24] बैठी हुई थी, और उसकी बड़ी-बड़ी आँखें उसके बैज़वी चेहरे पर कब्ज़ा-ए-मुख़ालिफाना[25] किए हुए थीं। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि उसकी बड़ी-बड़ी आँखों ने सिर्फ़ उसके चेहरे ही को नहीं, उसके सारे वजूद को ढाँप रखा है कि मैं उसके किसी रोएँ को भी न देख सकूँ।

बुढ़िया ने दस रुपए माँगे थे, जो मैंने उसे दे दिए थे, इसके अलावा मैंने चालीस रुपए सिराज को भी दिए, मैं चाहता था कि वह मुझसे भी उसी तरह लडे-झगडे, जिस तरह वह दूसरों के साथ लडती-झगडती है, इसीलिए मैंने सिराज से ऐसी कोई बात न की, जिससे मुहब्बत और खुलूस की बू आए—मैं उसकी बडी-बडी आँखो मे खाइफ[26] था, वह आँखें इतनी बडी थीं कि मेरे अलावा मेरे इर्द-गिर्द की सारी दुनिया को देख सकती थी।

वह खामोश थी।

वाहियात तरीके पर उसे छेडने के लिए जरूरी था कि मेरे जिस्म और जेहन मे गलत क़िस्म की हरारत पैदा हो—फिर मैंने व्हिस्की के चार बडे पैग पिए और उसको आम पैसिंजरो की तरह छेडा, उसने कोई मुजाहमत[27] न की। मैंने दानिस्तन एक जबर्दस्त फिजूल हरकत की, मेरा खयाल था कि वह बारूद जो उसके अदर भरा पडा है, उस बारूद को भक्-से उडाने के लिए मेरी जबर्दस्त फिजूल हरकत की चिंगारी काफी होगी, मगर हैरत है कि वह पुर सुकून रही।

उसने मुझे अपनी बडी-बडी आँखो के फैलाव मे समेटते हुए कहा "मुझे चरस का एक सिगरेट मँगवा दीजिए।"

मैंने कहा "शराब पियोगी?"

"नही मैं चरस का सिगरेट पियूँगी।"

मैंने उसे चरस का सिगरेट मँगवा दिया।

ठेठ चरसियो के अदाज मे सिगरेट पीकर उसने मेरी तरफ देखा—उसकी बडी-बडी आँखें अब अपना तमल्लुत[28] छोड चुकी थी, उसी तरह जिस तरह कोई गासिब अपना तसल्लुत छोडता है।

उसका चेहरा मुझे एक उजडी हुई, एक बर्बादशुदा सल्तनत नजर आया, ना-तख्तो-ना राज मुल्क, उसका हर खत, हर खाल वीरानी की एक लकीर थी—मगर यह वीरानी क्या थी, क्यो थी; बाज औकात ऐसा भी होता है कि आबादियाँ ही वीरानो का बायस होती हैं, क्या वह इसी किस्म की कोई आबादी थी, जो बसना शुरू हुई ही थी कि किसी हमलावर के सबब अधूरी रह गई और उसकी दीवारे, जो अभी गज भर भी ऊपर न उठी थी, आहिस्ता-आहिस्ता खँडहर बन गई?—मैं एक चक्कर मे था, लेकिन मै आपको इस चक्कर मे नही डालना चाहता, मैंने क्या सोचा? क्या नतीजा बरामद किया? आपको इससे क्या मतलब।

सिराज कुँआरी थी, या कुँआरी नही थी, मैं इसके मुताल्लिक भी नही जानना चाहता था—हाँ, चरस के धुएँ में लिपटी उसकी महजूनो-मख्मूर[29] आँखो मे मुझे एक ऐसी झलक नजर आई थी, जिसको मेरा कलम भी बयान नही कर सकता।

मैंने सिराज के साथ बाते करना चाही, मगर उसे बातो से कोई दिलचस्पी नहीं थी; मैंने चाहा कि वह मुझसे लड़े-झगड़े, मगर उसने मुझे नाउम्मीद किया।

आखिर मैं उसे उसके घर छोड आया।

ढूँढू को जब मेरे इस खुफिया सिलसिले का पता चला तो वह बहुत नाराज हुआ—उसके

दोस्ताना और ताजिराना जज्बात बहुत बुरी तरह मजरूह हो गए थे, उसने मुझे सफाई का मौका ही न दिया और सिर्फ इतना कहा "मटो साहब, मुझे आपसे यह उम्मीद न थी।" फिर वह खबे से हटकर एक तरफ चला गया।

अजीब बात यह हुई कि दूसरे रोज शाम को वक्ते-मुकर्ररा पर वह मुझे अपने अड्डे पर नजर न आया, मैंने सोचा, शायद बीमार हो, मगर उससे अगले रोज भी वह वहाँ मौजूद नही था।

इसी तरह एक हफ्ता गुजर गया—उस खबे के करीब से मेरा हर सुबह-शाम आना-जाना होता था, मैं जब उस खबे को देखता, मुझे ढूँडू याद आ जाता।

मैं बाईकल्ला स्टेशन के पास उस वाहियात जगह पर भी गया, जहाँ सिराज रहती थी, यह देखने के लिए कि वह कहाँ है, मगर वहाँ अब सिर्फ वह करम खुर्दा कुटनी रहती थी। मैंने उससे सिराज के मुताल्लिक पूछा तो वह अपनी पोपली मुसकराहट मे लाखो बरम पुरानी जिसी करवट बदलकर बोली "वह तो चली गई और हैं बुलवाऊँ "

मैंने सोचा, यह क्या हुआ, ढूँडू और सिराज दोनों गायब हैं और वह भी मेरी उस खुफिया मुलाकात के बाद मैं उस खुफियाद मुलाकात के मुताल्लिक बिल्कुल मुतरद्दद[30] नही था।

यहाँ पर मैं अपने खयालात आप पर जाहिर नही करना चाहता, हाँ, मुझे यह हैरत जरूर थी कि वे दोनो कहाँ और क्यो गायब हो गए हैं, उनमें मुहब्बत किस्म की कोई चीज नही थी ढूँडू तो ऐसी चीजों से बालातर[31] था, फिर उसकी बीवी थी, बच्चे थे और वह उनसे बेहद मुहब्बत करता था, तब यह सिलसिला क्या था कि दोनों बयकवक्त गायब थे?

मैंने सोचा, हो सकता है, अचानक ढूँडू के दिमाग में यह खयाल आ गया हो कि सिराज को अब वापस अपने घर लौट जाना चाहिए—सिराज के लौट जाने के मुताल्लिक ढूँडू पहले फैसला न कर सका था—मुम्किन है, अब उसने यह फैसला कर लिया हो!

इसी उधेड़बुन में गालिबन एक महीना गुजर गया।

एक शाम अचानक मुझे ढूँडू नजर आ गया, उसी खबे के साथ लगकर खड़ा हुआ, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे खबे मे एक मुद्दत तक करेंट फेल रहने के बाद अब एकदम करेंट वापस आ गया है और खबे में जान पड गई है, टेलीफोन की तारों के बक्स में भी, ऐसा लगा, जैसे ऊपर, चारों तरफ फैले हुए तारो के जाल आपस मे सरगोशियाँ कर रहे हैं।

मैं ढूँडू के पास से गुजरा—उसने मेरी तरफ देखा और मुसकराया—फिर हम दोनो ईरानी के होटल में थे।

मैंने उससे कुछ न पूछा—उसने अपने लिए कॉफी मिली चाय और मेरे लिए सादा चाय मँगवाई, फिर उसने पहलू बदलकर ऐसी निशस्त कायम की, जैसे वह मुझे कोई बहुत बडी बात सुनानेवाला हो, मगर उसने सिर्फ इतना कहा "और सुनाओ मटो साहब!"

मैंने कहा "क्या सुनाएँ ढूँडू बस गुजर रही है "

वह मुसकराया "ठीक कहा आपने बस गुजर रही है, और गुजर जाएगी यह साला गुजरते रहना, या गुजरना भी अजीब चीज है सच पूछिए तो इस दुनिया मे हर चीज अजीब है "

मैंने सिर्फ़ इतना कहा . ''तुम ठीक कहते हो ढूँढू !''

चाय आई तो हम दोनो ने पीना शुरू की । ढूँढू ने पिर्च में अपनी कॉफ़ी मिली चाय उँडेली और मुझसे कहा . ''मटो साहब, सिराज ने मुझे सारी बात बता दी थी उसने कहा था 'वह सेठ, जो तुम्हारा दोस्त है, उसका माथा फिरेला है '''

मैं हँसा . ''क्यों ?''

''उसने कहा . वह मुझे होटल में ले गया इतने रुपए दिए, पर सेठोवाली कोई बात न की ''

मैंने कहा : ''वह किस्सा ही कुछ और था ढूँढू !''

वह पेट भरके हँसा ''मैं जानता हूँ मुझे माफ कर देना मैं उस रोज तुमसे नाराज हो गया था '' उसके अंदाजे-गुफ्तगू मे, शायद पहली बार, अनजाने मे बेतकल्लुफी पैदा हो गई ''पर अब वह किस्सा खलास हो गया है !''

''कौन-सा क़िस्मा ?''

''उस साली सिराज का किस्सा और किसका ?''

मैंने पूछा : ''हुआ क्या ?''

ढूँढू गुटकने लगा ''जिस रोज वह आपके साथ गई थी, मुझे उसी रोज उस बुढ़िया से पता चल गया था और मैंने सोचा था कि आप ही हो सकते हैं और मैं आपसे नाराज हो गया था जब सिराज से मिला तो कहने लगी 'मेरे पास चालीस रुपए हैं चलो, मुझे लाहौर ले चलो ' मैं बोला: 'साली, यह एकदम तेरे सिर पर क्या भूत सवार हो गया है ' वह बोली 'नहीं, चल ढूँढू, तुझे मेरी कसम ' और मटो साहब, आप तो जानते ही हैं, मैं साली की कोई बात नहीं टाल सकता था कि वह मुझे अच्छी लगती थी । मैंने कहा : 'चल ' सो हम टिकट कटा के गाडी मे सवार हो गए लाहौर पहुँचकर हम एक होटल मे ठहर गए उसने मुझसे कहा 'ढूँढू, मुझे एक बुर्का ला दे ' मैं बुर्का ले आया बुर्का पहनकर वह लगी सडक-सडक और गली-गली घूमने इस तरह कई दिन गुजर गए एक दिन मैंने अपने आपसे कहा कि यह भी अच्छी रही ढूँढू, उस साली का तो मस्तक फिरेला है, साला तेरा भेजा भी फिर गया क्या, जो इतनी दूर आ गया है उसके साथ खराब होने मटो साहब, एक दिन हम ताँगे मे बैठे हुए थे कि उसने ताँगा रुकवाया और सडक के उस पार खडे एक आदमी की तरफ इशारा करके मुझसे कहने लगी 'ढूँढू, उस आदमी को मेरे पास होटल मे ले आ मैं चलती हूँ वापिस होटल में ' मेरी अक्ल जवाब दे गई मैं ताँगे से उतरा तो, ताँगा यह जा, वह जा और मैं उस आदमी के पीछे-पीछे आपकी दुआ से और अल्लाहताला की मेहरबानी से मैं आदमी-आदमी को पहचानता हूँ मैने उस आदमी से इधर-उधर की दो बाते की और ताड गया कि वह मौज-शौक करनेवाला आदमी है तो मैं बोला 'बबई का खास माल है ' वह बोला : 'अभी चलो ' मैं बोला 'नही, पहले माल-पानी दिखाओ ' उसने इतने सारे नोट दिखाए मैं अपने दिल म बोला कि चल ढूँढ, धधा यहाँ भी चलना चाहिए पर मेरी समझ मे यह बात नही आई थी कि उस साली सिराज ने सारे लाहौर मे उसी आदमी को क्यो चुना है मैने खुद से कहा कि सब चलता है मैंने ताँगा लिया, उस

आदमी को साथ लिया और सीधा होटल मे मैंने सिराज को खबर की तो वह बोली : 'अभी ठहर ' मैं ठहर गया थोडी देर के बाद मैं उस आदमी को, जो अच्छी शक्ल का था, अदर ले गया सिराज को देखते ही वह साला यूँ बिदका, जैसे घोडा बिदकता है सिराज ने उस आदमी को पकड लिया '' ढूँढू ने प्याली में बची-खुची अपनी ठडी कॉफी मिली चाय एक ही जुरअे मे खत्म की और बीडी सुलगाने लगा।

मैंने कहा ''सिराज ने उस आदमी को पकड लिया ?''

ढूँढू ने बुलंद आवाज में कहा : ''हाँ जी, पकड़ लिया उस साले को और कहने लगी : 'अब तू जाता कहाँ है ? मेरा घर छुडाकर तू मुझे अपने साथ किसलिए लाया था मैं तुझसे मुहब्बत करती थी तूने भी मुझसे यही कहा था कि तू मुझसे मुहब्बत करता है पर जब मै अपना घरबार, अपने माँ-बाप छोडकर तेरे साथ भाग निकली और अमृतसर से हम दोनो यहाँ, इसी होटल मे आकर ठहरे तो रात ही रात तू क्यों भाग गया, मुझे अकेली छोडकर ? किसलिए लाया था तू मुझे यहाँ, किसलिए भगाया था तूने मुझे ? मैं हर बात के लिए तैयार थी और तू मुझे छोडकर भाग गया आ अब मैंने तुझे बुलाया है मेरी मुहब्बत वैसी की वैसी कायम है आ' और मंटो साहब, वह उस आदमी के साथ लिपट गई उस साले के आँसू भी टपकने लगे वह रो-रोकर माफियाँ माँगने लगा : 'मुझसे गलती हो गई थी मैं डर गया था मैं अब तुमसे कभी अलग नहीं रहूँगा ' साला कसमे खाता रहा और जाने क्या-क्या बकता रहा फिर सिराज ने मुझे इशारा किया और मैं कमरे मे बाहर चला गया मैं बाहर बरामदे मे खाट पर सो रहा था कि सुबह सिराज ने मुझे जगाया और कहा : 'चल ढूँढू ' मैं बोला 'कहाँ ?' वह बोली : 'वापस बबई ' मैं बोला 'और वह साला कहाँ है ?' सिराज ने कहा 'सो रहा है मैं उस पर अपना बुर्का डाल आई हूँ ''

ढूँढू ने अपने लिए दूसरी कॉफी मिली चाय का आर्डर दिया तो सिराज ईरानी होटल मे दाखिल हुई। उसका सफेद बैजवी चेहरा निखरा हुआ था और उसके चेहरे पर उसकी बडी-बडी आँखे दो गिरे हुए सिगनल मालूम हो रही थी।

1 सर्मान्वित, मिल जाना, 2 समय-समय पर, 3 नैन-नक्श, 4 परिचित, 5 अडाकार, 6 भरपूर, 7 तरल, 8 नारीत्व, 9 भाव, 10 वह पत्थर जो का'बे में लगा है, 11. आठ पीढ़ियाँ, 12 पुनर्विचार, 13 विश्वास, 14 पीछे का, 15 खड़ी हुई, 16 ऊँच-नीच, 17 सबोधित, 18 सक्षेप, 19 मुर्दों या लाशों पर लगाई जानेवाली खुशबू, 20. सरक्षित, 21 दफन किया हुआ, 22 खजाने, गढा हुआ धन, 23 नियंत्रन 24 वस्त्र धारण किए हुए, 25. विरोध के बावुजूद कब्जा, 26 भयभीत, 27. प्रतिरोध, 28 प्रभुत्व 29 उदास और नशीली, 30 चिंतित, 31 अधिक ऊँचा, उत्कृष्ट।

सरकंडों के पीछे

कौन-सा शहर था, इसके मुताल्लिक, जहाँ तक मैं समझता हूँ, आपको मालूम करने और मुझे बताने की कोई जरूरत नही, बस इतना कह देना ही काफी है कि वह जगह, जो इस कहानी से मुताल्लिक है, सरहद के मजाफात[1] मे थी, बार्डर के करीब; और जहाँ वह औरत रहती थी, वह घर झोपडानुमा था, सरकडो के पीछे।

घनी बाड-सी थी, जिसके पीछे उस औरत का मकान था, कच्ची मिट्टी का बना हुआ; यह बाड से कुछ फासले पर था, इसलिए सरकडो के पीछे छुप-सा गया था कि बाहर कच्ची सडक पर से गुज़रनेवाला कोई भी इसे देख नही सकता था।

सरकडे बिलकुल सूखे हुए थे, मगर वह कुछ इस तरह जमीन मे गडे हुए थे कि एक दबीज[2] परदा बन गए थे, मालूम नही वह सरकडे उस औरत ने खुद वहाँ पैवस्त किए थे या पहले ही से वहाँ मौजूद थे। बहरहाल, कहना यह है कि वह आहनी किस्म के परदापोश थे।

मकान कह लीजिए या मिट्टी का झोपडा, छोटी-छोटी तीन कोठडियाँ थी, मगर साफ़-सुथरी, सामान मुख्तसर था, मगर अच्छा, पिछली कोठडी मे एक बहुत बडा निवारी पलग था, पलग के करीब ही कच्ची दीवार मे एक ताकचा था, जिसमे सरसो के तेल का दीया रात भर जलता रहता था, वह ताकचा भी साफ-सुथरा रहता था और वह दीया भी जिसमे हर रोज नया तेल नई बत्ती डाली जाती थी।

अब मै आपको उस औरत का नाम बताता हूँ जो उस मुख्तसर से मकान मे, जो सरकडो के पीछे छुपा रहता था, अपनी जवान बेटी के साथ रिहाइश पजीर थी।

मुख्तलिफ रवायते है, बाज लोग कहते है कि वह उसकी बेटी नही थी, एक यतीम लडकी थी, जिसको उसने बचपन ही से गोद लेकर और पाल-पोसकर बडा किया था, बाज कहते हैं कि वह उसकी सौतेली बेटी थी; कुछ ऐसे भी हैं, जिनका खयाल है कि वह उसकी सगी बेटी थी—हकीकत जो कुछ भी है, उसके मुताल्लिक वसूक[3] से कुछ कहा नही जा सकता; हाँ, यह कहानी पढने के बाद आप खुद कोई राय कायम कर लीजिएगा।

देखिए, मै आपको उस औरत का नाम बताना भूल गया—बात असल मे यह है कि उस औरत का नाम कोई अहमियत नही रखता; उसका नाम आप कुछ भी समझ लीजिए, सकीना, मेहताब, गुलशन या कोई और, आखिर नाम मे रखा क्या है? लेकिन आपकी

सहूलत की ख़ातिर मैं उस औरत को सरदार कहूँगा।

सरदार अधेड़ उम्र की औरत थी; वह किसी ज़माने में यक़ीनन ख़ूबसूरत रही होगी; अब उसके सुर्ख़ो-सफ़ेद गालों पर किसी क़दर झुर्रियाँ पड़ गई थीं, फिर भी वह अपनी उम्र से कई बरस छोटी दिखाई देती थी, मगर हमें उसके गालों से कोई ताल्लुक नहीं।

उनकी बेटी—मालूम नहीं, वह उसकी बेटी थी भी या नहीं—शबाब का बड़ा दिलकश नमूना थी; उसके ख़द्दोख़ाल में ऐसी कोई चीज़ नहीं थी, जिससे यह नतीजा अख़ज[4] किया जा सकता कि वह फाहशा[5] है; लेकिन यह क़ीकत है कि उसकी माँ उससे पेशा कराती थी, और खूब दौलत कमा रही थी। यह भी हकीकत है कि उस लडकी को, जिसका नाम फिर आपकी सहूलत की ख़ातिर मैं नवाब रखे देता हूँ, इस पेशे से नफरत नहीं थी—असल मे उसने आबादी से दूर एक ऐसे मुक़ाम पर परवरिश पाई थी कि उसको सही इज्दिवाजी ज़िंदगी का कुछ पता ही नहीं था।

जब सरदार ने बिस्तर पर, उस निवाड़ी पलंग पर पहला मर्द नवाब से मुतार्रिफ[6] कराया होगा तो नवाब ने यही समझा होगा कि तमाम लडकियों की जवानी का आगाज कुछ इसी तरह होता है—अब वह अपनी उस कसबियाना जिंदगी से मानूस[7] हो गई थी, उसके नजदीक उसकी जिंदगी का मुनतहा[8] यही थी कि अनजाने मर्द दूर-दूर से चलकर उसके पास आते थे और उसके साथ उस निवाडी पलग पर सोते थे।

यूँ तो वह हर लिहाज से एक फ़ाहशा औरत थी, उन मानों मे, जिनमे हमारी शरीफ और मुतहर औरतें उस-जैसी औरतों को देखती हैं, मगर सच पूछिए तो उसको इस अम्र[9] का कत्अन एहसास न था कि वह गुनाह की ज़िंदगी बसर कर रही है—वह गुनाह के मुताल्लिक गौर भी कैसे कर सकती थी; वह गुनाह के बारे में कुछ जानती ही नही थी।

उसके जिस्म में खुलूस था—वह हर मर्द को जो हफ्ते-डेढ़ हफ्ते के बाद, एक तवील मुमाफ़त[10] तय करके आता था, अपना आप सुपुर्द कर देती थी, वह समझती थी कि हर औरत का यही काम है; वह हर मर्द की हर आसाइश, हर आराम का खयाल रखती थी; वह किसी मर्द की कोई नन्ही-सी तकलीफ़ भी बर्दाश्त नही करती थी।

नवाब को शहर के लोगो के तकल्लुफात का इल्म नही था; वह यह क़त्अन नही जानती थी कि जो मर्द उसके पास मोटरो मे बैठकर आते हैं, वह सुबह-सवेरे अपने दाँत बुरुश के साथ साफ करने के आदी होते हैं; वह आँखे खुलते ही सबसे पहले बिस्तर में चाय की एक प्याली पीते हैं और फिर रफ़ा हाजत के लिए जाते हैं; उसने आहिस्ता-आहिस्ता बडे अल्हड तरीके पर उन मर्दों की आदात से कुछ वाकिफ़ियत हासिल कर ली थी, फिर उसे बडी उलझन होती थी कि सब मर्द एक तरह के नही होते थे; कोई सुबह-सवेरे उठते ही सिगरेट माँगता था तो कोई चाय, और बाज़ ऐसे भी होते थे, जो उठने का नाम ही नही लेते थे; कुछ सारी-सारी रात जागते रहते थे और सुबह मोटर में सवार होकर भाग जाते थे।

सरदार बेफिक्र थी—उसको अपनी बेटी पर, या जो कुछ भी वह उसकी थी, पूरा ऐतमाद था कि वह अपने गाहको को सँभाल सकती है। वह हर वक़्त अफ़ीम की गोली खाकर खाट पर सोई रहती थी; जब कभी ज्यादा शराब पी लेने के बायस किसी गाहक की

तबीयत ज्यादा खराब हो जाती थी तो वह उठाए जाने पर गुनूदगी के आलम मे उठा करती थी और नवाब को हिदायात दिया करती थी कि वह गाहक को अचार खिला दे, या नमक मिला गर्म पानी पिलाकर कै करा दे या फिर थपकियाँ दे-देकर सुला दे।

सरदार एक मामले में बड़ी मोहतात[11] थी, जूँ ही कोई गाहक आता था, वह उससे नवाब की फ़ीस पहले ही वसूल करके अपने नेफे मे महफ़ूज कर लेती थी और अपने मख्सूस अदाज मे दुआएँ देने के बाद, कि वह आराम से झूले झूले, डिबिया मे से अफीम की गोली निकालकर और मुँह में डालकर सो जाती थी।

यूँ जो रुपया आता था, उसकी मालिक सरदार थी, लेकिन जो तोहफे तहायफ वुसूल होते थे, वह नवाब ही के पास रहते थे—उसके पास आनेवाले लोग दौलतमद होते थे, इसलिए वह बढ़िया से बढ़िया कपड़ा पहनती थी और किस्म-किस्म के फल और मिठाइयाँ खाती थी।

नवाब खुश थी—मिट्टी मे लिपे-पुते उस मकान मे, जो सिर्फ तीन छोटी-छोटी कोठडियो पर मुश्तमिल[12] था, वह अपनी दानिस्त के मुताबिक बडी दिलचस्प और खुशगवार जिंदगी बसर कर रही थी। एक फौजी अफसर ने उसे ग्रामोफोन और बहुत-से रिकार्ड ला दिए थे; फुर्सत के औकात में वह उनको बजा-बजाकर फिल्मी गाने सुनती रहती थी और उनकी नकल उतारने की कोशिश किया करती थी, उसके गले मे कोई रस नही था, मगर वह उससे बेखबर थी—सच पूछिए तो उसको किसी भी बात की खबर नही थी और न उसको इस बात की ख्वाहिश थी कि वह किसी चीज से बाखबर हो, जिस रास्ते पर वह डाल दी गई थी, वह रास्ता उसने कुबूल कर लिया था, बडी बेखबरी के आलम मे।

सरकडो के उस पार की दुनिया कैसी है, उसके मुताल्लिक वह कुछ नही जानती थी, सिवाय इसके कि एक कच्ची सडक है, जिस पर हर तीसरे-चौथे दिन धूल उडाती हुई एक मोटर आती है और रुक जाती है, फिर हॉर्न बजता है और उसकी मा, या जो कोई भी वह उसकी थी, खाट पर से उठती है; सरकडो के पास जाकर मोटरवाले से कहती है कि वह मोटर जरा दूर खडी करके अदर आ जाए, फिर वह अदर आ जाता है, और थोडी देर के बाद निवाडी पलग पर बैठकर वह उसके साथ मीठी-मीठी बातो मे मशगूल हो जाता है।

उसके यहाँ आने-जानेवालों की तादाद ज्यादा नही थी, यही कोई पाँच-छ लोग होगे, मगर यह पाँच-छ लोग मुस्तकिल गाहक थे, और सरदार ने कुछ ऐसा इतजाम कर रखा था कि उनका बाहम तसादुम[13] न होता था—सरदार बडी होशियार औरत थी, वह हर गाहक के लिए कुछ इस तरह दिन मुकर्रर करती थी कि किसी को भी शिकायत का मौका न मिलता था। वह खासतौर से इस बात का ध्यान भी रखती थी कि कही नवाब माँ न बन जाए—जिन हालात में नवाब अपनी जिंदगी गुजार रही थी, उन हालात में उसका माँ बन जाना यकीनी था, मगर सरदार दो-ढाई बरस से बडी कामयाबी के साथ इस कुदरती खतरे से निबट रही थी।

सरकंडो के पीछे यह सिलसिला दो-ढाई बरस से बडे हमवार तरीके पर चल रहा था, पुलिसवालों को बिलकुल इल्म नहीं था; बस सिर्फ वही लोग जानते थे, जो वहाँ आते थे, या

फिर सरदार जानती थी और उसकी बेटी नवाब, या जो कोई भी वह उसकी थी।

एक दिन, सरकंडों के पीछे उस मकान में, एक इन्किलाब आ गया—एक बहुत बडी मोटर, गालिबन डोज, कच्ची सडक पर रुकी।

हॉर्न बजा तो सरदार कोठडी से बाहर निकली। बाड के पास आकर उसने देखा कि कोई अजनबी है—उसने कोई बात न की।

अजनबी ने सरदार को देखा, मगर कुछ न कहा; फिर उसने ज़रा दूर ले जाकर मोटर खडी की; मोटर से उतरने के बाद वह घनी बाड में तक़रीबन छुपे हुए रास्ते से, सरदार की तरफ़ देखे बगैर, यकीनी अदाज से बढ़ा, जैसे बरसों का आने-जानेवाला हो।

सरदार सटपटाकर बाड के पास खडी की खडी रह गई।

दरवाजे की दहलीज पर नवाब ने अजनबी का बडी प्यारी मुसकराहट से खैरमक़दम[14] किया और फिर उसे उस कोठडी में ले गई, जिसमें निवाड़ी पलंग बिछा हुआ था।

अभी वे दोनों साथ-साथ पलंग पर बैठे ही थे कि सरदार आ गई। वह होशियार औरत तो थी ही, उसने महसूस किया कि अजनबी किसी दौलतमंद घराने से है, ख़ुशशक्ल भी है और सेहतमद भी—उसने अंदर कोठडी में दाखिल होकर अजनबी को सलाम किया और पूछा "हुज़ूर, आपको इधर का रास्ता किसने बताया?"

अजनबी मुसकराया, फिर बडे प्यार से उसने नवाब के गोश्त भरे गालों में अपनी उँगली चुभोकर कहा "इसने।"

नवाब तडपकर एक तरफ सिमट-सी गई और उसने एक अदा के साथ कहा "हाँय, मैं तो कभी तुमसे मिली ही नहीं!"

अजनबी की मुसकराहट उसके होंठो पर और ज्यादा फैल गई "लेकिन हम तो कई बार तुमसे मिल चुके हैं।"

नवाब ने पूछा "कहाँ? कब?" हैरत के आलम में उसका छोटा-सा मुँह कुछ इस तौर पर वा हुआ कि उसके चेहरे की दिलकशी में इजाफे का मूजब[15] हो गया।

अजनबी ने उसका गदगदा हाथ पकड लिया और सरदार की तरफ देखते हुए कहा "अपनी माँ से पूछ लो।"

नवाब ने बडे भोलेपन के साथ अपनी माँ से, या जो कोई भी वह उसकी थी, पूछा कि वह शख्स उससे कब और कहाँ मिला था—सरदार सारा मामला समझ गई थी कि वह पाँच-छः लोग जो उसके यहाँ आते हैं, उनमें से किसी एक ने नवाब का जिक्र किया होगा और सारा अता-पता बता दिया होगा। उसने नवाब से कहा "मैं बता दूँगी तुझे।" और यह कहकर वह बाहर चली गई, खाट पर बैठकर उसने डिबिया में से अफीम की गोली निकाली, मुँह में रखी और लेट गई, वह मुतमइन हो गई थी कि आदमी अच्छा है और कोई गड़बड़ नहीं करेगा।

वसूक से तो इस बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता, लेकिन अगलब[16] यही है कि अजनबी, जिसका नाम हैबत खान था और जो जिला हजारा का बहुत बड़ा रईस था, नवाब के अल्हड़पन से इस कदर मुतास्सिर हुआ कि उसने रुख्सत होने वक्त सरदार से कहा "अब

नवाब के पा· और कोई न आया करे ।"

सरदार होशियार औरत थी उसने हैबत ख़ान से कहा "ख़ान साहब, यह कैसे हो सकता है ? क्या आप इतना रुपया दे सकेंगे कि "

हैबत ख़ान ने सख़्त नज़रों से सरदार की बात काट दी; फिर उसने अपनी जेब में हाथ डाला; सौ-सौ के नोटों की एक गड्डी-सी निकाली और नवाब के कदमों में फेंक दी; इसके बाद उसने अपनी एक उँगली से हीरे की अँगूठी उतारी, नवाब की उँगली में पहनाई और तेजी से सरकंडों के उस पार चला गया।

नवाब ने नोटों की तरफ आँख उठाकर भी न देखा था, बस वह तो अपनी सजी हुई उँगली देख रही थी, काफ़ी बड़े हीरे से रंग-रंग की शुआएँ फूट रही थी—बाहर कच्ची सड़क से मोटर स्टार्ट होने की आवाज उसके कानों में पहुँची तो वह चौंकी और सरकंडों की बाड़ की तरफ लपकी—गर्दो-गुब्बार के सिवा सड़क पर कुछ भी नहीं था।

सरदार नोटों की गड्डी उठाकर नोट गिन चुकी थी; एक नोट और होता तो पूरे दो हज़ार होते; इस कमी का उसे अफ़सोस न हुआ—सारे नोट उसने अपनी घेरेदार शलवार के नेफे में बड़ी सफाई से उड़सने के बाद डिबिया खोली, अफीम की एक बड़ी गोली निकाली और बड़े इत्मीनान से मुँह में डालकर खाट पर लेट गई और देर तक सोती रही।

नवाब बहुत खुश थी—वह बार-बार अपनी उस उँगली को देखती थी, जिसमें हीरे की अँगूठी पड़ी थी।

तीन-चार रोज़ गुज़र गए इस दौरान में पाँच-छः पुराने गाहकों में से एक गाहक आया तो सरदार ने कहा कि पुलिस का ख़तरा है, इसलिए उसने धंधा बंद कर दिया है। यह गाहक जो ख़ासा दौलतमंद था, बेनीलो-मराम[17] वापस चला गया।

सरदार को हैबत ख़ान ने बहुत मुतास्सिर किया था; उसने अफ़ीम खाकर पींग के आलम में सोचा था कि अगर आमदनी उतनी ही रहे, जितनी कि है, और गाहक सिर्फ एक हो तो बहुत अच्छा है। उसने फैसला कर लिया था कि वह सब गाहकों को आहिस्ता-आहिस्ता यह कहकर टरखा देगी कि पुलिसवाले उसके पीछे पड़ गए हैं, और वह यह बर्दाश्त नहीं कर सकती कि गाहकों की इज़्ज़त ख़तरे में पड़ जाए।

हैबत ख़ान एक हफ़्ते के बाद नमूदार हुआ—इस दौरान में सरदार दो और गाहकों को मना कर चुकी थी कि वह इधर का रुख न किया करे।

हैबत ख़ान उसी शान से आया, जिस शान से वह पहले रोज आया था—आते ही उसने नवाब को अपनी छाती के साथ भींच लिया, सरदार से उसने कोई बात न की। नवाब उसे, बल्कि यूँ कहिए, वह नवाब को उस कोठड़ी में ले गया, जहाँ निवाड़ी पलग बिछा हुआ था। इस बार सरदार अंदर न आई; वह अपनी खाट पर अफ़ीम की गोली खाकर ऊँघती रही।

इस बार हैबत ख़ान बहुत महज़ूज़[18] हुआ; उसको नवाब का अल्हड़पन और भी ज़्यादा पसंद आया। नवाब पेशेवर रंडियों के चिलत्तरों से क़तअन नावाकिफ थी; उसमें वह घरेलूपन भी नहीं था, जो आम घरेलू औरतों में होता है; उसमें कोई ऐसी बात थी, जो ख़ुद उसकी अपनी थी, दूसरों से बिलकुल मुख़्तलिफ़; वह बिस्तर में हैबत ख़ान के साथ इस तरह

लेटती थी, जिस तरह कोई बच्चा अपनी माँ के साथ लेटता है; माँ की छातियों पर हाथ फेरता है, माँ की नाक के नथुनो मे अपनी उँगलियाँ डालता है, माँ के बाल नोचता है, और फिर आहिस्ता-आहिस्ता सो जाता है।

हैबत खान के लिए यह एक नया तजुर्बा था, उसके लिए औरत की यह किस्म बिलकुल निराली, दिलचस्प और फरहतबख़्श[19] थी—वह अब हफ्ते मे दो बार आने लगा था कि नवाब उसके लिए एक बेपनाह कशिश बन गई थी।

सरदार खुश थी कि उसे अपने नेफे मे उडसने के लिए काफ़ी नोट मिल जाते थे, लेकिन अब नवाब अपने अल्हड़पन के बावजूद सोचने लगी थी कि हैबत खान डरा-डरा-सा क्यों रहता है—जब कभी सरकंडो के उस पार, कच्ची सडक पर से कोई लारी या मोटर गुजरती है तो वह क्यों सहम जाता है, क्यों उससे अलग होकर बाहर जाता है और क्यों छुप-छुपकर देखता है कि कौन है, कौन नहीं है?

एक रात बारह बजे के करीब मडक पर से कोई लारी गुज़री—हैबत खान और नवाब, दोनों एक-दूसरे से गुथे हुए सो रहे थे कि एकदम हैबत खान बड़े ज़ोर से काँपा और उठकर बैठ गया।

नवाब की नींद बडी हल्की थी—हैबत ख़ान काँपा तो वह सिर से पाँव तक यूँ लरज गई, जैसे उसके अदर जलजला आ गया है: चीख़कर उसने कहा : "क्या हुआ?"

हैबत खान अब किसी कदर सँभल चुका था, उसने खुद को और ज्यादा सँभालकर कहा "कोई बात नही मैं मैं शायद ख्वाब में डर गया था।"

रात की खामोशी मे लारी की आवाज दूर से अभी तक आ रही थी।

नवाब ने कहा 'नही खान कोई बात है जब भी कोई मोटर या लारी सडक पर से गुजरती है, तुम्हारी यही हालत हो जाती है "

हैबत खान की शायद यह दुखती रग थी, जिस पर नवाब ने हाथ रख दिया था—उसने अपना मर्दाना वक़ार क़ायम रखने के लिए बड़े तेज लहजे में कहा "मोटरो और लारियों से डरने की क्या वजह हो सकती है?"

नवाब का दिल बडा नाजुक था—हैबत खान के तेज लहजे से उसे ठेस लगी और उसने बिलख-बिलखकर रोना शुरू कर दिया।

जब हैबत खान ने नवाब को चुप कराया तो वह अपनी ज़िंदगी के एक लतीफ़तरीन हज मे आश्ना हुआ और उसका जिस्म नवाब के जिस्म मे और ज्यादा करीब हो गया।

हैबत खान अच्छे कद-काठ का आदमी था, उसका जिस्म गठा हुआ था; वह खूबसूरत था—उसकी बाँहों मे नवाब ने ज़िंदगी में पहली बार बड़ी प्यारी हरारत महसूस की थी, उसको जिस्मानी लज़्ज़त की अलिफ बे हैबत ख़ान ही ने सिखाई थी, वह अब उससे मुहब्बत करने लगी थी, यूँ कह लीजिए कि वह शै, जो मुहब्बत होती है, उसके भेद अब नवाब पर खुल रहे थे।

हैबत ख़ान अगर एक हफ्ते ग़ायब रहता तो नवाब ग्रामोफ़ोन पर दर्दीले गीतों के रिकार्ड बजाती और खुद उनके साथ गाती और आहें भरती—वह अब तक बस एक उलझन में

गिरफ्तार थी कि हैबत खान मोटरें और लारियों की आमदो-रफ्त से क्यों घबराता है ?

महीनों गुजर गए—नवाब की सुपुर्दगी और उसके इल्तिफात[20] में इजाफा होता गया, मगर उसकी उलझन भी बढ़ती गई कि अब हैबत खान चंद घंटों के लिए आता था और अफरा-तफरी के आलम में वापस चला जाता था। वह महसूस करने लगी थी कि यह सब किसी मजबूरी की वजह से है; वह यह जान गई थी कि हैबत खान का जी ज्यादा से ज्यादा देर उसके साथ रहने को चाहता है—उसने कई मर्तबा हैबत खान से इस बारे में पूछा, मगर वह बात गोल कर गया।

एक दिन सुबह-सवेरे हैबत खान की डोज सरकंडों के पार रुकी—नवाब सो रही थी, हॉर्न बजा तो वह चौंककर उठ बैठी, फिर वह आँखें मलती-मलती बाहर निकल आई।

हैबत खान जरा फासले पर मोटर खड़ी करने के बाद मकान के पास पहुँच चुका था, नवाब दौड़ती हुई उससे लिपट गई, वह उसे गोद में उठाकर अंदर उस कोठड़ी में ले गया, जहाँ निवाड़ का पलंग बिछा हुआ था।

देर तक दोनों बातें करते रहे, प्यार-मुहब्बत की बातें—जाने नवाब के दिल में क्या आई कि उस रोज उसने अपनी जिंदगी की पहली फर्माइश की : "खान, मुझे सोने के कड़े ला दो!"

हैबत खान ने उसकी मोटी-मोटी गोश्त भरी सुर्खो-सफेद कलाइयों को कई मर्तबा चूमा और कहा : "कल ही आ जाएँगे... तुम्हारे लिए तो मेरी जान हाजिर है...!"

नवाब ने एक अदा के साथ, मगर अपने मख्सूस अल्हड़ अंदाज में कहा : "खान, जाने दो... जान तो मुझे ही देनी पड़ेगी!"

हैबत खान यह सुनकर कई बार उसके सदके हुआ और बड़ा पुरलुत्फ वक्त गुजारने के बाद चला गया, चलते-चलते वह वादा कर गया कि वह अगले दिन आएगा और सोने के कड़े उसके नर्म-नर्म हाथों में खुद पहनाएगा।

नवाब खुश थी—उस रात वह देर तक मसर्रत[21] भरे रिकार्ड बजा-बजाकर उस छोटी-सी कोठड़ी में नाचती रही, जिसमें निवाड़ी पलंग बिछा हुआ था।

सरदार भी खुश थी—उसने फिर अपनी डिबिया में से अफीम की एक बड़ी गोली निकाली और निगलकर सो गई।

दूसरे दिन नवाब और ज्यादा खुश थी कि सोने के कड़े आनेवाले हैं और हैबत खान खुद उसको कड़े पहनानेवाला है—वह सारा दिन मुंतजिर[22] रही, पर वह न आया।

उसने सोचा : 'शायद मोटर खराब हो गई हो, शायद वह रात को आ जाए।' वह सारी रात जागती रही, मगर हैबत खान न आया।

उसके दिल को, जो बहुत नाजुक था, बड़ी ठेस पहुँची—उसने अपनी माँ को, या जो कोई भी वह उसकी थी, बार-बार कहा : "देखो, खान नहीं आया है... वादा करके फिर गया है...!" फिर वह सोचती और कहती : 'ऐसा न हो, कुछ हो गया हो...' और वह सहम-सी जाती।

कई बातें उसके दिमाग में आ रही थीं : मोटर का हादसा, अचानक बीमारी, किसी डाकू

का हमला—फिर बार-बार उसको लारियो और मोटरों की आवाजों का खयाल आ जाता, जिनको सुनकर हैबत खान हमेशा बौखला जाता था, वह सोचती रही, मगर उसकी समझ में कुछ न आया।

एक हफ्ता गुज़र गया, मगर हैबत खान न आया—इसी दौरान में तीन-चार लारियाँ और दो मोटरें उस कच्ची सडक पर से धूल उड़ाती गुजर गईं—नवाब का हर बार यही जी चाहा कि दौड़ती हुई उनके पीछे जाए और उन सबको आग लगा दे, वह महसूस कर रही थी कि यही वह चीज़ें हैं, जो हैबत खान के आने में रुकावट का बायस हैं; फिर वह सोचती कि मोटरें और लारियाँ रुकावट का क्या बायस हो सकती है; फिर वह अपनी कमअक्ली पर हँसने लगती—यह बात उसकी समझ से बालातर थी कि हैबत खान जैसा तनोमंद मर्द मोटरों और लारियों की आवाज़ सुनकर सहम क्यो जाता है, और इस हकीकत को उसके दिमाग़ की पैदा की हुई कोई दलील झुठला न पाती; और जब ऐसा होता तो वह बेहद रंजीदा और मगमूम[23] हो जाती और वह ग्रामोफोन पर दर्दीले रिकार्ड सुनना शुरू कर देती और उसकी आँखे नमनाक हो जाती।

एक हफ्ता और गुजर गया।

एक रोज दोपहर को जब नवाब और सरदार खाना खाकर फारिग हो चुकी थी और कुछ देर आराम करने के बारे मे सोच रही थी कि अचानक उन्हे बाहर कच्ची सडक पर से मोटर के हॉर्न की आवाज सुनाई दी—दोनो आवाज सुनकर चौंकी कि यह आवाज हैबत खान की डोज की हॉर्न की आवाज नहीं थी।

सरदार बाहर बाड की तरफ लपकी कि देखे, कौन है; पुराना गाहक है तो उसे टरखा दे। जब वह सरकडो के पास पहुँची तो उसने देखा कि एक नई मोटर मे हैबत खान बैठा हुआ है और पिछली निशस्त पर एक खुशपोश और खूबसूरत औरत मौजूद है।

हैबत खान ने मोटर कुछ दूर खडी की और बाहर निकला, उसके साथ ही पिछली निशस्त मे वह औरत भी बाहर निकली, दोनो उनके मकान की तरफ बढने लगे।

सरदार ने सोचा कि यह क्या सिलसिला है? औरत के लिए तो हैबत खान इतनी दूर से चलकर यहाँ आता है, यह औरत, जो इतनी खूबसूरत है, जवान है, कीमती कपडो मे मलबूस है, हैबत खान के साथ यहाँ क्या करने आई है—वह अभी यह सोच ही रही थी कि हैबत खान उस खूबसूरत औरत के साथ मकान मे दाखिल हो गया, वह उनके पीछे-पीछे चली, उसकी तरफ दोनो मे से किसी ने ध्यान ही नहीं दिया था।

जब वह अंदर पहुँची तो उसने देखा कि नवाब, हैबत खान और वह औरत, तीनो निवाडी पलग पर बैठे हुए हैं और एक खामोशी तारी है, अजीब किस्म की खामोशी—जेवरो मे लदी-फँदी औरत किसी कदर मज्तरिब[24] नजर आ रही थी उसकी एक टाँग बडे ज़ोर से हिल रही थी।

सरदार दहलीज के पास ही खडी हो गई—उसके कदमो की आहट सुनकर जब हैबत खान ने उसकी तरफ देखा तो उसने सलाम किया।

हैबत खान ने कोई जवाब न दिया—वह सख्त बौखलाया हुआ था।

जेवरों से लदी-फँदी औरत की टाँग हिलना बंद हुई और वह सरदार से मुखातिब हुई "हम आए हैं खाने-पीने का तो कुछ बंदोबस्त करो !"

सरदार ने सर-ता-पा मेहमाननवाज बनकर कहा "जो कहिए, अभी तैयार हो जाता है।"

उस औरत ने, जिसके खद्दोखाल से साफ मुतरशह[25] था, कि बड़े धड़ल्ले की औरत है, सरदार से कहा : "तुम चलो बावर्चीख़ाने में चूल्हा सुलगाओ बड़ी देगची है घर में ?"

"है।" सरदार ने अपना वजनी सिर हिलाया।

"तो जाओ उसको धोकर साफ़ करो मैं अभी आती हूँ।" वह औरत पलंग पर से उठी और ग्रामोफोन देखने लगी।

सरदार ने माजरत भरे लहजे में कहा : "गोश्त तो यहाँ नहीं मिलेगा।"

उस औरत ने एक रिकार्ड पर सुई रखी . "मिल जाएगा तुमसे जो कहा है, वह करो और देखो, आग काफी हो "

सरदार यह एहकाम[26] लेकर चली गई—अब वह ख़ुशपोश औरत मुसकराकर नवाब से मुखातिब हुई : "नवाब, हम तुम्हारे लिए सोने के कड़े ले आए हैं।" यह कहकर उसने अपना वैनिटी बैग खोला और उसमें से बारीक सुर्ख़ कागज में लिपटे हुए कड़े निकाले, जो काफी वजनी और ख़ूबसूरत थे।

नवाब करीब बैठे हुए खामोश हैबत खान को देख रही थी—उसने कड़ों को एक नज़र देखा और हैबत खान से बड़ी नर्मो-नाज़ुक मगर सहमी हुई आवाज में पूछा : "खान, यह कौन है ?" उसका इशारा उस औरत की तरफ था।

वह औरत कड़ों से खेलती हुई बोली "मैं कौन हूँ ? मैं हैबत खान की बहन हूँ " यह कहकर उसने हैबत खान की तरफ देखा, जो उसके जवाब पर सिकुड़-सा गया था; फिर वह नवाब से मुखातिब हुई . "मेरा नाम हलाकत है "

नवाब कुछ न समझ सकी—वह उस औरत की आँखों से खौफ खा रही थी, जो यकीनन खूबसूरत थीं, मगर बड़े खौफनाक तौर पर खुली हुई थी, उनमें जैसे आग बरस रही थी—फिर वह जरा आगे बढ़ी; उसने सिमटी हुई, सहमी हुई नवाब की कलाइयाँ पकड़ीं और उनमें कड़े डालने लगी, यकायक उसने नवाब की कलाइयाँ छोड़ दी और हैबत खान से मुखातिब हुई, "तुम जाओ हैबत खान मैं नवाब को अच्छी तरह सजा-बनाकर तुम्हारी खिदमत में पेश करना चाहती हूँ "

हैबत खान मबहूत[27] था; जब वह न उठा तो वह औरत, जिसने अपना नाम हलाकत बताया था, जरा तेजी से बोली "जाओ सुना नहीं तुमने ?"

हैबत खान काँपा और नवाब की तरफ़ देखता हुआ बाहर निकल गया। वह बहुत मुज़तरिब था; उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह कहाँ जाए और क्या करे ?

कोठड़ियों के बाहर एक बरामदा-सा था, जिसके एक कोने में टाट लगा बावर्चीख़ाना था—हैबत खान ने देखा कि सरदार आग सुलगा चुकी है।

उसने कोई बात न की और सरकंडों के उस पार कच्ची सड़क पर चला गया—उसकी

हालत नीम दीवानो की-सी थी; जरा-सी आहट पर वह चौंक उठता था—थोडी देर के बाद उसको दूर से एक लारी आती दिखाई दी; उसने सोचा कि वह लारी रुकवा ले और फिर उसमे बैठकर वहाँ से गायब हो जाए, जब लारी उसके करीब पहुँची तो ऐसी धूल उडी कि वह धूल मे गुम हो गया; उसने आवाजे दी, मगर धूल के बायस उसका हलक इस काबिल ही न रहा था कि वह बुलद आवाज निकाल सकता।

गर्दो-गुबार कम हुआ तो हैबत खान तकरीबन नीम मुर्दा था—उसने चाहा कि सरकडो के पीछे उस मकान मे जाए, जहाँ उसने कई दिन और कई रातें नवाब के अल्हड पहलू मे गुजारी थी, मगर वह जा न सका, उसके कदम ही नही उठते थे।

वह बहुत देर तक कच्ची सडक पर धूल मे लथपथ खडा सोचता रहा—वह औरत जो उस वक्त नवाब के पास थी, उसके साथ उसके ताल्लुकात काफी पुराने थे, बहुत पुरानी बात है कि वह उस औरत के खाविद की मौत पर अफसोस करने गया था, जो उसका लँगोटिया था; वह मातमपुर्सी दोनो के बाहमी ताल्लुकात मे तब्दील हो गई, दूसरे दिन वह फिर उस औरत के घर मे था, उस औरत ने उसे ऐसे तहक्कुम* से अदर बुलाया था और फिर ऐसे तहक्कुम से अपना आप उसके सुपुर्द किया था, जैसे वह उसका गुलाम हो।

तब हैबत खान औरत के मामले मे बिलकुल कोरा था—शाहीना का अजीबो-गरीब तहक्कुम भरा इल्तिफात उसके लिए बहुत बडी बात थी।

शाहीना के पास बेअंदाजा दौलत थी, कुछ उसकी अपनी और कुछ उसके मरहूम खाविद की—हैबत खान को इस दौलत से कोई सरोकार नही था; शाहीना उसकी जिंदगी की सबसे पहली औरत थी और वह उसके तहक्कुम के नीचे दबकर रह गया था।

बहुत देर तक वह कच्ची सडक पर खडा सोचता रहा और काँपता रहा, आखिर उससे न रहा गया—वह सरकडो की ओट मे छुपे मकान की तरफ बढा; बरामदे मे टाट लगे बावर्चीखाने में उसने सरदार को कुछ भूनते हुए देखा।

जब वह अदर उस कोठडी की तरफ बढा, जहाँ निवाड़ का पलग बिछा हुआ था तो उसने दरवाजा बंद पाया; उसने हौले-से दस्तक दी।

चंद लम्हात के बाद अदर से दरवाजा खुला।

उसने देखा कि कच्चे फर्श पर खून ही खून फैला हुआ है; वह काँप उठा; फिर उसने शाहीना की तरफ़ देखा, जो दरवाजे के पट के साथ लगी खडी थी।

शाहीना ने कहा "मैंने तुम्हारी नवाब को सजा-बना दिया है "

हैबत खान ने अपने खुश्क गले को लुआब से किसी कदर तर करते हुए पूछा "नवाब कहाँ है ?"

शाहीना ने जवाब दिया "कुछ तो पलंग पर है और कुछ उसका बेहतरीन हिस्सा बावर्चीखाने में है "

हैबत खान पर हैबत तारी हो गई—वह कुछ न कह सका; वहीं खड़ा रहा; उसने आँखें फाड़कर देखा कि फर्श पर खून के साथ-साथ खून भरे गोश्त के छोटे-छोटे टुकडे भी पड़े हुए हैं और खून में लथपथ एक तेज़ छुरी भी पडी हुई है, और निवाडी पलंग पर कोई खून

आलूदा चादर ओढे लेटा हुआ है ।

शाहीना ने मुसकराकर कहा "चादर उठाकर दिखाऊँ ? तुम्हारी सजी-बनी नवाब है मैंने अपने हाथो मे उसका सिगार किया है तुम पहले खाना खा लो, बहुत भूख लगी होगी तुम्हे मरदार बडा लजीज गोश्त भून रही है बोटियाँ मैंने खुद अपने हाथो मे काटी हैं "

हैबत खान के पॉव लडखडा गए--वह बमुश्किल चिल्लाया . "शाहीना, यह तुमने क्या किया ?"

शाहीना मुसकराई "जानेमन, पहली मर्तबा नही यह दूसरी मर्तबा है मेरा खाविंद, अल्लाह उसे जन्नत नसीब करे, तुम्हारी तरह ही बेवफा था मैंने उसको खुद अपने इन्ही हाथो मे मारा था और उसका गोश्त पकाकर चीलो और कव्वों को खिलाया था तुमसे मुझे प्यार है, इसलिए मैंने तुम्हारे बजाय " उसने जुमला मुकम्मल न किया, तेजी से वह पीछे हटी और उसने हाथ बढ़ाकर खून आलूदा चादर खीच ली ।

हैबत खान की चीख उसके हलक के अदर ही फँसी रह गई और वह बेहोश होकर गिर पडा ।

जब उसे होश आया तो उसने देखा कि शाहीना कार चला रही है, और वह गैर इलाके मे है ।

1 आसपास, 2 मोटा; 3 विश्वास, 4 निकालना, 5 चरित्रहीन, 6 परिचित, 7 परिचित, 8 उद्देश्य; 9 विषय, 10. दूरी, 11 सतर्क, 12 आधारित, 13 आपस मे झगडा; 14 स्वागत, 15 कारण, 16 अनुमान, 17 असफल, 18 आनद विभोर; 19 ताजगी देनेवाला, 20. कृपा; 21 प्रसन्नता, 22 प्रतीक्षा मे, 23 दुखी; 24 व्याकुल, आतुर; 25 प्रकट, 26 आदेश; 27. वशीभूत, 28 आदेशात्मक अदाज ।

ख़ुशिया

ख़ुशिया सोच रहा था।

बनवारी से काले तबाकूवाला पान लेकर वह बनवारी की दूकान के साथ लगे उस सगीन चबूतरे पर बैठा हुआ था, जो दिन के बक्त टायरों और मोटरों के मुख्तलिफ पुर्जों से भरा होता था, रात के साढ़े आठ बजे के करीब मोटर के पुर्जे और टायर बेचनेवालो की वह दूकान बद हो जाती थी और दूकान का सगीन चबूतरा ख़ुशिया के लिए खाली हो जाता था।

वह काले तबाकूवाला पान आहिस्ता-आहिस्ता चबा रहा था और सोच रहा था।

पान की गाढ़ी तबाकू मिली पीक उसके मुँह मे इधर-उधर फिसल रही थी उसे ऐसा लग रहा था कि उसके खयालात दाँतो तले पिसकर उस पीक में घुल रहे हैं शायद यही वजह थी कि वह पीक फेंकना नही चाहता था।

वह पान की पीक मुँह मे पिलपिला रहा था और उस वाके पर गौर कर रहा था, जो उसके साथ पेश आया था, बस कोई आध घटा पहले।

मामूल के मुताबिक उस चबूतरे पर बैठने से पहले उसे खेतवाडी की पाँचवी गली मे जाना पडा था उसी गली के नुक्कड पर मगलूर से आई नई छोकरी काता रहती थी, ख़ुशिया से किसी ने कहा था कि वह अपना मकान तब्दील कर रही है और वह इसी बात का पता लगाने के लिए वहाँ गया था।

उसने काता की खोली का दरवाजा खटखटाया था और अदर से आवाज आई थी ' कौन है ?''

ख़ुशिया ने कहा था 'मैं ख़ुशिया ''

आवाज शायद पिछले कमरे से आई थी थोडी देर के बाद दरवाजा खुला था और वह अदर दाखिल हुआ था।

जब काता ने दरवाजा अदर से बद किया था तो ख़ुशिया ने मुडकर देखा था और उसकी हैरत की कोई इंतिहा न रही थी काता नगी खडी थी, बिलकुल नगी वह अपने जिस्म को सिर्फ एक तौलिए से छिपाए हुए थी, छुपाए हुए भी क्या कि छुपाने की जितनी चीजे होती हैं, वह तो सबकी-सब ख़ुशिया की हैरतजदा आँखों के सामने थी।

''कहो ख़ुशिया, कैसे आए ? मैं नहाने ही वाली थी बैठो-बैठो बाहरवाले से अपने लिए चाय तो कह आए होते तुम तो जानते ही हो, वह मुआ रामा यहाँ से भाग गया है ''

खुशिया, जिसकी आँखो ने कभी किसी औरत को यूँ अचानक तौर पर नगा नही देखा था, बहुत घबरा गया था—उसकी समझ मे नही आया था कि वह क्या करे, उसकी आँखे जो यकायक उरयानी मे दो-चार हो गई थी, अपने-आपको कही छुपाना चाहती थी।

उसने जल्दी-जल्दी सिर्फ इतना कहा था ''जाओ जाओ तुम नहा लो '' फिर एकदम उसकी जबान खुल गई थी ''पर जब तुम नगी थी तो दरवाजा खोलने की क्या जरूरत थी अदर ही से कह दिया होता, मैं फिर आ जाता जाओ तुम नहा लो ''

उसकी बात सुनकर काता मुसकराई थी ''जब तुमने कहा, खुशिया, तो मैने सोचा, हरज क्या है, अपना खुशिया ही तो है और मैंने दरवाजा खोल दिया।''

काता की वह मुसकराहट अभी तक उसके दिलो-दिमाग मे तैर रही थी, काता का नगा जिस्म अब भी मोम के पुतले की मानिंद उसकी आँखो के सामने खडा था और पिघल-पिघलकर उसके अदर दाखिल हो रहा था।

काता का जिस्म खूबसूरत था पहली मर्तबा खुशिया को मालूम हुआ था कि जिस्म बेचनेवाली औरते भी ऐसा सुडौल बदन रखती हैं और उसे इस बात पर हैरत हुई थी; लेकिन उसे इस बात पर ज्यादा ताज्जुब हुआ था कि काता नग-धडग उसके सामने खडी हो गई थी और उसको लाज तक न आई थी काता ने कहा था 'जब तुमने कहा, खुशिया, तो मैंने सोचा, हरज क्या है, अपना खुशिया ही तो है और मैंने दरवाजा खोल दिया।'

काता और खुशिया एक ही पेशे मे शरीक थे वह काता का दलाल था, यूँ वे एक-दूसरे के बहुत करीब थे, लेकिन यह कोई ऐसी वजह नही थी कि काता उसके सामने नगी खडी हो जाती।

वह काता के अल्फाज मे कोई और ही मतलब कुरेद रहा था, वह मतलब बयक वक्त इस कदर साफ और इस क़दर मुबहम[1] था कि वह किसी खास नतीजे पर पहुँच नही पा रहा था।

उसने काता का नगा जिस्म देखा था, जो ढोलकी पर मढे हुए चमडे की तरह तना हुआ था, उसकी लुढकती हुई निगाहो मे बिलकुल बेपरवा; कई बार हैरत के आलम मे उसने काता के साँवले-सलोने जिस्म पर टोह लेनेवाली निगाहे गाडी थी, मगर काता का एक रूआँ तक भी न काँपा था; वह साँवले पत्थर की मूर्ति के मानिंद उसके सामने खडी रही थी, हर एहसास से आरी[2]।

एक मर्द के सामने एक नगी औरत खडी थी, मर्द, जिसकी निगाहे तो कपडो मे ढकी-छपी औरत के जिस्म तक पहुँच जाती हैं और जो खयाल ही खयाल मे, परमात्मा जाने, कहाँ-कहाँ पहुँच जाता है लेकिन काता जरा भी न घबराई थी, उसकी आँखे जैसे उसी वक्त लाड्री मे धुलकर आई थी कांता को थोडी-सी लाज तो आनी चाहिए थी, जरा-सी सुर्खी तो उसके दीदो मे पैदा होनी चाहिए थी, वह कसबी है तो क्या हुआ, पर कसबियाँ यूँ नगी तो नही खडी हो जाती

खुशिया को दलाली करते हुए दस बरस हो गए थे। इन दस बरसो मे वह पेशा करनेवाली लडकियो के तमाम राजो से वाकिफ़ हो चुका था उसे मालूम था कि पाए धोनी

के आखिरी सिरे पर जो छोकरी एक नौजवान को भाई बनाकर रहती है, इसलिए 'अछूत कन्या' का रेकार्ड ''काहे करता मूरख प्यार' अपने टूटे हुए बाजे पर बजाया करती है कि उसे अशोक कुमार से बहुत बुरी तरह इश्क है और कई मनचले अशोक कुमार से उसकी मुलाकात कराने का झाँसा देकर अपना उल्लू सीधा कर चुके हैं उसे मालूम था कि दादर मे जो पजाबन रहती है, सिर्फ इसलिए कोट-पतलून पहनती है कि उसके एक यार ने कहा था 'तेरी टाँगें तो बिलकुल उस अग्रेज ऐक्ट्रेस की तरह हैं, जिसने 'मराको उर्फ खूने-तमन्ना' मे काम किया है ' उसने कई बार यह फिल्म देखा था और जब उसके यार ने कहा था 'मार्लेन डेट्रेच इसलिए पतलून पहनती है कि उसकी टाँगें बहुत खूबसूरत हैं और उसने अपनी टाँगों का दो लाख का बीमा करा रखा है ' तो उसने पतलून पहननी शुरू कर दी थी, जो उसके चूतडों में बहुत फँसकर आती थी उसे यह भी मालूम था कि मजगाँववाली दक्षिणी छोकरी सिर्फ इसलिए कॉलिज के खूबसूरत लौंडो को फाँसती है कि उसे एक खूबसूरत बच्चे की माँ बनने का शौक है; उसको यह भी पता था कि वह कभी अपनी ख्वाहिश पूरी न कर सकेगी, इसलिए कि वह बाँझ है उसे यह भी मालूम था कि उस काली मद्रासन का, जो हर वक्त कानों में हीरे की बूटियाँ पहने रहती है, रग कभी सफेद नहीं होगा वह उन दवाओं पर बेकार रुपया बर्बाद कर रही है, जो वह अपना रग सफेद करने के लिए आए दिन खरीदती रहती है उसको उन तमाम छोकरियो का अदर-बाहर का हाल मालम था, जो उसके हलके मे शामिल थी; मगर यह बात उसके ध्यान मे कभी आ ही नही सकती थी कि एक दिन कांता कुमारी, जिसका असली नाम इतना मुश्किल था कि वह उम्र भर याद नहीं कर सकता था, यूँ उसके सामने नगी खडी हो जाएगी और उसको जिंदगी के सबस बडे ताज्जुब में डाल देगी।

खुशिया सोच रहा था; सोचते-सोचते उसके मुँह मे पान की पीक इस कदर जमा हो गई थी कि अब वह मुश्किल से छालिया के नन्हे-नन्हे रेजो को चबा सकता था जो उसके दाँतो की रेखो मे से इधर-उधर फिसल जाते थे।

उसके तग माथे पर पसीने की नन्ही-नन्ही बूँदे नमूदार हो गई थी, जैसे मलमल में पनीर को आहिस्ता से दबा दिया गया हो जब वह काता के नगे जिस्म को अपने तसव्वर मे लाता था तो उसके मर्दाना वकार[3] को धक्का-सा लगता था और उसे महसूस होता था जैसे उसका अपमान हुआ है।

एकदम उसने अपने-आपसे कहा 'यह अपमान नही तो क्या ह एक छोकरी नग-धडग तुम्हारे सामने खडी हो जाती है और कहती है—हरज ही क्या है, तम खुशिया ही तो हो खुशिया न हुआ, साला वह बिल्ला हो गया, जो हर वक्त तुम्हारे बिस्तर पर ऊँघता रहता है तो और क्या ?'

अब उसे यकीन हो गया कि सचमुच उसकी हतक हुई है वह मर्द था और उसको इस बात की गैर महसूस तरीक पर तवक्को[4] थी कि औरते, ख्वाह वह शरीफ हो या बाजारी, उसे मर्द ही समझेंगी, और उसके और अपने दरमियान वह परदा कायम रखेगी, जो एक मुद्दत से चला आ रहा है वह तो सिर्फ यह पता लगाने काता के यहाँ गया था कि वह कब

मकान तब्दील कर रही है और कहाँ जा रही है ?

काता के पास उसका जाना अक्सर बिजनेस से मुताल्लिक था अगर वह काता की बाबत सोचता कि जब वह उसका दरवाजा खटखटाएगा, उस वक्त वह अदर क्या कर रही होगी तो उसके तसव्वुर मे ज्यादा से ज्यादा इतनी बाते आती सिर पर पट्टी बाँधे लेटी हुई होगी; बिल्ले के बालो मे से पिस्सू निकाल रही होगी, उस बाल सफा पाउडर से अपनी बगलो के बाल उडा रही होगी, जो इतनी बास मारता है कि उसकी नाक बर्दाश्त नही कर सकती, ताश फैलाए पलग पर अकेली बैठी पेशेस खेलने मे मशगूल होगी बस इतनी बाते थी, जो उसके जेहन मे आ सकती थी अपने घर मे किसी को वह रखती नही थी, इसलिए उस बात का खयाल तो आ ही नही सकता था लेकिन काता का दरवाजा खटखटाते हुए उसने कुछ भी न सोचा था, वह तो वहाँ काम से गया था, और काता, वह काता, जिसको वह हमेशा कपडो मे देखा करता था, अचानक उसके सामने बिलकुल नगी खडी थी, बिलकुल नगी कि एक छोटा-सा तौलिया तो कुछ भी नही छुपा सकता, उसने महसूस किया था जैसे वह खुद नगा हो गया है अगर बात सिर्फ इतनी होती तो वह अपनी हैरत किसी न किसी हीले से दूर कर लेता, लेकिन उसने तो कहा था 'जब तुमने कहा, खुशिया, तो मैंने सोचा, हरज क्या है, अपना खुशिया ही तो है और मैंने दरवाजा खोल दिया ।' और यही बात उसे खाए जा रही थी ।

'साली मुसकरा रही थी ' वह बार-बार बडबडा रहा था वह महसूस कर रहा था कि काता का जिस्म ही नही, उसकी मुसकराहट भी नगी थी ।

उसे बार-बार बचपन के वह दिन याद आ रहे थे, जब पडोस की एक औरत उससे कहा करती थी 'खुशिया बेटा जा दौड के जा, यह बाल्टी पानी से भर ला ; जब वह बाल्टी भर के लाया करता था तो वह औरत धोती के परदे के पीछे से कहा करती थी 'इधर आ के मेरे पास रख दे मैने मुँह पर साबुन मला हुआ है, मुझे कुछ सुझाई नही देता ' वह धोती का परदा हटाकर बाल्टी उस औरत के पास रख दिया करता था और उसे साबुन की झाग मे लिपटी एक नगी औरत नजर आया करती थी, मगर उसके दिल मे किसी किस्म का हीजान पैदा नही होता था तब मै बच्चा था, बिलकुल भोला-भाला । बच्चे और मर्द मे बहुत फर्क होता है बच्चों से कौन पर्दा करता है मगर अब तो मैं पूरा मर्द हूँ मेरी उम्र इस वक्त अट्ठाइस बरस के करीब है और अट्ठाइस बरस के जवान आदमी के सामने तो कोई बूढी औरत भी नगी खडी नही होती ।

खुशिया की सोच उसकी उलझन बन गई थी काता ने उसे समझा क्या है, क्या उसमे वह तमाम बाते नही हैं, जो एक जवान मर्द मे होती हैं । इसमे कोई शक नही कि वह काता को यकबयक नग-धडग देखकर बहुत घबरा गया था, लेकिन चोर निगाहों से क्या उसने काता की उन चीजो का जाइजा नही लिया था, जो हर रोज के इस्तेमाल के बावजूद अभी अपनी असली हालत पर कायम थी, क्या परेशान होने के बावजूद उसके दिमाग मे यह खयाल नही आया था कि दस रुपए मे काता बिलकुल महँगी नही, क्या उसने नहीं सोचा था कि दशहरे के दिन बैंक का वह मुशी, जो दो रुपए की रिआयत न मिलने पर वापस चला

गया था, गधा था; क्या एक लम्हे के लिए उसके तमाम पट्ठों में एक अजीब किस्म का खिचाव पैदा नहीं हो गया था; क्या उसने ऐसी अँगडाई नही लेनी चाही थी कि उसकी हड्डियाँ तक चटखनें लगें; फिर क्यों मंगलौर की उस साँवली छोकरी ने उसको मर्द न समझा और खुशिया समझकर अपना सबकुछ देखने दिया ?

उसने गुस्से में आकर पान की गाढ़ी पीक थूक दी और फुटपाथ पर कई बेल-बूटे बना दिए पीक थूककर वह उठा और ट्राम मे बैठकर अपने घर चला गया।

घर पहुँचते ही उसने नहा-धोकर नई धोती पहनी, नया कुर्ता पहना उसी बिल्डिंग मे जहाँ वह रहता था, एक सैलून था; उसने अंदर जाकर आईने के सामने अपने बालो मे कंघी की, फिर फौरन ही उसे कुछ खयाल आया तो वह कुर्सी पर बैठ गया, उस रोज वह दूसरी मर्तबा दाढ़ी मुँडवाने बैठा था।

हज्जाम ने कहा "अरे भई खुशिया, भूल गए क्या ? सुबह ही तो मैंने तुम्हारी दाढी मूँडी थी।"

उसने बडी मतानत से अपनी दाढी पर उलटे रुख हाथ फेरते हुए कहा "यार, खूँटी कुछ अच्छी तरह नहीं निकली थी।"

अच्छी तरह खूँटी निकलवाकर और चेहरे पर पाउडर मलवाकर वह सैलून से बाहर निकला।

सामने ही टैक्सियो का अड्डा था उसने बम्बई के मख्सूस अंदाज मे 'छी छी' करके एक टैक्सी ड्राइवर को अपनी तरफ मुतवज्जेह किया और हाथ के इशारे से टैक्सी लाने के लिए कहा।

जब वह टैक्सी मे बैठ गया तो ड्राइवर ने मुडकर उससे पूछा "कहाँ जाना है सेठ ?"

टैक्सी ड्राइवर ने उन चार लफ्जों ने, खास तौर पर 'सेठ' ने उसको बहुत मसरूर किया मुसकराकर उसने बडे दोस्ताना लहजे मे जवाब दिया "वह भी बताएँगे पहले तुम ओपेरा हाऊस की तरफ चलो, लैमिंगटन से होते हुए।

ड्राइवर ने मीटर की लाल झडी का सिर नीचे दबा दिया टन-टन हुई और फिर टैक्सी ने लेमिंगटन रोड का रुख अख्तियार कर लिया।"

जब लेमिंगटन रोड का सिरा आ गया तो उसने ड्राइवर को हिदायत दी "बाएँ हाथ को मोड लो।"

टैक्सी बाएँ हाथ को मुड गई अभी ड्राइवर ने गियर भी न बदला था कि उसने कहा "यह सामनेवाले खंबे के पास रोक लेना जरा।"

ड्राइवर ने उस खंबे के पास टैक्सी रोक ली।

खुशिया ने दरवाजा खोला और सामने की पान की दूकान पर चला गया उसने एक पान लिया और फिर एक आदमी से, जो पान की दूकान के पास ही खडा था, चंद बातो की; फिर उस आदमी को उसने टैक्सी में अपने साथ बिठा लिया और ड्राइवर से कहा "सीधा चलो "

टैक्सी देर तक चलती रही खुशिया ने जिधर इशारा किया, ड्राइवर ने टैक्सी उधर

आखिर मुख्तलिफ पर रौनक बाजारो मे से गुजरने के बाद टैक्सी एक नीम रोशन गली में दाखिल हुई गली मे आमदो-रफ्त बहुत कम थी, कुछ लोग सडक के किनारे बिस्तर जमाए लेटे हुए थे, कुछ लोग बडे इत्मीनान से चपी करा रहे थे टैक्सी जब उन चपी करानेवालों मे आगे निकल गई और गली के नुक्कड पर काठ के एक बँगलेनुमा मकान के पास पहुँच गई तो खुशिया ने ड्राइवर को ठहरने के लिए कहा "बस अब यहाँ रुक जाओ।"

जब टैक्सी रुक गई तो खुशिया ने उस आदमी को, जिसे वह पान की दुकान मे अपने साथ बिठा लाया था, आहिस्ता से कहा "जाओ मैं यही इतजार करता हूँ।"

वह आदमी बेवकूफो की तरह खुशिया की तरफ देखता हुआ टैक्सी से बाहर निकला और सामनेवाले चोबी मकान मे दाखिल हो गया।

खुशिया जमकर बैठ गया उसने अपनी एक टाँग दूसरी टाँग पर रखकर जेब से बीडी निकाली और सुलगाई, फिर एक-दो कश लेने के बाद ही सडक पर फेक दी।

वह बहुत मुज्तरिब[6] था, उसके सीने मे फडफडाहट-सी हो रही थी, उसे ऐसा लगा कि ड्राइवर ने बेकार ही टैक्सी का इजन चला रखा है उसने तेजी से कहा "क्यो बेकार को इजन चालू कर रखा है तुमने ?"

ड्राइवर ने मुडकर खुशिया की तरफ देखा और कहा "सेठ, इजन तो बद है!"

जब खुशिया को अपनी गलती का एहसास हुआ तो उसका इज्तिराब[7] और भी बढ़ गया और उसने कुछ कहने की बजाय अपने होठ चबाने शुरू कर दिए, फिर एकाएकी उसने अपने सिर पर वह किश्तीनुमा टोपी पहन ली, जो अब तक उसने अपन बगल में दबा रखी थी। उसने ड्राइवर का शाना हिलाया और कहा "देखो, अभी एक छोकरी आएगी ज्यो ही वह अदर दाखिल हो, तुम टैक्सी चला देना घबराने की कोई बात नही मामला ऐसा-वैसा नही है।"

इतने में सामने के चोबी मकान से दो लोग बाहर निकले, आगे-आगे वह आदमी था, जो खुशिया के साथ आया था और पीछे-पीछे काता थी काता ने शोख रग की साडी पहन रखी थी।

खुशिया झट से दाएँ कोने की तरफ सरक गया।

उस आदमी ने टैक्सी का पिछला बायाँ दरवाजा खोला और काता को अदर दाखिल करके एक धक्के से दरवाजा बद कर दिया।

कांता अभी ठीक तरह से बैठ भी न पाई थी कि उसकी हैरत भरी आवाज, जो चीख से मिलती-जुलती थी, टैक्सी के अँधेरे मे उभरी "खुशिया तुम ?"

"हाँ मैं तुम्हें रुपए मिल गए हैं ना?" फिर खुशिया ने अपनी मोटी आवाज में कहा : "देखो ड्राइवर, टैक्सी जुहू ले चलो ।"

ड्राइवर ने सेल्फ दबाया तो इंजन फडफड़ाया काता ने क्या कहा, खुशिया ने क्या

सुना, कुछ पता नहीं टैक्सी एक धचके के साथ आगे बढ़ी और उस आदमी को सड़क के बीच हैरतज़दा छोड़कर नीम रोशन गली में ग़ायब हो गई।

इसके बाद कभी किसी ने ख़ुशिया को मोटर के पुर्ज़ों की दुकान के संगीन चबूतरे पर नहीं देखा।

---

1 अस्पष्ट, 2 रिक्त, ख़ाली, 3 प्रतिष्ठा, 4 आशा, 5 ख़ुश, प्रसन्नचित्त, 6 व्याकुल, 7 व्याकुलता।

दूदा पहलवान

सलाहू स्कूल में पढ़ता था तो शहर का हसीन-तरीन लडका मुतसव्विर[1] होता था—उस पर बड़े-बड़े अमर्दपरस्तों[2] के दरमियान बडी खूँख्वार लडाइयाँ हुई, एक-दो इसी सिलसिले मे मारे भी गए।

सलाहू वाकई हसीन था—वह बडे मालदार घराने का चश्मो-चिराग[3] था, इसलिए उसको किसी चीज की कमी नही थी, मगर जिस मैदान मे वह कूद पडा था, वहाँ उसको एक मुहाफिज[4] की जरूरत थी, जो वक्त पर उसके काम आ सकता।

शहर में यूँ तो सैकडों बदमाश और गुडे मौजूद थे, जो हसीनो-जमील[5] सलाहू के एक इशारे पर कट मरने को तैयार थे, मगर दूदे पहलवान मे एक निराली बात थी -वह बहुत मुफ़लिस[6] था; बहुत बदमिजाज और अक्खड तबीयत का था, मगर इसके बावजूद उसमें ऐसा बाँकपन था कि सलाहू ने उसको देखते ही पसद कर लिया और उनकी दोस्ती हो गई।

सलाहू को दूदे पहलवान की रफाकत[7] से बहुत फायदे हुए, शहर के दूसरे गुडे, जो सलाहू के रास्ते में रुकावटें पैदा करने का मूजिब[8] हो सकते थे, दूदे की वजह से खामोश रहे।

स्कूल से निकलकर सलाहू कॉलेज मे दाखिल हुआ तो उसने और पर-पुरजे[9] निकाले और थोडे ही अर्से मे उसकी सरगर्मियाँ नया रुख इख्तियार कर गई—इसके बाद खुदा का करना ऐसा हुआ कि सलाहू का बाप मर गया, अब वह तमाम जायदाद, इम्लाक[10] का वाहिद[11] मालिक था।

पहले तो उसने नकदी पर हाथ साफ किया, फिर मकान गिरवी रखने शुरू किए—जब दो मकान बिक गए तो हीरामडी की तमाम तवाइफे सलाहू के नाम से वाकिफ हो गई।

मालूम नही, इसमे कहाँ तक सदाकत[12] है, लेकिन लोग कहते हैं कि हीरामडी मे बूढ़ी नायिकाएँ अपनी जवान बेटियो को सलाहू की नजरो से छुपा-छुपाकर रखती थी कि मुबादा[13] वह सलाहू के हुस्न के चक्कर मे न फँस जाएँ—इन एहतियाती तदाबीर[14] के बावजूद, जैसा कि सुनने मे आया है, कई कुँवारी तवाइफजादियाँ सलाहू के इश्क मे गिरफ्तार हुई और उलटे रास्ते चलकर अपनी जिदगी के सुनहरे अय्याम[15] उसके तलव्वुन[16] की नजर कर बैठी।

सलाहू खुल खेल रहा था।

ददे को मालूम था कि यह खेल देर तक जारी नही रहेगा। यह उम्र मे सलाहू से दुगना बडा था, उसने हीरामडी मे बडे-बडे सेठो की खाक उडते देखी थी, वह जानता था कि हीरामडी एक ऐसा अधा कुआँ है, जिसको दुनिया भर के सेठ मिलकर भी अपनी दौलत से नही भर सकते, मगर वह सलाह को कोई नसीहत नही देता था शायद इसलिए कि वह जहाँदीदा[17] होने के बायस अच्छी तरह समझता था कि जो भूत उसके हसीनो-जमील बाबू के सिर पर सवार है, उसे कोई टोना-टोटका उतार नही सकता।

दूदा हर वक्त सलाहू के साथ होता था—शुरू-शुरू मे जब सलाहू ने हीरामडी का रुख किया तो उसका खयाल था कि दूदा भी ऐश मे शरीक होगा, मगर आहिस्ता-आहिस्ता उसे मालूम हुआ कि ददे को इस किस्म की ऐश से कोई दिलचस्पी नही है, जिसमे वह खुद दिन-रात गर्क रहता है। दूदा गाना सुनता था, शराब पीता था, तवाइफों से फोश मजाक करता था मगर इससे आगे कभी नही जाता था। उधर उसका बाबू रात-रात भर अदर किसी माशूक को बगल मे दबाए पडा रहता और वह बाहर किसी पहरेदार की तरह जागता रहता।

लोग समझते थे कि दूदे ने अपना घर भर लिया है, दौलत की जो लूट मची हुई है, उसमे उसने अपने हाथ रग लिए हैं—इसमे कोई शक नही कि जब सलाहू दादे-ऐश देने को निकलता था तो हजारों के नोट दूदे ही की तहवील[18] मे होते थे, मगर यह सिर्फ सलाहू को मालूम था कि दूदे ने उनमे से एक पाई भी कभी इधर-उधर नही की।

दूदे को सिर्फ सलाहू से दिलचस्पी थी, वह सलाहू को अपना आका समझता था, और यह बात लोग भी जानते थे कि वह किस हद तक सलाहू का गुलाम है—सलाहू उसको डाँट-डपट लेता था, बाज औकात शराब के नशे में उसे मार-पीट भी लेता था मगर दूदा खामोश रहता—हसीनो-जमील सलाहू उसका माबूद[19] था और वह उसके हुजूर कोई गुस्ताखी नही कर सकता था।

एक दिन इत्तिफाक से दूदा बीमार था—सलाहू रात को हस्बे-मामूल[20] ऐश करने के लिए हीरामडी पहुँचा, वहाँ किसी तवाइफ के कोठे पर गाना सुनने के दौरान मे उसकी झडप एक तमाशबीन से हो गई और हाथापाई मे उसके माथे पर हल्की-सी खराशे आ गई—दूदे को जब इस झडप का इल्म हुआ तो उसने दीवार के साथ टक्करे मार-मारकर अपना सारा सिर जख्मी कर लिया खुद को बेशुमार गालियाँ दी और बहुत बुरा-भला कहा, उसको इतना अफसोस हुआ कि दस-पद्रह दिन तक सलाहू के सामने उसका सिर झुका रहा, एक लफ्ज भी उसके मुँह से न निकला, उसको यह महसूस होता था कि उससे कोई बहुत बडा गुनाह सरजद[21] हो गया है—लोगो का बयान है कि वह बहुत दिनों तक नमाजे पढ़-पढ़कर अपने दिल का बोझ हल्का करता रहा।

सलाहू की वह इस तरह खिदमत करता था, जिस तरह पुराने किस्से-कहानियों के वफादार नौकर करते हैं—वह सलाहू के जूते पालिश करता था; उसके पाँव दाबता था; उसके चमकीले बदन पर मालिश करता था, उसके हर आराम और उसकी हर आसाइश[22] का खयाल रखता था, जैसे वह उसके बत्न[23] से पैदा हुआ है।

कभी-कभी सलाहू नाराज हो जाता । यह वक्त दूदे पहलवान के लिए बडा आजमाइश का वक्त होता था—वह दुनिया मे बेजार हो जाता, फकीरों के पास जाकर तावीज-गडे लेता, खुद को तरह-तरह की जिस्मानी तकलीफ पहुँचाता । आखिर जब सलाहू मौज मे आकर उसे बुलाता तो उसे ऐसा महसूस होता कि उसे दोनों जहान मिल गए हैं ।

दूदे का अपनी ताकत पर नाज नही था, उसे यह घमड भी नही था कि वह छुरी मारने के फन मे यकता[24] है, उसको अपनी ईमानदारी और अपने खुलूस पर भी कोई फख्र नही था, लेकिन वह अपनी इस बात पर बहुत नाजाँ था कि वह लँगोट का पक्का है—वह अपने दोस्तो-यारों को बडे फख्रो-इम्तियाज[25] से सुनाया करता था कि उसकी जवानी मे सैकडो मर्दमार औरतें आईं, चिलत्तरो के बडे-बडे मत्र उस पर फूँके गए मगर वह, शाबाश है उसके उस्ताद को, वह लँगोट का पक्का रहा—यह बड नही थी । उन लोगों को, जो दूदे पहलवान के लँगोटिए थे, अच्छी तरह मालूम था कि उसका दामन औरत की तमाम आलाइशों[26] से पाक है—मुतादि्दद[27] बार कोशिश की गई थी कि वह गुमराह हो जाए, मगर हर बार नाकामी हुई थी—वह साबित कदम रहा था ।

खुद सलाहू ने कई बार उसका इम्तिहान लिया—अजमेर के उर्स पर उसने मेरठ की एक काफिर अदा तवाइफ अनवरी को इस बात पर आमादा कर लिया कि वह दूदे पर डोरे डाले—अनवरी ने अपने तमाम गुर इस्तेमाल कर डाले, मगर दूदे पर कोई असर न हुआ ।

उर्स खत्म होने पर जब वह लाहौर रवाना हुए तो गाडी मे दूदे ने सलाहू से कहा "बाऊ, बस अब मेरा कोई और इम्तिहान न लेना वह साली अनवरी बहुत आगे बढ गई थी मुझे तुम्हारा खयाल था, वरना गला घोट देता हरामजादी का ।"

इसके बाद सलाहू ने उसका और कोई इम्तिहान न लिया—दूदे के तम्बीही[28] अल्फाज काफी थे, जो उसने बडे सगीन लहजे में अदा किए थे ।

सलाहू ऐशो-इशरत में बदस्तूर गर्क था, इसलिए कि अभी तीन-चार मकान बाकी थे । हीरामडी की तमाम काबिले-जिक्र तवाइफें एक-एक करके उसके पहलू में आ चुकी थी और अब उसने झूठे जामों का दौर शुरू कर दिया था ।

उन्ही दिनों एकदम जाने कहाँ से एक तवाइफ अलमास पैदा हो गई और एकदम सारी हीरामडी पर छा गई, उसे देखा किसी ने भी नही था, मगर इसके बावजूद उसके हुस्न के चर्चे आम थे कि हाथ लगाए मैली होती है, पानी पीती है तो उसके शफाफ[29] हलक मे से नजर आता है, हिरनी की-सी आँखें हैं, जिनमे खुदा ने अपने हाथ से सुरमा लगाया है, बदन ऐसा मुलायम है कि निगाहे फिसल-फिसल जाती हैं—सलाहू जहाँ भी जाता था, उस परी चेहरा और हूर शमायल[30] माशूका के हुस्नो-जमाल की बाते सुनता था ।

दूदे पहलवान ने फौरन पता लगाया और अपने बाबू को बताया कि वह अलमास कश्मीर मे आई है, वाकई खूबसूरत है, अधेड उम्र की माँ उसके साथ रहती है, जो उस पर बडी कडी निगरानी रखती है, इसलिए कि वह लाखों के ख्वाब देख रही है ।

जब अलमास का मुजरा शुरू हुआ तो उसके कोठे पर सिर्फ वही साहबे-सरवत[31] गए, जिनका लाखों का कारोबार था—सलाहू के पास अब इतनी दौलत नही थी कि वह उन तगडे

दौलतमंद ऐयाशों का मुक़ाबला खम ठोक के कर सकता; आठ-दस मुजरो ही में उसकी हजामत हो जाती; वह इसी ख़याल के मातहत ख़ामोश रहा और पेचो-ताब खाता रहा।

दूदा अपने बाबू की बेचारगी देखता तो उसे बहुत दुख होता, मगर वह क्या कर सकता था; उसके पास था ही क्या, एक सिर्फ उसकी जान थी, मगर वह इस मामले में क्या काम दे सकती थी। बहुत सोच-विचार के बाद आख़िर दूदे ने एक तरकीब सोची कि सलाहू किसी तरह अलमास की माँ इकबाल से राब्ता[12] पैदा करे; अलमास की माँ पर यह ज़ाहिर करे कि वह उसके इश्क मे गिरफ्तार है, और इस तरह जब मौक़ा मिले तो अलमास को अपने कब्जे मे कर ले।

सलाहू को तरकीब पसंद आई और फौरन ही उस पर अमल दरामद शुरू हो गया।

अलमास की माँ इकबाल बहुत ख़ुश थी कि उस ढलती उम्र में उसे सलाहू-जैसा ख़ूबरू चाहनेवाला मिल गया है और यह सिलसिला बहुत दिनों तक जारी रहा—इस दौरान में सैकड़ों मर्तबा अलमास उसके सामने आई, बाज़ औक़ात उसके पास बैठकर अलमास ने बातें भी कीं और उसके हुस्न से काफी मुतास्सिर[13] भी हुई।

अलमास को हैरत थी कि सलाहू उसकी माँ मे क्यो दिलचस्पी ले रहा है, जबकि वह खुद सलाहू की आँखो के सामने मौजूद है, लेकिन उसकी यह हैरत बहुत देर तक कायम न रह सकी, उसे सलाहू की हरकातो सकनात[14] से मालूम हो गया कि वह चाल चल रहा है; इस इन्किशाफ[15] मे उसे ख़ुशी हुई कि अंदरूनी तौर पर उसके एहसासे-जवानी[16] को बड़ी ठेस पहुँच रही थी।

बातों-बातों मे एक दिन सलाहू का जिक्र आया तो अलमास ने सलाहू की ख़ूबसूरती की तारीफ जरा चटख़ारा लेकर की, जो उसकी माँ इकबाल को बहुत नागवार मालूम हुई और फिर उन दोनो में ख़ूब चख हुई—अलमास ने अपनी माँ से साफ़-साफ कह दिया कि सलाहू उसे बेवकूफ़ बना रहा है।

इक़बाल को बहुत दुख हुआ—अब सवाल बेटी का नहीं था, सवाल रकीब[17] का या मौत का था।

दूसरे रोज जब सलाहू आया तो इकबाल ने उससे पूछा "आप किसे पसंद करते हैं· मुझे या मेरी बेटी अलमास को?"

सलाहू को कहना पडा "तुम्हें मैं तुम्हें पसंद करता हूँ" फिर उसे इकबाल को मजीद[18] यक़ीन दिलाने के लिए और बहुत-सी बातें घड़ना पड़ी।

इकबाल यूँ तो बडी चालाक थी, मगर उसको किसी हद तक सलाहू की बात पर यक़ीन आ गया—वह अपनी उम्र के ऐसे मोड पर पहुँच चुकी थी, जहाँ मुहब्बत और जिस्म के झूठे हवाले भी सच्चे दिखाई देते हैं।

जब यह बात अलमास तक पहुँची तो वह बहुत जुज़बुज़[19] हुई—जूँ ही उसे मौक़ा मिला, उसने सलाहू को पकड़ लिया और उससे सच उगलवाने की कोशिश की।

सलाहू ज़्यादा देर तक अलमास की जिरह बर्दाश्त न कर सका, आख़िर उसे मानना ही पड़ा कि उसे इक़बाल से कोई दिलचस्पी नहीं है और असल में अलमास का हुसूल[10] ही उसके

पेशे-नजर है—यह क़बूलवाने पर अलमास की तसल्ली हो गई, मगर वह रग़बत[41] और वह लगाव जो उसके दिलो-दिमाग में सलाहू के मुताल्लिक़ पैदा हुआ था, गायब हो गया और उसने ठेठ तवाइफ बनकर अपनी माँ को समझाया : "माँ, बचपना छोड दो सलाहू से मेरे दाम वसूल कर लो तुम्हे वह क्या देगा ?"

अपनी लडकी की यह अक्लवाली बात इकबाल की समझ में आ गई और वह सलाहू को दूसरी नज़र देखने लगी।

सलाहू भी समझ गया कि उसका वार खाली गया है; अब इसके सिवा और कोई चारा न था कि वह नीलाम मे अलमास की सबसे बढ़कर बोली दे।

दूदे ने इधर-उधर से करेदकर मालूम किया कि अगर सलाहू अलमास की माँ के कदमों मे पच्चीस हजार रुपए ढेर कर दे तो अलमास की नथनी उतर सकती है।

सलाहू पूरी तरह जकडा जा चुका था, जाए रफ्तन न पाए मांदनवाला[42] मामला था—उसने दो मकान बेचे और पच्चीस हजार रुपए लेकर इकबाल के पास पहुँचा।

इकबाल का ख़याल था कि सलाहू इतनी बडी रकम पैदा नहीं कर सकेगा, लेकिन सलाहू जब रकम ले आया तो वह बौखला-सी गई।

इकबाल ने अलमास से मशवरा किया तो उसने कहा "इतनी जल्दी कोई फैसला नहीं करना चाहिए सलाहू से कहो कि पहले वह हमारे साथ कलियर शरीफ के उर्स पर चले "

सलाहू को उर्स पर जाना पडा और इसका नतीजा यह हुआ कि पूरे पंद्रह हज़ार मुजरों मे उड गए। उसकी उन तमाम तमाशबीनों पर, जो उर्स में शरीक हुए थे, धाक तो बैठ गई, मगर उसके पच्चीस हज़ार रुपयों को दीमक लग गई—जब वह वापस लाहौर आ गए तो बाकी का रुपया भी आहिस्ता-आहिस्ता अलमास की फरमाइशों की नजर हो गया।

दूदा अदर ही अदर गुस्से से खौल रहा था; उसका जी चाहता था कि इकबाल और अलमास, दोनों का सिर उड़ा दे, मगर उसे अपने बाबू का ख़याल था—दूदे के दिल मे बहुत-सी बाते थीं, जो वह सलाहू को बताना चाहता था, मगर बता नहीं सकता था; इससे उसे और भी झुँझलाहट होती थी।

सलाहू बहुत बुरी तरह अलमास पर लट्टू था—पच्चीस हज़ार रुपए ठिकाने लग चुके थे और अब वह दस हजार रुपए उस मकान को गिरवी रखकर उजाड रहा था, जिसमें उसकी नेकसीरत[43] माँ रहती थी।

यह रुपया भी कब तक उसका साथ देता—इकबाल और अलमास, दोनों जोंक की तरह सलाहू के साथ चिमटी हुई थीं—आख़िर वह दिन आ ही गया, जब उस पर नालिश हुई और अदालत ने कुर्की का हुक्म दे दिया।

सलाहू बहुत परेशान हुआ—उसे कोई सूरत नजर नहीं आती थी; कोई ऐसा आदमी नहीं था, जो उसे क़र्ज देता; ले-दे के एक मकान बचा था, और वह भी गिरवी पड़ा था; कुर्की आई हुई थी और बैलिफ़[44] सिर्फ़ दूदे पहलवान की वजह से रुके हुए थे—दूदे ने उनको यक़ीन दिलाया था कि वह बहुत जल्द रुपए का बंदोबस्त कर देगा।

दूदे की बात सुनकर सलाहू बहुत हँसा था कि वह कहाँ से रुपयो का बंदोबस्त करेगा; सौ-दो सौ की बात होती तो उसे यक़ीन आ जाता, मगर सवाल पूरे दस हज़ार रुपयों का था—सलाहू ने दूदे पहलवान का बड़ी बेदर्दी से मज़ाक़ उडाया कि वह उसको तिफ़्ल[45] तसल्लियाँ दे रहा है।

दूदे ने सलाहू की यह लअन-तअन[46] बर्दाश्त की और चला गया।

दूसरे रोज दूदा आया तो उसका शंगरफ-ऐसा[47] चेहरा जर्द था; ऐसा मालूम होता था कि वह बिस्तरे-अलालत[48] पर से उठकर आया है—सिर न्योढ़ाकर उसने अपने डब में से रूमाल निकाला, जिसमें सौ-सौ के नोट बँधे पडे थे और सलाहू से कहा . "ले बाऊ, ले आया हूँ "

सलाहू ने नोट गिने; पूरे दस हजार थे—टुकर-टुकर दूदे पहलवान का मुँह देखते हुए उसने कहा "यह रुपए कहाँ से पैदा किए तुमने ?"

दूदे ने अफसुर्दा[49] लहजे में जवाब दिया "हो गए पैदा कही से !"

सलाहू कुर्की भूल गया—इतने सारे नोट देखकर उसके कदम फिर अलमास के कोठे की तरफ उठने लगे।

दूदे ने सलाहू को रोका "नहीं बाऊ अलमास के पास न जाओ यह रुपया कुर्कीवालों को दो "

सलाहू ने बिगडे हुए बच्चे की मानिंद कहा . "क्यो ? मै जाऊँगा अलमास के पास।"

दूदे ने पहली बार कडे लहजे मे कहा : "तू नहीं जाएगा।"

सलाहू तैश में आ गया "तू कौन होता है मुझे रोकनेवाला ?"

दूदे की आवाज नर्म हो गई "मैं तेरा गुलाम हूँ बाऊ पर अब अलमास के पास जाने का कोई फ़ायदा नही।"

"क्यों ?"

दूदे की आवाज मे लरजिश-सी[50] पैदा हो गई "न पूछ बाऊ यह रुपया मुझे उसी ने दिया है "

सलाहू करीब-करीब चीख उठा "यह रुपया अलमास ने दिया है तुम्हें दिया है "

"हाँ बाऊ, उसी ने दिया है मुझ पर बहुत देर से मरती थी साली, पर मैं उसके हाथ नहीं आता था तुझ पर तकलीफ का वक्त आया तो मेरे दिल ने कहा 'दूदे, छोड अपनी कसम को तेरा बाऊ तुझसे कुर्बानी माँगता है ' सो मैं कल रात उसके पास गया और उससे यह सौदा कर लिया " दूदे की आँखो मे टप-टप आँसू गिरने लगे।

1 विवाह हुआ, 2 सुंदर लड़कों से मैथुन करने वाले, 3 संतान, 4 रक्षक, 5 बहुत सुंदर; 6 निर्धन, 7 साथ; 8 कारण; 9 हाथ-पाँव, 10. पर्याप्त, 11 एकमात्र, 12. सच्चाई; 13 कहीं ऐसा न हो; 14 उपाय, 15 दिन, 16 अस्थिर चित्तवाला, 17 अनुभवी; 18 कब्जा; 19 इष्टदेव, 20 नियमानुसार, 21 घटित, 22. सुख-सुविधा, 23 गर्भ, 24. अद्वितीय, 25 गौरव से; 26 गलाजत, 27 बहुत, 28 चेतावनी देनेवाले, 29 स्वच्छ, 30 समान, 31 धनी; 32 संपर्क 33 प्रभावित, 34 गतिविधियाँ; 35 रहस्योद्घाटन, 36 जवानी का खयाल, 37 अपने प्रेमी की दूसरी प्रेमिका, 38. अधिक, 39. नाराज, 40. प्राप्ति; 41 आकर्षण; 42. साँप के मुँह में छछूँदरवाला मामला; 43 चरित्रवान, 44 कुर्कीवाले, 45. बचकानी, 46 भला-बुरा कहना, 47 पत्थर-जैसा, 48 बीमारी; 49 दुखी; 50. कँपन-सी।

सौ कैंडल पावर का बल्ब

वह चौक मे, कैसर पार्क के बाहर, जहाँ चद ताँगे खडे रहते हैं, बिजली के एक खबे के साथ खामोश खड़ा था और दिल ही दिल में सोच रहा था . कोई वीरानी-सी वीरानी है !

यही पार्क, जो सिर्फ दो बरस पहले पुररौनक जगह थी, अब उजड़ा-पुजड़ा दिखाई दे रहा था, जहाँ पहले औरत और मर्द शोखो-शग[1] फैशन के लिबास में चलते-फिरते थे, वहा अब बेहद मैले-कुचैले कपडों मे लोग इधर-उधर बेमक़सद फिर रहे थे; बाजार मे काफी भीड थी, मगर वह रंग नहीं था, जो कभी वहाँ मेले-ठेले की तरह हुआ करता था, आसपास की सीमेंट से बनी हुई बिल्डिगे भी अपना रूप खो चुकी थीं, सिर झाड़, मुँह फाडे वह एक-दूसरे की तरफ फटी-फटी आँखो से देख रही थी, जैसे वह बेवा औरत हो !

वह हैरान था कि वह गाजा[2] कहाँ गया, वह सिंदूर कहाँ उड़ गया, वो सर कहाँ गायब हो गए, जो उसने कभी वहाँ देखे और सुने थे ? और यह कोई ज्यादा अर्से की बात नहीं, अभी वह कल ही तो दो बरस भी कोई अर्सा होता है भला वहाँ आया था कलकत्ते से, जब उसे वहाँ की एक फर्म ने अच्छी तनख्वाह पर बुलाया था, उसने कितनी कोशिश की थी कि उसे कैसर पार्क मे एक कमरा ही मिल जाए, मगर वह नाकाम रहा था, हजार फरमाइशो के बावजूद—अब उसने देखा कि जिस कुँजडे, जुलाहे और मोची की तबीयत चाहती है, फ्लैटों और कमरो पर अपना कब्जा जमा रहा है ।

जहाँ किसी शानदार फिल्म कपनी का दफ्तर होता था, वहाँ चूल्हे सुलग रहे थे, जहाँ कभी शहर की बडी-बडी रंगीन हस्तियाँ जमा होती थीं, वहाँ धोबी मैले कपडे धो रहे थे ।

दो बरस में इतना बड़ा इन्किलाब !

वह हैरान था—वह उस इन्क़िलाब का पसमंजर[3] जानता था, कुछ अखबारों के जरिए से और कुछ उन दोस्तों के बयान से, जो उस शहर मे मौजूद थे, उसे सब पता लग चुका था कि वहाँ कैसा तूफान आया था; वह सोचता था, कोई अजीबो-गरीब तूफान होगा, जो इमारतो का रंग-रूप भी चूसकर ले गया; इसानो ने इसान क़त्ल किए, औरतो की बेइज्जती की, और इमारतों की खुश्क लकड़ियों और बेजान ईंटों मे भी यही सुलूक किया, उसने सुना था कि उस तूफान मे औरतों को नगा किया गया था, उनकी छातियाँ काटी गई थी—अब जो कुछ भी वह अपने आसपास देख रहा था, सब नगा और जोबन बरीदा[4] था ।

वह बिजली के खबे के साथ लगा अपने एक दोस्त का इंतजार कर रहा था, जिसकी

मदद से वह अपनी रिहाइश का कोई बंदोबस्त करना चाहता था—उसके दोस्त ने कहा था 'तुम कैसर पार्क के पास, जहाँ ताँगे खड़े रहते हैं, मेरा इंतजार करना !

दो बरस हुए, जब वह मुलाज़िमत[5] के सिलसिले में वहाँ आया था तो ताँगों का वह अड्डा बहुत मशहूर जगह थी, शहर के सबसे उम्दा, सबसे बाँके ताँगे वहीं उसी जगह खड़े रहते थे कि वहाँ से ऐयाशी का हर सामान मुहैया हो जाता था; अच्छे से अच्छा रेस्तोराँ और होटल करीब था, बेहतरीन चाय, बेहतरीन खाना और दूसरे तमाम लवाजमात[6] भी मयस्सर थे—शहर के जितने बड़े दलाल थे, वहीं से दस्तेयाब[7] होते थे कि कैसर पार्क में बड़ी-बड़ी कंपनियों के बायस रुपया और शराब पानी की तरह बहते थे।

दो बरस पहले उसने वहाँ अपने दोस्त के साथ बड़े ऐश किए थे, अच्छी से अच्छी लड़की हर रात उनके आगोश में होती थी, स्कॉच, जो जंग के बायस नायाब थी, एक मिनट में उसकी दर्जनों बोतलें मुहैया हो जाती थीं।

ताँगे अब भी खड़े थे, मगर उन पर वह कलगियाँ नहीं थीं, वह फुंदने नहीं थे, पीतल के पालिश किए हुए साजो-सामान की वह चमक-दमक नहीं थी, सबकुछ शायद दूसरी चीजों की तरह उड़ गया था।

उसने घड़ी में वक्त देखा—सात बज चुके थे।

फरवरी के दिन थे और शाम के साए गहरे हो चुके थे।

उसने दिल ही दिल में अपने दोस्त को लानत-मलामत की—वह दाएँ हाथ के वीरान होटल में मोरी के पानी से बनी हुई चाय पीने के लिए जाने ही वाला था कि किसी ने हौले-से उसको पुकारा।

उसने खयाल किया कि शायद उसका दोस्त आ गया है, मगर जब उसने मुड़कर देखा तो एक अजनबी को खड़ा पाया, आम शक्लो-सूरत, लट्ठे की नई शलवार, जिसमें और ज्यादा शिकनों की गुंजाइश नहीं थी और नीली पापलीन की कमीज, जो लांड्री में जाने के लिए बेताब थी।

उसने पूछा : "क्यों भई, तुमने मुझे बुलाया ?"

उसने हौले-से जवाब दिया : "जी हाँ !"

उसने खयाल किया कि कोई मुहाजिर[8] है और भीख माँग रहा है : "क्या माँगते हो ?"

उसने उसी लहजे में जवाब दिया : "जी कुछ नहीं..." फिर उसने करीब आकर कहा : "कुछ चाहिए आपको ?"

"क्या ?"

"कोई लड़की-वड़की ?" यह कहकर वह पीछे हट गया।

उसके सीने में एक तीर-सा लगा—उसने आँखें फाड़कर उसको देखा : इस जमाने में भी यह लोगों के जिंसी[9] जज़्बात टटोलता फिर रहा है—फिर इंसानियत के मुताल्लिक ऊपर तले उसके दिमाग में बड़े हौसलाशिकन[10] खयालात उभरे; उन्हीं खयालात के जेरे-असर[11] उसने पूछा : "कहाँ है ?"

उसका लहजा दलाल के लिए उम्मीद अफ़ज़ा[12] नहीं था—दलाल ने कदम उठाते हुए

कहा "जी नहीं आपको जरूरत नहीं "

उसने दलाल को रोका "यह तुमने किस तरह जाना ? आदमी को हर वक्त उस चीज की जरूरत होती है, जो तुम मुहैया कर सकते हो सूली पर भी उस चीज की जरूरत होती है और जलती चिता मे भी ।" वह फलसफी[13] बनते-बनते रुक गया "देखो, अगर वह चीज कही पास ही है तो मैं चलने के लिए तैयार हूं मैंने यहाँ एक दोस्त को वक्त दे रखा है "

दलाल उसके करीब आ गया "पास ही है, बिलकुल पास !"

"कहाँ ?"

"यह सामनेवाली बिल्डिंग में ।"

उसने सामनेवाली बिल्डिंग को देखा "इसमे इस बडी बिल्डिंग मे ?'

"जी हाँ !"

वह लरज गया "अच्छा तो " फिर उसने सँभलकर पूछा "मैं भी साथ चलूं ?"

"चलिए लेकिन मैं आगे-आगे चलता हूं ' दलाल ने सामनेवाली बिल्डिंग की तरफ बढ़ना शुरू कर दिया ।

वह सैकडों रूह शिगाफ[14] बाते सोचता हुआ दलाल के पीछे हो लिया ।

जरा-सा फासला था, चद गज परे वह बिल्डिंग थी—दूसरे ही लम्हे दलाल और वह उस बिल्डिंग के अदर थे ।

अदर से बिल्डिंग की हालत बहुत खस्ता थी, जगह-जगह ईंटे उखडी हुई थी, कटे हुए पानी के नल बाहर को निकले हुए थे, हर तरफ कूडे-करकट के ढेर थे ।

शाम कब की गहरी हो चुकी थी—ड्योढ़ी में से गुजरकर वह आगे बढे तो अँधेरा शुरू हो गया ।

चौडा चकला सहन तय करके दलाल एक तरफ मुडा कि जहाँ इमारत बनते-बनते रुक गई थी, ईंटें नगी थीं; चूना और सीमेट मिले हुए सख्त ढेर पडे हुए थे, जा-ब-जा बजरी बिखरी हुई थी ।

दलाल नामुकम्मल सीढ़ियाँ चढ़ते-चढ़ते रुका और मुडकर उसने कहा 'आप यही ठहरिए, मैं अभी आया ।"

वह रुक गया और दलाल सीढ़ियाँ चढ़ गया—उसने गर्दन उठाकर सीढ़ियो के इख्तिताम[15] की तरफ देखा तो उसे तेज रोशनी नजर आई ।

लम्हे मिनट बन गए तो वह दबे पाँव सीढ़ियाँ चढ़ने लगा—वह आखिरी सीढ़ी पर पहुँचा तो उसे दलाल की बहुत जोर की कडक सुनाई दी "उठती है कि नही ?"

कोई औरत बोली 'कह जो दिया, मुझे सोने दो ।" औरत की आवाज घुटी-घुटी-सी थी ।

दलाल फिर कडका "मैं कहता हूं, उठ मेरा कहना नही मानेगी तो याद रख "

औरत की आवाज आई "तू मुझे मार डाल, लेकिन मैं नही उठूंगी खुदा के लिए मेरे हाल पर रहम कर । '

दलाल ने पुचकारा : "उठ मेरी जान, ज़िद न कर, गुज़ारा कैसे चलेगा ?"

औरत बोली : "गुज़ारा जाए जहन्नम में, मैं भूखी मर जाऊँगी, खुदा के लिए मुझे तंग न कर, मुझे नीद आ रही है।"

दलाल की आवाज फिर कड़ी हो गई : "तू नही उठेगी, हरामजादी, सुअर की बच्ची ..."

औरत चिल्लाने लगी : "मैं नही उठूँगी, नहीं उठूँगी, नही उठूँगी ..."

दलाल की आवाज भिंच गई : "आहिस्ता बोल, आहिस्ता बोल, कोई सुन लेगा, चल उठ, तीस-चालीस रुपए मिल जाएँगे।"

"देखो मैं हाथ जोड़ती हूँ : मैं कितने दिनों से जाग रही हूँ, रहम कर, खुदा के लिए मुझ पर रहम कर ..." अब औरत की आवाज़ में इल्तिजा[16] थी।

"बस एक-दो घंटे के लिए, फिर सो जाना, नही तो देख, मुझे सख्ती करनी पड़ेगी।" दलाल की आवाज आई।

यकायक खामोशी तारी हो गई—चंद लम्हे वह दम साधे आखिरी सीढ़ी पर खड़ा रहा; फिर उसने दबे पांव आगे बढ़कर उस कमरे में झाँका, जिस कमरे में से बड़ी तेज रोशनी आ रही थी।

उसने देखा कि एक छोटा-सा, तेज रोशनी में जगमगाता हुआ, नंगा-बुच्चा कमरा है, फ़र्श पर एक औरत लेटी हुई है, कमरे मे दो-तीन बर्तन हैं, बस और कुछ नही, दलाल दरवाजे की तरफ पीठ किए औरत के पास बैठा औरत के पाँव दाब रहा है।

थोड़ी देर के बाद दलाल ने औरत से कहा : "ले अब उठ, कसम खुदा की, तू एक-दो घंटे में आ जाएगी, आकर सो जाना।"

वह औरत एकदम यूँ उठी, जैसे आग देखते ही छछूँदर उठती है, और चिल्लाई : "अच्छा उठती हूँ।"

वह पीछे हट गया; उस लम्हे वह डर गया था, फिर वह दबे पाँव सीढ़ियाँ उतर गया।

उसने सोचा कि भाग जाए, उस शहर ही से भाग जाए; उस दुनिया ही से भाग जाए; मगर कहाँ ?

फिर उसने सोचा कि वह औरत कौन है; क्यो उस पर इतना जुल्म हो रहा है ?

और वह दलाल कौन है, उस औरत का क्या लगता है ?

वह उस छोटे-से कमरे में इतना बड़ा बल्ब जलाकर, जो सौ कैंडल पावर से किसी भी तरह कम नहीं है, क्यों रहते हैं, कब से रहते हैं ?

उसके दिमाग़ में सोच और उसकी आँखों में उस तेज बल्ब की रोशनी घुसी हुई थी।

इतनी तेज़ रोशनी मे कौन सो सकता है; इतना बड़ा बल्ब ?

वह अभी अपनी सोच में गुम था कि आहट हुई—उसने देखा, दो साए उसके पास खड़े हैं।

"देख लीजिए ..." दलाल के साए ने कहा।

उसने कहा : "देख लिया ..."

"ठीक है ना ?"

"ठीक है।"

"चालीस रुपए होंगे ?"

"ठीक है।'

'दे दीजिए।'

वह सोचने-समझने के काबिल न रहा था—उसने जेब मे हाथ डाला, कुछ नोट निकाले और दलाल के हवाले कर दिए "देख लो कितने हैं।"

पहले नोटो की खड़खड़ाहट हुई, फिर दलाल ने कहा "पचास हैं।"

उसने कहा "पचास ही रखो " उसके जी मे आई कि वह एक बहुत बडा पत्थर उठाए और दलाल के सिर पर दे मारे।

दलाल ने कहा "तो ले जाइए इसे लेकिन देखिए, इसे तग न कीजिएगा और एक-दो घटे के बाद यहीं छोड़ जाइएगा।"

वह उस बडी बिल्डिग मे बाहर आ गया।

बाहर एक ताँगा खडा था—वह आगे बैठ गया और वह औरत पीछे।

दलाल ने सलाम किया—एक बार फिर उसके जी मे आई कि वह एक बहुत बडा पत्थर उठाए और दलाल के सिर पर दे मारे।

वह उस औरत को पास ही के एक वीरान-से होटल में ले गया।

उसने अपने दिमाग को साफ करने की कोशिश की और उस औरत की तरफ देखा—वह औरत सिर से पैर तक उजाड़ थी, उसके पपोटे मुँदे हुए थे, आँखें झुकी हुई थी, उसका ऊपर का धड़ मारे का मारा खमीदा[17] था, जैसे वह एक ऐसी खस्ता इमारत हो, जो पल भर मे गिरनेवाली हो।

उसने कहा "जरा गर्दन तो ऊँची कीजिए।"

वह जोर से चौंकी "क्या ?"

'कुछ नही मैंने सिर्फ इतना कहा था कि कोई बात तो कीजिए।'

उसकी आँखे सुर्ख बूटी हो रही थी, जैसे उनमे मिर्चें डाली गई हो—वह खामोश रही।

"आपका नाम ?" उसने पूछा।

'कुछ भी नही।" उसके लहजे मे तेजाब की-सी तेजी थी।

"आप कहाँ की रहनेवाली हैं ?"

"जहाँ की भी तुम समझ लो।"

"आप इतना रूखा क्यो बोलती हैं ?"

वह औरत जैसे जाग पडी—उसकी तरफ लाल बूटी आँखो से देखते हुए उसने कहा "तुम अपना काम करो मुझे जाना है।"

उसने पूछा "कहाँ जाना है ?"

औरत ने बडी रूखी बेऐतनाई[18] से जवाब दिया "जहाँ से तुम मुझे लाए हो !"

"आप जाना चाहें तो जा सकती हैं।"

"तुम अपना काम करो ना मुझे तग क्यो करते हो ?"

उसने अपने लहजे मे दिल का सारा दर्द भरकर कहा "मैं तुम्हें तग नहीं करता मुझे तुमसे हमदर्दी है "

वह झल्ला गई · "मुझे नही चाहिए कोई हमदर्द " फिर वह करीब-करीब चीख पडी "तुम अपना काम खत्म करो और मुझे जाने दो।"

उसने करीब आकर उस औरत के सिर पर हाथ फेरना चाहा तो उस औरत ने उसका हाथ जोर से एक तरफ झटक दिया "मैं कहती हूँ, मुझे तग न करो मैं कई दिनों से जाग रही हूँ जब से यहाँ आई हूँ, जाग रही हूँ '

वह सर-ता-पा[19] हमदर्दी बन गया "सो जाओ यही।"

औरत की आँखे और सुर्ख हो गईं, वह तेज लहजे मे बोली "मैं यहाँ सोने नही आई यह मेरा घर नही "

"तुम्हारा घर वह है, जहाँ से तुम आई हो ? '

"उफ बकवास बद करो मेरा कोई घर नही तुम अपना काम करो, वर्ना मझे छोड आओ अपने रुपए ले लो उस उस " वह गाली देती-देती रह गई।

उसने सोचा कि उस औरत से उस हालत मे कुछ पूछना और हमदर्दी जताना फिजूल है। उसने कहा "चलो, तुम्हे छोड आऊँ। '

और वह उस औरत को उस बडी बिल्डिग मे छोड आया।

दूसरे दिन उसने कैसर पार्क के एक वीरान होटल मे उस औरत की सारी दास्तान अपने दोस्त को सनाइ—उसके दोस्त पर रिक्कत[20] तारी हो गई, उसने अफसोस का इजहार किया और पछा "क्या जवान थी ?"

उसने कहा 'मुझे मालूम नही मैं उसे अच्छी तरह देख न मका था मेरे दिमाग मे तो एक ही खयाल था कि पत्थर उठाकर दलाल का सिर क्यो न कुचल दिया ?'

उसके दोस्त ने कहा "वाकई यह बडे सवाब का काम होता!"

वह ज्यादा देर तक होटल मे अपने दोस्त के साथ न बैठ सका, उसके दिलो-दिमाग पर पिछले रोज के वाके का बहुत बोझ था, चाय खत्म हुई तो वह रुख्सत हो गया।

उसका दोस्त ताँगो के अड्डे पर आया, थोडी देर तक उसकी निगाहें उम दलाल को ढूँढ़ती रही, मगर वह दलाल कही नजर न आया।

सात बज चुके थे—वह बडी बिल्डिग सामने थी, जरा-से फासले पर—उसने चद कदम उठाए और बिल्डिग मे दाखिल हो गया, ड्योढ़ी मे से गुजरकर वह आगे बढ़ा तो काफी अँधेरा था, सहन तय करके सीढ़ियो के पास पहुँचा तो ऊपर उसे रोशनी दिखाई दी, वह दबे पाँव सीढ़ियाँ चढ़ने लगा; कुछ देर वह आखिरी सीढ़ी पर खडा रहा—कमरे से तेज रोशनी आ रही थी, मगर न कोई आवाज थी, न आहट—उसने धीरे-से कदम बढ़ाए।

दीवार की ओट मे होकर वह कमरे के अदर झाँका—सबसे पहले उसे बल्ब नजर आया,

तेज़ रोशनी उसकी आँखों मे घुस गई; उसने फ़ौरन ही मुँह फेर लिया कि अँधेरे की तरफ़ मुँह करके अपनी आँखों में से तेज़ रोशनी की चकाचौंध निकाल सके—फिर वह गर्दन झुकाकर कमरे में झाँका कि उसकी आँखें बल्ब की जद मे न आएँ, फर्श का जो हिस्सा उसने पहली नज़र में देखा, वहाँ चटाई पर एक औरत लेटी हुई थी—उसने ग़ौर से देखा . वह औरत सो रही थी, उसके मुँह पर दुपट्टा पड़ा हुआ था; उसका सीना साँस के उतार-चढ़ाव से हिल रहा था—वह ज़रा आगे बढ़ा; उसने बड़ी मुश्किल से निकलती हुई चीख दबाई : उस औरत से कुछ दूर नंगे फर्श पर एक आदमी पडा हुआ था; उस आदमी का सिर पाश-पाश था; पास ही एक ख़ून आलूदा ईंट पड़ी हुई थी—वह सब उसने देखा और सीढ़ियों की तरफ लपका, उसका पाँव फिसला और अगले ही लम्हे वह नीचे था; उसने चोटों की कोई परवाह न की और अपने होशो-हवास कायम रखने की कोशिश करते हुए बमुश्किल अपने घर पहुँचा और सारी रात डरावने ख़्वाब देखता रहा।

1. चतुर, 2. पाउडर; 3. पृष्ठभूमि; 4. कटा हुआ; 5. नौकरी; 6. अच्छी चीज़ें; 7. उपलब्ध; 8. शरणार्थी; 9. शारीरिक; 10. हौसला तोड़नेवाले: 11. प्रभाव में; 12. आशाप्रद; 13. दार्शनिक; 14. हृदय विदारक; 15. आख़िर; 16. प्रार्थना; 17. झुका हुआ; 18. लापरवाही; 19. सिर से पैर तक; 20. रुलाई।

1919 की एक बात

"यह 1919 की बात है भाईजान, जब रौलट एक्ट के खिलाफ सारे पजाब में ऐजीटेशन[1] हो रही थी ·मैं अमृतसर की बात कर रहा हूँ सर माइकल ने डिफेंस ऑफ इंडिया रूल्स[2] क मातहत गाँधी जी का दाखिला पजाब मे बद कर दिया था वह आ रहे थे कि पलवल के मुकाम पर उनको रोक लिया गया और गिरफ्तार करके वापस बबई भेज दिया गया जहाँ तक मैं समझता हूँ भाईजान अगर अँग्रेज.यह गलती न करता तो जलियाँवाला बाग का हादसा उसकी हुक्मरानी की सियाह तारीख मे ऐसे खूनी[3] वर्क का इजाफा कभी न करता क्या मुसलमान क्या हिंदू, क्या सिख, सबके दिल मे गाँधी जी की बेहद इज्जत थी सब उन्हे महात्मा मानते थे जब उनकी गिरफ्तारी की खबर लाहौर पहुँची तो सारा कारोबार एकदम बद हो गया लाहौर से अमृतसरवालो को मालूम हो गया और यूँ चुटकियो मे सारे शहर मे मुकम्मल हडताल हो गई कहते हैं कि नौ अप्रैल की शाम को डॉक्टर सत्यपाल और डॉक्टर किचलू की जलावतनी[4] के अहकाम[5] डिप्टी कमिश्नर को मिल गए थे, वह उनकी तामील के लिए तैयार नही था, इसलिए कि उसके खयाल के मुताबिक अमृतसर मे किसी हीजानखेज बात का खतरा नही था, लोग परअमन तरीके पर एहतिजाजी[6] जलसे करते थे, तशद्दुद[7] का तो सवाल ही पैदा नही होता था मैं अपनी आँखों देखा हाल बयान करता हूँ नौ तारीख को रामनवमी थी, जुलूस निकला मगर मजाल है, जो किसी ने हुक्काम[8] की मर्जी के खिलाफ एक कदम भी उठाया हो, लेकिन भाईजान, यह सर माइकल भी अजब औंधी खोपडी का आदमी था उसने डिप्टी कमिश्नर की एक न सुनी, उस पर बस यही खौफ सवार था कि यह पजाबी लीडर महात्मा गाँधी के इशारे पर अँग्रेज का तख्ता उलटने के दरपे[9] हैं और जो हडताले हो रही हैं, जो जलसे मुनअकिद[10] हो रहे हैं, उनके पसे-परदा[11] यही साजिश काम कर रही है डॉक्टर किचलू और डॉक्टर सत्यपाल की जलावतनी की खबर आनन-फानन शहर मे आग की तरह फैल गई दिल हर शख्स का मुकद्दर था, हर वक्त धडका-सा लगा रहता था कि कोई बहुत बडा हादसा होनेवाला है लेकिन भाईजान, जोश बहुत ज्यादा था; कारोबार बद थे, शहर कब्रिस्तान बना हुआ था, पर इस कब्रिस्तान की खामोशी मे एक शोर था। जब डॉक्टर किचलू और डॉक्टर सत्यपाल की गिरफ्तारी की खबर आई तो लोग हजारो की तादाद मे इकट्ठे हो गए कि सब मिलकर डिप्टी कमिश्नर बहादुर के पास जाएँ और अपने

महबूब लीडरों की जलावतनी के अहकाम मन्सूख[12] कराने की दरख़्वास्त करें, मगर वह ज़माना भाईजान, दरख्वास्तें सुनने का नहीं था सर माइकल-जैसा फिऔन[13] हाकिमे-आला[14] था; उसने दरख़्वास्त सुनना तो कुजा, लोगों के इस इज्तिमाअ[15] ही को ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दिया अमृतसर, वह अमृतसर जो कभी आज़ादी की तहरीक[16] का सबसे बडा मर्कज़[17] था, जिसके सीने पर जलियाँवाला बाग-जैसा काबिले-फख़्र[19] जख़्म था, आज किस हालत मे है उस मुकद्दस[19] शहर मे जो कुछ आज से पाँच बरस पहले हुआ, उसके जिम्मेदार भी अँग्रेज हैं होगे भाईजान, पर सच पूछिए तो उस लहू में, जो वहाँ बहा है, हमारे अपने ही हाथ रँगे हुए नजर आते हैं, खैर डिप्टी कमिश्नर साहब का बँगला सिविल लाइंस में था और हर बडा अफ़सर और हर बडा टोडी शहर के इसी अलग-थलग हिस्से में रहता था आपने अमृतसर देखा है तो आपको मालूम होगा कि शहर और सिविल लाइस को मिलानेवाला एक पुल है, जिस पर से गुज़रकर हम ठडी सडक पर पहुँचते हैं, जहाँ हाकिमों ने अपने लिए अरज़ी जन्नत[20] बनाई हुई थी हुजूम जब हाल दरवाज़े के क़रीब पहुँचा तो मालूम हुआ कि पुल पर घुडसवार गोरों का पहरा है हुजूम बिलकुल न रुका और बढता चला गया भाईजान, मैं इस हुजूम मे शामिल था, जोश कितना था, मैं बयान नही कर सकता, लेकिन सब निहत्थे थे, किसी के पास एक मामूली छडी तक भी नही थी अमल में हुजूम तो सिर्फ इस गर्ज से निकला था कि इज्तिमाई तौर पर अपनी आवाज हाकिमे-शहर तक पहुँचा सके और दरख़्वास्त करे कि डॉक्टर किचलू और डॉक्टर सत्यपाल को गैर-मशरूत[21] तौर पर रिहा कर दिया जाए हुजूम पुल की तरफ बढता रहा और जब पुल के करीब पहुँचा तो घुडसवार गोरो ने फायर शुरू कर दिए एक भगदड़ मच गई गोरे गिनती मे चद एक ही थे और हुजूम सैकडों पर मुश्तमिल[22] था लेकिन भाईजान, गोली की दहशत बहुत होती थी ऐसी अफरा-तफरी फैली कि अलअमाँ[23], कुछ लोग गोलियों से घायल हो गए और कुछ भगदड मे जख़्मी हो गए दाएँ हाथ की तरफ एक गदा नाला था, एक धक्का लगा तो मैं नाले मे गिर पडा गोलियाँ चलनी बद हुईं तो मैंने उठकर देखा कि हुजूम तितर-बितर हो चुका है वे लोग, जो जख़्मी हो गए थे, सडक पर पडे हुए थे और पुल पर घुडसवार गोरे हँस रहे थे भाईजान, मुझे कतअन याद नहीं कि उस वक्त मेरी दिमागी हालत किस किस्म की थी; मेरा खयाल है कि मेरे होशो-हवास पूरी तरह सलामत नही थे नाले में गिरते वक्त तो कतअन मुझे होश नही था, लेकिन जब मैं नाले से बाहर निकला तो जो हादिसा वकूपजीर[24] हो चुका था, उसके ख़द्दोख़ाल[25] आहिस्ता-आहिस्ता मेरे दिमाग मे उभरने शुरू हो गए दूर से शोर की आवाज आ रही थी, जैसे बहुत-से लोग ग़ुस्से मे चीख रहे हो, चिल्ला रहे हो मैं गदा नाला उबूर करके जाहिरा पीर के तकिए मे होता हुआ हाल दरवाजे के पास पहुँचा तो मैंने देखा कि तीस-चालीस नौजवान जोश के आलम मे पत्थर उठा-उठाकर हाल दरवाज़े के घडियाल पर मार रहे हैं घडियाल का शीशा टूटकर सडक पर गिरा तो एक नौजवान ने बाकियो से कहा . 'चलो, मलिका का बुत तोडे ' दूसरे ने कहा . 'नही आओ, कोतवाली को आग लगाएँ ' तीसरे ने कहा . 'और सारे बैंको को भी ' चौथे ने उन सबको रोका . 'ठहरो इससे क्या फायदा

होगा चलो पुल पर चलकर उन गोरो को मारे ' मैंने चौथे नौजवान को पहचान लिया वह थैला कजर था, उसका नाम मुहम्मद तुफैल था, मगर वह थैला कजर के नाम से मशहूर था, इसलिए कि वह एक तवाइफ़ के बत्न से था वह बडा आवारागर्द था, छोटी उम्र ही मे उसको जुए और शराब नोशी की लत पड गई थी उसकी दो बहने, शमशाद और अलमास , अपने वक्त की हसीन-तरीन तवाइफ़े थी, शमशाद का गला बहुत अच्छा था, उसका मुजरा सुनने के लिए रईस बडी-बडी दूर से आते थे दोनो बहने अपने भाई की करतूतों से बहुत नालाँ[26] थी, शहर मे मशहूर था कि दोनो ने एक तरह से अपने भाई को आक[27] कर रखा है, फिर भी वह किसी न किसी हीले से अपनी जरूरियात के लिए अपनी बहनो से कुछ न कुछ वसूल कर ही लेता था वैसे वह बहुत खुशपोश रहता था, अच्छा खाता था, अच्छा पीता था, वह बडा नफासतपसद था, बुज्लासजी[28] और लतीफागोई उसके मिजाज मे कूट-कूट के भरी हुई थी, मीरासियो और भाँडो के सोकियानापन[29] से वह बहत दूर रहता था, लबा कद, भरे-भरे हाथ-पाँव मजबूत कमरती बदन, नाक-नक्शे का भी वह खासा था पुरजोश लडको ने उसकी बात न सुनी और मलिका के बुत की तरफ जाने लगे, उसने फिर उनसे कहा 'मैं कहता हूँ, मत जाया करो अपना जोश इधर आओ मेरे साथ चलो उन गोरो को मारे जिन्होने हमारे बेकुसूर लोगो को जख्मी भी किया है और उनकी जान भी ली है खुदा की कसम, हम सब मिलकर उनकी गर्दन मरोड सकते हैं चलो ।' कुछ नौजवान मलिका के बुत की तरफ जा चुके थे, जो रह गए थे थैला की बात सुनकर रुक गए, थैला जब पुल की तरफ बढ़ा तो वे भी उसके पीछे-पीछे चलने लगे मैंने सोचा कि माँओ के यह लाल बेकार मौत के मुँह मे जा रहे हैं मैं फव्वारे के पास दुबका खडा था, मैंने वही से थैले को आवाज दी और कहा मत जाओ यार क्यो अपनी और इनकी जान के पीछे पडे हो ?' थैले ने मेरी बात सुनकर एक अजीब-सा कहकहा बुलद किया 'थैला सिर्फ यह बताना चाहता है कि वह गोलियो से डरनेवाला नही ।' फिर वह अपने पीछे आते हुए नौजवानो से मुखातिब[30] हुआ 'अगर तुम लोग डरते हो तो वापस जा सकते हो ।' ऐसे मौको पर बढ़े हुए कदम उलटे कैसे हो सकते हैं, और फिर वह भी उस वक्त, जब एक जोशीला नौजवान अपनी जान हथेली पर रखकर आगे बढ़ रहा हो थैले ने कदम तेज किए तो उसके पीछे-पीछे बढ़ते हुए नौजवानो के कदम भी तेज हो गए हाल दरवाजे से पुल तक का फासला कुछ ज्यादा दूर नही है, होगा कोई साठ-सत्तर गज के करीब थैला सबसे आगे था जहाँ से पुल का दो रूया[31] मुतवाजी[32] जँगला शुरू होता है वहाँ से पद्रह-बीस कदम के फासले पर उधर दो घुडसवार गोरे खडे थे यकायक थैले ने नारा लगाया जब वह जँगले के आगाज के करीब पहुँचा तो उधर से फायर हुआ मेरी आँखे आपसे आप मिच गईं, जाने मैंने क्यो समझा कि वह गिर पडा है, इस एहसास के साथ ही मैंने अपनी आँखे मुश्किल से खोली, मैंने देखा कि वह पीछे की तरफ देखते हुए आगे बढ रहा है फायर होते ही बाकी नौजवान भाग उठे थे और वह चिल्ला रहा था 'भागो नही चले आओ ।' उसका मुँह मेरी तरफ था कि एक और फायर हुआ उसने अपनी पीठ पर हाथ फेरा और पलटकर गोरो की तरफ देखा अब उसकी पीठ मेरी तरफ थी, मैंने

देखा कि उसकी सफेद बोसकी की कमीस पर लाल-लाल धब्बे पड गए हैं वह जख्मी शेर की तरह तेजी से आगे बढ़ा और पहले घुडसवार गोरे पर लपका इतने में एक और फायर हुआ फिर चश्म-जदन[13] मे जाने क्या हुआ कि एक घोडे की पीठ खाली थी; एक गोरा जमीन पर था और थैला उसकी छाती पर चढा बैठा था दूसरे घुडसवार गोरे ने, जो करीब ही था और जख्मी थैले की फुर्ती और लपक से बौखला गया था, अपने बिदकते हुए घोडे को रोका और फिर धडाधड फायर शुरू कर दिए इसके बाद क्या हुआ, मुझे मालूम नही, मैं वही फव्वारे के पास बेहोश होकर गिर पडा भाईजान, जब मुझे होश आया, मैंने देखा कि मैं अपने घर मे हूँ चंद जान-पहचान के लोग मुझे फव्वारे के पास से उठा लाए थे उनकी जबानी मुझे मालूम हुआ कि पुल पर गोली चलने की खबर से शहर मे बिखरा हुआ हुजूम मुश्तइल[14] हो गया था और इस इश्तिआल[15] का नतीजा यह निकला कि टाऊन हॉल और तीन बैंको को आग लगा दी गई, पाँच या छ गोरे मार दिए गए, और खूब लूट मची अंग्रेज अफसरो को लूट-खसोट का इतना खयाल नहीं था लेकिन पाँच या छ गोरे भी हलाक हो गए थे, इसी का बदला लेने के लिए जलियाँवाला बाग का खूनी हादसा रूनुमा[16] हुआ डिप्टी कमिश्नर बहादुर ने शहर की बागडोर जनरल डायर के सपुर्द कर दी जनरल साहब ने बारह अप्रैल को फौजियो के साथ शहर के मुख्तलिफ बाजारो मे मार्च किया और दर्जनो बेगुनाह लोग गिरफ्तार कर लिए तेरह अप्रैल को, बैसाखी के रोज, जलियाँवाला बाग मे जलसा हुआ, करीब-करीब पच्चीस हजार का मजमा था जनरल डायर मुसल्लह[17] गोरखो और सिक्खो के दस्ते के साथ वहाँ पहुँचा, और फिर निहत्थे लोगो पर गोलियो की अधाधुध बारिश शुरू हो गई उस खूनी हादिसे के फौरन बाद तो किसी को नुकसाने-जान का ठीक अदाजा न हो सका, लेकिन बाद मे जब तहकीक[18] हुई तो पता चला कि एक हजार से जाइद[19] लोग हलाक हुए हैं और तीन हजार के करीब जख्मी लेकिन मैं तो थैले कजर की बात कर रहा था भाईजान, ऑखो देखी आपको बता चुका हूँ बे ऐब जान खुदा की है, थैले मरहूम मे चारों ऐब शरई थे, वह एक पेशेवर तवायफ के बत्न से था, मगर वह जियाला था मैं अब यकीन के साथ कह सकता हूँ कि उस मलऊन[20] घुडसवार गोरे की पहली गोली भी थैले को लगी थी; जोश की हालत मे वह महसूस तक न कर सका था कि उसकी छाती मे गरम-गरम सीसा उतर चुका है, वह तो पहले फायर की आवाज सुनते ही गर्दन घुमाकर भागते हुए नौजवानों को पुकारने लगा था दूसरी गोली उसकी पीठ मे लगी थी और तीसरी फिर सीने में मैंने देखा तो नही था, पर सुना है कि जब उसका मर्दा जिस्म गोरे से जुदा किया गया था तो उसके दोनों हाथ गोरे की गर्दन में इस बुरी तरह पैवस्त थे कि बहुत मुश्किल से अलहदा किए जा सके थे गोरा जहन्नम वासिल[21] हो चुका था दूसरे रोज जब थैले की लाश कफ़न-दफन के लिए उसके घरवालों के सुपुर्द की गई तो लाश गोलियों से छलनी हो रही थी मेरा खयाल है कि जब उस दूसरे घुडसवार गोरे ने थैले पर अपना पूरा पिस्तौल खाली किया था, उससे पहले ही थैले की रूह कफसे-उंसुरी[22] से परवाज कर चुकी थी; उस शैतान के बच्चे ने सिर्फ थैले के मर्दा जिस्म पर चाँदमारी की थी कहते हैं, जब महल्ले में थैले की लाश पहुँची तो कोहराम मच गया अपनी बिरादरी

मे वह इतना मकबूल[41] नही था, लेकिन उसकी कीमा-कीमा लाश देखकर सब दहाड़ें मार-मारकर रोने लगे, उसकी बहनें, शमशाद और अलमास तो बेहोश हो गई, जब थैले का जनाजा उठा तो दोनो बहनो ने ऐसे बैन किए कि सुननेवाले लहू के आँसू रोने लगे भाईजान, मैंने कही पढ़ा है कि फ्रास के इन्क़िलाब मे पहली गोली वहाँ की एक टकियाई रडी के लगी थी मरहूम थैला, यानी मुहम्मद तुफैल एक तवाइफ का लडका था, इन्किलाब की उस जद्दो-जहद में पहली गोली, जो थैले को लगी, वह गोली दसवी थी या पचासवी, इसके मुताल्लिक किसी ने भी तहकीक नही की है, शायद इसलिए कि समाज मे उस गरीब का कोई रुत्बा नही था, मैं समझता हूँ कि पजाब के उस खूनी गुस्ल मे नहानेवालो की फेहरिस्त मे थैले कजर का नामो-निशान तक भी न होगा, और यह भी कौन जानता है कि ऐसी कोई फेहरिस्त कभी बनाई भी गई थी सख्त हगामी दिन थे, फौजी हुकूमत का दौर-दौरा था, वह देव, जिसे मार्शल लॉ कहते हैं शहर की गली-गली, शहर के कूचे-कूचे मे डकारता फिरता था अफरा-तफरी के आलम मे थैले गरीब को यूँ जल्दी-जल्दी दफन किया गया, जैसे उसकी मौत उसके सोगवार अजीजो का एक सगीन जुर्म हो, और जिसके निशानात वह मिटा देना चाहते हो बस भाईजान, थैला मर गया, थैला दफना दिया गया और और "

मेरा हमसफर पहली मर्तबा कुछ और कहते-कहते रुक गया और खामोश हो गया।

ट्रेन दनदनाती हुई चली जा रही थी—मुझे कुछ ऐसा महसूस हुआ कि पटरियो की खटाखट ने कहना शुरू कर दिया है 'थैला मर गया, थैला दफना दिया गया थैला मर गया, थैला दफना दिया गया ' जैसे इस मरने और उस दफनाने के दरमियान कोई फासला न हो, जैसे वह इधर मरा, उधर दफना दिया गया—पटरियो की खटाखट के साथ पटरियो के उन अल्फाज की हमआहगी[44] मुझे कुछ इस कदर जज्बात से आरी लगी कि मुझे अपने दिमाग से पटरियो और अल्फाज, दोनो को जुदा करना पडा।

मैंने अपने हमसफर से कहा 'आप कुछ और भी कहनेवाले थे।"

चौंककर उसने मेरी तरफ देखा ' "जी हाँ इस दास्तान का एक दर्दनाक हिस्सा अभी बाकी है।"

मैंने पूछा "क्या?"

उसने कहना शुरू किया "मैं आपसे अर्ज कर चुका हूँ कि थैले की दो बहने थी, शमशाद और अलमास, बहुत खूबसूरत शमशाद लबी थी, पतले-पतले नक्श, गिलाफी आँखे, ठुमरी बहुत खूब गाती थी, सुना है, खाँ साहब फतह अली खाँ से तालीम लेती रही थी अलमास के गले मे सुर नही था, लेकिन बतावे[45] मे अपना सानी नही रखती थी, मुजरा करती थी तो ऐसा लगता था कि उसका अग-अग बोल रहा है, उसके हर भाव मे एक घात होती थी, उसकी आँखो मे वह जादू था, जो हर एक के सिर चढ़ के बोलता था "

मेरे हमसफर ने थैले की दोनों बहनो की तारीफो-तौसीफ[46] बयान करने मे कुछ जरूरत से ज्यादा वक्त लिया, मगर मैंने टोकना मुनासिब न समझा।

थोडी देर के बाद वह खुद ही उस लबे चक्कर से बाहर निकला और दास्तान के दर्दनाक

हिस्से की तरफ लौट आया "बस किस्सा यह है भाईजान, कि उन आफत की परकाला दोनों बहनों के हुस्नो-जमाल[47] का जिक्र किसी खुशामदी टोडी ने गोरे फौजी अफसरो से कर दिया जो पाँच या छ गोरे हलाक कर दिए गए थे, उनमें एक मेम भी थी क्या नाम था उस चुडैल का हाँ, मिस शैरोड तो गोरे फौजी अफसरो ने तय किया कि थैले की दोनो बहनो को बुलवाया जाए और और जी भर के इंतिकाम लिया जाए आप समझ गए ना भाईजान ?"

मैंने कहा "जी हाँ !"

मेरे हमसफर ने एक आह भरी "मर्गो-मातम[48] ऐसे नाजुक मामलों मे तवाइफे और कसबियाँ भी माँएँ-बहनें होती हैं भाईजान, यह मुल्क अपनी इज्जतो-नामूस[49] को, मेरा खयाल है, पहचानता तक नही जब ऊपर से इलाके के थानेदार को आर्डर मिला तो वह फौरन तैयार हो गया वह खुद शमशाद और अलमास के मकान पर गया और उसने कहा कि साहब लोगों ने दोनो बहनों को याद किया है, वह उनका मुजरा सुनना चाहते हैं भाई की कब्र की मिट्टी भी अभी तक खुश्क नही हुई थी, अल्लाह को प्यारा हुए उस गरीब को अभी सिर्फ दो दिन ही हुए थे कि कि बहनो को हाजिरी का यह हुक्म सादिर हुआ कि आओ, हाकिम के हुजूर नाचो अजीयत[50] का इससे बढ़कर पुरअजीयत तरीका और क्या हो सकता है मुस्तबद तमस्खुर[51] की ऐसी मिसाल, मेरा खयाल है, शायद ही कोई और मिल सके हुक्म देनेवालों को इतना खयाल भी न आया कि तवाइफ भी गैरतमद होती है हो सकती है क्यो नही हो सकती ?" मेरे हमसफर ने यकायक अपने-आपसे सवाल किया, लेकिन वह मुखातिब मुझसे ही था।

मैंने कहा "हो सकती है।"

"जी हाँ थैला आखिर उनका भाई था, उसने किसी किमारखाने[52] की लडाई-भिडाई में अपनी जान नही दी थी, वह शराब पीकर दगा-फसाद करते हुए हलाक नही हुआ था उसने अपने वतन की राह में बडे बहादुराना तरीके पर शहादत[53] का जाम पिया था वह एक तवाइफ के बत्न से था, लेकिन वह तवाइफ माँ भी तो थी शमशाद और अलमास उसी माँ की बेटियाँ थी वह थैले की बहने पहले थी, तवाइफ बाद मे थी वह थैले की लाश देखकर बेहोश हो गई थी और जब थैले का जनाजा उठा था तो उन्होने ऐसे बैन[54] किए थे कि सुनकर लोग लहू रोने लगे थे "

मैंने पूछा "तो क्या वे गई ?"

मेरे हमसफर ने थोडे वक्फे के बाद अफसुर्दगी से जवाब दिया "जी हाँ जी हाँ, वह गई, खूब सज-बनकर " एकदम मेरे हमसफर की अफसुर्दगी तीखापन इख्तियार कर गई "खूब सोलह सिंगार करके वे अपने बुलानेवालो के पास गई कहते हैं कि खूब महफिल जमी दोनो बहनों ने अपने-अपन जौहर दिखाए जर्क-बर्क पश्वाजो मे मलबूस[55] वे कोहकाफ की परियाँ मालूम हो रही थीं शराब के दौर चलते रहे और वे नाचती-गाती रही और कहते हैं कि कि रात के दो बजे एक बडे गोरे अफसर के इशारे पर महफिल बरख्वास्त हुई " मेरा हमसफर कुछ देर खामोश रहा, फिर वह उठ खडा हुआ और झुकते

हुए खिड़की से बाहर पीछे की तरफ़ भागते हुए दरख़्तों और खंबों को देखने लगा।

ट्रेन के पहियों और पटरियों की आहनी[56] गड़गड़ाहट की ताल पर उसके आखिरी दो लफ्ज नाच रहे थे : 'बरख़्वास्त हुई बरख़्वास्त हुई '।

मैंने अपने दिमाग़ में उसके आख़िरी दो लफ़्ज़ों को आहनी गड़गड़ाहट से नोचकर अलहदा करते हुए उससे पूछा : "फिर क्या हुआ ?"

पीछे भागते हुए दरख़्तों और खंबों से नज़रें हटाकर उसने बड़े मज़बूत लहजे में कहा : "फिर उन्होंने अपनी ज़र्क़-बर्क़ पशवाजे नोच डालीं और अलिफ़ नंगी हो गईं और कहने लगीं : "लो हमें देख लो हम थैले की बहनें हैं उस शहीद की बहनें, जिसके ख़ूबसूरत जिस्म को तुमने सिर्फ़ इसलिए अपनी गोलियों से छलनी-छलनी किया था कि उस जिस्म में अपने वतन से मुहब्बत करनेवाली रूह बसी हुई थी हम उसी थैले की ख़ूबसूरत बहनें हैं आओ और अपनी शहवत[57] के गर्म-गर्म लोहे से हमारा ख़ुशबुओं में बसा हुआ जिस्म दाग़दार करो मगर ऐसा करने से पहले सिर्फ़ हमें एक बार अपने मुँह पर थूक लेने दो" यह कहकर मेरा हमसफ़र खामोश हो गया, कुछ इस तरह कि अब वह कुछ नहीं कहेगा।

मैंने फौरन ही पूछा : "फिर क्या हुआ ?"

उसकी आँखों में आँसू डबडबा आए : "उनको उनको गोली से उड़ा दिया गया "

मैंने कुछ न कहा।

ट्रेन स्टेशन में दाख़िल हो चुकी थी—जब ट्रेन रुक गई तो उसने एक कुली को बुलाकर अपना असबाब उठवाया; जब वह जाने लगा तो मैंने उससे कहा "आपने जो दास्तान सुनाई है, उसका अंजाम मुझे आपका ख़ुदसाख़्ता[58] मालूम होता है।"

चौंककर उसने मेरी तरफ़ देखा : "यह आपने कैसे जाना ?"

मैंने कहा : "आपके लहजे की मज़बूती में एक नाक़ाबिले-बयान करब[59] था "

मेरे हमसफ़र ने अपने हल्क़ की तल्ख़ी थूक के साथ निगलते हुए कहा : "जी हाँ उन हराम " वह गाली देते-देते रुक गया : "उन्होंने अपने शहीद भाई के नाम पर बट्टा लगा दिया था " यह कहकर वह प्लेटफार्म पर उतर गया।

---

1. विरोध प्रदर्शन; 2 भारतीय सुरक्षा अधिनियम; 3. रक्तरंजित; 4. निष्कासित किया हुआ; 5. आदेश; 6. विरोध प्रदर्शन; 7. हिंसा, 8. सत्ताधारक, राजा, हुकूमत करनेवाले; 9. पीछे पड़ जाना; 10. आयोजित; 11. पर्दे के पीछे; 12. रद्द; 13. मिस्र के एक अत्याचारी बादशाह का नाम; 14 उच्चाधिकारी; 15. सम्मेलन; 16. आंदोलन, 17 केंद्र; 18. गर्व करने योग्य; 19. पवित्र, 20 धरती का स्वर्ग; 21. सशर्त, 22 आधारित, 23. अल्लाह की शरण, 24. घटित; 25. नै-नक़्शा; 26. नाराज़; 27. अधिकारों से वंचित, 28. हास्य-विनोद; दार्शनिकता; 30. संबोधित; 31. तरफ; 32. समानांतर; 33. पलक झपकते ही; 34. क्रोधित, भड़का हुआ; 35. उत्तेजना; 36. प्रकट होना; 37. सशस्त्र; 38. जाँच-पड़ताल; 39. अधिक; 40. एक गाली; 41. पहुँचना; 42. पंचभूत रूपी पिंजड़े; 43. लोकप्रिय; 44. मिलती-जुलती; 45. दिखावे; 46. प्रशंसा; 47. सौंदर्य; 48. मृत्यु व शोक; 49. मान-मर्यादा, 50. अन्यायपूर्ण मज़ाक 52. जुएख़ाने; 53. वीरगति; 54. चमकीले वस्त्रों में; 56. लोहे-जैसे; 57. कामेच्छा; 58. स्वयं बनाया हुआ; 59. कष्ट, पीड़ा।

काली शलवार

देहली आने से पहले वह अंबाला छावनी में थी, जहाँ कई गोरे उसके गाहक थे। उन गोरों से मिलने-जुलने के बायस वह अँग्रेज़ी के दस-पंद्रह जुमले सीख गई थी। उनको वह आम गुफ़्तुगू में इस्तेमाल नहीं करती थी लेकिन जब वह देहली में आई और उसका कारोबार न चला तो एक दिन उसने अपनी पड़ोसन तमंचाजान से कहा. "दिस लैफ़, वेरी बैड " यानी यह ज़िंदगी बहुत बुरी है जबकि खाने ही को कुछ नहीं मिलता।

अंबाला छावनी में उसका धंधा बहुत अच्छी तरह चलता था। छावनी के गोरे शराब पीकर उसके पास आते थे और वह तीन-चार घंटों ही में आठ-दस गोरों को निबटाकर बीस-तीस रुपए पैदा कर लिया करती थी। ये गोरे उसके हमवतनों के मुक़ाबले में बहुत अच्छे थे। इसमें कोई शक नहीं कि वह ऐसी ज़ुबान बोलते थे, जिसका मतलब सुलताना की समझ में नहीं आता था मगर उनकी ज़ुबान से यह लाइल्मी उसके हक़ में बहुत अच्छी साबित होती थी। अगर वे उससे कुछ रिआयत चाहते तो वह सिर हिलाकर कह दिया करती थी; "साहब, हमारी समझ में तुम्हारी बात नहीं आता।" और अगर वे उससे ज़रूरत से ज़्यादा छेड़छाड़ करते तो वह उनको अपनी ज़ुबान में गालियाँ देना शुरू कर देती थी। वह हैरत में उसके मुँह की तरफ़ देखते तो वह उनसे कहती : "साहब, तुम एकदम उल्लू का पट्ठा है, हरामज़ादा है समझा!" यह कहते वक़्त वह अपने लहजे में सख़्ती पैदा न करती बल्कि बड़े प्यार के साथ उनसे बातें करती—गोरे हँस देते और हँसते वक़्त वह सुलताना को बिलकुल उल्लू के पट्ठे दिखाई देते।

मगर यहाँ दिल्ली में वह जब से आई थी, एक गोरा भी उसके यहाँ नहीं आया था। तीन महीने उसको हिंदुस्तान के इस शहर में रहते हो गए थे, जहाँ उसने सुना था कि बड़े लाट साहब रहते हैं, जो गर्मियों में शिमले चले जाते हैं—उसके पास सिर्फ़ छः आदमी आए थे। सिर्फ़ छः, यानी महीने में दो और उन छः गाहकों से उसने, ख़ुदा झूठ न बुलवाए, साढ़े अट्ठारह रुपए वसूल किए थे। तीन रुपए से ज़्यादा पर कोई मानता ही नहीं था। सुलताना ने उनमें से पाँच आदमियों को अपना रेट दस रुपए बताया था मगर ताज्जुब की बात है कि उनमें से हर एक ने यही कहा था; "भई, हम तीन रुपए से ज़्यादा एक कौड़ी नहीं देंगे..." जाने क्या बात थी कि उनमें से हर एक ने उसे सिर्फ़ तीन रुपए के क़ाबिल समझा, चुनांचे जब छठा आया तो उसने ख़ुद उससे कहा : "देखा, मैं तीन रुपए एक टैम के लूँगी। इससे

एक धेला तुम कम कहो तो न होगा। अब तुम्हारी मर्जी हो तो रहो वरना जाओ।" छठे आदमी ने यह बात सुनकर तकरार न की और उसके यहाँ ठहर गया। जब दूसरे कमरे मे दरवाजे-वरवाजे बद करके वह अपना कोट उतारे लगा तो सुलताना ने कहा "लाइए एक रुपया दूध का।" उसने एक रुपया तो न दिया लेकिन नए बादशाह की चमकती हुई अठन्नी जेब में से निकालकर उसको दे दी और सुलताना ने भी चुपके से ले ली कि चलो जो आया है, गनीमत है।

साढ़े अट्ठारह रुपए तीन महीनों मे—बीस रुपए माहवार तो उस कोठे का किराया था, जिसको मालिक मकान अँग्रेजी जबान में फ्लैट कहता था। उस फ्लैट मे ऐसा पाखाना था, जिसमें जजीर खीचने से सारी गदगी पानी के जोर से एकदम नीचे नल मे गायब हो जाती थी और बडा शोर होता था। शुरू-शुरू मे तो उस शोर ने उसे बहुत डराया था। पहले दिन जब वह रफा-हाजत[1] के लिए उस पाखाने में गई तो उसकी कमर मे शिद्दत[2] का दर्द हो रहा था। फारिग होकर जब वह उठने लगी तो उसने लटकी हुई जजीर का सहारा ले लिया। उस जजीर को देखकर उसने खयाल किया, चूँकि यह मकान खास हम लोगों की रिहाइश के लिए तैयार किए गए हैं, यह जजीर इसीलिए लगाई गई है कि उठते वक्त तकलीफ न हो और सहारा मिल जाया करे। मगर ज्यो ही उसने जजीर को पकडकर उठना चाहा, ऊपर खटखट-सी हुई और फिर पानी एकदम इस जोर के साथ बाहर निकला कि डर के मारे उसके मुँह से चीख निकल गई।

खुदाबख्श दूसरे कमरे में अपना फोटोग्राफी का सामान दुरुस्त कर रहा था और एक साफ बोतल में हाइड्रो कोनीन[3] डाल रहा था कि उसने सुलताना की चीख सुनी। दौडकर वह बाहर निकला और सुलताना से पूछा "क्या हुआ ? यह चीख तुम्हारी थी ?"

सुलताना का दिल धडक रहा था। उसने कहा "यह मुवा पैखाना है या क्या है ? बीच मे यह रेलगाडियो की तरह जजीर क्या लटका रखी है ? मेरी कमर में दर्द था, मैंने कहा, चलो इसका सहारा ले लूँगी, पर इस मुई जजीर को छेडना था कि वह धमाका हुआ कि मैं तुमसे क्या कहूँ "

इस पर खुदाबख्श बहुत हँसा था और उसने सुलताना को इस पाखाने की बाबत सबकुछ बता दिया था कि यह नए फैशन का है, जिसमे जजीर हिलाने से सब गदगी जमीन मे धँस जाती है।

खुदाबख्श और सुलताना का आपस मे कैसे सबध हुआ, यह एक लबी कहानी है। खुदाबख्श रावलपिंडी का था। इटरेस पास करने के बाद उसने लारी चलाना सीखी। चुनाचे चार बरस तक वह रावलपिंडी और कश्मीर के दरमियान लारी चलाने का काम करता था। उसके बाद कश्मीर मे उसकी दोस्ती एक औरत से हो गई। उसको भगाकर वह साथ ले आया। लाहौर मे चूँकि उसको कोई काम न मिला, इसलिए उसने औरत को पेशे पर बिठा दिया। दो-तीन बरस तक यह सिलसिला जारी रहा। फिर वह औरत किसी और के साथ भाग गई। खुदाबख्श को मालूम हुआ कि वह अबाला में है, वह उसकी

तलाश में आया, जहाँ उसको सुलताना मिल गई। सुलताना ने उसको पसंद किया। चुनांचे दोनों का संबंध हो गया।

ख़ुदाबख़्श के आने से एकदम सुलताना का कारोबार चमक उठा। औरत चूँकि ज़ईफ़ुल-एतिक़ाद[4] थी, इसलिए उसने समझा कि ख़ुदाबख़्श बड़ा भागवान है, जिसके आने से इतनी तरक़्क़ी हो गई है। चुनांचे उस ख़ुश-ऐतिक़ादी[5] ने ख़ुदाबख़्श की वक़अत उसकी नज़रों में और भी बढ़ा दी।

ख़ुदाबख़्श आदमी मेहनती था। सारा दिन हाथ पर हाथ धरकर बैठना पसंद नहीं करता था। चुनांचे उसने एक फ़ोटोग्राफ़र से दोस्ती पैदा की, जो रेलवे स्टेशन के बाहर मिनट कैमरे से फ़ोटो खींचा करता था। उससे उसने फ़ोटो खींचना सीखा। फिर सुलताना से साठ रुपए लेकर कैमरा भी ख़रीद लिया। आहिस्ता-आहिस्ता एक परदा बनवाया, दो कुर्सियाँ ख़रीदीं और फ़ोटो धोने का सब सामान लेकर उसने अलहदा अपना काम शुरू कर दिया।

काम चल निकला। चुनांचे उसने थोड़ी ही देर के बाद अपना अड्डा अंबाले छावनी में क़ायम कर दिया। यहाँ वह गोरों के फ़ोटो खींचता। एक महीने के अंदर-अंदर उसकी छावनी के मुताद्दिद[6] गोरों से वाक़िफ़ियत हो गई। चुनांचे वह सुलताना को वहीं ले गया। यहाँ छावनी में ख़ुदाबख़्श के ज़रिए से कई गोरे सुलताना के मुस्तक़िल[7] गाहक बन गए।

सुलताना ने कानों के लिए बुंदे ख़रीदे, साढ़े पाँच तोले की आठ कंगनियाँ भी बनवाईं, दस-पंद्रह अच्छी-अच्छी साड़ियाँ भी जमा कर लीं। घर में फ़र्नीचर वग़ैरह भी आ गया। क़िस्सा मुख़्तसर[8] यह कि अंबाला छावनी में वह बड़ी ख़ुशहाल थी मगर एकाएकी जाने ख़ुदाबख़्श के दिल में क्या समाई कि उसने देहली जाने की ठान ली। सुलताना इनकार कैसे करती जबकि ख़ुदाबख़्श को अपने लिए बहुत मुबारक ख़याल करती थी। उसने ख़ुशी-ख़ुशी देहली जाना क़ुबूल कर लिया। बल्कि उसने यह भी सोचा कि उतने बड़े शहर में जहाँ लाट साहब रहते हैं, उसका धंधा और भी अच्छा चलेगा। अपनी सहेलियों से वह देहली की तारीफ़ सुन चुकी थी। फिर वहाँ हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया की ख़ानक़ाह[9] भी थी जिससे उसे बेहद अक़ीदत[10] थी। चुनांचे जल्दी-जल्दी घर का भारी सामान बेच-बचाकर वह ख़ुदाबख़्श के साथ देहली आ गई। यहाँ पहुँचकर ख़ुदाबख़्श ने बीस रुपए माहवार पर यह फ़्लैट लिया, जिसमें दोनों रहने लगे।

एक ही क़िस्म के नए मकानों की लंबी क़तार सड़क के साथ-साथ चली गई है। म्युनिसिपल कमेटी ने शहर का यह हिस्सा ख़ास कसबियों के लिए मुक़र्रर कर दिया था ताकि वह शहर में जगह-जगह अपने अड्डे न बनाएँ। नीचे दूकानें थीं और ऊपर दो मंज़िला रिहाइशी फ़्लैट। चूँकि सब इमारतें एक ही डिज़ाइन की हैं, इसलिए शुरू-शुरू में सुलताना को अपना फ़्लैट तलाश करने में बहुत दिक़्क़त महसूस होती थी। पर जब नीचे लांड्रीवाले ने अपना बोर्ड घर की पेशानी पर लगा दिया तो उसको एक पक्की निशानी मिल गई—'यहाँ मैले कपड़ों की धुलाई की जाती है।' यह बोर्ड पढ़ते ही वह अपना फ़्लैट तलाश कर लिया करती थी। इसी तरह उसने और बहुत-सी निशानियाँ क़ायम कर ली थीं।

मसलन बड़े-बड़े हर्फ़ में जहाँ 'कोयलों की दूकान' लिखा था, वहाँ उसकी सहेली हीराबाई रहती थी, जो कभी-कभी रेडियोघर में गाने जाया करती थी। जहाँ 'शुर्फ़ा[11] के लिए खाने का आला इंतज़ाम है' लिखा था, वहाँ उसकी दूसरी सहेली मुख़्तार रहती थी। निवाड़ के कारख़ाने के ऊपर अनवरी रहती थी, जो उसी कारख़ाने के सेठ के पास मुलाज़िम थी। चूँकि सेठ साहब को रात के वक़्त अपने कारख़ाने की देखभाल करनी होती थी, इसलिए वह अनवरी के पास ही रहते थे।

दूकान खोलते ही गाहक थोड़े ही आते हैं। चुनांचे जब एक महीने तक सुलताना बेकार रही तो उसने यही सोचकर अपने दिल को तसल्ली दी, पर जब दो महीने गुज़र गए और कोई आदमी उसके कोठे पर न आया तो उसे बहुत तश्वीश[12] हुई। उसने ख़ुदाबख़्श से कहा : "क्या बात है ख़ुदाबख़्श, पूरे दो महीने हो गए हैं हमें यहाँ आए हुए, पर किसी ने इधर का रुख भी नहीं किया मानती हूँ, आजकल बाज़ार बहुत मंदा है, पर इतना मंदा भी तो नहीं कि महीने भर में कोई-शक्ल देखने ही में न आए ।"

ख़ुदाबख़्श को भी यह बात बहुत अर्से से खटक रही थी मगर वह ख़ामोश था, पर जब सुलताना ने ख़ुद बात छेड़ी तो उसने कहा : "मैं कई दिनों से इसकी बाबत सोच रहा हूँ। एक बात समझ में आती है, वह यह कि जंग की वजह से लोग-बाग दूसरे धंधों में पड़कर इधर का रास्ता भूल गए हैं या फिर यह तो सकता है कि "वह इसके आगे कुछ कहने ही वाला था कि सीढ़ियों पर किसी के चढ़ने की आवाज आई। ख़ुदाबख़्श और सुलताना दोनों उस आवाज़ की तरफ़ मुतवज्जेह[13] हुए। थोड़ी देर के बाद दस्तक हुई। ख़ुदाबख़्श ने लपककर दरवाजा खोला। एक आदमी अंदर दाख़िल हुआ। यह पहला गाहक था, जिससे तीन रुपए में सौदा तय हुआ। उसके बाद पाँच और आए। यानी तीन महीने में छः जिन सुलताना ने सिर्फ़ साढ़े अट्ठारह रुपए वसूल किए।

बीस रुपए माहवार तो फ़्लैट के किराए में चले जाते थे, पानी का टैक्स और बिजली का बिल जुदा। इसके अलावा घर के दूसरे ख़र्च, खाना-पीना, कपड़े-लत्ते, दवा-दारू—और आमदन कुछ भी नहीं थी। साढ़े अट्ठारह रुपए तीन महीने में आए तो उसे आमदन तो नहीं कह सकते। सुलताना परेशान हो गई। साढ़े पाँच तोले की आठ कंगनियाँ जो उसने अंबाले में बनवाई थीं, आहिस्ता-आहिस्ता बिक गईं। आख़िरी कंगनी की जब बारी आई तो उसने ख़ुदाबख़्श से कहा : "तुम मेरी सुनो और चलो वापिस अंबाले यहाँ क्या धरा है ? भई होगा, पर हमें तो यह शहर रास नहीं आया। तुम्हारा काम भी वहाँ ख़ूब चलता था, चलो, वहीं चलते हैं। जो नुक़सान हुआ है, उसको अपना सिर सदक़ा समझो। इस कंगनी को बेचकर आओ। मैं असबाब वग़ैरह बाँधकर तैयार रखती हूँ। आज रात की गाड़ी से यहाँ से चल देंगे "

ख़ुदाबख़्श ने कंगनी सुलताना के हाथ से ले ली और कहा : " नहीं जानेमन, अंबाले नहीं जाएँगे। यहीं देहली में रहकर कमाएँगे। यह तुम्हारी चूड़ियाँ सबकी-सब यहीं वापिस आएँगी। अल्लाह पर भरोसा रखो। वह बड़ा कारसाज़ है। यहाँ भी वह कोई न कोई असबाब बना ही देगा !"

सुलताना चुप हो रही। चुनाचे आखिरी कगनी भी हाथ से उतर गई। बुच्चे हाथ देखकर उसको बहुत दुख होता था, पर क्या करती, पेट भी तो आखिर किसी हीले से भरना था।

जब पाँच महीने गुजर गए और आमदन खर्च के मुकाबले में चौथाई से भी कुछ कम रही तो सुलताना की परेशानी और ज्यादा बढ़ गई। खुदाबख्श भी सारा-सारा दिन अब घर से ग़ायब रहने लगा था। सुलताना को इसका भी दुख था। इसमें कोई शक नही कि पडोस में उसकी दो-तीन मिलनेवालियाँ मौजूद थी, जिनके साथ वह अपना वक्त काट सकती थी। पर हर रोज उनके यहाँ जाना और घटो बैठे रहना उसको बहुत बुरा लगता था। चुनाचे आहिस्ता-आहिस्ता उसने उन सहेलियो से मिलना-जुलना बिलकुल तर्क[14] कर दिया। सारा दिन वह अपने सुनसान मकान मे बैठी रहती। कभी छालियाँ काटती रहती, कभी अपने पुराने और फटे हुए कपडो को सीती रहती और कभी बाहर बालकनी में आकर जगले के साथ लगकर खडी हो जाती और सामने रेलवे शेड मे साकित[15] और मुतहर्रिक[16] इजनों की तरफ घटों बेमतलब देखती रहती।

सडक की दूसरी तरफ मालगोदाम था, जो इस कोने से उस कोने तक फैला हुआ था। दाहिने हाथ को लोहे की छत के नीचे बडी-बडी गाँठें पडी रहती थी और हर किस्म के मालो-असबाब के ढेर-से लगे रहते थे। बाएँ हाथ को खुला मैदान था, जिसमें बेशुमार रेल की पटरियाँ बिछी हुई थी। धूप में लोहे की यह पटरियाँ चमकती तो सुलताना अपने हाथों की तरफ देखती, जिन पर नीली-नीली रगे बिलकुल उन पटरियों की तरह उभरी रहती थी। उस लबे और खुले मैदान में हर वक्त इजन और गाडियाँ चलती रहती। कभी इधर, कभी उधर। उन इजनों और गाडियों की छक-छक फक-फक सदा गूँजती रहती थी। सुबह-सवेरे जब वह उठकर बालकनी में आती तो एक अजीब समाँ नजर आता। धुँधलके में इजनों के मुँह से गाढ़ा-गाढ़ा धुआँ निकलता और गदले आसमान की जानिब मोटे और भारी आदमियों की तरह उठता दिखाई देता। भाप के बडे-बडे बादल भी एक शोर के साथ पटरियों से उठते और आँख झपकने की देर मे हवा के अदर घुल-मिल जाते। फिर कभी-कभी जब वह गाडी के किसी डिब्बे को जिसे इजन ने धक्का देकर छोड दिया हो, अकेले पटरियों पर चलता देखती तो उसे अपना खयाल आता। वह सोचती कि उसे भी किसी ने जिंदगी की पटरी पर धक्का देकर छोड दिया है और वह खुद ब खुद जा रही है, दूसरे लोग काँटे बदल रहे हैं और वह चली जा रही है न जाने कहाँ? फिर एक रोज ऐसा आएगा जब उस धक्के का जोर आहिस्ता-आहिस्ता खत्म होगा और वह कही रुक जाएगी, किसी ऐसे मुकाम पर जो उसका देखा-भाला न होगा।

यूँ तो वह बेमतलब घटो रेल की इन टेढ़ी-बाँकी पटरियो और ठहरे और चलते हुए इजनों की तरफ देखती रहती थी, पर तरह-तरह के खयाल उसके दिमाग मे आते रहते थे। अंबाला छावनी मे जब वह रहती थी तो स्टेशन के पास ही उसका मकान था मगर वहाँ उसने कभी इन चीजों को ऐसी नजरों से नही देखा था। अब तो कभी-कभी उसके दिमाग मे यह खयाल भी आता कि यह जो सामने रेल की पटरियों का जाल-सा बिछा है और

जगह-जगह से भाप और धुआँ उठ रहा है, एक बहुत बड़ा चकला है। बहुत-सी गाडियाँ हैं, जिनको चंद मोटे-मोटे इंजन इधर-उधर धकेलते रहते हैं—सुलताना को बाज़ औक़ात यह इंजन सेठ मालूम होते, जो कभी-कभी अंबाला में उसके यहाँ आया करते थे। फिर कभी-कभी जब वह किसी इंजन को आहिस्ता-आहिस्ता गाड़ियों की क़तार के पास से गुज़रता देखती तो उसे ऐसा महसूस होता कि कोई आदमी चकले के किसी बाज़ार में से ऊपर कोठों की तरफ देखता जा रहा है।

सुलताना समझती थी कि ऐसी बातें सोचना दिमाग की खराबी का बायस है, चुनांचे जब इस क़िस्म के ख़याल उसको आने लगे तो उसने बालकनी में जाना छोड दिया। खुदाबख़्श से उसने बारहा[17] कहा "देखो, मेरे हाल पर रहम करो। यहाँ घर मे रहा करो। मैं सारा दिन यहाँ बीमारों की तरह पडी रहती हूँ।" मगर उसने हर बार सुलताना से यह कहकर उसकी तशफ्फ़ी[18] कर दी . "जानेमन! मैं बाहर कुछ कमाने की फिक्र कर रहा हूँ। अल्लाह ने चाहा तो चद दिनों मे ही बेडा पार हो जाएगा ."

पूरे पाँच महीने हो गए थे मगर अभी तक न सुलताना का बेडा पार हुआ था न खुदाबख्श का। मुहर्रम का महीना सिर पर आ रहा था मगर सुलताना के पास काले कपडे बनवाने के लिए कुछ भी न था। मुखतार ने लेडी हैमिलटन की एक नई वजा की कमीज बनवाई थी, जिसकी आस्तीने काली जार्जेट की थी। उसके साथ मैच करने के लिए उसके पास काली साटन की शलवार थी, जो काजल की तरह चमकती थी। अनवरी ने रेशमी जार्जेट की एक बडी नफीस साडी खरीदी थी। उसने सुलताना से कहा था कि वह इस साडी के नीचे सफेद बोसकी का पेटीकोट पहनेगी, क्योंकि यह नया फैशन है। उस साडी के साथ पहनने को अनवरी काली मखमी का एक जूता लाई थी, जो बड़ा नाजुक था। सुलताना ने जब यह तमाम चीजें देखीं तो उसको इस एहसास ने बहुत दुख दिया कि वह मुहर्रम मनाने के लिए ऐसा लिबास खरीदने की इस्तिताअत[19] नहीं रखती।

अनवरी और मुखतार के पास यह लिबास देखकर जब वह घर आई तो उसका दिल बहुत मगमूम[20] था। उसे ऐसा मालूम होता था कि एक फोडा-सा उसके अंदर पैदा हो गया है। घर बिलकुल खाली था। खुदाबख्श हस्बे-मामूल बाहर था। देर तक वह दरी पर गावतकिया सिर के नीचे रखकर लेटी रही। पर जब उसकी गर्दन ऊँचाई के बायस अकड-सी गई तो वह बाहर बालकनी में चली गई ताकि ग़म अफ़्ज़ा[21] खयालात को अपने दिमाग़ से निकाल दे।

सामने पटरियों पर गाड़ियों के डिब्बे खड़े थे, पर इंजन कोई भी न था—शाम का वक़्त था। छिडकाव हो चुका था, इसलिए गर्दो-गुबार दब गया था। बाज़ार में ऐसे आदमी चलने शुरू हो गए थे जो ताक-झाँक करने के बाद चुपचाप घरों का रुख करते हैं। ऐसे ही एक आदमी ने गर्दन ऊँची करके सुलताना की तरफ़ देखा। सुलताना मुसकरा दी और उसको भूल गई, क्योंकि अब सामने पटरियों पर एक इंजन नमूदार हो गया था। सुलताना ने गौर से उसकी तरफ़ देखना शुरू किया और आहिस्ता-आहिस्ता यह खयाल उसके दिमाग में आया कि इंजन ने भी काला लिबास पहन रखा है। यह अजीबो-ग़रीब खयाल

दिमाग़ में से निकालने की खातिर जब उसने सड़क की जानिब देखा तो उसे वही आदमी बैलगाड़ी के पास खड़ा नज़र आया जिसने उसकी तरफ़ ललचाई नज़रों से देखा था। सुलताना ने हाथ से उसे इशारा किया। उस आदमी ने इधर-उधर देखकर एक लतीफ़ इशारे से पूछा, किधर से आऊँ—सुलताना ने उसे रास्ता बता दिया। वह आदमी थोड़ी देर खड़ा रहा मगर फिर बड़ी फ़ुर्ती से ऊपर चला आया।

सुलताना ने उसे दरी पर बिठाया। जब वह बैठ गया तो उसने सिलसिला-ए-गुफ़्तगू शुरू करने के लिए कहा: "आप ऊपर आते डर क्यों रहे थे?"

वह आदमी यह सुनकर मुसकराया: "तुम्हें कैसे मालूम हुआ डरने की बात ही क्या थी?"

इस पर सुलताना ने कहा: "यह मैंने इसलिए कहा कि आप देर तक वहीं खडे रहे और फिर कुछ सोचकर इधर आए"

वह यह सुनकर फिर मुसकराया: "तुम्हें ग़लतफ़हमी हुई है मैं तुम्हारे ऊपरवाले फ़्लैट की तरफ़ देख रहा था। वहाँ कोई औरत खडी एक मर्द को ठेंगा दिखा रही थी। मुझे यह मंज़र पसंद आया। फिर बालकनी में सब्ज़ बल्ब रोशन हुआ तो मैं कुछ देर के लिए ठहर गया। सब्ज रोशनी मुझे पसंद है। आँखों को बहुत अच्छी लगती है" यह कहकर उसने कमरे का जाइजा लेना शुरू कर दिया। फिर वह उठ खडा हुआ।

सुलताना ने पूछा: "आप जा रहे हैं?"

उस आदमी ने जवाब दिया: "नहीं, मैं तुम्हारे इस मकान को देखना चाहता हूँ चलो, मुझे तमाम कमरे दिखाओ"

सुलताना ने उसको तीनों कमरे एक-एक करके दिखा दिए। उस आदमी ने बिलकुल ख़ामोशी से उन कमरों का मुआइना किया। जब वे दोनों फिर उसी कमरे में आ गए जहाँ पहले बैठे थे, उस आदमी ने कहा "मेरा नाम शंकर है"

सुलताना ने पहली बार गौर से शंकर की तरफ़ देखा। वह मुतवस्सित[22] क़द का मामूली शक्लो-सूरत का आदमी था, मगर उसकी आँखे ग़ैर मामूली तौर पर साफ और शफ़्फ़ाफ़[23] थी। कभी-कभी उनमें एक अजीब क़िस्म की चमक पैदा होती थी। गठीला और कसरती बदन था। कनपटियों पर उसके बाल सफ़ेद हो रहे थे। खाकिस्तरी[24] रग की गर्म पतलून पहने था। सफेद कमीज़ थी, जिसका कालर गर्दन पर से ऊपर को उठा हुआ था।

शंकर कुछ इस तरह दरी पर बैठा था कि मालूम होता था, शंकर के बजाय सुलताना गाहक है। इस एहसास ने सुलताना को कदरे परेशान कर दिया। चुनाचे उसने शकर से कहा: "फरमाइए?"

शंकर बैठा था, यह सुनकर लेट गया. "मैं क्या फ़रमाऊँ, कुछ तुम ही फरमाओ। बुलाया तुम्हीं ने है मुझे"

जब सुलताना कुछ न बोली तो वह उठ बैठा: "मैं समझा लो अब मुझसे सुनो। जो कुछ तुमने समझा है, ग़लत है। मैं उन लोगों में से नहीं हूँ, जो कुछ देकर जाते हैं। डॉक्टरों की तरह मेरी भी फ़ीस है। मुझे जब बुलाया जाए तो फीस देना ही पडती है"

सुलताना यह सुनकर चकरा गई मगर इसके बावुजूद उसे बेइख्तियार हँसी आ गई : "आप काम क्या करते हैं ?"

शंकर ने जवाब दिया : "यही जो तुम लोग करते हो !"

"क्या ?"

"तुम क्या करती हो ?

"मैं मैं मैं कुछ भी नही करती ।"

"मैं भी कुछ नहीं करता ।"

सुलताना ने भिन्नाकर कहा . "यह तो कोई बात न हुई आप कुछ न कुछ तो जरूर करते होंगे ?"

शंकर ने बड़े इत्मीनान से जवाब दिया "तुम भी कुछ न कुछ ज़रूर करती होगी ?"

"मैं झख मारती हूँ "

"मैं भी झख मारता हूँ "

"तो आओ दोनों झख मारें "

"हाजिर हूँ, मगर झख मारने के दाम मैं कभी नही दिया करता ।"

"होश की दवा करो यह लगरखाना नही ! "

"और मैं भी वालंटियर नही "

सुलताना अब रुक गई । उसने पूछा · "यह वालंटियर कौन होते हैं ?"

शकर ने जवाब दिया · "उल्लू के पट्ठे "

"मैं उल्लू की पट्ठी नही "

"मगर वह आदमी खुदाबख्श जो तुम्हारे साथ रहता है, जरूर उल्लू का पट्ठा है ।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि वह कई दिनो से एक ऐसे खुदारसीदा[25] फकीर के पास अपनी किस्मत खुलवाने की खातिर जा रहा है, जिसकी अपनी क़िस्मत जग लगे ताले की तरह बद है " यह कहकर शकर हँसा ।

इस पर सुलताना ने कहा "तुम हिंदू हो, इसीलिए हमारे उन बुजुर्गों का मजाक़ उडाते हो "

शकर मुसकराया "ऐसी जगहों पर हिंदू-मुस्लिम सवाल पैदा नही हुआ करते । बड़े-बड़े पंडित और मौलवी भी यहाँ आएँ तो शरीफ़ आदमी बन जाएँ ।"

"जाने क्या ऊटपटाँग बातें करते हो बोलो, रहोगे ?"

"उसी शर्त पर जो पहले बता चुका हूँ "

सुलताना उठ खड़ी हुई . "तो जाओ, रस्ता पकड़ो · "

शंकर आराम से उठा, पतलून की जेबों में अपने दोनो हाथ ठूँसे और जाते हुए कहा : "मैं कभी-कभी इस बाजार से गुज़रा करता हूँ । जब भी तुम्हें मेरी ज़रूरत हो, बुला लेना बहुत काम का आदमी हूँ ।"

शकर चला गया और सुलताना काले लिबास को भूलकर देर तक उसके मुताल्लिक़

सोचती रही। उस आदमी की बातों ने उसके दुख को बहुत हल्का कर दिया था। अगर वह अंबाले में आया होता, जहाँ कि वह ख़ुशहाल थी तो उसने किसी और ही रंग में उस आदमी को देखा होता और बहुत मुम्किन है कि उसे धक्के देकर बाहर निकाल दिया होता। मगर यहाँ चूँकि वह बहुत उदास रहती थी, इसलिए शंकर की बातें उसे पसंद आईं।

शाम को जब ख़ुदाबख़्श आया तो सुलताना ने उससे पूछा : "तुम आज सारा दिन किधर ग़ायब रहे हो?"

ख़ुदाबख़्श थककर चूर-चूर हो रहा था। कहने लगा : "पुराने किले के पास से आ रहा हूँ। वहाँ एक बुज़ुर्ग कुछ दिनों से ठहरे हुए हैं। उन्हीं के पास हर रोज़ जाता हूँ कि हमारे दिन फिर जाएँ ..."

"कुछ उन्होंने तुमसे कहा?"

"नहीं, अभी वह मेहरबान नहीं हुए ... पर सुलताना, मैं जो उनकी खिद्मत कर रहा हूँ, वह अकारत कभी नहीं जाएगी। अल्लाह का फज्ल शामिले-हाल रहा तो जरूर वारे-न्यारे हो जाएँगे।"

सुलताना के दिमाग मे मुहर्रम मनाने का खयाल समाया हुआ था। ख़ुदाबख़्श से रोनी आवाज में कहने लगी : "तुम सारा-सारा दिन बाहर ग़ायब रहते हो ... मैं यहाँ पिंजरे मे कैद रहती हूँ। कही जा सकती हूँ, न आ सकती हूँ। मुहर्रम सिर पर आ गया है। कुछ तुमने इसकी भी फ़िक्र की कि मुझे काले कपडे चाहिएँ। घर मे फूटी कौडी तक नही। कंगनियाँ थी सो वो एक-एक करके बिक गईं। अब तुम्ही बताओ, क्या होगा ... यूँ फ़कीरों के पीछे कब तक मारे-मारे फिरा करोगे। मुझे तो ऐसा दिखाई देता है कि यहाँ देहली में ख़ुदा ने भी हमसे मुँह मोड लिया है। मेरी सुनो तो अपना काम शुरू कर दो। कुछ तो सहारा हो ही जाएगा ..."

ख़ुदाबख़्श दरी पर लेट गया और कहने लगा : "पर यह काम शुरू करने के लिए भी तो थोडा-बहुत सरमाया चाहिए ... ख़ुदा के लिए अब ऐसी दुख भरी बाते न करों। मुझसे अब यह बर्दाश्त नहीं हो सकतीं। मैंने सचमुच अंबाला छोडने मे सख़्त गलती की, पर जो करता है, अल्लाह ही करता है और हमारी बेहतरी ही के लिए करता है। क्या पता है, कुछ देर और तकलीफें बर्दाश्त करने के बाद हम ..."

सुलताना ने बात काटकर कहा : "तुम ख़ुदा के लिए कुछ करो। चोरी करो या डाका डालो, पर मुझे एक शलवार का कपडा ज़रूर ला दो। मेरे पास सफेद बोसकी की कमीज पड़ी है, उसको मैं रँगवा लूँगी। सफ़ेद नेनून का एक नया दुपट्टा भी मेरे पास मौजूद है, वही जो तुमने मुझे दीवाली पर लाकर दिया था। यह भी कमीज़ के साथ ही रँगवा लिया जाएगा। एक सिर्फ़ शलवार की कसर है, सो वो तुम किसी न किसी तरह पैदा कर दो ... देखो, तुम्हें मेरी जान की क़सम! किसी न किसी तरह ज़रूर ला दो ... मेरी भत्ती[26] खाओ, अगर न लाओ ..."

ख़ुदाबख़्श उठ बैठा : "अब तुम ख़्वाहमख़्वाह ज़ोर दिए चली जा रही हो ... मैं कहाँ से लाऊँगा ... अफीम खाने के लिए तो मेरे पास एक पैसा तक नहीं ..."

"कुछ भी करो मगर मुझे साढ़े चार गज काली साटन ला दो।"

"दुआ करो कि आज रात ही अल्लाह दो-तीन आदमी भेज दे "

"तुम कुछ नहीं करोगे तुम अगर चाहो तो ज़रूर इतने पैसे पैदा कर सकते हो जग से पहले यह साटन बारह-चौदह आने गज मिल जाती थी, अब सवा रुपए गज के हिसाब से मिलती है। साढ़े चार गजों पर कितने रुपए खर्च हो जाएँगे ?"

"अब तुम कहती हो तो मैं कोई हीला करूँगा।" यह कहकर ख़ुदाबख्श उठा "लो, अब इन बातों को भूल जाओ। मैं होटल से खाना ले आऊँ।"

होटल से खाना आया। दोनो ने मिलकर जहर-मार[27] किया और सो गए। सुबह हुई तो ख़ुदाबख्श पुराने किले वाले फकीर के पास चला गया और सुलताना अकेली रह गई। कुछ देर लेटी रही, कुछ देर सोई रही। कुछ देर इधर-उधर कमरों में टहलती रही—दोपहर का खाना खाने के बाद उसने अपना सफेद नेनून का दुपट्टा और सफेद बोसकी की कमीस निकाली और नीचे लाड्रीवाले को रँगने के लिए दे आई। कपडे धोने के अलावा वहाँ रँगने का काम भी होता था। यह काम करने के बाद उसने वापस आकर फिल्मों की किताबें पढ़ी, जिनमे उसके देखे हुए फिल्मो की कहानी और गीत छपे हुए थे। ये किताबें पढ़ते-पढ़ते वह सो गई। जब उठी तो चार बज चुके थे। क्योंकि धूप आँगन मे से मोरी के पास पहुँच चुकी थी। नहा-धोकर फारिग हुई तो गर्म चादर ओढ़कर बालकनी में आ खडी हुई। करीब एक घटा सुलताना बालकनी मे खडी रही—अब शाम हो गई थी। बत्तियाँ रोशन हो रही थी।

नीचे सडक मे रौनक के आसार नजर आने लगे। सर्दी में थोडी-सी शिद्दत[28] हो गई मगर सुलताना को यह नागवार मालूम न हुई। वह सडक पर आते-जाते ताँगों और मोटरो की तरफ एक अर्से से देख रही थी। दफअतन[29] उसे शकर नजर आया। मकान के नीचे पहुँचकर उसने गर्दन ऊँची की और सुलताना की तरफ देखकर मुसकरा दिया। सुलताना ने गैर इरादी तौर पर हाथ का इशारा किया और उसे ऊपर बुला लिया।

जब शकर ऊपर आ गया तो सुलताना बहुत परेशान हुई कि उससे क्या कहे। दरअसल उसने ऐसे ही बिला सोचे-समझे उसे इशारा कर दिया था। शकर बेहद मुतमइन[30] था, जैसे यह उसका अपना घर है। चुनाचे बडी बेतकल्लुफी से पहले रोज की तरह वह गावतकिया सिर के नीचे रखकर लेट गया।

जब सुलताना ने देर तक उससे कोई बात न की तो उसने कहा . "तुम मुझे सौ दफा बुला सकती हो और सौ दफा ही कह सकती हो कि चले जाओ मैं ऐसी बातो पर कभी नाराज नही हुआ करता।"

सुलताना शशोपज[31] मे गिरफ्तार हो गई। कहने लगी "नही बैठो, तुम्हे जाने को कौन कहता है "

शकर इस पर मुसकरा दिया "तो मेरी शर्तें तुम्हें मजूर हैं ?"

"कैसी शर्ते ?" सुलताना ने हँसकर कहा "क्या निकाह कर रहे हो मुझसे ?"

"निकाह और शादी कैसी ? न तुम उम्र भर किसी-से निकाह करोगी, न मैं। यह रस्मे हम लोगो के लिए नहीं छोडो इन फिजूलियात को, कोई काम की बात करो "

"बोलो, क्या बात करूँ ?"

"तुम औरत हो कोई ऐसी बात शुरू करो, जिससे दो घड़ी दिल बहल जाए। इस दुनिया मे सिर्फ दूकानदारी ही दूकानदारी नही, कुछ और भी है "

सुलताना जेहनी तौर पर अब शकर को कुबूल कर चुकी थी, कहने लगी "साफ-साफ कहो, तुम मुझसे क्या चाहते हो ? "

"जो दूसरे चाहते हैं।" शकर उठकर बैठ गया।

"तममे और दूसरो मे फिर फर्क ही क्या रहा ? "

"तुममें और मुझमे कोई फर्क नही। उनमे और मुझमे जमीन-आसमान का फर्क है, ऐसी बहुत-सी बाते होती हैं जो पूछना नही चाहिए, खुद समझना चाहिए।"

सुलताना ने थोडी देर तक शकर की इस बात को समझने की कोशिश की, फिर कहा "मैं समझ गई "

"तो कहो, क्या इरादा है ? "

"तुम जीते, मैं हारी। पर मैं कहती हूँ, आज तक किसी ने ऐसी बात कुबूल न की होगी।"

"तुम गलत कहती हो इसी महल्ले में तुम्हे ऐसी सादा लोह औरते भी मिल जाएँगी, जो कभी यकीन नही करेगी कि औरत ऐसी जिल्लत[32] कुबूल कर सकती है, जो तुम बगैर किसी एहसास के कुबूल करती रही हो। लेकिन उनके न यकीन करने के बावजूद तम हजारो की तादाद मे मौजूद हो तुम्हारा नाम सुलताना है न ?"

"सुलताना ही है "

शकर उठ खडा हुआ और हँसने लगा "मेरा नाम शकर है यह नाम भी अजीब ऊटपटाँग होते हैं। चलो आओ, अदर चले "

शंकर और सुलताना दरीवाले कमरे में वापिस आए तो दोनों हँस रहे थे, न जाने किस बात पर। जब शंकर जाने लगा तो सुलताना ने कहा : "शंकर, मेरी एक बात मानोगे ?"

शंकर ने जवाबन कहा : "पहले बात बताओ।"

सुलताना कुछ झेंप-सी गई : "तुम कहोगे कि मैं दाम वुसूल करना चाहती हूँ मगर "

"कहो-कहो रुक क्यों गई हो ?"

सुलताना ने जुर्रत[33] से काम लेकर कहा "बात यह है कि मुहर्रम आ रहा है और मेरे पास इतने पैसे नहीं कि मैं काली शलवार बनवा सकूँ यहाँ के सारे दुखड़े तो तुम मुझसे सुन ही चुके हो। क़मीस और दुपट्टा मेरे पास मौजूद था, जो मैंने आज रँगवाने के लिए दे दिया है।"

शकर ने यह सुनकर कहा : "तुम चाहती हो कि मैं तुम्हें कुछ रुपए दे दूँ, जो तुम काली शलवार बनवा सको।"

सुलताना ने फौरन ही कहा : "नहीं, मेरा मतलब यह है कि अगर हो सके तो तुम मुझे एक काली शलवार ला दो।"

शंकर मुसकराया : "मेरी जेब में तो इत्तिफ़ाक़ ही मे कभी कुछ होता है। बहरहाल मैं कोशिश करूँगा। मुहर्रम की पहली तारीख़ को तुम्हें यह शलवार मिल जाएगी ·· लो, बस अब ख़ुश हो गईं ना।" फिर सुलताना के बुंदों की तरफ देखकर उसने पूछा · "क्या यह बुंदे तुम मुझे दे सकती हो ?"

सुलताना ने हँसकर कहा : "तुम इनका क्या करोगे ? चाँदी के मामूली बुंदे हैं। ज़्यादा से ज्यादा पाँच रुपए के होंगे।"

इस पर शंकर ने कहा : "मैंने तुमसे बुंदे माँगे हैं, इनकी क़ीमत नहीं पूछी। बोलो देती हो ?"

"ले लो · " यह कहकर सुलताना ने बुंदे उतारकर शकर को दे दिए। फिर उसे अफ़सोस हुआ, मगर शंकर जा चुका था।

सुलताना को क़त्अन यक़ीन नहीं था कि शंकर अपना वादा पूरा करेगा मगर आठ रोज के बाद मुहर्रम की पहली तारीख़ को सुबह नौ बजे दरवाज़े पर दस्तक हुई। सुलताना ने दरवाज़ा खोला तो शंकर खड़ा था। अख़बार में लिपटी हुई चीज उसने सुलताना को दी और कहा . "साटन की काली शलवार है · देख लेना शायद लंबी हो अब मैं चलता हूँ "

शंकर शलवार देकर चला गया और कोई बात उसने सुलताना से न की। उसकी पतलून में शिकनें पड़ी हुई थीं। बाल बिखरे हुए थे। ऐसा मालूम होता था कि अभी-अभी सोकर उठा है और सीधा इधर ही चला आया है।

सुलताना ने काग़ज़ खोला, साटन की काली शलवार थी। वैसी ही जैसी कि वह मुख़तार के पास देखकर आई थी। सुलताना बहुत ख़ुश हुई। बुंदो और उस सौदे का जो अफसोस उसे हुआ था, उस शलवार ने और शकर की वादा ईफ़ाई[14] ने दूर कर दिया।

दोपहर को वह नीचे लांड्रीवाले से अपनी रगी हुई क़मीस और दुपट्टा ले आई। तीनो काले कपडे जब उसने पहन लिए तो दरवाजे पर दस्तक हुई।

सुलताना ने दरवाजा खोला तो मुख़तार अंदर दाखिल हुई। उसने सुलताना के तीनों कपडों की तरफ देखा और कहा : "क़मीस और दुपट्टा तो रँगा हुआ मालूम होता है। पर यह शलवार नई है कब बनवाई ?"

सुलताना ने जवाब दिया : "आज ही दरजी लाया है " यह कहते हुए उसकी नजरे मुख़तार के कानों पर पड़ीं : "यह बुंदे तुमने कहाँ से लिए ?"

मुख़तार ने जवाब दिया : "आज ही मँगवाए हैं "

इसके बाद दोनों को थोड़ी देर ख़ामोश रहना पड़ा।

1. शान्त निश्चिन्त, 2. तेजी, 3. फोटोग्राफी में संबंधित रसायन, 4. भोली, जिसका साधु-संतों पर विश्वास हो, 5. विश्वास, 6. असत्य, 7. स्थायी, 8. संक्षिप्त, 9. दरगाह, 10. श्रद्धा, 11. सभ्य लोगों, 12. चिता, 13. आकृष्ट, 14. छोड़ना, 15. खड़े हुए, 16. चलते-फिरते, 17. अनेक बार, 18. तसल्ली, 19. सामर्थ्य, 20. उदास, 21. चढ़ानेवाले, 22. माध्यम, 23. स्वच्छ, 24. मटमैली, 25. अल्लाहवाला, 26. मृतक की स्मृति में खिलाया जानेवाला भोजन, 27. जबर्दस्ती खाना, 28. तीव्रता, 29. सहसा, अचानक, 30. सतर्क, 31. असमंजस, 32. नीचता, 33. साहस, 34. पूरा करना।

हतक

दिन भर की थकी-माँदी वह अभी-अभी अपने बिस्तर पर लेटी थी और लेटते ही सो गई थी।

म्युनिसिपल कमेटी का दारोगा-ए-सफ़ाई, जिसे वह सेठ जी के नाम से पुकारा करती थी, अभी-अभी उसकी हड्डियाँ-पसलियाँ झंझोड़कर, शराब के नशे मे चूर, घर वापस गया था—वह रात को वहीं ठहर जाता मगर उसे अपनी धर्मपत्नी का बहुत ख़याल था, जो उससे बेहद प्रेम करती थी।

वह रुपए, जो उसने अपनी जिस्मानी मशक़्क़त[1] के बदले उस दारोग़ा से वसूल किए थे उसकी चुस्त और थूक से भरी चोली के नीचे से ऊपर को उभरे हुए थे; कभी-कभी साँस के उतार-चढ़ाव से चाँदी के यह सिक्के खनखनाने लगते, तो उनकी खनखनाहट उसके दिल की ग़ैर आहंग[2] धड़कनों में घुल-मिल जाती; ऐसा मालूम होता कि इन सिक्कों की चाँदी पिघलकर उसके दिल के ख़ून में टपक रही है।

उसका सीना अंदर से तप रहा था—यह गर्मी कुछ तो उस ब्रांडी के बायस थी, जिसका अद्धा दारोग़ा अपने साथ लाया था और कुछ उस बेवडा[3] का नतीजा थी, जो सोडा ख़त्म हो जाने पर दोनों ने पानी मिलाकर पी थी।

वह सागवान के लंबे और चौड़े पलंग पर औंधे मुँह लेटी हुई थी, उसकी बाँहें, जो काँधो तक नंगी थीं, पतंग की उस काँप की तरह फैली हुई थीं, जो ओस में भीग जाने के बायस पतले काग़ज़ से जुदा हो जाए; दाएँ बाज़ू की बग़ल में शिकन आलूद[4] गोश्त उभरा हुआ था, जो बार-बार मूँडे जाने के बायस नीली रंगत इख़्तियार कर गया था, जैसे नुची हुई मुर्ग़ी की खाल का एक टुकड़ा वहाँ पर रख दिया गया हो।

कमरा बहुत छोटा था जिसमें बेशुमार चीज़ें बेतरतीबी के साथ बिखरी हुई थीं; तीन-चार सूखे-सड़े चप्पल पलंग के नीचे पड़े थे, जिनके ऊपर मुँह रखकर एक ख़ारिशज़दा कुत्ता सो रहा था और नींद में किसी ग़ैर मरई[5] चीज का मुँह चिड़ा रहा था, इस कुत्ते के बाल जगह-जगह से ख़ारिश के बायस उड़े हुए थे; दूर से अगर कोई इस कुत्ते को देखता तो समझता कि पैर पोंछनेवाला पुराना टाट दोहरा करके ज़मीन पर रखा है।

उस तरफ़ छोटे-से दीवारगीर पर सिंगार का सामान रखा था; गालों पर लगाने की सुर्ख़ी, होंठों की सुर्ख़ बत्ती, पाउडर, कंघी और लोहे के पिन, जो वह ग़ालिबन अपने जूड़े में

लगाया करती थी। पास ही एक लंबी खूँटी के साथ सब्ज़ तोते का पिंजरा लटक रहा था और तोता गर्दन को अपनी पीठ के बालों में छुपाए सो रहा था; पिंजरा कच्चे अमरूद के टुकड़ों और गले हुए संगतरे के छिलकों से भरा पड़ा था; इन बदबूदार टुकड़ों पर छोटे-छोटे काले रंग के मच्छर या पतंगे उड़ रहे थे।

पलंग के पास ही बेंत की एक कुर्सी पड़ी थी, जिसकी पुश्त सिर टेकने के बायस बेहद मैली हो रही थी; इस कुर्सी के दाएँ हाथ को एक ख़ूबसूरत तिपाइ थी, जिस पर हिज़ मास्टर्स वायस का पोर्टेबिल ग्रामोफ़ोन पड़ा था, इस ग्रामोफ़ोन पर मँढ़े काले कपड़े की हालत बहुत बुरी थी, ज़ंग आलूद सुइयाँ तिपाई के अलावा कमरे के हर कोने में बिखरी हुई थी; इस तिपाई के ऐन ऊपर, दीवार पर चार फ़्रेम लटक रहे थे, जिनमें मुख़्तलिफ़ आदमियो की तसवीरें जडी हुई थीं।

इन तसवीरों से ज़रा इधर हटकर, यानी दरवाज़े में दाख़िल होते ही, बाईं तरफ की दीवार के कोने में गणेश जी की शोख़ रंग तसवीर थी, जो ताज़ा और सूखे हुए फूलों से लदी हुई थी; शायद यह तसवीर कपड़े के किसी थान से उतारकर फ़्रेम में जड़ाई गई थी; इस तसवीर के साथ ही छोटे-से दीवारगीर पर, जो कि बेहद चिकना हो रहा था, तेल की एक प्याली धरी थी, जो दीए को रोशन करने के लिए वहाँ रखी गई थी; पास ही दीया पड़ा था, जिसकी लौ हवा बंद होने के बायस माथे के तिलक के मानिंद सीधी खड़ी थी—इस दीवारगीर पर धूप की छोटी-बड़ी भरोड़ियाँ भी पड़ी थीं।

जब वह बोहनी करती थी तो दूर ही से गणेश जी की इस मूर्ति से रुपए छुआकर और फिर अपने माथे के साथ लगाकर उन्हें अपनी चोली में रख लिया करती थी; उसकी छातियाँ चूँकि काफ़ी उभरी हुई थीं, इसलिए वह जितने रुपए भी अपनी चोली में रखती, महफ़ूज़ पड़े रहते थे—अलबत्ता कभी-कभी जब माधो पूने से छुट्टी लेकर आता तो उसे अपने कुछ रुपए पलग के पाए के नीचे उस छोटे-से गढ़े में छुपाने पड़ते थे, जो उसने ख़ास इस काम की ग़र्ज़ से खोदा था।

माधो मे रुपए महफ़ूज़ रखने का यह तरीक़ा सौगंधी को रामलाल दलाल ने बताया था—उसने जब यह सुना था कि माधो पूने से आकर सौगंधी पर धावे बोलता है तो उसने कहा था : "उस साले को तूने कब से यार बनाया है ? यह बड़ी अनोखी आशिक़ी-माशूक़ी है साला एक पैसा अपनी जेब से निकालता नहीं और तेरे साथ मज़े उड़ाता रहता है मजे अलग रहे, तुझसे कुछ ले भी मरता है ···सौगंधी, मुझे कुछ दाल में काला-काला नज़र आता है उस साले में कोई बात ज़रूर है, जो तुझे भा गया है···सात साल से यह धंधा कर रहा हूँ और तुम छोकरियों की सारी कमज़ोरियाँ जानता हूँ··· " यह कहकर रामलाल ने, जो बंबई शहर के मुख़्तलिफ़ हिस्सों में दस रुपए से लेकर सौ रुपए तक वाली एक सौ बीस छोकरियों का धंधा करता था, सौगंधी को बताया था : "साली, अपना धन यूँ बर्बाद न कर ··तेरे अंग पर से कपड़े भी उतारकर ले जाएगा वह तेरी माँ का यार ··इस पलंग के नीचे छोटा-सा गढ़ा खोदकर उसमें सारे पैसे दबा दिया कर और जब वह तेरा यार आया करे तो उससे कहा कर; 'तेरी जान की क़सम माधो, आज सुबह से एक धेले का मुँह नहीं देखा · ज़रा

बाहरवाले से कहकर एक कप चाय और अफ़लातून बिस्कुट तो मँगा भूख से मेरे पेट मे चूहे दौड रहे हैं 'समझीं ? बहुत नाज़ुक वक्त आ गया है मेरी जान इस साली कॉंग्रेस ने शराब बंद करके बाजार बिलकुल मंदा कर दिया है पर तुझे तो कहीं न कहीं से पीने को मिल ही जाती है भगवान कसम, जब तेरे यहाँ कभी रात की खाली की हुई बोतल देखता हूँ और दारू की बास सूँघता हूँ तो जीं चाहता है, तेरी जून मे चला जाऊँ !"

सौगंधी को अपने जिस्म में सबसे ज्यादा अपना सीना पसंद था—एक बार जमना ने उससे कहा था : "नीचे से इन बब के गोलों को बाँध के रखाकर अँगिया पहना करेगी तो इनकी सख्ताई ठीक रहेगी !"

सौगंधी यह सुनकर हँस दी थी : "जमना, तू सबको अपने सरीखा समझती है दस रुपए मे लोग तेरी बोटियाँ तोडकर चले जाते हैं तो तू समझती है कि सबके साथ ऐसा ही होता होगा कोई मुआ लगाए तो ऐसी-वैसी जगह हाथ अरे.हाँ, कल की बात तुझे सुनाऊँ रामलाल रात के दो बजे एक पंजाबी को लाया रात भर के तीस रुपए तय हुए जब हम सोने लगे तो मैंने बत्ती बुझा दी अरे वह तो डरने लगा सुनती हो जमना, तेरी कसम, अँधेरा होते ही उसका सारा ठाठ किरकिरा हो गया वह डर गया मैंने कहा 'चलो-चलो, देर क्यो करते हो तीन बजनेवाले हैं, अभी दिन चढ आएगा ' वह बोला 'रोशनी करो, रोशनी करो ' मैंने कहा 'यह रोशनी क्या हुआ ' वह बोला 'लाइट लाइट ' उसकी खिची हुई आवाज सुनकर मुझसे हँसी न रुक सकी: 'भई मैं तो लाइट न करूँगी ' और यह कहकर मैंने उसकी गोश्त भरी रान की चुटकी ली वह तड़पकर उठ बैठा और उसने लाइट ऑन कर दी मैंने झट-से चादर ओढ ली और कहा 'तुझे शर्म नही आती मरदुए ' वह पलंग पर आया तो मैं उठी और मैंने लपककर लाइट बुझा दी वह फिर घबराने लगा तेरी कसम, बडे मज़े मे रात कटी कभी अँधेरा कभी उजाला, कभी उजाला कभी अँधेरा ट्राम की खडखड हुई तो पतलून-वतलून पहनकर वह उठ भागा साले ने तीस रुपए सट्टे में जीते होंगे, जो यूँ मुफ्त में दे गया जमना, तू बिलकुल अल्हड है बडे-बडे गुर याद हैं मुझे इन लोगो को ठीक करने के लिए !"

सौगंधी को वाकई बहुत से गुर याद थे, जो उसने अपनी एक-दो सहेलियों को बताए भी थे; आमतौर पर वह ये गुर सबको बताया करती थी : "अगर आदमी शरीफ़ हो, ज्यादा बातें न करता हो तो उससे खूब शरारते करो, अनगिनत बातें करो, उसे छेडो, सताओ, उसके गुदगुदी करो, उससे खेलो अगर दाढ़ी रखता हो तो उसकी दाढ़ी में उँगलियो से कंघी करते-करते दो-चार बाल भी नोच लो अगर उसका पेट बड़ा हो तो उसे थपथपाओ उसको इतनी मोहलत ही न दो कि वह अपनी मर्जी से कुछ कर पाए वह खुश-खुश चला जाएगा और तुम बची रहोगी ऐसे मर्द जो गुपचुप रहते हैं, बड़े ख़तरनाक होते हैं बहन उनका दाव चल जाए तो हड्डी-पसली तोड़ देते हैं !"

सौगंधी इतनी चालाक नहीं थी, जितनी ख़ुद को ज़ाहिर करती थी—उसके गाहक बहुत कम थे—ग़ाइत दर्जा[7] जज़्बाती लड़की थी; यही वजह है कि वह तमाम गुर जो उसे याद थे, उसके दिमाग़ से फिसलकर उसके पेट में आ जाते थे, जिस पर एक बच्चा हो जाने के बायस

कई लकीरें पड़ गई थीं—इन लकीरो को पहली मर्तबा देखकर ऐसा लगा था कि उसके ख़ारिशज़दा कुत्ते ने अपने पंजे से यह निशान बना दिए हैं—जब कोई कुतिया बड़ी बेएतिनाई[8] से उसके पालतू कुत्ते के पास से गुज़रती थी तो वह शर्मिंदगी दूर करने के लिए जमीन पर अपने पंजों से इसी क़िस्म के निशान बनाया करता था।

सौगंधी दिमाग़ में ज्यादा रहती थी; लेकिन जूँ ही कोई नर्मो-नाज़ुक बात, कोई कोमल बोल उससे कहता तो झट पिघलकर वह अपने जिस्म के दूसरे हिस्सों मे फैल जाती; गो मर्द और औरत के जिस्मानी मिलाप को उसका दिमाग बिलकुल फ़िज़ूल समझता था मगर उसके जिस्म के बाकी आज़ा[9], सबके-सब उस मिलाप के बहुत बुरी तरह कायल थे, उसके आज़ा थकन चाहते थे, ऐसी थकन जो उन्हे झँझोडकर, उन्हे मारकर सुलाने पर मजबूर कर दे। ऐसी नींद जो थककर, चूर-चूर हो जाने के बाद आए, कितनी मजेदार होती है, वह बेहोशी, जो मार खाकर बद-बद ढीले हो जाने पर तारी होती है, कितना आनद देती है; कभी ऐसा मालूम होता है कि तुम हो और कभी ऐसा मालूम होता है कि तुम नही हो और इस होने और न होने के बीच में कभी-कभी ऐसा भी महसूस होता है कि तुम हवा में बहुत ऊँची जगह लटके हुए हो, ऊपर हवा, नीचे हवा, दाएँ हवा, बाएँ हवा, बस हवा ही हवा और फिर इस हवा मे दम घुटना भी एक खास मजा देता है।

बचपन मे जब वह आँख-मिचौली खेला करती थी और अपनी माँ का बड़ा सदूक खोलकर उसमे छुप जाया करती थी तो नाकाफी हवा में दम घुट जाने के साथ-साथ पकडे जाने के खौफ मे वह तेज धडकन, जो उसके दिल मे पैदा हो जाया करती थी, उसे कितना मजा दिया करती थी।

सौगंधी चाहती थी कि अपनी सारी ज़िंदगी किसी ऐसे ही सदूक में छुपकर गुज़ार दे, जिसके बाहर उसको ढूँढ़नेवाले फिरते रहें; कभी-कभी उसको ढूँढ़ निकालें कि फिर वह भी उनको ढूँढने की कोशिश करे—यह जिदगी जो वह पाँच बरसो मे गुजार रही थी, आँख-मिचौली ही तो थी; कभी वह किसी को ढूँढ़ लेती थी और कभी कोई उसे ढूँढ लेता था। बस यूँ ही उसका जीवन बीत रहा था। वह खुश थी, इसलिए कि उसको खुश रहना पडता था—हर रोज रात को कोई न कोई मर्द उसके चौडे सागवानी पलग पर होता था और सौगंधी, जिसको मर्दों को ठीक करने के बेशुमार गुर याद थे, इस बात का बार-बार तहैया[10] करने पर भी कि वह उन मर्दों की कोई ऐसी-वैसी बात नही मानेगी और उनके साथ बड़े रूखेपन के साथ पेश आएगी, हमेशा अपने जज्बात के धारे मे बह जाया करती थी और फकत एक प्यासी औरत रह जाया करती थी।

हर रोज रात को उसका पुराना या नया मुलाक़ाती उससे कहा करता था. 'सौगंधी, मैं तुझसे प्रेम करता हूँ !' और सौगधी यह जानते हुए भी कि वह झूठ बोल रहा है, बस मोम हो जाती थी और ऐसा महसूस करती थी, जैसे सचमुच उससे प्रेम किया जा रहा है—प्रेम कितना सुंदर बोल है—वह चाहती थी कि इस प्रेम को पिघलाकर अपने अंग-अंग पर मल ले; इसकी अपने बदन पर मालिश कर ले कि यह सारे का सारा उसके मसामों में रच-बस जाए, या फिर वह खुद उसके अंदर चली जाए, सिमट-सिमटाकर उसके अंदर

दाखिल हो जाए और ऊपर से ढकना बद कर दे—कभी-कभी जब प्रेम किए जाने का जज्बा उसके अदर बहुत शिद्दत[11] इख्तियार कर लेता तो कई बार उसके जी मे आता कि अपने पास पड़े हुए आदमी को अपनी गोद मे लेकर थपथपाना शुरू कर दे और लोरियाँ देकर उसे अपनी गोद ही मे सला दे।

प्रेम कर सकने की अहलियत[12] उसके अदर इस कदर ज्यादा थी कि हर उस मर्द से, जो उसके पास आता था, वह मुहब्बत कर सकती थी और फिर उस मुहब्बत को निबाह भी सकती थी। वह अब तक चार मर्दों से अपना प्रेम निबाह ही तो रही थी जिनकी तसवीरें उसके सामने दीवार पर लटक रही थी—हर वक्त यह एहसास उसके दिल में मौजूद रहता था कि वह बहुत अच्छी है। यह अच्छापन मर्दों मे क्यो नहीं होता, यह बात उसकी समझ में नही आती थी—एक बार आईना देखते हुए बेइख्तियार उसके मुँह मे निकल गया था 'सौगधी, तुमसे जमाने ने अच्छा सुलूक नहीं किया !'

यह जमाना, यानी पाँच बरसों के ये दिन और उनकी ये रातें, उसके जीवन के हर तार के साथ वाबस्ता था, गो इस जमाने से उसको खुशी नसीब नही हुई थी, जिसकी ख्वाहिश उसके दिन में मौजूद थी, ताहम[13] वह चाहती थी कि यूँ ही उसके दिन बीतते चले जाएँ। उसे कौन-से महल खडा करना थे, जो रुपए-पैसे का लालच करती—दस रुपए उसका आम निर्ख[14] था, जिसमें से ढाई रुपए रामलाल अपनी दलाली के काट लेता था, साढ़े सात रुपए उसे रोज मिल ही जाया करते थे, जो उसकी अकेली जान के लिए काफी थे—माधो जब पूने से बकौल रामलाल दलाल, सौगधी पर धावे बोलने के लिए आता था तो वह दस-पद्रह रुपए खिराज[15] भी अदा कर देती थी, यह खिराज सिर्फ इस बात का था कि सौगधी को उससे कुछ वह हो गया था। रामलाल दलाल ठीक कहता था कि उसमें ऐसी कोई बात जरूर थी, जो सौगधी को बहुत भा गई थी।

सौगधी से जब माधो की पहली मुलाकात हुई थी तो उसने कहा था 'तुझे लाज नही आती अपना भाव करते ! जानती है तू मेरे साथ किस चीज का सौदा कर रही है ? और मैं तेरे पास क्यो आया हूँ ? छी छी छी दस रुपए और जैसा कि तू कहती है, ढाई रुपए दलाल के बाकी रहे साढ़े सात, रहे ना साढ़े सात ? अब इन साढ़े सात रुपयों में तू मुझे ऐसी चीज देने का वचन देती है, जो तू दे ही नही सकती और मैं ऐसी चीज लेने आया हूँ, जो मैं ले ही नही सकता मुझे औरत चाहिए, पर तुझे क्या इस वक्त, इस घडी मर्द चाहिए ? मुझ तो कोई औरत भी भा जाएगी, इसलिए कि मुझे औरत चाहिए, पर तुझे क्या मैं जँचता हूँ ? तेरा-मेरा नाता ही क्या है, कुछ भी नही बस यह दस रुपए, जिनमें से ढाई दलाली में चले जाएँगे और बाकी इधर-उधर बिखर जाएँगे, तेरे और मेरे बीच मे बज रहे हैं तू भी इनका बजना सुन रही है और मैं भी तेरा मन कुछ और सोचता है, मेरा मन कुछ और क्यों न कोई बात करें कि तुझे मेरी जरूरत हो और मुझे तेरी पूने में हवलदार हूँ महीने में एक बार आया करूँगा, तीन-चार दिन के लिए यह धधा छोड़ मैं तुझे खर्च दिया करूँगा क्या भाड़ा है इस खोली का ?'

माधो ने और भी बहुत कुछ कहा था, जिसका असर सौंगधी पर इस कदर ज्यादा हआ था

कि वह चंद लम्हात के लिए ख़ुद को हवलदारनी समझने लगी थी—बातें करने के बाद माधो ने उसके कमरे की बिखरी हुई चीजें करीने से रखी थीं और वह नंगी तसवीरें, जो सौगंधी ने अपने सिरहाने लटका रखी थी, बिना पूछे-गछे फाड दी थीं और कहा था : 'भई, मैं ऐसी तसवीरें यहाँ नही रहने दूँगा और पानी का यह घड़ा देखो तो कितना मैला है और यह यह चीथडे, यह चिंदियाँ : उफ कितनी बुरी बास आती है उठा के बाहर फेंक इनको : और तूने अपने बालों का यह क्या सत्यानास कर रखा है और और '

तीन घंटे की बातचीत के बाद सौगंधी और माधो आपस में घुल-मिल गए थे और सौगंधी को तो ऐसा महसूस हुआ था कि वह बरसों से हवलदार को जानती है—उस वक्त तक किसी ने भी कमरे में बदबूदार चीथडो, मैले घड़े और नंगी तसवीरों की मौजूदगी का ख़याल नहीं किया था और न कभी किसी ने उसको यह महसूस करने का मौका दिया था कि उसका एक घर है, जिसमे घरेलूपन आ सकता है—लोग आते थे और बिस्तर तक की ग़िलाज़त को महसूस किए बग़ैर चले जाते थे। कोई सौगंधी से यह नहीं कहता था : ''देखो तो आज तेरी नाक लाल हो रही है कहीं ज़ुकाम न हो जाए तुझे ठहर, मैं तेरे वास्ते दवा लाता हूँ !''

माधो कितना अच्छा था। उसकी हर बात बावन तोला और पाव रत्ती की थी। क्या खरी-खरी सुनाई थी उसने सौगंधी को—उसे महसूस होने लगा था कि उसे माधो की जरूरत है, चुनाँचे उन दोनों में सबंध हो गया।

महीने में एक बार माधो पूने से आता था और वापस जाते हुए हमेशा सौगंधी से कहा करता था; 'देख सौगंधी, अगर तूने फिर से अपना धंधा शुरू किया तो बस तेरी-मेरी टूट जाएगी : अगर तूने एक बार भी किसी मर्द को अपने यहाँ ठहराया तो चुटिया से पकडकर बाहर निकाल दूँगा देख इस महीने का खर्च मैं तुझे पूने पहुँचते ही मनीआर्डर कर दूँगा हाँ, क्या भाड़ा है इस खोली का ?'

न माधो ने कभी पूना से खर्च भेजा था और न सौगंधी ने अपना धंधा बंद किया था। दोनों अच्छी तरह जानते थे कि क्या हो रहा है। न सौगंधी ने कभी माधो से यह कहा था : 'तू यह क्या टर-टर किया करता है एक फूटी कौड़ी भी दी है तूने ?' और न माधो ने कभी सौगंधी से पूछा था : 'यह माल तेरे पास कहाँ से आता है, जब कि मैं तुझे कुछ देता ही नहीं ?' दोनों झूठे थे; दोनों एक मुलम्मा की हुई ज़िंदगी बसर कर रहे थे—लेकिन सौगंधी ख़ुश थी; जिसको असल सोना न मिले, वह मुलम्मा किए हुए गहनों ही पर राज़ी हो जाया करता है।

उस वक़्त सौगंधी थकी-माँदी सो रही थी—बिजली का क़ुमक़ुमा जिसे ऑफ़ करना वह भूल गई थी, उसके सिर के ऊपर लटक रहा था; उसकी तेज़ रोशनी उसकी मुँदी हुई आँखों के साथ टकरा रही थी मगर वह गहरी नींद सो रही थी।

दरवाज़े पर दस्तक हुई।

रात क दो बजे यह कौन आया—सौगंधी के ख्वाबआलूद कानों में दस्तक की आवाज भिनभिनाहट बनकर पहुँची। दरवाज़ा जब जोर से खटखटाया गया तो वह चौंककर उठ बैठी—दो मिली-जुली शराबो और दाँतों की रेखो में फँसे हुए मछली के रेजों ने उसके मुँह के अदर ऐसा लुआब[16] पैदा कर दिया था, जो बेहद कसैला और लेसदार था। धोती के पल्लू मे उसने यह बदबूदार लुआब साफ़ किया और आँखे मलने लगी। पलग पर वह अकेली थी। झुककर उसने पलग के नीचे देखा, उसका कुत्ता सूखे हुए चप्पलो पर मुँह रखे सो रहा था और नीद मे किसी गैर मरई चीज़ का मुँह चिडा रहा था और तोना पीठ के बालों मे सिर दिए सो रहा था।

दरवाजे पर फिर दस्तक हुई।

सौगधी बिस्तर पर से उठी। उसका सिर दर्द के मारे फटा जा रहा था। घडे मे पानी का एक डोगा निकालकर उसने कुल्ली की और दूसरा डोगा गटागट पीकर उसने दरवाजे का पट थोडा-सा खोला और कहा "रामलाल!"

रामलाल, जो बाहर से दस्तक देते-देते थक गया था, भिन्नाकर कहने लगा. "तुझे साँप सूँघ गया था या क्या हो गया था? एक क्लॉक से बाहर खडा दरवाज़ा खटखटा रहा हूँ कहाँ मर गई थी?" फिर आवाज दबाकर उसने हौले-से कहा· "अंदर कोई है तो नही?"

जब सौगधी ने कहा 'नहीं' तो रामलाल की आवाज फिर ऊँची हो गई "तो दरवाज़ा क्यों नही खोलती ? भई, हद हो गई क्या नींद पाई है ? यूँ एक-एक छोकरी उतारने मे दो-दो घटे सिर खपाना पडे तो मैं अपना धधा कर चुका अब तू मेरा मुँह क्या देखती है झटपट यह धोती उतारकर वह फूलोंवाली साडी पहन पोडर-वोडर लगा और चल मेरे साथ बाहर मोटर मे एक सेठ बैठे तेरा इतजार कर रहे हैं चल-चल एकदम, जल्दी कर "

सौगधी आरामकुर्सी पर बैठ गई और रामलाल आईने के सामने अपने बालो मे कघा करने लगा।

सौगधी ने तिपाई की तरफ हाथ बढ़ाया और बाम की शीशी उठाकर, उसका ढकना खोलते हुए कहा "रामलाल, आज मेरा जी अच्छा नहीं !"

रामलाल ने कघी दीवारगीर पर रख दी और मुड़कर कहा: "तो पहले ही कह दिया होता।"

सौगंधी ने माथे और कनपटियों पर बाम मलते हुए रामलाल की ग़लतफ़हमी दूर की "वह बात नहीं रामलाल ऐसे ही मेरा जी अच्छा नहीं बहुत पी गई !"

रामलाल के मुँह में पानी भर आया: "थोड़ी बची हो तो ला जरा हम भी मुँह का मजा ठीक कर लें।"

सौगंधी ने बाम की शीशी तिपाई पर रख दी और कहा: "बचाई होती तो यह मुआ सिर में दर्द ही क्यो होता देख रामलाल, वह जो बाहर मोटर में बैठा है, तू उसे अदर ही ले आ !"

रामलाल ने जवाब दिया "नही भई, वह अदर नही आ सकते जैनटलमैन आदमी हैं वह तो मोटर को गली के बाहर खडी करते हुए भी घबराते थे तू कपडे-वपडे पहन ले और जरा गली की नुक्कड तक चल सब ठीक हो जाएगा।"

साढे सात रुपए का सौदा सौगधी इस हालत में, जबकि उसके सिर मे शिद्दत का दर्द हो रहा था कभी कुबूल न करती, मगर उसे रुपयो की सख्त जरूरत थी। उसके साथवाली खोली मे एक मद्रासी औरत रहती थी, जिसका खाविंद मोटर के नीचे आकर मर गया था। इस औरत को अपनी जवान लडकी समेत वतन जाना था। उसके पास चूँकि किराया ही नही था, इसलिए वह कसमपुर्सी[17] की हालत मे पडी हुई थी—सौगधी ने कल ही उसको ढारस दी थी और उससे कहा था 'बहन, तू चिंता न कर मेरा मर्द पूने मे आने ही वाला है मैं उससे कुछ रुपए लेकर तेरे जाने का बदोबस्त कर दूँगी।'

माधो पूना से आनेवाला था, मगर रुपयो का बदोबस्त तो सौगधी ही को करना था चुनाँचे वह उठी और जल्दी-जल्दी कपडे तब्दील करने लगी—पाँच मिनटो मे उसने धोती उतारकर फूलोंवाली साडी पहनी और गालों पर सर्ख पाउडर लगाकर तैयार हो गई। घडे के ठंडे पानी का एक और डोंगा पिया और रामलाल के साथ हो ली।

गली जो कि छोटे शहरों के बाजारो से भी कुछ बडी थी, बिलकुल खामोश थी, गैस के वह लैंप, जो खबो पर जडे हुए थे, पहले की निस्बत बहुत धुँधली रोशनी दे रहे थे, जग के बायस उनके शीशो को गदला कर दिया गया था—इस अधी रोशनी मे गली के आखिरी सिरे पर एक मोटर नजर आ रही थी।

कमजोर रोशनी मे उस सियाह रग की मोटर का साया और रात के पिछले पहर की भेदो भरी खमोशी—सौगधी को ऐसा लगा कि उसके सिर का दर्द फजा पर भी छा गया है एक कसैलापन उसे हवा के अदर भी महसूस हुआ, जैसे ब्राडी और बेवडा की बास से हवा भी बोझल हो रही हो।

आगे बढ़कर रामलाल ने मोटर के अदर बैठे हुए आदमियो से कुछ कहा—इतने मे सौगधी मोटर के पास पहुँच गई।

रामलाल ने एक तरफ हटकर फिर कहा "लीजिए वह आ गई बडी अच्छी छोकरी है थोडे ही दिन हुए हैं इसे धधा शुरू किए" फिर उसने सौगधी से मुखातिब होकर कहा "सौगधी, इधर आ सेठ जी बुलाते हैं"

सौगधी साडी का एक किनारा अपनी उँगली पर लपेटती हुई आगे बढी और मोटर के दरवाजे के पास खडी हो गई।

सेठ साहब ने बैटरी उसके चेहरे के पास रोशन की—एक लम्हे के लिए उस रोशनी ने सौगधी की खुमारआलूद आँखों में चकाचौंध पैदा की—फिर बटन दबने की आवाज पैदा हुई और रोशनी बुझ गई और साथ ही सेठ के मुँह मे 'ऊँह' निकली। फिर एकदम मोटर का इजन फडफडाया और मोटर यह जा, वह जा—

सौगधी कुछ सोचने भी न पाई थी, उसकी आँखों में अभी तक बैटरी की तेज रोशनी घुसी हुई थी, वह ठीक तरह से सेठ का चेहरा भी न देख सकी थी—आखिर यह हुआ क्या, इस

'ऊँह' का क्या मतलब था ? 'ऊँह' जो अभी तक उसके कानों में भिनभिना रही थी 'क्या ? क्या ?'

उसे रामलाल दलाल की आवाज़ सुनाई दी ''पसंद नही किया तुझे अच्छा भई, मैं चलता हूँ दो घटे मुफ्त ही में बर्बाद किए ''

यह सुनकर सौगंधी की टाँगों में, उसकी बाँहों मे, उसके हाथों मे एक जबर्दस्त हरकत पैदा हुई : 'कहाँ है वह मोटर कहाँ है वह सेठ तो 'ऊँह' का मतलब यह है कि उसने मुझे पसद नही किया उसकी ' गाली उसके पेट के अदर से उठी और जबान की नोक पर आकर रुक गई। वह आख़िर गाली किसे देती ? मोटर तो जा चुकी थी। उसकी दुम की सुर्ख़ बत्ती उसके सामने, दूर, बाज़ार के अँधियारे में डूब रही थी और सौगधी को महसूस हो रहा था कि वह लाल-लाल अंगारा 'ऊँह' है, जो उसके सीने मे बरमे की तरह उतरता चला जा रहा है। उसके जी में आई कि ज़ोर से पुकारे . 'ओ सेठ जरा मोटर रोकना अपनी बस एक मिनट के लिए ' पर वह सेठ बहुत दूर निकल चुका था।

वह सुनसान बाज़ार मे खड़ी थी—फूलोंवाली साडी, जो वह खास-खास मौकों पर पहना करती थी, रात के पिछले पहर की हल्की-फुल्की हवा मे लहरा रही थी; साडी और उसकी रेशमी सरसराहट सौगधी को बहुत बुरी मालूम हो रही थी, वह चाह रही थी कि उस साडी के चिथडे उडा दे, क्योंकि साडी हवा मे लहरा-लहराकर 'ऊँह ऊँह' कर रही थी।

गालो पर उसने पाउडर लगाया था और होंठों पर सुर्ख़ी—जब उसे खयाल आया कि यह सिंगार उसने अपने-आपको पसद कराने के वास्ते किया था तो शर्म के मारे उसे पसीना आ गया।

शर्मिंदगी दूर करने के लिए उसने सोचा : 'मैंने उस मुए को दिखाने के लिए थोडे ही अपने आपको सजाया था यह तो मेरी आदत है मेरी क्या, सबकी यही आदत है पर पर यह रात के दो बजे और रामलाल दलाल और यह बाजार और वह मोटर और वह बैटरी की चमक ' यह सबकुछ ध्यान मे आते ही रोशनी के धब्बे उसकी हद्दे-निगाह[18] तक फजा मे इधर-उधर तैरने लगे और मोटर के इजन की फडफडाहट उसे हवा के हर झोके मे सुनाई देने लगी।

उसके माथे पर बाम का लेप, जो सिंगार करने के दौरान बिलकुल हल्का हो गया था, पसीना आने के बायस उसके मसामो में दाखिल होने लगा—सौगधी को अपना माथा किसी और का माथा मालूम हुआ। जब हवा का एक झोका उसके अर्क आलूद[19] माथे के पास से गुजरा तो उसे ऐसा लगा कि सर्द-सर्द टीन का एक टुकडा काटकर उसके माथे के साथ चस्पाँ कर दिया गया है, सिर मे दर्द वैसे का वैसा मौजूद था मगर खयालात की भीड-भाड और उनके शोर ने इस दर्द को अपने नीचे दबा रखा था।

सौगधी ने कई बार इस दर्द को अपने खयालात के नीचे से निकालकर ऊपर लाना चाहा मगर नाकाम रही; वह चाहती थी कि किसी न किसी तरह उसका अंग-अग दुखने लगे, उसके सिर मे दर्द हो, उसकी टाँगों मे दर्द हो, उसके पेट में दर्द हो, उसकी बाँहो मे दर्द हो, ऐसा दर्द कि वह सिर्फ दर्द ही का खयाल करे और बाक़ी सबकुछ भूल जाए। यह

सोचते-सोचते उसके दिल मे कुछ हुआ—क्या यह दर्द था ? एक लम्हे के लिए उसका दिल सिकुडा और फिर फैल गया। यह क्या था ? लानत ! यह तो वही 'ऊँह' थी जो उसके दिल के अदर कभी सिकुड रही थी और कभी फैल रही थी।

घर की तरफ सौगधी के कदम उठे ही थे कि रुक गए और वह ठहरकर फिर सोचने लगी 'रामलाल दलाल का खयाल है कि उसे मेरी शक्ल पसद नही आई शक्ल का तो उसने जिक्र नही किया, उसने तो यह कहा था 'सौगधी, तुझे पसद नही किया !' उसे उसे मेरी शक्ल पसद नही आई तो क्या हुआ मुझे भी तो कई आदमियो की शक्ल पसद नही आती वह, जो अमावस की रात को आया था, कितनी बुरी सूरत थी उसकी क्या मैंने नाक-भौं नही चढ़ाई थी जब वह मेरे साथ सोने लगा था, मुझे घिन नही आई थी क्या मुझे उबकाई आते-आते नही रुक गई थी ? ठीक है, पर सौगधी, तूने उसे दुत्कारा नही था, तूने उसे ठुकराया नही था इस मोटरवाले सेठ ने तो तेरे मुँह पर थूका है ऊँह इस 'ऊँह' का और मतलब ही क्या है यही कि इस छुछूँदर के सिर में चमेली का तेल ऊँह यह मुँह और मसूर की दाल अरे रामलाल, तू यह छिपकली कहाँ से पकड लाया है इस लौंडिया की इतनी तारीफ कर रहा था तू दस रुपए और यह औरत खच्चर क्या बुरी है ।'

सौगधी सोच रही थी और उसके पैर के अँगूठे से लेकर सिर की चोटी तक गर्म लहरे दौड रही थी। उसको कभी अपने-आप पर गुस्सा आ रहा था और कभी रामलाल दलाल पर जिसने रात के दो बजे उसे बे आराम किया, लेकिन फौरन ही वह खुद को और रामलाल दलाल को बेकुसूर पाकर सेठ का खयाल करने लगती—सेठ का खयाल आते ही उसकी आँखे, उसके कान, उसकी बाँहे, उसकी टाँगे, उसका सबकुछ पीछे को मुड जाता कि वह उस सेठ को कही देख पाए। उसके अदर यह ख्वाहिश बडी शिद्दत के साथ पैदा हो रही थी कि जो कुछ हो चुका है, एक बार फिर हो, सिर्फ एक बार—वह हौले-हौले मोटर की तरफ बढ़े मोटर के अदर से एक हाथ बैटरी निकाले और उसके चेहरे पर रोशनी फेंके, फिर 'ऊँह' की आवाज आए और वह—और सौगधी अधाधुध अपने दोनो पजो से सेठ का मुँह नोचना शुरू कर दे, वह वहशी बिल्ली की तरह झपटे और अपनी सारी उँगलियो के सारे नाखून, जो उसने मौजूदा फैशन के मुताबिक बढा रखे थे, उस सेठ के गालो मे गाड दे, उसे बालों से पकडकर बाहर घसीट ले और धडाधड उसे मुक्के मारना शुरू कर दे और जब थक जाए जब थक जाए तो रोना शुरू कर दे।

रोने का खयाल सौगधी को सिर्फ इसलिए आया कि उसकी आँखो मे गुस्से और बेबसी की शिद्दत के बायस तीन-चार बडे-बडे आँसू बन रहे थे।

एकाएकी सौगधी ने अपनी आँखो से सवाल किया 'तुम रोती क्यो हो ? तुम्हे क्या हुआ है कि टपकने लगी हो ?'

आँखों से किया हुआ सवाल चद लम्हात तक उन आँसुओ मे तैरता रहा, जो अब पलकों पर काँप रहे थे—सौगधी इन आँसुओ में से देर तक उस खला[20] को घूरती रही, जिधर सेठ की मोटर गई थी।

फड़ फड फड !

यह आवाज कहाँ से आई ? सौगंधी ने चौंककर इधर-उधर देखा लेकिन किसी को न पाया।

अरे, यह तो तेरा दिल फडफडाया है—वह समझी थी, मोटर का इजन बोला है।

उसका दिल यह क्या हो गया है उसके दिल को ? आज यह क्या रोग लग गया है उसके दिल को ? अच्छा-भला चलता-चलता रुककर धड़-धड़ क्यों करने लगता है, बिलकुल उसके उस घिसे हुए रिकार्ड की तरह, जो सुई के नीचे घूमता-घूमता एक जगह आकर रुक जाता था और 'रात कटी गिन-गिन तारे' कहता-कहता 'तारे, तारे' की रट लगाने लगता था ?

आसमान तारों से अटा हुआ था—सौगधी ने उनकी तरफ देखा और कहा . "कितने सुदर हैं !" वह चाहती थी कि अपना ध्यान किसी और तरफ़ पलट दे, पर जब उसने 'सुंदर' कहा तो झट से यह खयाल उसके दिमाग मे कूदा : 'यह तारे तो सुदर हैं, पर तू कितनी भौंडी है अभी-अभी तो तेरी सूरत को फटकारा गया है।'

'सौगधी, तू बदसूरत नहीं है !' यह ख़याल आते ही वह तमाम अक्स एक-एक करके उसकी आँखो के सामने आने लगे, जो इन पाँच बरसों के दौरान में वह आईने में देख चुकी थी, इसमे शक नहीं कि उसका रग-रूप अब वह नहीं रहा था, जो आज से पाँच साल पहले था, जब वह तमाम फिक्रो मे आजाद अपने माँ-बाप के साथ रहा करती थी; लेकिन वह बदसूरत तो अब भी नही थी। उसकी शक्लो-सूरत उन आम औरतों की-सी थी, जिनकी तरफ मर्द गुजरते-गुजरते घूर के देख लिया करते हैं; उसमें वह तमाम खूबियाँ मौजूद थी, जो सौगधी के खयाल मे हर मर्द उस औरत में जरूरी समझता है, जिसके साथ उसे एक-दो रातें बसर करना होती हैं। वह जवान थी और उसके आजा मुतनासिब[21] थे, कभी-कभी नहाते वक्त जब उसकी निगाहें अपनी रानो पर पडती थी तो वह खुद उनकी गोलाई और गदराहट को पसद किया करती थी। वह खुश खुल्क[22] थी, इन पाँच बरसो के दौरान में शायद ही कोई आदमी उससे नाखुश होकर गया हो। वह बडी मिलनसार और बडी रहमदिल थी; पिछले ही दिनो क्रिसमस मे, जब वह गोलपेठा मे रहा करती थी, एक नौजवान लडका उसके पास आया था; सुबह उठकर जब उसने दूसरे कमरे मे जाकर खूँटी से कोट उतारा तो बटवा ग़ायब पाया, सौगधी का नौकर यह बटआ ले उडा था, वह बेचारा बहुत परेशान हुआ, वह छुट्टियाँ गुजारने के लिए हैदराबाद से बबई आया था और अब उसके पास वापस जाने के लिए एक पैसा भी न रहा था; सौगधी ने तरस खाकर उसे उसके दस रुपए वापस दे दिए थे।

'मुझमे क्या बुराई है ?' सौगधी ने यह सवाल हर उस चीज से किया, जो उसकी आँखो के सामने थी : गैस के अंधे लैंप, लोहे के खंबे, फुटपाथ के चौकोर पत्थर और सड़क की उखडी हुई बजरी—इन सब चीजों की तरफ उसने बारी-बारी देखा; फिर उसने आसमान की तरफ निगाहें उठाईं, जो उसके ऊपर झुका हुआ था, मगर उसे कोई जवाब न मिला।

जवाब उसके अंदर मौजूद था; वह जानती थी कि वह बुरी नहीं, अच्छी है; पर वह चाहती थी, कि कोई उसकी ताईद करे   कोई   कोई   उस वक्त उसके काँधों पर हाथ रखकर सिर्फ इतना कह दे . 'सौगंधी, कौन कहता है कि तू बुरी है   जो तुझे बुरा कहे, वह आप बुरा है   !'

'नहीं, यह कहने की भी कोई खास जरूरत नहीं   किसी का इतना कह देना ही काफी है कि सौगंधी, तू बहुत अच्छी है   !'

वह सोचने लगी कि वह क्यों चाहती है, कोई उसकी तारीफ करे; इससे पहले उसे इस बात की इतनी शिद्दत से ज़रूरत महसूस नहीं हुई थी—आज क्यों वह बेजान चीजों को भी ऐसी नजरों से देख रही है, जैसे उन पर अपने अच्छे होने का एहसास तारी करना चाहती है; उसके जिस्म का जर्रा-जर्रा क्यों माँ बन रहा है; वह माँ बनकर धरती की हर शै को अपनी गोद में लेने के लिए क्यों तैयार हो रही है, उसका जी क्यों चाहता है कि सामनेवाले गैस के आहनी खंबे के साथ चिमट जाए और उसके सर्द लोहे पर अपने गाल रख दे   उसके गर्म-गर्म गाल लोहे की सारी सर्दी चूस ले।

थोड़ी देर के लिए उसे ऐसा महसूस हुआ कि गैस के अंधे लैंप, लोहे के खंबे, फुटपाथ के चौकोर पत्थर और हर वह शै, जो रात के सन्नाटे में उसके आसपास है, हमदर्दी की नजरों से उसे देख रही है, उसके ऊपर झुका हुआ आसमान भी, जो मटियाले रंग की मोटी चादर मालूम हो रहा था और जिसमें बेशुमार सुराख हो रहे थे, उसकी बातें समझ रहा है ? उसे ऐसा भी लग रहा था कि वह तारों का टिमटिमाना भी समझ रही है—लेकिन उसके अंदर यह क्या गड़बड़ है; वह क्यों अपने अंदर उस मौसम की फ़िज़ा महसूस कर रही है, जो बारिश से पहले देखने में आया करता है।

सौगंधी का जी चाह रहा था कि उसके जिस्म का हर मसाम खुल जाए और जो कुछ उसके अंदर उबल रहा है, मसामों के रास्ते बाहर निकल जाए, पर यह कैसे हो, कैसे हो ?

गली के नुक्कड़ पर वह खत डालनेवाले लाल भबके के पास खड़ी थी—हवा के तेज झोंके से उस भबके की आहनी जबान, जो उसके खुले हुए मुँह में लटकती रहती है, लड़खड़ाती तो सौगंधी की निगाहें यक ब यक उस तरफ उठ जातीं, जिधर मोटर गई थी मगर उसे कुछ नजर न आता।

उसकी जबर्दस्त आरजू थी कि मोटर एक बार फिर आए और   और   'न आए   बला से   मैं अपनी जान क्यों बेकार हलकान करूँ   घर चलते हैं और आराम से लंबी तानकर सोते हैं   इन झगड़ों में रखा ही क्या है   मुफ्त की दर्दसरी[23] ही तो है   चल सौगंधी, घर चल   ठंडे पानी का एक डोंगा पी और थोड़ा-सा बाम मलकर सो जा   फर्स्ट क्लास नींद आएगी और सब ठीक हो जाएगा   सेठ और उसकी मोटर की ऐसी-तैसी   ' यह सोचते हुए उसके खयालात का बोझ हल्का हो गया, जैसे वह किसी ठंडे तालाब से नहा-धोकर बाहर निकली हो, जिस तरह पूजा करने के बाद उसका जिस्म हल्का हो जाता था, उसी तरह अब उसका जिस्म हल्का हो गया था—जब वह घर की तरफ चलने लगी तो खयालात का बोझ न होने के बाइस उसके कदम कई बार लड़खड़ाए।

जब वह अपने घर के पास पहुँची तो एक टीस के साथ फिर तमाम वाका उसके दिल में उठा और दर्द की तरह उसके रूएँ-रूएँ पर छा गया; उसके कदम फिर बोझल हो गए और वह इस बात को शिद्दत के साथ महसूस करने लगी कि घर से बुलाकर, बाहर बाजार में, उसके मुँह पर रोशनी का चाँटा मारकर, एक आदमी ने उसकी अभी-अभी हतक[24] की है—इस ख़याल के आते ही उसने अपनी पसलियों पर किसी के सख्त अँगूठे का दबाव महसूस किया, जैसे कोई उसे भेड-बकरी समझते हुए सख्ती से दबा-दबाकर देख रहा हो कि गोश्त भी है या बाल ही बाल हैं।

'उस सेठ ने परमात्मा करे ' सौगंधी ने चाहा कि उस सेठ को बद्दुआ दे, मगर फिर उसने सोचा कि बद्दुआ देने से क्या बनेगा मजा तो जब था कि वह सामने होता और वह उसके वजूद के हर जर्रे पर लानते लिखती उसके मुँह पर कुछ ऐसे अल्फाज कहती कि फिर वह जिंदगी भर बेचैन रहता कपडे फाडकर उसके सामने नंगी हो जाती और कहती . 'यही लेने आया था न तू ले, दाम दिए बिना ले ले इसे पर जो कुछ मैं हूँ, जो कुछ मेरे अंदर छुपा हुआ है, वह तू तो क्या, तेरा बाप भी नही खरीद सकता '

इंतिकाम[25] के नए-नए तरीके उसके जेहन में आ रहे थे; अगर उस सेठ से एक बार सिर्फ एक बार उसकी मुठभेड हो जाए तो वह यह करे नही, यह नही यह करे । यूँ उससे इनकाम ले ' नही, यूँ नही यूँ—वह सेठ उसे एक बार मिल जाए तो वह उसे एक छोटी-सी गाली ही दे दे बस सिर्फ एक छोटी-सी गाली, जो सेठ की नाक पर चिपकू मक्खी की तरह बैठ जाए और हमेशा वही जमी रहे ।

इसी उधेडबुन में वह दूसरी मंजिल पर अपनी खोली के पास पहुँच गई—चोली में से चाबी निकालकर उसने ताला खोलने के लिए हाथ बढाया तो चाबी हवा ही में घूमकर रह गई ।

कुंडे में ताला नही था—सौगंधी ने किवाड अंदर की तरफ धकेले तो हल्की-सी चरचराहट पैदा हुई ।

अंदर से किसी ने कुडी खोली तो दरवाजे ने जम्हाई ली—सौगंधी अंदर दाखिल हो गई ।

माधो मूँछों मे हँसा और दरवाजा बंद करके सौगंधी से कहने लगा ''तो आज तूने मेरा कहा मान ही लिया सुबह की सैर तंदुरुस्ती के लिए बडी अच्छी होती है हर रोज इसी तरह सुबह उठकर घूमने जाया करेगी तो तेरी सारी सुस्ती दूर हो जाएगी और वह तेरी कमर का दर्द भी गायब हो जाएगा, जिसकी बाबत तू आए दिन शिकायत किया करती है विक्टोरिया गार्डन तक तो हो आई होगी तू क्यों ?''

सौगंधी ने कोई जवाब न दिया, और न ही माधो ने जवाब पाने की ख्वाहिश ज़ाहिर की, दरअसल जब माधो बात किया करता था तो उसका मतलब यह नही होता था कि सौगंधी उस बात में जरूर हिस्सा ले, और जब सौगंधी कोई बात किया करती थी तो यह ज़रूरी नही होता था कि माधो उस बात में हिस्सा ले; चूँकि कोई न कोई बात करना होती थी, इसलिए दोनो में से एक कुछ न कुछ कह दिया करता था ।

माधो बेंत की कुर्सी पर बैठ गया, जिसकी पुश्त पर उसके तेल से चिपडे हुए सिर ने मैल

का एक बहुत बडा धब्बा बना रखा था। फिर वह टॉग पर टॉग रखकर अपनी मूँछो पर उँगलियाँ फेरने लगा।

सौगंधी पलग पर बैठ गई और माधो से कहने लगी. "मैं आज तेरा ही इतजार कर रही थी।"

माधो सटपटाया. "इतजार ? तुझे कैसे मालूम हुआ कि मैं आज आनेवाला हूँ!"

सौगधी के भिचे हुए लब खुले और उन पर एक पीली-सी मुसकराहट नमूदार हुई. "मैंने रात तुझे सपने मे देखा था यकायक उठ बैठी तो कोई भी न था मो जी ने कहा, चलो कही बाहर घूम आएँ और "

माधो खुश होकर बोला "और मैं आ गया भई बडे लोगों की बाते बडी पक्की होती हैं किसी ने ठीक ही कहा है कि दिल को दिल से राह होती है तने यह सपना कब देखा था?"

सौगधी ने जवाब दिया. "चार बजे के करीब "

माधो कुर्सी पर से उठकर सौगधी के पास बैठ गया "और मैंने तुझे ठीक दो बजे सपने मे देखा जैसे तू फूलोवाली साडी अरे बिलकुल यही साडी पहने मेरे पास खडी है और तेरे हाथों मे क्या था तेरे हाथों में हाँ तेरे हाथो मे रुपयों से भरी हुई थैली थी तूने वह थैली मेरी झोली मे रख दी और कहा 'माधो, तू चिंता क्यों करता है ले यह थैली अरे तेरे-मेरे रुपए क्या दो हैं!' सौगधी, तेरी जान की कसम, बस फौरन उठा और टिकट कटाकर इधर का रुख किया क्या सुनाऊँ, बडी परेशानी है, बैठे-बिठाए एक केस हो गया है अब बीस-तीस रुपए हो तो इस्पेक्टर की मुट्ठी गरम करके छुटकारा मिले थक तो नहीं गई तू लेट जा मैं तेरे पैर दबा देता हूँ' सैर की आदत न हो तो थकन हो ही जाया करती है इधर मेरी तरफ पैर करके लेट जा

सौगंधी लेट गई—दोनो बाँहो का तकिया बनाकर वह उस पर सिर रखकर लेट गई और उस लहजे में, जो उसका अपना नही था, माधो से कहने लगी: "माधो, यह किस मुए ने तुझ पर केस किया है जेल-वेल का डर हो तो मुझसे कह दे बीस-तीस क्या, सौ-पचास भी ऐसे मौको पर पुलिस के हाथ मे थमा दिए जाएँ तो फायदा अपना ही होता है जान बची सो लाखों पाए बस-बस अब जाने दे, थकन कुछ ज्यादा नहीं है मुट्ठी चापी छोड और मुझे सारी बात सुना केस का नाम सुनते ही मेरा दिल धक-धक करने लगा है वापस कब जाएगा तू ?"

माधो को सौगधी के मुँह से शराब की बास आई। उसने यह मौका अच्छा समझा और झट से कहा: "दोपहर की गाडी से वापस जाना पड़ेगा अगर शाम तक इस्पेक्टर को पचास-सौ न थमाए तो ज्यादा देने की जरूरत नही मैं समझता हूँ, पचास में काम चल जाएगा।"

"पचास " यह कहकर सौगंधी बडे आराम से उठी और चार तसवीरों के पास आहिस्ता-आहिस्ता गइ जो दीवार पर लटक रही थी। बाएँ तरफ से तीसरे फ्रेम मे माधो की तसवीर थी; बडे-बडे फलोंवाले परदे के आगे कुर्सी पर वह अपने दोनो घुटनों पर हाथ रखे

बैठा था, तसवीर उतरवाते वक्त तसवीर उतरवाने का खयाल माधो पर इस कदर गालिब था कि उसकी हर शै तसवीर से बाहर निकल-निकलकर पुकार रही थी : 'हमारा फोटो उतरेगा, हमारा फोटो उतरेगा !' कैमरे की तरफ माधो आँखे फाड-फाडकर देख रहा था, ऐसा मालूम होता था कि फोटो उतरवाते वक्त उसे बहुत तकलीफ हुई होगी ।

सौगधी खिलखिलाकर हँस पडी । उसकी हँसी कुछ ऐसी तीखी और नुकीली थी कि माधो को सुइयाँ-सी चुभने लगी । पलग पर से उठकर वह सौगधी के पास गया "किसकी तसवीर देखकर तू इस कदर जोर से हँसी है ?"

सौगधी ने बाएँ हाथ की पहली तसवीर की तरफ इशारा किया जो म्युनिसिपैलिटी के दारोगा-ए-सफाई की थी "इसकी म्युनीसिपालटी के दारोगा की जरा देख तो इसका थोबडा कहता था, एक रानी उस पर आशिक हो गई थी ऊँह, यह मुँह और मसूर की दाल " यह कहकर सौगधी ने फ्रेम को इस जोर से खीचा कि दीवार मे से कील भी पलस्तर समेत उखड आई ।

माधो की हैरत अभी दूर न हुई थी कि सौगधी ने फ्रेम को खिडकी से बाहर फेक दिया, दो मजिलो से यह फ्रेम नीचे जमीन पर गिरा और फिर काँच टूटने की झनकार सुनाई दी—सौगधी ने झनकार के उठते ही कहा "रानी भगन कचरा उठाने आएगी तो मेरे इस राजा को भी साथ ले जाएगी ।"

एक बार फिर उसी तीखी और नुकीली हँसी की फुआर सौगधी के होठो से गिरना शुरू हुई, जैसे वह उन पर चाकू या छुरी की धार तेज कर रही हो ।

माधो बडी मुश्किल से मुसकराया, फिर वह हँसा "ही-ही-ही "

सौगधी ने दूसरा फ्रेम भी नोच लिया और खिडकी से बाहर फेक दिया "इस साले का यहाँ क्या मतलब है ? भौंडी शक्ल का कोई आदमी यहाँ नही रहेगा क्यों माधो ?"

माधो फिर बडी मुश्किल से मुसकराया और हँसा "ही-ही-ही "

एक हाथ से सौगधी ने पगडीवाले की तसवीर उतारी और दूसरा हाथ उस फ्रेम की तरफ बढाया, जिसमे माधो का फोटो जडा था ।

माधो अपनी जगह पर सिमट गया, जैसे सौगधी का हाथ उसकी तरफ बढ़ रहा हो ।

एक सैकेड मे फ्रेम कील समेत सौगधी के हाथ मे था ।

जोर का कहकहा लगाकर सौगधी ने 'ऊँह' की और दोनो फ्रेम एक साथ खिडकी मे से बाहर फेक दिए ।

दो मजिलो से जब दोनो फ्रेम जमीन पर गिरे और काँच टूटने की आवाज आई तो माधो को ऐसा मालूम हुआ कि उसके अदर कोई चीज टूट गई है । बडी मुश्किल से उसने हँसकर कहा "यह तूने अच्छा किया मुझे भी यह फोटो पसद नही था ।"

सौगंधी आहिस्ता-आहिस्ता माधो के पास आई और कहने लगी : "तुझे यह फोटो पसद नही था पर मैं पूछती हूँ, तुझमे ऐसी कौन-सी चीज है, जो किसी को पसद आ सकती है यह तेरी पकौड़ा-ऐसी नाक, यह तेरा बालों भरा माथा, यह तेरे सूजे हुए नथुने, यह तेरे मुडे हुए कान, यह तेरे मुँह की बास, यह तेरे बदन का मैल तुझे अपना फोटो पसंद नही था,

ऊँह पसद क्यों होता तेरे ऐब जो छुपा रखे थे इसने आजकल ज़माना ही ऐसा है जो ऐब छुपाए, वही बुरा ''

माधो पीछे हटता गया। आखिर जब वह दीवार के साथ जा लगा तो उसने अपनी आवाज में जोर पैदा करके कहा ''देख सौगधी, मुझे ऐसा दिखाई देता है कि तूने फिर से अपना धंधा शुरू कर दिया है अब मैं तुझसे आखिरी बार कहता हूँ ''

सौगंधी ने माधो की बात काट दी और माधो के लहजे मे कहना शुरू किया . ''अगर तूने फिर से अपना धधा शुरू किया तो बस तेरी-मेरी टूट जाएगी अगर तूने फिर किसी को अपने यहाँ ठहराया तो मैं चुटिया से पकडकर तुझे बाहर निकाल दूँगा इस महीने का खर्च मैं तुझे पूना पहुँचते ही मनीआर्डर कर दूँगा हाँ, क्या भाडा है इस खोली का ?''

माधो चकरा गया।

सौगधी ने अब अपनी आवाज मे कहना शुरू किया 'मैं बताती हूँ पद्रह रुपए भाडा है इस खोली का और दस रुपए भाडा है मेरा और जैसा कि तुझे मालूम है, ढाई रुपए दलाल के बाकी रहे साढे सात, रहे ना साढ़े सात इन साढ़े सात रुपयों में मैंने तुझे ऐसी चीज देने का वचन दिया था, जो मैं तुझे दे ही नहीं सकती थी और तू ऐसी चीज लेने आया था, जो तू ले ही नहीं सकता था तेरा और मेरा नाता ही क्या था, कुछ भी नही बस दस रुपए तेरे और मेरे बीच मे बज रहे थे पहले तेरे और मेरे बीच में दस रुपए बजते थे, आज पचास रुपए बज रहे हैं तू भी इनका बजना सुन रहा है और मैं भी इनका बजना सुन रही हूँ यह तूने अपने बालो का क्या सत्यानास कर रखा है !'' यह कहकर सौगधी ने माधो की टोपी उँगली मे एक तरफ उडा दी।

माधो को सौगधी की यह हरकत बहुत नागवार गुजरी। उसने बड़े कडे लहजे मे कहा ''सौगधी !''

सौगधी ने माधो की जेब से रूमाल निकालकर सूँघा और फिर फर्श पर फेंक दिया ''यह चिथडे, यह चिंदियाँ उफ, कितनी बास आती है उठा के बाहर फेंक इनको ''

माधो चिल्लाया ''सौगधी ''

सौगधी ने तेज लहजे मे कहा ''सौगधी के बच्चे, तू आया किसलिए है यहाँ तेरी माँ रहती है इस जगह, जो तुझे पचास रुपए देगी या तू कोई ऐसा बड़ा गबरू जवान है, जो मैं तुझ पर आशिक हो गई हूँ कुत्ते, कमीने, मुझ पर रोब गाँठता है मैं तेरी दबैल हूँ क्या भिखमगे तू अपने आपको समझ क्या बैठा है मैं पूछती हूँ, तू है कौन चोर या गठकतरा इस वक्त तू मेरे मकान मे करने क्या आया था ? बुलाऊँ पुलिस को पूने में तुझ पर केस हो न हो, यहाँ तुझ पर एक केस मैं खडा कर दूँगी ''

माधो सहम गया। दबे हुए लहजे मे वह सिर्फ इस कदर कह सका ''सौगधी, तुझे हो क्या गया है ?''

''तेरी माँ का सिर तू होता कौन है मुझसे ऐसे सवाल करनेवाला ? भाग यहाँ से, वरना '' सौगंधी की बलद आवाज सुनकर उसका खारिशजदा कुत्ता, जो सूखे हुए चप्पलों पर मुँह रखे सो रहा था, हडबडाकर उठ बैठा और उसने माधो की तरफ मुँह

उठाकर भौंकना शुरू कर दिया—कुत्ते के भौंकने के साथ ही सौगंधी जोर से हँसने लगी।

माधो डर गया। गिरी हुई टोपी उठाने के लिए वह झुका तो उसे सौगंधी की गरज सुनाई दी ''खबरदार पडी रहने दे वहीं तू जा, तेरे पूना पहुँचते ही मैं इसे मनीआर्डर कर दूँगी '' यह कहकर सौगंधी जोर से हँसी और हँसते-हँसते कुर्सी पर बैठ गई।

उसके खारिशजदा कुत्ते ने भौंक-भौंककर माधो को कमरे से बाहर निकाल दिया।

माधो को सीढियाँ उतारकर जब कुत्ता अपनी टुंड-मुंड दुम हिलाता सौगंधी के पास वापस आया और उसके कदमों के पास बैठकर अपने कान फडफडाने लगा तो सौगंधी चौंकी।

उसने अपने चारों तरफ एक हौलनाक सन्नाटा देखा, ऐसा सन्नाटा, जो उसने पहले कभी न देखा था, उसे ऐसा लगा कि हर शै खाली है; जैसे मुसाफिरो से लदी हुई रेलगाडी सब स्टेशनो पर मुसाफिरो को उतारकर अब लोहे के शेड मे बिलकुल अकेली खडी है।

यह खला, जो अचानक सौगंधी के अंदर पैदा हो गया था, उसे बहुत तकलीफ दे रहा था, उसने काफी देर तक इस खला को भरने की कोशिश की, मगर बेसूद[26], वह एक ही वक्त में बेशुमार खयालात अपने दिमाग मे ठूँसती थी, मगर बिलकुल छलनी का-सा हिसाब था, इधर वह दिमाग को पुर करती थी, उधर वह खाली हो जाता था।

बहुत देर तक वह बेत की कुर्सी पर बैठी रही—सोच-विचार के बाद भी जब उसको अपना दिल परचाने का कोई तरीका न मिला तो उसने अपने खारिशजदा कुत्ते को गोद मे उठाया और सागवान के चौड़े पलंग पर उसे पहलू मे लिटाकर सो गई।

---

1 परिश्रम; 2 बेमेल; 3 शराब; 4 सिलवटें पडा हुआ, 5 अदृश्य, 6 सुरक्षित, 7 बहुत अधिक, 8 उपेक्षा, 9 अंग, 10 पक्का इरादा, 11. तेजी, 12 योग्यता, 13 फिर भी, 14. भाव, 15 इस्लामी टैक्स; 16 थूक, 17 तंगहाली, 18. जहाँ तक नजर जाती हो, 19 पसीने मे तर, 20 खाली जगह, 21 सन्तुलित, 22 अच्छे स्वभाव की, 23 सिर मे दर्द पैदा करनेवाला काम, 24. बेइज्जती, 25 बदला, 26. लाभ रहित।

मम्मी

नाम उसका मिसेज स्टैला जैक्सन था, मगर सब उसे मम्मी कहते थे।

वह दरमियाने क़द की, अधेड़ उम्र की औरत थी—उसका ख़ाविंद जैक्शन पिछली जंगे-अज़ीम[1] में मारा गया था और उसकी पैंशन स्टैला को पिछले चंद बरसों से मिल रही थी।

वह पूना में कैसे आई, कब से वहाँ थी? इसके मुतल्लिक मुझे कुछ मालूम नहीं—दरअसल मैंने उसके महल्ले-वक़ूअ[2] के मुतल्लिक कभी जानने की कोशिश ही नहीं की थी; वह इतनी दिलचस्प औरत थी कि उससे मिलकर सिवाय उसकी जात के और किसी चीज़ से दिलचस्पी नहीं रहती थी; उससे कौन वाबस्ता है, इसके बारे में जानने की ज़रूरत ही महसूस नहीं होती थी।

मम्मी पूना के हर ज़र्रे से वाबस्ता थी; हो सकता है, मेरी बात में एक हद तक मुबालगा[3] हो, पूना मेरे लिए वही पूना है, उसके ज़र्रे वही ज़र्रे हैं, जिनके साथ मेरी चंद यादें मुसलिक[4] हैं; और मम्मी की अजीबो-गरीब शख्सियत हर एक ज़र्रे में मौजूद है।

मम्मी से मेरी पहली मुलाकात पूने ही में हुई।

मैं निहायत सुस्तउलवुजूद[5] इंसान हूँ, यूँ सैरो-सैयाहत[6] की बड़ी-बड़ी उमगें मेरे दिल में मौजूद हैं, आप मेरी बातें सुनें तो समझेंगे कि मैं अनकरीब कंचनचंघा या हिमायल की इसी किस्म की नाम की किसी और चोटी को सर[7] करने के लिए निकलनेवाला हूँ; ऐसा हो सकता है, मगर यह ज्यादा अग़लब[8] है कि मैं चोटी सर करने के बाद वहीं का हो रहूँ—खुदा मालूम मैं कितने बरस से बंबई में था, आप इससे अंदाजा लगा सकते हैं कि जब मैं पूना गया तो मेरी बीवी मेरे साथ थी, एक लड़का पैदा होकर करीब-क़रीब चार बरस पहले मर भी चुका था, इस दौरान में ठहरिए मैं हिसाब लगा लूँ बस आप यह समझ लीजिए कि मैं कोई आठ बरस से बंबई में था, मगर इस दौरान में मुझे बंबई का विक्टोरिया गार्डन और म्यूज़ियम देखने की भी तौफ़ीक़[9] नहीं हुई थी।

यह तो महज इत्तिफ़ाक था कि मैं एकदम पूना जाने के लिए तैयार हो गया—मैं जिस फ़िल्म कंपनी में मुलाज़िम था, उसके मालिकों से एक निकम्मी-सी बात पर दिल में नाराज़ी पैदा हो गई और मैंने सोचा कि तकद्दुर[10] दूर करने के लिए पूना हो आऊँ; वह भी इसलिए कि पास था और वहाँ मेरे चंद दोस्त रहते थे।

हमें प्रभातनगर जाना था, जहाँ फिल्मों का मेरा एक पुराना साथी रहता था—स्टेशन से

बाहर आकर मालूम हुआ कि प्रभातनगर काफ़ी दूर है, मगर हम ताँगा ले चुके थे।

सुस्तरू चीजो से मेरी तबीयत सख्त घबराती है, मगर मैं अपने दिल मे कदूरत[11] दूर करने के लिए पूना आया था, इसलिए मुझे प्रभातनगर पहुँचने मे कोई उजलत[12] नही थी—पूना के ताँगे बहुत ही वाहियात क़िस्म के हैं, अलीगढ़ के इक्कों से भी ज़्यादा वाहियात, हर वक़्त गिरने का खतरा लगा रहता है; घोडा आगे चलता है और सवारियाँ पीछे।

अभी गर्द से अँटे हुए एक-दो बाज़ार ही उफ़ता-ओ-ख़ीज़ाँ[13] तय हुए थे कि मेरी तबीयत घबरा गई। मैंने अपनी बीवी से मश्वरा किया कि ऐसी सूरत मे क्या करना चाहिए। उसने कहा कि धूप तेज़ है और जितने भी ताँगे दिखाई दिए हैं, सभी इसी किस्म के हैं; ताँगा छोड दिया तो पैदल चलना पड़ेगा और पैदल चलना ताँगे की सवारी से ज्यादा तकलीफदेह होगा—मैंने बीवी से इख़्तिलाफ़[14] मुनासिब न समझा कि धूप वाकई तेज थी।

ताँगा कोई एक फ़र्लांग और आगे बढ़ा होगा कि पास से उसी हवन्नक[15] टाइप का एक और ताँगा गुज़रा—मैंने उस ताँगे को सरसरी तौर पर देखा ही था कि एकदम कोई चीखा : "ओय मंटो के घोडे!"

मैं चौंक पड़ा—चड्ढा था, एक घिसी हुई मेम के साथ, दोनो जुड के बैठे हुए थे—मेरा पहला रद्दे-अमल इंतिहाई अफ़सोस का था कि चड्ढे की जमालियाती हिस[16] कहाँ गई, जो ऐसी लाल लगामी के साथ बैठा हुआ है; उम्र का ठीक अदाजा तो मैं उस वक्त न लगा सका था, मगर उस औरत की झुर्रियाँ मुझे पाउडर और रूज की तहो मे से साफ नजर आ गई थी, उसका मेकअप इतना शोख़ था कि मेरी बसारत[17] को सख्त कोफ्त हुई थी।

चड्ढे को मैंने एक अर्से[18] के बाद देखा था, वह मेरा बेतकल्लुफ दोस्त था, 'ओए मंटो के घोड़े' के जवाब मे यक़ीनन मैंने भी कुछ इसी किस्म का नारा बुलंद किया होता, मगर चड्ढे के साथ उस औरत को देखकर मेरी सारी बेतकल्लुफ़ी झुर्रियाँ-झुर्रियाँ हो गई।

हम दोनों ने अपने-अपने ताँगे रुकवाए।

"मम्मी, जस्ट ए मिनट..." चड्ढे ने अँग्रेज़ी में उस औरत से कहा और ताँगे से कूदकर मेरी तरफ़ हाथ बढ़ाते हुए चीखा : "तुम...? तुम यहाँ...?" फिर उसने अपना बढा हुआ हाथ बड़ी बेतकल्लुफ़ी से मेरी पुरतकल्लुफ़ बीवी से मिलाते हुए कहा : "भाभीजान, आपने कमाल कर दिया... इस गुल मुहम्मद को आखिर आप खींचकर यहाँ ले ही आईं!"

मैंने पूछा : "तुम जा कहाँ रहे हो?"

चड्ढे ने ऊँचे सुरों में कहा : "एक काम से जा रहा हूँ... तुम ऐसा करो..." वह एकदम पलटकर मेरे ताँगेवाले से मुख़ातिब हुआ : "देखो, साहब को हमारे घर ले जाओ... किराया-विराया मत लेना इनसे..." फिर फ़ौरन ही निबटने के अंदाज़ में उसने मुझसे कहा : "अब तुम जाओ... नौकर घर में होगा... बाक़ी तुम ख़ुद देख लेना।" और फुदककर वह अपने ताँगे में उस बूढ़ी मेम के साथ बैठ गया, जिसको उसने मम्मी कहा था।

'मम्मी, जस्ट ए मिनट' से मुझे एक गुना तस्कीन[19] हुई थी, बल्कि यूँ समझिए कि वह बोझ, जो एकदम दोनों को साथ-साथ देखकर मेरे सीने पर आन पडा था, काफ़ी हद तक हल्का हो गया था।

चड्ढे का ताँगा चल पड़ा—मैंने अपने ताँगेवाले से कुछ न कहा।

तीन या चार फ़र्लांग चलकर हमारा ताँगा एक डाकबँगलानुमा किस्म की इमारत के पास रुक गया।

ताँगेवाले ने कहा : "आइए साहब!"

मैंने पूछा : "कहाँ?"

उसने जवाब दिया : "चड्ढा साहब का मकान यही है।"

"ओह..." मैंने सवालिया नज़रों से अपनी बीवी की तरफ़ देखा—उसके तेवर बता रहे थे कि वह चड्ढे के मकान के हक़ मे नहीं है; सच पूछिए तो वह पूना ही आने के हक़ में नहीं थी; उसको यक़ीन था कि पूना मे मुझे पीने-पिलानेवाले दोस्त मिल जाएँगे; तकद्दुर दूर करने का बहाना मेरे पास पहले ही से मौजूद है, इसलिए दिन-रात उड़ेगी—मैं ताँगे से उतर गया; अपना छोटा-सा अटैची केस उठाने के बाद मैंने अपनी बीवी से कहा : "चलो, आओ।"

वह ग़ालिबन मेरे तेवरों से जान गई थी कि उसे हर हालत में मेरा फ़ैसला क़ुबूल करना होगा, उसने हीलो-हुज्जत[20] न की और ख़ामोशी से मेरे साथ चल पड़ी।

बहुत मामूली किस्म का मकान था: ऐसा मालूम होता था कि मिलिट्रीवालों ने आरज़ी[21] तौर पर एक छोटा-सा बँगला बनवाया था, थोड़े दिन इस्तेमाल किया और फिर छोड़कर चलते बने—चूने और गच का काम बड़ा कच्चा था, जगह-जगह से पलस्तर उखड़ा हुआ था।

मकान का अंदरूनी हिस्सा वैसा ही था, जैसा कि एक बेपरवा कुँवारे का हो सकता है; जो फ़िल्मों का हीरो हो और ऐसी कंपनी में मुलाज़िम हो, जहाँ माहाना[22] तनख़्वाह हर तीसरे महीने मिलती हो और वो भी कई किस्तों में।

मुझे पूरा एहसास था कि वह औरत, जो बीवी हो, ऐसे गंजे माहौल में यक़ीनन परेशानी और घुटन महसूस करेगी—मैंने सोचा कि चड्ढा आ जाए तो उसके साथ हम प्रभातनगर चलें, वहाँ फ़िल्मों का मेरा एक पुराना साथी रहता है; उसकी बीवी और बाल-बच्चे भी हैं; वहाँ के माहौल मे मेरी बीवी क़हर दरवेश बर-जाने-दरवेश[23] दो-तीन दिन गुज़ार सकती है।

चड्ढे का नौकर भी अजीब लाउबाली[24] आदमी था—जब हम घर में दाख़िल हुए तो सब दरवाज़े खुले हुए थे और वह मौजूद नहीं था; जब वह आया तो उसने हमारी मौजूदगी का कोई नोटिस ही न लिया, जैसे हम सालहासाल[25] से वहीं बैठे हों और अभी सालहासाल वहीं बैठे रहने का इरादा रखते हों—जब वह कमरे में दाख़िल होकर हमें देखे बग़ैर पास से गुज़र गया तो मैं समझा कि शायद वह कोई मामूली-सा ऐक्टर है, जो चड्ढे के साथ रहता है; जब मैंने उससे नौकर के बारे में इस्तिफ़सार[26] किया तो मालूम हुआ कि वही ज़ाते-शरीफ़[27] चड्ढा साहब के चहीते मुलाज़िम हैं।

मुझे और मेरी बीवी, हम दोनों को प्यास लग रही थी—हमने नौकर से पानी लाने को कहा तो वह गिलास ढूँढ़ने लगा।

बड़ी देर के बाद उसने एक टूटा हुआ मग अलमारी के नीचे से निकाला और

बडबडाया "गत एक दर्जन गिलास साहब ने मँगवाए थे मालूम नहीं, किधर गए!"

मैंने उसके हाथ मे पकडे हुए शिकस्ता[28] मग की तरफ़ इशारा किया : "क्या आप इसमें तेल लेने जा रहे है ?"

'तेल लेने जाना' बंबई का एक खास मुहावरा है, मेरी बीवी मुहावरे का मतलब न समझी और हँस पडी; नौकर किसी कदर बौखला गया : "नहीं साहब, मैं मैं तपास[29] कर रहा था कि गिलास कहाँ हैं ?"

मेरी बीवी ने नौकर को पानी लाने से मना कर दिया—उसने वह टूटा हुआ मग वापस अलमारी के नीचे इस अदाज से रखा, जैसे वही उसकी जगह हो, जैसे अगर उसे कही और रख दिया गया तो घर का सारा निजाम[30] दरहम-बरहम[31] हो जाएगा; फिर वह यूँ कमरे से बाहर निकल गया जैसे उसको मालूम हो कि हमारे मुँह मे कितने दाँत हैं।

मैं पलंग पर बैठा हुआ था, जो गालिबन चड्ढे का था; कुछ दूर, ज़रा एक तरफ दो आरामकुर्सियाँ पडी थीं और उनमे से एक पर मेरी बीवी बैठी पहलू बदल रही थी! काफ़ी देर तक हम दोनो खामोश रहे।

फिर चड्ढा आ गया, वह अकेला था, उसको इस बात का कतअन एहसास नही था कि हम उसके मेहमान हैं और हमारी खातिरदारी उस पर लाजिम[32] है—कमरे के अदर दाखिल होते ही उसने मुझसे कहा : "दैट इज दैट तो तुम आ ही गए ओल्ड ब्वॉय आओ जरा स्टूडियो तक हो आएँ तुम साथ होगे तो एडवास मिलने मे आसानी हो जाएगी आज शाम को " मेरी बीवी पर उसकी नजर पडी तो वह रुक गया; फिर खिलखिलाकर हँसने लगा "भाभीजान, कही आपने इसे मौलवी तो नहीं बना दिया ? " फिर वह और जोर से हँसा "मौलवियो की ऐसी-तैसी उठो मटो भाभीजान यहाँ बैठती हैं, हम अभी आ जाएँगे ।"

मेरी बीवी जलकर पहले ही कोयला हो चुकी थी, अब बिलकुल राख हो गई—मैं उठा और चड्ढे के साथ हो लिया; मुझे मालूम था कि वह थोड़ी देर पेचो-ताब खाएगी और फिर सो जाएगी, और यही हुआ। स्टूडियो पास ही था; चड्ढा ने किसी मेहता जी के सिर चढकर एक अफरा-तफरी में दो सौ रुपए वसूल किए और हम पौन घटे के अंदर-अंदर वापिस घर लौट आए—हमने देखा कि मेरी बीवी आरामकुर्सी पर बडे आराम से सो रही है।

हमने उसे बेआराम करना मुनासिब न समझा और दूसरे कमरे मे चले गए, जो कबाडखाने से मिलता-जुलता था; उस कमरे में जो चीज़ भी मौजूद थी, हैरतअंगेज तरीके पर टूटी हुई थी और सब टूटी हुई चीज़ें मज्मूई[33] तौर पर एक सालिमगी[34] इख़्तियार कर चुकी थी—हर शै गर्द आलूद थी और उस आलूदगी में एक जरूरीपन था, जैसे गर्द की मौजूदगी उस कमरे की बूहीमी[35] फ़ज़ा की तक्मील[36] के लिए लाज़िमी हो।

चड्ढे ने फौरन ही अपने नौकर को ढूँढ़ निकाला और उसे सौ रुपए का नोट देकर कहा : "चीन के शहज़ादे, दो बोतलें थर्ड क्लास रम की ले आओ और निस्फ़[37] दर्जन गिलास "

यह मुझे बाद में मालूम हुआ कि थर्ड क्लास रम का मतलब थ्री एक्स रम है; यह भी मुझे बाद में मालूम हुआ कि उसका नौकर सिर्फ़ चीन ही का नहीं, दुनिया के हर मुल्क का

शहजादा है—चड्ढे की जबान पर जिस मुल्क का नाम आ जाता, उसका नौकर उसी मुल्क का शहजादा बन जाता—चीन का शहजादा सौ का नोट उँगलियों में खड़खडाता हुआ चला गया।

चड्ढे ने टूटे हुए स्प्रिंगोंवाले पलंग पर बैठकर अपने होंठ थ्री एक्स रम के इस्तिकबाल[38] मे चटखारते हुए कहा "दैट इज़ दैट तो आफ्टर ऑल तुम इधर आ ही निकले" फिर वह एकदम मुतफक्किर[39] हो गया . "यार, भाभी का क्या होगा वह तो घबरा जाएगी"

चड्ढा बगैर बीवी के था, मगर उसको दूसरों की बीवियों का बहुत खयाल रहता था; वह उनका इस क़दर एहतिराम[40] करता था कि सारी उम्र कुँआरा रहना चाहता था। वह कहा करता था 'यार, शायद यह मेरा एहसासे-कमतरी[41] है कि मैं अभी तक इस नेमत मे महरूम[42] हूँ जब कभी शादी का सवाल उठता है, मैं फौरन तैयार हो जाता हूँ लेकिन बाद में यह सोचकर कि अगर मेरी शादी हो गई तो मैं दोस्तों की बीवियो का एहतिराम कैसे कर पाऊँगा, मैं सारी तैयारी कोल्ड स्टोरेज में डाल देता हूँ'

रम फ़ौरन ही आ गई और गिलास भी; चड्ढे ने छः गिलास मँगवाए थे, लेकिन चीन का शहजादा तीन लाया था कि तीन रास्ते में टूट गए थे; चड्ढे ने ख़ुदा का शुक्र किया कि बोतलें सलामत रहीं—उसने एक बोतल जल्दी-जल्दी खोलकर कुँआरे गिलासो में डाली और कहा तुम्हारे पूना आने की खुशी में।"

हमने लंबे-लंबे घूँट भरे और गिलास ख़ाली कर दिए।

दूसरा दौर शुरू करके वह उठा और दूसरे कमरे में जाकर देख आया कि मेरी बीवी अभी तक सो रही है—उसको बहुत तरस आ रहा था; कहने लगा "मैं शोर मचाता हूँ उनकी नींद खुल जाएगी फिर ऐसा करेंगे, लेकिन ठहरो पहले मैं चाय मँगवा लूँ" उसने रम का एक छोटा-सा घूँट भरा और नौकर को आवाज दी "जमैका के शहजादे!"

जमैका का शहजादा फ़ौरन ही आ गया।

चड्ढे ने कहा "देखो, मम्मी से कहो, एकदम फ़र्स्ट क्लास चाय तैयार करके भेज दे एकदम!"

जमैका का शहज़ादा चला गया तो चड्ढे ने अपना गिलास खाली किया और फिर एक शरीफ़ाना पैग बनाकर कहा . "मैं फिलहाल ज़्यादा नहीं पियूँगा पहले चार पैग मुझे बहुत जज़्बाती बना देते हैं मुझे भाभी को छोड़ने तुम्हारे साथ प्रभातनगर जाना है"

आधे घंटे के बाद चाय आ गई—बहुत साफ-सुथरे बर्तन थे और बडे सलीके से ट्रे में चुने हुए थे।

चड्ढे ने टीकोज़ी उठाकर चाय की खुशबू सूँघी और मसर्रत[43] का इज़हार किया: "मम्मी इज ए ज्वैल[44]!" फिर उसने इथोपिया के शहज़ादे पर बरसना शुरू कर दिया; उसने इतना शोर मचाया कि मेरे कान बिलबिला उठे; इसके बाद उसने ट्रे उठाई और मुझसे कहा . "आओ।"

मेरी बीवी जाग रही थी।

चड्ढे ने ट्रे बडी सफाई से शिकस्ता तिपाई पर रखी और मो'दबाना[45] कहा : "चाय हाजिर है बेगम साहब !"

मेरी बीवी को यह मजाक पसद न आया—उसने चाय की दो प्यालियाँ पी लीं कि बर्तन वगैरह साफ-सुथरे थे और चाय अच्छी थी।

दो प्यालियाँ पीने के बाद उसको कुछ फरहत[46] पहुँची तो उसने हम दोनों से मुखातिब होकर मानीखेज लहजे में कहा : "आप तो अपनी चाय शायद पहले ही पी चुके हैं।"

मैंने कोई जवाब न दिया, मगर चड्ढे ने झुककर बडे ईमानदाराना तौर पर कहा : "जी हाँ, यह ग़लती हमसे सरज़द[47] हो चुकी है लेकिन हमे यकीन था कि आप हमारी ग़लती जरूर माफ कर देंगी "

मेरी बीवी मुसकराई तो वह खिलखिला के हँस पड़ा : "हम दोनों बहुत ऊँची नस्ल के सुअर हैं, जिन पर हर हराम शै हलाल है चलिए, अब हम आपको मस्जिद तक छोड आएँ।"

मेरी बीवी को फिर चड्ढे का मजाक़ पसद न आया—दरअसल मेरी बीवी को चड्ढे ही मे नफरत थी, बल्कि यूँ कहिए कि उसको मेरे हर दोस्त से नफ़रत थी; और चड्ढा तो बिल्खुसूस[48] उसे बहुत खलता था कि वह एहतिराम के बावजूद बाज औकात बेतकल्लुफ़ी की हुदूद[49] फाँद जाता था; मगर चड्ढे को इसकी कोई परवाह नहीं थी; मेरा ख़याल है, उसने कभी इसके बारे में सोचा ही नहीं था, वह ऐसी फ़िज़ूल बातों में दिमाग़ ख़र्च करना एक ऐसी इनडोर गेम समझता था, जो लूडो से कई गुना लायानी[50] है।

उसने मेरी बीवी के जले-भुने तेवरों को बडी हश्शाश-बश्शाश[51] आँखों से देखा और नौकर को आवाज दी "कबाबिस्तान के शहजादे एक अदद ताँगा लाओ, रोल्ज रॉयस किस्म का।"

कबाबिस्तान का शहज़ादा चला गया और साथ ही चड्ढा भी।

तखलिया[52] मिला तो मैंने अपनी बीवी को समझाया कि कबाब होने की कोई जरूरत नहीं; इंसान की ज़िंदगी मे ऐसे लम्हात आ ही जाया करते हैं, जो वहमो-गुमान मे भी नही होते; उनको बसर करने का सबसे अच्छा तरीका यही है कि उनको गुजर जाने दिया जाए—लेकिन हस्बे-मामूल मेरी बीवी ने मेरी इस कंफ़्यूशिसयाना[53] नसीहत को पल्ले ना बाँधा और बड़बड़ाती रही।

इतने मे कबाबिस्तान का शहजादा रोल्ज रॉयस किस्म का ताँगा लेकर आ गया और हम प्रभातनगर के लिए रवाना हो गए।

और यह बहुत ही अच्छा हुआ कि फ़िल्मों का मेरा पुराना साथी घर में मौजूद नहीं था; हाँ उसकी बीवी थी—चड्ढे ने मेरी बीवी मेरे पुराने साथी की बीवी के सुपुर्द की और कहा : "ख़रबूजा, ख़रबूज़े को देखकर रंग पकडता है बीवी, बीवी को देखकर रंग पकड़ती है, और यह हम अभी हाज़िर होकर देखेंगे ।" फिर वह मुझसे मुख़ातिब हुआ : "चलो मंटो, स्टूडियो में तुम्हारे पुराने साथी को पकड़ें।"

चडढा कुछ ऐसी अफ़रा-तफ़री मचा दिया करता था कि मुख़ालिफ़[54] क़ुव्वतो[55] को

सोचने-समझने का बहुत कम मौक़ा मिलता था—उसने मेरा बाज़ू पकडा और मुझे बाहर खींच लाया—मेरी बीवी देखती ही रह गई।

ताँगे में सवार होकर उसने कुछ सोचने के-से अंदाज़ में कहा "यह तो हो गया अब प्रोग्राम क्या बने" फिर खिलखिलाकर हँस पडा . "मम्मी ग्रेट मम्मी!"

मैं चड्ढे से पूछने ही वाला था . 'यह मम्मी क़िस तोतनख आमून[56] की औलाद है' कि उसने बातो का कुछ ऐसा सिलसिला शुरू कर दिया कि मेरा इस्तिफसार[57] ग़ैर तबई[58] मौत मर गया।

ताँगा वापस उसी डाकबँगलानुमा इमारत के पास पहुँच गया, जिसका नाम सईदा काटेज था, मगर चड्ढा जिसको कबीदा[59] काटेज कहता था, इसलिए कि उसमे रहनेवाले, सबके-सब, कबीदा ख़ातिर रहते थे, हालाँकि यह गलत था, जैसा कि मुझे बाद मे मालूम हुआ।

उस काटेज में काफी आदमी रहते थे, जबकि बादीउलनजर[60] मे वह जगह बिलकुल ग़ैर आबाद मालूम होती थी: सबके-सब उसी फिल्म कपनी मे मुलाजिम थे, जो महीने की तनख्वाह हर तीसरे महीने देती थी और वह भी कई किस्तो में—एक-एक करके जब उस काटेज के साकिनों[61] से मेरा तआरुफ[62] हुआ तो मुझे पता चला कि सब असिस्टेट डायरेक्टर थे; कोई चीफ असिस्टेट डायरेक्टर था तो कोई उसका नायब और कोई नायब दर नायब, हर दूसरा किसी पहले का असिस्टेंट था और अपनी ज़ाती फिल्म कंपनी की बुनियादे उस्तुवार[63] करने के लिए सरमाया फराहम[64] करने की कोशिश कर रहा था, पोशिश[65] और वज़े-क़ते[66] के एतिबार से हर एक हीरो मालूम होता था—कट्रोल का ज़माना था, मगर किसी के पास राशनकार्ड नहीं था, हर वह चीज, जो थोडी-सी तकलीफ के बाद कम कीमत पर दस्तेयाब[67] हो सकती थी, यह लोग ब्लैक मार्केट मे खरीदते थे; फिल्म जरूर देखते थे, रेस का मौसम हो तो रेस जरूर खेलते थे, वरना सट्टा, जीतते शाज़ो[68] नादिर थे, मगर हारते हर रोज़ थे।

सईदा काटेज की आबादी बहुत गजान थी, जगह कम थी, इसलिए मोटर गैरेज भी रिहाइश के लिए इस्तेमाल होता था—उस मोटर गैरेज मे एक फैमिली रहती थी; शीरी नाम की एक औरत थी, जिसका खाविंद शायद महज यकसानियत[69] तोड़ने के लिए असिस्टेट डायरेक्टर नहीं था, हालाँकि वह उसी फिल्म कपनी मे मुलाजिम था; वह मोटर ड्राइवर था, मालूम नहीं, वह काटेज में कब आता था, और काटेज से कब जाता था कि मैंने उस शरीफ आदमी को वहाँ कभी नही देखा। शीरी के बत्न मे एक छोटा-सा लड़का था, जिसको काटेज के तमाम साकिन फुर्सत के औकात में प्यार करते थे; शीरीं जो क़ुबूल सूरत थी, अपना बेशतर वक्त गैरेज के अदर गुज़ारती थी।

काटेज का मुअज़्ज़िज़[70] हिस्सा चड्ढे और उसके दो साथियों के पास था; यह दोनो भी ऐक्टर थे, मगर हीरो नहीं थे, इनमें एक सईद था, जिसका फिल्मी नाम रंजीत कुमार था—चड्ढा कहा करता था : 'सईदा काटेज इसी ख़रज़ात[71] के नाम की रिआयत से मशहूर है दरअसल इसका नाम कबीदा काटेज ही था' " सईद ख़ुशशक्ल था और बहुत कम

गो: चड्ढा उसे कछवा कहा करता था, इसलिए कि वह हर काम बहुत आहिस्ता-आहिस्ता करता था दूसरे ऐक्टर का नाम मालूम नही क्या था, मगर सब उसे गरीबनवाज कहते थे; वह हैदराबाद के एक मुतमव्विल[72] घराने से ताल्लुक रखता था और ऐक्टिंग के शौक मे वह पूना चला आया था, तनख्वाह उसकी ढाई सौ रुपए माहवार मुकर्रर थी; एक बरस हो गया था उसे मुलाजिम हुए, मगर इस दौरान में उसने सिर्फ एक दफा ढाई सौ रुपए बतौर एडवांस लिए थे; वह भी चड्ढे के लिए कि चड्ढे पर एक बडे खूँख्वार पठान के कर्ज की अदाइगी लाजिम हो गई थी, 'अदबे-लतीफ[73]' किस्म की इबारत में फिल्मी कहानियाँ लिखना उसका शुग्ल था, कभी-कभी शेर भी मौजूँ कर लेता था; काटेज का हर शख्स उसका मकरूज[74] था—एल ब्रादरान अकील और शकील थे, दोनो किसी असिस्टेंट डायरेक्टर के असिस्टेंट थे और बरअक्स नाम निहंद नामे-जंगी बाका फूर की जरबुलमिरूल के इबताल की कोशिश मे हमातन[75] ममरूफ[76] रहते थे—बड़े तीन, यानी चड्ढा, सईद और गरीबनवाज हर वक्त शीरी का खयाल रखते थे; वे तीनो एक साथ गैरेज में नहीं जाते थे; तीनो जब काटेज के बडे कमरे मे जमा होते तो उनमे से एक उठकर गैरेज में चला जाता और गैरेज मे बैठकर शीरी से घरेलू मामलात पर बातचीत करता रहता, बाकी दोनो अपने अशगाल[77] मे ममरूफ रहते—जो असिस्टेंट किस्म के लोग थे, वह शीरी का हाथ बँटाया करते थे, कभी बाजार से सौदा-सुलफ ला दिया, कभी लाड्री मे कपडे धुलने दे आए और कभी रोते बच्चे को बहला दिया—सईदा काटेज के साकिनो मे कबीदा खातिर कोई भी न था, सबके-सब ममरूर[78] थे, उनमें से कभी कोई अपनी कबीदगी[79] का, अपने हालात की नामुसाअदत[80] का जिक्र करता भी था तो बडे शादाँ व फरहाँ[81] अदाज मे—इसमे कोई शक नही कि उन सबकी जिंदगी बहुत दिलचस्प थी।

हम काटेज के गेट मे दाखिल हुए ही थे कि गरीबनवाज काटेज से बाहर निकलता हुआ दिखाई दिया चड्ढे ने उसकी तरफ गौर से देखा और अपनी जेब मे हाथ डालकर कई नोट निकाले और गिने बगैर गरीबनवाज को दे दिए "चार बोतले स्कॉच की कमी आप पूरी कर दीजिएगा, बेशी हो तो मुझे वापस मिल जाए।"

गरीबनवाज के हैदराबादी होठो पर गहरी साँवली मुसकराहट नमूदार हुई।

चड्ढा खिलखिलाकर हँस पडा और मेरी तरफ देखकर उसने गरीबनवाज से कहा . "यह मिस्टर वन ट हैं, लेकिन इनसे मुफस्सिल[82] मुलाकात की इजाजत इस वक्त नही मिल सकती यह रम पिए हुए हैं शाम को स्कॉच आ जाए तो लेकिन आप जाइए!"

गरीबनवाज चला गया तो हम काटेज मे दाखिल हुए।

चड्ढे ने एक जोर की जम्हाई ली और रम की बोतल उठाई जो निस्फ से ज्यादा खाली थी, उसने रोशनी मे मिकदार[83] का सरसरी अंदाज़ा किया और नौकर को आवाज दी "कजाकिस्तान के शहजादे " जब कजाकिस्तान का शहजादा नमूदार न हुआ तो चड्ढे ने अपने गिलास में एक बडा पैग डालते हुए कहा . "ज्यादा पी गया है कमबख्त !" गिलास चढाकर वह कुछ फिक्रमद हो गया "यार, तुम भाभी को ख्वाहमख्वाह ले आए खुदा की कसम, मुझे अपने सीने पर एक बोझ-सा महसूस हो रहा है " फिर उसने खुद ही अपने को

तस्कीन[84] दी · "मेरा खयाल है, वह बोर नहीं होगी क्हाँ ?"

मैंने कहा . "हाँ, वहाँ रहकर वह मेरे कत्ल का फौरी इरादा नहीं कर सकती " मैंने अपने गिलास में थोडी-सी रम डाली, जिसका जाइका बुसे हुए गुड की तरह था।

जिस कबाडखाने में हम बैठे हुए थे, उसमें सलाखोवाली दो खिडकियाँ थी, जिनसे बाहर का गैर आबाद हिस्सा नजर आता था—खिडकी से किसी के बआवाजे[85] बुलद चड्ढा का नाम लेकर पुकारने की आवाज सुनाई दी तो मैं चौंक पडा, मैंने गर्दन घुमाकर देखा तो म्युजिक डायरेक्टर वनकुतरे दिखाई दिया—कुछ समझ मे नही आता था कि वनकुतरे किस नस्ल का है, मंगोली है, आर्य है, या क्या बला है; कभी-कभी उसके किसी खद्दोखाल[86] को देखकर आदमी किसी नतीजे पर पहुँचने ही वाला होता था कि तकाबुल[87] में कोई और ऐसा नक्श नजर आ जाता था कि फौरन ही नए सिरे से गौर करना पड जाता था, वैसे वह मरहटा था, मगर शिवाजी की तीखी नाक के बजाय उसके चेहरे पर बडे हैरतनाक तरीके पर मुडी हुई चपटी नाक थी, जो उसके खयाल के मुताबिक उन सुरो के लिए बहुत ज़रूरी थी, जिनका ताल्लुक बराहे-रास्त नाक से होता है।

वनकुतरे ने मुझे देखा तो चिल्लाया "मंटो मटो सेठ!" चड्ढा ने वनकुतरे से भी ज्यादा ऊँची आवाज मे चिल्लाकर कहा "सेठ की ऐसी-तैसी चल अदर आ !"

वनकुतरे फ़ौरन अदर आ गया—उसने अपनी जेब मे से हँसते हुए रम की एक बोतल निकाली और तिपाई पर रख दी "मैं साला उधर मम्मी के पास गया वह बोला, तुम्हारा फ़्रैंड आयला मैं बोला, साला यह फ़्रैंड कौन होने को सकता है साला मालूम न था, साला मंटो है "

चड्ढे ने वनकुतरे के कद्दू-जैसे सिर पर एक धौल जमाई "अब चिपक साले के तू रम ले आया, बस ठीक है।"

वनकुतरे ने अपना सिर सहलाया और मेरा खाली गिलास उठाकर अपने लिए पैग तैयार किया · "मटो, यह साला सुबह मिलते ही कहने लगा, आज पीने को जी चाहता है मैं एकदम कडका सोचा क्या करूँ "

चड्ढे ने एक और धप्पा वनकुतरे के सिर पर जमाया "चुप बे जैसे तूने कुछ सोचा ही होगा "

"सोचा नही तो साला यह इतनी बडी बाटली कहाँ से आ गया तेरे बाप ने दिया मुझको ? " और वनकुतरे ने एक ही जुरऐ[88] मे अपना गिलास खाली कर दिया।

चड्ढे ने वनकुतरे की बात सुनी-अनसुनी कर दी और पूछा "तू यह बता, मम्मी क्या बोली ? पोली थी वहाँ ? ऐलमा कब आएगी ? और हाँ, वह प्लैटीनम ब्लौंड ?"

वनकुतरे ने जवाब में कुछ कहना चाहा, मगर चड्ढे ने मेरा बाजू पकडकर फौरन ही कहना शुरू कर दिया : "मंटो, खुदा की कसम, क्या चीज़ है सुना करते थे कि एक शै प्लैटीनम ब्लौंड भी होती है, मगर देखने का इत्तिफाक कल हुआ बाल, जैसे चाँदी के महीन तार ग्रेट खुदा की कसम मटो, बहुत ग्रेट मम्मी जिंदाबाद ।" फिर चड्ढे ने कहरआलूद निगाहों से वनकुतरे की तरफ देखा और कडककर कहा "वनकुतरे के बच्चे,

नारा क्यो नही लगाता मम्मी जिंदाबाद ।"

चड्ढे और वनकुतरे, दोनों ने मिलकर 'मम्मी जिंदाबाद' के कई नारे लगाए—इसके बाद वनकुतरे ने फिर चड्ढे के सवालों का जवाब देना चाहा, मगर चड्ढे ने उसे खामोश कर दिया "छोड यार, मै जज्बाती हो गया हूँ इस वक्त मैं यह सोच रहा हूँ कि आम तौर पर माशूक के बाल सियाह होते हैं, जिन्हें काली घटा से तश्बीह[89] दी जाती रही है मगर यहाँ कुछ और ही सिलसिला है " फिर वह मुझसे मुखातिब हो गया "मंटो, बडी गडबड हो गई है उसके बाल चाँदी के तारो -जैसे हैं चाँदी का रग भी नही कहा जा सकता मालूम नही, प्लैटीनम का रग कैसा होता है मैंने यह धात देखी नही है कुछ अजीब-सा रग है उसके बालो का फौलाद और चाँदी को मिला दिया जाए तो शायद "

"और उसमें साली थोडी-सी थ्री एक्स रम मिक्स कर दी जाए " वनकुतरे ने दूसरा पेग खत्म किया।

चड्ढे ने भिन्नाकर वनकुतरे को एक फरबाअदाम[90] गाली दी . "बकवास न कर " फिर चड्ढे ने बडी रहमअगेज नजरो से मेरी तरफ देखा "मैं वाकई जज्बाती हो गया हूँ हाँ वह रग खुदा की कसम, लाजवाब रग है वह तुमने देखा है, वह जो मछलियो के पेट पर होता है नही-नही, मछली के पूरे जिस्म पर होता है पौमफरेट मछली उसके वह क्या होते है नही-नही साँपो के साँपो के वह नन्हे-नन्हे खपरे हाँ खपरे बस उनका रग खपरे यह नाम मुझे एक हिंदुस्तोडे ने बताया था इतनी खूबसूरत चीज और ऐसा वाहियात नाम पजाबी मे हम इन्हे चाने कहते है चाने मे चनचनाहट है वही बिलकुल वही जो उसके बालो मे है उसकी लटे नन्ही-नन्ही सँपोलियाँ मालूम होती है जो लोट लगा रही हो " चड्ढा एकदम उठ बैठा "सँपोलियो की ऐसी-तैसी मै जज्बाती हो गया हूँ!"

वनकुतरे ने बडे भोले अंदाज मे पूछा "वह क्या होता है?"

चड्ढे ने जवाब दिया "सेंटीमेंटल लेकिन साला तू क्या समझेगा, बालाजी बाजी राव और नाना फडनवीस की औलाद ।"

वनकुतरे ने अपने लिए एक और पैग बनाया और मुझसे मुखातिब हुआ ' यह साला चड्ढा समझता है, मैं इगलिश नही समझता हूँ साला मैं मैटरीकुलेट हूँ साला मेरा बाप मुझसे बहुत मुहब्बत करता था उसने '"

चड्ढे ने चिढकर कहा "उसने तुझे तानसेन बना दिया उसने तेरी नाक मरोड दी कि तेरे अदर से निकोडे सुर आसानी से निकल सके बचपन ही मे उसने तुझे ध्रुपद सिखा दिया था और दूध पीने के लिए तू मियाँ की तोडी मे रोया करता था और तूने पहली बात पट दीपकी मे की थी और तेरा बाप और तेरा बाप जगत उस्ताद था, बैजू बावरे के भी कान काटता था और तू आज अपने बाप के कान काटता है इसीलिए तेरा नाम कनकुतरे है " फिर चड्ढा मुझसे कहने लगा . "मटो, यह साला जब भी पीता है, अपने बाप की तारीफें शुरू कर देता है इसका बाप इससे मुहब्बत करता था तो साला उसने मुझ पर क्या एहसान किया उसने साला इसको मैट्रिकुलेट बना दिया तो साला क्या मैं अपनी बी.ए की डिग्री

फाड के फेंक दूँ ''

वनकतरे ने चड्ढे की बौछार की मुदाफ़अत[91] करनी चाही, मगर चड्ढे ने उसको बोलने ही न दिया ''चुप रह कनकतरे मैं कह चुका हूँ कि मैं सेंटीमेंटल हो गया हूँ हाँ वह रंग पौमफ्रेट मछली के ''नहीं-नहीं, साँप के नन्हे-नन्हे सपरे बस उन्हीं का रंग मम्मी ने खुदा मालूम अपनी बीन पर कौन-सा राग बजाकर इस नागिन को बाहर निकाला है ''

वनकतरे ने कुछ सोचते हुए कहा ''तुम पेटी मँगाओ, मैं बजाता हूँ ''

चड्ढा खिलखिलाकर हँसने लगा ''बैठ बे मैट्रिकलेट के चाकोलेट '' उसने रम की बोतल में से रम के बाकियात अपने गिलास में उँडेले और मुझसे कहा ''मटो, अगर यह प्लैटीनम ब्लौंड न पटी तो मिस्टर चड्ढा हिमालय पहाड़ की किसी ऊँची चोटी पर धूनी रमाकर बैठ जाएँगे '' और उसने गिलास खाली कर दिया।

वनकतरे ने अपनी लाई हुई बोतल खोलनी शुरू की ''मटो, मलगी एकदम चाँगली है ''

मैंने कहा ''कभी देख लेंगे!''

चड्ढा फौरन बोला ''कभी क्यों, आज ही आज रात मैं एक पार्टी दे रहा हूँ यह बहुत ही अच्छा हुआ मटो कि तुम आ गए और तुम्हारी वजह से श्री एक सौ आठ मेहता जी ने एडवांस भी दे दिया, वर्ना बड़ी मुश्किल हो जाती आज की रात आज की रात '' और चड्ढे ने बड़े भौंडे सुरों में गाना शुरू कर दिया . ''आज की रात साजे दर्द न छेड़ !''

वनकतरे म्यूज़िक डायरेक्टर बेचारा चड्ढे की इस ज्यादती पर सदाए-एहतिजाज[92] बुलन्द करने ही वाला था कि गरीबनवाज और रजीत कुमार आ गए।

दोनों के पास स्कॉच की दो-दो बोतलें थी—दोनों ने बोतलें हिफाजत से एक किनारे पर रख दी।

रजीत कुमार से मेरे अच्छे-खासे मरासिम[93] थे, मगर बेतकल्लुफी नहीं थी, थोड़ी देर हमने 'आप कब आए?', 'आज ही आया' ऐसी रस्मी गुफ्तगू की और फिर गिलास टकराकर पीने में मशगूल हो गए।

चड्ढा वाकई बहुत जज्बाती हो गया था, अब वह हर बात में उस प्लैटीनम ब्लौंड का जिक्र ले आता था।

रजीत कुमार रम की चौथाई बोतल चढ़ा गया था; गरीबनवाज ने तीन तगड़े पैग पी लिए थे, नशे के मामले में उन सबकी सतह अब तकरीबन एक-जैसी थी—मैं तहम्मुल[94] से, धीरे-धीरे बहुत ज्यादा पीने का आदी हूँ, इसीलिए मेरे जज़्बात मो'तदिल[95] थे।

मैंने उनकी गुफ्तगू से अदाज़ा लगाया कि वे चारों उस लड़की पर बहुत बुरी तरह फरेफ्ता[96] हैं, जो मम्मी ने कहीं से पैदा की है—उस नायाब दाने का नाम फ़ीलम था और वह पूने के किसी हेयर ड्रैसिंग सैलून में मुलाज़िम थी, उसकी उम्र चौदह-पंद्रह बरस के क़रीब थी और आम तौर पर उसके साथ एक हीजड़ानुमा लड़का लगा रहता था—गरीबनवाज तो यहाँ तक उस पर गर्म था कि हैदराबाद में अपने हिस्से की जायदाद बेचकर दाँव पर लगाने के लिए तैयार था; चड्ढे के पास तुरप का सिर्फ़ एक पत्ता था, उसका कुबूल सूरत होना,

वनकतरे का बजौम[97] खुद यह खयाल था कि उसकी पेटी सुनकर वह परी शीशे में उतर आएगी; और रंजीत कुमार जारहाना[98] इक़दाम[99] ही को कारगर समझता था—लेकिन सब यही सोचते थे कि देखें, मम्मी किस पर मेहरबान होती है—इन सब बातों से मैंने यह अंदाजा लगाया था कि उस प्लैटीनाम ब्लौंड को, जिसका नाम फ़ीलस था, वह औरत, जिसे मैंने चड्ढा के साथ ताँगे मे देखा था, किसी एक के हवाले कर सकती है।

फीलस की बातें करते-करते चड्ढे ने अचानक अपनी घड़ी देखी और मुझसे कहा "जहन्नम में जाए वह लौंडिया चलो यार, भाभी वहाँ कबाब हो रही होगी यार, मैं कहीं वहाँ भी सेंटीमेंटल न हो जाऊँ खैर तुम सँभाल लेना " अपने गिलास के आखिरी चंद क़तरे हलक़ में टपकाकर उसने नौकर को आवाज दी "मिस्र के शहजादे "

ममियों के मुल्क मिस्र का शहजादा आँखे मलता हुआ नमूदार हुआ, जैसे किसी ने उसको सदियों के बाद खोद-खाद के बाहर निकाला हो।

चड्ढे ने इसके चेहरे पर मेरे गिलास में से रस के कई छींटे मारे और कहा . "दो अदद ताँगे लाओ, जो मिस्री रथ मालूम हों "

ताँगे आ गए और हम चारों उन पर लदकर प्रभातनगर रवाना हो गए।

फिल्मों का मेरा पुराना साथी हरीश घर पर मौजूद था और मेरा इंतजार कर रहा था—उस दूर-दराज जगह पर भी उसने मेरी बीवी की खातिर मदारात[100] मे कोई दक़ीका[101] फिरोगुजाश्त[102] नहीं किया था।

चड्ढे ने आँखों के इशारे से हरीश को सारा मामला समझा दिया और यह बहुत कारआमद साबित हुआ।

हरीश ने औरतों का माहिरे-नफ़सियात[103] बनकर हम सबकी मौजूदगी मे बड़ी पुरलुत्फ बातें कीं और फिर यकायक मेरी बीवी से दरख्वास्त की कि वह उसकी शूटिंग देखने चले, जो उसी रात होनेवाली थी।

मेरी बीवी ने, जिसका वक्त हरीश के घर मे कुछ अच्छा ही कटा था, पूछा "कोई गाना फिल्मा रहे हैं आप ?"

हरीश ने जवाब दिया . "जी नहीं गाना तो कल फिल्माया जाएगा तो ठीक है, आप कल चलिएगा !"

हरीश की बीवी, जो शूटिंग देख-देखकर और दिखा-दिखाकर आजिज[104] आ चुकी थी, ने फौरन मेरी बीवी से कहा . "हाँ कल ठीक रहेगा आज तो वैसे भी आपको सफर की थकन होगी !"

हम सबने इत्मीनान का साँस लिया।

हरीश ने फिर कुछ देर तक पुरलुत्फ बातें की और आखिर में मुझसे कहा . "चलो यार, तुम मेरे साथ चलो " उसने मेरे तीनों साथियों की तरफ देखा : "मंटो मेरे साथ चल रहा है हमारे सेठ साहब को एक कहानी की जरूरत है और मैं मंटो के बारे मे बात कर चुका हूँ।"

मैंने अपनी बीवी की तरफ देखा : "भई, इनसे इजाज़त ले लो।"

मेरी बीवी जाल में फँस चुकी थी; उसने कहा : "मैंने बाबे से चलते वक्त इनसे कहा भी था कि अपना डाकूमेंट केस साथ ले चलिए, पर इन्होंने मेरी एक न मानी अब यह कहानी क्या सुनाएँगे!"

हरीश ने फ़ौरन कहा : "यार, तुम भी अजीब ग़ैर जिम्मेदार आदमी हो" कहानी जबानी सुना सकते हो?"

मैंने इत्मीनान से कहा : "हाँ, ऐसा हो सकता है!"

फिर चड्ढे ने ड्रामे में तक्मीली[105] टच दिया : "तो भई, हम चलते हैं ′ कल मिलेंगे " और वह तीनों सलाम-नमस्ते वग़ैरह करके चले गए।

थोड़ी देर के बाद मैं और हरीश बाहर निकले।

ताँगो के अड्डे के बाहर चड्ढे ने हमें देखते ही ज़ोर का नारा लगाया : "राजा हरीश चद्र, ज़िंदाबाद "

हरीश के सिवा हम चारो मम्मी के घर की तरफ रवाना हो गए हरीश को अपनी एक दोस्त के हाँ जाना था।

वह भी एक काटेज थी, शक्लो-सूरत और साख्त के एतिबार से सईदा काटेज-जैसी मगर इतनी साफ-सुथरी कि मम्मी के सलीके और क़रीने का पता चलता था; फर्नीचर मामूली था, मगर जो चीज़ जहाँ थी, सजी हुई थी—प्रभातनगर से चलते वक्त मैंने सोचा था कि कोई क़हवाखाना होगा, मगर उस घर की किसी चीज़ से भी जसारत[106] को यह शक नही होता था; वह घर वैसा ही शरीफाना था, जैसा कि एक औसत दर्जे के इसाई का घर होता है, बल्कि वह घर मम्मी की उम्र के मुकाबले मे जवान दिखाई देता था; उस पर वह मेकअप नही था, जो मैंने मम्मी के झुर्रियोवाले चेहरे पर देखा था।

जब मम्मी ड्राइगरूम मे आई थी तो मैंने सोचा था कि गिर्दो-पेश की जितनी चीजे हैं, वे आज की नहीं; बहुत बरसो की हैं, वे वैसी की वैसी पडी रही हैं, उनकी उम्र वही की वही रही है, सिर्फ मम्मी उनके आगे निकलकर बूढ़ी हो गई है—जब मैंने मम्मी के गहरे और शोख मेकअप की तरफ़ देखा था तो मेरे दिल मे न जाने क्यो यह ख्वाहिश पैदा हुई थी कि वह भी अपने गिर्दो-पेश के माहौल की तरह सजीदा व मतीन तौर पर जवान बन जाए।

चड्ढे ने मम्मी से मेरा तआरुफ़ कराया, जो बहुत मुख्तसर था, और इख्तिसार ही के साथ उसने मम्मी के मुतल्लिक मुझसे कहा : "यह मम्मी है दी ग्रेट मम्मी !"

मम्मी अपनी तारीफ़ सुनकर मुसकरा दी; मेरी तरफ देखकर उसने चड्ढे से अंग्रेजी मे कहा "तुमने चाय मँगवाई थी, हस्बे-मामूल निहायत अफरा-तफ़री मे मालूम नहीं, उन्हे पसद भी आई होगी या नही " फिर वह मुझसे मुखातिब हुई : "मिस्टर मंटो, मैं बहुत शर्मिंदा हूँ असल मे सारा क़सूर तुम्हारे दोस्त का है, जो मेरा नाक़ाबिले-इस्लाह[107] लडका है "

मैंने मुनासिब व मौज़ूँ अल्फाज़ मे चाय की तारीफ़ की और शुक्रिया अदा किया।

मम्मी ने मुझे फिज़ूल की तारीफ़ से मना किया और चड्ढे से कहा : "रात का खाना

तैयार है और यह मैंने इसलिए तैयार किया है कि तुम एन वक्त के वक्त मेरे सिर पर सवार हो जाओगे ''

चड्ढे ने मम्मी को गले से लगा लिया ''यू आर ए ज्वैल मम्मी यह खाना अब हम खाएँगे ''

मम्मी ने चौंककर पूछा ''क्या मतलब ? नही, हरगिज नही।''

चड्ढे ने कहा ''हम मिसेज मटो को प्रभातनगर छोड आए हैं।''

मम्मी चिल्लाई ''खुदा तुम्हे गारत करे यह तुमने क्या किया ?''

चड्ढा खिलखिलाकर हँसा ''आज रात पार्टी जो होनेवाली थी ''

''वह तो मैंने मिसेज मटो को देखते ही अपने दिल मे कैंसिल कर दी थी ''

मम्मी ने अपना सिगरेट सुलगाया।

चड्ढे का दिल डूब गया। ''अब खुदा तुम्हे गारत करे और यह सब प्लान हमने सिर्फ उस पार्टी के लिए बनाया था '' वह कुर्सी पर यासजदा[108] होकर बैठ गया और कमरे के हर जर्रे से मुखातिब होकर कहने लगा ''लो, सारे ख्वाब मलियामेट हो गए प्लैटीनम ब्लौड औंधे साँप के नन्हे-नन्हे खपरो-जैसे रगवाले बाल '' एकदम वह उठा और उसने मम्मी को बाजुओ से पकड लिया ''कैंसिल की थी अपने दिल म कैंसिल की थी ना लो मै तुम्हारे दिल पर साद[109] बना देता हूँ '' और उसने मम्मी के दिल के मुकाम पर अपनी एक उँगली से बहुत बडा साद बना दिया और बाआवाजे बुलद पुकारा ''हुर्रे ''

मम्मी मुताल्लिका[110] लोगो को इत्तिला पहुँचा चुकी थी कि पार्टी मनसूख[111] हो चुकी है। मैंने महसूस किया कि वह चड्ढे को दिलगीर करना नही चाहती है—उसने बडी शफकत[112] से चड्ढे के गाल थपथपाए और कहा ''तुम फिक्र न करो, मैं अभी इनजाम करती हूँ '' और वह इनजाम करने बाहर चली गई।

चड्ढे ने खुशी का एक नारा बलद किया और वनकुतरे से कहा ''जनरल वनकुतरे, जाओ हैड-क्वार्टर्ज से सारी तोपे ले आओ ''

वनकुतरे ने सैल्यूट किया और हुक्म की तामील के लिए चला गया।

सईदा काटेज बिलकुल पास थी। वनकुतरे दस मिनट के अदर-अदर स्कॉच की बोतलें लेकर वापस आ गया, उसके साथ चड्ढे का नौकर भी था।

चड्ढे ने नौकर को देखा तो उसका इस्तिकबाल किया ''आओ आओ, कोहकाफ के शहजादे वह साँप के खपरों-जैसे रग के बालोवाली लौंडिया आ रही है तुम भी किस्मत आजमाई कर लेना।''

रंजीत कुमार और गरीबनवाज, दोनो को चड्ढे की यह 'सलाए आम है यारने-नुक्तादाँ के लिए'[113] वाली बात बहुत नागवार मालूम हुई—दोनो ने मुझसे कहा कि यह चड्ढे की बहुत बेहूदगी है; इस बेहूदगी को उन्होने बहुत महसूस किया था—चड्ढा हस्बे-आदत अपनी हाँकता रहा और वे दोनो एक कोने मे बैठे एक-दूसरे से अपने-अपने दुख का इजहार करते रहे।

चड्ढा, वनकुतरे, गरीबनवाज, और रजीत कुमार, चारो ड्राइगरूम मे मौजूद थे, मम्मी

ड्राइंगरूम में मौजूद नहीं थी—मैं सोच रहा था कि यह सब छोटे-छोटे बच्चे हैं और इनकी माँ इनके लिए खिलौने लाने बाहर गई हुई है; यह सब मुंतज़िर हैं; एक बच्चा चड्ढा मुतमइन है कि सबसे बढ़िया और अच्छा खिलौना उसे ही मिलेगा, इसलिए कि वह माँ का चहीता है; दो बच्चों का गम एक-जैसा है, इसलिए कि वह एक-दूसरे के मुनिस[114] बन गए हैं, चौथा बच्चा बस यूँही अलग पड़ा हुआ है; और वह प्लैटीनम ब्लौंड वह एक छोटी-सी गुड़िया के मानिंद है।

हर फज़ा, हर माहौल की अपनी मौसीकी होती है—उस वक्त जो मौसीकी मेरे दिल के कानों तक पहुँची थी, उसमे कोई सुर इश्तिआल[115] अंग्रेज नहीं था, हर शै, माँ और उसके बच्चो और उनके बाहमी रिश्ते की तरह क़ाबिले-फहम[116] और यकीनी थी।

मैंने जब मम्मी का ताँगे में चड्ढे के साथ देखा था तो मेरी जमालियाती[117] हिस को सद्मा पहुँचा था; अब मुझे अफ़सोस हुआ कि मेरे दिल मे उन दिनों के मुताल्लिक वाहियात खयाल पैदा हुए थे; लेकिन एक सवाल अब भी मुझे बार-बार सता रहा था कि वह इतना शोख़ मेकअप क्यो करती है, जो उसकी झुर्रियों की तौहीन है; उस ममता की तजहीक[118] है, जो उसके दिल में चड्ढे, गरीबनवाज, रंजीत कुमार और बनकुतरे के लिए मौजूद है और खुदा मालूम और किस-किसके लिए।

बातो-बातों मे चड्ढे से मैंने पूछा : "यार, यह तो बताओ, तुम्हारी मम्मी इतना शोख मेकअप क्यो करती हैं?"

"इसलिए कि दुनिया हर शोख चीज को पसंद करती है तुम्हारे और मेरे-जैसे उल्लू इस दुनिया में बहुत कम बसते हैं, जो मद्धम सुर और मद्धम रंग पसंद करते हैं जो जवानी को बचपन के रूप में नहीं देखना चाहते, जो बुढ़ापे पर जवानी का मुलम्मा पसंद नहीं करते हम जो खुद को आर्टिस्ट कहते हैं, उल्लू के पट्ठे हैं मैं तुम्हे एक दिलचस्प वाकिआ सुनाता हूँ बैसाखी का मेला था, तुम्हारे अमृतसर मे रामबाग के उस बाज़ार मे, जहाँ टकियाइयाँ रहती हैं, जो जवान जाट गुजर रहे थे एक सेहतमद जवान ने, खालिस दूध और मक्खन पर पले हुए जवान ने, जिसकी नई जूती उसकी लाठी पर टँगी बाजीगरी कर रही थी, ऊपर एक कोठे की तरफ देखा निहायत वाहियात रंगों मे लिपी-पुती एक सियाहफाम टकियाई को देखकर, जिसकी तेल मे चुपडी हुई बबरियाँ उसके माथे पर बड़े सलीके से जमी हुई थीं, उस सेहतमद जवान ने अपने साथी की पसलियों मे टोका देकर कहा : 'ओय लहना सियाँ वेख ओय ऊपर वेख असी ते पिंड विच मज्झाँ ई '"

चड्ढा आखिरी लफ्ज खुदा मालूम क्यो गोल कर गया, हालाँकि वह शाइस्तगी[119] का बिलकुल कायल नहीं था, वह खिलखिलाकर हँसने लगा : "उस जाट के लिए वह चुडैल ही उस वक्त कोहकाफ की परी थी और उसके गाँव की हसीनो-जमील मुटियारें, बेडोल भैंसे हम सब चगद हैं, दरमियाने दर्जे के, इसलिए कि इस दुनिया मे कोई चीज अव्वल दर्जे की नहीं हैं तीसरे दर्जे की है, या दरमियाना दर्जे की लेकिन लेकिन फीलस फीलस खामुलखाम दर्जे की चीज है वह साँप की खपरी "

वनकुतरे ने चड्ढे के सिर पर धप्पा मारा : "खपरे खपरे तुम्हारा मस्तक फिर गया है।"

चड्ढे ने अपने बालों में उँगलियों से कंघी करते हुए कहा "ले साले, अब तू सुना तेरा बाप तुझसे कितनी मुहब्बत करता था"

वनकुतरे बहुत सजीदा होकर मुझसे मुखातिब हुआ "बाई गॉड वह मुझसे बहुत मुहब्बत करता था मैं फिफ्टीन ईयर्ज का था कि उसने मेरी शादी बना दी"

चड्ढा जोर से हँसा "तुम्हें कार्टून बना दिया उस साले ने भगवान उसे स्वर्ग मे कैरियल की पेटी दे कि वह उसे वहाँ बजा-बजाकर तुम्हारी दूसरी शादी के लिए कोई हूर ढूँढता फिरे।"

वनकुतरे और भी सजीदा हो गया "सटो, मैं झूठ नही कहता मेरी वाइफ एकदम ब्यूटीफुल है हमारी फैमिली में"

"अरे तुम्हारी फैमिली की ऐसी-तैसी फीलस की बात करो उससे ज़्यादा और कोई खूबसूरत नही हो सकता"

चड्ढे ने गरीबनवाज और रजीत कुमार की तरफ देखा, जो कोने मे बैठे फीलस के हुस्न के मुताल्लिक एक-दूसरे से अपनी-अपनी राय का इजहार कर रहे थे "गन पाउडर प्लाट के बानियों अच्छी तरह सुन लो, तुम्हारी कोई साजिश कामयाब नही होगी मैदान चड्ढे के हाथ रहेगा क्यों वेल्ज के शहजादे?"

वेल्ज का शहजादा टुकर-टुकर देख रहा था—चड्ढे ने ज़ोर का कहकहा लगाया।

गरीबनवाज और रंजीत कुमार एक-दूसरे से फीलस के बारे मे घुल-मिलकर बातें तो कर ही रहे थे, वह अपने-अपने दिमाग में फीलस को हासिल करने की मुख्तलिफ स्कीमे भी बना रहे थे, और यह उनके तर्जे-गुफ्तगू से साफ अयाँ था।

शाम गहरी हो चली थी; ड्राइगरूम मे अब बिजली के बल्ब रोशन थे।

चड्ढा मुझसे बबई की फिल्म इडस्ट्री के ताजा हालात सुन रहा था कि बाहर बरामदे मे मम्मी की तेज-तेज़ आवाज सुनाई दी।

चड्ढे ने नारा बुलद किया और बाहर चला गया—गरीबनवाज ने रजीत कुमार की तरफ़ और रजीत कुमार ने गरीबनवाज की तरफ मानीखेज नजरो से देखा और फिर दोनो दरवाज़े की जानिब देखने लगे।

मम्मी चहकती हुई अंदर दाखिल हुई; उसके साथ चार-पाँच एंग्लो इंडियन लडकियाँ थीं, मुख्तलिफ क़दो-कामत[120] और खुतूत[121] की, पोली, डौली, किटी, ऐलमा और थेलमा, और वह हीजडानुमा लड़का, जिसे चड्ढा सिसी कहकर पुकारता था—फ़ीलस सबसे आखिर मे दाख़िल हुई, चड्ढे के साथ, चड्ढे का एक बाजू उस प्लैटीनम ब्लौंड की पतली कमर में हमाइल[122] था।

मैंने गरीबनवाज़ और रजीत कुमार का रद्दे-अमल नोट किया—उनको चड्ढे की यह नुमाइशी फ़तेहमंदाना[123] हरकत पसंद नहीं आई थी।

लड़कियों के नाज़िल[124] होते ही एक शोर बरपा हो गया, एकदम इतनी अंग्रेजी बरसी

कि वनकुतरे मैट्रिकुलेशन के इम्तिहान मे कई बार फेल हुआ, मगर उसने कोई परवा न की और बराबर बोलता रहा। जब उससे किसी ने इल्तिफ़ात[125] न बरता तो वह ऐलमा की बडी बहन थेलमा के साथ एक सोफे पर अलग बैठ गया और पूछने लगा कि उसने हिंदुस्तानी डाम के और कितने नए तोड़े सीखे हैं—वनकुतरे इधर ता थई थई की वन टू थ्री बना-बनाकर थेलमा को तोडे बता रहा था, उधर चड्ढा बाकी लडकियों के झुरमुट मे अग्रेज़ी के नंगे-नंगे लिमरिक सुना रहा था, जो उसको हजारो की तादाद में जबानी याद थे; मम्मी सोडे की बोतले और गजक वगैरा मँगवा रही थी, रंजीत कुमार सिगरेट के कश लगाता हुआ टकटकी बाँधे फीलस की तरफ देख रहा था; और गरीबनवाज बार-बार मम्मी से कह रहा था कि रुपए कम पड जाएँ तो वह उससे ले ले।

स्कॉच खुली और पहला दौर शुरू हुआ—फीलस को शामिल होने के लिए कहा गया तो उसने अपने प्लैटीनमी बालो को एक खफ़ीफ-सा झटका देकर इनकार कर दिया कि वह शराब नही पिया करती; सबने इसरार[126] किया, मगर वह न मानी चड्ढे ने बददिली का इजहार किया तो मम्मी ने फीलस के लिए एक हल्का-सा मश्रूब[127] तैयार किया और गिलास उसके होठो के साथ लगाकर बडे प्यार से कहा. "बहादुर लडकी बनो और पी जाओ।"

फीलस इनकार न कर सकी—चड्ढा खुश हो गया और उसने इसी खुशी मे बीस-पच्चीस और लिमरिक सुनाए, सब मजे लेने रहे।

मैंने सोचा उरियानी[128] से तग आकर इसान ने सतरपोशी[129] इख्तियार की होगी, यही वजह है कि अब वह सतरपोशी से उकताकर कभी-कभी उरयानी की तरफ दौडने लगता है शाइस्तगी का रद्दे-अमल यकीनन नाशाइस्तगी है इस फरार का कतई तौर पर एक दिलकश पहलू भी है. इसान को एक मुसलसल यक आहग कोफ्त से चद घडियो के लिए निजात मिल जाती है।

मैंने मम्मी की तरफ देखा, जो बहुत हश्शाश-बश्शाश जवान लडकियो में घुली-मिली चड्ढे के नगे-नगे लिमरिक सुन-सुनकर हँस रही थी और कहकहे लगा रही थी; उसके चेहरे पर वही वाहियात मेकअप था, जिसके नीचे उसकी झुर्रियाँ साफ नजर आ रही थीं—उसकी झुर्रियाँ भी मसरूर थीं।

मैंने फिर सोचा. आखिर लोग फरार को बुरा क्यो समझते हैं—वह फ़रार, जो मेरी आँखो के सामने था, उसका ज़ाहिर तो बदनुमा था, लेकिन उसका बातिन[130] बेहद खूबसूरत था, और उस बातिन पर कोई बनाव सिंगार, कोई गाज़ा, कोई उबटना नही था।

पोली एक कोने में खड़ी रंजीत कुमार के साथ अपने नए फ्रॉक के बारे मे बातचीत कर रही थी, वह रंजीत कुमार को बता रही थी कि उसने सिर्फ अपनी होशियारी से बडे कम दामों पर ऐसी उम्दा फ्रॉक तैयार कराई है; कपडे के दो अलग-अलग टुकडे, जो बजाहिर बिलकुल बेकार थे, अब एक खूबसूरत पोशाक मे तब्दील हो गए थे—और रजीत कुमार बडे खुलूस के साथ पोली को दो नए ड्रैस बनवा देने का वादा कर रहा था, हालाँकि उसे फ़िल्म कंपनी से इतने रुपए यकमुश्त मिलने की हर्गिज-हर्गिज उम्मीद नहीं थी।

डौली अलग बैठी ग़रीबनवाज़ से कुछ क़र्ज माँगने की कोशिश कर रही थी; वह गरीबनवाज को यक़ीन दिला रही थी कि वह दफ्तर से तनख़्वाह मिलने पर यह क़र्ज़ ज़रूर अदा कर देगी—गरीबनवाज़ को क़तई तौर पर मालूम था कि डौली हस्बे-मामूल यह रुपया कभी वापिस नहीं देगी, मगर वह उसके वादे पर एतिबार किए जा रहा था।

थेलमा थी कि वनकुतरे से तांडव नाच के बड़े मुश्किल तोड़े सीख रही थी; वनकुतरे को मालूम था कि थेलमा के पैर सारी उम्र कभी ताडव नाच के बोल अदा नहीं कर सकेंगे, मगर वह थेलमा को बताए जा रहा था—थेलमा अच्छी तरह जानती थी कि वह अपना और वनकुतरे का वक्त ज़ाया कर रही है, मगर वह बड़े शौक और इन्हिमाक[131] से वनकुतरे की बातें सुन रही थी।

ऐलमा और किटी, दोनो पिए जा रही थी और आपस में किसी आलली[132] की बात कर रही थी, जिसने पिछली रेस में उनसे ख़ुदा मालूम कब का बदला लेने की ख़ातिर उन्हें ग़लत टिप दी थी।

चड्ढा तो बस फीलस के साँप के खपरे-ऐसे रग के बालों को पिघले हुए सोने की रग के स्कॉच मे मिला-मिलाकर पी रहा था।

फीलम का हीजडानुमा दोस्त बार-बार जेब मे कंघी निकाल रहा था और अपने बाल सँवार रहा था।

और मम्मी—वह कभी इससे बात कर रही थी, कभी उससे; वह कभी सोडे खुलवाती थी तो कभी टूटे हुए गिलास उठवाती थी—उसकी निगाह सब पर थी, उस बिल्ली की तरह, जो बजाहिर आँखें बंद किए-किए सुस्ताती है, मगर जानती है कि उसके बच्चे कहाँ-कहाँ हैं और क्या-क्या शरारत कर रहे हैं।

इस दिलचस्प तसवीर में कौन-सा रग, कौन-सा ख़त ग़लत था?

ऐसा मालूम होता था कि मम्मी का वह भडकीला और शोख मेकअप भी उस तसवीर का एक जरूरी जुज है।

गालिब कहता है :

> कैदे-हयातो बंदे गम असल मे दोनों एक हैं
> मौत से पहले आदमी ग़म से निजात पाए क्यो।

कैदे-हयात और बदे गम जब असलन एक हैं तो यह क्या फर्ज है कि आदमी मौत से पहले थोडी देर के लिए निजात हासिल करने की कोशिश न करे; इस निजात के लिए कौन मलकुलमौत का इतजार करे, क्यों न आदमी चंद लम्हात के लिए ख़ुदफरेबी के दिलचस्प खेल में हिस्सा ले।

मम्मी सबकी तारीफ़ में रत्बुल्लिसान[133] थी—उसके पहलू में एक ऐसा दिल था, जिसमे सबके लिए ममता थी।

मैंने सोचा, मम्मी ने शायद इसलिए अपने चेहरे पर रंग मल लिया है कि लोगों को उसकी असलियत मालूम न हो।

मम्मी में शायद इतनी जिस्मानी क़ुव्वत नहीं थी कि वह हर एक की माँ बन सकती।

उसने अपनी शफ़्क़त और मुहब्बत के लिए चद लोग चुन लिए थे और बाक़ी सारी दुनिया को छोड़ दिया था।

मम्मी को मालूम नही था कि चड्ढा एक तगड़ा पेग फ़ीलस को पिला चुका है, चोरी-छिपे नहीं, सबके सामने; मम्मी उस वक़्त अदर बावर्चीख़ाने मे पोटेटो चिप्स तल रही थी—फ़ीलस नशे में थी, गहरे सुरूर में; जिस तरह उसके पालिश किए हुए फ़ौलाद के रग के बाल आहिस्ता-आहिस्ता लहरा रहे थे, उसी तरह वह ख़ुद भी लहरा रही थी।

रात के बारह बज चुके थे। वनकुतरे अब थेलमा को तोड़े सिखाने के बाद यह बता रहा था कि उसका बाप साला उससे बहुत मुहब्बत करता था और चाइल्डहुड ही मे उसने उसकी शादी बना दी थी और उसकी वाइफ बहुत ब्यूटीफुल है।

ग़रीबनवाज आख़िर डौली को क़र्ज देकर भूल भी चुका था।

रजीत कुमार अपने साथ पोली को कहीं बाहर ले गया था।

ऐलमा और किटी जहान भर की बातें कर-करके थक गई थी और आराम कर रही थी।

तिपाई के इर्द-गिर्द चड्ढा, फ़ीलस, उसका हीजड़ानुमा दोस्त और मम्मी बैठे हुए थे—चड्ढा अब जज़्बाती नही था, फ़ीलस उसके पहलू में बैठी थी, जिसने पहली दफ़ा अपने बदन में शराब का सुरूर महसूस किया था—फ़ीलस को हासिल करने का अज़्म चड्ढे की आँखों में साफ़ मौजूद था और मम्मी इससे गाफ़िल नही थी।

थोड़ी देर के बाद फ़ीलस का हीजड़ानुमा दोस्त सोफ़े पर दराज़ हो गया और अपने बालों मे कंघी करते-करते सो गया—गरीबनवाज ने मानीखेज नजरो से ऐलमा की तरफ़ देखा; ऐलमा ने किटी से कुछ कहा और उठकर गरीबनवाज के साथ कही चली गई—किटी ने मम्मी से किसी मारग्रेट के बारे मे बात की और रुख़्सत लेकर चली गई—वनकुतरे ने आख़िरी बार अपनी बीवी की ख़ूबसूरती की तारीफ की, फ़ीलस की तरफ हसरत भरी नजरो से देखा, फिर थेलमा का बाज़ू थामकर उसके साथ कमरे से बाहर निकल गया।

एकदम जाने क्या हुआ कि चड्ढे और मम्मी मे गरमागरम बातें शुरू हो गईं—चड्ढे की ज़बान लडखडा रही थी और वह एक नाख़लफ़[134] बच्चे की तरह मम्मी से बदजबानी कर रहा था।

फ़ीलस ने चड्ढे और मम्मी में मुसालहत[135] की महीन-सी कोशिश की, मगर चड्ढा तो हवा के घोडे पर सवार था—वह फ़ीलस को अपने साथ सईदा काटेज में ले जाना चाहता था और मम्मी इसके ख़िलाफ़ थी—वह बहुत देर तक चड्ढे को समझाती रही कि वह अपने इरादे से बाज़ आए, मगर चड्ढा कुछ सुन नहीं रहा था; वह बार-बार मम्मी से कह रहा था. "तुम दीवानी हो गई बूढ़ी दल्लाला फ़ीलस मेरी है पूछ लो इससे "

मम्मी ने बहुत देर तक चड्ढे की गालियाँ सुनीं; आख़िर उसने बड़े समझानेवाले अंदाज में चड्ढे से कहा: "चड्ढा माई सन तुम समझते क्यों नहीं "शी इज़ यंग शी इज वेरी यंग ।" मम्मी की आवाज़ में कँपकँपाहट थी, एक इल्तिजा थी, एक सरज़ंश थी, एक बड़ी भयानक तसवीर थी।

चड्ढा कुछ ममझ न मका—उम वक्त उमके पेशे-नजर मिर्फ फीलम और फीलम का हुमूल[136] था।

मैंने फीलम की तरफ देखा, और मैंने पहली दफा बडी शिद्दत मे महसूम किया कि वह बहुत छोटी उम्र की है, बमुश्किल पद्रह बरम की। उसका मफेद चेहरा, नकरई बादलो मे घिरा हुआ, बारिश के पहले कनरे की तरह लरज रहा था।

चड्ढे ने फीलस को बाजू से पकडकर अपनी तरफ खींचा और फिल्मी हीरो के अदाज मे उसे अपने सीने के साथ भीच लिया।

मम्मी ने एहतिजाज[137] की चीख बुलद की "चड्ढा, छोड दो इसे फार गॉड्ज सेक, छोड दो इसे" जब चड्ढे ने फीलस को अपने चौडे सीने से जुदा न किया तो मम्मी ने चड्ढे के मुँह पर एक चाँटा मारा. "गैट आउट गैट आउट!"

चड्ढा भौंचक्का रह गया—उसने फीलस को अपने मे जुदा करके एक धक्का दिया और मम्मी की तरफ कहरआलूद निगाहो मे देखता हुआ कमरे से बाहर निकल गया।

मैंने उठकर रुख्सत ली और चड्ढे के पीछे-पीछे चला आया।

सईदा काटेज पहुँचकर मैंने देखा कि वह पतलून, कमीज और बूट समेत कबाडखाने से मिलते-जुलते कमरे मे पलँग पर औंधे मुँह लेटा हुआ है—मैंने उससे कोई बात न की और दूसरे कमरे मे जाकर सो गया।

सुबह मैं देर से उठा—दस बज रहे थे।

चड्ढा सुबह ही सुबह उठकर बाहर चला गया था, कहाँ, यह किसी को मालूम नही था।

मैं जब गुस्लखाने से बाहर निकला तो मैंने चड्ढे की आवाज़ सुनी—आवाज गैरेज मे आ रही थी।

मैं रुक गया।

चड्ढा किसी से कह रहा था "वह लाजवाब औरत है खुदा की कसम, वह लाजवाब औरत है दुआ करो कि उसकी उम्र को पहुँचकर तुम भी वैसी ही ग्रेट हो जाओ" उसके लहजे में एक अजीबो-गरीब तल्खी थी।

मैंने ज्यादा देर गुस्लखाने के बाहर रुके रहना मुनासिब न समझा और अदर कमरे मे चला गया—निस्फ घटे तक मैंने चड्ढे का इतजार किया; जब वह न आया तो मैं प्रभातनगर रवाना हो गया।

मेरी बीवी का मिज़ाज मो' तदिल था।

हरीश घर में मौजूद नहीं था; उसकी बीवी ने उसके मुताल्लिक इस्तिफसार किया तो मैं यही कह सका कि वह रात भर की शूटिंग के बाद स्टूडियो ही में सो रहा है।

कम से कम मेरी हद तक पूने में काफ़ी 'तफ़रीह' हो गई थी, इसलिए मैंने हरीश की बीवी से इजाज़त माँगी—उसने रस्मन हमें रोका भी, मगर मैं सईदा काटेज ही से फैसला करके चला था—रात का वाक़िआ मेरे लिए ज़ेहनी जुगाली के वास्ते बहुत काफी था।

हम बंबई के लिए चल दिए—रास्ते में बीवी से मैंने सबकुछ कह दिया; मैंने मम्मी की

बाते कीं; रात को जो कुछ हुआ था, वह उसे मैंने मनो-अन[138] सुना दिया।

मेरी बीवी का रद्दे-अमल यह था कि फीलस शायद मम्मी की कोई रिश्तेदार होगी, या वह उसे किसी अच्छी आसामी को पेश करना चाहती होगी, वरना चड्ढे से मम्मी की लड़ाई का कोई मतलब ही न था।

मैं ख़ामोश रहा; न मैंने तरदीद की, न ताईद।

कई दिन गुज़रने पर चड्ढे का ख़त आया, जिसमे उस रात के वाके का सरसरी जिक्र था, और उसने अपने मुताल्लिक यह लिखा था : ''मैं उस रात हैवान बन गया था लानत है मुझ पर!''

तीन महीने के बाद मुझे एक ज़रूरी काम से पूने जाना पडा—मैं सीधा सईदा काटेज पहुँचा।

चड्ढा मौजूद नहीं था—गरीबनवाज से उस वक्त मुलाक़ात हुई, जब वह गैरेज से बाहर निकलकर शीरीं के ख़ुर्द साल बच्चे को प्यार कर रहा था।

ग़रीबनवाज़ बड़े तपाक से मिला—थोड़ी देर के बाद रजीत कुमार आ गया—कछुए की चाल चलता हुआ और ख़ामोश बैठ गया; मैंने उससे कुछ पूछा तो उसने बडे इख़्तिसार मे जवाब दिया।

बातों-बातों में मुझे मालूम हुआ कि चड्ढा उस रात के बाद मम्मी के पास नहीं गया है और न ही मम्मी कभी सईदा काटेज में आई है, फीलस को मम्मी ने दूसरे ही रोज उसके माँ-बाप के पास भिजवा दिया था; वह अपने उस हीजडानुमा दोस्त के साथ घर से भागकर आई हुई थी।

रजीत कुमार को यक़ीन था कि अगर फ़ीलस कुछ दिन और पूने मे रहती तो वह उसे ज़रूर ले उडता—गरीबनवाज़ को ऐसा कोई ज़ौम[139] नही था; उसे सिर्फ़ यह अफसोस था कि वह चली गई है।

चड्ढे के मुताल्लिक़ यह पता चला कि कई रोज से उसकी तबीयत नासाज है; बुख़ार रहता है, मगर वह किसी डॉक्टर से मश्वरा नही लेता; वह महीनों से सारा-सारा दिन इधर-उधर बेमकसद घूम रहा है; उसे न खाने का होश है, न पीने का—गरीबनवाज़ ने जब मुझे ये बातें बताना शुरू कीं तो रजीत कुमार उठकर चला गया—मैंने सलाखोंवाली खिडकी में से देखा; उसका रुख़ गैरेज की तरफ़ था।

मैं गरीबनवाज़ से गैरेजवाली शीरी के मुताल्लिक कुछ पूछने के लिए ख़ुद को तैयार कर ही रहा था कि वनकुतरे सख़्त घबराया हुआ कमरे मे दाखिल हुआ—वनकुतरे से हमें मालूम हुआ कि चड्ढे को तेज बुख़ार है।

वनकुतरे उसे ताँगे मे ला रहा था कि वह रास्ते मे बेहोश हो गया।

मैं और गरीबनवाज़ बाहर की तरफ दौडे—ताँगेवाले ने बेहोश चड्ढे को सँभाला हुआ था। हम सबने मिलकर चड्ढे को उठाया और कमरे में ले जाकर बिस्तर पर लिटा दिया। मैंने उसके माथे पर हाथ रखकर देखा; वाकई बहुत तेज़ बुख़ार था; 105° से कतअन कम न होगा।

मैंने गरीबनवाज से कहा कि फौरन डॉक्टर को बुलाना चाहिए।

गरीबनवाज ने वनकुतरे से मशवरा किया—वह 'अभी आता हूँ' कहकर चला गया।

थोडी देर के बाद वनकुतरे वापस आया तो उसके साथ मम्मी थी; वह हॉप रही थी, कमरे मे दाखिल होते ही उसने चड्ढे की तरफ देखा और करीब-करीब चीखकर पूछा : "क्या हुआ मेरे बेटे को ?"

वनकुतरे ने जब मम्मी को बताया कि चड्ढा कई दिन से बीमार है तो मम्मी ने बड़े रंज और गुस्से के साथ कहा "तुम कैसे लोग हो मुझे इत्तिला क्यो न दी " फिर उसने मुझे, ग़रीबनवाज और वनकुतरे को मुख़्तलिफ हिदायात दीं—एक को चड्ढे के पाँव सहलाने की, दूसरे को बर्फ लाने की, तीसरे को चड्ढे का सिर दबाने की—चड्ढे की हालत देखकर मम्मी की अपनी हालत बहुत गैर हो गई थी, लेकिन उसने तहम्मुल से काम लिया और डॉक्टर को बुलाने चली गई।

मालूम नही, रजीत कुमार को गैरेज मे कैसे पता चल गया; मम्मी के जाने के फौरन बाद वह घबराया हुआ आया; जब उसने इस्तिफसार किया तो वनकुतरे ने चड्ढा के बेहोश होने का वाकिआ बयान किया और यह भी कहा कि मम्मी डॉक्टर को लाने गई है; यह सुनकर रजीत कुमार का इज्तिराब[140] किसी हद तक दूर हो गया।

मैंने देखा कि गरीबनवाज़ और वनकुतरे भी अब मुतमइन थे, जैसे चड्ढे की सेहत की सारी जिम्मेदारी मम्मी ने अपने सिर ले ली है।

मम्मी की हिदायत के मुताबिक चड्ढे के पॉव सहलाए जा रहे थे और सिर पर बर्फ़ की पट्टियाँ रखी जा रही थी।

जब मम्मी डॉक्टर को साथ लेकर आई, उस वक्त चड्ढा किसी कदर होश मे आ रहा था।

डॉक्टर ने चड्ढा का मुआइना करने में काफी देर लगाई, उसके चेहरे से मालूम हो रहा था कि चड्ढे की जिंदगी खतरे में है—मुआइने के बाद डॉक्टर ने मम्मी को इशारा किया और वे दोनों कमरे से बाहर चले गए—मैंने सलाखोवाली खिडकी मे से देखा; गैरेज की टाट का परदा हिल रहा था।

थोड़ी देर के बाद मम्मी आई; उसने गरीबनवाज, वनकुतरे और रजीत कुमार से फर्दन-फर्दन कहा कि घबराने की कोई बात नही।

चड्ढा होश में आ चुका था और आँखे खोलकर सुन रहा था—उसने मम्मी को हैरत की निगाहों से नही देखा था; वह एक उलझन-सी महसूस कर रहा था; चंद लम्हात के बाद जब वह समझ गया कि मम्मी क्यों और कैसे आई है तो उसने मम्मी का हाथ अपने हाथ मे लिया और दबाकर कहा : "मम्मी, यू आर ग्रेट !"

मम्मी उसके पास पलँग पर बैठ गई—वह शफकत का मुजस्समा[141] थी—चड्ढे के तपते हुए माथे पर हाथ फेरकर उसने मुसकराते हुए सिर्फ इतना कहा : "मेरे बेटे मेरे गरीब बेटे।"

चड्ढे की आँखो में आँसू आ गए, लेकिन फौरन ही उसने उनको जज्ब करने की

कोशिश की और कहा : "नही तुम्हारा बेटा अव्वल दर्जे का स्काउड्रल है जाओ अपने मरहूम ख़ाविंद का पिस्तौल लाओ और उसके सीने पर दाग दो !"

मम्मी ने चड्ढे के गाल पर हौले-से तमाचा मारा . "फिज़ूल बकवास न करो फिर वह चुस्तो-चालाक नर्स की तरह उठी और उसने हम सबसे मुख़ातिब होकर कहा . "लडको, चड्ढा बीमार है और मुझे हस्पताल ले जाना है उसे समझे ?"

हम सब समझ गए ।

ग़रीबनवाज ने फ़ौरन टैक्सी का बंदोबस्त कर दिया—चड्ढे को उठाकर टैक्सी मे डाला गया; वह बहुत कहता रहा कि ऐसी कौन-सी आफत आ गई है, जो उसको हस्पताल के सुपुर्द किया जा रहा है; मगर मम्मी यही कहती रही कि बात तो कुछ भी नहीं, बस हस्पताल में ज़रा आराम रहता है—चड्ढा, जो बहुत जिद्दी था, उस वक्त नफसियाती तौर पर मम्मी से मरऊब [142] था और किसी बात से इनकार नही कर सकता था ।

चड्ढा हस्पताल में दाख़िल हो गया—मम्मी ने अकेले में मुझे बताया कि चड्ढे को हाइपरपाइरोकसिया है, यानी हाई फीवर । वह बहुत परेशान थी, लेकिन उसको उम्मीद थी कि बला टल जाएगी और चड्ढा तदुरुस्त हो जाएगा ।

इलाज होता रहा—प्राइवेट हस्पताल था; डॉक्टरो ने चड्ढे का इलाज बहुत तवज्जोह से किया, मगर कई पेचीदगियाँ पैदा हो गईं; बुखार बडी मुश्किल से उतरता था, फिर चंद ही घंटो में तेजी से चढ़ जाता था ।

डॉक्टरों ने बिल आखिर यह राय दी कि चड्ढे को बबई ले जाया जाए, मगर मम्मी न मानी, उसने चड्ढे को उसी हालत में उठवाया और अपने घर ले आई ।

मैं ज़्यादा दिन पूने में ठहर नही सकता था—बबई लौट आने के बाद मैंने टेलीफोन के ज़रिए कई मर्तबा चड्ढे का हाल दरयाफ़्त किया—मेरा ख़याल था कि वह जाँबर[143] न हो सकेगा, मगर फिर मुझे यह इत्तिला मिलने लगी कि आहिस्ता-आहिस्ता उसकी हालत सँभल रही है—उन्हीं दिनों एक मुक़द्दमे के सिलसिले मे मुझे लाहौर जाना पडा; पंद्रह दिन के बाद लौटा तो मेरी बीवी ने चड्ढे का एक ख़त मुझे दिया, जिसमें सिर्फ यह लिखा था . "अज़ीमुलमर्तबत[144] मम्मी ने अपने नाखलफ़ बेटे को मौत के मुँह से बचा लिया है ।"

इन चंद लफ़्ज़ों में बहुत कुछ था; इन चंद लफ्ज़ों में जज्बात का एक पूरा समदर था—मैंने अपनी बीवी से चड्ढे के ख़त का जिक्र खिलाफे-मामूल बडे जज्बाती अदाज में किया तो उसने मुतास्सिर होकर सिर्फ़ इतना कहा : "ऐसी औरतें अमूमन ख़िद्मत-गुजार हुआ करती हैं ।"

मैंने चड्ढे को दो-तीन ख़त लिखे, जिनका जवाब न आया, बाद में मुझे मालूम हुआ कि मम्मी ने उसको तब्दीली-ए-आबोहवा की ख़ातिर अपनी एक सहेली के यहाँ लोनावाला भिजवा दिया था ।

लोनावाला में चड्ढा बमुश्किल एक महीना रह सका और उकताकर चला आया—जिस रोज़ वह पूने पहुँचा, इत्तिफ़ाक़ से मैं वहीं था ।

लंबी बीमारी के बायस वह बहुत कमज़ोर हो गया था, मगर उसकी ग़ोग़ापसंद तबीयत

उसी तरह जोरों पर थी; अपनी बीमारी का उसने इस तरह ज़िक्र किया, जिस तरह आदमी साइकिल के मामूली हादिसे का ज़िक्र करता है; अब कि वह जाँबर हो गया था, उसे अपनी ख़तरनाक अलालत के मुताल्लिक़ तफ़सीली गुफ्तगू बेकार मालूम होती थी।

सईदा काटेज में चड्ढे की गैरहाजिरी के दौरान मे छोटी-छोटी कई तब्दीलियाँ हुई थी—एल ब्रादरान, यानी अक़ील और शकील कहीं और उठ गए थे कि उन्हें अपनी जाती फिल्म कपनी कायम करने के लिए सईदा काटेज की फजा मुनासिब व मोज़ूँ मालूम नहीं हुई थी। उनकी जगह एक बंगाली म्यूजिक डायरेक्टर आ गया था; उसका नाम सेन था और उसके साथ लाहौर से भागकर आया हुआ एक लडका रामसिह रहता था—सईदा काटेज में रहनेवाले सबके-सब रामसिह से काम लेते थे, वह तबीयत का बहुत शरीफ और ख़िद्मतगुजार था; वह चड्ढे के पास उस वक्त आया था, जब चड्ढा लोनावाला जा रहा था, चड्ढे ने ग़रीबनवाज और रजीत कुमार से कहा था कि रामसिह को सईदा काटेज में रख लिया जाए—सेन के कमरे मे जगह थी, इसलिए रामसिह ने वही अपना डेरा जमा दिया था।

रंजीत कुमार को कपनी के नए फिल्म में हीरो मुतखिब कर लिया गया था और उसके साथ यह वादा भी किया गया था कि अगर फिल्म कामयाब होगा तो उसको दूसरा फिल्म डायरेक्ट करने का मौका भी दिया जाएगा—चड्ढा अपनी दो बरस की जमाशुदा तनख्वाह मे से डेढ हजार रुपए यकमुश्त हासिल करने में कामयाब हो चुका था; उसने रजीत कुमार से कहा था "मेरी जान, अगर कुछ वसूल करना है तो किसी लबी बीमारी मे मुब्तला हो जाओ मेरे ख़याल मे हीरो और डायरेक्टर बनने से मरीज बनना बेहतर है।"

ग़रीबनवाज ताजा-ताजा हैदराबाद से वापस आया था, इसलिए सईदा काटेज किसी कदर मरफाउलहाल[145] थी—मैंने देखा कि गैरेज के बाहर अलगनी से ऐसी कमीजें और शलवारें लटक रही थी, जिनका कपडा अच्छा और कीमती है; शीरीं के खुर्द साल बच्चे के पास नए खिलौने थे।

मुझे पूने में पद्रह रोज रहना पडा—फिल्मों का मेरा पुराना साथी हरीश अब नई फिल्म की हीरोइन की मुहब्बत मे गिरफ्तार होने की कोशिश में मसरूफ था, मगर डरता था कि हीरोइन पजाबी थी और उसका ख़ाविद बडी-बडी मूँछोवाला एक हट्टा-कट्टा मुस्टडा था—चड्ढे ने हरीश को हौसला दिया था: "कुछ परवा न कर उस साले मूँछोवाले की अगर पजाबी ऐक्ट्रेस का ख़ाविद बडी-बडी मूँछोवाला पहलवान हो तो वह इश्क़ के मैदान मे चारो खाने चित गिरा करता है बस तू इतना कर कि सौ रुपए फी गाली के हिसाब से मुझसे पंजाबी की दस-बीस हैवीवेट किस्म की गालियाँ सीख ले यह गालियाँ ख़ास मुश्किलों में तुम्हारे बहुत काम आया करेगी।"

हरीश सौ रुपए की जगह एक बोतल फी गाली के हिसाब से छ: गालियाँ पंजाब के मख्सूस लबो-लहजे मे सीख चुका था, मगर अभी तक उसे अपने इश्क़ के रास्ते में कोई ऐसी खास मुश्किल दरपेश नहीं आई थी, जो वह उन गालियों की तासीर का इम्तिहान ले सकता।

मम्मी के घर हस्बे-मामूल महफ़िलें जमती थी, पोली, डौली, किटी, ऐल्मा, थेल्मा वगैरा सब आती थी—वनकुतरे बदस्तूर थेलमा को तांडव नाच के मुश्किल तोडे सिखाता

था और वह सीखने की पुरखुलूस कोशिश करती थी; गरीबनवाज हस्बे-तौफीक कर्ज देता था, रजीत कुमार, जिसको अब कंपनी की नई फिल्म में हीरो का चांस मिल रहा था, किसी एक लड़की को बाहर खुली हवा मे ले जाता था; चड्ढे के नंगे-नंगे लिमरिक सुनकर उसी तरह कहकहे बरपा होते थे—एक सिर्फ वह नहीं थी, वह जिसके बालों के रंग के लिए सही तश्बीह ढूँढ़ने में चड्ढे ने काफ़ी वक्त सर्फ किया था, मगर उन महफिलो में चड्ढे की निगाहे उसे ढूँढती नहीं थीं; हाँ जब कभी उसकी नजरें मम्मी की नजरों से टकराकर झुक जाती थी तो मैं महसूस करता था कि उसको अपनी उस रात की दीवानगी का अफसोस है, ऐसा अफसोस, जिसकी याद से उसको तकलीफ होती है; इसलिए चौथे पैग के बाद किसी न किसी वक्त इस किस्म का जुमला उसकी जबान से बेइख्तियार निकल जाता था 'चड्ढा, यू आर ए डैम्ड ब्रूट।' उसका जुमला सुनकर मम्मी जेरे-लब मुसकरा देती थी; उसकी जेरे-लब मुसकराहट जैसे हमेशा चड्ढे से कहती थी 'डौंट टॉक राट !' वनकुतरे से बदस्तूर चड्ढे की चख चलती थी; सुरूर में आकर जब वनकुतरे अपने बाप की तारीफ मे या अपनी बीवी की खूबसूरती के मुताल्लिक कुछ कहने लगता था तो चड्ढा उसकी बात बहुत बड़े गँडासे से काट डालता था; वनकुतरे गरीब चुप हो जाता था और अपना मैट्रिकुलेशन का सर्टीफ़िकेट तह करके जेब मे डाल लेता था।

मम्मी वही मम्मी थी, पोली की मम्मी, डौली की मम्मी, चड्ढे की मम्मी, रजीत कुमार की मम्मी—सोडे की बोतलों, गजक की चीजों और महफिल जमाने के दूसरे साजो-सामान के इंतजाम में वह उसी पुरशफकत[146] इन्हिमाक[147] से हिस्सा लेती थी; उसके चेहरे का मेकअप वैसा ही वाहियात होता था, उसके कपडे उसी तरह शोखो-शंग[148] होते थे, गाजे और सुर्खी की तहो से उसकी झुर्रियाँ उसी तरह झाँकती थी; मगर अब ये झुर्रियाँ मुझे मुकद्दस[149] दिखाई देती थी, मुकद्दस झुर्रियाँ, जो हर वक्त निहायत वाहियात रंगो से लुथड़ी रहती थी।

मम्मी वही मम्मी थी—वनकुतरे की खूबसूरत बीवी के जब इस्कात[150] हुआ तो मम्मी ही की बरवक्त मदद से उसकी जान बची, थेलमा जब मारवाड़ से एक खतरनाक मर्ज खरीद लाई तो मम्मी ही के इसरार पर उसके बेटों ने थेलमा का इलाज करवाया; किटी को एक मुअम्मा हल करने के सिलसिले मे पाँच सौ रुपए का इनाम मिला तो मम्मी ने किटी को मजबूर किया कि वह कम अज कम आधे रुपए गरीबनवाज को दे दे, क्योंकि गरीबनवाज का हाथ तंग है—मेरे पंद्रह रोज के कयाम के दौरान मे मम्मी ने कई मर्तबा मुझसे मेरी बीवी के बारे मे पूछा था और तश्वीश का इजहार किया था कि जब पहले बच्चे की मौत को इतने बरस हो चुके हैं तो दूसरा बच्चा अब तक क्यों नही हुआ ?

मम्मी वही मम्मी थी, लेकिन वह रजीत कुमार से ज्यादा रग़बत[151] के साथ बात नही करती थी, ऐसा मालूम होता था कि रजीत की नुमाइशपसंद तबीयत उसको अच्छी नहीं लगती थी, मेरे सामने एक-दो मर्तबा वह अपनी नापसंदीदगी का इजहार भी कर चुकी थी—म्यूजिक डायरेक्टर सेन से मम्मी नफरत करती थी, चड्ढा जब सेन को अपने साथ लाता था तो वह कहती थी 'ऐसे जलील इसान को यहाँ मत लाया करो ' चड्ढा वजह

पूछता था तो वह बड़ी संजीदगी से जवाब देती थी : "मुझे यह आदमी ओपरा-ओपरा-सा मालूम होता है फ़िट नहीं बैठता मेरी नजरों में" और चड्ढा हँस देता था।

मम्मी के घर की महफ़िलों की पुरखुलूस गर्मी लिए मैं वापस बंबई चला आया—उन महफ़िलों में रिंदी[152] थी, बलानोशी थी, जिमी रंग था, मगर कोई उलझाव नहीं था; हर चीज़ हामला[153] औरत के पेट की तरह क़ाबिले-फ़हम थी, उसी तरह उभरी हुई; बज़ाहिर उसी तरह कुढब, बैंडी और देखनेवाले को गूमगू[154] की हालत में डालनेवाली, मगर असल मे बडी सही, बासलीक़ा और अपनी जगह पर क़ायम।

बबई लौट आने के कई हफ्तो के बाद मैंने एक रोज सुबह के अखबारो मे पढा कि म्यूजिक डायरेक्टर सेन मारा गया है, उसको कत्ल करनेवाला कोई रामसिंह है, जिसकी उम्र चौदह-पद्रह बरस के करीब बताई जाती है—मैंने फौरन पूने टेलीफोन किया, मगर मुझे कोई मिल न सका।

एक हफ्ते के बाद चड्ढे का खत आया, जिसमे हादिसा-ए-क़त्ल की पूरी तफसील मौजूद थी, और जो मुख्तसरन मैं अपने अल्फाज मे लिख रहा हूँ एक रात सब सोए हुए थे कि चड्ढे के पलग पर अचानक कोई गिरा, चड्ढा हडबडाकर उठ बैठा, उसने रोशनी की तो देखा कि सेन है, खून मे लथपथ—चड्ढा अच्छी तरह अपने होशो-हवास सँभालने भी न पाया था कि दरवाजे मे रामसिंह नमूदार हुआ, उसके हाथ मे छुरी थी—फौरन ही गरीबनवाज और रजीत कुमार भी आ गए; सारी सईदा काटेज बेदार हो गई—रंजीत कुमार और गरीबनवाज ने रामसिंह को पकड लिया और उसके हाथ से छुरी छीन ली—चड्ढे ने सेन को अपने पलग पर लिटा दिया, चड्ढा अभी सेन से उसके जख्मों के मुताल्लिक कुछ पूछ भी न पाया था कि उसने हिचकी ली और ठडा हो गया। गरीबनवाज और रजीत कुमार की गिरफ्त मे रामसिंह था, मगर व दोनो काँप रहे थे। सेन मर गया तो रामसिंह ने चड्ढे से पूछा 'भापा जी, मर गया?' चड्ढे ने इस्बात मे सिर हिलाया तो रामसिंह ने रजीत कुमार और गरीबनवाज से कहा 'मुझे छोड दीजिए मैं भागूँगा नहीं' चड्ढे की समझ मे नही आ रहा था कि वह क्या करे; उसने नौकर को भेजकर मम्मी को बुलवाया—मम्मी आई तो सब मुतमइन हो गए—गरीबनवाज और रजीत कुमार ने रामसिंह को छोड दिया—थोडी देर के बाद मम्मी खुद रामसिंह को पुलिस स्टेशन ले गई।

इस हादिसे के बाद के कई महीने सईदा काटेज के लिए सख्त परेशानी के महीने थे—पुलिस की पूछ-गछ, बयानात, अदालत मे मुकद्दमे की पैरवी।

मम्मी इस दौरान म बहुत दौड-धूप करती रही—चड्ढे को यकीन था कि रामसिंह बरी हो जाएगा, और ऐसा ही हुआ, मातहत अदालत ही ने उसे साफ बरी कर दिया।

अदालत मे रामसिंह का वही बयान था, जो उसने थाने मे दिया था—मम्मी ने रामसिंह से कहा था 'बेटा, घबराओ नही जो कुछ हुआ है, सच-सच बताओ'

रामसिंह ने तमाम वाकिआत मनो-अन बयान कर दिए थे कि सेन ने उसको प्लेबैक सिंगर बना देने का लालच दिया था, सेन बहुत अच्छा गानेवाला था और खुद उसको भी मौसीकी से बडा लगाव था, वह इसी चक्कर मे सेन की शहवानी ख्वाहिशात पूरी करता

रहा, मगर इस अमल से उसे सख्त नफरत थी और उसका दिल बार-बार उसे लानत-मलामत करता था, आखिर वह इस कदर तंग आ गया कि उसने सेन से कह दिया कि अगर सेन ने उसे फिर मजबूर किया तो वह उसे जान से मार डालेगा, और वारदात की रात को यही हुआ।

अदालत में रामसिंह ने यही बयान दिया।

मम्मी अदालत में मौजूद थी—वह आँखों ही आँखों में रामसिंह को दिलासा देती रही कि घबराओ नहीं, जो सच है, कह दो; सच की हमेशा फतह होती है; इसमें कोई शक नहीं कि तुम्हारे हाथों ने खून किया है, मगर एक बड़ी नजिस चीज का, एक खबासत[155] का, एक गैर फितरी सौदे का।

रामसिंह ने बड़ी सादगी, बड़े भोलेपन और बड़े मासूमाना अंदाज में सारे वाकिआत बयान कर दिए—मजिस्ट्रेट इस कदर मुतास्सिर हुआ कि उसने रामसिंह को बरी कर दिया।

चड्ढे ने कहा : "इस झूठे ज़माने में यह सदाकत[156] की हैरत अंगेज फतह है और इस फतह का सेहरा मेरी बुड्ढी मम्मी के सिर है।"

चड्ढे ने मुझे उस जलसे में बुलाया था, जो रामसिंह की रिहाई की खुशी में सईदा काटेजवालों ने किया था, मगर मैं मसरूफियत के बायस शरीक न हो सका—एल ब्रादरान, यानी अकील और शकील सईदा काटेज में वापिस आ गए थे कि बाहर की फजा भी उनकी जाती फिल्म कंपनी की तासीस व तामीर के लिए रास न आई थी, अब वे फिर अपनी पुरानी फिल्म कंपनी में किसी असिस्टेंट के असिस्टेंट हो गए थे, उन दोनों के पास उस सरमाए में से चंद सौ रुपए ही बाकी बचे थे, जो उन्होंने अपनी फिल्म कंपनी की बुनियादों के लिए फराहम किया था; चड्ढे के मश्वरे पर उन्होंने यह सब रुपया जलसे को कामयाब बनाने के लिए दे दिया—चड्ढे ने उनसे कहा था 'अब मैं चार पैग पीकर दुआ करूँगा कि अल्लाह तआला तुम्हारी ज़ाती फिल्म कंपनी फौरन खड़ी कर दे।'

चड्ढे का बयान था कि उस जलसे में बनकतरे ने शराब पीकर खिलाफे-मामूल[157] अपने साले बाप की तारीफ न की और न ही अपनी खूबसूरत बीवी का जिक्र किया, गरीबनवाज ने किटी की फौरी जरूरियात के पेशे-नजर न सिर्फ किटी के दो सौ पचास रुपए लौटा दिए, उसे दो सौ रुपए कर्ज भी दिए—रजीत कुमार ने गरीबनवाज से कहा था 'तुम इन बेचारी लड़कियों को यूँ ही झाँसे न दिया करो कुछ न कुछ दे दिया करो।'

मम्मी ने उस जलसे में रामसिंह को बहुत प्यार किया और सबको यह मश्वरा दिया कि रामसिंह को उसके घर भेज दिया जाए। दूसरे ही रोज गरीबनवाज़ ने रामसिंह के टिकट का बंदोबस्त कर दिया—शीरीं ने सफर के लिए खाना पकाकर दिया, और फिर सब रामसिंह को स्टेशन पर छोड़ने गए; ट्रेन चली तो वह देर तक हाथ हिलाते रहे।

ये छोटी-छोटी बातें मुझे उस जलसे के कई हफ्ता के बाद मालूम हुईं, जब मुझे एक जरूरी काम से पूना जाना पड़ा।

सईदा काटेज में कोई खास तब्दीली वाके न हुई थी ऐसा मालूम होता था कि सईदा काटेज एक ऐसा पड़ाव है, जिसकी शक्लो-सूरत हजारहा काफिलों के ठहरने और चल देने

से भी तब्दील न होती, वह कुछ ऐसी जगह थी, जो अपना खला खुद ही पुर कर लेती थी।

जिस रोज मै सईदा काटेज पहुँचा, वहाँ शीरनी बँट रही थी—शीरी के घर एक लडका पैदा हुआ था।

बनकतरे के हाथ मे ग्लैक्सो का डिब्बा था, जो उन दिनो बडी मुश्किल से दस्तेयाब होता था, उसने अपने बच्चे के लिए कही से दो डिब्बे पैदा किए थे और उनमे से एक वह शीरी के नौजाइदा[158] लडके के लिए ले आया था—चड्ढे ने आखिरी दो लड्डू बनकुतरे के मुँह मे ठूँसे और कहा "तू यह ग्लैक्सो का डिब्बा ले आया है बडा कमाल किया है तूने अब अपने साले बाप और अपनी साली बीवी को देखना, हर्गिज कोई बात न करना।"

बनकुतरे ने बडे भोलेपन के साथ कहा "साले, मै अब कोई पिल्ला हूँ वह तो दारू बोला करती है वैसे बाई गॉड मेरी बीवी बडी हैडसम है"

चड्ढे ने इस कदर बेतहाशा कहकहा लगाया कि बनकुतरे को और कुछ कहने का मौका ही न मिला—फिर चड्ढा, गरीबनवाज और रजीत कुमार मुझसे मुतवज्जेह हुए और उस कहानी की बाते शुरू हो गई, जो मै फिल्मा के अपने पुराने साथी हरीश के जरिए से पूना के एक प्रोड्यूसर के लिए लिख रहा था कहानी की बातो से उकता जाने के बाद कुछ देर तक शीरी के नौजाइदा लडके का नाम मकरर होता रहा, सैकडो नाम पेश हुए, मगर चड्ढे को पसद न आए—आखिर मैंने कहा कि जाए पैदाइश, यानी सईदा काटेज की रिआयत से लडका मोलूदे-मसऊद[159] है, इसलिए 'मसऊद' नाम बेहतर रहेगा; चड्ढे को यह नाम भी पसद नही आया, लेकिन उसने आरजी तौर पर 'मसऊद' कुबूल कर लिया।

चड्ढे ने बनकतरे की बात पर बेतहाशा कहकहा लगाया था, मगर मैंने सईदा काटेज पहुँचने के थोडी ही देर बाद महसूस किया कि चड्ढे, गरीबनवाज और रंजीत कुमार, तीनो की तबीयत किसी कदर बुझी-बुझी-सी है; मैंने सोचा कि शायद यह खिजाँ के मौसम की वजह से है जब आदमी ख्वाहमख्वाह थकावट महसूस करता है—शीरी का नया लडका भी खफीफ इज्मेहलाल[160] का बायस हो सकता था, लेकिन यह शुब्हा इस्तिदलाल[161] पर पूरा नही उतरता था—सन के कत्ल की ट्रैजिडी ? मालूम नही, क्या वजह थी—लेकिन मैंने कतई तौर पर महसूस किया कि ये तीनो अफसुर्दा थे, बजाहिर हँसते थे, बोलते थे, मगर अदरूनी तौर पर मुज्तरिब थे[162]।

मै प्रभातनगर मे फिल्मा के अपने पुराने साथी के घर कहानी लिखता रहा और यह मसरूफियत पूरे सात दिन जारी रही—मुझे बार-बार खयाल आता था कि चड्ढे ने इस दौरान मे दखलदाजी क्यो नही की है, बनकुतरे कहाँ गायब है—रजीत कुमार से मेरे कोई गहरे मरासिम नही थे कि वह इतनी दूर मेरे पास आता; गरीबनवाज के मुताल्लिक मैंने सोचा कि शायद वह हैदराबाद चला गया हो—दूसरी तरफ फिल्मो का मेरा पुराना साथी अपनी नई फिल्म की हीरोइन के साथ उसके घर में, उसके बडी-बडी मूँछोवाले खाविद की मौजूदगी में इश्क लडा रहा था।

मै अपनी कहानी के एक बडे दिलचस्प बाब का मजरनामा तैयार कर रहा था कि

चड्ढा बलाए-नागहानी[163] की तरह नाजिल[164] हुआ।

कमरे मे दाखिल होते ही उसने पूछा "इस बकवास का तुमने कुछ वसूल किया है ?"

उसका इशारा मेरी कहानी की तरफ था, जिसके मुआवज़े की दूसरी किस्त मैंने, दो रोज हुए, वसूल की थी "हाँ दूसरा हजार मैंने परसों लिया है।"

"कहाँ है वह हजार ?" वह मेरे कोट की तरफ बढ़ा।

"जेब मे।"

उसने मेरे कोट की जेब मे हाथ डाला, सौ-सौ के चार नोट निकाले और मुझसे कहा "आज शाम को मम्मी के यहाँ पहुँच जाना एक पार्टी है !"

मैं उस पार्टी के मुताल्लिक कुछ दरयाफ्त करने ही वाला था कि वह चला गया, वह अफसुर्दगी जो मैने चंद रोज पहले उसमें महसूस की थी, बदस्तूर मौजूद थी, वह कुछ मुज्तरिब भी था—मैंने कुछ सोचना चाहा, मगर मेरा दिमाग माइल न हुआ, कहानी के दिलचस्प बाब का मजरनामा मेरे दिमाग मे बुरी तरह फँसा हुआ था।

फिल्मो के अपने पुराने साथी की बीवी से अपनी बीवी की बाते करने के बाद मैं शाम को साढ़े पाँच बजे के करीब प्रभातनगर से रवाना हुआ और सात बजे के करीब सईदा काटेज पहुँच गया।

गैरेज के बाहर अलगनी पर गीले-गीले पोतडे लटक रहे थे और एक ब्रादरान, अकील और शकील नल के पास शीरी के बडे लडके के साथ खेल रहे थे, गैरेज का टाट का परदा हटा हुआ था और शीरीं उनसे गालिबन मम्मी की बाते कर रही थी—मुझे ऐसा लगा कि मुझे देखकर वह सब चुप हो गए हैं, मैंने चड्ढे के मुताल्लिक पूछा तो अकील ने कहा कि वह मम्मी के घर मिल जाएगा।

मैं वहाँ पहुँचा तो एक शोर बरपा था।

सब नाच रहे थे: पोली और डौली के साथ गरीबनवाज, किटी और एलमा के साथ रजीत कुमार और थेलमा के साथ बनकतर—चड्ढा अपनी गोद मे मम्मी को उठाए इधर-उधर कूद रहा था—सब नशे मे थे और एक तूफान मचा हुआ था।

मैं कमरे मे दाखिल हुआ तो सबसे पहले चड्ढे ने नारा लगाया, उसके बाद देसी और नीम विदेशी आवाजो का एक गोला-सा फटा, जिसकी गूँज देर तक कानो मे सरसराती रही।

मम्मी बड़े तपाक से मिली, ऐसे तपाक से, जो बेतकल्लुफी की हद तक बढ़ा हुआ था—मम्मी ने मेरा हाथ अपने हाथ मे लेकर कहा "किस मी डियर !" लेकिन उसने खुद ही मेरा एक गाल चूम लिया और मुझे घसीटकर नाचनेवालों के झुरमुट मे ले गई।

चड्ढा एकदम चीखा "बंद करो अब फिर शराब का दौर चलेगा" फिर उसने नौकर को आवाज दी "स्कॉटलैंड के शहजादे, व्हिस्की की नई बोतल लाओ।"

स्कॉटलैंड का शहजादा नई बोतल ले आया, वह नशे में धुत था, जब वह बोतल खोलने लगा तो बोतल उसके हाथ मे गिर पड़ी और चकनाचूर हो गई।

मम्मी ने स्कॉटलैंड के शहजादे को डाँटना चाहा तो चड्ढा ने मम्मी को रोक दिया और

कहा ''एक बोतल टूटी है मम्मी जाने दो, यहाँ तो दिल टूटे पड़े हैं ''

महफिल एकदम सूनी हो गई, लेकिन फ़ौरन ही चड्ढा ने उस लम्हाती अफ़सुर्दगी को अपने कहकहों से दरहम-बरहम कर दिया।

नई बोतल आई तो हर गिलास में ग्रांडील पैग डाला गया।

चड्ढे ने बेरब्त-सी[165] तक़रीर शुरू की : ''लेडीज एंड जैंटिलमैन आप सब जहन्नम में जाएँ मंटो हमारे दरमियान मौजूद है; बजौम खुद बड़ा अफ़सानानिगार बनता है इंसानी नफ़सियात की, यह क्या कहते हैं, अमीक़ तरीन[166] गहराइयों मे उतर जाता है मगर मैं कहता हूँ कि बकवास है कुएँ में उतरनेवाले कुएँ में उतरनेवाले '' चड्ढा ने इधर-उधर देखा ''अफसोस के यहाँ कोई हिंदुस्तोड नहीं है एक हैदराबादी है, जो काफ को खाफ कहता है, और जिससे दस बरस पीछे मुलाक़ात हुई हो तो कहेगा · 'परसों आपसे मिला था ' लानत है उसके निज़ाम हैदराबाद पर, जिसके पास कई लाख टन सोना है, करोड़हा जवाहरात हैं, लेकिन मम्मी नहीं है हाँ तो वह कुएँ में उतरनेवाले मैंने क्या कहा था कि सब बकवास है पंजाबी में जिन्हें टोबहे कहते हैं वह गोता लगानेवाले, वह मंटो के मुकाबले मे इंसानी नफसियात को बदरजहा[167] बेहतर समझते हैं इसलिए मैं कहता हूँ ''

सबने जिंदाबाद का नारा लगाया।

चड्ढा चीखा ''साजिश है सब मंटो की साजिश है वर्ना मैंने तो हेर हिटलर की तरह तुम लोगों को मुर्दाबाद के नारे का इशारा किया था तुम सब मुर्दाबाद लेकिन पहले मैं मैं '' वह जज्बाती हो गया : ''मैं, जिसने उस रात उस साँप के पेट के खपरों-ऐसे रंगवाले बालों की एक लड़की के लिए अपनी मम्मी को नाराज कर दिया था मैं खुद को खुदा मालूम कहाँ का डान जुआन समझता था लेकिन नहीं उसको हासिल करना कोई मुश्किल काम नहीं था अपनी जवानी की क़सम, एक ही बोसे में उस प्लैटीनम ब्लौंड के कुँवारपने का सारा अर्क मैं अपने इन मोटे-मोटे होंठों से चूस सकता था लेकिन यह एक यह एक नामुनासिब हरकत होती वह कमउम्र थी इतनी कमउम्र, इतनी कमजोर, इतनी कैरेक्टरलैस '' उसने मेरी तरफ़ सवालिया नज़रो से देखा · ''बताओ यार, इसे उर्दू, फारसी या अरबी में क्या कहेंगे कैरेक्टरलैस लेडीज एंड जैंटिलमैन वह इतनी छोटी, इतनी कमजोर और इतनी ला किरदार थी कि उस रात जिसी अमल में शरीक होकर या तो वह सारी उम्र पछताती रहती, या क़तअन भूल जाती उन चंद घड़ियों की लज्ज़त की याद के सहारे जीने का सलीक़ा उसको क़तई तौर पर न आता और मुझे इसका दुख होता अच्छा हुआ कि मम्मी ने उसी वक्त मेरा हुक़्क़ा-पानी बंद कर दिया मैं अब अपनी बकवास बंद करता हूँ मैंने असल में एक बहुत लंबी-चौड़ी तकरीर करने का इरादा किया था, मगर मुझसे कुछ बोला नहीं जाता मैं एक पैग और पीता हूँ ''

चड्ढा ने एक पैग और पिया—उसकी तक़रीर के दौरान में सब ख़ामोश थे; तक़रीर के बाद भी खामोश रहे।

मम्मी ना मालूम क्या सोच रही थी—ग़ाज़े और सुर्ख़ी की तहों के नीचे उसकी झुर्रियाँ,

ऐसा दिखाई देता था, गौरो-फ़िक्र[168] में डूबी हुई हैं।

बोलते रहने के बाद चड्ढा जैसे ख़ाली-सा हो गया था; वह इधर-उधर घूम रहा था, जैसे कोई चीज खो देने के लिए ऐसा कोना ढूँढ़ रहा हो जो उसके ज़ेहन में अच्छी तरह महफ़ूज़ रहे।

मैंने चड्ढा से पूछा, "क्या बात है चड्ढा?"

उसने कहकहा लगाकर जवाब दिया: "कुछ नहीं बात यह है कि आज व्हिस्की मेरे दिमाग के चूतड़ों पर जमा के लात नहीं मार रही" उसका कहकहा खोखला था।

वनकुतरे ने थेलमा को एक तरफ सरकने के लिए कहा और फिर मुझे अपने पास बिठा लिया, इधर-उधर की बातें करने के बाद उसने अपने बाप की तारीफ़ शुरू कर दी कि वह बड़ा गुनी आदमी था, ऐसा हारमोनियम बजाता था कि लोग दमबख़ुद हो जाते थे—फिर उसने अपनी बीवी की ख़ूबसूरती का जिक्र शुरू कर दिया और मुझे बताया कि बचपन ही में उसके बाप ने यह लड़की चुनकर उससे ब्याह दी थी—बंगाली म्यूज़िक डायरेक्टर सेन की बात निकली तो उसने कहा "मिस्टर मंटो, वह एकदम हलकट आदमी था कहता था, मैं ख़ाँ साहब अब्दुलकरीम ख़ाँ का शागिर्द हूँ झूठ, बिलकुल झूठ वह तो बंगाल के किसी भड़वे का शागिर्द था"

घड़ी ने दो बजाए।

चड्ढा ने जबड़बन्द बंद किया, किटी को धक्का देकर एक तरफ गिराया, बढ़कर वनकुतरे के कद्दू-ऐसे सिर पर धप्पा मारा और कहा "बकवास बंद कर बे उठ और कुछ गा लेकिन ख़बरदार, अगर तूने कोई पक्का राग गाया"

वनकुतरे ने फौरन गाना शुरू कर दिया—उसकी आवाज अच्छी नहीं थी, मुरकियों[169] की नोकपलक वाजेह तौर पर उसके गले से नहीं निकलती थी; लेकिन वह जो कुछ भी गाता था, पूरे ख़ुलूस से गाता था—उसने मालकोस में ऊपर-तले दो-तीन फ़िल्मी गाने सुनाए, जिनसे फ़ज़ा बहुत उदास हो गई।

उस उदास फ़ज़ा में थोड़ी-थोड़ी देर के बाद मम्मी और चड्ढा एक-दूसरे की तरफ देखते थे और नजरें मिलते ही किसी और सिम्त[170] हटा लेते थे।

ग़रीबनवाज इस कदर मुतास्सिर हुआ कि उसकी आँखों में आँसू आ गए।

लर्डकियाँ आँखें फाड़ एक-दूसरे की तरफ देख रही थीं।

रणजीत कुमार बुत बना हुआ था।

चड्ढा ने ग़रीबनवाज़ की तरफ देखा और जोर का कहकहा बुलंद किया हैदराबादवालों की आँखों का मसाना बहुत कमजोर होता है मौका-बेमौका टपकने लगता है

ग़रीबनवाज ने अपने आँसू पोंछे और थेलमा के साथ नाचना शुरू कर दिया।

वनकुतरे ने ग्रामोफ़ोन के तवे पर रिकार्ड टिकाकर सुई रख दी और घिसी हुई ट्यून बजने लगी।

चड्ढा ने मम्मी को गोद में उठा लिया और कूद-कूदकर शोर मचाने लगा—उसका

गला बैठ गया था, उन मीरासिनो की तरह, जो शादी-ब्याह के मौको पर ऊँचे सुरो मे गा-गाकर अपनी आवाज का नाम मार लेती हैं।

इस उछल-कूद और चीखम-धाड मे चार बज गए।

मम्मी एकदम खामोश हो गई, फिर उसने चड्ढा से कहा बस अब खत्म।"

चड्ढा ने हाथ बढ़ाया, पास पडी हुई ओनी पोनी बोतल उठाई, मुँह से लगाई, गटागट खाली की, एक तरफ फेंकी और मुझसे कहा "चलो मटा, चल!

मैंने मम्मी से इजाजत लेनी चाही तो चड्ढा ने मझे अपनी तरफ खीच लिया 'आज कोई अलविदा नही कहेगा।"

हम दोनो बाहर निकल रहे थे कि मैंने वनकतर के रोने की आवाज सुनी—मैंने चड्ढा से कहा "रुको चडढा, क्या बात है " मगर वह मझे धकेलकर आगे ले गया "उस साले की आँखो का मसाना भी खराब है "

मम्मी के घर से सईदा काटेज बिलकुल नजदीक थी—रास्ते मे चड्ढा ने कोई बात न की।

सोने से पहले मैंने उससे उस पुर शोर मगर उदास पार्टी के मुताल्लिक इस्तिफसार करना चाहा तो उसने कहा "मुझे सख्त नीद आ रही है " और बिस्तर पर लेट गया।

सुबह उठकर मे गुस्लखाने मे गया—बाहर निकला तो मैंने देखा कि गरीबनवाज गैरेज के टाट के साथ लगकर खडा है और रो रहा है।

मुझे देखकर वह आँसू पोछता हुआ वहाँ से हट गया—मैंने पास जाकर उससे रोने की वजह दरियाफ्त की तो उसने कहा "मम्मी चली गई।

"कहाँ?"

"मालूम नही।" यह कहकर गरीबनवाज ने सडक का रुख किया।

चड्ढा बिस्तर पर लेटा हुआ था; ऐसा मालूम होता था कि वह एक लम्हे के लिए भी नही सोया है।

मैंने उससे मम्मी के बारे में पूछा तो उसने मुस्कराकर कहा "हाँ, वह चली गई सुबह की गाडी से उसे पूना छोडना था!"

मैंने पूछा "मगर क्यो?"

चड्ढा के लहजे मे तल्खी आ गई "हुकूमत को उसकी अदाएँ पसद नही थी, उसकी वजाकता[7] पसद नही थी उसके घर की महफिलें हुकूमत की नजर मे काबिले-एतिराज थी पुलिस उसकी शफकत और मुहब्बत बतौर यर्गमाल[12] के लेना चाहती थी, वह उसे माँ कहकर उससे एक दल्लाला का काम लेना चाहते थे एक अर्से से उसका एक केस जेरे-तफ्तीश था; हुकूमत आखिर पुलिस की तहकीकात से मुतमइन हो गई और उसको तड़ी पार कर दिया शहर-बदर कर दिया वह अगर कहबा थी, दल्लाला थी उसका वुजूद अगर सोसाइटी के लिए मोहलिक है तो उसका खात्मा कर देना चाहिए पूने की गिलाजत को यह क्यों कहा गया कि तुम यहाँ से चली जाओ और कही और जाकर ढेर हो जाओ " चड्ढा ने बड़े जोर का कहकहा लगाया और थोड़ी देर खामोश रहा; फिर

उसने बडे जज्बात भरे लहजे में कहा : 'मुझे अफ़सोस है मंटो कि उस गिलाज़त के साथ एक ऐसी पाकीज़गी चली गई है, जिसने उस रात मेरी एक बड़ी ग़लत और नजिस[173] तरंग को मेरे दिलो-दिमाग से धो डाला था लेकिन मुझे अफ़सोस नहीं होना चाहिए वह पूने से चली गई है मुझ-ऐसे जवानो में वैसी नजिस और ग़लत तरंगें जहाँ भी पैदा होंगी, वहाँ वह अपना घर बनाएगी मैं अपनी मम्मी उनके सुपुर्द करता हूँ ज़िंदाबाद मम्मी ज़िंदाबाद चलो, गरीबनवाज़ को ढूँढें रो-रोकर उसने अपनी जान हलकान कर ली होगी इन हैदराबादियो की आँखों का मसाना बहुत कमज़ोर होता है वक्त-बेवक़्त टपकने लगता है ''

मैंने देखा—चड्ढा की आँखो में आँसू इस तरह तैर रहे थे, जिस तरह मक्तूलो[174] की लाशें ।

---

1 विश्वगुरु, 2 निवास 3 अतिशयोक्ति, 4. जुडी हुई, 5. आलसी; 6 यात्राएँ, 7 तय करने, 8 सभव, 9 दैवयोग, 10 उदासी, 11 उदासी, 12. जल्दी, 13 जैसे-तैसे, 14 विरोध, 15 गावदी, 16 सौंदर्याभिरुचि; 17. नजर, 18 काफी समय, 19 थोडी-सी सतुष्टि, 20. बहानेबाजी, 21 अस्थायी, 22. मासिक, 23 गरीब का गुस्सा अपने ही ऊपर उतरता है, 24 निडर, 25 वर्षों से, 26 पूछताछ; 27 मज्जन, 28 टूटा हुआ, 29 तलाश, 30 प्रबध, 31. अस्त-व्यस्त, 32. अनिवार्य; 33 सामूहिक, 34 पूर्णता, 35. बदबूदार, 36 पूर्णता, 37 आधा, 38. स्वागत, 39. चिंतित, 40 आदर, 41 हीन भावना, 42 वाँचन, 43 खुशी, हर्ष, 44 हीरा, 45 सम्मान सहित, 46 ताजगी; 47 घटित, 48 विशेष रूप से, 49 सीमाएँ, 50 उद्देश्यहीन, 51 स्वस्थ, 52 एकात; 53. कन्फ्यूशियस के मतानुसार, 54 विरोधी, 55 ताकतों, 56 मूर्ख; 57 पूछताछ, 58 अस्वाभाविक; 59 मर्द्दा का विलोम शब्द अर्थात् रजीदा, 60 देखने मे, 61 निवासियों, 62 परिचय; 63. समतल; 64. उपलब्ध; 65 पहनावे; 66. रहन-सहन; 67 उपलब्ध, 68. कभी-कभी, 69 समानता, 70 सम्मानीय; 71. गधे की नस्ल, 72 खाते-पीते; 73 सामान्य साहित्य, 74 कर्जदार, 75. उस व्यक्ति के लिए, जिसकी प्रसिद्धि तो हो मगर उसमें योग्यता न हो (नाम बड़े और दर्शन छोटे), 76 व्यस्त, 77. कार्यों, 78 प्रसन्नचित्त, 79 दुख-तकलीफ, 80 परेशानहाली, 81 खुशमिज़ाजी; 82 सविस्तार, 83. मात्रा, 84 तसल्ली, 85 ऊँची आवाज के साथ, 86 शक्लो-सूरत, 87 विपरीत; 88. घूँट, 89. उपमा; 90 मोटी-सी, 91 बचाव 92 विरोध की आवाज, 93 सबध, 94 सयम से, 95 सामान्य, 96 आसक्त, 97 अपने बल पर; 98 जबर्दस्ती; 99 कदमो, 100 आवभगत, 101 कसर; 102. भूल; 103. मनोवैज्ञानिक, 104 तग, 105 पूति, 106 नज़र, 107 नालायक; 108 निराश; 109 स्वीकृति का चिह्न, 110 सबोधित, 111 रद्द, 112 दया, कृपा, 113 ऐरे-गैरे नत्थु खैरे सभी को आमंत्रित कर लेना; 114 हमदर्द, 115 गुस्सा, 116. समझ में आने योग्य, 117. सौंदर्य की; 118 उपहास, 119 शालीनता, 120 कद व काठी, 121 नैन-नक्श, 122. डालना, 123. विजयी, 124 दिखाई देते 125 शिष्टता, 126 अनुरोध, 127. पेय, 128 नग्नता, 129. गुप्त अगों को छिपाना; 130 अदरूनी, 131 एकाग्रता, 132 एक व्यक्ति का नाम, 133. प्रशासक, 134 अवज्ञा करनेवाला, 135. समझौता, 136. प्राप्त करने की चाह; 137. प्रतिवाद; 138. ज्यों का त्यों; 139. घमड; 140 व्याकुलता, आतुरता, 141. प्रतिमा; 142. आतंकित; 143. जीवित न रह पाना; 144. प्रतिष्ठित, 145. खुशहाल; 146. उदारता; 147. एकाग्रता, 148. रंग-बिरंगे; 149. पवित्र; 150. गर्भपात; 151 प्रेम से, 152. मस्ती; 153. गर्भवती, 154. असमजस, 155 बुरी चेष्टा; 156. सच्चाई; 157. आदत के विपरीत, 158. नवजात शिशु; 159 खुशनसीब बच्चा; 160. उदासी; 161. दलील; 162. व्याकुल; 163 दैवी संकट; 164. प्रकट; 165. अव्यवस्थित; 166 अत्यधिक गहराई; 167. कई गुणा अधिक; 168. सोच-विचार, 169. गाने के अंत में आवाज खींचना, 170. दिशा में; 171. रहन-सहन; 172. बंधक, 173. गदी; 174. जिसकी हत्या की गई हो ।

बाबू गोपीनाथ

बाबू गोपीनाथ से मेरी मुलाकात मन चालीस मे हुई—उन दिनों मैं बंबई का एक हफ्तावार परचा एडिट[1] किया करता था।

दफ्तर में अब्दुलरहीम सैंडो एक नाटे कद के आदमी के साथ दाखिल हुआ—मैं उस वक्त लीडर लिख रहा था।

सैंडो ने अपने मख़्सूस[2] अदाज़ में बआवाजे[3] बुलंद मुझे आदाब किया और फिर अपने साथी से तआरुफ कराया : ''मंटो साहब, बाबू गोपीनाथ से मिलिए।''

मैंने उठकर बाबू गोपीनाथ से हाथ मिलाया।

सैंडो ने हस्बे-आदत मेरी तारीफों के पुल बाँधने शुरू कर दिए : ''बाबू गोपीनाथ, तुम हिंदुस्तान के नंबर वन राइटर से हाथ मिला रहे हो लिखता है तो धड़न तख़्ता हो जाता है लोगो का ऐसी-ऐसी कंटीन्यूटली[4] मिलाता है कि तबीयत साफ हो जाती है पिछले दिनों वह क्या चुटकुला लिखा था आपने 'मिस ख़ुरशीद ने कार ख़रीद ली।' अल्लाह बड़ा कारसाज है क्यों बाबू गोपीनाथ, है ना एंटी की पैंटी पू ''

अब्दुलरहीम सैंडो का बाते करने का अदाज़ बिलकुल निराला था; कटीन्यूटली, धडन तख़्ता और ऐंटी की पेंटी पू ऐसे अल्फाज़ उसकी अपनी इख़्तिराअ[5] थे, जिनको वह गुफ्तगू मे बेतकल्लुफ इस्तेमाल करता था—मेरा तआरुफ़ कराने के बाद वह बाबू गोपीनाथ की तरफ मुतवज्जेह हुआ : ''आप हैं बाबू गोपीनाथ बड़े ख़ानाखराब लाहौर से झख मारते-मारते बंबई तशरीफ़ लाए हैं और साथ कश्मीर की एक कबूतरी है।''

बाबू गोपीनाथ मुसकराया।

अब्दुलरहीम सैंडो ने तआरुफ को नाकाफी समझकर कहा : ''नबर वन बेवकूफ़ कोई हो सकता है तो वह आप हैं लोग इनको मस्का लगाकर रुपया बटोरते हैं, मैं सिर्फ़ बाते करके इनसे हर रोज़ पोलसन बटर के दो पैकेट वसूल करता हूँ बस मटो साहब, यह समझ लीजिए कि बडे ऐंटीफ़लोजास्टिन[6] किस्म के आदमी हैं आप आज शाम को इनके फ़्लैट पर ज़रूर तशरीफ़ लाइए।''

बाबू गोपीनाथ ने, जो ख़ुदा मालूम क्या सोच रहा था, चौंककर कहा : ''हाँ हाँ, ज़रूर तशरीफ़ लाइए मंटो साहब '' फिर उसने सैंडो से पूछा : ''क्यों सैंडो, क्या आप कुछ उसका शग़ल[7] करते हैं?''

अब्दुलरहीम सैंडो ने जोर से कहकहा लगाया . ''अजी हर किस्म का शगल करते हैं तो मंटो साहब, आज शाम को जरूर आइएगा मैंने भी पीनी शुरू कर दी है, इसलिए कि मुफ्त मिलती है ।''

सैंडो ने मुझे फ़्लैट का पता लिखवा दिया, जहाँ मैं हस्बे-वादा शाम के छः बजे के करीब पहुँच गया ।

तीन कमरो का साफ-सुथरा फ्लैट था, जिसमें बिलकुल नया फर्नीचर सजा हुआ था—सैंडो और बाबू गोपीनाथ के अलावा बैठनेवाले कमरे मे दो मर्द और दो औरतें मौजूद थीं, जिनसे सैंडो ने मुझे मुतारिफ[*] कराया ।

एक था गफ़्फार साईं, तहमद पोश, पजाब का ठेठ साईं, गले मे मोटे-मोटे दानों की माला । सैंडो ने उसके बारे में कहा : ''आप बाबू गोपीनाथ के लीगल एडवाइजर हैं मेरा मतलब समझ जाइए आप हर आदमी, जिसकी नाक बहती हो या जिसके मुँह से लुआब निकलता हो, पजाब में खुदा को पहुँचा हुआ दरवेश बन जाता है यह भी बस पहुँचे हुए हैं या पहुँचनेवाले हैं लाहौर से बाबू गोपीनाथ के साथ आए है, क्योंकि इन्हे वहाँ कोई और बेवकूफ मिलने की उम्मीद नहीं थी यहाँ आप बाबू गोपीनाथ से करैवन ए के सिगरेट और स्कॉच व्हिस्की के पैग पीकर दुआ करते रहते हैं कि अंजाम नेक हो ''

गफ़्फ़ार साईं यह सुनकर मुसकराता रहा ।

दूसरे मर्द का नाम था गुलाम अली; लबा-तडंगा जवान, कसरती बदन, मुँह पर चेचक के दाग़—उसके मुताल्लिक़ सैंडो ने कहा : ''यह मेरा शागिर्द है और अपने उस्ताद के नक़्शे-कदम पर चल रहा है लाहौर की एक नामी तवाइफ की कुँआरी लड़की इस पर आशिक हो गई थी बडी-बडी कटीन्यूटियाँ मिलाई गई थीं इसको फाँसने के लिए, मगर इसने कहा, मैं लँगोट का पक्का रहूँगा एक तकिए में बातचीत पीते हुए बाबू गोपीनाथ से मुलाक़ात हो गई, बस उस दिन से उनके साथ चिमटा हुआ है हर रोज़ करैवन ए का डिब्बा और खाना मुक़र्रर है ''

यह सुनकर गुलाम अली भी मुसकराता रहा ।

गोल चेहरेवाली एक सुर्ख व सफेद औरत थी—कमरे में दाखिल होते ही मैं समझ गया था कि यह वही कश्मीर की कबूतरी है, जिसके मुताल्लिक सैंडो ने दफ़्तर में ज़िक्र किया था—बहुत साफ़-सुथरी औरत थी, बाल छोटे थे और ऐसा लगता था कि कटे हुए हैं, मगर दर हक़ीक़त ऐसा नहीं था, आँखें शफ़ाफ़ और चमकीली थीं; चेहरे के खुतूत से साफ़ ज़ाहिर होता था कि बेहद अल्हड़ और नातजुर्बाकार है ।

सैंडो ने उससे तआरुफ़ कराते हुए कहा : ''ज़ीनत बेगम बाबू साहब प्यार से ज़ीनू कहते हैं एक बड़ी खुर्राट नायिका कश्मीर से यह सेब तोड़कर लाहौर लाई थी बाबू साहब को अपनी सी.आई.डी. से पता चला और एक रात इसे ले उड़े ''मुक़दमेबाजी हुई और तकरीबन दो महीने तक पुलिस ऐश करती रही ''आखिर बाबू साहब ने मुक़द्दमा जीत लिया और इसे यहाँ ले आए'' धड़न तख़्ता ।''

अब गहरे साँवले रंग की औरत बाकी रह गई थी, जो ख़ामोश बैठी सिगरेट पी रही थी, उसकी आँखें सुर्ख़ थी, जिनसे काफ़ी बेहयाई मुतरश्शोह[9] थी।

बाबू गोपीनाथ ने उसकी तरफ़ इशारा किया और सैंडो से कहा . "इसके मुताल्लिक भी कुछ हो जाए!"

सैंडो ने उस औरत की रान पर हाथ मारा और कहा . "जनाब यह है टीन पटूटी फिल, फिल मिसेज अब्दुल रहीम सैंडो उर्फ सरदार बेगम आप भी लाहौर की पैदावार हैं मन छत्तीस मे मुझसे इश्क़ हुआ और हुजूर दो बरसो ही मे इन्होंने मेरा धडन तख़्ता करके रख दिया मैं लाहौर छोडकर यहाँ भाग आया बाबू गोपीनाथ ने इसे यहाँ बुलवा लिया है कि मेरा दिल लगा रहे इसको भी एक डिब्बा करैवन ए का राशन में मिलता है और हर रोज शाम को ढाई रुपए का मॉर्फिया का इंजेक्शन भी लेती है रंग काला है मगर वैसे बड़ी टिट फार टेट किस्म की औरत है!"

सरदार बेगम ने एक अदा से सिर्फ इतना कहा : "बकवास न कर !" उसकी अदा में पेशेवर औरत की बनावट थी।

सबसे मुतारिफ कराने के बाद सैंडो ने हस्बे-आदत मेरी तारीफ़ों के पुल बाँधने शुरू कर दिए।

मैंने कहा : "छोड़ यार, आओ कुछ और बातें करे ।"

सैंडो चिल्लाया : "ब्वॉय, व्हिस्की एंड सोडा बाबू गोपीनाथ, लगाओ हवा एक सब्जे को "

बाबू गोपीनाथ ने जेब में हाथ डालकर सौ-सौ के नोटों का एक पुलंदा निकाला और एक नोट सैंडो के हवाले कर दिया।

सैंडो ने नोट थामते हुए, उसे ग़ौर से देखते हुए, फिर उसे खड़खड़ाते हुआ कहा : "ओ गॉड ओ मेरे रब्बुल आलमीन[10] वह दिन कब आएगा, जब मैं भी लब लगाकर यूँ नोट निकाला करूँगा गुलाम अली, जाओ, दो बोतलें जानीवॉकर स्टिल गोइंग स्ट्रॉंग की ले आओ ।"

बोतलें आईं तो सबने पीना शुरू कर दी—यह शुग़ल दो-तीन घंटे तक जारी रहा।

इस दौरान में सबसे ज़्यादा बातें हस्बे-मामूल[11] अब्दुल रहीम सैंडो ने कीं। पहला गिलास एक ही साँस में ख़त्म करके वह चिल्लाया : "धड़न तख़्ता मंटो साहब, व्हिस्की हो तो ऐसी हलक़ से उतरकर पेट में इन्क़िलाब ज़िंदाबाद लिखती चली गई है जियो, बाबू गोपीनाथ जियो !"

बाबू गोपीनाथ बेचारा ख़ामोश रहा—कभी-कभी अलबत्ता वह सैंडो की हाँ में हाँ मिला देता था।

मैंने सोचा : 'इस शख़्स की अपनी कोई राय नहीं है ? दूसरा जो भी कहे, मान लेता है।'

ज़ईफ़ुलए' तिक़ादी[12] का सुबूत ग़फ़्फ़ार साईं मौजूद था, जिसे बाबू गोपीनाथ बक़ौल सैंडो अपना लीगल एडवाइज़र बनाकर लाया था; लीगल एडवाइज़र से सैंडो का दरअसल यह मतलब था कि बाबू गोपीनाथ को ग़फ़्फ़ार साईं से अक़ीदत थी; यूँ भी मुझे

दौराने-गुफ्तगू मालूम हुआ कि लाहौर में बाबू गोपीनाथ का अक्सर वक्त फकीरों और दरवेशों की सोहबत मे कटता था—एक बात मैंने खासतौर पर नोट की कि वह कुछ खोया-खोया-सा है, जैसे कुछ सोच रहा हो।

मैंने उससे एक बार कहा . "बाबू गोपीनाथ, क्या सोच रहे हैं आप ?"

वह चौंक पडा "जी मैं मैं कुछ नहीं " यह कहकर वह मुसकराया और फिर उसने जीनत की तरफ़ एक आशिक़ाना निगाह डाली : "इन हसीनों के मुताल्लिक़ सोच रहा हूँ और हमें क्या सोच होगी !"

सैंडो ने कहा "बडे ख़ानाख़राब हैं बाबू गोपीनाथ मंटो साहब, बडे खानाखराब हैं लाहौर की कोई तवाइफ़ ऐसी नहीं, जिसके साथ बाबू साहब की कंटीन्यूटली न रह चुकी हो !"

बाबू गोपीनाथ ने यह सुनकर बडे भौंडे इन्किसार[13] के साथ कहा "अब कमर मे वह दम-ख़म नही मंटो साहब !" इसके बाद वाहियात गुफ्तगू शुरू हो गई।

लाहौर की तवाइफों के सब घराने गिने गए—कौन डेरादार[14] थी, कौन नटनी थी; कौन किसकी नोची थी; किसकी नथनी उतारने का बाबू गोपीनाथ ने क्या दिया था, वगैरह, वग़ैरह—यह गुफ्तगू सरदार, सैंडो, गफ्फार साईं और गुलाम अली के दरमियान होती रही, ठेट लाहौर के कोठों की ज़बान मे। मतलब तो मैं समझता रहा, मगर बाज़ इस्तलाहे[15] मेरी समझ मे न आईं।

जीनत बिलकुल ख़ामोश बैठी रही। वह कभी-कभी किसी बात पर मुसकरा देती।

मुझे ऐसा महसूस हुआ कि जीनत को इस गुफ्तगू से कोई दिलचस्पी नही है—उसने हल्की व्हिस्की का एक गिलास पिया भी तो बगैर किसी दिलचस्पी के, सिगरेट पीती थी तो मालूम होता था कि उसे तंबाकू और उसके धुएँ से कोई रगबत[16] नही है, लुत्फ की बात यह है कि सबसे ज्यादा सिगरेट उसी ने पिए।

बाबू गोपीनाथ से ज़ीनत को मुहब्बत थी, इसका पता मुझे किसी बात से न मिला।

हाँ, इतना जाहिर था कि बाबू गोपीनाथ को जीनत का काफ़ी ख़याल था—जीनत की आसाइश के लिए हर सामान मुहैया था।

एक और बात मुझे महसूस हुई—उन दोनो मे कुछ अजीब-सा खिंचाव था, मेरा मतलब यह है कि वे दोनों एक-दूसरे के करीब होने के बजाय मुझे कुछ हटे-हटे-से मालूम हुए।

सरदार आठ बजे के क़रीब डॉक्टर मजीद के हाँ चली गई कि उसे मार्फिया का इंजेक्शन लेना था। ग़फ़्फ़ार साईं तीन पेग पीने के बाद अपनी तस्बीह[17] उठाकर क़ालीन पर सो गया। गुलाम अली को होटल से खाना लाने के लिए भेज दिया गया।

सैंडो ने अपनी दिलचस्प बकवास जब कुछ अर्से के लिए बंद की तो बाबू गोपीनाथ ने जो अब नशे मे था, ज़ीनत की तरफ़ वही आशिक़ाना निगाह डालकर कहा . "मंटो साहब, मेरी जीनत के मुताल्लिक़ आपका क्या ख़याल है ?"

मैंने सोचा कि क्या कहूँ—जब मैंने ज़ीनत की तरफ़ देखा तो वह झेंप गई—मैंने ऐसे ही कह दिया "बड़ा नेक ख़याल है !"

बाबू गोपीनाथ खुश हो गया ''मंटो साहब, है भी बड़ी नेक लोग खुदा की कसम, न जेवर का शौक है, न किसी और चीज का मैंने कई बार कहा, 'जानेमन, मकान बनवा दूँ' जवाब क्या दिया, मालूम है आपको 'क्या करूँगी मकान लेकर, मेरा कौन है' मंटो साहब, मोटर कितने में आ जाएगी ?''

मैंने कहा : ''मुझे मालूम नहीं।''

बाबू गोपीनाथ ने ताज्जुब से कहा ''क्या बात करते हैं मंटो साहब आपको और कारों की क़ीमत न मालूम हो कल चलिए मेरे साथ जीनू के लिए एक मोटर लेंगे मैंने अब देखा है कि बंबई में मोटर होनी ही चाहिए।''

ज़ीनत का चेहरा रद्दे-अमल से खाली रहा।

बाबू गोपीनाथ का नशा थोड़ी देर के बाद बहुत तेज हो गया। हमातन[18] जज़्बात होकर उसने मुझसे कहा ''मंटो साहब, आप बड़े लायक आदमी हैं और मैं बिलकुल गधा हूँ आप मुझे बताइए, मैं आपकी क्या खिद्मत कर सकता हूँ कल बातों-बातों में सैंडो ने आपका जिक्र किया मैंने उसी वक्त टैक्सी मँगवाई और कहा, मुझे ले चलो मंटो साहब के पास मुझसे कोई गुस्ताखी हो गई हो तो माफ़ कर दीजिएगा मैं बहुत गुनाहगार आदमी हूँ और व्हिस्की मँगवाऊँ आपके लिए ?''

मैंने कहा : ''नहीं-नहीं बहुत पी चुके हैं !''

वह और ज्यादा जज़्बाती हो गया : ''नहीं-नहीं और पीजिए मंटो साहब '' यह कहकर उसने जेब से सौ-सौ के नोटों का पुलदा निकाला और एक नोट जुदा करने लगा।

मैंने सब नोट उसके हाथ से ले लिए और वापस उसकी जेब में ठूँस दिए ''सौ का एक नोट आपने ग़ुलाम अली को दिया था उसका क्या हुआ ?''

मुझे दरअसल कुछ हमदर्दी-सी हो गई थी बाबू गोपीनाथ से—कितने आदमी उस गरीब के साथ जौंक की तरह चिमटे हुए थे। मेरा ख़याल था कि बाबू गोपीनाथ बिलकुल गधा है।

वह मेरा इशारा समझ गया और मुसकराकर कहने लगा : ''मंटो साहब, उस नोट में से जो कुछ बाकी बचा होगा, वह या तो ग़ुलाम अली की जेब से गिर पड़ा होगा या ''

अभी बाबू गोपीनाथ ने पूरा जुमला अदा नहीं किया था कि ग़ुलाम अली ने कमरे में दाख़िल होकर बड़े दुख के साथ यह इत्तिला दी कि होटल में किसी हरामजादे ने उसकी जेब में से सारे रुपए निकाल लिए हैं।

बाबू गोपीनाथ मेरी तरफ़ देखकर मुसकराया, फिर उसने सौ रुपए का एक नोट जेब से निकाला और ग़ुलाम अली को देकर कहा : ''खाना जल्दी ले आओ।''

पाँच-छः मुलाक़ातों के बाद मुझे बाबू गोपीनाथ की सही शख़्सियत का इल्म हुआ; पूरी तरह तो ख़ैर इंसान किसी को भी नहीं जान सकता, लेकिन मुझे उसके बहुत से हालात मालूम हुए, जो बेहद दिलचस्प थे।

पहले तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि मेरा यह ख़याल कि वह परले दर्जे का चुगद है, ग़लत साबित हुआ—उसको इस अम्र का पूरा एहसास था कि सैंडो, ग़ुलाम अली और सरदार वग़ैरा जो उसके मुसाहिब[19] बने हुए हैं, मतलबी इंसान हैं; वह उनसे

झिडकियाँ-गालियाँ सब सुनता था, लेकिन गुस्से का इजहार नही करता था।

उसने मुझसे कहा "मटो साहब, मैंने आज तक किसी का मशवरा रद्द नही किया जब भी मुझे कोई राय देता है, मैं कहता हूँ, सुब्हानल्लाह वह मुझे बेवकूफ समझते हैं, लेकिन मैं उन्हे अक्लमद समझता हूँ इसलिए कि उनमे कम अज कम इतनी अक्ल तो है कि उन्होंने मुझमें एक ऐसी बेवकूफी शनाख्त कर ली, जिससे उनका उल्लू सीधा हो सकता है बात दरअसल यह है कि मैं शुरू ही से फकीरो और कजरो की सोहबत मे रहा हूँ मुझे उनसे कुछ मुहब्बत-सी हो गई है मैं उनके बगैर नही रह सकता मैंने सोच रखा है कि जब मेरी दौलत बिराकुल खत्म हो जाएगी तो मैं किसी तकिए मे जा बैठूँगा रडी का कोठा और पीर का मजार, बस यह दो जगहे हैं, जहाँ मेरे दिल को सुकून मिलता है रडी का कोठा तो छुट जाएगा, इसलिए कि जेब खाली होनेवाली है लेकिन हिंदुस्तान मे हजारो पीर हुए हैं, किसी एक के मजार पर चला जाऊँगा।"

मैंने उससे पूछा "रडियो के कोठे और तकिए आपको क्यो पसद हैं ?"

कुछ देर सोचकर उसन जवाब दिया "इसलिए कि इन दोन्गे जगहों पर फर्श से लेकर छत तक धोखा ही धोखा होता है जो आदमी खुद को धोखा देना चाहे, उसके लिए इनसे अच्छा मुकाम और क्या हो सकता है ?"

मैंने एक और सवाल किया "आपको तवाइफों का गाना सनने का शौक है ? क्या आप मौसीकी[20] की समझ रखते हैं ?"

उसने जवाब दिया "बिलकुल नही और यह अच्छा है, क्योंकि मैं कनसुरी से कनसुरी तवाइफ के हाँ जाकर भी अपना सिर हिला सकता हूँ मटो साहब, मुझे गाने से कोई दिलचस्पी नहीं, लेकिन मुझे जेब मे से दस या सौ रुपए का नोट निकालकर गानेवाली को दिखाने मे बहुत मजा आता है नोट निकाला और उसको दिखाया वह उसे लेने के लिए एक अदा से उठी पास आई तो नोट जुराब मे उडस लिया उसने झुककर नोट बाहर निकाला तो हम खुश हो गए ऐसी बहुत फिजूल-फिजूल-सी बाते हैं, जो हम ऐसे तमाशबीनों को पसद हैं वरना कौन नही जानता कि रडी के कोठे पर माँ-बाप अपनी औलाद से पेशा कराते हैं, और मकबरों और तकियो मे इसान अपने खुदा से "

बाबू गोपीनाथ का शज्रा-ए-नस्ब[21] तो मैं नही जानता, बस इतना मालूम हो सका कि वह एक बहुत बडे कजूस बनिए का बेटा था, बाप के मरने पर उसे दस लाख रुपए की जायदाद मिली, जो उसने अपनी ख्वाहिश के मुताबिक उडानी शुरू कर दी—बबई आते वक्त वह अपने साथ पचास हजार रुपए लाया था—उस जमाने में सब चीजे सस्ती थी, फिर भी हर रोज तकरीबन सौ सवा सौ खर्च हो जाते थे।

जीनू के लिए उसने फिएट मोटर खरीद ली, अब याद नही रहा, शायद तीन हजार रुपए में आई थी, ड्राइवर रखा तो लफगे टाइप का—बाबू गोपीनाथ को कुछ ऐसे ही आदमी पसद थे।

फिर हमारी मुलाकातों का सिलसिला बढ़ गया।

बाबू गोपीनाथ की ज़ात से मुझे सिर्फ दिलचस्पी थी, लेकिन उसे मुझसे कुछ अकीदत[22]

हो गई; यही वजह है कि दूसरों की बनिस्बत वह मेरा बहुत ज़्यादा एहतिराम करता था।

एक रोज़ शाम के क़रीब जब मैं उसके फ़्लैट पर गया तो मुझे वहाँ शफ़ीक़ को देखकर सख़्त हैरानी हुई—अगर मैं मुहम्मद शफ़ीक़ तूसी कहूँ तो शायद आप समझ ले कि मेरी मुराद किस आदमी से है।

यूँ तो शफ़ीक़ काफ़ी मशहूर आदमी है, कुछ अपनी जिद्दत तराज़[23] गाइकी के बायस और कुछ अपनी बुज्लासंज[24] तबीयत की बदौलत, लेकिन उसकी ज़िंदगी का एक हिस्सा अक्सरियत से पोशीदा है; बहुत कम आदमी जानते हैं कि तीन सगी बहनो को यके-बाद दीगरे, तीन-तीन चार-चार साल के वक्फे से, दाश्ता बनाने से पहले उसका ताल्लुक उनकी माँ से भी था, यह भी बहुत कम मशहूर है कि उसको अपनी पहली बीवी, जो थोडे ही अर्से मे मर गई थी, इसलिए पसद नही थी कि उसमें तवाइफो के गम्ज़े[25] और इश्वे[26] नहीं थे, यह तो खैर हर आदमी, जो शफ़ीक़ तूसी से थोडी-बहुत वाकिफियत भी रखता है, जानता है कि चालीस बरस की उम्र तक सैकडो तवाइफो ने उसे अपने यहाँ रखा, उसे अच्छे मे अच्छा कपडा पहनाया, उम्दा से उम्दा खाना खिलाया, नफ़ीस स नफीस मोटर रखकर दी, मगर उसने अपनी गिरह से किसी तवाइफ पर एक दमडी भी खर्च न की—औरतो के लिए, खास-तौर पर वह जो पेशेवर हो, उसकी बज्लासज तबीयत, जिसमे मीरासियो के मिजाह की झलक थी, बहुत ही जाजिबे-नजर[27] थी, वह कोशिश किए बगैर उनको अपनी तरफ खींच लेता था।

मैंने जब शफीक को हँस-हँसकर जीनत के साथ बाते करते देखा तो मुझे हैरत न हुई, मैंने सिर्फ यह सोचा कि वह दफअतन वहाँ पहुँचा कैसे, एक सैंडो उसे जानता था, मगर उनकी बोलचाल एक अर्से मे बद थी; बाद मे मुझे मालूम हो गया कि सैंडो ही उसे वहाँ लाया था, उन दोनो मे सुलह-सफाई हो चुकी थी।

बाबू गोपीनाथ एक तरफ बैठा हुक्का पी रहा था—मैंने शायद इससे पहले जिक्र नही किया कि वह सिगरेट बिलकुल नही पीता था।

मुहम्मद शफीक तूसी मीरासियो के लतीफे सुना रहा था, जिनमें जीनत किसी कदर कम और सरदार बहुत ज्यादा दिलचस्पी ले रही थी।

शफीक़ ने मुझे देखा और कहा "बिस्मिल्लाह, बिस्मिल्लाह क्या आपका गुजर भी इस वादी मे होता है ?"

सैंडो ने कहा "तशरीफ लाइए इज्राईल साहब यहाँ धडन तख्ता !"

मैं सैंडो के पास बैठ गया—थोडी देर गपबाजी होती रही।

मैंने नोट किया कि जीनत और मुहम्मद शफीक तूसी की निगाहे आपस मे टकराकर कुछ और भी कह रही हैं; जीनत उस फन मे बिलकुल कोरी थी, लेकिन शफीक की महारत जीनत की खामियो को छुपाती रही—सरदार दोनो की निगाहबाजी को कुछ इस अंदाज से देख रही थी, जैसे खलीफ़े अखाडे के बाहर बैठकर अपने पट्ठो के दाव-पेच देखते हैं।

इस दौरान में मैं भी जीनत से काफी बेतकल्लुफ हो गया था, वह मुझे भाई कहती थी, जिस पर मुझे एतराज नही था, अच्छी मिलनसार तबीयत की औरत थी, कम गो, सादा

लोह साफ-सुथरी—मुझे शफीक से उसकी निगाहबाजी पसद नही आई, अव्वल तो उस निगाहबाजी मे भौंडापन था, इसके अलावा, कुछ यूँ कहिए, इस बात का भी दखल था कि वह मुझे भाई कहती थी।

शफीक और सैंडो उठकर बाहर गए तो मैंने बडी बेरहमी के साथ जीनत से निगाहबाजी के मुताल्लिक इस्तिफसार किया। फौरन ही उसकी आँखो मे यह मोटे-मोटे आँसू आ गए और वह रोती रोती दूसरे कमरे मे चली गई।

बाबू गोपीनाथ जो एक कोने मे बैठा हुक्का पी रहा था, तेजी से जीनत के पीछे चला गया—सरदार ने आँखो ही आँखो मे बाबू गोपीनाथ से कुछ कहा था, जिसका मैं कुछ मतलब न समझ सका था।

थोडी देर के बाद बाबू गोपीनाथ दूसरे कमरे से बाहर निकला और 'आइए मटो साहब' कहकर मुझे अपने साथ अदर ले गया।

जीनत पलग पर बैठी हुई थी—मैं अदर दाखिल हुआ तो वह दोनो हाथो से मुँह ढाँपकर लेट गई।

मैं और बाबू गोपीनाथ हम दोनो पलग के पास कुर्सियो पर बैठ गए।

बाबू गोपीनाथ ने बडी सजीदगी के साथ कहना शुरू किया "मटो साहब, मुझे इस औरत से बहुत मुहब्बत है दो बरस से यह मेरे पास है मैं हजरते-गौसे-आजम जीलानी की कसम खाकर कहता हूँ कि इसने मुझे कभी शिकायत का मौका नही दिया इसकी दूसरी बहनें, मेरा मतलब है इस पेशे की दूसरी औरतें दोनो हाथो से मुझे लूटकर खाती रही, मगर इसने कभी एक जाइद पैसा मुझसे नही लिया मैं अगर किसी दूसरी औरत के यहाँ हफ्तो पडा रहा तो इस गरीब ने अपना कोई जेवर गिरवी रखकर गुजारा किया मैं जैसा कि आपसे एक दफा कह चुका हूँ, बहुत जल्द इस दुनिया से किनाराकश[28] होनेवाला हूँ मेरी दौलत अब कुछ दिन की मेहमान है मै नही चाहता इसकी जिदगी खराब हो मैंने लाहौर मे इसको बहुत समझाया कि तुम दूसरी तवाइफो की तरफ देखो जो कुछ वह करती हैं, सीखो मैं आज दौलतमद हूँ, कल मुझे भिखारी होना ही है तुम लोगो की जिदगी मे सिर्फ एक दौलतमद काफी नही मेरे बाद तुम किसी और को नही फाँसोगी तो काम नही चलेगा लेकिन मटो साहब, इसने मेरी एक न सुनी सारा सारा दिन शरीफजादियो की तरह घर मे बैठी रहती मैंने गफ्फार साईं से मश्वरा किया उसने कहा, बबई ले जाओ उसे मालूम था कि उसने ऐसा क्यों कहा है बबई मे उसकी जाननेवाली दो तवाइफे ऐक्ट्रेसे बनी हुई हैं लेकिन मैंने सोचा, बबई ठीक है दो महीने हो गए हैं इसे यहाँ लाए हुए सरदार को लाहौर से बुलाया है कि इसको सब गुर सिखा दे गफ्फार साईं से भी यह बहुत कुछ सीख सकती है यहाँ मुझे कोई नही जानता यह कहती थी कि बाबू, तुम्हारी बेइज्जती होगी मैं कहता था, तू मेरी फिक्र न कर बबई बहुत बडा शहर है, लाखो रईस हैं मैं कहता हूँ, मैंने तुम्हें मोटर ले दी है, कोई अच्छा आदमी तलाश कर ले मटो साहब, मैं खुदा की कसम खाकर कहता हूँ, मेरी दिली ख्वाहिश है कि यह अपने पैरो पर खडी हो जाए, अच्छी तरह होशियार हो जाए, मैं आज ही इसके नाम बैंक मे दस

हज़ार रुपए जमा कराने को तैयार हूँ, मगर मुझे मालूम है, दस दिन के अंदर-अंदर यह बाहर बैठी होगी और सरदार इसकी एक-एक पाई अपनी जेब में डाल चुकी होगी आप भी इसे समझाइए कि चालाक बनने की कोशिश करे जब से मोटर ख़रीदी है, सरदार इसे हर रोज शाम को अपोलो बंदर ले जाती है, लेकिन अभी तक कामयाबी नहीं हुई सैंडो आज बड़ी मुश्किलों से महम्मद शफ़ीक को यहाँ लाया है आपका क्या खयाल है उसके मुताल्लिक ?"

मैंने अपना खयाल जाहिर करना मुनासिब न समझा।

बाबू गोपीनाथ ने खुद ही कहा "अच्छा खाता-पीता आदमी मालूम होता है और खूबसूरत भी है क्यो जीनू जानी, पसद है तुम्हे ?"

जीनत खामोश रही।

बाबू गोपीनाथ से जब मुझे जीनत को बंबई लाने की ग़र्ज़ व गाइत मालूम हुई तो मेरा दिमाग चकरा गया; मुझे यकीन न आया कि ऐसा भी हो सकता है, लेकिन बाद में मुशाहदे[2] ने मेरी हैरत दूर कर दी।

बाबू गोपीनाथ की दिली आरज़ू थी कि ज़ीनत बबई में किसी अच्छे मालदार आदमी की दाश्ता बन जाए या ऐसे तरीके सीख जाए, जिससे वह मुख्तलिफ आदमियो से रुपए वसूल करते रहने मे कामयाब हो सके।

जीनत से अगर सिर्फ छुटकारा ही हासिल करना होता तो बाबू गोपीनाथ के लिए यह कोई इतना मुश्किल काम नही था, वह एक ही दिन मे यह काम कर सकता था—उसकी नीयत नेक थी, इसलिए उसने ज़ीनत के मुस्तकबिल[30] के लिए हर मुमकिन कोशिश की; उसको ऐक्ट्रेस बनाने के लिए उसने जाली डायरेक्टरो की दावते की, घर में टेलीफोन लगवाया, लेकिन ऊँट किसी करवट न बैठा।

महम्मद शफीक तूसी तकरीबन डेढ महीने तक आता रहा, कई राते भी उसने जीनत के साथ बसर की, लेकिन वह ऐसा आदमी नही था, जो किसी औरत का सहारा बन सके।

बाबू गोपीनाथ ने एक रोज अफसोस और रंज के साथ कहा : "शफीक साहब तो बस खाली खूली जैटलमैन ही निकले ठस्सा देखिए बेचारी जीनत से चार चादरे, तकियो के छ गिलाफ और दो सौ रुपए नकद हथियाकर ले गए सुना है, आजकल एक लडकी अलमास से इश्क लडा रहे है !"

यह दुरुस्त था—अलमास सबसे छोटी और आखिरी लडकी थी नजीरजान पटियालेवाली की, इससे पहले अलमास की तीन बहने शफीक की दाश्ता रह चुकी थी दो सौ रुपए जो शफीक ने ज़ीनत से लिए थे, मुझे मालूम है, अलमास पर खर्च हुए थे, बाद मे अपनी बहनों के साथ लड-झगड़कर अलमास ने ज़हर खा लिया था।

महम्मद शफीक तूसी ने जब आना-जाना बंद कर दिया तो ज़ीनत ने कई बार मुझे टेलीफोन किया और कहा : "शफीक को ढूँढ़कर मेरे पास लाइए !"

मैंने शफीक को तलाश किया। किसी को इसका पता ही नही था कि वह कहाँ रहता है—एक रोज इत्तिफाक से रेडियो स्टेशन पर मुलाकात हो गई। वह सख्त परेशानी के आलम मे था।

जब मैंने उससे कहा कि ज़ीनत तुम्हें बुलाती है तो उसने जवाब दिया : "मुझे यह पैगाम और ज़रियों से भी मिल चुका है आजकल मुझे बिलकुल फ़ुर्सत नहीं ज़ीनत बहुत अच्छी औरत है, लेकिन अफसोस है कि वह बेहद शरीफ है मंटो, ऐसी औरतों से, जो बीवियों-जैसी लगें, मुझे कोई दिलचस्पी नहीं ।"

शफ़ीक से जब मायूसी हुई तो ज़ीनत ने सरदार के साथ फिर अपोलो बंदर जाना शुरू कर दिया—पंद्रह दिनों में बडी मुश्किलो से कई गैलन पैट्रोल फूँकने के बाद सरदार ने दो आदमी फाँसे और उनसे जीनत को चार सौ रुपए मिले ।

बाबू गोपीनाथ ने समझा कि हालात उम्मीद अफ्ज़ा[1] हैं, इसलिए कि उन दो आदमियो में से एक ने, जो रेशमी कपडों की मिल का मालिक था, जीनत से कहा था कि वह जीनत से शादी करेगा ।

एक महीना गुजर गया, लेकिन वह आदमी फिर ज़ीनत के पास न आया ।

एक रोज़ मैं जाने किस काम से हार्न बी रोड पर जा रहा था कि मुझे फ़ुटपाथ के पास जीनत की मोटर खडी नजर आई—पिछली निशस्त पर मुहम्मद यासीन बैठा था, नगीना होटल का मालिक ।

मैंने उससे पूछा : "यह मोटर तुमने कहाँ से ली ?"

यासीन मुसकराया "तुम जानते हो मोटरवाली को ?"

मैंने कहा : "जानता हूँ ।"

"तो बस समझ लो कि मेरे पास कैसे आई अच्छी लडकी है यार !" यासीन ने मुझे आँख मारी ।

मैं मुसकरा दिया ।

इसके चौथे रोज बाबू गोपीनाथ टैक्सी पर मेरे दफ्तर मे आया । उससे मुझे मालूम हुआ कि ज़ीनत से यासीन की मुलाकात कैसे हुई ।

एक शाम अपोलो बंदर से एक आदमी लेकर सरदार और जीनत नगीना होटल गई थी, वह आदमी तो किसी बात पर झगड़कर चला गया था, लेकिन होटल के मालिक से जीनत की दोस्ती हो गई थी ।

बाबू गोपीनाथ मुतमइन था कि दस-पंद्रह रोज की दोस्ती के दौरान मे यासीन ने जीनत को छः बहुत ही उम्दा और कीमती साडियाँ ले दी थी ।

बाबू गोपीनाथ अब यह सोच रहा था कि कुछ दिन और गुजर जाएं, जीनत और यासीन की दोस्ती और मजबूत हो जाए तो वह लाहौर वापस चला जाए—मगर ऐसा न हुआ।

उन्हीं दिनों नगीना होटल में एक क्रिश्चियन औरत ने एक कमरा किराए पर लिया और उसकी जवान लड़की मयोरियल से यासीन की आँख लड़ गई—अब ज़ीनत बेचारी होटल में बैठी रहती और यासीन सुबहो-शाम ज़ीनत की मोटर में उस लड़की को घुमाता रहता ।

बाबू गोपीनाथ को इस बात का इल्म होने पर बहुत दुख हुआ । उसने मुझसे कहा "मंटो साहब, यह कैसे लोग हैं भई दिल उचाट हो गया है तो साफ कह दो अपनी जीनत भी अजीब है उसे अच्छी तरह मालूम है कि क्या हो रहा है, मगर मुँह से इतना भी नही

कह सकती कि मियाँ, अगर तुमने उस क्रिस्तान छोकरी से इश्क लडाना है तो खुद मोटर का बदोबस्त करो, मेरी मोटर क्यों इस्तेमाल करने हो   मैं क्या करूँ मटो साहब, बडी शरीफ और नेकबख्त औरत है कुछ समझ मे नही आता थोडी-सी चालाक तो बनना चाहिए।"

यासीन से कत-तअल्लुक[32] होने पर जीनत ने कोई सद्मा महसूस न किया।

फिर बहुत दिनों तक कोई नई बात वकूपजीर न हुई।

एक दिन मैंने टेलीफोन किया तो मालूम हुआ कि बाबू गोपीनाथ लाहौर चला गया है, गुलाम अली और गफ्फार साईं के साथ, रुपयों का बदोबस्त करने कि पचास हजार रुपए खत्म हो चुके थे—जाते वक्त वह जीनत से कह गया था कि उसे लाहौर मे कुछ ज्यादा दिन लग जाएँगे क्योंकि उसे चद मकान फरोख्त करने पडेगे।

अब सरदार को मार्फिया के इजेक्शनों की जरूरत थी और सैंडो को पोलसन बटर की, तो दोनों ने मुत्तहिदा[33] कोशिश की, वह हर रोज दो-तीन आदमी फाँसकर ले आते, सौ-सवा सौ रुपए रोज के हो जाते, जिनमे से आधे जीनत को मिलते और आधे सैंडो और सरदार दबा लेते—जीनत से कहा गया था कि बाबू गोपीनाथ वापस नही आएगा, और अब उसे अपनी फिक्र खुद करनी चाहिए।

मैंने एक दिन जीनत से कहा "यह तुम क्या कर रही हो?"

उसने अल्हडपन से कहा "मुझे कुछ मालूम नही है भाईजान   यह लोग जो कहते हैं, मान लेती हूँ।"

मेरा जी चाह रहा था कि देर तक पास बैठकर उसे समझाऊँ कि जो कुछ वह कर रही है ठीक नही है   सैंडो और सरदार अपना उल्लू सीधा करने के लिए उसे बेच डालेगे, मगर मैंने कुछ न कहा।

जीनत उकता देनेवाली हद तक बेसमझ, बेउमग और बेजान औरत थी, उस कमबख्त को अपनी जिंदगी की कद्रो-कीमत ही मालूम नही थी, जिस्म बेचती, मगर उसमे बेचनेवालों का कोई अदाज तो होता, वल्लाह मुझे बहुत कोफ्त होती थी उसे देखकर, सिगरेट से, शराब से, खाने से, घर से, टेलीफोन से, हत्ता कि उस सोफे से भी, जिस पर वह अक्सर लेटी रहती थी, उसे कोई दिलचस्पी नही थी।

बाबू गोपीनाथ पूरे एक महीने के बाद लौटा। वह माहिम गया तो वहाँ फ्लैट मे कोई और ही था—उसकी गैर मौजूदगी में सैंडो और सरदार के मश्वरे से जीनत ने बाद्रा मे एक बँगले का बालाई हिस्सा किराए पर ले लिया था।

बाबू गोपीनाथ मेरे पास आया तो मैंने उसे जीनत का नया पता बता दिया; फिर उसने मुझसे जीनत के मुताल्लिक पूछा; जो कुछ भी मुझे मालूम था, मैंने उससे कह दिया, लेकिन यह न कहा कि सैंडो और सरदार उससे पेशा करा रहे हैं।

बाबू गोपीनाथ अब की बार दस हजार रुपए अपने साथ लाया था, जो उसने बडी मुश्किलों से हासिल किए थे। गुलाम अली और गफ्फार साईं को वह लाहौर ही में छोड आया था।

टैक्सी नीचे खड़ी थी—बाबू गोपीनाथ ने इसरार किया कि मैं भी उसके साथ चलूँ।

क़रीबन एक घंटे में हम बांद्रा पहुँच गए—टैक्सी पाली हिल पर चढ़ रही थी कि सामने की तंग सड़क पर सैंडो दिखाई दिया।

बाबू गोपीनाथ ने ज़ोर से पुकारा : "सैंडो!"

सैंडो ने जब बाबू गोपीनाथ को देखा तो उसके मुँह से सिर्फ़ इस क़दर निकला : "धड़न तख़्ता!"

बाबू गोपीनाथ ने उससे कहा कि वह आए और टैक्सी में बैठ जाए और साथ चले, लेकिन सैंडो ने कहा : "टैक्सी एक तरफ़ खड़ी करवाइए मुझे आपसे कुछ प्राइवेट बातें करनी हैं।"

टैक्सी एक तरफ खड़ी कर दी गई।

बाबू गोपीनाथ बाहर निकला तो सैंडो उसे कुछ दूर ले गया। देर तक उनमें बातें होती रहीं—जब बातें खत्म हुईं तो बाबू गोपीनाथ अकेला टैक्सी की तरफ आया और उसने ड्राइवर से कहा : "वापस ले चलो!"

बाबू गोपीनाथ ख़ुश था—जब हम दादर के पास पहुँचे तो उसनें कहा . "मंटो साहब, जीनू की शादी होनेवाली है!"

मैंने हैरत से पूछा : "किससे?"

बाबू गोपीनाथ ने जवाब दिया "हैदराबाद सिंध का एक दौलतमद ज़मीदार हैं ख़ुदा करे, दोनों ख़ुश रहें यह भी अच्छा हुआ कि मैं ऐन वक़्त पर आ पहुँचा जो रुपए मेरे पास हैं, उनसे ज़ीनू का जहेज़ बन जाएगा क्यों, क्या ख़याल है आपका?"

मेरे दिमाग में उस वक़्त कोई ख़याल नहीं था; मैं सोच रहा था कि यह हैदराबाद सिंध का दौलतमंद ज़मीदार कौन है; सैंडो और सरदार की कोई जालसाज़ी तो नही—लेकिन बाद मे इस बात की तस्दीक़ हो गई कि वह हक़ीकतन हैदराबाद सिंध का एक मुतमव्विल[34] जमींदार है, जो हैदराबाद सिंध ही के एक म्यूज़िक टीचर की मार्फ़त ज़ीनत से मुतआरिफ[35] हुआ था; यह म्यूजिक टीचर ज़ीनत को गाना सिखाने की बेसूद कोशिश किया करता था; एक रोज यह म्यूजिक टीचर अपने मुरब्बी ग़ुलाम हुसैन (हैदराबाद सिंध के रईस का नाम) को साथ लेकर आया तो जीनत ने खूब खातिर मदारात की और गुलाम हुसैन की फर्माइश पर उसने ग़ालिब की गज़ल 'नुक्ता ची है ग़मे दिल उसको सुनाए न बने' गाकर सुनाई, गुलाम हुसैन सौ जान से उस पर फरेफ़्ता हो गया; इस बात का जिक्र म्यूजिक टीचर ने ज़ीनत से किया; फिर सरदार और सैंडो ने मिलकर मुआमला पक्का कर दिया और शादी तय हो गई।

बाबू गोपीनाथ ख़ुश था—एक दफ़ा सैंडो के दोस्त की हैसियत से वह जीनत के यहाँ गया और ग़ुलाम हुसैन से उसकी मुलाक़ात हुई।

ग़ुलाम हुसैन से मिलकर बाबू गोपीनाथ की ख़ुशी दूनी हो गई। उसने मुझसे कहा : "मंटो साहब, ख़ूबसूरत और जवान और बड़ा लायक़ आदमी है मैंने लाहौर से यहाँ आते

हुए दातागंज बख़्श के हुज़ूर जाकर दुआ माँगी थी, जो कुबूल हुई   भगवान करे, दोनो खुश रहे   ।"

बाबू गोपीनाथ ने बडे ख़ुलूस और बड़ी तवज्जोह से जीनत की शादी का इंतजाम किया—दो हजार के जेवर और दो हज़ार के कपड़े बनवा दिए और पाँच हज़ार नकद दिए ।

मुहम्मद शफ़ीक तूसी, मुहम्मद यासीन प्रोप्राइटर नगीना होटल, म्यूज़िक टीचर, सरदार, मैं और बाबू गोपीनाथ शादी में शामिल हुए—सैंडो दुल्हन की तरफ से वकील था ।

ईजाबो-कुबूल[36] हुआ तो सैंडो ने आहिस्ता से कहा   "धडन तख़्ता !"

गुलाम हुसैन सरज का नीला सूट पहने हुए था—सबने उसको मुबारकबाद दी, जो उसने ख़दापेशानी से कुबूल की ।

गुलाम हुसैन काफी वजीह[37] आदमी था—बाबू गोपीनाथ उसके मुकाबले में छोटी-सी बटेर मालूम हो रहा था ।

शादी की दावतो मे ख़ुर्दो-नोश[38] का जो भी सामान होता है, बाबू गोपीनाथ ने मुहैया किया था ।

दावत से जब सब फारिग हुए तो बाबू गोपीनाथ ने सबके हाथ धुलवाए—मैं जब हाथ धोने के लिए आया तो उसने मुझसे बच्चों के से अदाज मे कहा   "मटो साहब, जरा अदर जाइए और देखिए, जीनू दुल्हन के लिबास में कैसी लगती है !"

मैं पर्दा हटाकर अदर दाखिल हुआ ।

जीनत सुर्ख़ जरबफत[39] का शलवार-कुर्ता पहने हुए थी, दुपट्टा भी उसी रग का था, जिस पर गोट लगी हुई थी, चेहरे पर हल्का-सा मेकअप था, हालाँकि मुझे होंठों पर लिपस्टिक की सुर्खी बहुत बुरी मालूम होती है, मगर जीनत के होंठ सजे हुए लग रहे थे ।

उसने शरमाकर मुझे आदाब किया तो बहुत प्यारी लगी—लेकिन जब मैंने दूसरे कोने में एक मसहरी देखी, जिस पर फूल ही फूल थे तो मुझे बेइख़्तियार हँसी आ गई ।

मैंने जीनत से कहा   "यह क्या मसख़रापन है ?"

जीनत ने मेरी तरफ बिलकुल मासूम कबूतरी की तरह देखा · "आप मजाक करते हैं भाईजान   ।" उसने कहा और उसकी आँखो में आँसू डबडबा आए ।

मुझे अभी अपनी गलती का एहसास भी न हुआ था कि बाबू गोपीनाथ ने, जो मेरे पीछे-पीछे ही अदर चला आया था, बडे प्यार के साथ अपने रूमाल से जीनत के आँसू पोंछे और बडे दुख मे मुझसे कहा   "मटो साहब, मैं समझता था कि आप बडे समझदार और लायक आदमी हैं   जीनू का मज़ाक उड़ाने से पहले आपने कुछ सोच लिया होता   !"

बाबू गोपीनाथ के लहजे मे वह अकीदत, जो उसे मुझसे थी, ज़ख़्मी नज़र आई—पेशतर इसके कि मैं उससे माफ़ी माँगता, उसने जीनत के सिर पर हाथ फेरा और बडे ख़ुलूस के साथ कहा : "ख़ुदा तुम्हें खुश रखे ।" यह कहकर उसने भीगी हुई आँखों से मेरी तरफ देखा—उसकी आँखों में मलामत[40] थी, बहुत ही दुख भरी मलामत—और चला गया ।

---

1 मपादित, 2. विशिष्ट, 3 आवाज मे, 4 कड़ियाँ, 5 आविष्कृत, 6 सूजन दूर करनेवाली एक एलोपैथिक दवाई, 7. दिलबहलाव का काम, 8 परिचित, 9 टपकना: 10 ममार का रब, 11 आदत के अनुमार; 12. भोला, जिससे माधु-मता पर विश्वाम हो, 13 नम्रता, 14. वेश्याओ की जाति, 15 शब्दो के पारिभाषिक अर्थ, 16 लगाव, 17 खुदा की इबादत में फेरी जानेवाली माला, 18 रोम-रोम मे, 19. खुशामदी, 20. मंगीत; 21 वशावली, 22 श्रद्धा, 23 नई चीजें निकालनेवाला, 24 चुटकलेबाज, 25 सुदर नारी के हाव-भाव, 26 नाजो-अंदाज, 27 नजर को अच्छा लगनेवाला, 28 छोड देना, 29 अनुभव, 30. भविष्य, 31 आशाप्रद, 32. मबध-विच्छेद, 33 इकट्ठे, 34 धनाढ्य, 35 परिचित, 36 निकाह के समय दूल्हा-दुल्हन का एक-दूसरे को स्वीकार करना, 37. रोबीला, 38. खाना-पीना; 39 जरी के काम का कीमती कपडा, 40 धिक्कार।

नुतफ़ा

''मालूम नही, बाबू गोपीनाथ की शख़्सियत दरहकीकत ऐसी ही थी, जैसी कि आपने अफसाने मे पेश की है, या वह महज आपके दिमाग की पैदावार है मै इतना जानता हूँ कि बाबू गोपीनाथ-जैसे अजीबो-गरीब आदमी आम मिलते हैं मैंने जब आपका अफसाना पढ़ा तो मेरा दिमाग फौरन ही अपने एक दोस्त की तरफ मुन्तकिल[1] हो गया, अपने दोस्त सादके की तरफ बाबू गोपीनाथ और सादिक मे बजाहिर कोई मुमासलत[2] नही है, लेकिन मैं महसूस करता हूँ कि दोनो का खमीर एक ही मिट्टी से उठा है आपके बाबू गोपीनाथ को दौलत विरासत मे मिली थी, मेरे सादिक को अपनी मेहनत व मशक्कत और जहानत के सिले[3] मे दोनो शाहखर्च थे आपका बाबू गोपीनाथ बजाहिर बुद्धू था; लेकिन दरअसल बहुत होशियार और बाखबर आदमी था मेरा सादिक़ अंदर-बाहर से बिलकुल एक जैसा था; वह बुद्धू था न चालाक; वह दरमियाने दर्जे की अक्लो-फहम का आदमी था; अपने काम मे आठों गाँठ होशियार. हिसाब का पक्का, लेनदेन के मामले मे बडा बाअसूल आपके बाबू गोपीनाथ को लुट जाने मे मजा आता था, मेरे सादिक को दूसरों को लूटने मे बाबू साहब को पीरों-फ़कीरों के तकियों और रंडियों के काठों से रगबत[4] थी, सादिक़ को इनसे कोई दिलचस्पी नही थी इन तमाम तफ़ावुतों[5] के बावुजूद मैं जब भी बाबू गोपीनाथ को सादिक के साथ खडा करता हूँ तो मुझे उन दोनों के ख़द्दोख़ाल[6] एक-जैसे नजर आते हैं, जैसे वे दोनो जुडवाँ हों मैं तजज़िया[7] करना नहीं चाहता, हो सकता है आप, जब सादिक का हाल मुझसे सुने तो उसको इंसानो की किसी और ही सफ[8] में खडा कर दें, जिसमें बाबू गोपीनाथ की मूँछ का एक बाल भी न आ सकता हो, लेकिन मैं यही समझूँगा कि आपके तजज़िए में गलती हुई है, और मैं आपसे दरख़्वास्त करूँगा कि आप मेरे सादिक को उसी सफ में शामिल कीजिए, जिसमें आपका बाबू गोपीनाथ मौजूद है मैं अफ़सानानिगार नहीं; मालूम नहीं, बाबू गोपीनाथ के हालात आपने मनो-अन[9] बयान किए हैं, या उनमें कुछ रद्दो-बदल[10] किया है, बहरहाल, जो कुछ आपने बयान किया है, बहुत ख़ूब है; अगर बाबू गोपीनाथ हक़ीक़त में आपके बयान के मुताबिक़ नहीं है तो लानत है उस पर; और अगर वह ऐसा ही है जैसा कि अफ़साने में कहा गया है तो उस पर ख़ुदा की रहमत हो यक़ीन मानिए, ऐसे लोग परस्तिश[11] के क़ाबिल होते हैं ...सादिक़ का शुमार भी ऐसे ही लोगों में होता है ...सादिक़ से मेरी पहली मुलाक़ात यहीं लाहौर में हुई थी; जंग का ज़माना

था; ठेकेदारियाँ बड़े जोरों पर थीं; सादिक़ की पाँचों उँगलियाँ घी में थीं और सिर मुहावरे के मुताबिक़ कड़ाहे में; उसका मेल-मिलाप और असरो-रसूख़ काफ़ी था और वह शाहख़र्च तो था ही; वह दस-बीस पुरतकल्लुफ़ दावतें करता और एक कॉन्ट्रैक्ट अपनी जेब में डाल लेता एक बात है; बेशक उसने बहुत कमाया; दोनों हाथों से गवर्नमेंट को लूटा, लेकिन उस लूट में से उसने उन लोगों को बराबर का हिस्सा दिया, जिनके ज़रिए से उसको उस लूट के मवाक़े बहम[12] पहुँचे थे इसी दौरान में उसका गुज़र उन वादियों में भी हुआ, जिन वादियों का बाबू गोपीनाथ एक बहुत बड़ा ज़ायर[13] था, लेकिन वह उनमें भटका नहीं, दूसरों के साथ महज रवादारी की ख़ातिर वह वहाँ जाता रहा और वापस अपने घर आकर अपने जूतो की गर्द झाड़कर बैठ जाता रहा; उसने बोतल से भी तआरुफ़[14] हासिल किया, मगर मुआनक़े[15] की नौबत न आने दी; बस एक-दो घूँट पी, सिर्फ़ दूसरों का साथ देने के लिए उन कोठों पर, जहाँ आपके बाबू गोपीनाथ के क़ौल के मुताबिक़ धोखा ही धोखा होता है, सादिक ने ख़ुद को धोखा देने की कभी कोशिश न की एक-दो बार उसे अपने साथियों की ख़ुशी के लिए रंडियों का मुँह चूमना पड़ा था और चंद एक वाहियात हरकतें भी करना पडी थीं, मगर वह इन बातों से कोई लुत्फ़ न हासिल कर सका था वह रंडी के मुताल्लिक़ कभी सोच ही नहीं सकता था; हाँ अगर मिलिट्री के नौजवानों के लिए रंडियाँ फ़राहम[16] करने का ठेका उसे मिल जाता तो वह यक़ीनन उनके मुताल्लिक बड़े ग़ौरो-फिक्र से सोचना शुरू कर देता; दरअसल वह कारोबारी आदमी था एकदम हालात ने कुछ ऐसा पलटा खाया कि सादिक़, वह सादिक़ ही न रहा; जंग ख़त्म हुई तो ठेके भी ख़त्म हो गए; फिर मुक़द्दमों का ऐसा ताँता बँधा कि वह कचहरियों के चक्कर मे फँस गया; उसने जो दौलत पैदा की थी, सब मुक़द्दमों की नज़र हो गई मोटर के बजाय अब सादिक़ ताँगे पर होता था, या साइकिल पर; पहले नए से नया सूट उसके बदन पर होता था, अब उसे कपडों से कोई दिलचस्पी ही नहीं रही थी; पहले उसके ख़ुशामदी दोस्त उसे नवाब साहब कहकर पुकारते थे, अब वह सिर्फ़ 'सादका ओय सादका' रह गया था; दोस्तों की इस तब्दीली-ए-तख़ातुब[17] को उसने क़तअन महसूस नहीं किया था; उसको अपने मुक़द्दमों की इतनी फ़िक्र थी कि वह ऐसी फ़ुरुआत[18] के बारे में सोच ही नही सकता था कचहरियों के उस चक्कर के ज़माने में उसने अपनी मर्ज़ी से बोतल की तरफ हाथ बढ़ाया और थोडे ही अर्से में बड़े धड़ल्ले का शराबी बन गया; उन्हीं दिनों उसकी मुलाकात सरहद के एक ख़ान से हो गई, जिसको वहाँ की हुकूमत ने सूबाबदर कर रखा था; उनकी यह मुलाक़ात रंडी के एक कोठे पर हुई थी; सादिक़ ज़िंदगी में पहली मर्तबा किसी इंसान के ख़ुलूस से मुतास्सिर हुआ वह ख़ान अपने इलाक़े का बहुत बड़ा रईस था; वह बिलकुल अनपढ़ था, मगर जाहिल नहीं था, उसका दिलो-दिमाग़ क़ौम की फ़लाहो-बहबूद[19] के लिए पूरी तरह रोशन था; वह एक बहुत बड़ा इन्क़िलाब चाहता था, ऐसा इन्क़िलाब, जो ज़ुल्मो-सितम को ख़सो-ख़ाशाक[20] की तरह बहाकर ले जाए; वह चाहता था कि सरमाए की लानत से दुनिया आज़ाद हो जाए; दुनिया आज़ाद न हो तो कम अज़ कम उसका सूबा आज़ाद हो जाए; इन ख़यालात की पादाश[21] में उसे अपने सूबे से बाहर निकाल दिया गया था मैं आपकी तरह

अफसानानिगार नहीं हूँ; मुझसे हाशियाआराई[22] नहीं होती बस इतना कहूँगा कि ख़ान का कैरक्टर भी कम दिलचस्प नहीं; किसी ज़माने में वह बड़ा पुरजोश सुर्ख़पोश था, सुर्ख़पोश तहरीक से वाबस्ता होकर उसने कई मर्तबा जेल देखी थी और अपनी जायदाद में से हज़ारो रुपए ख़र्च किए थे कुछ बरस बाद की बात है, जब बँटवारा हुआ तो वह मुस्लिमलीगी बन गया; क़ायदेआज़म मुहम्मद अली जिनाह से उसको वालिहाना[23] इश्क हो गया; मुस्लिम लीग की तनजीम[24] के लिए उसने क़ाबिले-क़द्र ख़िदमात सरअंजाम दीं, लेकिन फिर हालात कुछ ऐसे हो गए कि जो लोग तालीमयाफ्ता थे, ख़ान से आगे बढ़ गए और बडे-बडे मनसबों पर जा बैठे ख़ान झुँझला गया; अपनी झुँझलाहट मे उसने अपने गैजो-गजब[25] का बड़ा खाम मुजाहिरा[26] किया; नतीजा यह निकला कि उसे कान से पकडकर बाहर निकाल दिया गया लेकिन मैं तो बँटवारे म पहले की बात कर रहा था जिस जमाने मे सादिक की ख़ान से मुलाक़ात हुई, उन दिनो ख़ान की हालत बिलकुल बच्चो की-सी थी; उन बच्चों की-सी, जिनको मामूली-सी शरारत पर सख़्तगीर[27] मास्टर ने बैंच पर खडा कर दिया हो, या क्लास के एक कोने मे मुर्गा बनकर कान पकडने का हुक्म दे दिया हो सादिक जब भी मुझसे ख़ान की बात करता तो यही कहता 'खान बड़ा बीबा आदमी है ' कुछ मैं भी उस ख़ान के मुताल्लिक़ जानता हूँ, यह वाक़िआ है कि सिर्फ 'बीबा' ही एक ऐसा लफ़्ज़ है, जो खान की शख़्सियत को पूरे तौर पर अपने अंदर समेट लेता है वह अपने सूबे से दूर था, बहुत दूर, मगर सरहद की याद उसे कभी नहीं सताती थी; उसके अपने गाँव में उसकी एक छोड दो बीवियाँ थीं, मगर उनके मुताल्लिक़ उसने कभी तरद्दुद[28] का इज़हार नहीं किया था; उसको कामिल[29] यक़ीन था कि ज़मींदारी से जो कुछ वुसूल होता होगा, उसकी बीवियों के इख़्राजात[30] के लिए काफ़ी से ज्यादा होगा; उसके गाँव से उसका मैनेजर खुद उसे भी सात-आठ सौ रुपए माहवार भेज दिया करता था, जो उसकी बॉक्स हाल[31] मोटर के पैट्रोल और उसकी शराब पर उठ जाते थे घर ख़ान का हीरामंडी के एक कोठे पर था सूबाबदर[32] होने के बाद उसने कुछ दिन हीरामंडी के मुख़्तलिफ कोठों पर झख मारी; आखिरकार एक कोठा मुंतख़िब[33] करके वहाँ मुस्तक़िल[34] तौर पर अपने डेरे जमा दिए डेढ़-दो महीने के बाद ख़ान को महसूस हुआ कि उसको उस कोठे की रंडी से इश्क हो गया है उसने सादिक़ को उस राज़ से बड़े बीबेपन के साथ आगाह किया 'सादिक, वह रंडी, जिसके कोठे पर तुमसे पहली मुलाक़ात हुई थी, हमारे दिल के अंदर घुस गई है उसको बदर करने की कोई तरकीब तुम्हारे दिमाग़ के अंदर आती हो तो हमको बताओ !' सादिक़ ने ख़ान को बहुत-सी तरकीबें बताईं, जिन पर ख़ान ने अमल भी किया, मगर वह अपने दिल के अंदर से उस रंडी को 'शहर-बदर' न कर सका एक बार फिर उसने उसी बीबेपन के साथ सादिक़ से कहा : 'सादिक़, वह रंडी हम पर सवार हो गई है, हम उसको अपनी बीवी बनाएगा ' सादिक़ ने ख़ान को बहुत समझाया-बुझाया, मगर ख़ान इश्क़ के हाथों मजबूर था उस रंडी को भी ख़ान पसंद आ गया था, आख़िर एक दिन दोनों मियाँ-बीवी बन गए रंडी के घरवालों को यह रिश्ता बिलकुल पसंद न आया; बड़ी गड़बड़ हुई, लेकिन फिर समझौता हो गया रंडी वही कोठे पर ही रही और ख़ान रंडी के शौहर की

हैसियत से वहीं उसके साथ रहने लगा सादिक़ ने एक दिन मुझसे कहा : 'ख़ान अजीबो-ग़रीब आदमी है एक ऊँचे घराने से ताल्लुक़ रखता है, अख़बारी और सियासी दुनिया में नाम रखता है, लेकिन उसे कभी ख़याल नहीं आता कि वह एक बदनाम महल्ले में रहता है एक रंडी, जिसके कभी हज़ारों गाहक थे, अब उसकी बीवी है मुझे बाज़ औक़ात हैरत होती है कि वह पठान है, लेकिन उसकी ग़ैरत कहाँ सो रही है सरहद में उसकी दो बीवियाँ हैं, औलाद मौजूद है, मगर वह किस इत्मीनान से हीरामंडी के एक कोठे पर एक चिचोडी हुई हड्डी चूसता रहता है उससे इस बारे में कुछ कहता हूँ तो उसके बेरिया[35] चेहरे पर एक बीबी-सी[36] मुसकराहट पैदा हो जाती है और वह मुझसे कहता है : 'सादिक़, वह हमारा बीवी लोग उधर राज़ी-ख़ुशी है, हमें कोई तरद्दुद नहीं; और यह रंडी बहुत अच्छा है; हमसे मुहब्बत करता है, जो औरत उधर सरहद में होता है ना, मुहब्बत करना नहीं जानता, नाज़-नख़रा नहीं जानता ' और मुझे यक़ीन आ जाता है, मुझे ख़ान की हर बात का यक़ीन आ जाता है ' यह वाक़ा है कि सादिक़, जिसको पहले किसी बात का यक़ीन नहीं आता था, अब उसे ख़ान के कहने पर चलना पड़ता था जब सादिक़ मुक़द्दमों से फ़ारिग़ हुआ तो ख़ान के कहने पर उसने मिलिट्री की छोड़ी हुई बैरकें ढाने और उनका मलबा उठवाने का ठेका ले लिया; उसे इस काम से नफ़रत थी, मगर वह ख़ान के मश्वरे को कैसे टाल सकता था; एक बरस तक वह कुम्हारों, गधों और मलबे के धूल-गुब्बार में फँसा रहा और उसने काफ़ी दौलत जमा की अब ख़ुशामदी दोस्त फिर उसके गिर्द जमा हो गए मेरा ख़याल था कि अब वह उन्हें मुँह नहीं लगाएगा, लेकिन उसने उन्हें धुत्कारने की कोई कोशिश न की; जंग के ज़माने में उन ख़ुशामदी दोस्तों की शमूलियत[37] सिर्फ़ दस्तरख़्वान पर होती थी, अब बोतल में भी वह शरीक होने लगे ख़ान ने सादिक़ को बताया था : 'शराब बहुत अच्छी चीज़ है, ख़ुसूसन उस आदमी के लिए जो सूबाबदर कर दिया गया हो; बोतल से मुँह लगाते ही एक नया सूबा उसके दिलो-दिमाग़ में आबाद हो जाता है; दिलो-दिमाग़ में आबाद इस सूबे में वह एक कोने से दूसरे कोने तक, जहाँ वह चाहे, स्टूल पर खड़ा होके बाग़ियाना से बाग़ियाना तक़रीर[38] कर सकता है; सरमाए की तमाम लानतों से अपने इस नए सूबे को पाक कर सकता है और फिर रंडी का कोठा; इससे बेहतरीन घर तो और कोई हो ही नहीं सकता बीवी घरेलू क़िस्म और सगी क़िस्म की हो तो आदमी उसे गाली नहीं दे सकता; बीवी अगर रंडी हो तो गंदी से गंदी गाली भी उसे दी जा सकती हैं, उसकी माँ के सामने, उसकी फूफी के सामने, उसकी चची के सामने; और अगर उसका कोई बाप है और वह मौजूद है तो उसके भी सामने ' ख़ान ने अपने मख़्सूस ख़ाम[39] और बीबे अंदाज़ में रोज़मर्रा ज़िंदगी में गाली की अहमियत यों बयान की थी : 'गाली बहुत ज़रूरी चीज़ है; आदमी इसे वक़्तन-फ़वक़्तन[40] अपने अंदर से बाहर न निकाले तो तअफ़्फ़ुन[41] पैदा हो जाता है, जो बिलआख़िर दिलो-दिमाग़ पर बहुत बुरा असर करता है ' ख़ान ने सादिक़ को रंडी के साथ शादी करने के फ़वायद[42] बताए थे : 'रंडी का कोठा और घरेलू घर, दोनों में ज़मीन-आसमान का फ़र्क़ है घरेलू घर में सौ बखेड़े होते हैं; इतना साज़ो-सामान और इतने रिश्ते होते हैं कि आदमी उनसे छुटकारा हासिल करना चाहे तो

पूरी जिंदगी इसी कोशिश में बसर हो जाए यहाँ रंडी के कोठे पर ऐसी कोई मुश्किल नहीं; अपना होलडाल और ट्रक उठाओ, अचकन कंधे पर डालो और किसी होटल में जाकर बड़े इत्मीनान से तलाक़ का कागज़ लिख दो एक बात और भी है; रंडी को समझने में अगर दिक़्क़त महसूस हो तो ऐसे कई आदमी मिल जाएँगे, जो उसे इस्तेमाल कर चुके होंगे; उनके तज्रिबों से फ़ायदा उठाया जा सकता है; फिर गाना-बजाना मुफ़्त; ऐयाशी की ऐयाशी, शादी की शादी जी उकता जाए तो छोड़ के चलते बनो; कोई एतिराज नहीं करेगा, कोई बुरा नही कहेगा बल्कि वह, जो शरीफ हैं, मरहबा[43] कहेंगे कि सुबह का भूला शाम को घर लौट आया; वह तो रंडी को लानती कहेंगे कि चिमट गई थी और खुदावंद करीम का शुक्र बजा लाएँगे कि उसने निजात दिलाई फिर रंडी की जिंदगी में भी कोई ज़लज़ला नहीं आता, उसके लगे-बँधे गाहक तो मौजूद ही होते हैं इधर तुम्हारी ठेकेदारी ख़त्म हुई, उधर उन्होंने इत्मीनान का साँस लिया कि चलो, रास्ता खुला ' बोतल से बड़ी ख़ुलूस के साथ मुँह लगाकर अब सादिक ने बाक़ायदगी से रंडियो के कोठे पर जाना शुरू कर दिया था, मगर उसने उनमें वह बात अभी तक नहीं देखी थी, जिसके मुताल्लिक़ वह अक्सर अपने पठान दोस्त खान से सुना करता था ख़ान को सादिक के दिल का हाल अच्छी तरह मालूम था; उसको पता चल गया था कि सादिक हीरामंडी से उकता गया है, अब उसका कारोबार अच्छा है, आमदन की माकूल सूरत पैदा हो गई है; अब वह अपना घर बसाना चाहता है, जिसमें एक अदद बीवी हो, दस अदद बच्चे हो, कलोट हों, पोतड़े हों, चूल्हा हो, चिमटा हो, तवा हो; वह फल खरीदे तो सीधा घर पहुँचे; शराब की बोतलों के बजाय दूध की बोतलें ख़रीदे; मिरासियों और भड़वों के बजाय शरीफ-शरीफ लोगों से मिले शुरू-शुरू में तो खान अपने मख़्सूस अंदाज में उसे ऐसे वाहियात इकदाम[44] से रोकने की नर्मो-नाज़ुक कोशिश करता रहा, लेकिन जब इसे मालूम हुआ कि सादिक़ ने अपने महल्ले में किसी से कोई मुनासिब व मौज़ूँ रिश्ता ढूँढने के लिए कहा है तो उसको बहुत कोफ़्त हुई : 'सादिक़, यह तुम क्या हिमाकत करनेवाला है; शादी-वादी हर्गिज़ मत करना यह दुनिया ऐसी है, जहाँ किसी वक्त भी तुमको सूबाबदर या शहरबदर किया जा सकता है मैं इतने बरस काँग्रेस में रहा हूँ; मैंने सुर्ख़पोश तहरीक[45] चलाने में इतना काम किया है कि तुमको मेरे काम का अंदाज़ा ही नहीं हो सकता; मैंने अपनी पोलिटिकल लाइफ़ मे सिर्फ इतना सीखा है कि जिंदगी मे तुम जिसको भी शरीक बनाओ, वह अटेचीकेस की तरह होनी चाहिए, जिसको तुम जब चाहो, हाथ में उठाकर चलते बनो और जब चाहो, जहाँ चाहो, छोड दो; वह ज्यादा कीमती नहीं होनी चाहिए; क़ीमती चीज़ों को छोड़ देने का बड़ा गम होता है सो ब्रादर, तुम शादी न करो; बाज़ आओ इस ख़याल से वह रंडी जिसके पास तुम जाते हो, क्या बुरी है उससे इश्क़ करना शुरू कर दो और यह कोई मुश्किल काम नहीं थोड़ी-सी प्रैक्टिस कर लो तो सब ठीक हो जाएगा ' सादिक़ ने घरेलू क़िस्म की औरत से शादी के हक़ में अपने लायक पेश किए, मगर ख़ान के सामने उन लायल की कोई पेश न चली : 'सादिक़, तुम उल्लू है, खुदा की कसम, उल्लू है तुम हमारी बात नहीं मानता, जिसके पास दो-दो बीवियाँ हैं, अपने कबीले की तुम हमारी बात मानो; हम तुम्हारा दोस्त है; पठान है; ख़ुदा

की क़सम खाकर कहता है कि हम झूठ नहीं बोलता यह दुनिया, जिसमें हम-जैसे मुफ़्लिस आदमी को सूबाबदर करनेवाले हाकिम मौजूद हैं, इस दुनिया में रंडी के कोठे ही को अपना घर बनाना चाहिए हमको तो इस घर में बहुत आराम है; तुम भी हीरामंडी में अपना घर बना लो और आराम से रहो ' सादिक़ अजीब मख़मसे[46] में गिरफ़्तार था मुझसे मिलता तो घंटों बातें करता रहता; वह हीरामंडी के सख़्त ख़िलाफ़ था, मगर चंद ही दिनों के बाद मैंने महसूस किया कि वह हीरामंडी का क़ायल होता जा रहा है; अब वह ख़ान की कही हुई बातें यूँ सुनाता था, जैसे उसके दिल को लग चुकी हों एक रोज़ सादिक़ ने मुझसे कहा : 'मैंने सारी उम्र ठेकेदारी की है और ठेकेदारी से बढ़कर बेईमानी का और कोई कारोबार नही हो सकता; इसका अव्वल खोट, इसका आख़िर खोट; ठेकेदारी ऐसा बाजार है, जिसमें कोई खरा सिक्का नही चल सकता सुना है, विलायत में ऐसी मशीनें बन गई हैं, जिनमें अगर खोटे सिक्के डाले जाएँ तो वह उन्हे बाहर निकाल देती हैं ठेकेदारी एक ऐसी मशीन है, जिसमें अगर खरे सिक्के डाले जाएँ तो वह उन्हें क़ुबूल नहीं करेगी, फ़ौरन बाहर निकाल देगी मुझे सारी उम्र यही कारोबार करना है कि मुझे सिर्फ़ यही कारोबार आता है तो क्यों न मैं हीरामंडी ही में अपना घर बनाऊँ हीरामंडी में भी बेईमानी का कारोबार होता है; वहाँ जो माल मिलता है, उसमें सिर्फ़ खोट ही खोट होता है मैं समझता हूँ, मेरी रूहानी तस्कीन के लिए हीरामंडी की फ़ज़ा अच्छी रहेगी' एक रोज सादिक़ ने मुझे बताया . 'आजकल ख़ान बहुत ख़ुश है उसकी दोनों बीवियाँ वहाँ सरहद में उसके घर में ख़ुश हैं; उसकी औलाद भी ख़ुश है; उन सबकी ख़ैरियत उसको अपने मैनेजर के जरिए मालूम होती है और यहाँ हीरामंडी में उसकी रंडी ख़ुश है; रंडी की माँ भी ख़ुश है; फूफी भी ख़ुश है; मिरासी भी ख़ुश हैं; और सबसे बड़ी बात तो यह है कि वह ख़ुद ख़ुश है कभी-कभी वह उन हाकिमों के ख़िलाफ एक बयान अख़बारो में शाए[47] करवा देता है, जिन्होंने उसको सूबाबदर किया था और फिर वही बयान अपनी रंडी को सुना देता है; वह ख़ुश हो जाती है उस रात गाने-बजाने की महफ़िल गरम होती है; ख़ान मस्नद पर गाव-तकिए का सहारा लेकर यूँ बैठता है जैसे वह एक तमाशबीन हो; उस्ताद जी और मिरासियों से इस तरह बातें करता है, जैसे उसने नई-नई तमाशबीनी शुरू की हो उसकी रंडी मुजरा करती है; वह जेब में हाथ डालकर दस रुपए का नोट निकालता है और अपनी रंडी को देता है; फिर पाँच का, फिर दो का, फिर एक का फिर वह महफ़िल बरख़ास्त कर देता है और अपनी रंडी के साथ सो जाता है और गुनाह आलूद रात बसर करता है मैं समझता हूँ, ऐसी रात बड़े मजे की होती होगी ' जब एक रंडी के साथ सादिक की शादी का सवाल पैदा हुआ, यानी जब ख़ान ने सब मामला ठीक-ठाक कर लिया और सिर्फ ईजाबो-क़ुबूल की रस्म बाक़ी रह गई तो सादिक़ पीछे हट गया ख़ान आग-बगूला हो गया, मेरे सामने उसने सादिक़ को बहुत लअन-तअन[48] की : 'तुम्हारी समझ पर पत्थर पड़ गए हैं सादिक़ तुम उल्ले के पट्ठे हो शरीफ़ औरत से शादी करके, ख़ुदा की क़सम, तुम पछताओगे परवरदिगार की क़सम, यह दुनिया ऐसी नहीं है, जिसमें शरीफ़ औरत से शादी की जाए इस दुनिया में रंडी ही अच्छी है शरीफ़ मत बनो; याद रखो, अगर तुम शरीफ़ बन

गए, तो सूबाबदर कर दिए जाओगे; हीरामंडी में रहो; यही एक ऐसा सूबा है, जहाँ से तुम बदर नहीं किए जा सकते, इसलिए कि इस सूबे के साथ कोई हाकिम अपना रिश्ता कायम नही करता तुम गधे हो अपना घर यही बसाओ इससे बेहतर जगह तुम्हें कही और नही मिल सकती ' सादिक़ ने अपने महल्ले मे एक जगह बात पक्की कर ली थी, जब खान ने उसको समझाया-बुझाया तो उसने अपना इरादा तर्क कर दिया, लेकिन वह रंडी के साथ शादी करने पर आमादा न हुआ; उसने मुझसे कहा · 'मैंने अब शादी का खयाल ही छोड दिया है मैं खान का कहना जरूर मान लेता, मगर मेरा दिल नहीं मानता मैं अब ऐश किया करूँगा; एक रडी के पास नहीं, कई-कई रडियों के पास जाया करूँगा ' और सादिक ने मुतादि्दद रडियो के यहाँ जाना शुरू कर दिया अब कई ठेके उसे मिल गए थे और उसके पास दौलत की फरावानी[49] थी हीरामडी से जब वह अपनी मोटर मे गुजरता तो चारो तरफ, हर कोठे पर, रगीन मुसकराहटे तितलियों की तरह उड़ने लगतीं अब वह फिर नवाब साहब था, हीरामंडी का नवाब साहब पूरे तीन बरस तक वह खुल-खेलता रहा, मेरा ख़याल है, उसका खुल-खेलना गालिबन खान की उस कोशिश का रद्दे-अमल था, जो खान ने सादिक को अपने क़ालिब[50] में ढालने के लिए की थी खान चाहता था कि वह अपने तज्रुबात का निचोड सादिक के हलक में टपकाकर सादिक को अपने-जैसा बना ले, मगर इसका नतीजा यह निकला कि सादिक इधर का रहा, न उधर का; वह पूरा ओबाश[51] बन गया, शुरू-शुरू में जिस रास्ते से उसको नफरत थी, वह उसी रास्ते का अनथक मुसाफिर बन गया मैंने सादिक को बारहा[52] समझाया · 'देखो सादिक, बाज आ जाओ; अपनी जवानी, अपनी सेहत और अपनी दौलत यूँ बरबाद न करो ' लेकिन वह न माना; वह मेरी बातें सुनता और मुसकरा देता 'मेरी दुनिया, खोट की दुनिया है मेरी इस खोट की दुनिया में एक बटा सौ हिस्सा सीमेंट होता है, बाकी सब रेत, और रेत भी ऐसी, जिसमे आधी मिट्टी होती है मेरी ठेकेदारी में जो इमारत बनती है, उसकी उम्र अगर कागज़ पर पचास साल होती है तो जमीन पर और ज़िंदगी में उसकी उम्र दस साल से कम होती है···तो मैं अपने लिए पुख़्ता घर कैसे तामीर कर सकता हूँ मेरा खयाल है, मेरे लिए रंडियाँ ही ठीक हैं शायद मैंने समाज के इस मलबे का भी ठेका ले रखा है यही देखो, मैं रोज़ एक न एक बोरी ढोकर ठिकाने लगा देता हूँ ' सादिक़ अपनी दानिस्त[53] में बोरियाँ ढो-ढोकर ठिकाने लगाता रहा मैंने सादिक से मिलना-जुलना बंद कर दिया, वह बहुत बदनाम हो चुका था, उसे मालूम था कि मैं उस से नाराज़ हूँ, लेकिन उसने मुझे मनाने की कोशिश न की डेढ़ बरस के बाद एक दिन अचानक वह मेरे पास आया; मुझे महसूस हुआ कि वह कोई बहुत ही जरूरी बात कहना चाहता है, मगर वह कुछ कह नहीं पा रहा था; मैंने उससे पूछा : 'कुछ कहने आए हो ?' उसने जवाब दिया : 'हाँ मैं शादी कर रहा हूँ !' मैंने उससे पूछा : 'किससे ?' उसने जवाब दिया . 'एक रंडी से ।' मुझे बहुत ग़ुस्सा आया : 'बको नहीं !' उसने बड़ी संजीदगी से कहा : 'मैं मजबूर हो गया हूँ !' मैं चिढ़ गया : 'मजबूरी कैसी ?' सादिक़ ने सिर झुकाकर कहा : 'उसके मेरा नुतफ़ा[54] ठहर गया है ' मैं ख़ामोश हो गया; अब उससे क्या कहता; कुछ समझ में नहीं आ रहा था; उसने अपना झुका

हुआ सिर उठाया और कहना शुरू किया : 'मैं मजबूर हो गया हूँ शादी के सिवा अब और कोई चारा नहीं ! ' सादिक़ ने उस रंडी से शादी कर ली, मगर उसने उस रंडी के कोठे को अपना घर न बनाया बल्कि रंडी को अपने घर ले आया उन लोगों ने, वह रंडी जिनकी रोजी का ठीकरा थी, बहुत दगा-फ़साद किया, मगर सादिक़ ने कोई परवा न की; उसने हज़ारों रुपए पानी की तरह बहा दिए और आख़िर मामला सुलझाने में कामयाब हो गया उस रंडी के बत्न से एक लड़की पैदा हुई; लडकी की पैदाइश के छः महीने बाद उसके दिल में जाने क्या आई कि उसने रंडी को तलाक़ दे दी और कहा : 'तुम्हारा असल मुक़ाम यह घर नहीं, हीरामंडी है जाओ, इस लड़की को भी साथ ले जाओ इस लड़की को शरीफ बनाकर मैं तुम लोगो के कारोबार के साथ जुल्म नहीं करना चाहता मैं ख़ुद कारोबारी आदमी हूँ और कारोबार के नुक़ते अच्छी तरह समझता हूँ जाओ ख़ुदा मेरे इस नुतफे के भाग अच्छे करे लेकिन देखो, इस लडकी को नसीहत देती रहना किसी से शादी करने की गलती कभी न करे शादी गलत चीज है !'' मुझे मालूम नहीं मटो साहब, जो कुछ मैंने बयान किया है, वह सादिक के मुताल्लिक़ ज्यादा है, या खान के मुताल्लिक बहरहाल, मुझे तो यह दोनों उसी सफ़ के आदमी मालूम होते हैं, जिस सफ में आपका बाबू गोपीनाथ मौजूद है इस दुनिया में, जहाँ सूबाबदर और शहरबदर किया जा सकता हो, ऐसे आदमी जरूर मौजूद होने चाहिए, जिनको समाज कभी-कभी अपने और अपने बनाए हुए कवानीन[55] के मुँह पर तमाचे के तौर पर मार सके ।''

---

1 स्थानातरण, 2 समानता; ३. बदले , 4 लगाव, 5 असमानताओं, 6 चेहरा-मोहरा, 7. विश्लेषण, 8. पंक्ति; 9 बिल्कुल वैसा ही, 10 परिवर्तन, 11 पूजा, 12. अवसर मिले; 13 पूजास्थलों का दर्शनार्थी, 14. परिचय; 15 गले मिलने, 16 एकत्रित; 17 सबोधन में परिवर्तन; 18. अच्छी बाते; 19. भलाई, 20. घास-फूस, 21 दडस्वरूप, 22 बात को बढ़ा-चढ़ाकर बताना, 23 अत्यधिक; 24 संस्था; 25 गुस्सा, 26 अनुभवहीन प्रदर्शन, 27 रियायत न करनेवाला; 28. [illegible]ता; 29. पूर्ण, 30 खर्चे, 31 कार का नाम; 32. राज्य से निष्कासित, 33. चयन, 34 स्थायी; 35. सहज-स्वाभाविक; 36 क्षीण-सी; 37 सम्मिलित होना, 38. भाषण; 39 विशिष्ट अनुभवहीन, 40. समय-समय पर; 41. दुर्गंध, 42. लाभ, 43. शाबाश, 44 पग उठाना, 45. आंदोलन, 46. दुविधा; 47 प्रकाशित, 48. भला-बुरा कहना, 49. बढ़ोतरी, ज्यादा, 50. साँचा; 51. आवारा; 52. अनेक बार, 53. जानकारी; 54. गर्व 55 नियम ।

नया क़ानून से फुँदने तक

Life is just one damn thing after another
Elbert Hubbard

नया कानून
शगल
बाँझ
टेढ़ी लकीर
नारा

तरक्कीपसंद

खालिद मियाँ

बासित
पैरन

बादशाहत का खात्मा

साहिबे-करामात

मम्मद भाई

मंजूर
फरिश्ता
फँदने

'नया क़ानून' से 'फुँदने' तक

क्या 'नया क़ानून' से 'फुँदने' तक का मटो उस मंटो का विस्तार है जिससे हमारा परिचय 'पाताल' की कहानियों से हुआ था?

इस प्रश्न का उत्तर आसान नहीं। हो सकता है, वास्तविकता इसके ठीक विपरीत हो।

एक कठिनाई और है। कलाकार मंटो ने इतने रास्ते खोज निकाले हैं कि ये कहना कठिन है कि कौन-सा मंटो किस मटो का विस्तार है।

सिग्मंड फ़ायड के बारे में यह गलतफ़हमी आम है कि उसके तमाम वैज्ञानिक आविष्कारों का केंद्र, उनकी धुरी, यौन है।

कहानी-प्रेमियों का बहुमत भी इस धोखे में फँसा हुआ है कि मटो ने केवल यौन-अनुभवो पर व्यवस्थित कहानियाँ लिखी हैं।

दोनों के बारे में क़िस्सा कुछ और है।

फ़ायड की चितन-प्रणाली में यौन-समस्याएँ उस प्रणाली के बस एक छोटे-से दायरे की हैसियत रखती हैं।

मंटो के इंसानी सरोकार और अनुभव केवल उच्छृंखल मर्दों और गिरी हुई औरतों की नीच भावनाओं तक सीमित नहीं हैं।

एक बार खुली अदालत में अपना बयाने-सफ़ाई देते हुए मटो ने कहा था कि "ऐमी शायरी जो आप अपना मक़सद हो", जिसका क्षेत्र केवल एक सतही ढंग के सुखवाद तक सीमित हो, जो हमें किसी व्यापकतर मानवीय अनुभूति और अनुभव की राह न दिखाए, "ऐसी शायरी दिमाग़ी जलक (मानसिक मैथुन) है।" मंटो का विचार था कि ऐसी रचना लिखनेवाले और पढ़नेवाले, दोनों के लिए हानिकर होती है।

मंटो के एक आलोचक का यह विचार कि यौन पर लिखनेवाले तमाम साहित्यकारों में मंटो की रचनाएँ सबसे अधिक साफ़-सुथरी हैं, शायद अतिशयोक्ति-मात्र नहीं है। एक तो यह कि मंटो के यहाँ वह ढँका-छिपा सुखवाद नहीं जो यौन-वर्णन करनेवाले अधिकांश लेखकों की रचनाओं में किसी-न-किसी चोर-दरवाज़े से घुस आता है। दूसरे यह कि मंटो ने यौन-अनुभवों के अलावा भी बहुत-से मानवीय अनुभवों के ताने-बाने से अपनी कहानियाँ बुनी हैं। 'नया क़ानून' से 'फुँदने' तक में मंटो की सृजनशील कल्पना के इसी आयाम से

हमारा परिचय होता है।

फ़्रायड के मनोविश्लेषण से मंटो किस हद तक परिचित था, यह प्रश्न गौण है। अलबत्ता मंटो के विभिन्न चरणों से संबंध रखनेवाली बहुत-सी कहानियों का अध्ययन हमें बताता है कि मंटो मनोवैज्ञानिक वास्तविकताओं के वर्णन की मर्यादाओं से अच्छी तरह परिचित था, और यह जानता था कि सच्चाई केवल सतह पर तैरती हुई वास्तविकताओ की खोज तक सीमित नहीं होती।

इसमें शक नहीं कि मंटो ने केंद्र से विस्थापित चरित्रों की कहानियाँ लिखी हैं, और स्वयं मंटो के अपने व्यक्तित्व में एक तरह का सनकीपन मौजूद था। मोपासाँ की तरह मंटो को भी इस बात में मज़ा आता था कि इंसान की वहशियाना भावनाएँ इस तरह नंगी की जाएँ कि पढ़नेवाला चौंक उठे। मगर इसका कारण मंटो के सनकीपन से आगे, इस वास्तविकता में छिपा हुआ है कि मंटो में सामान्य साहित्यकारो की झिझक और कायरता का लेशमात्र भी नहीं था। वह आँखें झपकाए बिना, ऐसी बातें भी बिना तकल्लुफ़ कह डालता था जिन्हें कहने का हौसला हमारे अधिकांश साहित्यकार नहीं रखते। उसके व्यक्तित्व का यह पहलू अपने-आपमें एक सकारात्मक मूल्य का सूचक है—इससे अलग, हमें यह बात भी नहीं भूलनी चाहिए कि उसने बहुत-से रचनात्मक और सकारात्मक चरित्र भी गढ़े हैं।

और ये शब्द स्वयं मंटो के हैं :

> *"अदब बीमारी नहीं, बल्कि बीमारी का रद्दे-अमल है—अदब दर्जा-ए-हरारत है अपने मुल्क का, अपनी कौम का—अदब अपने मुल्क, अपनी कौम, उसकी सेहत और अलालत की खबर देता रहता है।"*

'फुँदने' में मंटो ने आंतरिक परिदृश्य-चित्रण और कहानी की संरचना की एक नई सतह खोजी है, उस समय तक उर्दू गल्प की परंपरा का परिचय इस सतह से होना अभी शेष था। यह कहना ग़लत नहीं होगा कि 'नया क़ानून' से 'फुँदने' तक यथार्थ-चित्रण की जो लहर गतिमान दिखाई देती है, उसका संबंध एक तरफ़ तो सामाजिक सच्चाई से है, और दूसरी तरफ़ एक शुद्ध निजी प्रकार की आंतरिक सच्चाई से। मंटो ने इन दोनों के संयोग से कहानी की आंतरिक संरचना और अपने चरित्रों के मनोविज्ञान को यथार्थवाद का एक नया मर्म प्रदान किया है।

नया क़ानून

मगू कोचवान अपने अड्डे में बहुत अक्लमद आदमी समझा जाता था; गो उसकी तालीमी हैसियत सिफर के बराबर थी और उसने स्कूल का मुँह भी नहीं देखा था, लेकिन इसके बावजूद उसे दुनिया भर की चीजों का इल्म था। अड्डे के वह तमाम कोचवान, जिनको यह जानने की ख्वाहिश होती थी कि दुनिया के अदर क्या हो रहा है, उस्ताद मगू की वसी[1] मालूमात से अच्छी तरह वाकिफ थे।

पिछले दिनों जब उस्ताद मंगू ने अपनी एक सवारी से स्पेन मे जग छिड जाने की अफ़वाह सुनी थी तो उसने गामा चौधरी के चौडे काँधे पर थपकी देकर मुदब्बिराना[2] अदाज में पेशगोई[3] की थी · "देख लेना गामा चौधरी, थोडे ही दिनों में स्पेन के अदर जग छिड जाएगी···" और जब गामा चौधरी ने उससे यह पूछा था कि स्पेन कहाँ वाके है तो उस्ताद मंगू ने बड़ी मतानत[4] से जवाब दिया था : "विलायत मे, और कहाँ।"

स्पेन में जंग छिड़ गई और जब हर शख्स को पता चल गया तो स्टेशन के अड्डे में जितने कोचवान हलका बनाए हुक्का पी रहे थे, दिल ही दिल में उस्ताद मगू की बड़ाई का ऐतिराफ़[5] कर रहे थे—उस्ताद मगू उस वक्त माल रोड की चमकीली सतह पर ताँगा चलाते हुए अपनी सवारी से ताज़ा हिंदू-मुस्लिम फ़साद पर तबादला-ए-ख़याल कर रहा था।

उस रोज शाम के करीब जब वह अड्डे में आया तो उसका चेहरा गैर मामूली तौर पर तमतमाया हुआ था—हुक्क़े का दौर चलते-चलते जब हिंदू-मुस्लिम फसाद की बात छिडी तो उस्ताद मंगू ने सिर पर से ख़ाकी पगडी उतारी और बग़ल में दाबकर बडे मुफक्किराना[6] लहजे में कहा : "यह किसी दरवेश की बददुआ का नतीजा है कि आए दिन हिंदुओं और मुसलमानों में चाकू-छुरियाँ चलती रहती हैं मैंने अपने बडों से सुना है कि अकबर बादशाह ने किसी दरवेश का दिल दुखाया था और उस दरवेश ने जलकर ये बददुआ दी थी कि जा, तेरे हिंदुस्तान में हमेशा फ़साद ही होते रहेंगे देख लो, जब से अकबर बादशाह का राज खत्म हुआ है, हिंदुस्तान में फ़साद पर फसाद होते रहे हैं " यह कहकर उसने ठंडी साँस भरी और हुक्क़े का दम लगाकर फिर अपनी बात शुरू की : "यह काँग्रेसी हिंदुस्तान को आजाद कराना चाहते हैं मैं कहता हूँ, अगर यह लोग हजार साल भी सिर पटकते रहे तो भी कुछ न होगा बड़ी से बडी बात यह होगी कि अंग्रेज चला जाएगा और कोई इटलीवाला आ जाएगा, या वह रूसवाला, जिसकी बाबत मैंने सुना है कि बहुत तगडा

आदमी है और हाँ, मै यह कहना भूल ही गया कि दरवेश ने यह बददुआ भी दी थी कि हिंदुस्तान पर हमेशा बाहर के आदमी राज करते रहेंगे "

उस्ताद मगू को अंग्रेजो से बड़ी नफरत थी और इस नफ़रत का सबब वह यह बताया करता था कि वह हिंदुस्तान पर अपना सिक्का चलाते हैं और तरह-तरह के जुल्म ढाते हैं, मगर उसके तनफ्फुर[7] की सबसे बडी वजह यह थी कि छावनी के गोरे उसे बहुत सताया करते थे; वह उसके साथ ऐसा सुलूक करते थे, गोया वह एक ज़लील कुत्ता है—इसके अलावा उसे उनका रग भी बिलकुल पसंद न था; जब कभी वह किसी गोरे के सुर्ख व सफेद चेहरे को देखता तो उसे मतली आ जाती, न मालूम क्यो, वह कहा करता था कि उनके लाल झुर्रियों भरे चेहरे देखकर उसे वह लाश याद आ जाती है, जिसके जिस्म पर से ऊपर की झिल्ली गल-गलकर झड रही हो।

जब किसी शराबी गोरे से उसका झगडा हो जाता तो सारा दिन उसकी तबीयत मुकद्दर[8] रहती और वह शाम को अड्डे मे आकर हल मार्का सिगरेट पीते हुए या हुक्के के कश लगाते हुए उस गोरे को जी भरकर कोसा करता—यह मोटी गाली देने के बाद अपने सिर को ढीली पगड़ी समेत झटका देकर वह कहा करता : "आग लेने आए थे, अब घर के मालिक ही बन गए हैं नाक मे दम कर रखा है इन बदरों की औलाद ने यूँ रोब गाँठते हैं, गोया हम इनके बाबा के नौकर हैं " इस पर भी उसका गुस्सा ठडा न होता; जब तक उसका कोई साथी उसके पास बैठा रहता, वह अपने सीने की आग उगलता रहता : "शक्ल देखते हो तुम उनकी जैसे कोढ हो रहा हो, बिलकुल मुर्दार एक धप्पे की मार और गिटपिट-गिटपिट यूँ बक रहा था, जैसे मार ही डालेगा तेरी जान की क़सम, पहले-पहल तो जी मे आई कि मल्ऊन[9] की खोपडी के पुर्जे उडा दूँ, लेकिन इस ख़याल से टल गया कि मुर्दार को मारना अपनी हतक है ' वह थोडी देर के लिए ख़ामोश हो जाता और नाक को अपनी ख़ाकी कमीस की आस्तीन से साफ करने के बाद फिर अपने दिल की भडास निकालने लगता . "कसम है भगवान की, इन लाट साहबो के नाज उठाते-उठाते तग आ गया हूँ जब कभी इनका मनहूस चेहरा देखता हूँ तो रगो मे ख़ून खौलने लगता है कोई नया कानून-वानून बने तो इन लोगो से नजात मिले तेरी कसम, जान मे जान आए "

और जब एक रोज उस्ताद मगू ने कचहरी से अपने ताँगे पर दो सवारियाँ लादी और उनकी गुफ्तगू से उसे पता चला कि हिंदुस्तान में जदीद आईन[10] का निफाज़[11] होनेवाला है तो उसकी ख़ुशी की कोई इंतिहा न रही।

दो मारवाडी, जो कचहरी मे अपने दीवानी मुक़द्दमे के सिलसिले में आए थे, घर जाते हुए जदीद आईन यानी गवर्नमेट आफ़ इंडिया एक्ट के मुताल्लिक आपस में बातचीत कर रहे थे।

"सुना है, पहली अप्रैल से नया कानून चलेगा क्या हर चीज बदल जाएगी ?"

"हर चीज तो नहीं बदलेगी, मगर कहत हैं कि बहुत कुछ बदल जाएगा काफी आज़ादी मिल जाएगी।"

"क्या ब्याज के मुताल्लिक़ भी कोई नया क़ानून पास होगा ?"

"यह पूछने की बात है कल किसी वकील से दरयाफ़्त करेंगे।"

उन मारवाड़ियों की बातचीत उस्ताद मंगू के दिल में नाक़ाबिले-बयान ख़ुशी पैदा कर रही थी—वह अपने घोडे को हमेशा गालियाँ दिया करता था और चाबुक से बुरी तरह पीटा करता था, मगर उस रोज, उसने बार-बार पीछे मुड़कर मारवाडियों की तरफ देखा और अपनी बढ़ी हुई मूँछों के बाल एक उँगली से बड़ी सफ़ाई के साथ ऊँचे करके घोड़े की पीठ पर बागें ढीली करते हुए बडे प्यार से कहा : "चल बेटा, जरा हवा से बाते करके दिखा।"

मारवाडियों को उनके ठिकाने पर पहुँचाकर उसने अनारकली मे दीनू हलवाई की दूकान पर आध सेर दही की लस्सी पीकर एक बडी डकार ली और मूँछों को मुँह में दबाकर, उनको चूसते हुए ऐसे ही बुलंद आवाज़ में कहा : "हत् तेरी ऐसी-तैसी "

शाम को जब वह अड्डे को लौटा तो खिलाफ़े-मामूल[12] उसे वहाँ अपनी जान-पहचान का कोई आदमी न मिल सका—उसके सीने में एक अजीबो-ग़रीब तूफान बरपा हो गया; वह एक बड़ी ख़बर दोस्तों को सुनानेवाला था, बहुत बड़ी खबर, और उस खबर को वह अपने अंदर से बाहर निकालने के लिए सख़्त मजबूर हो रहा था, लेकिन अड्डे में कोई था ही नहीं।

आध घंटे तक वह चाबुक बगल में दबाए स्टेशन के अड्डे की आहनी छत के नीचे बेक़रारी की हालत में टहलता रहा; उसके दिमाग में बड़े अच्छे-अच्छे ख़यालात आ रहे थे; नए क़ानून के निफ़ाज़ की ख़बर ने उसको एक नई दुनिया में लाकर खड़ा कर दिया था; वह उस नए क़ानून के मुताल्लिक, जो पहली अप्रैल को हिंदुस्तान में नाफिज़[13] होनेवाला था, अपने दिमाग़ की तमाम बत्तियाँ रोशन करके ग़ौरो-फिक्र कर रहा था; उसके कानों में मारवाड़ियों का अंदेशा 'क्या ब्याज के मुताल्लिक़ भी कोई नया कानून पास होगा?' बार-बार गूँज रहा था और उसके तमाम जिस्म में मसर्रत[14] की एक लहर दौडा रहा था—कई बार अपनी घनी मूँछों के अंदर हँसकर उसने उन मारवाड़ियो को गाली दी " गरीबों की खटिया मे घुसे हुए खटमल नया कानून इनके लिए खौलता हुआ पानी होगा "

वह बेहद मसरूर[15] था; खासकर उस वक़्त उसके दिल को बहुत ठडक पहुँचती, जब वह ख़याल करता कि गोरों सफ़ेद चूहों (वह उनको इसी नाम से याद किया करता था) की थूथनियाँ नए क़ानून के आते ही बिलों में हमेशा के लिए ग़ायब हो जाएँगी।

जब नत्थू गंजा पगड़ी बग़ल में दबाए अड्डे में दाख़िल हुआ तो उस्ताद मगू बढ़कर उससे मिला और उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बुलंद आवाज़ में कहने लगा : "ला हाथ इधर, ऐसी ख़बर सुनाऊँ कि जी ख़ुश हो जाए" तेरी इस गंजी खोपडी पर बाल उग आएँ " और यह कहकर उसने बड़े मज़े ले-लेकर नए क़ानून के मुताल्लिक़ नत्थू गंजे से बातें शुरू कर दीं—गुफ्तगू के दौरान में उसने कई मर्तबा नत्थू गंजे के हाथ पर ज़ोर से अपना हाथ मारकर कहा : "तू देखता रह, क्या बनता है यह रूसवाला बादशाह कुछ न कुछ ज़रूर करके रहेगा।"

उस्ताद मंगू मौजूदा सोवियत निज़ाम की इश्तिराकी[16] सरगर्मियों के मुताल्लिक़ बहुत

कुछ सुन चुका था और उसे वहाँ के नए कानून और दूसरी नई चीज़ें बहुत पसंद थीं; उसने नादानिस्ता[17] तौर पर रूसवाले बादशाह को इंडिया एक्ट यानी जदीद आईन के साथ मिला दिया और पहली अप्रैल को पुराने आईन में जो नई तब्दीलियाँ होनेवाली थीं, उनको वह रूसवाले बादशाह के अम्र का नतीजा समझ बैठा। कुछ अर्से से पेशावर और फ्रंटियर के दीगर शहरों में सुर्ख पोशों की तहरीक[18] चल रही थी; उसने उस तहरीक को भी अपने दिमाग़ में रूसवाले बादशाह और नए कानून के साथ ख़ल्त-मल्त कर दिया—इसके अलावा जब कभी वह किसी से सुनता कि फलाँ शहर में इतने बमसाज़ पकड़े गए हैं, या फ़लाँ जगह इतने आदमियों पर बग़ावत के इल्ज़ाम में मुक़दमा चलाया गया है तो उन तमाम वाकिआत को वह नए कानून का पेशख़ेमा[19] समझता और दिल ही दिल मे बहुत ख़ुश होता।

एक रोज उसके ताँगे मे दो बैरिस्टर बैठे नए आईन पर बड़े ज़ोर से तन्क़ीद[20] कर रहे थे और वह ख़ामोशी से उनकी बाते सुन रहा था।

एक बैरिस्टर दूसरे बैरिस्टर से कह रहा था : "जदीद आईन का दूसरा हिस्सा फ़ैडरेशन है, जो मेरी समझ मे अभी तक नहीं आया ऐसी फैडरेशन दुनिया की तारीख में आज तक न सुनी गई है, न देखी गई है सियासी नजरिए के ऐतबार से भी यह फैडरेशन बिलकुल गलत है, बल्कि यूँ कहना चाहिए कि यह कोई फैडरेशन है ही नहीं।"

इसके बाद उन बैरिस्टरों के दरमियान जो गुफ़्तगू हुई, उसमें बेशतर अल्फाज अंग्रेजी के थे, इसलिए उस्ताद मंगू कुछ ख़ास न समझ सका; उसने ख़याल किया कि वह लोग हिंदुस्तान में नए कानून की आमद को बुरा समझते हैं और नहीं चाहते कि उनका वतन आजाद हो; इसी खयाल के जेरे-असर उसने कई मर्तबा उन दोनों बैरिस्टरों को हिक़ारत की निगाहों से देखा और अपने दिल ही दिल में कहा : 'टोडी बच्चे !'

जब कभी वह किसी को दबी जबान में 'टोडी बच्चा' कहता तो यह महसूस करके दिल ही दिल मे बडा ख़ुश होता कि उसने उस नाम को सही आदमी पर इस्तेमाल किया है और कि वह 'टोडी बच्चे' और 'शरीफ आदमी' में तमीज करने की अहलियत रखता है—उसके नजदीक 'टोडी बच्चा' एक नाम था, जो किसी शरीफ आदमी का नही हो सकता था।

इस वाके के तीसरे रोज वह गवर्नमेंट कॉलेज के तीन तुलबा[21] को अपने ताँगे मे बिठाकर मजग जा रहा था कि उसने उन तीनों लड़कों को आपस मे यह बाते करते हुए सुना·

"नए आईन ने मेरी उम्मीदे बढा दी हैं अगर मीम साहब असेंबली के मेंबर हो गए तो मुझे किसी सरकारी दफ्तर मे मुलाजिमत जरूर मिल जाएगी।"

"वैसे भी बहुत-सी जगहे निकलेंगी शायद हमारे हाथ भी कुछ आ जाए।"

"हाँ-हाँ, क्यों नहीं।"

"वह ग्रेजुएट जो बेकार मारे-मारे फिर रहे हैं, उनमें कुछ तो कमी होगी।"

इस गुफ़्तगू ने उस्ताद मंगू के दिल में जदीद आईन की अहमियत और भी बढ़ा दी और वह उसको ऐसी चीज़ समझने लगा, जो बहुत चमकती हो : 'नया क़ानून ' वह दिन में

कई-कई बार सोचता : 'यानी कोई नई चीज़ !' और हर बार उसकी नज़रों के सामने अपने घोड़े का वह नया साज आ जाता, जो उसने, दो बरस हुए, चौधरी ख़ुदाबख़्श से बड़ी अच्छी तरह ठोंक-बजाकर ख़रीदा था; उस साज़ से, जब वह नया-नया था, जगह-जगह लोहे की निकिल चढ़ी हुई कीलें चमकती थीं और जहाँ-जहाँ पीतल का काम था, वह तो सोने की तरह दमकता था—उसके नजदीक इस लिहाज़ से भी नए क़ानून का दरख़्शाँ व ताबाँ[22] होना यक़ीनी था।

पहली अप्रैल तक उस्ताद मंगू ने अपने ताँगे में बैठे-बैठे जदीद आईन के हक़ में और खिलाफ बहुत कुछ सुना—जदीद आईन का जो तसव्वुर[23] उसके जेहन मे क़ायम हो चुका था, क़ायम रहा। वह समझता था कि पहली अप्रैल को नए कानून के आते ही सब मामला साफ हो जाएगा और उसको यक़ीन था कि नए कानून की आमद पर जो तब्दीलियाँ नजर आएँगी, उनसे उसकी आँखों को जरूर ठंडक पहुँचेगी।

आखिरकार मार्च के इकत्तीस दिन ख़त्म हो गए और अप्रैल के शुरू होने में रात के चंद घंटे बाकी रह गए।

मौसम खिलाफ़े-मामूल सर्द था और हवा मे ताजगी थी पहली अप्रैल को सुबह सवेरे उस्ताद मंगू उठा और अस्तबल में जाकर उसने ताँगे में घोड़े को जोता और बाहर निकल आया।

उसकी तबीयत गैरमामूली तौर पर मसरूर थी—वह नए क़ानून को देखनेवाला था।

उसने सुबह के सर्द धुँधलके मे कई तग और खुले बाजारों का चक्कर लगाया, मगर उसे हर चीज पुरानी नजर आई, आसमान की तरह पुरानी—उसकी निगाहें खास तौर पर नया रंग देखना चाहती थीं, मगर सिवाय उस कलग़ी के जो रग-बिरंग के परों से बनी थी और उसके घोड़े क सिर पर जमी हुई थी, और सब चीजे पुरानी नजर आ रही थीं, वह नई कलगी उसने नए कानून की ख़ुशी में इकत्तीस मार्च को चौधरी ख़ुदाबख़्श से साढ़े चौदह आने में ख़रीदी थी।

घोड़े के टापों की आवाज, काली सड़क, थोड़े-थोडे फ़ासलों पर खडे बिजली के खबे, दूकानों के बोर्ड, उसके घोड़े के गले में पडे हुए घुँघरुओं की झनझनाहट, बाजारो में चलते-फिरते लोग इनमें कौन-सी चीज नई थी; जाहिर है, कोई भी नहीं; लेकिन उस्ताद मंगू मायूस नहीं था : 'अभी बहुत सवेरा है दूकानें भी तो सबकी-सब बंद हैं ' बंद दूकानों से उसे तस्कीन मिली; सने सोचा : 'हाई कोर्ट में नौ बजे के बाद ही काम शुरू होता है, अब इससे पहले नए क़ानून का क्या नजर आएगा ?'

जब उसका ताँगा गवर्नमेंट कॉलेज के दरवाज़े के करीब पहुँचा तो कॉलेज के घड़ियाल ने बड़ी रुऊनत[24] से नौ बजाए जो तुलबा कॉलेज के बड़े दरवाजे से अंदर जा रहे थे, ख़ुशपोश थे, मगर उस्ताद मंगू को न जाने क्यों उनके कपड़े मैले-मैले-से नजर आए—इसकी वजह यह थी कि उसकी निगाहे किसी ख़ैराकुन[25] जलवे का नज़ारा करना चाहती थीं।

ताँगे को दाएँ हाथ मोड़कर वह थोड़ी देर के बाद फिर अनारकली में था—बाज़ार की

आधी दूकानें खुल चुकी थीं; लोगों की आमदो-रफ़्त भी बढ़ गई थी; हलवाइयों की दूकानों पर गाहकों की ख़ूब भीड़ थी; मनहारीवालों की नुमाइशी चीज़ें शीशे की अलमारियों मे लोगों को दावते-नज़ारा दे रही थीं; बिजली के तारों पर कई कबूतर एक-दूसरे को चोंचें मार रहे थे—उस्ताद मंगू के लिए इन तमाम चीज़ों में कोई दिलचस्पी न थी; वह नए कानून को देखना चाहता था, ठीक उसी तरह जिस तरह वह अपने घोड़े को देख रहा था।

जब उस्ताद मंगू के घर में बच्चा पैदा होनेवाला था तो उसने चार-पाँच महीने बड़ी बेक़रारी में गुज़ारे थे; उसको यक़ीन था कि बच्चा किसी न किसी दिन ज़रूर पैदा होगा, मगर वह इंतज़ार की घड़ियाँ काट न पा रहा था; वह चाहता था कि अपने बच्चे को सिर्फ़ एक नज़र देख ले, इसके बाद वह पैदा होता रहे; इसी ग़ैर मग़्लूब[26] ख़्वाहिश के ज़ेरे-असर उसने कई बार अपनी निढाल बीवी के पेट को दबा-दबाकर और उसके ऊपर कान रख-रखकर अपने बच्चे के मुताल्लिक़ कुछ जानना चाहा था, मगर नाकाम रहा था। एक मर्तबा वह इंतज़ार करते-करते इस क़दर तंग आ गया था कि अपनी बीवी पर बरस भी पड़ा था : "तू हर वक़्त मुर्दे की तरह पड़ी रहती है उठ ज़रा चल-फिर कि तेरे अंग में थोडी-सी ताक़त तो आए यूँ तख़्ता बने रहने से कुछ न हो सकेगा तू समझती है कि इस तरह लेटे-लेटे तू बच्चा जन देगी?"

उस्ताद मंगू तब्अन बहुत जल्दबाज़ वाक़े हुआ था; वह हर सबब की अमली तश्कील[27] देखने का न सिर्फ़ ख़्वाहिशमंद था, बल्कि मुतजस्सिस[28] था।

उसकी बीवी गंगादेई उसकी इस क़िस्म की बेक़रारियों को देखकर आम तौर पर कहा करती थी : "अभी कुआँ खुदा नहीं है और तुम प्यास से बेहाल हो रहे हो।"

उस्ताद मंगू नए क़ानून के इंतज़ार में इतना बेक़रार नहीं था, जितना कि उसे अपनी तबीयत के लिहाज़ से होना चाहिए था; वह नए क़ानून को देखने के लिए घर से निकला था, ठीक उसी तरह जिस तरह वह महात्मा गाँधी या जवाहरलाल नेहरू के जुलूस का नज़ारा करने के लिए निकला करता था।

लीडरों की अज़मत[29] का अदाज़ा उस्ताद मंगू हमेशा उनके जुलूसों के हंगामों और उनके गले में डाले गए फूलों के हारों से किया करता था; अगर कोई लीडर गेंदे के फूलों से लदा हो तो उसके नज़दीक वह बड़ा आदमी था; और अगर किसी लीडर के जुलूस या जलसे में भीड़ के बायस दो-तीन आदमी कुचले जाएँ तो उसकी निगाहों में वह लीडर और भी बडा था नए क़ानून को वह अपने जेहन के इसी तराज़ू में तौलना चाहता था।

अनारकली से निकलकर वह माल रोड की चमकीली सतह पर अपने ताँगे को आहिस्ता-आहिस्ता चला रहा था कि मोटरों की दूकान के पास उसे छावनी की एक सवारी मिल गई।

किराया तय करने के बाद उसने घोड़े को चाबुक दिखाया और दिल में ख़याल किया 'चलो यह भी अच्छा हुआ शायद छावनी ही से नए क़ानून का कुछ पता चल जाए।'

छावनी पहुँचकर उसने सवारी को उसकी मंज़िले-मकसूद पर उतार दिया और जेब से सिगरेट निकालकर, बाएँ हाथ की आख़िरी दो उँगलियों में दबाकर सुलगाया और पिछली

निशस्त[30] के गद्दे पर बैठ गया—जब उसको किसी सवारी की तलाश नहीं होती थी, या उसे किसी बीते हुए वाक़े पर ग़ौर करना होता था तो वह आमतौर पर अगली निशस्त छोड़कर पिछली निशस्त पर बड़े इत्मीनान से बैठकर अपने घोड़े की बागें दाएँ हाथ के गिर्द लपेट लिया करता था; ऐसे मौक़ों पर उसका घोड़ा थोड़ा-सा हिनहिनाने के बाद बडी धीमी चाल चलना शुरू कर देता था, गोया उसे कुछ देर के लिए भाग-दौड से छुट्टी मिल गई है।

घोडे की चाल और उस्ताद मंगू के दिमाग़ में ख़यालात की आमद बहुत सुस्त थी; जिस तरह घोडा आहिस्ता-आहिस्ता क़दम उठा रहा था, उसी तरह उस्ताद मंगू के जेहन में नए कानून के मुताल्लिक़ नए क़यासात[31] दाख़िल हो रहे थे, वह नए कानून की मौजूदगी में म्युनिसिपल कमेटी से ताँगों के नंबर मिलने के तरीक़े पर गौर कर रहा था और इस क़ाबिले-ग़ौर बात को आईने जदीद की रोशनी में देखने की सई कर रहा था। वह इसी सोच-विचार में ग़र्क़ था कि उसने महसूस किया, किसी सवारी ने उसे बुलाया है; पीछे पलटकर देखने से उसे सड़क के उस तरफ़ दूर बिजली के खंबे के पास एक गोरा खड़ा नजर आया, जो हाथ के इशारे से उसे बुला रहा था।

जैसा कि बयान किया जा चुका है, उस्ताद मंगू को गोरों से बेहद नफ़रत थी—जब उसने अपनी नई सवारी को गोरे की शक्ल में देखा तो उसके दिल में नफ़रत के जज़्बात बेदार हो गए। पहले तो उसके जी में आई कि बिलकुल तवज्जोह न दे और गोरे को वहीं छोड़कर आगे बढ़ जाए, मगर बाद में उसको ख़याल आया : 'इनके पैसे छोडना बेवकूफी है कलग़ी पर जो साढे चौदह आने ख़र्च हुए हैं, इनकी जेब ही से वसूल करने चाहिए चलो चलते हैं '

ख़ाली सड़क पर बड़ी सफ़ाई से ताँगा मोडकर उसने घोडे को चाबुक दिखाया—आँख झपकने में वह बिजली के खंबे के पास था।

घोडे की बागें खींचकर उसने ताँगा ठहराया और पिछली निशस्त पर बैठे-बैठे गोरे से पूछा : "साहब बहादुर, कहाँ जाना माँगटा है ?" उसके सवाल मे बला का तंज़िया[32] अंदाज था; 'साहब बहादुर' कहते वक्त उसका ऊपर का मूँछों भरा होंठ नीचे की तरफ खिच गया और पास ही गाल के उस तरफ़ जो मद्धम-सी लकीर नाक के नथने से ठोड़ी के बालाई हिस्से तक चली आ रही थी, एक लरज़िश के साथ गहरी हो गई, गोया किसी ने नुकीले चाक़ू से शीशम की साँवली लकडी में धारी डाल दी हो, उसका सारा चेहरा हँस रहा था—उसने अपने अंदर ही अंदर उस गोरे को अपने सीने की आग में जलाकर भस्म कर डाला था।

जब गोरे ने, जो बिजली के खंबे की ओट में हवा का रुख बचाकर सिगरेट सुलगा रहा था, मुड़कर ताँगे के पायदान की तरफ़ क़दम बढ़ाया तो अचानक उस्ताद मंगू की और गोरे की निगाहें चार हुई, जैसे बयक्वक़्त आमने-सामने की बंदूक़ों से गोलियाँ ख़ारिज हो गई हों और आपस में टकराकर एक आतशीं बगूला बनकर ऊपर को उड़ गई हों।

उस्ताद मंगू, जो अपने दाएँ हाथ से बाग के बल को खोलकर ताँगे पर से नीचे उतरनेवाला था, अपने सामने खड़े गोरे को यूँ देख रहा था, गोया वह उसके वुजूद के जर्रे-जर्रे को अपनी निगाहों से चबा रहा हो—और गोरा कुछ इस तरह अपनी नीली पतलून पर से ग़ैर मरई[33]

चीज़ें झाड़ रहा था, गोया वह उस्ताद मंगू के उस हमले से अपने वुजूद के कुछ हिस्से महफ़ूज़ रखने की कोशिश कर रहा हो।

गोरे ने सिगरेट का धुआँ छोड़ते हुए कहा : "जाना माँगटा या फिर गड़बड़ करने का ?"

"वही है" यह दो लफ़्ज़ उस्ताद मंगू के ज़ेहन में पैदा हुए और उसकी चौड़ी छाती के अंदर नाचने लगे : "वही है" उसने फिर वह दो लफ़्ज़ अपने मुँह के अंदर ही अंदर दोहराए और उसे पूरा यकीन हो गया कि वह गोरा, जो उसके सामने खड़ा था, वही है, जिससे पिछले बरस उसकी झड़प हुई थी, और उस ख़्वाहमख़्वाह के झगड़े में, जिसका बायस गोरे के दिमाग़ में चढ़ी हुई शराब थी, उसे तौअनोकर्हन[34] बहुत-सी बातें सहना पडी थी—उसने गोरे का दिमाग़ दुरुस्त कर दिया होता, बल्कि उसके पुर्जे उडा दिए होते, मगर वह इस ममलहत[35] की बिना पर ख़ामोश हो गया था कि इस किस्म के झगड़ों में पुलिस और अदालत का नज़ला आमतौर पर कोचवानों पर ही गिरा करता है।

उस्ताद मंगू ने पिछले बरस की लड़ाई और पहली अप्रैल के नए क़ानून पर ग़ौर करते हुए गोरे से कहा : "कहाँ जाना माँगटा है ?" उसके लहजे में चाबुक ऐसे तेज़ी थी।

गोरे ने जवाब दिया : "हीरामंडी।"

"किराया पाँच रुपए होगा।" उस्ताद मंगू की मूँछें थरथराईं।

गोरा हैरान हो गया; वह चिल्लाया : "पाँच रुपए ? क्या तुम"

"हाँ-हाँ, पाँच रुपए" उस्ताद मंगू का दाहिना बालों भरा हाथ भिचकर एक वज़नी घूँसे की शक्ल इख़्तियार कर गया : "क्यों, चलते हो या बेकार बातें बनाओगे ?" उसका लहजा ज़्यादा सख़्त हो गया।

गोरे के जेहन में पिछले बरस का वाक़ा मौजूद था, मगर वह उस्ताद मंगू के सीने की चौडाई भूल चुका था। वह ख़याल कर रहा था कि उस्ताद मगू की खोपड़ी फिर खुजला रही है– उसने अपनी छडी बढ़ाई और उस्ताद मंगू को ताँगे पर से नीचे उतरने का इशारा किया।

बेद की पालिश की हुई पतली छड़ी उस्ताद मंगू की मोटी रान के साथ दो-तीन मर्तबा छुई—उसने बैठे-बैठे पस्त कद[36] गोरे को देखा, गोया वह अपनी निगाहों के वज़न ही से उसे पीस डालना चाहता हो।

दूसरे ही लम्हे उस्ताद मगू उछला, फिर उसका घूँसा कमान में से तीर की तरह से ऊपर को उठा और चश्मे-ज़दन[37] में गोरे की ठुड्डी के नीचे जम गया—गोरा लड़खड़ा गया और उस्ताद मगू ने उसे धड़ाधड़ पीटना शुरू कर दिया।

शशदरो-मृतहय्यिर[38] गोरे ने इधर-उधर सिमटकर उस्ताद मंगू की वजनी घूँसों से बचने की कोशिश की और जब देखा कि उस्ताद मंगू पर दीवानगी की-सी हालत तारी है और उसकी आँखों में से शरारे बरस रहे हैं तो उसने ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना शुरू कर दिया।

गोरे की चीख़ो-पुकार ने उस्ताद मगू की बाँहों का काम और भी तेज़ कर दिया—वह गोरे को जी-भर के पीट रहा था और साथ-साथ यह कहता जाता था : "पहली अप्रैल को भी वही अकड़-फूँ पहली अप्रैल को भी वही अकड़-फूँ अब हमारा राज है बच्चा !"

लोग जमा हो गए और पुलिस के दो सिपाहियों ने बड़ी मुश्किल से गोरे को उस्ताद मंगू की गिरफ़्त से छुड़ाया।

उस्ताद मंगू दो सिपाहियों के दरमियान खड़ा था; उसकी चौड़ी छाती फूली हुई साँस की वजह से ऊपर-नीचे हो रही थी, मुँह से झाग बह रहा था; वह अपनी फैली हुई आँखों से हैरतज़दा हुजूम की तरफ़ देखते हुए हाँफती हुई आवाज में कह रहा था : "वह दिन गुजर गए, जब खलील खाँ फाख्ता उडाया करते थे अब नया क़ानून है मियाँ नया कानून !"

और बेचारा गोरा अपने बिगडे हुए चेहरे के साथ बेवकूफों की मानिंद कभी उस्ताद मंगू की तरफ देख रहा था और कभी हुजूम की तरफ।

उस्ताद मंगू को पुलिस के सिपाही थाने मे ले गए।

रास्ते में और थाने के अंदर भी वह 'नया कानून, नया कानून' चिल्लाता रहा, मगर किसी ने एक न सुनी।

"नया क़ानून, नया कानून, क्या बक रहे हो कानून वही है पुराना !" और उसको हवालात मे बंद कर दिया गया।

विस्तृत, 2 . नेताओवाले, 3 भविष्यवाणी, 4 गंभीरता, 5 स्वीकारना, 6 विचारक-जैसे, 7 घृणा, 8 उदास, 9 तिरस्कृत (दुष्टात्मा) 10 नया कानून, 11 लागू होना, जारी होना, 12 आशा के विपरीत, 13 लागू, 14 खुशी, 15 प्रसन्न, 16 साम्यवादी, 17 बगैर समझे-बूझे, 18 आंदोलन, 19 किसी काम के लिए की जानेवाली कार्रवाही, 20 समालोचना, 21 सामर्थ्य, 22 रोशन, चमकना, 23 कल्पना, 24 घमंड, 25 आँखों को चौंधियानेवाला, 26 अपराजित (जो दबाई न जा सके) 27 आकार 28 जिज्ञासु, 29 सम्मान, 30 बैठने की सीट, 31 अनुमान, 32 व्यंग्यात्मक, 33 अदृश्य, 34 न चाहते हुए, बगैर इच्छा के, 35 भलाई, 36 छोटे कद का, 37 पलक झपकते ही, 38 स्तब्ध।

शग़ल
(मैकसिम गोर्की की याद में)

यह पिछले दिनों की बात है जब हम बरसात मे सडके साफ करके अपना पेट पाल रहे थे ।

हममें से कुछ किसान थे और कुछ मजदूरीपेशा—चूँकि पहाडी देहातो मे रुपए का मुँह देखना बहुत कम नसीब होता है, इसलिए हम सब खुशी-खुशी छ आने रोज पर सारा दिन पत्थर हटाते रहते थे जो बारिशो के जोर से साथवाली पहाडियो से लुढककर सडक पर आ गिरते थे । पत्थरों को सडक पर से हटाना तो खैर एक मामूली बात है, हम तो उस उजरत पर उन पहाडियो को ढाने पर भी तैयार थे जो हमारे गिर्दो-पेश सियाह और डरावने देवो की तरह अकडी खडी थीं—दरअसल हमारे बाजू सख्त से सख्त मशक्कत के आदी थे, इसलिए वह काम हमारे लिए बिलकुल मामूली था । अलबत्ता जब कभी हमे सडक को चौड़ा करने के लिए पत्थर काटना पडते तो रात को हमें बहुत थकान महसूस होती, पट्ठे अकड जाते और सुबह को बेदार होते वक्त ऐसा महसूस होता कि वह तमाम पत्थर, जो हम गुजिश्ता[1] रोज काटते और फोडते रहे हैं, हमारे जिस्मो पर बोझ डाले हुए हैं, मगर ऐसा कभी-कभी होता था ।

हमारा काम हर रोज सुबह सात बजे शुरू होता जब तुलू[2] होते हुए सूरज की तिलाई किरने चीड के दराज कद दरख्तों से छन-छनकर हमारे पासवाले नाले के खशमआलूद[3] पानी से अठखेलियाँ कर रही होतीं और आसपास की झाडियो में नन्हे-नन्हे परिंदे अपने गले फुला-फुलाकर चीख रहे होते—यूँ कहिए कि हम कुदरत को अपने ख्वाब से बेदार होता देखते सुबह की हल्की-फुल्की हवा मे शबनमआलूद सब्ज झाडियों की दिलनवाज सरसराहट, नाले में सगरेजों[4] से खेलते हुए कफआलूद पानी का शोर और बरसात के पानी में भीगी हुई मिट्टी की भीनी-भीनी खुशबू, चद ऐसी चीजे जो हमारे सगीन सीनो मे एक ऐसी लताफत पैदा कर देतीं जो जिदगी के उस दोजख में हमें बहिश्त के ख्वाब दिखाने लगती ।

हमें हर रोज़ बारह घंटे काम करना पडता, यानी सारा दिन हम सडक की मोरियो और पत्थरों को साफ करते रहते । हमारा काम दिलचस्प न था मगर हमने उसकी नाख़ुशगवार यक आहंगी[5] को दूर करने के लिए एक तरीका ईजाद कर लिया था जब हम सब उस पहाड़ी के नीचे जमाशुदा मलबे को अपने बेलचों से हटा रहे होते, जिसके सगरेजे हर वक्त

सडक पर गिरते रहते थे, तो हम एक सुर में कोई पहाड़ी गीत शुरू कर देते; मलबे के पत्थरों से टकराकर हमारे बेलचों की झनकार उस गीत की ताल को कमा देती; वह गीत उस अफ़सुर्दगी को दूर कर देता जो वह गैर दिलचस्प काम करने से हमारे दिलों में पैदा हो जाती; जब तक उस गीत के सुर हमारी चौडी छातियो में से निकलते रहते, हम महसूस तक न करते कि उस दौरान मे हमने मलबे के एक बहुत बडे ढेर को साफ कर लिया है।

मोटर लारियों की आमदो-रफ्त से भी हमारा दिल बहलाता रहता जो रंग-बिरंगे मुसाफ़िरों को कश्मीर से वापिस ला रही होतीं या कश्मीर की तरफ़ ले जा रही होतीं—जब कभी कोई लारी हमारे पास से गुज़रती तो हम कुछ अर्से के लिए अपनी झुकी हुई कमरें सीधी करके सड़क के एक तरफ़ खड़े हो जाते और ज़मीन पर अपने बेलचे टेककर उसको सामनेवाले मोड़ के अक़ब[6] में गुम होते देखते रहते; उन लारियों को इतनी दूर तक जाते हुए देखते रहने का मक़सद यह होता कि हम थोडा सुस्ता लें—बाज़ औकात उन लारियों की शानदार असबाब से लदी हुई छतें, और उनकी खिडकियों में से मुसाफिरों के लहराते हुए रेशमी कपड़ों की झलक हमारे दिलों में एक नाक़ाबिले-बयान तल्ख़ी पैदा कर देती और हम अपने आपको उन पत्थरो की तरह फिज़ूल और नाकारा तसव्वुर करने लगते जिनको हमारे बेलचों के धक्के इधर-उधर पटकते रहते; उन मुसाफ़िरों के तरह-तरह के लिबास देखकर, जिन पर यकीनन बहुत से रुपए सर्फ़ आए होंगे, हम ग़ैर इरादी तौर पर अपने कपड़ों की तरफ देखना शुरू कर देते।

हममे से अक्सर का लिबास पट्टू के तग पाजामे, गाढ़े की क़मीस और लुधियाने की सद्री पर मुश्तमिल[7] था। सबके पाजामे या तो घुटनों पर से घिस-घिसकर इतने बारीक हो गए थे कि उनमे से टाँगों के बालों की पूरी नुमाइश होती थी, या बिलकुल फटे हुए थे। कमीसों और सद्रियों की भी यही हालत थी, उन पर जगह-जगह मुख़्तलिफ़ रंगों के पैवद लगे हुए थे। करीब-क़रीब हम सबकी क़मीसों के बटन ग़ायब थे, इसलिए सीने आमतौर पर खुले रहते थे और काम में मसरूफ़ियत के वक़्त उन पर फैली हुई पसीने की बूँदें साफ नजर आती थीं।

बारह बजे के क़रीब हम काम छोड़कर खाने के लिए सड़क के नीचे उतरकर किसी पेड के साए तले बैठ जाते—खाना हम सुबह कपडे मे बाँधकर अपने साथ लाते। तीन ढोडे[8] और आमतौर पर सरसो का साग होता जिनको हम अपने भूखे पेट में डाल लेते। खाने के बाद हम पानी अमूमन नाले से पिया करते। जिस रोज़ बारिश की ज़्यादती के बायस नाले का पानी ज्यादा गदला हो जाता, उस रोज हम दूर सड़क के उस पार चले जाया करते जहाँ साफ़ पानी का एक चश्मा था।

खाने से फारिग होकर हम फौरन काम शुरू कर दिया करते, गो हमारा जी चाहता कि नरम-नरम घास पर लेटकर थोड़ी देर सुस्ता लें और फिर काम शुरू करें, मगर ऐसा क्योंकर हो सकता जबकि हमें हर वक़्त इस बात का ख़याल रहता कि पूरा काम किए बग़ैर उजरत न मिलेगी।

हमारा मत्महे-नज़र[9] काम करना और इस हीले से अपना पेट पालना था। हमें मालूम

था कि हममें से किसी ने अगर अपने काम मे जरा-सी सुस्त रफ़्तारी या बेदिली का इजहार किया तो ताश की गड्डी से नाकारा जोकर की तरह बाहर निकालकर फेंक दिया जाएगा, इसलिए हम दिल लगाकर काम किया करते कि हमारे अफ़सरो को शिकायत का मौक़ा न मिले। इसके यह मानी नहीं हैं कि हमारे अफसर हम पर बहुत खुश थे। ऐसा क्योंकर हो सकता कि वह बडे आदमी थे और उनका जाइज व नाजाइज़ तौर पर खफा होना भी दुरुस्त होता। कभी-कभी वे लोग ऐसे ही हमारे काम का मुआइना करते वक्त अपनी बेइत्मीनानी का इजहार करते हुए हम पर बरस पडते लेकिन हम, जो उनकी बडाई को बखूबी समझते थे, 'महाराज, महाराज' कहकर उनका गुस्सा सर्द कर दिया करते। हम जानते थे कि उनका गुस्सा बिलकुल बेजा है लेकिन हमारा एहसास हमारे दिलो मे नफरत के जज़्बात पैदा न करता, शायद इसलिए कि कोरनिशों ने हमको बिलकुल मुर्दा बना रखा था; या फिर इसकी वजह यह थी कि हरदम हमको यह खौफ दामनगीर रहता कि अगर हम काम से हटा दिए गए तो हमारी रोजी बद हो जाएगी।

हम अपने काम से मुतमइन थे। यही वजह है कि हम थोड़ी मजदूरी और ज्यादा काम के मसले पर बहुत कम गौर किया करते। इसकी जरूरत भी क्या थी कि यह काम पढे-लिखे आदमियो का होता है और हम बिलकुल अनपढ़ और जाहिल थे—दरअसल बात यह है कि हमारी दुनिया बिलकुल अलग-थलग थी जिसकी सरहदें पत्थर तोडने या उनको हटाने, बारह बजे रोटी खाने, फिर काम करने और इसके बाद अपने-अपने डेरो मे सो जाने तक ख़त्म हो जाती थी, हमें इन हुदूद के बाहर किसी शै से कोई सरोकार न था; दूसरे अल्फाज मे अपना और अपने मुताल्लिक़ीन[10] का पेट पालने के धधे मे हम कुछ ऐसी बुरी तरह फँसकर रह गए थे कि हम किसी और शै की ख़्वाहिश करना ही भूल गए थे।

हमारे काम पर सड़कों के महकमे की तरफ से एक निगराँ मुकर्रर था, जो दिन का बेश्तर हिस्सा सड़क के एक तरफ चारपाई बिछाकर बैठे रहने में गुजार देता—वह जात का पंडित था। ऊँचे तबके का इम्तियाजी[11] निशान सिंदूर के तिलक की सूरत में हर वक्त उसकी सफेद पेशानी पर चमकता रहता—हम अपने निगराँ को एहतिराम[12] और इज़्ज़त की निगाहों से देखते; अव्वल इसलिए कि वह ब्राह्मण था और दोयम इसलिए कि हम उसके मातहत थे; चुनाचे इधर-उधर के दूसरे कामो के अलावा हम बारी-बारी दिन मे कई बार उसके पीने के लिए हुक्का ताजा किया करते और आग बनाकर उसकी चिलमें भरा करते।

पंडित का काम सिर्फ इतना था कि सुबह चारपाई पर अपने गेरवे रंग की कलफ़ लगी पगडी और रेशमी कोट उतारकर अपने गजे सिर पर हाथ फेरते हुए हमारी हाजिरी लगाए और फिर एक बड़े से रजिस्टर मे कुछ दर्ज करने के बाद इधर-उधर टहलता रहे या हुक्का पीता रहे—वह अपने काम में बहुत कम दिलचस्पी लेता; अलबत्ता जब कभी मुआइने के लिए किसी अफसर की मोटर उधर से गुज़रना होती तो वह अपनी चारपाई उठवा देता और हमारे पास खड़ा हो जाया करता—उसकी इस चालाकी पर हम दिल ही दिल में हँसा करते।

एक रोज़ जबकि सुबह से हल्की-हल्की फुवार पड़ रही थी और हम बारह बजे खाना

खाने से फारिग़ होकर हस्बे-मामूल अपने काम मे मश्गूल थे कि एक मोटर के हॉर्न ने हमें चौंका दिया—लारियो की निसबत हम मोटरो के देखने के बहुत शायक[13] थे, इसलिए कि उनमे हमारी भूखी नज़रों के देखने के लिए अजीबो-गरीब चीजें नजर आतीं—हम कमरे सीधी करके खड़े हो गए।

इतने में मोड़ के अकब से सब्ज रग की एक छोटी-सी मोटर नमूदार हुई—जब वह हमारे क़रीब पहुँची तो हमने देखा कि उसकी बॉडी बारिश के नन्हे-नन्हे कतरों के नीचे चमक रही है। वह बहुत आहिस्ता-आहिस्ता चल रही थी, शायद इसलिए कि पिछली सीट पर जो दो साहब बैठे हुए थे, उनमे से एक अपनी रानो पर ग्रामोफोन रखे बजा रहे थे। जब वह मोटर हमारे क़रीब से गुजरी तो रिकार्ड की आवाज सडक की साथवाली पहाडी के पत्थरों से टकराकर फ़जा मे गूँजी। कोई गा रहा था

न मैं किसी का, न कोई मेरा
छाया चारों ओर अँधेरा
अब कुछ सूझत नाही मोहे, अब कुछ

आवाज में बेहद दर्द था। एक लम्हे के लिए ऐसा मालूम हुआ कि हम शायद बहरे-जुल्मात[14] में डूब गए हैं।

जब मोटर अपनी नीम वा खिड़कियो से उस गीत के दर्दनाक सुर बिखेरती हुई हमारी नज़रों से ओझल हो गई तो हम सबने एक आह भरकर अपना काम शुरू कर दिया।

शाम के करीब जब सूरज की सुर्ख़ और गर्म टिकिया पिघले हुए ताँबे का रग इख्तियार करके एक सियाह पहाडी के पीछे छुप रही थी और उसकी उन्नाबी किरनें दराजक़द दरख़्तो की चोटियों से खेल रही थीं, सब्ज रग की वही मोटर हमे उस तरफ से वापिस आती दिखाई दी, जिधर वह दोपहर को गई थी। हमने उसके हॉर्न की आवाज सुनी तो काम छोडकर उसको देखने लगे। आहिस्ता-आहिस्ता चलती हुई वह हमारे आगे से गुज़र गई और फिर दफअतन हमसे आधी जरीब[15] के फ़ासले पर खडी हो गई। वह ग्रामोफोन जो उसमें बज रहा था, ख़ामोश हो गया।

थोड़ी देर के बाद पिछली सीट से एक नौजवान दरवाजा खोलकर बाहर निकला और अपनी पतलून को कमर पर से दुरुस्त करता हुआ हमारे पास से गुज़रा और आहिस्ता-आहिस्ता उस पुल की तरफ रवाना हो गया जो सामने नाले पर बँधा हुआ था—यह खयाल करके कि वह नाले के पानी का नजारा करने के लिए गया है जैसा कि आम-तौर पर उधर से गुज़रनेवाले किया करते थे, हम अपने काम में मसरूफ हो गए।

अभी हमे अपना काम शुरू किए पाँच मिनट से ज्यादा अर्सा न गुजरा होगा कि पुल की तरफ से ताली की आवाज बुलंद हुई।

हमने मुडकर देखा।

पतलून पोश नौजवान सडक के साथ पत्थरों से चुनी हुई दीवार के पास खडा ग़ालिबन मोटर में बैठे अपने साथियों को मुतवज्जेह[16] कर रहा था—सगीन मुँडेर पर उस नौजवान से कुछ दूर एक लड़की बैठी हुई थी।

हममें से एक ने अपने बेलचे को बडे जोर से मोरी की गीली मिट्टी में गाड़ते हुए कहा : "वह रामदई है।"

कालू ने, जो उसके पास खडा था, दरयाफ्त किया "रामदई ?"

"संतो चमार की लडकी, और कौन !" उसके लहजे मे बेलचे के लोहे ऐसी सख्ती थी।

हम बाकी चार हैरान थे कि उस गुफ्तगू का मतलब क्या है; अगर वह लडकी, जो मुँड़ेर पर बैठी हुई है, संतो चमार की लड़की है तो कौन-सी अहम बात है कि हमारा साथी इस कदर तेज बोल रहा है।

हम गौर कर रहे थे कि फजल ने, जो हम सबसे उम्र मे बड़ा था और नमाज़-रोजे का बहुत पाबद था, अपनी दाढ़ी को खुजलाते हुए निहायत ही मुर्फक्किराना[17] लहजे मे कहा "दुनिया मे एक अँधेर मचा है खुदा मालूम लोगों को क्या हो गया ?"

फजल की बात सुनकर हम सब असल मामला समझ गए और हमारे दिलों पर गम और गुस्से की एक अजीबो-गरीब कैफ़ियत तारी हो गई।

नाली फिर बजी तो मोटर की पिछली निशस्त से पतलून पोश के एक साथी ने अपना सिर बाहर निकाला और यह देखकर कि उसका साथी उसे बुला रहा है, वह दरवाजा खोलकर बाहर निकला और हमारे करीब से गुजरता हुआ पुल की जानिब बढ़ गया—हम बेवकूफ़ बकरियों की तरह उसे अपने साथी के पास जाता देखते रहे।

जब पतलून पोश नौजवान का साथी उसके पास पहुँच गया तो वे दोनों लड़की की तरफ़ बढ़े और उन्होंने लडकी से बातें करना शुरू कर दी।

कालू पेचो-ताब खाकर रह गया और ख़शमआलूद लहजे मे बोला . "बदमाश !"

फ़ज़ल ने सर्द आह भरी और मग़मूम लहजे मे कहने लगा "जब मे यह सड़क बनी है और ऐसे बाबुओं की आमदो-रफ्त ज़्यादा हो गई है, यहाँ के तमाम इलाकों में गंदगी फैल गई है लोग कहते हैं कि यह सड़क बनने से बहुत आराम हो गया है हो गया होगा, मगर इस क़िस्म के बेशर्मी के नजारे पहले कभी देखने में न आते थे खुदा बचाए !"

इस दौरान मे, हमने देखा, पतलून पोश के साथी ने लडकी को बाज़ू से पकड़ लिया है और ग़ालिबन उसको उठकर चलने के लिए कहा है—मगर वह मुँडेर पर अपनी जगह बैठी रही।

कालू से न रहा गया और उसने रामप्रसाद से कहा "आओ, ये लोग तो अब दस्तदराज़ी कर रहे हैं।" यह कहकर कालू अकेला ही उस जानिब बढ़ने लगा कि हमने उसे रोक लिया और यह मश्वरा दिया कि तमाम मामला पंडित के गोश गुज़ार कर दिया जाए जो चारपाई पर सो रहा है; और फिर जो कुछ वह कहे, उस पर अमल किया जाए।

इस तजवीज को माकूल ख़याल करके हम सब पंडित के पास गए और हमने उसे जगाकर सारा किस्सा सुना दिया।

पंडित ने हमारी गुफ़्तगू को बड़ी बेपरवाई से सुना, जैसे कोई बात ही न हो, और उन दोनों नौजवानों की तरफ देखकर, जो लड़की को ख़ुदा मालूम किस तरीक़े से मनाकर अपने

साथ ला रहे थे, कहा : "जाओ, तुम लोग अपना काम करो मैं उनसे खुद दरयाफ्त करूँगा।"

पंडित का जवाब सुनकर हम बेचारगी की हालत मे अपने काम पर आ गए, लेकिन हम सबकी निगाहे लडकी और उन दो नौजवानों पर जमी हुई थीं जो अब पुल तय करके पंडित की चारपाई के करीब पहुँच रहे थे—नौजवान आगे थे और लड़की थकी हुई घोडी की तरह उनके पीछे-पीछे चल रही थी।

जब वह पंडित के आगे से गुज़रने लगे तो पंडित चारपाई पर से उठा—दो-तीन मिनट तक उनसे कुछ बातें करने के बाद वह भी उनके साथ हो लिया।

जब वह नौजवान, लडकी और पंडित हमारे पास से गुज़रे तो हमने देखा कि नौजवानो के चेहरो पर एक हैवानी झलक नाच रही है, लडकी की निगाहे झुकी हुई हैं और पंडित बडे अदब से उनके साथ-साथ चल रहा है।

मोटर के पास पहुँचकर पंडित ने आगे बढ़कर मोटर का दरवाज़ा खोला।

पहले पतलून पोश, फिर लडकी और इसके बाद दूसरा नौजवान, तीनो मोटर में दाखिल हो गए—हमारे देखते-देखते मोटर चली और हमारी नजरों से ओझल हो गई; हम आँखें झपकते ही रह गए।

"शैतान मरदूद !" कालू ने बडे इज्तिराब[18] से यह दो लफ्ज अदा किए।

इतने मे पंडित आ गया और हमको मुज्तरिब[19] देखकर एक मस्नूई आवाज में कहने लगा . "मैंने उनसे दरयाफ्त कर लिया है ऐसी कोई बात नहीं है वह लडकी को जरा मोटर की सैर कराना चाहते थे इस्पेक्टर साहब के मेहमान हैं और डाकबँगले में ठहरे हुए हैं थोडी दूर ले जाकर वह लडकी को छोड देगे अमीर आदमी हैं; इनके शगल इसी किस्म के होते हैं तुम लोग अपना काम करो " यह कहकर पंडित चला गया।

हम देर तक खुदा मालूम किन गहराइयो मे गर्क रहे।

दफअतन फजल की आवाज़ ने हमे चौंका दिया—दो मर्तबा ज़ोर से थूककर उसने अपने हाथों को गीला किया और बेलचे को सगरेज़ों के ढेर में गाडते हुए कहा : "अगर अमीर आदमियों के यही शगल हैं तो हम गरीबो की बहू-बेटियों का अल्लाह बेली है !"

---

1 गुजरे हुए, बीते हुए; 2 उदय होते, निकलते; 3. क्रोधित, कुपित; 4. छोटे-छोटे पत्थरो; 5. एकरसता; 6 पीछे, 7. आधारित, शामिल; 8. मक्का की रोटी, 9. उद्देश्य; 10. संबोधियों; 11. विशेषत., 12 सम्मान; 13. उत्कंठित, लालायित; 14. अँधेरे का समुद्र; 15. खेत आदि की नापतौल में काम आनेवाली जंजीर; 16. सबोधित; 17 फक्कड, निर्धनतापूर्ण, 18 बेचैनी, 19 बेचैन, अशात।

बाँझ

मेरी और उसकी मुलाक़ात आज से ठीक दो बरस पहले अपोलो बंदर पर हुई।

शाम का वक़्त था; सूरज की आख़िरी किरणें समंदर की उन दूर-दराज़ लहरों के पीछे ग़ायब हो चुकी थीं, जो साहिल के बैंच पर बैठकर देखने से मोटे कपड़े की तहें मालूम होती थीं—मैं गेट वे ऑफ़ इंडिया के इस तरफ़ पहला बैंच छोड़कर, जिस पर एक आदमी चंपीवाले से अपने सिर की मालिश करा रहा था, दूसरे बैंच पर बैठा हुआ था और हदे-नज़र तक फैले हुए समंदर को देख रहा था, दूर, बहुत दूर, जहाँ समंदर और आसमान घुल-मिल रहे थे, बड़ी-बड़ी लहरें आहिस्ता-आहिस्ता उठ रही थीं, ऐसा मालूम होता था कि एक बहुत बड़े गदले रंग का क़ालीन है, जिसे उधर से इधर समेटा जा रहा है—साहिल के सब क़ुमक़ुमे रोशन थे, जिनका अक्स किनारे के लरजाँ पानी पर कँपकँपाती हुई मोटी लकीरों की सूरत में जगह-जगह रेंग रहा था, पास ही पथरीली दीवार के नीचे कई किश्तियों के लिपटे हुए बादबान और बाँस हौले-हौले हरकत कर रहे थे; समंदर की लहरों और तमाशाइयों की आवाज़ एक गुनगुनाहट बनकर फ़ज़ा में घुली हुई थी; कभी-कभी किसी आने या जानेवाली मोटर के हॉर्न की आवाज़ बुलंद होती तो यूँ मालूम होता कि बड़ी दिलचस्प कहानी सुनने के दौरान में किसी ने ज़ोर से 'हूँ' की है।

ऐसे माहौल में सिगरेट पीने में बहुत मज़ा आता है—मैंने जेब में हाथ डालकर सिगरेट की डिबिया निकाली, मगर माचिस न मिली; जाने मैं कहाँ भूल आया था।

मैं सिगरेट की डिबिया वापिस जेब में रखने ही वाला था कि पास से किसी ने कहा . ''माचिस लीजिएगा ?''

मैंने मुड़कर देखा—बैंच के पीछे एक नौजवान खड़ा था।

यूँ तो बंबई के आम बाशिंदों का रंग जर्द होता है, लेकिन उस नौजवान का चेहरा ख़ौफ़नाक तौर पर ज़र्द था।

मैंने उसका शुक्रिया अदा किया : ''आपकी बड़ी इनायत है।''

उसने माचिस, जो उसके हाथ ही में थी, मेरी तरफ़ बढ़ा दी।

मैंने फिर उसका शुक्रिया अदा किया और कहा : ''तशरीफ़ रखिए।''

उसने कहा : ''आप सिगरेट सुलगा लीजिए मुझे जाना है।''

मुझे महसूस हुआ कि उसने झूठ बोला है—उसके लहजे में ऐसी कोई बात नहीं थी कि

पता चलता, उसे जल्दी है और उसे कहीं जाना है।

आप कहेंगे कि लहजे में ऐसी बातों का किस तरह पता चल सकता है—हकीकत यह है कि मुझे उस वक़्त ऐसा ही महसूस हुआ था।

मैंने एक बार फिर कहा : "ऐसी जल्दी क्या है ? तशरीफ रखिए ।" यह कहकर मैंने सिगरेट की डिबिया उसकी तरफ बढ़ा दी : "शौक फरमाइए।"

उसने सिगरेट की छाप की तरफ देखा और कहा : "शुक्रिया ! मैं सिर्फ अपना ब्रांड पिया करता हूँ।"

आप मानें न मानें, मैं कसमिया कहता हूँ कि उसने फिर झूठ बोला।

उसके लहजे ने फिर चुगली खाई और मुझे उससे दिलचस्पी पैदा हो गई—मैंने अपने दिल में फौरन कस्द[1] कर लिया कि उसे जरूर अपने पास बिठाऊँगा और अपना सिगरेट पिलाऊँगा।

मेरे खयाल के मुताबिक इसमें मुश्किल की कोई बात ही न थी कि उसके दो जुमलों ही ने मुझे बता दिया था, वह अपने आपको धोखा दे रहा है, उसका जी चाहता है कि मेरे पास बैठे और मेरा सिगरेट पिए; लेकिन बयकवक्त उसके दिल में यह खयाल भी पैदा होता है कि मेरे पास न बैठे और मेरा सिगरेट न पिए—'हाँ' और 'न' का यह तसादुम उसके लहजे में मुझे साफ तौर पर नजर आया था—आप यकीन जानिए, उसका वुजूद भी होने और न होने के बीच लटका हुआ था।

उसका चेहरा, जैसा कि मैं बयान कर चुका हूँ, बेहद जर्द था; उस पर उसकी नाक, आँखों और मुँह के खुतूत इस कदर मद्धम थे, जैसे किसी ने तसवीर बनाई हो और फिर उसको पानी से धो डाला हो—कभी-कभी मेरे देखते-देखते उसके होंठ उभर-से आते, फिर राख में लिपटी हुई चिंगारी के मानिंद सो जाते—उसके चेहरे के दूसरे खुतूत का भी यही हाल था; उसकी आँखें गदले पानी की दो बडी-बडी बूँदें थीं, जिन पर उसकी छोरी पलकें झुकी हुई थीं; बाल काले थे, मगर उनकी सियाही जले हुए कागज़ के मानिंद थी, जिसमें भूसलापन भी होता है; करीब से देखने पर उसकी नाक का सही नक्शा मालूम हो सकता था, मगर दूर से देखने पर वह बिलकुल चपटी मालूम होती थी, इसलिए कि उसके चेहरे के खुतूत बिलकुल ही मद्धम थे।

उसका कद आम लोगों जितना था, यानी न छोटा न बडा; अलबत्ता जब वह एक ख़ास अंदाज से, यानी अपनी कमर की हड्डी को ढीला छोड के खडा होता तो उसके क़द में नुमाया फर्क़ पैदा हो जाता, इस तरह जब वह एकदम खड़ा होता तो उसका क़द उसके जिस्म के मुकाबले में बहुत बड़ा दिखाई देता—कपडे उसके ख़स्ता हालत में थे, लेकिन मैले नहीं थे; कोट की आस्तीनों के आखिरी हिस्से कसरते-इस्तेमाल के बायस घिस गए थे और फूसडे निकल आए थे, कालर खुला था और क़मीस बस एक और धुलाई की मार थी, मगर उन कपड़ों में भी वह ख़ुद को बाविकार[2] अंदाज में पेश करने की सई कर रहा था—मैंने 'सई ही कर रहा था' इसलिए कहा है कि जब मैंने उसकी तरफ देखा था तो उसके सारे वुजूद में बेचैनी की लहर दौड़ गई थी, और मुझे ऐसा मालूम हुआ था कि वह अपने आपको भी

निगाहों से ओझल रखना चाहता है।

मैं उठ खड़ा हुआ और अपना सिगरेट सुलगाकर मैंने सिगरेट की डिबिया फिर उसकी तरफ़ बढ़ा दी : "शौक़ फ़रमाइए " यह मैंने कुछ इस तरीके से कहा कि वह सबकुछ भूल गया और उसने सिगरेट की डिबिया अपने हाथ में ले ली—मैंने फ़ौरन दियासलाई सुलगाई और अपने हाथ उसकी तरफ बढ़ाए—उसने जल्दी से डिबिया में से सिगरेट निकाला और अपने होंठों में दबाकर सुलगा लिया और पीना शुरू कर दिया।

एकाएकी उसे अपनी गलती का एहसास हुआ—उसने सिगरेट उँगलियों में थामकर हलक़ में मस्नूई[3] खाँसी के आसार पैदा करते हुए कहा : "केवेंडर मुझे रास नहीं आते इसका तबाकू बहुत तेज़ है; मेरे गले मे फ़ौरन ख़राशें पैदा हो जाती हैं।"

मैंने पूछा : "आप कौन से सिगरेट पसंद करते हैं ?"

"मैं मैं दरअसल मैं सिगरेट बहुत कम पीता हूँ डॉक्टर अरोलकर ने मना कर रखा है वैसे मैं थ्री फाइव पीता हूँ, जिनका तंबाकू तेज़ नहीं होता।" उसने तुतलाकर जवाब दिया।

उसने जिस डॉक्टर का नाम लिया, वह बंबई का बहुत बड़ा डॉक्टर है और उसकी फीस दस रुपए है; उसने जिन सिगरेटों का हवाला दिया, उनके मुताल्लिक आपको भी मालूम होगा कि बहुत महँगे दामों पर मिलते हैं—उसने एक ही साँस में दो झूठ बोले, जो मुझे हज्म न हुए, मगर मैं खामोश रहा, हालाँकि, सच अर्ज़ करता हूँ, उस वक़्त मेरे दिल में यही ख़्वाहिश चुटकियाँ ले रही थी कि उसका गिलाफ़ उतार दूँ और उसकी दरोग़गोई[4] को बेनक़ाब कर दूँ; उसे कुछ इस तरह शर्मिंदा करूँ कि वह मुझसे माफी माँगे, मगर जब मैंने उसकी तरफ ग़ौर से देखा तो इस फ़ैसले पर पहुँचा कि उसने जो कुछ कहा है, वह उसका जुज़ बनकर रह गया है—झूठ बोलने के बाद चेहरे पर जो एक सुर्ख़ी-सी दौड जाया करती है, मुझे उसके चेहरे पर नज़र न आई; बल्कि मैंने यह महसूस किया कि वह जो कुछ कह चुका है, उसको हक़ीकत समझ रहा है, उसके झूठ में इस क़दर इख़्लास था, यानी उसने इतने पुरख़ुलूस तरीक़े पर झूठ बोला था कि उसकी मीज़ाने-एहसास[5] में हल्की-सी जुंबिश भी पैदा नहीं हुई थी—ख़ैर छोड़िए इस क़िस्से को; ऐसी बारीकियाँ मैं आपको बताने लगूँ तो सफ़हों के सफ़हे काले हो जाएँगे और अफ़साना बहुत ख़ुश्क हो जाएगा।

थोड़ी-सी रस्मी गुफ़्तगू के बाद मैंने उसको राह पर लगा लिया और उसको एक और सिगरेट पेश करने के बाद मैंने समंदर के दिलफरेब मजर की बात छेड़ दी—अफसाना निगार हूँ, इसलिए मैंने कुछ इस दिलचस्प तरीके पर उसे समदर, अपालो बंदर और वहाँ आने-जानेवाले तमाशाइयों के बारे मे चद बाते सुनाईं कि तीन-चार सिगरेट पीने पर भी उसके हलक में खरखराहट पैदा न हुई।

यकायक उसने मेरा नाम पूछा—मैंने बताया तो वह उठ खड़ा हुआ और कहने लगा : "आप आप मिस्टर मटो हैं मैं आपके कई अफ़साने पढ़ चुका हूँ मुझे मुझे मालूम न था कि आप ही मिस्टर मंटो हैं मुझे आपसे मिलकर बहुत ख़ुशी हुई है, वल्लाह बहुत ख़ुशी हुई है।"

मैंने उसका शुक्रिया अदा करना चाहा, मगर उसने बोलना शुरू कर दिया . "मैंने अभी हाल ही में आपका एक अफ़साना पढ़ा है उनवान मैं भूल गया हूँ इस अफ़साने में एक लड़की है जो किसी मर्द से मुहब्बत करती है और जो उसे धोखा दे जाता है उस लड़की से एक और मर्द मुहब्बत करता है जो अफ़साना सुना रहा है जब उसको लडकी की उफ्ताद[6] का पता चलता है तो वह लड़की से मिलता है और कहता है . 'ज़िंदा रहो उन चंद घड़ियो की याद में अपनी ज़िंदगी की बुनियादें खड़ी करो, जो तुमने उसकी मुहब्बत मे गुज़ारी हैं उस मसर्रत[7] की याद में जो तुमने चंद लम्हात के लिए हासिल की थी ' मुझे पूरी इबारत याद नहीं रही, लेकिन आप मुझे यह बताइए, क्या ऐसा मुम्किन है मुम्किन को छोड़िए, यह बताइए, उस लड़की से मुहब्बत करनेवाले आप तो नही थे ? माफ कीजिएगा, मैं ऐसे सवाल कर रहा हूँ जो मुझे नहीं करने चाहिएँ मगर क्या आप ही ने उस लड़की से छत पर मुलाक़ात की थी और उसकी थकी हुई जवानी को ऊँघती हुई चाँदनी मे छोडकर नीचे अपने कमरे में सोने के लिए चले आए थे " वह कहते-कहते एकदम ठहर गया "मुझे ऐसी बाते नहीं पूछनी चाहिएँ अपने दिल का हाल कौन बताता है !"

मैंने कहा : "मैं आपको बताऊँगा लेकिन पहली मुलाक़ात में सबकुछ पूछ लेना और सबकुछ बता देना अच्छा मालूम नही होता आपका क्या ख़याल है ?"

उसका वह जोश, जो गुफ्तगू करते वक़्त उसके अंदर पैदा हो गया था, एकदम ठंडा पड गया—उसने धीमे लहजे में कहा : "आपका फरमाना बिलकुल दुरुस्त है, मगर हो सकता है, आपसे फिर कभी मुलाकात ही न हो।"

मैंने कहा : "इसमें शक नहीं कि बंबई बहुत बडा शहर है, लेकिन हमारी एक नही, बहुत-सी मुलाक़ातें हो सकती हैं मैं बेकार आदमी हूँ, यानी अफसानानिगार आप मुझे हर रोज़ शाम को इसी वक़्त इसी जगह पाएँगे, बशर्ते कि मैं बीमार न हूँ इस जगह बेशुमार लड़कियाँ सैर को आती हैं और मैं इसलिए आता हूँ कि ख़ुद को किसी लडकी की मुहब्बत में गिरफ्तार कर सकूँ मुहब्बत बुरी चीज़ नहीं है !"

"मुहब्बत मुहब्बत" उसने कुछ कहना चाहा, मगर कह न सका और जलती हुई रस्सी की तरह आख़िरी बल खाकर ख़ामोश हो गया।

मैंने अज़-राहे[8]-मज़ाक़ उससे मुहब्बत का ज़िक्र किया था—दरअसल उस वक़्त फ़ज़ा ऐसी दिलफ़रेब थी कि अगर मैं किसी लडकी पर आशिक़ हो जाता तो मुझे अफ़सोस न होता—जब दोनों वक़्त आपस में मिल रहे हों, नीम तारीकी में बिजली के क़ुमक़ुमे कतार दर क़तार आँखें झपकना शुरू कर दें, हवा में ख़ुनकी पैदा हो जाए और फज़ा पर एक अफसानवी कैफ़ियत-सी छा जाए तो किसी अजनबी लडकी की क़ुर्बत की ज़रूरत महसूस होती है, ऐसी क़ुर्बत जिसका एहसास तहत-उल-शऊर[9] में छुपा रहता है।

ख़ुदा मालूम उसने मेरे किस अफ़साने के मुताल्लिक़ मुझसे पूछा था; मुझे अपने सब अफ़साने याद नहीं हैं और ख़ासतौर पर वह तो बिलकुल याद नहीं हैं जो रूमानी हैं—मैं अपनी ज़िंदगी में बहुत कम लड़कियों से मिला हूँ—वह अफ़साने, जो मैंने लड़कियों के मुताल्लिक़ लिखे हैं, या तो किसी ख़ास ज़रूरत के मातहत लिखे हैं, या महज़ दिमागी

ऐयाशी के लिए; मेरे ऐसे अफ़सानों में कोई ख़ुलूस नहीं है, इसलिए मैंने कभी उनके मुताल्लिक गौर नहीं किया है—एक खास तबके की औरतें मेरी नज़र से गुजरी हैं और उनके मुताल्लिक़ मैंने चंद अफ़साने लिखें हैं, मगर वह रूमानी नहीं हैं—उसने जिस अफ़साने का ज़िक्र किया था, वह यक़ीनन कोई अदना दर्जे का रूमान होगा, जो मैंने अपने चंद जज़्बात की प्यास बुझाने के लिए लिखा होगा—लेकिन यह मैंने क्या बयान करना शुरू कर दिया है।

जब वह 'मुहब्बत मुहब्बत ' कहकर ख़ामोश हो गया तो मेरे दिल में ख्वाहिश पैदा हुई कि मुहब्बत के बारे में कुछ कहूँ—मैंने कहना शुरू किया : "मुहब्बत की यूँ तो बहुत-सी क़िस्मे हमारे बाप-दादा बयान कर गए हैं, मगर मैं समझता हूँ कि मुहब्बत ख्वाह मुलतान में पैदा हो या साइबेरिया में, सर्दियों मे पैदा हो या गर्मियों में, अमीर के दिल में पैदा हो या गरीब के दिल में मुहब्बत खूबसूरत लोग करें या बदसूरत, बदकिरदार करे या नेक-ओ-कार मुहब्बत, मुहब्बत ही रहती है; उसमें कोई फर्क पैदा नहीं होता जिस तरह बच्चा पैदा होने की सूरत हमेशा से एक-सी चली आ रही है, उसी तरह मुहब्बत की पैदाइश भी एक ही तरीके पर होती है यह जुदा बात है कि सईदा बेगम हस्पताल मे बच्चा जने और राजकुमारी जंगल में; गुलाम मुहम्मद के दिल में भगन मुहब्बत पैदा करे और नटवरलाल के दिल मे कोइ रानी जिस तरह बाज़ बच्चे वक्त से पहले पैदा हो जाते हैं और कमजोर रहते हैं, उसी तरह वह मुहब्बत भी कमजोर होती है जो वक्त से पहले जन्म ले लेती है बाज दफा बच्चे बड़ी तकलीफ़ से पैदा होते हैं, बाज दफ़ा मुहब्बत भी बडी तकलीफ़ देकर पैदा होती है कभी-कभी हमल[10] गिर जाया करता है, उसी तरह कभी-कभी मुहब्बत भी गिर जाया करती है बाज़ दफा बांझपन पैदा हो जाता है, ऐसे लोग भी हैं जो मुहब्बत करने के मामले में बाँझ हैं इसका यह मतलब नही कि मुहब्बत करने की ख्वाहिश उनके दिल से हमेशा के लिए मिट जाती है या उनके अदर वह जज्बा ही नही रहता; नहीं, मुहब्बत करने की ख्वाहिश उनके दिल में मौजूद होती है, मगर वह इस क़ाबिल नही होते कि मुहब्बत कर सकें जिस तरह चद लोग अपने जिस्मानी नक़ाइस[11] के बायस बच्चा पैदा करने की अहलियत[12] नहीं रखते, उसी तरह चद लोग अपने रूहानी नकाइस के सबब मुहब्बत पैदा करने की क़ुव्वत नहीं रखते और यह तो मैं कह ही चुका हूँ कि मुहब्बत का इम्कात[13] भी हो सकता है "

मुझे अपनी गुफ़्तुगू दिलचस्प मालूम हो रही थी, इसलिए मैं उसकी तरफ देखे बगैर लैक्चर दिए चला जा रहा था—जब मैं उसकी तरफ़ मुतवज्जेह हुआ तो मैंने देखा, वह दूर समंदर में कहीं ख़ला में देख रहा है और गुम है—मैं ख़ामोश हो गया।

जब किसी मोटर का हॉर्न बजा तो वह चौंका और मेरी तरफ देखकर कहने लगा . "जी आपने बिलकुल दुरुस्त फरमाया है।"

मेरे जी में आई कि उससे पूछूँ : 'दुरुस्त फ़रमाया है, इसको छोड़िए, यह बताइए कि मैंने कहा क्या है ⋯ ' लेकिन मैं ख़ामोश रहा—मैंने उसको मौक़ा दिया कि वह अपने वज़नी ख़यालात दिमाग़ से झटक दे।

वह कुछ देर सोचता रहा—उसने फिर कहा : "आपने बिलकुल दुरुस्त फ़रमाया है,

लेकिन ख़ैर छोड़िए इस क़िस्से को ''

मुझे अपनी गुफ़्तगू बहुत अच्छी मालूम हुई थी और मैं चाहता था कि कोई मेरी बातें सुनता चला जाए—मैंने फिर से कहना शुरू किया : ''तो मैं यह अर्ज़ कर रहा था कि बाज़ लोग मुहब्बत के मामले में बाँझ होते हैं, यानी उनके दिल में मुहब्बत करने की ख्वाहिश तो मौजूद होती है, लेकिन उनकी यह ख्वाहिश कभी पूरी नही होती मैं समझता हूँ, इस बाँझपन का बायस रूहानी नकाइस हैं आपका क्या ख़याल है ?''

उसका रंग और भी जर्द पड़ गया, जैसे उसने कोई भूत देख लिया हो।

यह तब्दीली उसके अन्दर इतनी जल्दी पैदा हुई कि मैंने घबराकर पूछा ''खैरियत तो है आप बीमार हैं क्या ?''

''नही तो नहीं तो '' वह कुछ ज्यादा ही परेशान हो गया ''मुझे कोई बीमारी-वीमारी नही है आपने कैसे समझ लिया कि मैं बीमार हूँ ?''

मैंने जवाब दिया : ''इस वक्त आपको जो कोई भी देखेगा, यही कहेगा कि आप बहुत बीमार हैं आपका रंग खौफनाक तौर पर ज़र्द हो रहा है, मेरा खयाल है, आपको घर चले जाना चाहिए आइए, मैं आपको छोड आऊँ।''

''नही, मैं ख़ुद चला जाऊँगा मगर मैं बीमार नही हूँ कभी-कभी मेरे दिल मे मामूली-सा दर्द होने लगता है मैं अभी ठीक हो जाऊँगा आप अपनी गुफ्तगू जारी रखिए।''

मैं थोड़ी देर खामोश रहा—वह ऐसी हालत में नही था कि मेरी बात गौर से सुन सकता।

जब उसने इसरार[14] किया तो मैंने कहना शुरू किया : ''मैं आपसे यह पूछ रहा था कि उन लोगों के मुताल्लिक आपका क्या खयाल है जो मुहब्बत करने के मामले में बाँझ होते हैं मैं ऐसे लोगों के जज़्बात और उनकी अंदरूनी कैफियात का अदाजा नही कर सकता लेकिन जब मैं उस बाँझ औरत का तसव्वुर करता हूँ जो एक बेटी या बेटा हासिल करने के लिए दुआएँ माँगती है, ख़ुदा के हुज़ूर में गिड़गिड़ाती है, और जब वहाँ से उसे कुछ नही मिलता तो टोने-टोटकों में अपना गौहरे-मक़सूद[15] ढूँढती है श्मशानों से राख लाती है, कई-कई रातें जागकर साधुओं के बताए हुए मंत्र पढ़ती है मन्नतें मानती है, चढ़ावे चढ़ाती है तो मैं ख़याल करता हूँ कि ऐसे लोगों की भी यही हालत होती होगी जो मुहब्बत के मामले में बाँझ हैं ऐसे लोग वाक़ई हमदर्दी के क़ाबिल हैं मुझे अधों पर इतना रहम नहीं आता जितना इन लोगों पर आता है ''

उसकी आँखों मे आँसू आ गए—वह थूक निगलकर दफ्अतन उठ खडा हुआ और परली तरफ़ मुँह करके कहने लगा : ''ओह, बहुत देर हो गई मुझे एक जरूरी काम के लिए जाना था; बातों-बातों में कितना वक़्त गुजर गया ''

मैं भी उठ खड़ा हुआ।

वह पलटा और उसने मेरी तरफ़ देखे बग़ैर मेरा हाथ दबाकर ''अब रुख़सत चाहता हूँ'' कहा और चल दिया।

दूसरी मर्तबा उससे मेरी मुलाक़ात फिर अपोलो बंदर पर हुई।

मैं सैर का आदी नहीं हूँ, मगर उस ज़माने मे हर शाम अपोलो बंदर जाना मेरा दस्तूर हो गया था—उन्हीं दिनों आगरा के एक शाइर ने मुझे एक लंबा-चौड़ा ख़त लिखा जिसमें उसने निहायत ही हरीसाना[16] तौर पर अपोलो बंदर और वहाँ घूमनेवाली लड़कियों का ज़िक्र किया और मुझे उस लिहाज से ख़ुशक़िस्मत कहा कि मैं बंबई में हूँ—यकीन जानिए, उसका ख़त पढ़कर अपोलो बंदर से मेरी दिलचस्पी हमेशा के लिए फ़ना हो गई; अब भी जब कभी कोई मुझे अपोलो बंदर जाने को कहता है तो मुझे वह ख़त याद आ जाता है और मेरी तबीयत मतला जाती है—लेकिन मैं उन दिनों का ज़िक्र कर रहा हूँ, जब वह ख़त मुझे नहीं मिला था और मैं हर रोज शाम को अपोलो बंदर जाकर उस दूसरे बैंच पर बैठा करता था जिसके इस तरफ़ गेट वे ऑफ इंडिया के करीब पहले बैंच पर कई आदमी बैठे चंपीवालों से अपनी खोपड़ियों की मरम्मत कराते रहते हैं।

अक्तूबर की गर्मी में कमी वाके नही हुई थी, दिन पूरी तरह ढल चुका था और उजाले का कोई निशान बाकी नहीं रहा था; हवा चल रही थी, थके हुए मुसाफिर की तरह—सैर करनेवालों का हुजूम ज्यादा था, मेरे पीछे मोटरें ही मोटरें खड़ी थीं; बैंच भी सबके-सब पुर थे—जहाँ मैं बैठा था, वहाँ दो बातूनी, एक गुजराती और एक पारसी, न जाने कब से जमे हुए थे; दोनों गुजराती बोल रहे थे, मगर मुख़्तलिफ़ लबो-लहजे से, पारसी की आवाज़ में दो सुर थे और वह कभी बारीक सुर मे बात कर रहा था, कभी मोटे सुर में; और जब वे दोनों तेज़ी से एक साथ बोलते तो ऐसा मालूम होता, जैसे तोता-मैना की लड़ाई हो रही है।

मैं उनकी लायतनाही[17] गुफ़्तगू से तंग आकर उठा और टहलने की ख़ातिर ताजमहल होटल का रुख करने ही वाला था कि मुझे सामने से वह आता दिखाई दिया—मुझे उसका नाम मालूम नही था, इसलिए मैं उसे पुकार न सका, लेकिन जब उसने मुझे देखा तो उसकी निगाहें साकिन हो गईं, जैसे उसे वह चीज मिल गई हो, जिसकी उसे तलाश हो।

कोई बैंच ख़ाली नहीं था इसलिए मैंने उससे कहा : "आपसे बहुत दिनों के बाद मुलाक़ात हुई है · चलिए, सामने रेस्तोराँ में बैठते हैं · यहाँ तो कोई बैंच ख़ाली नही है।"

उसने रस्मी तौर पर चंद बातें कीं और मेरे साथ हो लिया।

थोड़ा-सा फ़ासला तय करने के बाद हम दोनों एक रेस्तोराँ में बेंत की बड़ी-बड़ी कुर्सियों पर बैठ गए—चाय का ऑर्डर देकर मैंने उसकी तरफ़ सिगरेटों का टिन बढ़ा दिया।

इत्तिफ़ाक़ की बात है, मैंने उसी रोज दस रुपए देकर डॉक्टर अरोलकर से मश्वरा लिया था—डॉक्टर अरोलकर ने मुझसे कहा था कि अव्वल तो मैं सिगरेट पीना ही मौक़ूफ़[18] कर दूँ और अगर ऐसा नहीं कर सकता तो अच्छे सिगरेट पिया करूँ, जैसे पाँच सौ पचपन—मैंने डॉक्टर अरोलकर की हिदायत के मुताबिक सिगरेटों का वह टिन उसी शाम ख़रीदा था।

उसने टिन की तरफ़ गौर से देखा, फिर मेरी तरफ़ निगाहें उठाईं और कुछ कहना चाहा, मगर ख़ामोश रहा।

मैं हँस पड़ा : "आप यह न समझिएगा कि मैंने आपके कहने पर यह सिगरेट पीना शुरू कर दिए हैं · यह महज़ इत्तिफ़ाक़ है कि आज मुझे भी डॉक्टर अरोलकर के पास जाना पड़ा,

क्योंकि कुछ दिनो से मेरे सीने में दर्द हो रहा है   डॉक्टर अरोलकर ने मुझसे कहा है कि मैं यह सिगरेट पिया करूँ और वह भी बहुत कम   '' मैंने उसकी तरफ़ देखा और महसूस किया कि उसको मेरी बातें नागवार मालूम हुई हैं—मैंने फ़ौरन अपनी जेब मे वह नुस्ख़ा निकाला जो डॉक्टर अरोलकर ने मुझे दिया था।

नुस्ख़ा मैंने मेज़ पर उसके सामने फैला दिया और कहा · ''इबारत तो मुझसे पढ़ी नही जाती, मगर ऐसा मालूम होता है कि डॉक्टर साहब ने विटामिन्ज का सारा खानदान जमा कर दिया है।''

उसने चोर निगाहो से कागज पर उभरे हुए काले हुरूफ में डॉक्टर अरोलकर का नाम और पता देखा और एक नज़र तारीख़ पर भी डाली; और वह इज़्तिराब[19] जो उसके चेहरे पर पैदा हो गया था, फौरन दूर हो गया—उसने मुसकराकर कहा : ''क्या वजह है कि अक्सर लिखनेवालो को विटामिन्ज खाना पडते हैं ?''

मैंने जवाब दिया . ''इसलिए कि उन्हें खुराक काफी नहीं मिलती   काम ज्यादा करते हैं और उजरत बहुत कम पाते है।''

चाय आ गई तो दूसरी बाते शुरू हो गईं।

पहली मुलाकात और उस दूसरी मुलाकात के दरमियान गालिबन ढाई महीने का फ़ासला था—उसके चेहरे का रंग पहले से कही ज्यादा जर्द था; आँखो के नीचे सियाह हलके पैदा हो गए थे।

उसे ग़ालिबन कोई रूहानी तकलीफ थी, जिसका एहसास उसे हर वक़्त रहता था—बाते करते-करते बाज औकात वह ठहर जाता और उसके होंठों से गैर इरादी तौर पर एक आह-सी निकल जाती, अगर वह हँसने की कोशिश भी करता, तब भी उसके होंठो पर जिंदगी[20] पैदा न होती।

मैंने उसकी कैफ़ियत देखकर कुछ अचानक तौर पर उससे पूछा · ''आप उदास क्यों हैं ?''

''उदास   उदास   '' एक फीकी-सी बेजान मुसकराहट उसके होंठो पर फैल गई, वही फीकी-सी बेजान मुसकराहट जो उन मरनेवालों के लबों पर पैदा हुआ करती है जो ज़ाहिर करने की कोशिश करते हैं कि वह मौत से खायफ[21] नहीं हैं : ''मैं उदास नही हूँ आपकी तबीयत उदास होगी   '' उसने एक ही घूँट में चाय की प्याली ख़ाली कर दी और उठ खड़ा हुआ · ''अच्छा तो अब इजाज़त चाहता हूँ   मुझे एक ज़रूरी काम से जाना है।''

मुझे यक़ीन था कि उसे किसी ज़रूरी काम से नहीं जाना है, मगर मैंने उसे न रोका और जाने दिया—उस दूसरी मुलाकात में भी मैं उसका नाम दरयाफ्त न कर सका।

इतना मैंने जान लिया था कि वह ज़ेहनी और रूहानी तौर पर बेहद परेशान है—वह उदास था, बल्कि यूँ कहिए कि उदासी उसके रगो-रेशे में सरायत[22] कर चुकी थी, मगर वह नहीं चाहता था कि उसकी उदासी का दूसरों को इल्म हो—वह एक हकीक़त को हर घड़ी, हर   म्हा छुपाने में मसरूफ़ रहता, लेकिन नाकाम रहता—क्यों, यह मुझे मालूम नहीं।

उससे तीसरी मर्तबा मेरी मुलाक़ात फिर अपोलो बंदर पर हुई ।

इस दफ़ा मैं जैसे-तैसे उसे अपने घर ले गया—रास्ते में हमारी कोई बातचीत न हुई ।

जब वह मेरे कमरे मे दाख़िल हुआ तो उसके चेहरे पर चंद लम्हात के लिए उदासी छा गई, मगर वह फौरन सँभल गया और उसने अपनी आदत के ख़िलाफ़ अपने आपको बहुत तरो-ताजा और बातूनी ज़ाहिर करने की कोशिश की ।

उसकी हालात देखकर मुझे उस पर और भी ज़्यादा तरस आया—वह एक मौत-जैसी यकीनी हक़ीकत को झुठला रहा था और अपनी उस खुदफरेबी[23] से मुतमइन भी नजर आ रहा था ।

बातों के दौरान में उसकी नज़र मेरी मेज़ पर पडी—मेज़ पर रखी शीशे के फ्रेम मे जड़ी उसको एक लड़की की तसवीर नजर आई ।

तसवीर की तरफ़ बढ़ते हुए उसने कहा : "क्या मैं आपकी इजाजत से यह तसवीर देख सकता हूँ ?"

मैंने कहा : "बसद शौक !"

उसने तसवीर को एक नजर देखा और कुर्सी पर बैठ गया : "अच्छी ख़ूबसूरत लडकी है मैं समझता हूँ कि आपकी " वह रुक गया ।

मैंने कहा : "जी नहीं एक ज़माना हुआ, शायद मैं इस लड़की से मुहब्बत करने लगा था बल्कि यूँ कहिए कि मेरे दिल में थोडी-सी मुहब्बत पैदा हो गई थी, मगर अफ़सोस, इसको खबर तक न हुई और मैं फिर वह ब्याह दी गई यह तसवीर मेरी पहली मुहब्बत की यादगार है, मेरी पहली मुहब्बत जो अच्छी तरह पैदा होने से पहले ही मर गई "

"आपकी पहली मुहब्बत की यादगार इसके बाद भी आपने बहुत-सी मुहब्बतें की होंगी " उसने अपने खुश्क होंठो पर जबान फेरी : "आपकी जिंदगी में तो कई नामुकम्मल और मुकम्मल मुहब्बतें मौजूद होंगी ?"

मैं कहने ही लगा था कि जी नहीं, खाकसार मुहब्बत के मामले मे बंजर है, लेकिन जाने क्यों मैंने झूठ बोल दिया "जी हाँ, यह तो फितरी है आपकी किताबे-जिंदगी भी तो ऐसे ताक़िआत से भरपूर होगी ?"

वह कुछ न बोला, जैसे किसी गहरे समंदर में गोता लगा गया हो ।

जब वह देर तक अपने खयालात में गर्क रहा और मैं उसकी खामोशी से कुछ उदास होने लगा तो मैंने कहा : "अजी हज़रत, किन खयालात में खो गए ?"

वह चौंक पड़ा : "जी मैं कुछ नही, बस ऐसे ही कुछ सोच रहा था ।"

मैंने पूछा : "कोई बीती हुई कहानी याद आ गई क्या ? कोई सपना याद आ गया या पुराने ज़ख़्म हरे हो गए ?"

"ज़ख़्म पुराने ज़ख़्म कई ज़ख़्म तो नहीं हैं, सिर्फ़ एक ही है बहुत गहरा, बहुत कारी[24] और वही एक ज़ख़्म काफ़ी है " यह कहकर वह उठ खडा हुआ और कमरे में टहलने की कोशिश करने लगा ।

उस छोटी-सी जगह में, जहाँ कुर्सियाँ, मेज, चारपाई, सबकुछ पडा था, टहलने के लिए

कोई जगह नही थी—मेज के पास उसे रुकना पडा।

तसवीर को गहरी नजरों से देखते हुए उसने कहा "इसमे और उसमें कितनी मुशाबहत[25] है मगर उसके चेहरे पर ऐसी शोखी नही थी उसकी आँखें बडी थी, मगर इन आँखों की तरह उनमे शरारत नहीं थी वह फिक्रमंद आँखे थीं ऐसी आँखे जो देखती भी हैं और समझती भी हैं " उसने एक सर्द आह भरी और कुर्सी पर बैठ गया "मौत नाकाबिले-फहम चीज है, खासतौर पर उस वक्त जब वह जवानी म आए मैं समझता हूँ, मौत एसी हासिद ताकत है जो किसी को खुश नहीं देख सकती खैर छोडिए इस किस्से को।"

मैंने कहा "नही-नही, आप बात कीजिए, अगर मुनासिब समझें तो सच पूछिए तो मैं यह समझ रहा था कि आपने कभी मुहब्बत न की होगी।"

"आपने कैसे समझ लिया था कि मैंने कभी मुहब्बत न की होगी अभी-अभी तो आप कह रहे थे कि मेरी किताबे-जिंदगी ऐसे वाकिआत से भरी पडी होगी " उसने मेरी तरफ सवालिया निगाहो से देखा : "मैंने अगर मुहब्बत नही की है तो यह दुख मेरे दिल मे कहाँ से पैदा हो गया है मेरी जिंदगी को यह रोग कहाँ से लग गया है मैं उदास क्यों रहता हूँ मुझे अपना होश क्यों नहीं रहता मैं रोज ब रोज मोम की तरह क्यो पिघला जा रहा हूँ "

बजाहिर वह तमाम सवालात मुझसे कर रहा था, मगर मैंने महसूस किया, वह तमाम सवालात खुद अपने आपसे पूछ रहा है—मैंने कहा "मैंने ऐसे ही कह दिया था कि आपकी जिंदगी में ऐसे बहुत से वाकिआत होगे किसी के दिल का हाल जानना आसान बात नही है आपकी उदासी की बहुत-सी वजहे हो सकती हैं जब तक आप मुझे खुद न बताएँ, मैं किसी नतीजे पर कैसे पहुँच सकता हूँ इसमें कोई शक नहीं है कि आप पहले से कहीं ज्यादा कमजोर हो गए हैं आपको यकीनन कोई बहुत बडा सदमा पहुँचा है और मुझे आपसे हमदर्दी है।"

"हमदर्दी " उसकी आँखों में आँसू आ गए : "मुझे किसी की हमदर्दी की जरूरत नहीं, इसलिए कि कोई हमदर्दी उसे वापिस नही ला सकती उस लडकी को मौत की गहराइयो में से निकालकर मेरे हवाले नहीं कर सकती जिससे मुझे प्यार था आपने मुहब्बत नहीं की है; मुझे यकीन है, आपने मुहब्बत नही की है, इसलिए कि मुहब्बत की नाकामी ने आप पर कोई दाग नही छोडा है मेरी तरफ ज़रा गौर से देखिए " यह कहकर उसने जैसे खुद अपने आपको देखा : "मेरे वुजूद में आपको कोई जगह ऐसी नहीं मिलेगी जहाँ मेरी मुहब्बत के नक्श मौजूद न हों मेरा वुजूद मुहब्बत की उस टूटी हुई इमारत का मलबा है मैं आपको अपनी दास्तान कैसे सुनाऊँ और क्यों सुनाऊँ मै महसूस करता हूँ, आप मेरी दास्तान समझ ही न सकेंगे किसी का यह कह देना कि मेरी माँ मर गई है, आपके दिल पर वह असर पैदा नहीं कर सकता जो माँ की मौत ने बेटे पर किया होगा मेरी दास्ताने-मुहब्बत आपको, किसी को भी मामूली मालूम होगी, मगर जो असर मुझ पर हुआ है, उससे कोई भी आगाह नहीं हो सकता, इसलिए कि मुहब्बत मैंने की है और सबकुछ सिर्फ मुझी पर गुजरा है "

वह ख़ामोश हो गया; उसके हलक में तल्खी पैदा हो गई थी और वह बार-बार थूक निगल रहा था।

"क्या हुआ था उसे?" मैंने पूछा।

"बुरा हो मौत का जो हमें ख़ुश न देख सकी बुरा हो मौत का जो हमेशा के लिए उसे अपने परों में समेटकर ले गई वह लडकी नहीं फ़रिश्ता थी आह ! आपने मेरे दिल पर खराशे पैदा कर दी हैं सुनिए, मैं आपको अपनी दर्दनाक दास्तान का कुछ हिस्सा सुनाता हूँ " थोड़ी देर ख़ामोश रहने के बाद उसने कहना शुरू किया : "वह एक बड़े और अमीर घराने की लडकी थी जिस ज़माने मे उसकी और मेरी पहली मुलाकात हुई, मेरे पास एक कौडी भी नही थी मैं अपने बाप-दादा की सारी जायदाद ऐयाशियों मे बर्बाद कर चुका था और अपना वतन छोडकर लखनऊ चला आया था अच्छे वक्तों में मेरे पास ख़ुद की मोटर हुआ करती थी, इसलिए मैं मोटर चलाना जानता था लखनऊ मे मोटर चलाने ही को मैंने अपना पेशा करार देने का फैसला कर लिया और पहली मुलाजमत मुझे डिप्टी साहब के यहाँ मिली वह उन्हीं डिप्टी साहब की इकलौती लडकी थी " वह अपने खयालात मे खो गया और दफअतन चुप हो गया।

मै भी खामोश रहा।

थोडी देर के बाद वह चौंका और उसने पूछा "मै क्या कह रहा था?"

मैंने कहा : "आपको पहली मुलाजमत डिप्टी साहब के यहाँ मिली।"

हाँ, वह उन्ही डिप्टी साहब की इकलौती लडकी थी मैं हर रोज सुबह नौ बजे जोहरा को मोटर मे स्कूल ले जाया करता था वह पर्दा करती थी, मगर मोटर ड्राइवर से कोई कब तक छुप सकता है मैंने उसे दूसरे रोज ही देख लिया था वह सिर्फ खूबसूरत लडकी ही नही थी, बडी संजीदा और मतीन भी थी, उसकी सीधी माँग ने उसके चहरे पर एक खास किस्म का विकार[26] पैदा कर दिया था वह वह, मैं क्या अर्ज करूँ, वह क्या थी मेरे पास अल्फाज नही हैं कि मैं उसकी सूरत और सीरत बयान कर सकूँ "

वह बहुत दूर तक अपनी जोहरा की खूबियाँ बयान करता रहा—उसने कई मर्तबा जोहरा की तसवीर खींचने की कोशिश की, मगर नाकाम रहा, ऐसा मालूम हो रहा था कि उसके दिमाग़ में खयालात जरूरत से ज़्यादा जमा हो गए है—कभी-कभी बात करते-करते उसका चेहरा तमतमा उठता, फिर थोडी देर के बाद बुझ जाता और वह आहों[27] मे गुफ़्तगू करता शुरू कर देता—वह अपनी दास्तान बहुत आहिस्ता-आहिस्ता सुना रहा था, जैसे खुद भी मजा ले रहा हो—एक-एक टुकडा जोडकर उसने अपनी दास्तान मुकम्मल की, जिसका माहसल[28] यह है :

जोहरा से उसे बेपनाह मुहब्बत हो गई—उसके कुछ दिन तो तरह-तरह के मनसूबे बाँधने में गुज़र गए, मगर जब उसने संजीदगी से अपनी मुहब्बत पर गौर किया तो उसने ख़ुद को जोहरा से बहुत दूर पाया—एक मोटर ड्राइवर अपने आका की लडकी से महब्बत कैसे कर सकता है; इस तल्ख हकीकत का एहसास उसके दिल में पैदा हुआ तो वह मगमूम[29] रहने लगा—एक रोज उसने बड़ी जुरअत से काम लिया और एक पुर्जे पर चंद सतरें लिखकर

ज़ोहरा की एक किताब में रख दीं : ज़ोहरा, मैं अच्छी तरह जानता हूँ कि मैं तुम्हारा नौकर हूँ; तुम्हारे वालिद साहब मुझे तीस रुपए माहवार देते हैं, मगर मैं तुमसे मुहब्बत करता हूँ मैं क्या करूँ, क्या न करूँ, मेरी समझ में कुछ नहीं आता 'दूसरे रोज़ जब वह ज़ोहरा को मोटर मे स्कूल ले जाने लगा तो उसके हाथ काँप रहे थे; मोटर उससे सँभल न रही थी; यह महज इत्तिफाक है कि कोई एक्सीडेंट न हुआ—शाम को जब वह जोहरा को स्कूल से वापिस ला रहा था तो रास्ते में जोहरा ने उसे एक जगह मोटर रोकने को कहा; उसने जब मोटर रोक ली तो जोहरा ने निहायत संजीदगी के साथ कहा : "देखो नईम, आइंदा तुम ऐसी हरकत कभी न करना मैंने अब्बा जी से तुम्हारे ख़त का जिक्र नही किया है, लेकिन अगर तुमने फिर ऐसी हरकत की तो मजबूरन मुझे उनसे कहना पडेगा चलो, अब मोटर चलाओ 'जोहरा की बात सुनकर उसने बहुत कोशिश की कि वह डिप्टी साहब की नौकरी छोड दे और जोहरा की मुहब्बत को अपने दिल से हमेशा के लिए मिटा दे, मगर वह कामयाब न हो सका—एक महीना इसी कशमकश में गुजर गया—एक रोज उसने फिर जुरअत से काम लेकर एक और ख़त लिखा और जोहरा की एक किताब में रखकर अपनी क़िस्मत से फैसले का इंतजार करने लगा; उसे यकीन था कि दूसरे रोज़ सुबह उसे नौकरी से बरतरफ कर दिया जाएगा, मगर ऐसा न हुआ—शाम को स्कूल से वापिस आते हुए जोहरा उससे हमकलाम हुई 'अगर तुम्हे अपनी इज्जत का खयाल नही तो कम अज कम तुम्हें मेरी इज्जत का तो कुछ खयाल होना चाहिए।' जोहरा ने अपनी बात कुछ इस संजीदगी और मतानत[30] से कही कि उसकी सारी उम्मीदे फ़ना हो गईं; उसने कस्द[31] कर लिया कि वह नौकरी छोड़ देगा और लखनऊ से हमेशा के लिए चला जाएगा—महीने के आखिर मे उसे अपनी कोठड़ी मे बैठकर लालटेन की मद्धम रोशनी मे जोहरा को आखिरी ख़त लिखा और निहायत दर्द भरे लहजे मे कहा : 'जोहरा, मैंने बहुत कोशिश की है कि तुम्हारे कहने पर अमल कर सकूँ, मगर अपने दिल पर मेरा इख्तियार नहीं रहा है यह मेरा आखिरी ख़त है कि मैं कल शाम लखनऊ छोड दूँगा, इसलिए तुम्हे अपने वालिद से कुछ कहने की जरूरत नहीं तुम यह खयाल न करना कि मैं तुमसे दूर रहकर तुमसे मुहब्बत नही करूँगा मैं कहीं भी रहूँ, मेरा दिल तुम्हारे कदमो ही मे होगा मैं हमेशा उन दिनों को याद किया करूँगा जब मैं मोटर इसलिए आहिस्ता-आहिस्ता चलाता था कि तुम्हें धक्का न लग जाए मैं इसके सिवा तुम्हारे लिए और कर ही क्या सकता था 'यह ख़त भी उसने ज़ोहरा की किताब में रख दिया—ज़ोहरा ने सुबह स्कूल जाते हुए उससे कोई बात न की और शाम को रास्ते में बी उसने कुछ न कहा—वह बिलकुल नाउम्मीद होकर अपनी कोठड़ी में चला आया, उसने अपना थोड़ा-बहुत असबाब बाँधकर एक तरफ रख दिया और लालटेन की अधी रोशनी मे चारपाई पर बैठकर सोचने लगा कि उसके और ज़ोहरा के दरमियान कितना फासला है—वह बेहद मग़मूम था और अपनी पोजीशन मे अच्छी तरह वाक़िफ़ था; उसे इस बात का एहसास था कि वह एक अदना दर्जे का मुलाज़िम है और अपने आका की लडकी से मुहब्बत करने को कोई हक नहीं रखता, लेकिन वह क्या करे कि वह बेइख़्तियार ज़ोहरा से मुहब्बत करता है और उसकी मुहब्बत फ़रेब नहीं है—इसी उधेडबुन में रात हो गई और उसकी

कोठड़ी के दरवाज़े पर दस्तक हुई; उसका दिल धक-से रह गया; उसने खयाल किया कि माली होगा था मुम्किन है, माली के घर मे कोई एकाएकी बीमार पड गया हो और माली उससे कोई मदद लेने आया हो—लेकिन जब उसने दरवाजा खोला तो हैरान रह गया—जोहरा उसके सामने खडी थी—ज़ोहरा—दिसंबर की सर्दी मे वह शॉलद के बगैर उसके सामने खडी थी—उसकी ज़बान गूँगी हो गई; उसकी समझ मे कछ न आया कि क्या कहे—चद लम्हात कब्र की-सी ख़ामोशी में गुजर गए तो जोहरा के होठ वा हुए और थरथराते हुए लहजे में उसने कहा : 'नईम, मैं तुम्हारे पास आ गई हूँ बताओ, अब तुम क्या चाहते हो लेकिन इससे पहले कि मैं तुम्हारी कोठडी मे दाखिल होऊँ, मैं तुमसे चद सवाल पूछना चाहती हूँ ' वह खमोश रहा—जोहरा ने उससे पूछा 'क्या वाकई तुम मुझसे मुहब्बत करते हो ?' उसको जैसे ठेस-सी लगी; उसका चेहरा तमतमा उठा 'जोहरा तुमने ऐसा सवाल किया है कि अगर मैं जवाब दूँ तो मेरी मुहब्बत की तौहीन होगी मैं तुमसे पूछता हूँ · 'क्या मैं मुहब्बत नही करता ?' जोहरा ने उसके सवाल का जवाब न दिया और थोडी देर खामोश रहकर बोली · 'मेरे अब्बा जी के पास काफ दौलत है, मगर मेरे पास एक फूटी कौडी भी नहीं जो कुछ मेरा कहा जाता है, मेरा नही, उनका है क्या तुम मुझसे दौलत के बगैर भी मुहब्बत करोगे ?' वह बहुत जज्बाती आदमी था; जोहरा के सवाल ने उसके विकार को जख्मी कर दिया; उसने बडे दुख भरे लहजे मे कहा 'जोहरा, खुदा के लिए मुझसे ऐसी बाते न पूछो जिनका जवाब इस क़दर आम हो चुका है कि थर्ड क्लास इश्किया नाविलों में भी मिल सकता है ' ज़ोहरा कोठडी में दाखिल हो गई और चारपाई पर बैठकर कहने लगी 'नईम, मैं तुम्हारी हूँ और हमेशा तुम्हारी रहूँगी ' जोहरा ने अपना कौल पूरा किया—जब वे दोनों लखनऊ छोड़कर दिल्ली चले आए और शादी करके एक छोटे-से मकान मे रहने लगे तो डिप्टी साहब उन्हे ढूँढ़ते-ढूँढ़ते वहाँ पहुँच गए—वह घर पर नही था कि उसे दिल्ली मे नौकरी मिल गई थी और वह ड्यूटी पर था—डिप्टी साहब ने जोहरा को बहुत बुरा-भला कहा कि उनकी इज्जत खाक में मिल गई है—वह चाहते थे कि जोहरा, जो कुछ हो चुका है, भूल जाए और नईम को छोड दे, वह नईम को दो-तीन हजार रुपए देने के लिए भी तैयार थे, मगर उन्हे नाकाम लौटना पडा कि जोहरा किसी कीमत पर भी नईम को छोड़ने के लिए तैयार न हुई—जोहरा ने डिप्टी साहब से कहा . 'अब्बा जी, मैं नईम के साथ बहुत खुश हूँ आप मेरे लिए नईम से अच्छा शौहर तलाश नही कर सकते थे अगर आप हमे दुआएँ दे सके तो हम आपके ममनून[32] होगे ' डिप्टी साहब ने जब यह गुफ्तगू सुनी तो बहुत ख़श्मआलूद[33] हुए; उन्होंने नईम को कैद करा देने की धमकी दी तो जोहरा ने कहा 'अब्बा जी, नईम का कोई क़ुसूर नही है सच तो यह है कि हम दोनो बेक़ुसूर हैं हम दोनो एक-दूसरे से मुहब्बत करते हैं नईम मेरा शौहर है और यह कोई कुसूर नही है फिर मैं नाबालिग़ नहीं हूँ ' डिप्टी साहब अक़्लमंद थे; वह फौरन समझ गए कि जब उनकी बेटी ही रंजामद है तो नईम पर कैसे जुर्म आयद हो सकता है—वह ज़ोहरा को हमेशा के लिए छोड़कर चले गए—ज़ोहरा और नईम की ज़िंदगी बड़े मज़े में गुजर रही थी—नईम की आमदन बहुत कम थी और ज़ोहरा को, जो नाज़ो-नअम में पली थी, खुरदरा कपडे पहनने

पड़ते थे और घर के सब काम अपने हाथ से करना पड़ते थे। मगर वह ख़ुश थी और ख़ुद को एक नई दुनिया में पाती थी जहाँ क़दम-क़दम पर नईम की मुहब्बत के नए-नए पहलू मुनकशिफ[14] होते थे; वह बहुत सुखी थी, बहुत सुखी—नईम भी बहुत ख़ुश था—एक रोज ख़ुदा का करना ऐसा हुआ कि जोहरा के सीने मे एक मूज़ी दर्द उठा और पेशतर इसके कि नईम कुछ कर सकता, जोहरा इस दुनिया से रुख़्सत हो गई और नईम की दुनिया हमेशा-हमेशा के लिए तारीक कर गई

यह दास्तान उसने रुक-रुककर और मजे ले-लेकर क़रीबन चार घटों मे मुझे सुनाई—जब वह अपना हाले-दिल सुना चुका था तो उसका चेहरा बजाय ज़र्द होने के तमतमा रहा था जैसे किसी ने उसके अंदर ख़ून दाख़िल कर दिया हो—लेकिन उसकी आँखो मे आँसू थे और उसका हलक़ सूख गया था।

जब उसकी दास्तान खत्म हो गई तो वह फौरन उठ खडा हुआ जैसे उसे बहुत जल्दी हो—फिर उसने कहा "मैंने बहुत गलती की जो आपको अपनी दास्ताने-मुहब्बत सुना दी मैंने बहुत बडी गलती की है जोहरा की दास्तान सिर्फ मुझ ही तक महदूद रहनी चाहिए थी लेकिन लेकिन " उसकी आवाज भर्रा गई "आह, मैं जिंदा हूँ और वह और वह " वह और कुछ न कह सका और जल्दी से मेरा हाथ दबाकर कमरे से बाहर चल गया।

नईम से फिर मेरी मुलाकात कभी न हुई—अपोलो बंदर पर मैं कई मर्तबा उसकी तलाश मे गया, मगर वह न मिला।

छ या सात महीने बाद मुझे उसका एक ख़त मिला जो मैं नकल कर रहा हूँ

'मंटो साहब, आपको याद होगा, मैंने आपके मकान पर आपको अपनी दास्ताने-मुहब्बत सुनाई थी—मेरी दास्ताने-मुहब्बत महज एक फसाना था, एक झूठा फसाना—दरहकीकत न कोई जोहरा थी, न कोई नईम है—मैं वैसे तो मौजूद हूँ, मगर मैं वह नईम नही हूँ जिसने जोहरा से मुहब्बत की थी—आपने एक बार कहा था कि बाज लोग ऐसे भी होते हैं जो मुहब्बत के मामले में बाँझ होते हैं—मैं भी उन वदकि़स्मत आदमियों मे से एक हूँ जिसकी सारी जवानी अपना दिल परचाने मे गुज़र गई है—जोहरा से नईम की मुहब्बत मेरा एक दिलबहलावा था और जोहरा की मौत—मैं अब तक यह नही समझ सका हूँ कि मैंने उसे क्यो मार दिया था—मुम्किन है, मेरे इस अमल मे भी मेरी जिंदगी की सियाही का दखल हो—मुझे मालूम नही, आपने मेरी दास्ताने-मुहब्बत को झूठा समझा था या सच्चा, लेकिन मै आपको एक अजीबो-गरीब बात बताता हूँ कि मैंने, उस झूठी दास्ताने-मुहब्बत के ख़ालिक[15] ने उस दास्तान को बिलकुल सच्चा समझा था, सौ फीसदी हक़ीकत पर मब्नी[16]—मुझे महसूस हुआ था कि मैंने ज़ोहरा से मुहब्बत की है और वह सचमुच मर चुकी है—आपको यह पढ़कर और भी ताज्जुब होगा कि पिछले छः-सात माह में उस दास्तान में हक़ीक़त का अन्सर बतदरीज[17] बढ़ता रहा है और अब ज़ोहरा की आवाज, उसकी हँसी मेरे कानो में गूँजने लगी

है, मैं उसके साँसों की गर्मी महसूस करने लगा हूँ—अब ज़हरा मेरे नज़दीक महज़ एक दास्तान नहीं है, लेकिन मैं तो दास्तान हूँ; वह मर चुकी है, इसलिए मुझे भी मर जाना चाहिए—यह ख़त आपको मेरी मौत के बाद मिलेगा; अलविदा—मैंने यह चंद सतरें सिर्फ इसलिए लिखी हैं कि आप अफ़सानानिगार हैं; अब अगर आप कोई अफसाना तैयार कर लें तो आपको सात-आठ रुपए मिल जाएँगे—आपने एक मर्तबा कहा था कि आपको एक अफ़साने का मुआवज़ा सात से दस रुपए तक मिल जाता है—यह मेरा तोहफा होगा, अच्छा अलविदा—आपका मुलाक़ाती : नईम।'

नईम ने अपने लिए ज़हरा बनाई और मर गया।

मैंने अपने लिए यह अफ़साना तख़्लीक़[38] किया और ज़िंदा हूँ।

यह मेरी ज़्यादती है!

---

1 संकल्प, इरादा; 2. श्रेष्ठ, सम्मानित, 3 कृत्रिम, बनावटी, 4 झूठ बोलना, 5 कहने के अंदाज, 6 मुसीबत, 7. ख़ुशी, प्रसन्नता, 8 रूप में, तौर पर, 9 अवचेतन, 10 गर्भ, 11. कमियो, ख़राबियों, त्रुटियों, 12. सामर्थ्य, योग्यता, 13. गर्भपात, 14 आग्रह, अनुरोध, 15 उद्देश्य का मोती, अभिलाषित, 16. लोलुपतापूर्ण, 17. निरर्थक, बकवास, 18 छोड़ दूँ, 19 बेचैनी 20 सजीवता, 21 भयभीत, 22 प्रवेश करना, रमना, 23. अपनी कल्पना मे अपने-आपको बहुत बड़ा मानना, 24. घातक, ख़तरनाक, 25 समानताएँ, एकरूपता; 26 गंभीरता, 27 रोते हुए स्वर में; 28 निष्कर्ष, सारांश; 29. उदास, 30. गंभीरता; 31. संकल्प, निश्चय; 32. कृतघ्न, अहमानमद, 33. क्रोधित, 34 व्यक्त ज़ाहिर, 35. रचयिता, सृष्टिकर्ता, 36 आधारित; 37. धीरे-धीरे, 38 उत्पन्न करना, सृजन।

टेढ़ी लकीर

अगर सडक सीधी होती, बिलकुल सीधी तो उसके कदम मनो भारी हो जाते थे।

वह कहा करता था "सीधापन जिंदगी के खिलाफ है, जिंदगी जो पेच-दर-पेच रास्तों से भरी हुई है "

जब हम दोनों बाहर सैर को निकलते तो इस दौरान मे वह कभी सीधे रास्ते पर न चलता—उसे बाग का वह हिस्सा बहुत पसद था, जहाँ बल खाती हुई रविशे[1] बनी हुई थीं।

एक बार उसने अपनी टॉगो को सीने के साथ जोडकर बडे दिलकश अदाज में मुझसे कहा था "अब्बास, अगर मुझे और कोई काम न हो तो बखुदा मैं अपनी सारी जिंदगी कश्मीर की पहाडी सडको पर चढ़ने-उतरने मे गुजार दूँ क्या पेच हैं एक पल तुम मुझे नजर आते हो और दूसरे ही पल मेरी नजरो से ओझल हो जाते हो कितना इसरार[2] है वहाँ सीधे रास्ते पर तुम हर सामने आनेवाली चीज देख सकते हो, मगर वहाँ हर सामने आनेवाली चीज तुम्हारी आँखो के सामने बिलकुल अचानक आ जाएगी, मौत की तरह अचानक इस अचानक मे कितना मजा है।"

वह एक दबला-पतला नौजवान था, बेहद दुबला, उसको एक नजर देखने से अक्सर औकात मालूम होता कि हस्पताल के किसी बिस्तर से कोई जर्दरू बीमार उठकर चला आया है, उसकी उम्र बमुश्किल बाईस बरस के करीब होगी, मगर बाज औकात वह इससे बहुत ज्यादा उम्र का मालूम होता था, और अजीब बात है कि कभी-कभी उसको देखकर मैं यह खयाल करने लगता कि वह बच्चा बन गया है, उसमे एकाएकी इस कदर तब्दीली हो जाया करती कि मुझे अपनी निगाहो की सेहत[3] पर शब्ह होने लग जाता।

एक मुलाकात की तफसील यूँ है—वह मुझे बाजार मे मिला तो मैं उसे देखकर हैरान रह गया।

वह हाथ मे एक बडा-सा सेब थामे उसे दाँतो से काट-काटकर खा रहा था, उसका चेहरा बच्चो की मानिंद एक नाकाबिले-बयान खुशी के बायस तमतमाया हुआ था; उसका चेहरा गवाही दे रहा था कि सेब बहुत लजीज है।

सेब के रस से भरे हुए हाथो को बच्चो के मानिंद अपनी पतलून से साफ करके उसने मेरा हाथ बडे जोश से दबाया और कहा अब्बास, वह दो आने माँगता था, मगर मैंने उसे एक ही आने मे राजी कर लिया।" उसके होठ जफर मदाना[4] हँसी के बायस थरथराने लगे

फिर उसने जेब से एक लट्टू निकाला और मेरे हाथ में थमाकर कहा : "तुमने लट्टू तो बहुत देखे होंगे, पर ऐसा लट्टू तुम्हारे देखने में कभी न आया होगा ऊपर का बटन दबाओ यार दबाओ अरे दबाओ ना !"

मैं सख्त मुतहय्यिर[5] हो रहा था—उसने मेरी तरफ़ देखा और लट्टू का बटन दबा दिया।

लट्टू मेरी हथेली पर से उछला और सड़क पर गिरकर घूमने लगा—उसने ख़ुशी के मारे उछलना शुरू कर दिया "देखो अब्बास देखो, देखो इसका नाच "

मैंने लट्टू की तरफ देखा, जो मेरे सिर के मानिंद घूम रहा था।

हमारे इर्द-गिर्द बहुत-से आदमी जमा हो गए थे—शायद वह समझ रहे थे कि हम दवाइयाँ बेचेंगे।

"लट्टू उठाओ और चलो लोग हमारा तमाशा देखने के लिए जमा हो रहे हैं " मेरे लहजे में शायद थोड़ी-सी तेज़ी थी, क्योंकि उसकी सारी ख़ुशी मांद पड गई; उसके चेहरे की तमतमाहट गायब हो गई और उसने मेरी तरफ़ कुछ इस अंदाज़ से देखा, जैसे एक नन्हा-सा बच्चा रोनी मूरत बनाकर कह रहा हो . 'मैंने तो कोई बुरी बात नहीं की है, फिर मुझे क्यों झिडका गया है ?'

उसने लट्टू वहीं सड़क पर छोड दिया और मेरे साथ चल पडा।

घर तक मैंने और उसने कोई बात न की—गली के नुक्कड पर पहुँचकर मैंने उसकी तरफ़ देखा—इस कलील[6] अर्से में उसके चेहरे पर एक इन्किलाब पैदा हो गया था—वह मुझे एक तफ़क्कुरज़दा[7] बूढ़ा नजर आया।

मैंने पूछा : "क्या सोच रहे हो ?"

उसने जवाब दिया "मैं सोच रहा हूँ कि अगर ख़ुदा को इसान की ज़िंदगी बसर करना पड़ जाए तो क्या हो ?"

वह इसी क़िस्म की बेढंगी बातें सोचा करता था—बाज़ लोग समझते थे कि वह दानिस्तन[8] अपने आपको निराला ज़ाहिर करने के लिए ऐसे खयालात का इज़हार करता है, मगर यह बात गलत थी, फितरी तौर पर उसकी तबीयत का रुझान ऐसी बातों की तरफ रहता था, जो किसी और के दिमाग़ में नहीं आती थीं।

आप यक़ीन नहीं करेंगे, मगर यह सच है कि उसको जब कभी कोई ज़ख्म लगा, उसने मज़ा लिया—वह मुझसे कहा करता था : "अगर मेरे जिस्म पर हमेशा के लिए कोई ज़ख्म बन जाए तो कितना अच्छा हो मुझे दर्द में बड़ा मज़ा आता है।"

मुझे अच्छी तरह याद है, स्कूल में एक रोज़ उसने मेरे सामने अपने बाज़ू को तेज़ ब्लेड से ज़ख़्मी कर लिया था कि कुछ रोज़ उसके बाज़ू में दर्द रहे—एक तरफ़ तो वह मुतादि्दद[9] बीमारियों से बचाव के टीके नहीं लगवाता था कि उन बीमारियों का ख़ौफ़ न ख़त्म हो जाए, तो दूसरी तरफ़ वह बिन मतलब ऊटपटाँग क़िस्म के टीके लगवाता रहता था कि उसे बुख़ार चढ़ जाए।

उसकी हमेशा यह ख़्वाहिश होती थी कि दो-तीन रोज़ उसका बदन बुख़ार के बायस

तपता रहे—जब कभी वह बुख़ार को दावत दिया करता था तो मुझसे कहा करता था : "मेरे घर एक मेहमान आनेवाला है, इसलिए तीन रोज तक मुझे फ़ुर्सत नहीं मिलेगी।"

एक रोज़ मैंने उससे पूछा : "तुम आए दिन यह टीका क्यों लगवाते रहते हो?"

उसने जवाब दिया : "अब्बास, मैं तुम्हें बता नहीं सकता कि टीका लगवाने से जो बुख़ार चढ़ता है, उसमें कितनी शाइरी होती है जब जोड-जोड में दर्द होता है और आज़ा-शिकनी[10] होती है तो बख़ुदा ऐसा मालूम होता है कि तुम किसी निहायत ही जिद्दी आदमी को समझाने की कोशिश कर रहे हो और फिर बुख़ार बढ़ जाने से जो ख़्वाब आते हैं, वल्लाह किस कदर बेरब्त होते हैं बिलकुल हमारी ज़िंदगी की मानिंद अभी तुम देखते हो कि तुम्हारी शादी किसी निहायत ही हसीन औरत से हो रही है और दूसरे लम्हे यही औरत तुम्हारी आगोश में एक कवी हैकल[11] पहलवान बन जाती है।"

मैं उसकी अजीबो-गरीब आदतों और बातों का आदी हो चुका था, लेकिन इसके बावुजूद एक रोज़ मुझे उसके दिमागी तवाज़ुन[12] पर शुब्हा हुआ।

मैंने उससे अपने एक उस्ताद का तआरुफ़ कराया, जिसकी मैं बेहद इज़्जत करता था।

डॉक्टर शाकिर ने बड़ी गर्मजोशी से उसका हाथ दबाया और कहा : "मैं आपसे मिलकर बहुत खुश हुआ हूँ।"

"इसके बरअक्स मुझे आपसे मिलकर कोई ख़ुशी नहीं हुई।" उसका जवाब था।

मैं बेहद शर्मिंदा हुआ। आप कयास फरमाइए, उस वक्त मेरी क्या हालत हुई होगी; मैं शर्म के मारे अपने उस्ताद के सामने गडा जा रहा था—और वह बडे इत्मीनान से सिगरेट के कश लगाता हुआ हॉल से बाहर जा रहा था।

डॉक्टर शाकिर ने उसकी हरकत को बुरा समझा और मुझसे बड़े तेज लहजे में कहा : "मालूम होता है, तुम्हारे दोस्त का दिमाग़ ठिकाने नहीं।"

मैंने उसकी तरफ से माजरत[13] तलब की और मामला रफ़ा-दफा किया— मैं वाकई बेहद शर्मिंदा था कि डॉक्टर शाकिर को मेरी वजह से ऐसा सख्त फ़िकरा सुनना पडा।

शाम को मैं उसकी तरफ गया, इस इरादे के साथ कि उससे अच्छी तरह बाजपुर्स[14] करूँगा और अपने दिल की भडास निकालूँगा।

वह मुझे लाइब्रेरी के बाहर मिल गया—मैंने छूटते ही कहा : "तुमने आज डॉक्टर शाकिर की बहुत बेइज़्जती की है मालूम होता है, तुमने मजलिसी आदाब को ख़ैरबाद कह दिया है।"

वह मुसकराया : "अरे छोडो इस किस्से को आओ कोई और काम की बात करें।"

मैं उस पर बरस पड़ा।

वह ख़ामोशी से मेरी तमाम सख़्त बातें सुनता रहा, फिर उसने कहा : "अगर मुझसे मिलकर किसी शख़्स को ख़ुशी होती है तो ज़रूरी नहीं कि उससे मिलकर मुझे भी ख़ुशी हासिल हो और फिर पहली मुलाक़ात पर सिर्फ़ हाथ मिलाने से मैंने उसके दिल में ख़ुशी पैदा कर दी हो, यह मेरी समझ में तो आता नहीं तुम्हारे डॉक्टर साहब ने उस रोज बीस-पच्चीस आदमियों से तआरुफ किया और हर शख़्स से उन्होंने यही कहा : 'मैं आपसे

मिलकर बहुत ख़ुश हुआ हूँ...' क्या यह मुम्किन है कि हर शख़्स एक ही क़िस्म के तास्सुरात[15] पैदा करे तुम मुझसे फ़िज़ूल बातें न करो आओ अंदर चलें !"

मैं एक सहरज़दा[16] आदमी की तरह उसके साथ हो लिया और लाइब्रेरी के अंदर जाकर अपना सब ग़ुस्सा भूल गया—मैं सोचने लगा कि उसने जो कुछ कहा था, सही है; फ़ौरन ही मेरे दिल में एक हसद-सा पैदा हुआ कि इस शख़्स में इतनी क़ुव्वत[17] क्यों है कि वह अपने ख़यालात का इज़हार बेधड़क कर देता है।

पिछले दिनों मेरे एक अफ़सर की दादी मर गई थी; मुझे उसके सामने मजबूरन ग़म की कैफ़ियत तारी करनी पड़ी थी और उससे अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ दस-पंद्रह मिनट तक अफ़सोस ज़ाहिर करना पड़ा था; उसकी दादी से मुझे कोई दिलचस्पी न थी और न ही उसकी मौत ने मेरे दिल पर कोई असर किया था, लेकिन इसके बावुजूद मुझे नक़ली जज़्बात तैयार करने पड़े थे—इसका साफ मतलब था कि मेरा कैरेक्टर बहुत कमज़ोर है; इसी ख़याल ने मेरे दिल में हसद[18] की चिंगारी पैदा की थी और मैं अपने हलक़ में एक नाक़ाबिले- बर्दाश्त तल्ख़ी महसूस करने लगा था—यह कैफ़ियत एक वक़्ती और हंगामी जज़्बा था, जो हवा के एक तेज़ झौंके के मानिंद आया और गुज़र गया; मैं बाद में ख़ुद से नादिम[19] भी हुआ।

मुझे उससे बेहद मुहब्बत थी, लेकिन मेरी इस मुहब्बत में ग़ैर इरादी तौर पर कभी-कभी नफ़रत की झलक भी नज़र आती थी—एक रोज़ मैंने उसकी साफ़गोई से मुतास्सिर होकर कहा था : "यह क्या बात है कि बाज़ औक़ात मैं तुमसे नफ़रत करने लगता हूँ।" उसने मुझे यह जवाब देकर मुतमइन कर दिया था : "तुम्हारा दिल, जो मेरी मुहब्बत से भरा हुआ है, एक ही चीज़ को बार-बार देखकर कभी-कभी तंग आ जाता है और किसी दूसरी शै की ख़्वाहिश करने लग जाता है और फिर अगर तुम मुझसे कभी-कभी नफरत नहीं करोगे तो मुझसे हमेशा मुहब्बत कैसे करोगे इंसान अजीब क़िस्म की उलझनों का मजमूआ है।"

मैं और वह अपने वतन से बहुत दूर थे, एक ऐसे बड़े शहर में जहाँ ज़िंदगी तारीक क़ब्र-सी मालूम होती है, मगर उसे कभी उन गलियों की याद न सताती थी, जहाँ उसने अपना बचपन और अपने शबाब का ज़माना-ए-आग़ाज़[20] गुज़ारा था; ऐसा मालूम होता था कि वह उसी बड़े शहर में पैदा हुआ है।

मेरे चेहरे से हर शख़्स यह मालूम कर लेता था कि मैं ग़रीबुलवतन हूँ, मगर वह इन जज़्बात से यकसर आरी[21] था—वह कहा करता था : "वतन की याद बहुत बड़ी कमज़ोरी है एक जगह से ख़ुद को चिपका देना ऐसा ही है, जैसे एक आज़ाद साँड को खूँटे से बाँध दिया जाए।"

इस क़िस्म के ख़यालात के मालिक की, जो हर शै को टेढ़ी ऐनक से देखता हो और मुरव्वजा रुसूम[22] के ख़िलाफ़ चलता हो, बाक़ायदा निकाहख़्वानी हो, यानी पुरानी रुसूम के मुताबिक़ उसका अक्द[23] अमल में आए तो क्या आपको ताज्जुब न होगा; मुझे यक़ीन है, ज़रूर होगा।

एक रोज़ शाम को जब वह मेरे पास आया और बड़े संजीदा अंदाज़ में उसने मुझे अपने

निकाह की ख़बर सुनाई तो आप यक़ीन करें, मेरी हैरत की कोई इंतिहा न रही। मेरी हैरत का बायस यह वजह न थी कि वह शादी कर रहा है; नहीं, मुझे ताज्जुब इस बात पर हुआ था कि उसने लड़की देखे बग़ैर, पुराने ख़ुतूत के मुताबिक निकाह की रस्म में शामिल होना क़ुबूल कैसे कर लिया—वह हमेशा उन मौलवियों का मज़ाक उडाया करता था, जो लड़की और लड़के को रिश्ता-ए-इज़्दिवाज[24] में बाँधते हैं। वह कहा करता था : ''यह बुड्ढे मौलवी मुझे गठिया के मारे पहलवान मालूम होते हैं, जो अपने अखाडे मे छोटे-छोटे लड़को की कुश्तियाँ देखकर अपनी हिस[25] पूरी करते हैं।''

और फिर वह शादी या निकाह पर लोगों के जमघटे का भी तो कायल न था। मगर···मगर उसका निगाह पढ़ाया गया; मेरी आँखों के सामने मौलवी ने, उस मौलवी ने, जिससे उसको सख़्त चिढ़ थी, जिसको वह बुड्ढा तोता कहा करता था, उसका निकाह पढ़ा और छुहारे बाँटे गए··· मैं सारी कार्रवाई यूँ देख रहा था, गोया सोते में कोई सपना देख रहा हूँ।

निकाह हो गया, दूसरे लफ़्ज़ों में अनहोनी बात हो गई और जो ताज्जुब मुझे पहले हुआ था, बाद में भी बरक़रार रहा, मगर मैंने इसके मुताल्लिक़ उससे ज़िक्र न किया, इस ख़याल से कि शायद उसे नागवार गुज़रे, लेकिन मैं दिल ही दिल में इस बात पर ख़ुश था कि आख़िरकार उसे उस दायरे में लौटना ही पड़ा, जिसमें और सब ज़िंदगी बसर कर रहे हैं। निकाह करके वह अपने उसूलों के टेढ़े मीनार से बहुत बुरी तरह फिसला था और उस गढ़े में सिर के बल आन गिरा था, जिसको वह बेहद ग़लीज कहा करता था—एक रोज़ मैंने सोचा तो मेरे जी में आई कि उस कज रफ्तार[26] के पास जाऊँ और इतना हँसूँ, इतना हँसूँ कि मेरे पेट में बल पड़ जाएँ।

जिस रोज़ मेरे दिल में यह ख़्वाहिश पैदा हुई, उसी रोज दोपहर को वह मेरे घर आया।

निकाह हुए तीन महीने गुज़र चुके थे और इस दौरान में वह हमेशा उदास-उदास-सा रहा था—उस दिन उसका चेहरा चमक रहा था और उसकी नाक, जो चंद रोज पहले भद्दी नयाम[27] के अंदर छुपी हुई तलवार का नक़्शा पेश करती थी, नुमायाँ तौर पर नज़र आ रही थी।

वह मेरे कमरे के अदर दाखिल हुआ और सिगरेट सुलगाकर मेरे पास बैठ गया।

उसके होंठों के इख़्तितामी कोने[28] कँपकँपा रहे थे—साफ़ ज़ाहिर था कि वह कोई बडी अहम बात सुनानेवाला है; मैं हमातन गोश[29] हो गया।

उसने सिगरेट के धुएँ का छल्ला बनाया और उसमें अपनी एक उँगली दाखिल करते हुए कहा : ''अब्बास, मैं कल यहाँ से जा रहा हूँ।''

''जा रहे हो?'' मेरी हैरत की कोई इंतिहा न रही।

''मैं कल यहाँ से जा रहा हूँ, हमेशा के लिए··· मैं तुम्हें कभी इत्तिला देने न आता, मगर मुझे तुमसे कुछ रुपए लेने हैं, जो तुमने मुझसे क़र्ज़ ले रखे हैं··· क्या तुम्हें याद है?''

मैंने जवाब दिया··· ''हाँ मुझे याद है, पर तुम जा कहाँ रहे हो··· ? और फिर हमेशा के लिए··· !''

"बात यह है कि मुझे अपनी बीवी से इश्क़ हो गया है और कल रात मैं उसे भगाकर अपने साथ लिए जा रहा हूँ! वह तैयार हो गई है!"

उसकी बात सुनकर मुझे इस क़दर हैरत हुई कि मैं बेवकूफ़ों की मानिंद हँसने लगा और देर तक हँसता रहा—वह अपनी मन्कूहा[30] बीवी को, जिसे वह जब चाहता, उँगली पकडकर अपने साथ कहीं भी ले जा सकता था, अग़वा करके ले जा रहा था, भगाकर ले जा रहा था, जैसे जैसे मैं क्या कहूँ, उस वक़्त मैंने क्या सोचा मैं कुछ सोचने के काबिल ही न रहा था और हँस रहा था।

मुझे हँसता देखकर उसने मलामत भरी नज़रों से मेरी तरफ देखा : "मैंने जो कहा है, सच है कल रात वह अपने मकान के साथवाले बाग़ में मेरा इंतज़ार करेगी मुझे सफर के लिए कुछ रुपए फराहम करना है तुम्हे क्या मालूम, मैंने किन-किन मुश्किलों के बाद रसाई[31] हासिल करके उसको इस बात पर आमादा किया है "

मैंने फिर हँसना चाहा, मगर उसको गाइत[32] दरजा संजीदा व मतीन देखकर मेरी हँसी दब गई और मुझे कतई तौर पर यक़ीन हो गया कि वह वाक़ई अपनी मन्कूहा बीवी को भगाकर लिए जा रहा है—कहाँ, यह मुझे मालूम न हो सका।

मैं ज़्यादा तफसील में न गया और उसको वह रुपए अदा कर दिए, जो मैंने, अर्सा हुआ, उससे कर्ज लिए थे और यह समझकर न लौटाए थे कि वह कभी वापस न लेगा, मगर उसने खामोशी से नोट गिनकर अपनी जेब में रख लिए।

वह बगैर हाथ मिलाए रुख्सत होने ही वाला था कि मैंने आगे बढ़कर उससे कहा "तुम जा रहे हो लेकिन मुझे भुला न देना।" मेरी आँखो में आँसू आ गए।

उसकी आँखें बिलकुल खुश्क थीं।

"मैं कोशिश करूँगा।" यह कहकर वह चला गया।

मैं जहाँ खडा था, बहुत देर तक वहीं बुत बना रहा।

उधर जब दूसरे दिन उसके ससुरालवालों को पता चला कि उनकी लडकी रात ही रात में कहीं गायब हो गई है तो उनके हाँ एक हीजान[33] बरपा हो गया—एक हफ्ते तक उन्होंने उसको इधर-उधर तलाश किया और किसी को इस वाक़े की खबर तक न होने दी, मगर बाद मे लडकी के भाई को मेरे पास आना पड़ा और मुझे हमराज बनाकर सारी रामकहानी सुनानी पडी।

वह बेचारे खयाल कर रहे थे कि उनकी लडकी किसी के साथ भाग गई है और लड़की का भाई मेरे पास इसी ग़र्ज से आया था कि मैं उनकी तरफ से उसको इस तल्ख वाक़े से आगाह कर दूँ—वह बेचारा शर्म के मारे जमीन में गड़ा जा रहा था।

जब मैंने उसको असल बात से आगाह किया तो हैरत के बायस उसकी आँखे खुली की खुली रह गईं, इस बात से तो उसको बहुत ढारस हुई कि उसकी बहन किसी गैर मर्द के साथ नहीं भागी है, बल्कि अपने शौहर ही के पास है, लेकिन उसकी समझ में यह न आया कि उसने उसने यह फिज़ूल और नाजेबा[34] हरकत क्यो की।

बीवी उसी की थी जब चाहता, ले जाता इस हरकत से तो यह मालूम होता है, जैसे जैसे…" वह कोई मिसाल पेश न कर सका।

मैं भी उसे कोई इत्मीनानदेह जवाब न दे सका।

कल सुबह की डाक से मुझे उसका खत मिला तो मैंने काँपते हुए हाथों से खोला—लिफाफे में बस एक कोरा काग़ज़ था, जिस पर एक टेढ़ी लकीर खिंची हुई थी।

---

1 रास्ते, 2. अनुरोध, 3 ठीकठाक, 4 विजयी, 5 आश्चर्यचकित, 6 बहुत कम, 7 चिंतित, 8. जानबूझकर; 9. बहुत-सी, 10. शरीर का थकान के कारण टूटना, 11 बहुत मजबूत, 12 मतलब, 13. माफी 14. पूछताछ, जवाबतलबी, 15 विचार, प्रभाव, 16 जादू से वशीभूत, 17. ताक़त, क्षमता, 18 जलन, ईर्ष्या, 19. शर्मिंदा, 20. शुरू का जमाना, 21 खाली, रिक्त, 22 प्रचलित रिवाज, 23. निकाह, शादी, 24 पति-पत्नी का संबंध, 25 किसी की होड़ करना; 26 टेढ़ी चाल; 27. म्यान, 28. आख़िरी किनारे; 29. पूरे जिस्म को कान बना लेना, किसी बात को सुनने हेतु पूर्ण रूप से सतर्क एवं एकाग्र होना, 30 विवाहिता; 31. पहुँचकर; 32 बहुत ज़्यादा, 33. गड़बड़, शोर शराबा, 34. बुरी।

नारा

उसे यूँ महसूस हुआ कि उस संगीन इमारत की सातों मंजिलें उसके काँधों पर धर दी गई हैं।

वह सातवीं मंजिल से एक-एक सीढ़ी करके नीचे उतरता गया और हर मंजिल का बोझ उसके चौड़े मगर दुबले काँधे पर सवार होता गया।

जब वह अपनी खोली के मालिक से मिलने ऊपर चढ़ रहा था, उसने महसूस किया था कि उसका कुछ बोझ हल्का हो गया है और कुछ हल्का हो जाएगा, इसलिए कि उसने अपने दिल में सोचा था—खोली का मालिक, जिसे सब सेठ के नाम से पुकारते हैं, उसकी बिपता जरूर सुनेगा और किराया चुकाने के लिए उसे एक महीने की और मोहलत बख्श देगा। 'बख्श देगा', यह सोचते हुए उसके गुरूर को ठेस लगी थी लेकिन फ़ौरन ही उसको अपनी असलियत मालूम हो गई थी कि वह भीख माँगने ही तो जा रहा है और भीख हाथ फैलाकर, आँखों में आँसू भरकर, अपने दुख-दर्द सुनाकर और अपने घाव दिखाकर ही माँगी जाती है—उसने यही कुछ किया था।

जब वह उस संगीन इमारत के बड़े दरवाज़े में दाखिल होने लगा था, उसने अपने गुरूर को, उस चीज को, जो भीख माँगने में आमतौर पर रुकावट पैदा किया करती है, निकालकर फुटपाथ पर डाल दिया था।

वह अपना दीया बुझाकर और अपने आपको अँधेरे में लपेटकर खोली के मालिक के उस रोशन कमरे में दाखिल हुआ था—जहाँ बैठकर वह अपनी दो बिल्डिंगों का किराया वसूल किया करता है—और हाथ जोड़कर एक तरफ़ खड़ा हो गया था।

सेठ के तिलक लगे माथे पर सलवटें पड़ गई थीं, उसका बालों भरा हाथ एक मोटी-सी कापी की तरफ बढ़ा था, दो बड़ी-बड़ी आँखों ने उस कापी पर लिखे कुछ हुरूफ पढ़े थे और एक भद्दी-सी आवाज गूँजी थी : "केशो लाल खोली पाँचवीं, दूसरा माला दो महीनों का किराया।"

भद्दी-सी आवाज़ सुनकर उसने अपना दिल, जिसके सारे पुराने और नए घाव वह सीढ़ियाँ चढ़ते हुए कुरेद-कुरेदकर गहरे कर चुका था, सेठ को दिखाना चाहा था और उसे पूरा-पूरा यक़ीन था कि उसके घाव देखकर सेठ के दिल में जरूर हमदर्दी पैदा हो जाएगी, पर सेठ ने कुछ सुनना न चाहा था, और उसके सीने में एक हुल्लड़-सा मच गया था। सेठ के दिल में हमदर्दी पैदा करने के लिए उसने अपने वह तमाम दुख, जो बीत चुके थे, गुज़रे दिनों

की गहरी खाई से निकालकर अपने दिल में भर लिए थे और उन तमाम जख्मों की जलन, जो मुद्दत हुई मिट चुके थे, उसने बड़ी मुश्किल से इकट्ठी करके अपनी छाती में जमा की थी और उसकी समझ में कुछ न आया था कि वह इतनी चीज़ों को कैसे सँभाले—उसके घर में बिन बुलाए मेहमान आ गए होते तो वह उनसे बड़े रूखेपन से कह देता : 'जाओ भई, जाओ, मेरे पास इतनी जगह नही है कि तुम्हें बिठा सकूँ और न मेरे पास रुपया है कि तुम सबकी खातिर-मदारात कर सकूँ।' ''लेकिन उसका तो किस्सा ही दूसरा था कि उसने तो खुद अपने भूले-भटके दुखो को इधर-उधर से पकड़कर अपने सीने में जमा किया था।

अफरा-तफरी में उसे कुछ पता न चला था कि उसके सीने मे कितनी चीजें भर गई हैं, पर जैसे-जैसे उसने सोचना शुरू किया था, वह पहचानने लगा था कि फलाँ दुख फलाँ वक्त का है और फ़लाँ दर्द उसे फ़लाँ वक्त पर हुआ था, और सोच-विचार के शुरू होते ही उसके हाफिजे' ने बढ़कर वह धुंध हटा दी थी जो उन दुखो पर लिपटी हुई थी और यूँ गुजरे हुए वक्तो के तमाम दुख-दर्द उसकी तकलीफें बन गए थे और उसने अपनी जिंदगी की बासी रोटियां फिर अंगारों पर सेकना शुरू कर दी थीं।

उसने सोचा था, उस थोडे-से वक्त में उसने बहुतकुछ सोचा था कि उसकी खोली का अंधा लैंप कई बार बिजली के उस बल्ब से टकराया है जो उसकी खोली के मालिक के गंजे सिर के ऊपर मुसकरा रहा है; कई बार उसके पैबंद लगे कपडे सेठ की उन खूँटियों पर लटककर फिर उसके मैले बदन से चिमट गए हैं जो दीवारों मे गड़ी चमक रही हैं—उसने बहुत कुछ सोचा था और वह सख्त घबरा गया था—उसने अपने सीने मे इतनी खलबली कभी नही देखी थी।

वह अपने सीने की उस खलबली पर अभी ग़ौर ही कर रहा था कि खोली के मालिक ने गुस्से में आकर उसे गाली दी थी—बस उसके कानों के रास्ते पिघला हुआ सीसा शायँ-शायँ करता उसके दिल मे उतर गया था और उसके सीने के अंदर जो हुल्लड़ मच गया था, उसका तो कुछ ठिकाना ही न था। जिस तरह किसी गरमा गरम जलसे मे किसी शरारत से भगदड मच जाया करती है, ठीक उसी तरह उसके दिल में हलचल पैदा हो गई थी। उसने बहुत जतन किए थे कि उसके वह दुख-दर्द, जो उसने सेठ को दिखाने के लिए इकट्ठे किए थे, चुपचाप रहें, पर कुछ न हो सका था—गाली का सेठ के मुँह से निकलना था कि वह तमाम बेचैन हो गए थे और अंधाधुंध एक-दूसरे से टकराने लगे थे। वह यह तकलीफ बिल्कुल न सह सका था और उसकी आँखों में जो पहले ही तप रही थी, आँसू आ गए थे जिससे उनकी गर्मी और भी बढ़ गई थी और उनसे धुआँ निकलने लगा था।

उसके जी मे आई थी कि उस गाली को, जिसे वह बडी हद तक निगल चुका था, सेठ के झुर्रियो पडे चेहरे पर कै के ज़रिए उगल दे मगर फिर वह उस ख़याल से बाज़ आ गया था कि उसका गुरूर तो बाहर फुटपाथ पर पड़ा था, अपोलो बंदर पर नमक लगी मूँगफली बेचनेवाले का गुरूर—उसकी आँखे हँसने लगी थीं और उसकी नज़रों के सामने नमक लगी मूँगफली के वे तमाम दाने, जो उसके घर में एक थैले के अंदर बरखा के बायस गीले हो रहे थे, नाचने लगे थे।

उसकी आँखे हँसी थी, उसका दिल भी हँसा था, पर वह कड़वाहट दूर न हो सकी थी जो उसके गले मे सेठ की गाली ने पैदा कर दी थी—वह कडवाहट अगर उसकी जबान पर होती तो वह उसे थूक देता, मगर वह तो बुरी तरह उसके गले मे अटक गई थी और निकाले न निकलती थी। और फिर एक अजीब किस्म का दुख, जो उस गाली ने पैदा कर दिया था, उसकी घबराहट को और भी बढ़ा रहा था। उसने यूँ महसूस किया था कि उसकी आँखे उसके सीने के अदर उतरकर आँसू बहाने लगी हैं जहाँ हर चीज पहले ही से सोग मे है।

सेठ ने उसे फिर गाली दी थी, उतनी ही मोटी जितनी मोटी सेठ की चर्बी भरी गर्दन थी, और उसे यूँ लगा था कि किसी ने ऊपर से उस पर कूडा-करकट फेक दिया है, उसका एक हाथ अपने आप चेहरे की हिफाजत के लिए उठा था मगर उस गाली की सारी गर्द उसके चेहरे पर फैल चुकी थी—फिर उसने वहाँ रुकना मुनासिब न समझा था कि क्या खबर, क्या खबर उसे कुछ खबर न थी वह सिर्फ इतना जानता था कि ऐसे हालतो मे किसी बात की सुध-बुध नही रहा करती, और वह वहाँ रुक न सका था।

जब वह नीचे उतरा, उसे यूँ महसूस हुआ कि उस सगीन इमारत की सातो मंजिले उसके काँधो पर धर दी गई हैं।

एक नही, दो गालियाँ

बार-बार वे दो गालियाँ, जो सेठ ने बिलकुल पान की पीक के मानिंद अपने मुँह से उगल दी थी, उसके कानो के पास जहरीली भिडों की तरह भिनभिनाना शुरू कर दती और वह सख्त बेचैन हो जाता—वह कैसे उस उस उसकी समझ मे नही आ रहा था कि वह उस गडबड का क्या नाम रखे जो उसके दिल मे और दिमाग मे उन गालियो ने मचा रखी है, वह कैसे उस ताप को दूर करे जिसमे वह फुँका जा रहा है, कैसे ?

वह सोच-विचार के काबिल न रहा था—उसका दिमाग एक ऐसा अखाडा बना हुआ था जिसमे बहुत-से पहलवान कुश्ती लड रहे थे—जो खयाल भी उठता, किसी दूसरे खयाल से, जो पहले ही से वहाँ मौजूद होता, भिड जाता और वह कुछ सोच न सकता।

चलते-चलते एकाएकी उसने महसूस किया कि उसके दुख कै की सूरत मे बाहर निकलने को हैं और उसके जी मे आई—जी मे क्या आई, वह तो मजबूर था—वह उस आदमी को रोक ले जो लबे-लबे डग भरता उसके पास से गुजर रहा था और कहे 'भैया, मैं रोगी हूँ मेरी जरा ' मगर जब उसने उस राह चलते आदमी की शक्ल देखी तो उसे बिजली का वह खबा, जो उसके पास ही जमीन मे गडा हुआ था, उस आदमी से कही ज्यादा हस्सास[2] दिखाई दिया और जो कुछ कै की सूरत मे उसके अदर से बाहर निकलनेवाला था, घूँट-घूँट नीचे फिसल गया।

वह उन चौकोर पत्थरो पर चल रहा था जो फुटपाथ मे एक तरतीब के साथ जडे हुए थे। उसने कभी उनकी सख्ती महसूस न की थी मगर अब उनकी सख्ती उसके दिल तक पहुँच रही थी, और फुटपाथ का हर वह पत्थर, जिस पर उसके कदम पड रहे थे, उसके दिल के साथ टकरा रहा था—अभी वह थोड़ी ही दूर तक चला था कि उसका बद-बद ढीला हो गया।

चलते-चलते वह एक लड़के से टकरा गया और उसे यूँ महसूस हुआ कि वह टूट गया है—उसने झट उस आदमी की तरह, जिसकी झोली से बेर गिर रहे हों, इधर-उधर अपने हाथ फैलाए और अपने आपको इकट्ठा करके हौले-हौले फिर चलना शुरू कर दिया।

उसका दिमाग उसकी टाँगों के मुकाबले में ज़्यादा तेजी के साथ चल रहा था। कभी-कभी चलते-चलते उसे यूँ महसूस होता जैसे उसका निचला धड़ सारे का सारा बहुत पीछे रह गया है और उसका दिमाग बहुत आगे निकल गया है—वह आपसे आप रुक जाता।

वह फुटपाथ पर चल रहा था और सड़क पर पौं-पौं करती मोटरों का ताँता बँधा हुआ था। घोड़ा गाड़ियाँ, ट्रामें, भारी-भरकम ट्रक, लारियाँ, सब सड़क की काली छाती पर दनदनाते हुए चल रहे थे और एक शोर मचा हुआ था, पर उसके कानों को कुछ सुनाई न दे रहा था—उसके कान पहले ही से शायँ-शायँ कर रहे थे जैसे रेलगाड़ी का इंजन ज़ाइद[3] भाप बाहर निकाल रहा हो।

चलते-चलते वह फिर टकरा गया, एक कुत्ते से—कुत्ते ने 'चाऊँ' किया और एक तरफ हट गया—उसने महसूस किया कि सेठ ने उसे फिर गाली दी है।

गाली—गाली ठीक उसी तरह उससे उलझकर रह गई थी जैसे बेरी के काँटों में कोई कपड़ा। वह अपने आपको छुड़ाने की जितनी कोशिश करता, उतनी ही ज्यादा उसकी रूह जख्मी होती जाती।

उसे उस नमक लगी मूँगफली का खयाल नहीं था जो उसके घर में बरखा के बायस गीली हो रही थी और न ही उसे रोटी-कपड़े का कोई ख़याल था—उसकी उम्र तीस बरस के करीब थी और उन तीस बरसों में वह कभी भूखा न सोया था और न ही कभी नंगा फिरा था—वह हर महीने अपनी खोली का किराया देता, अपना और अपने बाल-बच्चों का पेट भरता, बकरे-जैसी दाढ़ीवाले हकीम को दवाओं के दाम देता, शाम को ताड़ी की एक बोतल के लिए दुवन्नी पैदा करता—वह पाँच बरसों से बराबर वक़्त पर किराया देता आया था, सिर्फ पिछले दो महीनों का हिसाब चुकता न कर सका था और सेठ को इख़्तियार हो गया था कि वह उसे गाली दे सकता था और सेठ ने उसे गाली दी थी जो उसे खाए जा रही थी—उसे उन बीस रुपयों की फ़िक्र नहीं थी जो उसने सेठ को अदा करने ही थे, वह उन दो गालियों की बाबत सोच रहा था जो उसे उन बीस रुपयों की वजह से दी गई थीं। न वह बीस रुपए का मकरूज[4] होता और न सेठ के कठली-जैसे मुँह से वह गंदगी बाहर निकलती।

वह सोच रहा था : मान लिया, सेठ धनवान है उसके पास दो बिल्डिंगें हैं, जिनकी एक सौ चौबीस खोलियों का किराया उसके पास आता है, पर उन एक सौ चौबीस खोलियों में जितने लोग रहते हैं, उसके ग़ुलाम तो नहीं है और अगर ग़ुलाम हैं भी तो भी वह उन्हें गाली कैसे दे सकता है ठीक है, उसे किराया चाहिए मैंने कब इनकार किया था; जरा मोहलत ही तो माँगी थी पाँच बरस हो गए हैं उसे किराया वक़्त पर देते हुए पिछले बरस बरसात का सारा पानी हम पर टपकता रहा, पर मैंने उसे गाली न दी, हालांकि मुझे उससे कहीं ज्यादा हौलनाक गालियाँ याद हैं मैंने सेठ से बारहा कहा कि सीढ़ियों का डंडा टूट गया है,

उमे बनवा दिया जाए पर मेरी एक न सुनी गई। आखिर मेरी फूल-सी बच्ची गिर ही पडी और उसका दाहिना हाथ हमेशा के लिए बेकार हो गया मैं गालियो के साथ-साथ सेठ को बद्दुआएँ भी दे सकता था, लेकिन मुझे ध्यान तक न आया और मैं दो महीने का किराया न चुकाने पर गालियो के काबिल हो गया उसको यह खयाल तक न आया कि उसके बच्चे अपोलो बदर पर मेरे थैले मे मुट्ठियाँ भर-भरके मूँगफली खाते हैं इसमे कोई शक नही है कि मेरे पास दौलत नही है और उसके पास दौलत है. ऐसे भी लोग हैं जिनके पास उससे ज्यादा दौलत है मेरी गरीबी से उसे क्या लेकिन उसने मुझे गरीब समझकर ही तो गाली दी है वर्ना उस गजे सेठ की क्या मजाल थी कि कुर्सी पर इत्मीनान से बैठे-बैठे मुझे वह गालियाँ देता धन-दौलत का न होना बहुत बुरी बात है अब यह मेरा कुसूर नही है कि मेरे पास दौलत की कमी है

उसने कभी धन-दौलत के ख्वाब नही देखे थे। वह अपने हाल मे मस्त था। उसकी जिंदगी बडे मजे में गुजर रही थी—पर पिछले महीने एकाएकी उसकी बीवी बीमार पड गई थी और उसकी दवा-दारू पर वह तमाम रुपए खर्च हो गए थे जो किराए मे जानेवाले थे—अगर वह खुद बीमार पड जाता तो दवाओ पर रुपया खर्च न करता, लेकिन उसकी बीवी की बीमारी का ताल्लुक उसके होनेवाले बच्चे से था—बीमारी, किराया, गाली।

उस वक्त जब सेठ ने उसे गाली दी थी, अगर वह चाहता तो आगे बढकर सेठ का टेटवा दबा देता और तिजोरी म से वह तमाम नीले और सब्ज नोट निकालकर भाग जाता—क्या वह ऐसा करता? उसने सोचा कि सेठ ने उसे गाली क्यो दी थी? पिछले बरस चौपाटी पर एक गाहक ने उसे गाली दी थी, इसलिए कि दो पैसे की मूँगफली मे चार कडवे दाने चले गए थे। उसने गाली के जवाब मे गाहक की गर्दन पर ऐसी धौल जमाई कि दूर बैंच पर बैठे हुए लोगों ने भी उसकी आवाज सुन ली थी—मगर सेठ ने उसे दो गालियाँ दी थी और वह चुप रहा था।

केशो लाल, खारी सीगवाला जिसके बाबत मशहूर था कि वह नाक पर मक्खी भी नही बैठने देता—सेठ ने उसे एक गाली दी थी और वह कुछ न बोला था, दूसरी गाली दी थी तो भी वह खामोश रहा था 'मैं मिट्टी का पुतला हूँ, पर मैं मिट्टी का पुतला कैसे हुआ मैंने उन दो गालियो को सेठ के थूक भरे मुँह से निकलते देखा था जैसे बडे-बडे चूहे मोरियो से बाहर निकलते हैं मैं जान-बूझकर खामोश रहा था, इसलिए कि मैं अपना गुरूर बाहर छोड आया था ? मैंने अपना गुरूर अपने से क्यो अलग किया था ? गालियाँ सुनने के लिए ?

एकाएकी उसने सोचा कि सेठ ने उसे नही, किसी और को गालियाँ दी थी 'नही-नही, गालियाँ मुझे ही दी गई थी, इसलिए कि दो महीने का किराया मेरी ही तरफ निकलता था अगर गालियाँ मुझे नही दी गई थी तो फिर मैं सोच क्यो रहा हूँ यह जो मेरे सीने मे हुल्लड-सा मच रहा है, क्या बिना किसी वजह के मुझे दुख दे रहा है नही, गालियाँ मुझे ही दी गई थी।'

जब उसके सामने एक मोटर ने अपने माथे की बत्तियाँ रोशन की तो उसने महसूस किया कि वह दो गालियाँ पिघलकर उसकी आँखों मे धँस गई हैं।

'गालियाँ, गालियाँ ' वह झुँझला गया।

वह जितनी कोशिश करता कि उन गालियो की बाबत न सोचे, उतनी ही शिद्दत[1] से वह उनके मुताल्लिक सोचता—वह चिड़चिडा हो रहा था और चिड़चिडेपन में उसने ख्वाहमख्वाह दो-तीन आदमियो को, जो उसके पास से गुजर रहे थे, कोसा . 'यूँ अकडकर चल रहे हैं जैसे इनके बाबा का राज है !'

अगर उसका राज होता तो वह उस सेठ को मजा चखा देता जो उसे ऊपर-तले दो गालियाँ देकर अपने घर में यूँ आराम से बैठा हुआ है जैसे उसने अपनी गद्देदार कुर्सी मे से दो खटमल निकालकर बाहर फेंक दिए हों।

'सचमुच अगर कहीं मेरा राज होता तो मैं चौक मे बहुत-से लोगो को इकट्ठा करके सेठ को बीच में खडा कर देता और उसकी गजी चिंदिया पर इस जोर से धप्पा मारता कि वह बिलबिला उठता फिर मैं सब लोगो से कहता कि हँसो, जी भरकर हँसो और खुद भी इतना हँसता कि हँसते-हँसते मेरा पेट दुखने लगता पर जब उसने मुझे गालियाँ दी थी, मुझे क्यों हँसी नही आई थी, क्यो ? उसके गंजे सिर पर धप्पा तो मैं तब भी मार सकता था मुझे किस बात की रुकावट थी ? रुकावट थी, तभी तो मैं गालियाँ सुनकर भी खामोश रहा था ' उसके कदम रुक गए; उसका दिमाग भी एक-दो पल के लिए सुस्ताया; फिर उसने सोचा . 'अभी इस झंझट का फैसला करता हूँ भागा-भागा जाता हूँ और एक ही झटके में सेठ की गर्दन उडाकर उस तिजोरी मे रख देता हूँ जिसका ढकना मगरमच्छ के मुँह की तरह खुलता है लेकिन यह मैं खबे की तरह जमीन मे गड क्यों गया हूँ ? सेठ के घर की तरफ पलट क्यो नही जाता क्या मुझमे जुरअत नहीं है ?'

उसमें जुरअत न थी।

'कितने दुख की बात है कि मेरी सारी ताकत सर्द पड गई है वह गालियाँ मैं उन गालियो को क्या कहूँ ?'

उन गालियों ने उसकी चौडी छाती पर रोलर-सा फेर दिया था, सिर्फ़ दो गालियो ने।

पिछले हिंदू-मुस्लिम फ़साद में कुछ हिंदुओ ने उसे मुसलमान समझकर लाठियो से बहुत मारा था और अधमरा कर दिया था। तब उसे इतनी कमज़ोरी महसूस न हुई थी, जितनी कि अब हो रही थी।

केशो लाल, खारी सींगवाला जो अपने दोस्तों से बडे फख के साथ कहा करता था कि वह कभी बीमार नही पडा है, यूँ चल रहा था जैसे बरसों का रोगी हो।

'यह रोग मुझे किसने दिया है ? दो गालियों ने ? गालियाँ, गालियाँ, कहाँ हैं वह दो गालियाँ ?' उसके जी में आई कि वह अपने सीने के अंदर हाथ डालकर उन दो पत्थरों को, जो किसी हीले गलते ही न थे, बाहर निकाल ले और जो कोई भी उसके सामने आए, उसके सिर पर दे मारे : 'यह कैसे हो सकता है ? मेरा सीना मुरब्बे का मर्तबान थोड़ा है ठीक है, लेकिन फिर कोई और तरकीब भी तो समझ में आए कि यह गालियाँ दूर दफ़ान हो क्यो कोई शख्स बढ़कर मुझे दुख से निजात दिलाने की कोशिश नहीं करता क्या मैं हमदर्दी के क़ाबिल नही हूँ हूँ, पर किसी को मेरे दिल के हाल का क्या पता है मैं खुली किताब थोड़ी

हूँ और न मैंने अपना दिल बाहर लटका रखा है अंदर की बात किसी को क्या मालूम न मालूम हो, परमात्मा करे, किसी को मालूम न हो अगर किसी को अंदर की बात का पता चल गया तो केशो लाल खारी सीगवाले के लिए डूब मरने की बात होगी गालियाँ खाकर खामोश रहना मामूली बात है क्या ? मामूली बात नहीं, बहुत बड़ी बात है, हिमालय पहाड़ जितनी बड़ी बात, उससे भी बड़ी बात मेरा ग़ुरूर मिट्टी मे मिल गया है, मेरी जिल्लत हुई है, मेरी नाक कट गई है, मेरा सबकुछ लुट गया है चलो छुट्टी हुई अब तो यह गालियाँ मेरा पीछा छोड दें मैं कमीना हूँ, रजील हूँ, नीच हूँ, गंदगी साफ करनेवाला भंगी हूँ, कुत्ता हूँ; मुझे गालियाँ मिलनी ही चाहिए थी नही-नहीं, किसी की क्या मजाल कि मुझे गालियाँ दे और बिना किसी क़ुसूर के; मैं उसे कच्चा न चबा जाऊँगा झूठ-झूठ, तुमने सेठ से यूँ गालियाँ सुनी थीं जैसे मीठी बोलियाँ हों हाँ-हाँ, मीठी-मीठी बोलियाँ थी, बड़े मजेदार घूँट थे; अब तो पीछा छोड दो, वरना मैं सच कहता हूँ, मैं दीवाना हो जाऊँगा और यह लोग, जो बड़े आराम से इधर-उधर चल-फिर रहे हैं, मैं इनमे से हर एक का सिर फोड दूँगा भगवान की क़सम, अब मुझमे ताब नहीं रही है; मैं जरूर दीवाने कुत्ते की तरह सबको काटना शुरू कर दूँगा लोग मुझे यकीनन पागलखाने में बंद कर देंगे और मैं दीवारो के साथ अपना सिर टकरा-टकराकर मर जाऊँगा मर जाऊँगा, सच कहता हूँ, मर जाऊँगा और मेरी राधा विधवा हो जाएगी, मेरे बच्चे अनाथ हो जाएँगे, सिर्फ इसलिए कि मैंने सेठ से दो गालियाँ खाई थीं और खामोश रहा था, जैसे मेरे मुँह पर ताला लगा हुआ था क्या मैं लूला, लँगडा, अपाहिज था ? परमात्मा करे, मेरी टाँगे उस मोटर के नीचे आकर टूट जाएँ, मेरे हाथ कट जाएँ मैं मर जाऊँ ताकि यह बक-बक खत्म हो जाए तौबा-तौबा, कोई ठिकाना है इस दुख का जी चाहता है, कपडे फाडकर नंगा नाचना शुरू कर दूँ, उस ट्राम के नीचे सिर दे दूँ, जोर-जोर से चिल्लाना शुरू कर दूँ उफ, मैं क्या करूँ, क्या करूँ ?'

चलते-चलते वह रुक गया और उसने सोचा कि वह बाजार के बीच खड़ा हो जाए और सारे ट्रैफ़िक को रोककर, जो कुछ उसकी जबान पर आए, बकता चला जाए, हत्ता के उसका सीना सारे का सारा खाली हो जाए—फिर उसके जी मे आई कि वही खडे-खडे चिल्लाना शुरू कर दे : 'मुझे बचाओ, मुझे बचाओ ।'

वह चौंका—यकायक आग बुझानेवाली गाडी तेजी से टन-टन करती आई और उधर उस मोड में गुम हो गई—वह कह न सका 'ठहरो, पहले मेरी आग बुझाओ ।'

उसने कदम उठाए और तेज़ कर दिए कि उसने महसूस किया था, उसके साँस रुकने लगे हैं; अगर वह तेज न चलेगा तो उसका दम घुट जाएगा—लेकिन ज्यूँही उसकी रफ्तार बढ़ी, उसका दिमाग आग का एक चक्कर-सा बन गया और उस चक्कर मे उसके सारे नए-पुराने खयाल भड़कने लगे : दो महीने का किराया, सेठ का बुलावा, सात मंजिला संगीन इमारत, एक सौ बारह सीढ़ियाँ, सेठ के गंजे सिर पर मुसकराता हुआ बिजली का लैंप, सेठ की भद्दी आवाज़, एक मोटी गाली, दूसरी मोटी गाली और उसकी खामोशी आग के

चक्कर में से तड-तड गोलियाँ-सी निकलना शुरू हो गई और उसने जाना कि उसका सीना छलनी हो गया है ।

उसने कदम और तेज कर दिए—आग का चक्कर इतनी तेजी से घूमना शुरू हो गया कि शोलों की एक बहुत बडी गेंद-सी बन गई और उसके तेज उठते हुए कदमों के आगे-आगे दौडने लगी ।

वह दौडने लगा ।

''क्यों भाग रहे हो, किससे भाग रहे हो बुज़दिल ?'' उसके जलते-भुनते खयालात की भीडभाड में से एक खयाल बुलंद आवाज में चिल्लाया ।

उसके कदम मद्धम पड गए और वह हौले-हौले चलने लगा 'हाँ, सचमुच बुज़दिल हूँ मैं भाग क्यों रहा था मुझे तो इंतिकाम लेना है इंतिकाम !'

उसने अपनी जबान पर लहू का नमकीन जाइका महसूस किया और उसके बदन में एक झुरझुरी-सी पैदा हो गई 'लहू '

उसे आसमान और जमीन, सब लहू में रंगे हुए नजर आने लगे 'लहू '

उसने महसूस किया, उसमें इतनी कुव्वत आ गई है कि वह पत्थरों की रगों में से भी लहू निचोड सकता है ।

उसकी आँखों में लाल डोरे उभर आए, उसकी मुट्ठियाँ भिंच गईं, उसके कदमों में मजबूती पैदा हो गई—वह इंतिकाम लेने पर तुल गया ।

वह फिर तेजी से चलने लगा ।

वह आते-जाते लोगों में से तीर की मानिंद अपना रास्ता बनाता हुआ बढ़ता रहा आगे, आगे ।

जिस तरह तेज चलनेवाली गाडी छोटे-छोटे स्टेशनों को छोड जाया करती है, उसी तरह वह बिजली के खंबों, छोटी-बडी दुकानों और लंबे-लंबे बाजारों को अपने पीछे छोडता हुआ आगे बढ़ता रहा, आगे बहुत आगे ।

उसके रास्ते में एक सिनेमा की ऊँची और रंगीन बिल्डिंग आई—उसने आँखें उठाकर भी न देखा और बेपरवाह हवा की मानिंद बढ़ गया ।

वह बढ़ता रहा ।

अंदर ही अंदर उसने अपने हर जर्रे को एक बम बना लिया था ।

भरे-भरे बाजारों में जहरीले साँप की मानिंद फुंकारता हुआ वह अपोलो बंदर पहुँचा ।

अपोलो बंदर—गेट वे ऑफ इंडिया के सामने बेशुमार मोटरें कतार अंदर कतार खडी थीं—उसने महसूस किया कि बहुत-से गिद्ध पर जोडे किसी की लाश के इर्द-गिर्द बैठे हुए हैं ।

जब उसने खामोश समंदर की तरफ देखा तो समंदर उसे एक लंबी-चौडी लाश मालूम हुआ ।

समंदर के उस तरफ एक कोने में लाल-लाल रोशनी की लकीर होले-होले बन सी रही

थीं और समंदर के ठहरे हुए पानी में गुदगुदी पैदा कर रही थी—आलीशान होटल की ऊँची पेशानी पर चमकता हुआ बर्क़ी नाम।

वह—केशो लाल, खारी सींगवाला—उस आलीशान ऊँचे होटल के बराबर खड़ा हो गया। फिर उसने होटल की ऊँची पेशानी पर चमकते हुए बर्क़ी नाम के ऐन नीचे अपने कदम गाड़कर ऊपर देखा, और—

और उसके हलक से एक नारा—कानों के परदे फाड़ देनेवाला नारा, पिघले हुए गर्म-गर्म लावे के मानिंद निकला : 'हत तेरी ... '

जितने कबूतर होटल की मुंडेरों पर ऊँघ रहे थे, डर गए और फड़फड़ाने लगे।

नारा मारकर जब उसने अपने कदम जमीन से बड़ी मुश्किल के साथ उठाए और वापस मुड़ा तो उसे यकीन हो गया था कि वह संगीन इमारत अड़ाअड़ा-धम नीचे गिर गई है।

उसका नारा सुनकर एक शख्स ने अपनी बीवी से, जो वह शोर सुनकर डर गई थी, कहा : "पगला है।"

१ स्मारक यादगार २ [illegible] ३ फाख्ता ४ कबूतर ५ तीखा ६ जमीन ७ [illegible] ८ [illegible]।

तरक़्क़ीपसंद

जोगिंदर सिंह के अफसाने जब मकबूल होने शुरू हुए तो उसके दिल में ख़्वाहिश पैदा हुई कि वह मशहूर अदीबों और शाइरों को अपने घर बुलाए और उनकी दावत करे। उसका ख़याल था कि यूँ उसकी शोहरत और मकबूलियत[1] और भी ज़्यादा हो जाएगी।

जोगिंदर सिंह बड़ा ख़ुशफ़हम[2] इंसान था। मशहूर अदीबों और शाइरों को अपने घर बुलाकर और उनकी ख़ातिर-तवाज़े करने के बाद जब वह अपनी बीवी अमृतकौर के पास बैठता तो कुछ देर के लिए बिलकुल भूल जाता कि उसका काम डाकख़ाने में चिट्ठियों की देखभाल करना है। अपनी तीन गज़ी पटियाला फैशन की रंगी हुई पगड़ी उतारकर जब वह एक तरफ रख देता तो उसे महसूस होता कि उसके लंबे-लंबे काले गेसुओं के नीचे जो छोटा-सा सिर छुपा हुआ है, उसमें तरक्कीपसंद अदब कूट-कूटकर भरा है। इस एहसास से उसके दिलो-दिमाग में एक अजीब किस्म की अहमियत पैदा हो जाती और वह यह समझता कि दुनिया में जिस कदर अफसानानिगार और नाविलनवीस मौजूद हैं, सबके सब उसके साथ एक निहायत ही लतीफ रिश्ते के ज़रिए मुन्सलिक[3] हैं।

अमृतकौर की समझ में यह बात नहीं आती थी कि उसका ख़ाविंद लोगों को मदऊ[4] करने पर उससे हर बार यह क्यों कहा करता है: 'अमृत, यह जो आज चाय पर आ रहे हैं, हिंदुस्तान के बड़े शाइर हैं... समझीं? बहुत बड़े शाइर... देखो, इनकी ख़ातिर-तवाज़े में कोई कसर बाकी न रहे।'

आनेवाला कभी हिंदुस्तान का बड़ा शाइर होता था या बहुत बड़ा अफसानानिगार। उससे कम पाए का आदमी तो वह कभी बुलाता ही नहीं था—दावत में ऊँचे-ऊँचे सुरों में जो बात होती थी उसका मतलब वह आज तक न समझ सकी थी। इन गुफ्तगुओं में 'तरक्कीपसंद,' का ज़िक्र आम होता था। इस 'तरक्कीपसंदी' का मतलब अमृतकौर को मालूम नहीं था।

एक दफा जोगिंदर सिंह एक बहुत बड़े अफसानानिगार को चाय पिलाकर फारिग़ हुआ और अंदर रसोई में आकर बैठा तो अमृतकौर ने पूछा: "यह मुई 'तरक्कीपसंदी' क्या है?"

जोगिंदर सिंह ने पगड़ी समेत अपने सिर को एक ख़फ़ीफ़-सी जुंबिश दी और कहा: 'तरक्कीपसंदी'? इसका मतलब तुम फौरन ही न समझ सकोगी। 'तरक्कीपसंदी' उसको कहते हैं जो तरक्की पसंद करे। यह लफ्ज़ फारसी का है और अंग्रेज़ी में

'तरक्कीपसंदी,' को 'प्रोग्रेसिव' कहते हैं वह अफसानानिगार यानी कहानियाँ लिखनेवाले जो अफसानानिगारी में तरक्की चाहते हैं, उनको 'तरक्कीपसद' अफसानानिगार कहते हैं इस वक्त हिंदुस्तान में तीन-चार तरक्कीपसद अफसानानिगार हैं जिनमे मेरा भी नाम शामिल है ''

जोगिंदर सिह आदतन अँग्रेज़ी लफ्ज़ों और जुमलो के जरिए से अपने खयालात का इजहार किया करता था। उसकी यह आदत पककर अब तबीयत बन गई थी। चुनाचे अब बिला तकल्लुफ वह एक ऐसी अँग्रेजी जबान मे सोचता था जो चद मशहूर अँग्रेजी नाविलनवीसो के अच्छे-अच्छे चुस्त फिकरों पर मुश्तमिल होती थी। आम गुफ्तगू मे वह पचास फीसद अँग्रेजी अल्फाज और अँग्रेजी किताबो से चुने हुए फिकरे इस्तेमाल करता था। अफलातून को हमेशा प्लेटो कहता था और अरस्तू को एरिसटोटल। सिगमंड फ्रायड, शोपनहार और नितशे का जिक्र वह अपनी हर मअर्के की गुफ्तगू मे किया करता था। लेकिन आम बातचीत मे वह इन फलसफियो का नाम नही लेता था और अपनी बीवी स गुफ्तगू करते वक्त तो वह इस बात का खास खयाल रखता था कि अँग्रेजी लफ्ज और यह फलसफी उसकी गुफ्तगू मे न आने पाएँ।

जोगिंदर सिह से जब उसकी बीवी ने 'तरक्कीपसदी' का मतलब समझा तो उसे बहुत मायूसी हुई, क्योंकि उसका खयाल था कि 'तरक्कीपसदी' कोई बहुत बडी चीज होगी जिस पर बडे-बडे शाइर और अफसानानिगार उसके खाविंद के साथ मिलकर बहस करते रहते हैं, लेकिन जब उसने यह सोचा कि हिंदुस्तान मे सिर्फ तीन-चार तरक्कीपसद अफसानानिगार हैं तो उसकी आँखों मे चमक पैदा हो गई—यह चमक देखकर जोगिंदर सिह के मूँछो भरे होठ एक दबी-दबी-सी मुसकराहट के साथ कँपकँपाए ''अमृत, तुम्हे यह सुनकर बहुत खुशी होगी कि हिंदुस्तान का एक बहुत बडा आदमी मुझसे मिलने की ख्वाहिश रखता है उसने मेरे अफसाने पढे हैं और बहुत पसद किए हैं ''

अमृतकौर ने पूछा ''यह बडा आदमी कौन है ? क्या आप ही की तरह कहानियाँ लिखनेवाला है ?''

जोगिंदर सिह ने अपनी जेब से एक लिफाफा निकाला और उसे अपने दूसरे हाथ की पुश्त पर थपथपाते हुए कहा ''यह आदमी जो कोई भी है, अफसानानिगार है, लेकिन उसकी सबसे बडी खूबी, जो उसकी न मिटनेवाली शौहरत का बायस है, कुछ और ही है।''

''उसकी खूबी क्या है ?''

''वह एक आवारागर्द है''

''आवारागर्द ?''

''हाँ, वह एक आवारागर्द है; उसने आवारागर्दी का अपनी जिंदगी का नस्बुलऐन बना लिया है वह हमेशा घूमता रहता है; कभी कश्मीर की ठडी वादियो मे, कभी मुलतान के तपते हुए मैदानो मे, कभी लका में, कभी तिब्बत मे ''

अमृतकौर की दिलचस्पी बढ़ गई . ''मगर वह करता क्या है ?''

''वह गीत इकट्ठे करता है, हिंदुस्तान के हर सूबे के गीत पजाबी, गुजराती, मराठी,

पेशावरी, कश्मीरी, मारवाड़ी हिंदुस्तान मे जितनी जबानें बोली जाती हैं, उनके जितने गीत उसको मिलते हैं, वह इकट्ठे कर लेता है ''

''इतने गीत इकट्ठे करके वह उनका क्या करता है ?''

''किताबे छापता है, मजमून लिखता है ताकि दूसरे भी यह गीत पढ सके, सुन सके अँग्रेजी जबान के कई रिसालो में उसके मजमून छप चुके हैं गीत इकट्ठे करना और उनको सलीके के साथ पेश करना कोई मामूली काम नही है वह बहुत बडा आदमी है अमृत, बहुत बड़ा आदमी देखो, उसने मुझे कैसा खत लिखा है !'' यह कहकर जोगिंदर सिंह ने अपनी बीवी को वह खत पढ़कर सुनाया जो हरिंदर नाथ त्रिपाठी ने अपने गाँव से उसको भेजा था।

इस खत मे हरिंदर नाथ त्रिपाठी ने बडी मीठी जबान मे जोगिंदर सिंह के अफसानो की तारीफ की थी और लिखा था. 'आप हिंदुस्तान के तरक्कीपसंद अफसानानिगार हैं ' जब यह फिकरा जोगिंदर सिंह ने पढ़ा तो ऊँची आवाज में बोल उठा · ''लो देखो, त्रिपाठी साहब भी लिखते है कि मैं तरक्कीपसंद हूँ।''

जोगिंदर सिंह ने पूरा खत सुनाने के बाद एक-दो सैकिंड अपनी बीवी की तरफ देखा और फिर असर मालूम करने के लिए पूछा ''क्यो ?''

अमृतकौर अपने खाविंद की तेज निगाही के बायस कुछ झेंप-सी गई। फिर मुसकराकर कहने लगी . ''मुझे क्या मालूम ? बडे आदमियो की बाते बडे आदमी ही समझ सकते हैं।''

जोगिंदर सिंह ने अपनी बीवी की इस अदा पर गौर न किया। वह दरअसल हरिंदर नाथ त्रिपाठी को अपने यहाँ बुलाने और उसे अपने यहाँ कुछ देर ठहराने की बाबत सोच रहा था ''अमृत, मैं कहता हूँ कि त्रिपाठी साहब को दावत दी जाए क्या खयाल है तुम्हारा ? लेकिन मैं सोचता हूँ, क्या पता वह इनकार कर दे बहुत बडा आदमी है ना, मुम्किन है, वह हमारी इस दावत को खुशामद समझे।''

ऐसे मौको पर जोगिंदर सिंह बीवी को अपने साथ शामिल कर लेता था ताकि दावत का बोझ दो आदमियो मे बँट जाए। चुनाचे जब उसने 'हमारी' कहा तो अमृतकौर ने, जो अपने खाविंद की तरह बेहद सादा लोह थी, हरिंदर नाथ त्रिपाठी मे दिलचस्पी लेना शुरू कर दी, हालाँकि उसका नाम भी उसके लिए नाकाबिले-फहम था और यह बात भी उसकी समझ मे बालातर थी कि एक आवारागर्द गीत जमा करके कैसे बहुत बडा आदमी बन सकता है। जब उसने अपने खाविंद से यह सुना था कि हरिंदर नाथ त्रिपाठी गीत इकट्ठे करता है तो उसे अपने खाविंद ही की एक बात याद आ गई थी कि विलायत मे कुछ लोग तितरियाँ पकडने का काम करते हैं और यूँ काफी रुपया कमाते हैं। चुनाचे उसने सोचा कि शायद त्रिपाठी साहब ने गीत जमा करने का काम विलायत के किसी आदमी से सीखा होगा।

जोगिंदर सिंह ने फिर अंदेशा जाहिर किया ''मुम्किन है, वह हमारी इस दावत को खुशामद समझे।''

''इसमे खुशामद की क्या बात है और भी तो कई बडे आदमी आपके पास आते हैं

आप उनको खत लिख दीजिए मेरा खयाल है, वह आपकी दावत जरूर कुबूल कर लेगे. और फिर उनको भी तो आपसे मिलने का बहुत शौक है हाँ, यह तो बताइए, क्या उनके बीवी-बच्चे हैं ?''

''बीवी-बच्चे ?'' जोगिंदर सिंह उठा और हरिंदर नाथ त्रिपाठी को खत लिखने का मजमून अंग्रेजी जबान में सोचते हुए बोला : ''होगे, जरूर होंगे हाँ, उनके बीवी-बच्चे हैं मैंने उनके एक मजमून में पढ़ा था, उनकी बीवी भी है और एक बच्ची भी है ''

खत का मजमून जोगिंदर सिंह के दिमाग मे मुकम्मल हो चुका था—दूसरे कमरे में जाकर उसने छोटे साइज का पैड निकाला (जिस पर वह खास आदमियो को खत लिखा करता था) और हरिंदर नाथ त्रिपाठी के नाम उर्दू में दावतनामा लिखा—यह दावतनामा उस मजमून का उर्दू तरजुमा था जो उसने अपनी बीवी से गुफ्तगू करते वक्त अँग्रेजी मे सोचा था।

तीसरे रोज हरिंदर नाथ त्रिपाठी का जवाब आया।

जोगिंदर सिंह ने धडकते हुए दिल से लिफाफा खोला—जब उसने पढ़ा कि उसकी दावत कुबूल कर ली गई है तो उसका दिल जोर-जोर-से धडकने लगा।

अमृतकौर धूप में छोटे बच्चे के गेसुओ मे दही डालकर मल रही थी कि जोगिंदर सिंह लिफ़ाफा हाथ मे लिए उसके पास पहुँचा . ''उन्होंने हमारी दावत कुबूल कर ली है कहते हैं, वह लाहौर यूँ भी एक ज़रूरी काम से आ रहे हैं वह अपनी ताजा किताब छपवाने का इरादा रखते हैं और हाँ, उन्होंने तुमको प्रणाम लिखा है।''

अमृतकौर को यह जानकर बडी खुशी हुई कि इतने बडे आदमी ने, जिसका काम गीत इकट्ठे करना है, उसको प्रणाम कहा है। उसने दिल ही दिल मे खुदा का शुक्र अदा किया कि उसका ब्याह ऐसे आदमी से हुआ है जिसको हिंदुस्तान का हर बडा आदमी जानता है।

सर्दियो का मौसम था, दिसंबर के पहले दिन थे।

जोगिंदर सिंह सुबह सात बजे बेदार हो गया, लेकिन देर तक बिस्तर मे आँखे खोले पड़ा रहा—उसकी बीवी अमृतकौर और उसका बच्चा, दोनो लिहाफ में लिपटे हुए पासवाली चारपाई पर पडे थे।

जोगिंदर सिंह ने सोचना शुरू किया 'त्रिपाठी साहब से मिलकर उसे कितनी खुशी हासिल होगी खुद त्रिपाठी साहब को भी यकीनन उससे मिलकर बडी मसर्रत होगी क्योंकि वह हिंदुस्तान का जवा अफकार[9] अफसानानवीस और तरक्कीपसंद अदीब है त्रिपाठी साहब से वह हर मौजू पर गुफ्तगू करेगा, गीतो पर, देहाती बोलियो पर, अफ़सानो पर और ताजा जंगी हालात पर वह उनको बताएगा कि एक क्लर्क होने पर भी वह कैसे अच्छा अफ़सानानिगार बन गया क्या यह अजीब बात नही कि डाकखाने मे चिट्ठियो की देखभाल करनेवाला इंसान नव्अन आर्टिस्ट हो '

जोगिंदर सिंह को इस बात पर बहुत नाज था कि डाकखाने मे मजदूरों की तरह

छ.-सात घंटे काम करने के बाद भी वह इतना वक़्त निकाल लेता है कि एक माहाना पर्चा भी मुरत्तब[10] करता है और दो-तीन पर्चों के लिए हर माह एक-एक अफसाना भी लिखता है—दोस्तो को हर हफ्ते जो लबे-चौडे खत लिखे जाते थे, उनका ज़िक्र अलग रहा।

देर तक वह बिस्तर मे लेटा हरिंदर नाथ त्रिपाठी से अपनी पहली मुलाकात के लिए जेहनी तैयारियाँ करता रहा।

जोगिंदर सिंह ने हरिंदर नाथ त्रिपाठी के अफसाने और मजमून पढ रखे थे; उसका फोटो भी देख रखा था—किसी के अफसाने पढ़कर और फोटो देखकर वह आमतौर पर यह महसूस करता था कि उसने उस आदमी को अच्छी तरह जान लिया है, लेकिन हरिंदर नाथ त्रिपाठी के मामले मे उसको अपने ऊपर एतबार नहीं था। उसका कहना था कि हरिंदर नाथ त्रिपाठी उसके लिए बिलकुल अजनबी है—जोगिंदर सिंह के अफसानानिगार दिमाग में बाज औकात हरिंदर नाथ त्रिपाठी एक ऐसे आदमी की सूरत में पेश होता जिसने कपडो के बजाय अपने जिस्म पर कागज लपेट रखे हों, और जब वह कागजो के मुताल्लिक सोचता तो उसे अनारकली की वह दीवार याद आ जाती जिस पर सिनेमा के इश्तिहार ऊपर-तले इतनी तादाद मे चिपके हुए थे कि दीवार पर एक और दीवार बन गई थी—बिस्तर पर लेटा वह देर तक सोचता रहा कि अगर हरिंदर नाथ त्रिपाठी वाकई ऐसा ही आदमी निकल आया तो उसको समझना बहुत दुश्वार हो जाएगा, मगर फिर उसको अपनी जहानत का खयाल आया और उसकी मुश्किलें आसान हो गई और वह उठकर हरिंदर नाथ त्रिपाठी के इस्तिकबाल[11] की तैयारियो मे मसरूफ[12] हो गया।

हरिंदर नाथ त्रिपाठी ने लिखा था कि वह खुद जोगिंदर सिंह के मकान पर चला आएगा क्योकि वह यह फैसला नहीं कर सका है कि उसे लारी से सफ़र करना है या ट्रेन से—जोगिंदर सिंह की हद तक तो यह बात कतई तौर पर तय थी कि वह सोमवार को छुट्टी लेकर सारा दिन अपने मेहमान का इतजार करेगा।

नहा-धोकर और कपडे बदलकर जोगिंदर सिंह देर तक रसोई मे अपनी बीवी के पास बैठा रहा। दोनो ने चाय देर से पी थी, इस खयाल से कि शायद त्रिपाठी आ जाए, लेकिन जब त्रिपाठी देर तक न आया तो उन्होने केक वगैरह सँभालकर अलमारी मे रख दिए और खाली चाय पीकर मेहमान के इतजार मे बैठ गए।

जब जोगिंदर सिंह रसोई मे उठकर कमरे मे आया और आईने के सामने खडे होकर जब उसने दाढी के बालो मे लोहे के छोटे-छोटे क्लिप अटकाने शुरू किए कि बालों को जमा सके तो दरवाजे पर दस्तक हुई।

अध खुली दाढी के साथ, उसी हालत मे उसने ड्योढी का दरवाजा खोला। जैसा कि उसको मालूम था, सबसे पहले उसकी नजर हरिंदर नाथ त्रिपाठी की सियाह घनी दाढ़ी पर पडी जो उसकी अपनी दाढी से बीस गुना बडी थी बल्कि उससे भी कुछ ज्यादा।

हरिंदर नाथ त्रिपाठी के होठो पर, जो बडी-बडी मूँछो के अंदर छुपे हुए थे, मुसकराहट पैदा हुई। उसकी आँख जो कदरे टेढ़ी थी, कुछ और टेढी हो गई। उसने अपनी लंबी-लंबी

जुल्फो को एक तरफ हटाकर अपना हाथ, जो किसी किसान का हाथ मालूम होता था, जोगिंदर सिंह की तरफ बढ़ाया।

जोगिंदर सिंह ने हरिंदर नाथ त्रिपाठी के हाथ की मजबूत गिरफ्त महसूस की और उसका चरमी थैला देखा जो हामला औरत के पेट की तरह फूला हुआ था।

जोगिंदर सिंह बहुत मुतास्सिर हुआ। वह सिर्फ इस कदर कह सका ''त्रिपाठी साहब, आपसे मिलकर मुझे बेहद खुशी हासिल हुई है

हरिंदर नाथ त्रिपाठी को आए पद्रह रोज हो चुके थे—उसकी आमद के तीसरे ही रोज उसकी बीवी और बच्ची भी आ गई थी। दोनो त्रिपाठी के साथ ही गाँव से आई थी मगर दो रोज के लिए मजग मे अपने एक दूर के रिश्तेदार के पास ठहर गई थी, और चूँकि त्रिपाठी ने उस रिश्तेदार के पास उनका ज्यादा देर तक ठहरना मुनासिब नही समझा था, इसलिए उसने उन्हे अपने पास यानी जोगिंदर सिंह के यहाँ बुलवा लिया था।

पहले चार दिन बडी दिलचस्प बातो मे सर्फ हुए।

हरिंदर नाथ त्रिपाठी से अपने अफसानो की तारीफ सुनकर जोगिंदर सिंह बहुत खुश हुआ। उसने एक मुकम्मल अफसाना, जो गैर मतबूआ था, त्रिपाठी को सुनाया और दाद हासिल की। दो नामुकम्मल अफसाने भी सुनाए, जिनके मुताल्लिक त्रिपाठी ने अच्छी राय का इजहार किया—तरक्कीपसद अदब पर बहसे हुईं, मुख्तलिफ अफसानानिगारो की फनी कमजोरियाँ निकाली गईं, नई और पुरानी शाइरी का मुकाबला किया गया, गर्ज यह कि पहले चार दिन बडी अच्छी तरह गुजरे और जोगिंदर सिंह हर लिहाज से हरिंदर नाथ त्रिपाठी की शख्सियत से बहुत मुतास्सिर हुआ।

त्रिपाठी की गुफ्तुगू का अदाज, जिसमें बयकवक्त बचपना और बुढ़ापा था, जोगिंदर सिंह को बहुत पसद आया। त्रिपाठी की लबी दाढ़ी, जो उसकी अपनी दाढ़ी से बीस गुना बडी थी, उसके खयालात पर छा गई। त्रिपाठी की काली-काली जुल्फें, जिनमें देहाती गीतों की रवानी थी, हर वक्त उसके सामने रहने लगी—चिट्ठियो की देखभाल करने के दौरान में भी त्रिपाठी की यह जुल्फे जोगिंदर सिंह को न भूलती।

चार दिन मे त्रिपाठी ने जोगिंदर सिंह का मोह लिया—वह उसका गरवीदा'' हो गया। उसकी टेढ़ी आँख भी उसको खूबसूरत नजर आने लगी, बल्कि उसने सोचा 'अगर उनकी आँखो मे टेढ़ापन न होता तो उनके चेहरे पर यह बुजुर्गी कभी पैदा न होती '

त्रिपाठी के बडे-बडे होठ जब उसकी घनी मूँछो के पीछे हिलते तो जोगिंदर सिंह महसूस करता जैसे झाडियो मे परिंदे बोल रहे हों—त्रिपाठी हौले-हौले बोलता था। बोलते-बोलते जब वह अपनी दाढी पर हाथ फेरता तो जोगिंदर सिंह के दिल को बहुत राहत पहुँचती—वह समझता कि उसके दिल पर प्यार से हाथ फेरा जा रहा है।

चार रोज तक जोगिंदर सिंह ऐसी ही फजा मे रहा—उस फजा को अगर वह अपने किसी अफसाने में बयान करना चाहता तो न कर सकता।

पाँचवे रोज़ एकाएकी हरिंदर नाथ त्रिपाठी ने अपना चरमी थैला खोला, ढेरो अफसाने निकाले और जोगिंदर सिंह को सुनाना शुरू कर दिए।

दस रोज़ तक मुतवातिर वह अफसाने सुनाता रहा। इस दौरान मे उसने जोगिंदर सिंह को कई किताबे सुना दी।

जोगिंदर सिंह तंग आ गया—उसे अफसानो से नफरत हो गई। त्रिपाठी का चरमी थैला, जिसका पेट बनियो की तोंद की तरह फूला हुआ था, उसके लिए एक अजाब[14] बन गया।

हर रोज़ शाम को डाकखाने से लौटते हुए उसे इस बात का खटका लगा रहता कि घर मे दाखिल होते ही उसे त्रिपाठी का सामना करना पडेगा, फिर इधर-उधर की चंद बाते होंगी, फिर वही चरमी थैला खोला जाएगा और उसे एक या दो तवील[15] अफसाने सुनने पडेगे

जोगिंदर सिंह तरक्कीपसंद अफसानानिगार था। अगर तरक्कीपसंदी उसके अंदर न होती तो वह साफ लफ्जों मे त्रिपाठी से कह देता 'बस-बस त्रिपाठी साहब, बस बस अब मुझमे आपके अफ़साने सुनने की ताकत नही रही ', मगर वह सोचता 'नही-नही, मैं तरक्कीपसंद हूँ, मुझे ऐसा नही सोचना चाहिए दरअसल यह मेरी कमज़ोरी है कि अब उनके अफसाने मुझे अच्छे नही लगते,उनमें जरूर कोई न कोई खूबी होगी उनके अफसाने पहले तो मुझे खूबियो से भरे हुए नजर आते थे। मैं मुतअस्सिब[16] हो गया हूँ ''

एक हफ्ते से ज्यादा अर्से तक जोगिंदर सिंह के तरक्कीपसंद दिमाग मे यह कशमकश जारी रही—वह सोच-सोचकर उस हद तक पहुँच गया जहाँ सोच-विचार हो ही नही सकता। तरह-तरह के खयाल उसके दिमाग मे आते मगर वह ठीक तौर पर उनकी जाँच-पडताल न कर सकता। उसकी जेहनी अफरा-तफरी आहिस्ता-आहिस्ता बढती गई और वह यूँ महसूस करने लगा जैसे एक बहुत बडा मकान है जिसमे बेशुमार खिडकियाँ हैं, उस मकान के अंदर वह अकेला है और आँधी आ गई है, कभी इस खिडकी के पट बजते हैं, कभी उस खिड़की के; और उसकी समझ में नही आ रहा है कि वह इतनी खिड़कियो को एकदम कैसे बंद करे।

जब त्रिपाठी को उसके यहाँ आए बीस रोज हो गए तो उसे बेचैनी महसूस होने लगी।

त्रिपाठी शाम को उसे नया अफ़साना सुनाता तो उसे ऐसा महसूस होता जैसे बहुत-सी मक्खियाँ उसके कानो के पास भिनभिना रही हैं—फिर वह किसी और ही सोच मे गर्क हो जाता।

एक रोज त्रिपाठी ने उसे अपना एक और ताजा अफसाना सुनाया, जिसमे किसी औरत और मर्द के जिन्सी ताल्लुकात का जिक्र था— उसके दिल को धक्का-सा लगा।

'पूरे इक्कीस दिन मैं अपनी बीवी के पास सोने के बजाय एक लमडढ़ियल के साथ एक ही लिहाफ में सोता रहा हूँ ' इस एहसास ने जोगिंदर सिंह के दिलो-दिमाग में एक लम्हे के लिए इन्किलाब पैदा कर दिया : 'यह कैसा मेहमान है जोंक की तरह चिमटकर रह गया है हिलने का नाम ही नहीं लेता और और इसकी बीवी, इसकी बच्ची सारा घर ही उठकर चला आया है यह लोग ज़रा भर भी ख़याल नहीं करते कि मुझ ग़रीब का कचमूर निकल जाएगा डाकखाने का मुलाज़िम, पचास रुपए माहवार तनख्वाह आख़िर कब

तक इनकी खातिर-तवाजे करता रहूँगा और फिर अफसाने हैं कि खत्म होने ही मे नही आते इमान हूँ, कोई लोहे का ट्रक तो नही हूँ जो हर रोज इसके अफसाने सुनता रहूँ और और किस कदर गजब है कि मैं बीवी के पास तक नही गया सर्दियो की रातें जाया हो रही हैं '

इक्कीस दिनो के बाद वह त्रिपाठी को एक नई रोशनी मे देखने लगा।

अब उसको त्रिपाठी की हर चीज मायूब[17] नजर आने लगी—उसकी टेढी आँख, जिसमे जोगिदर सिह पहले खूबसूरती देखता था, अब सिर्फ एक टेढ़ी आँख थी। उसकी काली जुल्फों मे भी अब जोगिदर सिह को वह मुलायमी दिखाई नही देती थी और उसकी दाढ़ी को देखकर अब वह सोचता था कि इतनी लबी दाढ़ी रखना बहुत बडी हिमाकत है।

जब त्रिपाठी को उसके यहाँ पच्चीस दिन हो गए तो एक अजीबो-गरीब कैफियत उसके ऊपर तारी हो गई। वह अपने आपको अजनबी समझने लगा। उसे यूँ महसूस होने लगा जैसे वह कभी किसी जोगिदर सिह को जानता था मगर अब वह उसे नही जानता—अपनी बीवी के मुताल्लिक वह सोचता 'जब त्रिपाठी चला जाएगा तो सब ठीक हो जाएगा मेरी नए सिरे से शादी होगी मैं फिर अपनी बीवी के साथ सो सकूँगा और ' इसके आगे जब वह सोचता तो उसकी आँखों मे आँसू आ जाते और उसके हलक मे कोई तल्ख-सी चीज फँस जाती। उसका जी चाहता कि दौडा-दौडा अदर जाए और अमृतकौर को, जो कभी उसकी बीवी हुआ करती थी, गले से लगा ले और रोना शुरू कर दे—मगर ऐसा करने की उसमे हिम्मत नही थी क्योंकि वह तरक्कीपसद अफसानानिगार था।

कभी-कभी जोगिदर सिह के दिल मे यह खयाल दूध के उबाल की तरह उठता कि 'तरक्कीपसदी' का लिहाफ, जो उसने ओढ़ रखा है, उतार फेके और चिल्लाना शुरू कर दे 'त्रिपाठी, 'तरक्कीपसदी' की ऐसी की तैसी तुम और तुम्हारे इकट्ठे किए हुए गीत बकवास हैं मुझे अपनी बीवी चाहिए तुम्हारी ख्वाहिशे तो सारी की सारी गीतो मे जज्ब हो चुकी हैं, मैं अभी नौजवान हूँ मेरी हालत पर रहम करो जरा गौर तो करो, मैं जो एक मिनट भी अपनी बीवी के बगैर नही सो सकता था, पच्चीस दिनो से तुम्हारे साथ एक ही लिहाफ मे सो रहा हूँ क्या यह जुल्म नही ?'

त्रिपाठी उसकी हालत से बेखबर हर शाम उसे ताजा अफसाना सुनाता और उसके साथ लिहाफ में सो जाता—जोगिदर सिह बम कटकर रह जाता।

जब एक महीना गुजर गया तो जोगिदर सिह के सब्र का पैमाना लबरेज हो गया।

मौका ढूँढकर वह गुस्लखाने में अपनी बीवी से मिला। धडकते हुए दिल के साथ और इस डर के मारे कि कही त्रिपाठी की बीवी न आ जाए, उसने जल्दी से बीवी का बोसा लिया जैसे डाकखाने में लिफाफे पर मोहर लगाई जाती है और कहा "आज रात तुम जागती रहना मैं त्रिपाठी से यह कहकर कि बाहर जा रहा हूँ, रात के ढ़ाई बजे लौटूँगा लेकिन मैं जल्दी आ जाऊँगा, बारह बजे बारह बजे मैं हौले-हौले दस्तक दूँगा। तुम चुपके से दरवाजा खोल

देना और फिर हम   ड्योढ़ी बिलकुल अलग-थलग है लेकिन तुम एहतियात[15] के तौर पर वह दरवाज़ा, जो ग़ुस्लख़ाने की तरफ़ खुलता है, बंद कर देना "

बीवी को अच्छी तरह समझाकर वह त्रिपाठी के पास गया और उसे ढाई बजे लौटने की इत्तिला देकर घर से बाहर निकल गया।

बारह बजने मे चार सर्द घंटे बाक़ी थे जिनमें से दो घंटे उसने साईकिल पर इधर-उधर घूमने में काट दिए। उसे सर्दी की शिद्दत[19] का बिलकुल एहसास न हुआ, इसलिए कि बीवी से मेल करने का ख़याल ही काफ़ी गर्म था।

दो घंटे साइकिल पर घूमने के बाद वह अपने मकान के पासवाले मैदान में बैठ गया। उसने महसूस किया कि वह रूमानी हो गया है। जब उसने सर्द रात की धुँधयाली ख़ामोशी का ख़याल किया तो उसे यह ख़ामोशी जानी-पहचानी नजर आई। ठिठरे हुए आसमान पर तारे चमक रहे थे जैसे पानी की मोटी-मोटी बूँदें। इंजन की चीख ख़ामोशी को तोड़ती तो उसका अफ़सानानिगार दिमाग़ सोचता कि ख़ामोशी बर्फ़ का बहुत बड़ा ढेला है और इंजन की चीख़ वह मेख़ है जो ख़ामोशी के सीने में खुब गई है

बहुत देर तक जोगिंदर सिंह एक नए किस्म के रूमान को अपने दिलो-दिमाग में फैलाता रहा और रात की अँधयारी ख़ूबसूरतियों को गिनता रहा।

एकाएकी चौंककर उसने घड़ी में वक़्त देखा तो बारह बजने में दो मिनट बाकी थे—उसने घर का रुख़ किया और दरवाज़े पर हौले से दस्तक दी।

पाँच सैकिंड गुज़र गए—दरवाजा न खुला।

एक बार फिर उसने दस्तक दी।

दरवाज़ा खुला।

उसने हौले से कहा : "अमृत " जब नजरें उठाकर उसने देखा तो अमृतकौर के बजाय त्रिपाठी खड़ा था।

अँधेरे में उसको ऐसा मालूम हुआ जैसे त्रिपाठी की दाढ़ी लंबी हो गई है और जमीन को छू रही है।

और फिर उसको त्रिपाठी की आवाज़ सुनाई दी . "तुम जल्दी आ गए, चलो यह भी अच्छा हुआ मैंने अभी-अभी एक अफ़साना मुकम्मल किया है, आओ सुनो !"

1 लोकप्रियता, 2 खुशमिजाज; 3 संबोधित; 4 निमंत्रण, 5 आधारित, 6. स्तर, 7 दार्शनिकों, 8 लक्ष्य, एकमात्र उद्देश्य, 9 प्रसिद्ध लेखक, 10 संपादित, 11 स्वागत, 12 व्यस्त, 13 प्रशंसक, 14 परेशानी, समस्या, 15 लंबे, 16 भेदभाव करनेवाला, पक्षपाती (धर्म एवं जाति के संबंध में संकीर्ण विचारोंवाला), 17 बुराई, ऐब, 18 सावधानी; 19. तेजी।

ख़ालिद मियाँ

मुम्ताज ने सुबह सवेरे उठकर हस्बे-मामूल तीनो कमरो मे झाड़ू दिया, कोने खुदरों से सिगरेट के टुकडे, माचिस की जली हुई तीलियाँ और इसी तरह की और कई चीजे ढूंढ़-ढूँढ़कर निकाली—जब तीनो कमरे अच्छी तरह साफ हो गए तो उसने इत्मीनान का साँस लिया।

उसकी बीवी बाहर सहन में सो रही थी—बच्चा पगोडे में था।

हर रोज सुबह सवेरे उठकर वह खुद सिर्फ इसलिए तीनो कमरे मे झाड़ू देता था कि उसका लडका अब चलने-फिरने लगा था और आम बच्चों की मानिंद हर चीज जो उसके सामने पडी होती थी, उठाकर मुँह मे डाल लेता था।

वह हर रोज तीनो कमरे बडे एहतियात से साफ करता, मगर उसको हैरत होती जब खालिद फर्श पर से अपने छोटे-छोटे नाखूनो की मदद से कोई न कोई चीज उठा लेता—फर्श का पलस्तर कई जगह उखडा हुआ था और उन जगहों मे कूडे-करकट के छोटे-छोटे जर्रे फँस जाते थे। वह अपनी तरफ से पूरी सफाई करता, मगर कुछ न कुछ बाकी रह जाता जो उसका पलोठी का बेटा खालिद, जिसकी उम्र अभी एक बरस की नही हुई थी, उठाकर अपने मुँह मे डाल लेता।

उसको सफाई का खब्त हो गया था—अगर वह खालिद को कोई चीज फर्श पर से उठाकर अपने मुँह में डालते हुए देखता तो खुद को मुल्जिम समझता, अपने आपको दिल ही दिल मे कोसता कि उसने क्यो बदएहतियाती की।

खालिद से उसको प्यार ही नही, इश्क था, लेकिन अजीब बात है कि जूँ-जूँ खालिद की पहली सालगिरह का दिन नजदीक आ रहा था, उसका यह वहम यकीन की सूरत इख्तियार कर रहा था कि उसका बेटा एक साल का होने से पहले-पहले मर जाएगा।

अपने खौफनाक वहम का जिक्र वह अपनी बीवी से भी कर चुका था। उसके मुताल्लिक यह मशहूर था कि वह औहाम[1] का बिलकुल कायल नही है—उसकी बीवी ने जब पहली बार उसके मुँह से ऐसी बात सुनी थी तो कहा था। "आप और ऐसे वहम अल्लाह के फज्लो-करम से हमारा बेटा सौ साल जिंदा रहेगा मैंने उसकी पहली सालगिरह के लिए ऐसा एहतिमाम[2] किया है कि आप दग रह जाएँगे।"

बीवी की बात सुनकर उसके दिल को एक धक्का-सा लगा था—वह कब चाहता था कि

उसका बेटा ज़िंदा न रहे, लेकिन वह अपने वहम का क्या इलाज करे।

ख़ालिद बड़ा तंदुरुस्त बच्चा था। सर्दियों में जब एक दफ़ा नौकर उसको बाहर सैर कराने के लिए ले गया था तो वापस आकर उसने उसकी बीवी से कहा था : "बेगम साहब, आप ख़ालिद मियाँ के गालों पर सुर्ख़ी न लगाया करें किसी की नजर लग जाएगी।"

नौकर की बात सुनकर उसकी बीवी बहुत हँसी थी : "बेवक़ूफ । मुझे क्या जरूरत है सुर्ख़ी लगाने की माशाल्लाह ख़ालिद के गाल तो क़ुदरती लाल हैं।"

गुज़िश्ता सर्दियों में ख़ालिद के गाल बहुत सुर्ख़ रहे थे, मगर अब गर्मियों में कुछ जर्दीमाइल हो गए थे। ख़ालिद को पानी में खेलने का बहुत शौक था। जब वह सुबह अँगड़ाई लेकर उठता और बोतल में भरा हुआ दूध पी लेता तो दफ़्तर जाने से पहले वह उसको पानी की बाल्टी में खड़ा कर देता; ख़ालिद देर तक पानी के छींटे उड़ाता रहता; वह और उसकी बीवी ख़ालिद को देखते रहते और बहुत खुश होते।

उसकी खुशी में गम का एक बर्क़ी धक्का-सा जरूर होता : 'ख़ुदा मेरी बीवी की जबान मुबारक करे यह क्या है कि मुझे ख़ालिद की मौत का खटका लगा रहता है यह वहम क्यों मेरे दिमाग मे बैठ गया है कि वह मर जाएगा क्यों मर जाएगा ? वह अच्छा-भला सेहतमद है, अपनी उम्र के बच्चों से कही ज्यादा सेहतमंद ' मैं यक़ीनन पागल हूँ उससे मेरी हद से ज्यादा बढ़ी हुई मुहब्बत ही दरअसल मेरे वहम का बायस है लेकिन मुझे उससे इतनी ज्यादा मुहब्बत क्यो है ? क्या सारे बाप इसी तरह अपने बच्चों से प्यार करते हैं ? क्या हर बाप को अपनी औलाद की मौत का खटका लगा रहता है ? मुझे आखिर हो क्या गया है ?'

उसने जब हस्बे-मामूल तीनों कमरे अच्छी तरह साफ कर दिए तो वह फर्श पर चटाई बिछाकर लेट गया—यह उसकी आदत थी। सुबह उठकर, झाड़ू वग़ैरह देकर वह गर्मियों में ज़रूर आधे घटे के लिए चटाई पर लेटा करता था, बग़ैर तकिए के। इस तरह उसको लुत्फ महसूस होता था। फर्श पर लेटकर वह सोचने लगा 'परसों मेरे बच्चे की पहली सालगिरह है अगर यह सालगिरह बख़ैरो-आफियन[3] गुजर जाए तो मेरे दिल का बोझ हल्का हो जाएगा, मेरा वहम बिलकुल दूर हो जाएगा अल्लाह मियाँ, यह सब तेरे हाथ में है '

आँखे बद किए अभी वह लेटा ही हुआ था कि उसने अपने नंगे सीने पर ख़ालिद का लम्स और बोझ महसूस किया—उसने आँखें खोल दीं।

उसकी बीवी पास ही खड़ी थी। उसने कहा : "ख़ालिद रात भर बेचैन-सा रहा है सोते मे जैसे डर-डरके काँपता रहा हो।"

ख़ालिद उसके सीने पर लेटे-लेटे ज़ोर से काँपा—उसने ख़ालिद की पीठ पर हाथ रखा और कहा . "खुदा मेरे बेटे का मुहाफिज़[4] हो।"

उसकी बीवी ने ख़फगीआमेज़ लहजे में कहा : "तौबा, आपको तो बस वहमों ने धर रखा है हल्का-सा बुखार है, इंशाल्लाह दूर हो जाएगा।" यह कहकर वह कमरे से बाहर चली गई।

ख़ालिद उसकी छाती पर औंधा लेटा हुआ था और सो-सा रहा था; वह सोते में

कभी-कभी काँप उठता था—उसने हौले-हौले बड़े प्यार से ख़ालिद को थपकना शुरू कर दिया।

थोड़ी देर के बाद ख़ालिद ने आहिस्ता-आहिस्ता अपनी बड़ी-बड़ी सियाह आँखें खोलीं और उसकी तरफ़ देखकर मुसकराया।

उसने ख़ालिद का मुँह चूमा : "क्यों मियाँ ख़ालिद, क्या बात है आप काँपे क्यों थे ?"

ख़ालिद ने मुसकराकर अपना उठा हुआ सिर उसकी छाती पर गिरा दिया।

उसने फिर ख़ालिद को थपकना शुरू कर दिया।

वह दिल में दुआएँ माँग रहा था कि उसके बेटे की उम्रदराज़ हो—उसकी बीवी ने ख़ालिद की पहली सालगिरह के लिए बड़ा एहतिमाम किया था; अपनी सारी सहेलियों से कहा था कि वह उस तक़्रीब[5] पर जरूर आएँ; दर्ज़ी से ख़ासतौर पर सालगिरह के कपड़े सिलवाए थे; दावत पर क्या-क्या चीज़ होगी, सब सोच लिया था। उसको यह ठाट पसंद नहीं था। वह चाहता था कि किसी को ख़बर न हो और सालगिरह गुज़र जाए; ख़ुद उसको भी पता न चले और उसका बेटा एक बरस का हो जाए; उसको सिर्फ़ उस वक़्त इल्म हो जब ख़ालिद एक बरस का हो चुका हो।

जब ख़ालिद उसकी छाती पर से उठा तो उसने मुहब्बत में डूबे हुए लहजे में कहा . "ख़ालिद बेटा, सलाम नहीं करोगे अब्बा जी को।"

ख़ालिद ने मुसकराकर अपना दायाँ हाथ उठाया और अपने माथे पर रख दिया।

उसने खालिद को दुआ दी : "जीते रहो " दुआ देते ही उसके दिल पर उसके वहम की ज़रब लगी और वह ग़मो-फ़िक्र के समंदर में ग़र्क़ हो गया।

ख़ालिद उसे सलाम करके कमरे के बाहर चला गया।

दफ्तर जाने में अभी काफी वक़्त था—वह चटाई पर लेटा रहा और अपने वहम को दिलो-दिमाग़ से महव[6] करने की कोशिश करता रहा।

इतने में बाहर सहन से उसकी बीवी की आवाज़ आई : "मुम्ताज़ साहब, मुम्ताज़ साहब, इधर आइए।" आवाज़ में शदीद घबराहट थी।

वह चौंककर उठा और दौड़कर बाहर गया—उसने देखा कि उसकी बीवी ख़ालिद को गुस्लखाने के बाहर गोद में लिए खड़ी है और ख़ालिद उसकी गोद में बल पे बल खा रहा है।

उसने खालिद को अपनी बाँहों में लिया और बीवी से, जो काँप रही थी, पूछा : "क्या हुआ ?"

उसकी बीवी ने ख़ौफ़ज़दा लहजे में कहा : "मालूम नहीं पानी से खेल रहा था मैंने नाक साफ़ की तो दोहरा हो गया।"

उसकी अपनी बाँहों में भी ख़ालिद ऐसे बल खा रहा था, जैसे कोई उसे कपड़े की तरह निचोड रहा हो।

सामने चारपाई पड़ी थी—उसने ख़ालिद को उस पर लिटा दिया।

वह और उसकी बीवी सख़्त परेशान थे; ख़ालिद चारपाई पर पड़ा बल पे बल खा रहा

था और उन दोनो के औसान खता थे कि वह क्या करे—उन्होने खालिद को थपकाया, चूमा, पानी के छीटे मारे, मगर खालिद का तशन्नुज[7] दूर न हुआ।

थोडी देर के बाद खुद ब खुद खालिद का दौरा आहिस्ता-आहिस्ता खत्म हो गया और उस पर बेहोशी-सी तारी हो गई।

उसने समझा कि खालिद मर गया है—उसने बीवी से कहा "खत्म हो गया।"

उसकी बीवी चिल्लाई "लाहौलवला कैसी बाते मुँह से निकालते हो कन्वलशन थी, खत्म हो गई अभी ठीक हो जाएगा।"

खालिद ने अपनी मुरझाई हुई बडी-बडी सियाह आँखे खोली और उसकी तरफ देखा।

उसकी सारी दुनिया जिंदा हो गई—उसने बडे ही दर्द भरे प्यार से खालिद से कहा "क्यों खालिद बेटा, क्या हुआ था आपको ?"

खालिद के होठो पर तशन्नुजजदा मुसकराहट नमूदार हुई।

उसने खालिद को गोद मे उठा लिया और अदर कमरे मे ले गया—वह उसको लिटाने ही वाला था कि दूसरी कन्वलशन[8] आई और वह फिर बल खाने लगा, जिस तरह मिरगी का दौरा होता है यह तशन्नुज भी उसी किस्म का था—उसको महसूस हुआ कि खालिद नही, बल्कि वह खुद उस अजीयत[9] के शिकजे में कसा जा रहा है।

दूसरा दौरा खत्म हुआ तो खालिद और ज्यादा मुरझा गया, उसकी बडी-बडी सियाह आँखे अदर धँस गई।

वह खालिद से बाते करने लगा "खालिद बेटे, यह क्या हो जाता है आपको ? खालिद मियाँ, उठो ना, चलो-फिरो ना । खालिदी, मक्खन खाएँगे आप ?"

खालिद को मक्खन बहुत पसद था, लेकिन उसने हाँ न की। जब उमने कहा "बेटे, गग्गो खाएँगे आप ?" तो खालिद ने बडे नहीफ अदाज मे सिर हिलाकर न की। वह मुसकराया और उसने खालिद को अपने गले से लगा लिया, फिर उसने खालिद को अपनी वीवी के हवाले किया और कहा "तुम इसका ध्यान रखो, मैं डॉक्टर को लेकर आता हूँ।"

वह डॉक्टर को अपने साथ लेकर आया तो उसने देखा कि उसकी बीवी के होश उडे हुए हैं—उसकी गैरमौजूदगी में खालिद पर तशन्नुज के तीन और दौरे पड चुके थे और वह बेजान-सा हो गया था।

डॉक्टर न खालिद का अच्छी तरह देखने के बाद कहा "तरद्दुद की कोई बात नही, ऐसी कन्वलशज बच्चो को अमूमन आया करती हैं इनकी वजह दाँत हैं, मेदे मे करम वगैरह हो तो वह भी इनका बायस हो सकते हैं मैं दवा लिख देता हूँ, आराम आ जाएगा बुखार तेज नही है, आप कोई फिक्र न करे।"

वह दफ्तर न गया ओर सारा दिन खालिद के पास बैठा रहा।

डॉक्टर के जाने के बाद खालिद को दो मर्तबा और दौरे पडे और वह निढाल लेटा रहा।

शाम हो गई तो उसने सोचा 'शायद अब अल्लाह का फज्ल हो गया है बहुत देर से कोई कन्वलशन नही आई है खुदा करे, रात इसी तरह कट जाए।'

उसकी बीवी भी खुश थी "अल्लाह तआला ने चाहा तो कल मेरा खालिद दौडता फिरेगा।"

रात को मुकर्ररा[10] औकात पर खालिद को दवा देनी थी, इसलिए वह चारपाई पर न लेटा कि कही सो न जाए। वह खालिद के पगोडे के पास आरामकुर्सी खीचकर बैठ गया और सारी रात जागता रहा—खालिद रात भर बेचैन रहा, काँप-काँपकर जाग उठता, हरारत भी तेज थी।

सुबह सात बजे के करीब उसने खालिद को थरमामीटर लगा के देखा—एक सौ चार डिगरी बुखार था।

डॉक्टर बुलाया तो डॉक्टर ने कहा 'तरद्दुद[11] की कोई बात नही ? ब्रोकाइटिस है मैं नुस्खा लिख देता हूँ, तीन-चार रोज मे आराम आ जाएगा।"

डॉक्टर नुस्खा लिखकर चला गया तो वह दवा बनवा लाया। उसने खालिद को एक खुराक तो पिलाई मगर उसको तस्कीन न हुई—दस बजे के करीब वह एक बडे डॉक्टर को ले आया।

बडे डॉक्टर ने खालिद को अच्छी तरह से देखा और तसल्ली दी "घबराने की कोई बात नही सब ठीक हो जाएगा।"

कुछ भी ठीक न हुआ, बडे डॉक्टर की दवा ने कोई असर न किया, बुखार तेज ही रहा

उसके नौकर ने कहा "साहब, बीमारी वगैरह कोई नही खालिद मियाँ को नजर लग गई है मैं एक तावीज लिखवाकर लाया हूँ, अल्लाह के हुक्म से यूँ चुटकियो मे असर करेगा।"

सात कुँओ का पानी इकट्ठा किया गया, उसमे तावीज घोलकर खालिद को पिलाया गया, कोई असर न हुआ। एक हमसाईं आई तो यूनानी दवा तज्वीज कर गई, वह दवा तो ले आया मगर उसने खालिद को न दी—शाम को उसका एक रिश्तेदार एक डॉक्टर को साथ लेकर आया। डॉक्टर ने खालिद को देखा और कहा "मलेरिया है और मलेरिया मे इतना बुखार होता ही है मैं कोनेन का इजेक्शन दिए देता हूँ आप इसके सिर पर बर्फ का पानी डालिए।"

खालिद के सिर पर बर्फ का पानी डाला गया तो बुखार एकदम कम हो गया, दर्जा-ए-हरारत अठानवे डिगरी तक आ गया—उसकी और उसकी बीवी की जान में जान आई—लेकिन थोडे ही अर्से में बुखार फिर बहुत तेज हो गया।

उसने थरमामीटर लगाकर देखा—दर्जा-ए-हरारत फिर एक सौ चार तक पहुँच गया था।

हमसाई फिर आई—उसने खालिद को मायूस नजरों से देखा और उसकी बीवी से कहा "बच्चे की गर्दन का मनका टूट गया है।"

उसका दिल बैठ गया—उसने नीचे कारखाने से हस्पताल फोन किया, जवाब मिला कि वह मरीज को ले आए। उसने फौरन ताँगा मँगवाया, खालिद को गोद मे उठाया, बीवी को साथ बिठाया और हस्पताल का रुख किया।

वह सारा दिन पानी पीता रहा था, मगर प्यास थी कि बुझती ही नहीं थी; हस्पताल जाते हुए रास्ते में उसका हलक़ बेहद ख़ुश्क हो गया। उसने सोचा कि उतरकर किसी दूकान से एक गिलास पानी पी ले, लेकिन ख़ुदा मालूम कहाँ से एकदम एक वहम उसके दिमाग़ में आन टपका : 'देखो, अगर तुमने पानी पिया तो तुम्हारा ख़ालिद मर जाएगा ' उसका हलक़ सूख के लकड़ी हो गया, मगर उसने पानी न पिया—उसने सिगरेट सुलगा लिया; दो कश लेने के बाद उसने सिगरेट फेंक दिया कि उसके दिमाग़ में एक और वहम गूँजा था 'मुम्ताज़, सिगरेट न पियो, वर्ना तुम्हारा बच्चा मर जाएगा ' उसने ताँगा ठहराया और सोचा . 'यह क्या हिमाक़त है यह वहम वग़ैरा सब फिज़ूल हैं सिगरेट पीने से बच्चे पर क्या आफत आ सकती है ' ताँगे से उतरकर उसने सडक पर से सिगरेट उठा लिया, वापस ताँगे में बैठकर जब उसने कश लेना चाहा तो किसी नामालूम ताकत ने उसको फिर रोका : 'नही मुम्ताज, नही ऐसा न करो ख़ालिद मर जाएगा ' उसने सिगरेट जोर से फेंक दिया—ताँगेवाले ने घूर के उसको देखा; उसने महसूस किया कि ताँगेवाले को उसकी दिमागी कैफ़ियत का इल्म है और वह उसका मजाक़ उड़ा रहा है; अपनी ख़िफ्फत[12] दूर करने की ख़ातिर उसने ताँगेवाले से कहा : "सिगरेट खराब हो गया था " यह कहकर उसने जेब से पैकेट निकालने के बाद एक नया सिगरेट निकाल लिया, मगर सुलगाने के ख़याल ही से डर गया, उसके दिलो-दिमाग में एक हलचल-सी मच गई, इद्राक कहता था कि सब ओहाम फ़िज़ूल हैं, मगर कोई ऐसी आवाज़ थी, कोई ऐसी ताक़त थी जो उसकी मनतक[13], उसके इस्तिदलाल[14], उसके इद्राक[15] पर ग़ालिब आ जाती थी ताँगा हस्पताल के फाटक में दाखिल हुआ तो उसने सिगरेट उँगलियों में मसलकर फेंक दिया; उसको अपने ऊपर बहुत तरस आया कि वह औहाम का गुलाम बन गया है।

हस्पतालवालों ने फौरन ही खालिद को दाखिल कर लिया—डॉक्टर ने उसको देखने के बाद कहा "ब्रोंकोनमूनिया है हालत मख्दूश[16] है।"

खालिद बेहोश था। उसकी बीवी ख़ालिद के सिरहाने बैठी वीरान निगाहों से उसको देख रही थी।

उसको सख़्त प्यास लग रही थी—कमरे के साथ ही ग़ुस्लखाना था; नल खोलकर वह ओक से पानी पीने लगा तो फिर वही वहम उसके दिमाग़ में गूँजा . 'मुम्ताज़, यह क्या कर रहे हो तुम पानी मत पियो तुम्हारा खालिद मर जाएगा।'

उसने दिल ही दिल में उस वहम को गाली दी और इंतिक़ामन इतना पानी पिया कि उसका पेट अफ़र गया।

पानी पीकर वह ग़ुस्लखाने से बाहर आया तो उसने देखा, उसका ख़ालिद उसी तरह मुरझाया हुआ और बेहोश हस्पताल के आहनी पलग पर पडा है—उसने चाहा, कहीं भाग जाए; उसके होशो-हवास ग़ायब हो जाएँ; खालिद अच्छा हो जाए और उसके बदले ख़ुद वह नमूनिया में गिरफ़्तार हो जाए। उसने महसूस किया कि खालिद अब पहले से ज्यादा ज़र्द है; उसने सोचा कि यह सब उसके पानी पी लेने के बायस है; अगर वह पानी न पीता तो ख़ालिद की हालत ज़रूर बेहतर हो जाती उसको बहुत दुख हुआ; उसने ख़ुद को बहुत

लानत-मलामत की, मगर फिर उसको ख़याल आया कि जिसने वह सब ऊटपटाँग बातें सोची थी, वह वह नहीं, कोई और था : 'वह और कौन है क्यों मेरे दिमाग में ऐसे वहम पैदा होते हैं मुझे प्यास लगी थी और मैंने पानी पी लिया मेरे पानी पी लेने से ख़ालिद पर क्या असर पड़ सकता है ख़ालिद ज़रूर अच्छा हो जाएगा कल उसकी सालगिरह है इंशाल्लाह ख़ूब ठाट से मनाई जाएगी ' लेकिन फौरन ही उसका दिल बैठ गया; किसी आवाज़ ने उससे कहा : 'ख़ालिद एक बरस का होने ही नहीं पाएगा ' उसका जी चाहा कि वह उस आवाज़ की ज़बान पकड़ ले और उसे गुद्दी से निकाल फेंके; फिर उसको ख़याल आया कि वह आवाज तो ख़ुद उसके दिमाग में पैदा हुई है . 'ख़ुदा मालूम कैसे पैदा हो जाती है, क्यों हो जाती है·· ' वह कदर तंग आ गया कि उसने दिल ही दिल में अपने औहाम से गिडगिडाकर कहा 'ख़ुदा के लिए मुझ पर रहम करो क्यो तुम मुझ ग़रीब के पीछे पड गए हो ।'

शाम हो चुकी थी—कई डॉक्टर ख़ालिद को देख चुके थे, दवा दी जा रही थी, कई इंजेक्शन भी लग चुके थे—मगर ख़ालिद अभी तक बेहोश था।

दफ्अतन उसके दिमाग में एक आवाज गूँजी 'तुम यहाँ मे चले जाओ फ़ौरन चले जाओ, वरना ख़ालिद मर जाएगा !'

वह फौरन कमरे से बाहर चला गया। हस्पताल मे बाहर चला गया। उसने अपने आपको उन अनजानी आवाजों के हवाले कर दिया, अपनी हर जुंबिश, हर हरकत उनके हुक्म के सुपुर्द कर दी।

वह उमे एक होटल में ले गई; उन्होंने उमको शराब मँगवाने के लिए कहा। शराब आ गई तो उसे फेंक देने का हुक्म दिया; उसके फेक दी तो और मँगवाने के लिए कहा, और आई तो उसे भी फेंक देने के लिए कहा शराब और टूटे हुए गिलासों के बिल अदा करने के बाद वह होटल से बाहर निकला; उसको महसूस हुआ कि चारो तरफ ख़ामोशी ही ख़ामोशी है, सिर्फ उमके दिमाग में शोर बरपा है।

चलता-चलता वह हस्पताल वापस पहुँच गया।

उसने ख़ालिद के कमरे की जानिब रुख़ किया तो उमे हुक्म हुआ 'मत जाओ उधर तुम्हारा ख़ालिद मर जाएगा !'

वह रुक गया और घास के मैदान में पडी बेच पर लेट गया।

रात के दस बज चुके थे—मैदान मे अँधेरा था, चारो तरफ ख़ामोशी थी। कभी-कभी किसी मोटर के हॉर्न की आवाज ख़ामोशी में ख़राश पैदा करती हुई गुजर जाती थी। सामने ऊँची दीवार में हस्पताल का क्लाक रोशन था।

वह ख़ालिद के मुताल्लिक़[17] सोच रहा था · 'क्या वह बच जाएगा वह बच्चे क्यो पैदा होते हैं, जिन्हें मर जाना होता है वह ज़िंदगी क्यों पैदा होती है, जिसको इतनी जल्दी मौत के मुँह में चला जाना होता है ख़ालिद ज़रूर '

एकदम उसके दिमाग़ में एक वहम फूटा और वह बेंच पर से उतरकर सजदे में गिर गया—हुक्म था कि उसी तरह पड़ा रहे, जब तक ख़ालिद ठीक न हो जाए।

वह सजदे में पड़ा रहा—वह दुआ माँगना चाहता था, मगर हुक्म था कि वह दुआ न माँगे।

उसकी आँखों में आँसू आ गए; वह ख़ालिद के लिए नही, अपने लिए दुआ माँगने लगा; 'ख़ुदाया, मुझे इस अजीयत से निजात[18] दे तुझे अगर खालिद को मारना है तो मार दे, यह मेरा क्या हश्र कर रहा है तू !'

दफ्अतन उसे कुछ आवाजें सुनाई दीं—उससे कुछ दूर मैदान के किनारे पर झाड़ियों के पास बिछी कुर्सियों पर दो डॉक्टर बैठे आपस में बातें कर रहे थे—

"बच्चा बडा ख़ूबसूरत है।"

"माँ का हाल मुझसे तो देखा नहीं गया।"

"बेचारी हर डॉक्टर के पाँव पड रही है।"

"हमने तो अपनी तरफ से हर मुम्किन कोशिश की है।"

"बचना मुहाल है।"

"मैंने तो उसकी माँ से यही कहा है कि अब दुआ करो बहन "

एक डॉक्टर ने उसकी तरफ देखा—वह सजदे मे पडा हुआ था।

उसने डॉक्टर की ऊँची आवाज सुनी · "ओ, क्या कर रहे हो तुम इधर आओ।"

वह उठकर दोनों डॉक्टरो के पास गया।

एक ने उससे पूछा "कौन हो तुम ?"

उसने अपने खुश्क होंठो पर जबान फेरकर जवाब दिया . "जी मैं एक मरीज "

उसी डॉक्टर ने सख्ती मे कहा "मरीज हो तो अपने बिस्तर पर जाओ यहाँ मैदान में क्यो डड पेल रहे हो ?"

उसने कहा "जी मेरा बच्चा दाखिल है उधर उस वार्ड मे।"

"वह तुम्हारा बच्चा है जो "

"जी हाँ शायद आप उसी के बारे मे बातें कर रहे थे वह मेरा बच्चा है खालिद।"

"आप उसके बाप हैं ?"

उसने अपना गमो-अदोह से भरा हुआ सिर हिलाया . "जी हाँ, मैं उसका बाप हूँ।"

उसी डॉक्टर ने कहा "आप यहाँ क्या कर रहे है जाइए कमरे मे आपकी वाइफ़ बहुत परेशान है।"

'जी अच्छा,' कहकर वह वार्ड की तरफ बढ़ा—चद सीढियाँ चढ़कर जब वह बरामदे में पहुँचा तो उसने देखा कि कमरे के बाहर उसका नौकर रो रहा है।

उसको देखकर नौकर और ज्यादा रोने लगा "साहब, खालिद मियाँ फौत हो गए।"

वह अदर कमरे मे गया—उसकी बीवी फर्श पर बेहोश पड़ी थी और एक डॉक्टर और नर्स उसको होश मे लाने की कोशिश कर रहे थे।

वह पलग के पास खड़ा हो गया—खालिद आँखे बद किए पड़ा था, उसके चेहरे पर मौत का सुकून था।

उसने ख़ालिद के रेशमी बालों पर हाथ फेरा और दिल चीर देनेवाले लहजे में पूछा :

"ख़ालिद मियाँ, गग्गो खाएँगे आप ?"

ख़ालिद का सिर नफ़ी में न हिला।

उसने फिर दरख़्वास्त भरे लहजे में कहा : "खालिद मियाँ, मेरे वहम भी ले जाएँगे आप अपने साथ · · ?"

उसको महसूस हुआ कि ख़ालिद ने सिर हिलाकर हाँ की है।

1. भ्रम; 2. प्रबंध, 3. कुशल-मंगल, 4. रक्षक, 5. समारोह, 6. दूर करना, मिटाना, 7. अकड़न, ऐंठन; 8. दौरा, 9. दुख-तकलीफ, 10. निश्चित की हुई, 11. चिंता, 12. खिसियानापन, 13. फलसफे; 14. दलील देना, 15. अक्ल, 16. खतरनाक, 17. संबोधित, विषय में; 18. छुटकारा।

बासित

बासित बिल्कुल रजामद नही था, लेकिन माँ के सामने उसकी कोई पेश न चली।

अव्वल-अव्वल तो उसको इतनी जल्दी शादी करने की कोई ख्वाहिश नही थी, इसके अलावा वह लडकी भी उसे पसद नही थी, जिससे उसकी माँ उसकी शादी करने पर तुली हुई थी।

वह बहुत देर तक टालता रहा, जितने बहाने बना सकता था, उसने बनाए, लेकिन आखिर एक रोज उसका माँ की अटल ख्वाहिश के सामने सरे-तस्लीमे-खम[1] करना पडा।

दरअसल इनकार करते-करते वह तग आ गया था। उसने दिल में सोचा 'अब यह बक-बक खत्म हो जाए तो अच्छा है होने दो शादी कोई कयामत तो टूट नही पडेगी मैं निभा लूँगा।

उसकी माँ बहुत खुश हुई—लडकीवाले उसके अजीज थ और वह, अर्सा हुआ, उनको जबान दे चुकी थी।

जब बासित ने हाँ की तो वह तारीख पक्की करने के लिए लडकीवालो के हाँ गई। लडकीवालो ने गैर मुतवक्के[2] तौर पर टाल-मटोल की तो उसको बहुत गुस्सा आया ''सईदा की माँ, मैंने इतनी मुश्किलो से बासित को रजामद किया है अब तुम तारीख पक्की नहीं कर रही हो शादी होगी तो इसी महीने की बीस को होगी, नही तो नही होगी और यह बात सोलह आने पक्की है इतना समझ लो।''

धमकी ने काम कर दिया—लडकी की माँ बिलआखिर राजी हो गई।

सब तैयारियाँ मुकम्मल हुईं—बीस को दुल्हन घर में थी।

बासित को लडकी पसद नही थी, लेकिन वह उसके साथ निभाने का फैसला कर चुका था—वह उससे बडी मुहब्बत से पेश आया, उसने बिलकुल जाहिर न होने दिया कि वह उससे शादी करने के लिए तैयार नही था और यह कि वह जबदस्ती उसके सिर मढ़ दी गई है।

'नई दुल्हने आमतौर पर बहुत शर्मीली होती हैं ' बासित ने सोचा लेकिन उसने महसूस किया, सईदा जरूरत से ज्यादा शर्मीली है और उसके शर्मीलेपन मे कुछ खौफ भी है, जैसे वह उससे डरती है—शुरू-शुरू मे उसका खयाल था कि सईदा का डर दूर हो जाएगा, मगर वह बढ़ता ही गया।

उसने सईदा को चंद रोज़ के लिए मैके भेज दिया—जब वह वापिस आई तो उसका खौफ़आलूद शर्मीलापन एक हद तक दूर हो चुका था।

बासित ने सोचा : 'एक-दो मर्तबा मैके जाएगी तो ठीक हो जाएगी।' मगर उसका कयास ग़लत निकला—वह फिर खौफ़ज़दा रहने लगी।

एक रोज़ उसने पूछा : "सईदा, तुम डरी-डरी क्यों रहती हो?"

सईदा चौंकी : "नहीं तो... नहीं तो..."

उसने बड़े प्यार भरे लहजे में कहा : "आखिर बात क्या है...? खुदा की कसम, मुझे बड़ी उलझन होती है...! किस बात का डर है तुम्हें...? मेरी माँ इतनी अच्छी है; वह तुमसे मांओं का सुलूक नहीं करती, मैं तुमसे इतनी मुहब्बत करता हूँ... फिर तुम ऐसी सूरत क्यों बनाए रखती हो... ऐसा मालूम होता है, जैसे तुम्हे यह खौफ़ है कि कोई तुम्हें पीटेगा..." यह कहकर उसने सईदा का मुँह चूम लिया।

सईदा खामोश रही—उसकी आँखें और ज़्यादा खौफ़ज़दा हो गईं।

उसने सईदा को और प्यार किया और कहा : "तुम्हें हर वक़्त हँसते रहना चाहिए... लो, अब ज़रा हँसो... हँसो मेरी जान!"

सईदा ने हँसने की कोशिश की।

उसने प्यार से सईदा को थपकी दी : "शाबाश... बस इसी तरह मुसकराता हुआ चेहरा होना चाहिए हर वक्त।"

उसकी मुहब्बत, ज़ाहिर है, बिलकुल मस्नूई[23] थी कि सईदा के लिए उसके दिल में कोई जगह नहीं थी; वह सिर्फ अपनी माँ की खातिर चाहता था कि सईदा से उसका रिश्ता नाकाम साबित न हो—वह जानता था कि उसकी माँ अपनी शिकस्त कभी बर्दाश्त न कर पाएगी; उसकी माँ ने अपनी ज़िंदगी मे कभी शिकस्त का मुँह देखा ही न था—इसीलिए उसकी इंतिहाई कोशिश थी कि सईदा से उसकी निभ जाए। उसने अपने दिल में सईदा के लिए बड़े खुलूस के साथ मस्नूई मुहब्बत पैदा कर ली थी।

वह सईदा की हर आसाइश[4] का खयाल रखता; अपनी माँ से सईदा की छोटी से छोटी बात की भी तारीफ करता—जब वह यह महसूस करता कि उसकी माँ बहुत मुतमइन है, इस बात से मुतमइन है कि उसने उसका रिश्ता ठीक जगह किया है तो उसको दिली खुशी होती।

शादी हुए एक महीना हो गया।

इस दौरान मे सईदा कई मर्तबा मैके गई—बासित को सईदा के मैके जाने पर कोई एतिराज नहीं था। वह समझता था कि यूँ उसका खौफ़आलूद शर्मीलापन दूर हो जाएगा, मगर ऐसा न हुआ, सईदा का खौफ़ दिन ब दिन बढ़ता चला जा रहा था और अब तो वह वहशतज़दा[5] दिखाई देती थी।

बासित हैरान था कि आखिर बात क्या है—उसने माँ से भी कोई बात न की; उसे यकीन था कि वह उसको डाँट पिलाएँगी और कहेंगी : 'मुझे मालूम था कि तुम ज़रूर एक रोज़ सईदा में कीड़े डालोगे।'

एक रोज़ उसने सईदा से कहा : "मेरी जान, तुम मुझे बताती क्यों नहीं हो ?"

सईदा चौंक उठी : "जी !"

सईदा के चौंकने पर उसने महसूस किया, जैसे उसने सईदा की किसी दुखती रग पर ज़ोर से हाथ रख दिया हो; अपने लहजे में और ज़्यादा प्यार भरकर उसने कहा : "मैंने पूछा था कि अब तुम और ज्यादा ख़ौफ़जदा रहने लगी हो   आखिर बात क्या है ?"

सईदा ने थोड़े तवक्कुफ़[6] के बाद जवाब दिया : "जी, बात तो कुछ भी नहीं   मैं ज़रा बीमार हूँ।"

"तुमने मुझसे कभी ज़िक्र ही नहीं किया   ! क्या बीमारी है ?"

सईदा ने दुपट्टे के किनारे को उँगली पर लपेटते हुए जवाब दिया . "अम्मीजान इलाज करा रही हैं   जल्दी ठीक हो जाऊँगी।"

बासित ने सईदा में और ज़्यादा दिलचस्पी लेना शुरू कर दी—उसने देखा कि वह हर रोज़ छुपकर कोई दवा खाती है।

एक दिन जब वह अपने क़ुफ़्ल[7] लगे ट्रंक से दवा निकालकर खाने ही वाली थी, वह उसके पास पहुँच गया।

सईदा ज़ोर से चौंकी और सफ़ूफ़[8] की खुली हुई पुड़िया उसके हाथ से गिर पड़ी।

बासित ने पूछा : "यह दवा खाती हो ?"

सईदा ने थूक निगलकर जवाब दिया . "जी हाँ   ! अम्मीजान ने हकीम साहब से मँगवाई थी।"

"कुछ इफाका[9] है इससे ?"

"जी हाँ !"

"तो खाओ   अगर आराम न आए तो मुझसे कहना, मैं तुम्हे डॉक्टर के पास ले चलूँगा।"

सईदा ने फर्श पर गिरी हुई पुडिया उठाई और सिर हिलाकर कहा · "जी अच्छा।"

बासित ने सोचा : 'अच्छा है, कोई इलाज तो हो रहा है   खुदा करे, अच्छी हो जाए   डर-वर कुछ नहीं, बस बीमारी है   दूर हो जाएगी इंशाल्लाह !'

उसने सईदा की बीमारी का अपनी माँ से पहली बार ज़िक्र किया तो वह कहने लगी : "क्या बकते हो   ? ख़ुदा के फज्लो-करम से अच्छी-भली है। क्या बीमारी है उसे ?"

उसने कहा : "मुझे क्या मालूम अम्मीजान   ? यह तो सईदा ही बता सकती है आपको !"

उसकी माँ ने बड़ी बेपरवाही से कहा : "मैं पूछूँगी उससे।"

जब उसकी माँ ने सईदा से दरयाफ़्त किया तो सईदा ने जवाब दिया : "कुछ नहीं खालाजान   बस सिर में दर्द रहता है   अम्मीजान ने हकीम साहब से दवा मँगवा दी थी   असल में बासित साहब बड़े वहमी हैं; हर वक़्त कहते रहते हैं, मैं डरी-डरी-सी दिखाई देती हूँ   मुझे डर किस बात का होगा भला !"

बासित की माँ ने कहा : "बकता रहता है, तू उसकी फ़िज़ूल बातों का ख़याल न किया कर।"

चंद रोज़ के बाद बासित ने महसूस किया कि सईदा बहुत ही ज्यादा घबराई हुई है; सईदा का इज़्तिराब[10] उसके रोएँ-रोएँ से ज़ाहिर हो रहा था।

दोपहर बाद सईदा ने कहा : "अम्मीजान से मिलने को जी चाहता है मुझे छोड आइए।"

बासित ने जवाब दिया : "नहीं सईदा, आज तुम्हारी तबीयत ठीक नही है।"

सईदा ने इसरार किया . "आप मुझे छोड आइए, मैं ठीक हो जाऊँगी।"

बासित ने कहा : "वहाँ तबीयत ठीक हो सकती है तो यहाँ भी ठीक हो सकती है जाओ, लेट जाओ और आराम करो।"

इतने में बासित की माँ आ गई—बासित ने माँ से कहा "अम्मीजान, देखो सईदा जिद कर रही है कहती है, तबीयत ठीक नही है, अम्मीजान के पास ले चलो।"

बासित की माँ ने बडी बेपरवाही से कहा : "कल चली जाना सईदा!"

सईदा ने कुछ न कहा और बाहर सहन में चली गई।

थोडी देर के बाद बासित कमरे से बाहर निकला तो उसने देखा कि सईदा सहन मे नही है—उसने सईदा को इधर-उधर तलाश किया, मगर वह कही न मिली।

उसने सोचा . 'ऊपर कोठे पर होगी ' वह ऊपर गया तो उसने गुस्लखाने का दरवाज़ा बद देखा।

उसने दरवाजा खटखटाया और आवाज दी · "सईदा!" जब कोई जवाब न मिला तो उसने फिर पुकारा "सईदा!"

अंदर से बडी नहीफ-सी आवाज आई "जी!"

उसने पूछा "क्या कर रही हो?"

नहीफ-सी आवाज फिर आई "जी, नहा रही हूँ।"

वह नीचे उतर आया और सईदा की तबीयत के बारे मे सोचता-सोचता गली मे जा निकला।

ऐसे ही उसकी नजर मोरी की तरफ गई तो उसने ख़ून ही ख़ून देखा और वह ख़ून उस गुस्लखाने के परनाले से आ रहा था, जिसमें सईदा नहा रही थी।

उसके ज़ेहन में ऊपर-तले कई खयाल औंधे-सीधे आन गिरे · 'दवा ख़ून दवा डर दवा ख़ून डर !'

फिर उसने आहिस्ता-आहिस्ता सोचना शुरू किया 'सईदा की माँ क्यों शादी की तारीख पक्की नही करती थी क्यों उसने एक-दो महीने ठहर जाने के लिए कहा था सईदा क्यो बार-बार अपनी माँ से मिलने जाती थी सईदा क्यों हर वक्त डरी-डरी-सी रहती थी क्यों दवा खाती थी आज क्यों वह बहुत ज्यादा खौफजदा थी '

वह सारा मामला समझ गया; उसे तमाम सवालात का जवाब मिल गया—सईदा जब उसकी दुल्हन बनकर आई थी, उस वक्त वह पेट से थी!

'और मुझे पता भी न चला · !'

उसके होंठों पर हल्की-सी मुसकराहट फैल गई : 'तो सईदा और उसकी माँ की कोशिश थी कि हमल गिर जाए · और आज उनकी कोशिश कामयाब हो गई है !'

उसने फिर सोचा : 'क्या मैं ऊपर जाऊँ ऊपर जाकर सईदा को देखूँ माँ से बात करूँ ..'

माँ का ख़याल आते ही वह काँप गया : 'वह यह सदमा बर्दाश्त नहीं कर सकेगी वह मेरी नज़रों में ज़लील होना कभी गवारा नहीं करेगी · वह जरूर कुछ खाकर मर जाएगी ·' वह कोई फ़ैसला न कर सका ।

वह घर लौट आया ।

उसने देखा, उसकी माँ घर पर नहीं है—वह अपने कमरे मे गया और सिर पकडकर बैठ गया ।

उसने सईदा के बारे में सोचा : 'ख़ुदा मालूम वह किस हालत में है उसके जिस्म पर, उसके दिलो-दिमाग़ पर क्या कुछ बीता होगा क्या बीत रहा होगा क्या वह यह राज छुपा सकेगी ' जूँ-जूँ वह सईदा के बारे में सोचता, उसके दिल में हमदर्दी का जज्बा बढ़ता जाता ।

उसको सईदा पर तरस आने लगा : 'बेचारी मालूम नहीं, बेहोश पडी है या होश मे है जाने उस पर क्या गुज़र रही होगी · क्या वह नीचे आ सकेगी ?'

वह सोचता रहा, बहुत देर तक सोचता रहा ।

हल्की-सी कराह सुनकर वह सहन में गया ।

सईदा चारपाई पर बैठी ड्योढ़ी की तरफ़ देख रही थी—उसका रंग बेहद जर्द था, इतना जर्द कि वह बिलकुल मुर्दा मालूम हो रही थी; वह बमुश्किल बैठी हुई थी; उसकी टाँगें काँप रही थी ।

बासित ने कुछ सोचा और अंदर से बुर्का उठा लाया : "सईदा, हिम्मत से काम लो चलो, मैं तुम्हें छोड़ आता हूँ ।"

सईदा ने हिम्मत से काम लिया और उसके साथ धीरे-धीरे चलकर बाहर गली और फिर जरा आगे सडक तक गई और ताँगे में बैठ गई ।

वह उसको उसकी माँ के पास छोड़ आया ।

उसके घर पहुँचते ही उसकी माँ ने पूछा : "सईदा कहाँ है ?"

"माँ, वह ज़िद कर रही थी · उसको छोड़ आया हूँ ।" उसने जवाब दिया ।

उसकी माँ ने उसको डाँटा : "तुम उसकी आदतें ख़राब कर दोगे और फिर मुझसे कहोगे कि मैंने ग़लत जगह पर तुम्हारा रिश्ता किया था · ज़िद करने दी होती उसे·· "

उसने कहा : "नहीं अम्मीजान, सईदा बड़ी अच्छी लड़की है ।"

उसकी माँ मुसकराई : "मैंने तुमसे कहा नहीं था कि वह बहुत नेक लड़की है···मुझे यक़ीन था कि तुम उसे ज़रूर पसंद करोगे · " फिर थोड़ी देर तक छालियाँ काटने के बाद वह एकदम बोली : "बासित, वह ऊपर ग़ुस्लख़ाने में ख़ून-सा क्या था ?"

वह सिटपिटा-सा गया "वह कुछ नही अम्मीजान, वह मेरी नकसीर फूटी थी।"

उसकी माँ ने बडे गुस्से के साथ कहा "कमबख्त, गरम चीजे न खाया कर जब देखो, जेबें मूँगफली से भरी होती हैं।"

वह कुछ देर तक अपनी माँ के साथ बाते करता रहा—जब वह बावर्चीखाने मे चली गई तो वह ऊपर कोठे पर चला गया।

उसने गुस्लखाना अच्छी तरह साफ किया—उसके दिल को इस बात का बडा इत्मीनान था कि उसने अपनी माँ के साथ सईदा के मुताल्लिक कोई बात नही की है और न ही उसने सईदा पर यह जाहिर होने दिया है कि वह उसका राज जानता है।

वह दिल में फैसला कर चुका था कि सईदा का राज हमेशा उसके सीने में दफन रहेगा 'वह काफ़ी तकलीफ उठा चुकी है उसको अपने किए की सजा मिल चुकी है मजीद सजा देने का कोई फायदा नहीं है खुदा करे, वह जल्द तदुरुस्त हो जाए अब उसके चेहरे पर वह खौफ नही रहेगा '

वह सोच ही रहा था कि उसे नीचे से माँ की दिल हिला देनेवाली एक तेज और लबी चीख सुनाई दी।

वह दौडा-दौडा नीचे उतरा और सहन मे पहुँचा।

सामने ड्योढ़ी में उसकी माँ फर्श पर औंधी पडी हुई थी, मुर्दा पास ही कूडेवाले लकडी के बक्स में कपडे में लिपटा खून का एक बडा-सा लोथडा, एक बहुत ही छोटा-सा नामुकम्मल बच्चा पडा हुआ था।

शदीद सदमे के बावुजूद वह सँभला—उसने फटे-पुराने कपडो मे बच्चे लोथडे को अच्छी तरह लपेटा और अदर जाकर अपने बूटो के खाली डिब्बे में रख दिया। फिर उसने अपनी मुर्दा माँ को उठाया और अदर कमरे मे चारपाई पर लिटा दिया और देर तक माँ के सिरहाने बैठकर रोता रहा।

सईदा को इत्तिला पहुँची तो उसको अपनी माँ के साथ आना पडा—वह उसी तरह जर्द थी और पहले से ज्यादा निढाल।

उसको बहुत तरस आया, उसने कहा "सईदा, जो अल्लाह को मजूर था, हो गया तुम्हारी तबीयत ठीक नही है, रोना बद करो और जाओ, अपने कमरे में जाकर लेट जाओ।"

सईदा अपने कमरे में जाने के बजाय ड्योढ़ी में गई—जब वह वापिस आई तो उसका चेहरा हल्दी की तरह जर्द था।

वह खामोश रहा।

सईदा ने उसकी तरफ देखा—उसकी आँखों में आँसू थे।

बासित ने बडे प्यार से कहा "ज्यादा रोना अच्छा नही सईदा जो खुदा को मजूर था, हो गया "

दूसरे रोज़ सुबह सवेरे उसने माँ को दफनाने से पहले ही बच्चे के लोथडे को नहर के किनारे गढ़ा खोदकर दबा दिया।

1. बात मानना; सिर झुकाना; 2 अप्रत्याशित, 3. नकली, कृत्रिम; 4. सुख-सुविधा; 5 भयभीत; घबराई हुई; 6. अंतराल; 7. ताला; 8. चूर्ण या पिसी हुई; 9 बीमारी मे कमी होना; 10 बेचैनी।

पैरन

यह उस जमाने की बात है, जब मैं बेहद मुफ्लिस था और बबई मे नौ रुपए माहवार की एक खोली मे रहता था, जिसमे पानी का नल था न बिजली; एक निहायत ही गलीज कोठडी थी, जिसकी छत पर से हजारहा खटमल मेरे ऊपर गिरा करते थे; चूहों की भी काफी बहुतायत थी—इतने बडे चूहे मैंने फिर कभी नही देखे, बिल्लियाँ उनसे डरती थी।

चाल मे सिर्फ एक गुस्लखाना था, जिसके दरवाजे की कुडी टूटी हुई थी—सुबह सवेरे चाल की औरते पानी भरने के लिए उस गुस्लखाने में जमा हो जाती—यहूदी, मरहठी, गुजराती, मद्रासी; भाँत-भाँत की औरतें।

मेरा यह मामूल[1] था कि उन औरतों के इज्तिमा[2] से बहुत पहले गुस्लखाने मे जाता, दरवाजा भेडता और नहाना शुरू कर देता। एक रोज मैं देर से उठा और मैंने फौरन गुस्लखाने मे पहुँचकर नहाना शुरू कर दिया—थोडी देर के बाद खट से दरवाजा खुला। मैंने देखा; मेरी पडोसन थी; बगल में गागर दबाए उसने, मालूम नही क्यो, एक लहजे के लिए मुझे गौर से देखा, फिर वह एकदम पलटी, गागर उसकी बगल मे फिसली और फर्श पर लुढ़कने लगी. वह एसी भागी, जैसे कोई शेर उसका तआकुब[3] कर रहा हो—मैं बहुत हँसा, मैंने बढ़कर दरवाजा बद किया और नहाना शुरू कर दिया।

थोडी देर के बाद फिर दरवाजा खुला—ब्रिजमोहन था—ब्रिजमोहन मेरे साथ मेरी ही खोली में रहता था।

मैं नहाने से फारिग हो चुका था और कपडे पहन रहा था।

उसने मुझसे कहा . "भई मंटो, आज इतवार है।"

मुझे याद आ गया कि उसको बांदरा जाना है अपनी दोस्त पैरन से मिलने—वह हर इतवार को पैरन से मिलने जाता था।

पैरन एक मामूली शक्लो-सूरत की पारसी लड़की थी, जिससे ब्रिजमोहन का मआश्का[4] करीबन तीन बरस से चल रहा था—हर इतवार को वह मुझसे ट्रेन के किराए के लिए आठ आने लेता; पैरन के घर पहुँचता, दोनों एक-आध घंटे तक आपस में बातें करते; वह पैरन को इलस्ट्रेटेड वीकली के क्रास वर्ड पज़ेल के हल देता और चला आता—वह बेकार था; सारा दिन सिर न्योढ़ाए अपनी दोस्त पैरन के लिए क्रास वर्ड पज़ेल हल करता रहता

था—पैरन को छोटे-छोटे कई इनाम मिल चुके थे; उन इनामात में से ब्रिजमोहन ने एक दमड़ी भी न ली थी।

उसके पास पैरन की बेशुमार तसवीरें थीं; शलवार-क़मीस में, कुरते-पाजामे में, साड़ी-ब्लाउज़ में, फ्रॉक स्कर्ट में, बेदिंग कास्ट्यूम में, फैंसी ड्रैस में—ग़ालिबन सौ से ऊपर होंगी। पैरन क़तअन ख़ूबसूरत नहीं थी, बल्कि मैं तो यह कहूँगा कि बहुत ही अदना शक्लो-सूरत की थी, लेकिन मैंने अपनी राय का इज़हार कभी ब्रिजमोहन से नहीं किया था और न कभी मैंने उससे पैरन के मुताल्लिक़ ही कुछ पूछा था कि वह कौन है, क्या करती है, उनकी मुलाक़ात कैसे हुई, इश्क़ की इब्तिदा क्योंकर हुई, क्या वह शादी करने का इरादा रखते हैं—ब्रिजमोहन ने भी पैरन के बारे में मुझसे कभी कोई बातचीत न की थी—बस वह हर इतवार को नाश्ते के बाद मुझसे किराए के लिए आठ आने लेता और पैरन से मिलने के लिए बांदरा रवाना हो जाता और दोपहर तक लौट आता।

मैंने खोली मे जाकर उसको आठ आने दिए और वह चला गया।

दोपहर को लौटने के बाद उसने खिलाफ़े-मामूल[5] मुझसे कहा : "आज मामला ख़त्म हो गया।"

मैंने पूछा : "कौन-सा मामला ?" मुझे मालूम ही नहीं था कि वह किस मामले की बात कर रहा है।

उसने कहा : "पैरन का मामला भई : आज दो-टूक फ़ैसला हो गया है मैंने उससे कहा : 'जब भी तुमसे मिलना शुरू करता हूँ, मुझे कोई काम नहीं मिलता, तुम बहुत मनहूस हो ' उसने कहा : 'बेहतर है, तुम मुझे मिलना छोड़ दो देखती हूँ, तुम्हें कैसे काम मिलता है : मैं मनहूस हूँ तो तुम अव्वल दर्जे के निखट्टू और कामचोर हो…' सो अब मामला ख़त्म हो गया है और मेरा ख़याल है, इंशाल्लाह कल ही मुझे काम मिल जाएगा : सुबह तुम मुझे चार आने देना मैं सेठ नानू भाई से मिलूँगा; वह मुझे जरूर अपना असिस्टेंट रख लेगा।"

सेठ नानू भाई फ़िल्म डायरेक्टर मुताद्दिद[6] मर्तबा ब्रिजमोहन को मुलाज़मत देने से इनकार कर चुका था; पैरन की तरह उसका भी यही ख़याल था कि ब्रिजमोहन अव्वल दर्जे का निखट्टू-कामचोर है।

दूसरे रोज़ ब्रिजमोहन मुझसे चार आने लेकर चला गया।

दोपहर को वापस आकर उसने मुझे यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि सेठ नानूभाई ने ख़ुश होकर उसको ढाई सौ रुपए माहवार पर मुलाज़िम रख लिया है, कांट्रेक्ट एक बरस का है, दस्तख़त हो चुके हैं—फिर उसने जेब में हाथ डालकर सौ रुपए निकाले और मुझे दिखाए : "यह एडवांस है…जी तो यह चाहता है कि सौ रुपए और कांट्रेक्ट लेकर बांदरा जाऊँ और पैरन से कहूँ कि लो देखो, मुझे काम मिल गया है : लेकिन डर यह है कि पैरन की नुहूसत[7] फ़ौरन मेरे साथ चिपक जाएगी और कल ही नानूभाई मुझे जवाब दे देगा…मेरे साथ एक मर्तबा नहीं, कई मर्तबा ऐसा हो चुका है…इधर मुझे मुलाज़मत मिली, उधर मैं पैरन से मिला और अगले ही लम्हे मामला साफ़, मुझे किसी न किसी बहाने निकाल बाहर किया गया…ख़ुदा मालूम इस लड़की में यह नुहूसत क्यों है…अब मैं कम अज़ कम एक बरस

तक उसका मुँह नही देखूँगा   मेरे पास कपड़े बहुत कम रह गए हैं; एक बरस लगाकर कुछ कपड़े बनवा लूँ तो फिर देखा जाएगा।"

छः महीने गुजर गए।

ब्रिजमोहन बराबर काम पर जाता रहा—उसने कई नए कपडे बनवा लिए थे, एक दर्जन रूमाल भी खरीद लिए थे; अब उसके पास वह तमाम चीजें थीं, जो एक कुँआरे आदमी के आरामो-आसाइश के लिए जरूरी होती हैं—हमारे दिन अच्छी तरह से गुजर रहे थे।

एक रोज वह स्टूडियो गया हुआ था कि उसके नाम एक खत आया—शाम को जब वह लौटा तो मैं उसे वह खत देना भूल गया—सुबह नाश्ते पर जब मुझे याद आया तो मैंने वह खत उसके हवाले किया।

लिफाफा थामते ही वह जोर से चीखा   "लानत   !"

मैंने पूछा   "क्या हुआ?"

"वही पैरन है   हाय, अच्छी-भली जिंदगी गुजर रही थी   " यह कहकर उसने चम्मच से लिफाफा खोला, खत निकाला और मुझसे कहा : "वही कमबख्त है   मैं भला उसका हैंड राइटिंग भूल सकता हूँ?"

"क्या लिखती है?" मैंने पूछा।

"मेरा सर   ! लिखती है   मुझसे इस इतवार को जरूर मिलो   तुमसे कुछ कहना है   ।" उसने खत लिफाफे में डाला और जेब में रख लिया   "लो भई मंटो, नौकरी से इंशाल्लाह जवाब मिल जाएगा।"

मैंने कहा : "क्या बकवास करते हो?"

उसने बड़े वुसूक़[8] से कहा : "नहीं मंटो, तुम देख लेना   कल इतवार है और कल मैं पैरन से मिलूँगा   परसों नानूभाई को मुझसे कोई न कोई शिकायत पैदा हो जाएगी और वह मुझे फौरन निकाल बाहर करेगा।"

मैंने कहा   "अगर तुम्हें इतना वुसूक़ है तो मत जाओ उससे मिलने।"

"यह नहीं हो सकता   वह बुलाए तो मुझे जाना ही पड़ता है।"

"क्यों?"

"बस ऐसे ही   फिर मुलाजमत करते-करते भी मैं कुछ उकता चुका हूँ   छः महीने से ऊपर हो गए हैं यार   !" वह मुसकराया और चला गया।

दूसरे रोज सुबह वह नाश्ता करके बांदरा गया और दोपहर को पैरन से मुलाक़ात करने के बाद लौट आया—उसने मुलाक़ात के बारे में कोई बात न की।

मैंने पूछा : "मिल आए अपने मनहूस सितारे[9] से?"

"हाँ मिल आया   मैंने उसे यह भी कह दिया कि अब मुझे मुलाजमत से बहुत जल्द जवाब मिल जाएगा   " वह खाट पर से उठा और बोला : "चलो आओ, खाना खा आएँ।"

हम दोनों ने हाजी होटल में खाना खाया—इस दौरान में पैरन की कोई बात न हुई।

रात को सोने से पहले उसने सिर्फ इतना कहा : "अब देखो, कल क्या गुल खिलता है?"

मेरा ख़याल था कि कुछ भी नहीं होगा, मगर अगले रोज वह खिलाफे-मामूल स्टूडियो से जल्दी लौट आया—मुझे देखकर ख़ूब जोर से हँसा "जवाब मिल गया भाई !"

मैंने समझा वह मजाक कर रहा है—कहा . "हटाओ यार !"

"जो हटना था, वह तो हट गया है अब क्या हटाऊँ सेठ नानूभाई पर टाँद[9] आ गई है, स्टूडियो सील हो गया है मेरी वजह से बेचारे नानूभाई पर भी आफत आ गई " वह फिर हँसने लगा।

मैं सिर्फ इतना कह सका : "यार, यह अजीब सिलसिला है !"

"देख लो इसे कहते हैं, हाथ कंगन को आरसी क्या " उसने सिगरेट सुलगाया और कैमरा उठाकर खोली से बाहर निकल गया।

वह फिर बेकार था—जब उसकी जमा पूँजी ख़त्म हो गई तो उसने हर इतवार को फिर मुझसे बांदरा जाने के लिए आठ आने माँगने शुरू कर दिए।

एक बात जो मेरी समझ में नहीं आती थी, यह थी कि वह हर इतवार को एक-आध घंटे तक पैरन से क्या बातें करता होगा; वैसे वह बहुत अच्छी गुफ़्तुगू करता था, मगर उस लड़की से, जिसकी नुहूसत का उसको मुकम्मल तौर पर यकीन था, वह किस क़िस्म की बातें करता होगा ?

एक रोज मैंने उससे पूछा : "ब्रिज, क्या पैरन को भी तुमसे मुहब्बत है ?"

"नहीं ! वह किसी और से मुहब्बत करती है।" उसने जवाब दिया।

मुझे उसका जवाब सुनकर बड़ा ताज्जुब हुआ : "फिर तुमसे क्यों मिलती है ?"

"इसलिए कि मैं ज़हीन हूँ अपने कैमरे से उसके भद्दे चेहरे को खूबसूरत बनाकर पेश कर सकता हूँ; उसके लिए क्रास वर्ड पज़ेल हल करता हूँ कभी-कभी उसको इनाम भी मिल जाता है मंटो, तुम नहीं जानते इन लडकियों को मैं ख़ूब पहचानता हूँ इन्हे पैरन जिससे मुहब्बत करती है, उसकी कमियाँ अच्छी तरह जानती है और मुझसे मिलकर वह कमियाँ पूरी कर लेती है " वह मुसकराया · "वह बडी चार सौ बीस है !"

मैंने क़दरे-हैरत से पूछा : "फिर तुम उससे क्यों मिलते हो ?"

वह बड़े ज़ोर से हँसा; चश्मे के पीछे अपनी आँखें सिकोड़कर उसने कहा : "मुझे मजा आता है।"

"किस बात का ?"

"मैं उसका इम्तिहान ले रहा हूँ उसकी नुहूसत का इम्तिहान पिछले तीन-चार बरसों से, यानी जब से हमारी मुलाकातें शुरू हुई है, मैं महसूस कर रहा हूँ कि वह मनहूस है थोड़े-थोड़े वक़्फ़ों के बाद मैंने जब भी उससे मिलना शुरू किया, मुझे अपने काम से जवाब मिल गया अब मेरी एक मनहूस ख़्वाहिश है कि उसके मनहूस असर को चकमा देकर निकल जाऊँ।"

मैंने पूछा : "क्या मतलब ?"

उसने बड़ी संजीदगी से कहा : "मेरा जी चाहता है कि इस बार मैं मुलाज़मत से जवाब मिलने से पहले ही ख़ुद मुलाज़मत से अलग हो जाऊँ˙˙ यानी ख़ुद अपने आक़ा को जवाब दे

दूँ ‥वह मुझसे वजह पूछे तो उससे कहूँ : 'जनाब, मुझे मालूम था कि आप मुझे बरतरफ़ करनेवाले हैं, इसलिए मैंने आपको ज़हमत ही न दी और ख़ुद अलग हो गया ‥आप नहीं जानते कि आप मुझे बरतरफ़ नहीं कर रहे थे‥ बरतरफ़ करनेवाली मेरी दोस्त पैरन है, जिसकी नाक मेरे कैमरे में इस तरह घुसती है जैसे तीर ' वह मुझे देखता रह जाए और मैं बाहर निकल आऊँ ‥" वह मुसकराया : "बस मेरी यही एक छोटी-सी ख्वाहिश है ‥जाने पूरी होती है या नहीं ।"

मैंने कहा : "अजीबो-गरीब ख़्वाहिश है तुम्हारी !"

"मेरी हर चीज़ अजीबो-ग़रीब होती है पिछले इतवार मैंने पैरन के उस दोस्त के लिए, जिससे वह मुहब्बत करती है, एक तसवीर खींची थी, टेलीफ़ोन पर गिरे हुए एक हसरतज़दा शख़्स की उल्लू की दुम मेरी तसवीर को कंपीटीशन में भेजेगा और यकीनी तौर पर उसे इनाम मिलेगा " यह कहकर वह मुसकराया ।

वह वाक़ई अजीबो-गरीब आदमी था—वह पैरन के दोस्त के लिए कई बार तसवीरें खींच चुका था, जो इलस्ट्रेटेड वीकली में पैरन के दोस्त के नाम से छप चुकी थीं; जाहिर है, पैरन बहुत ख़ुश हुई थी—वह उन तसवीरो को देखता था तो मुसकरा देता था ।

वह पैरन के दोस्त की शक्लो-सूरत तक से नाआश्ना था; पैरन ने उससे अपने दोस्त की मुलाकात तक न कराई थी; बस सिर्फ इतना बताया था कि उसका दोस्त किसी मिल मे काम करता है और बहुत ख़ूबसूरत है ।

उसने जब 'क्यों मियाँ मंटो' कहा तो मैं चौंका ।

मैंने उसकी तरफ़ देखा : "ब्रिज, तुम्हारी मनहूस ख्वाहिश पूरी होने में बहुत वक़्त लग सकता है !"

"कैसे ?"

मैंने कहा : "पहले तुम्हारा पैरनवाला मामला ख़त्म हो, तब तुम्हें कोई मुलाजमत मिले फिर तुम्हे पैरन बुलाए और तुम उससे मिलने जाओ ‥और यूँ "

उसने मेरी बात काट दी : "हाँ, इतज़ार की यह कोफ्त तो बर्दाश्त करनी ही पड़ेगी "

बस महीनों गुजर गए ।

इतवार की सुबह, आठ आने, बांदरा, पैरन, दोपहर को उसकी वापसी—सिलसिले में ज़र्रा बराबर तब्दीली न आई ।

एक इतवार को बांदरा से वापस आने के बाद उसने मुझसे कहा : "लो भई मंटो, आज मामला ख़त्म हो गया ।"

मैंने पूछा : "पैरनवाला ?"

"तो और कौन-सा‥ ?"

मैंने कहा : "मुझे तो ख़त्म होता नज़र नहीं आ रहा था ‥आख़िर कैसे ख़त्म हुआ ?"

ऐसे ही बातों-बातों में उसने मुझे कामचोर कहा और मैंने उसको मनहूस, बस मामला ख़त्म हो गया ‥अब इंशाल्लाह कुछ ही दिनों में मुझे कोई न कोई मुलाज़मत मिल

जाएगी · मेरा ख़याल है, मैं सेठ नियाज़ अली से मिलूँ उसने एक फ़िल्म बनाने का एलान किया है···यार, ज़रा नियाज़ अली के दफ्तर का पता लगाकर तो मुझे बताओ।"

मैंने सेठ नियाज़ अली के दफ़्तर का पता एक दोस्त से पूछकर उसको बता दिया।

वह अगले ही रोज़ वहाँ गया—शाम को लौटा तो उसके मुतमइन चेहरे पर मुसकराहट थी।

"लो भई मंटो " यह कहकर उसने जेब से एक टाइपशुदा कागज निकाला और मेरी तरफ फेंक दिया : "एक फिल्म का कांट्रेक्ट तनख्वाह दो सौ रुपए माहवार कम तो है, लेकिन नियाज अली ने कहा है, बढ़ा देगा मेरा खयाल है, ठीक ही है।"

मैं हँसा : "अब पैरन से कब मिलोगे ?"

वह मुसकराया : "कब मिलूँगा ? जब वह बुलाएगी मंटो यार, मैंने तुमसे कहा था ना कि मेरी एक छोटी-सी ख्वाहिश है देखें कब बुलाती है; जरा देर से बुलाए तो अच्छा है तीन-चार जोडे बन जाएँ, कुछ हालात बेहतर हो जाएँ जब भी बुलाएगी, जाना तो पडेगा; चाहे आज ही जाना पडे हाँ, पचास रुपए एडवास ले आया हूँ तुम इधर-उधर का कर्ज चुका दो।"

मैंने होटलवाले का कर्ज फौरन चुका दिया—हमारे दिन बडी खुशहाली से गुजरने लगे।

सौ रुपए माहवार मैं कमा लेता था, दो सौ रुपए माहाना वह ले आता था, बडे ऐश थे—पाँच महीने गुज़र गए।

अचानक एक रोज उसको पैरन का खत मौसूल हुआ "लो भई मंटो, इजराइल साहब तशरीफ ले आए हैं!"

सच बात तो यह है कि खत उसको मिला था और खौफ मैंने महसूस किया था।

उसने मुसकराते हुए लिफाफा चाक किया, खत निकालकर पढा—बिलकुल मुख्तसर तहरीर थी।

मैंने पूछा · "क्या फरमाती है ?"

"फरमाती हैं · 'इस इतवार को मुझसे जरूर मिलो—एक अशद जरूरी काम है।'" उसने खत लिफाफे मे वापस डालकर जेब मे रख लिया।

मैंने पूछा "जाओगे ?"

"जाना ही पडेगा।" फिर उसने गुनगुनाना शुरू कर दिया "मत भूल मुसाफिर, तुझे जाना ही पडेगा ।"

मैंने कहा, "ब्रिज, मत जाओ उससे मिलने बडे अच्छे दिन गुजर रहे हैं तुम नहीं जानते, मैं खुदा मालूम किस तरह तुम्हे आठ आने दिया करता था "

वह मुसकराया : "मुझे सब मालूम है लेकिन अफ़सोस है कि वह दिन फिर आनेवाले हैं और तुम फिर खुदा मालूम किस तरह मुझे हर इतवार को आठ आने दिया करोगे!"

इतवार को वह पैरन से मिलने बांदरा गया।

वापस आया तो उसने मुझसे कहा . "मैंने आज पैरन से कह दिया : 'यह बारहवीं मर्तबा

है कि मुझे तुम्हारी नुहूसत की वजह से बरतरफ़ होना पड़ेगा तुम पर रहमत हो ज़रतुश्त[10] की।' "

मैंने पूछा : "तुम्हारी बात सुनकर उसने कुछ कहा?"

उसने जवाब दिया : "फकत इतना : 'तुम सिली ईडियट हो!' "

मैंने कहा . "और वह तुम हो।"

"सौ फ़ीसदी !" वह हँसा . "अब कल सुबह स्टूडियो जाते ही मैं अपना इस्तीफ़ा पेश करनेवाला हूँ इस्तीफ़ा मैंने वहीं पैरन के सामने ही लिख लिया था।"

उसने मुझे इस्तीफा दिखा दिया।

दूसरे रोज़ उसने खिलाफ़े-मामूल जल्दी-जल्दी नाश्ता किया और स्टूडियो के लिए रवाना हो गया।

शाम को लौटा तो उसका चेहरा उतरा हुआ था—उसने मुझसे कोई बात न की।

मुझे ही बिलआख़िर उससे पूछना पडा : "क्यो ब्रिज, क्या हुआ?"

उसने बडी नाउम्मीदी से सिर हिलाया : "कुछ नही यार सारा मामला ही खत्म हो गया!"

"क्या मतलब?"

"मैंने सेठ नियाज़ अली को अपना इस्तीफा पेश किया पढ़ने के बाद उसने मेरा इस्तीफा फाड दिया और मुसकराकर मुझे एक खत दिया लिखा था कि मेरी तनख्वाह पिछले महीने से दो सौ की बजाय तीन सौ रुपए माहवार कर दी गई है "

मैंने इत्मीनान का एक लंबा साँस भरा।

थोड़ी देर के बाद उसने कहा : "यार, पैरन की नुहूसत खत्म होते ही मेरे लिए पैरन भी खत्म हो गई और मेरा एक निहायत दिलचस्प मश्गला[11] भी खत्म हो गया अब कौन मुझे बेकार रखने का मूजिब[12] होगा?"

1. नियम, 2. समूह, 3. पीछा करना, 4 प्रेम-संबंध, 5. आशा के विपरीत, 6. बहुत, 7 दुर्भाग्य, 8. आत्म-विश्वास; 9. कुर्की, 10 मिनूचेहर वंश का एक ईरानी महात्मा जिसने सम्राट गुश्ताश्प के काल में एक धर्म चलाया था। उसके अनुयायी अग्नि-पूजक थे, 11 शग्ल, शौक, 12. कारण।

बादशाहत का ख़ात्मा

टेलीफ़ोन की घटी बजी।

वह पास ही बैठा था—उसने रिसीवर उठाया और कहा : "हैलो फ़ोर फोर फ़ोर फाइव सेवन।"

दूसरी तरफ से पतली-सी निसवानी[1] आवाज आई "सौरी "

उसने रिसीवर रख दिया और किताब पढ़ने में मश्गूल हो गया।

वह यह किताब तकरीबन बीस मर्तबा पढ चुका था, इसलिए नहीं कि उस किताब में कोई ख़ास बात थी—उस दफ्तर मे, जो वीरान पड़ा था, बस वही एक किताब मौजूद थी और उसके औराक़ करम ख़ुर्दा[2] थे।

वह दफ्तर एक हफ्ते से उसकी तहवील[3] मे था— उस दफ्तर का मालिक उसका दोस्त था और एक बडी रकम कर्ज लेने के लिए किसी और शहर गया हुआ था—उसके पास रहने के लिए कोई जगह नही थी, इसलिए वह आरजी[4] तौर पर फ़ुटपाथ से उस दफ़्तर में मुतकिल[5] हो गया था और एक हफ्ते मे उस दफ्तर की उस इकलौती किताब को तकरीबन बीस मर्तबा पढ़ चुका था।

दफ्तर मे वह अकेला पडा रहता।

नौकरी से उसे नफरत थी—अगर वह चाहता तो उसे किसी भी फ़िल्म कपनी में कोई न कोई मुलाज़मत मिल सकती थी, मगर वह गुलामी नहीं चाहता था।

वह निहायत ही बेजरर[6] और मुफ़्लिस[7] आदमी था, इसलिए उसके दोस्त-यार उसके रोज़मर्रा के इख़ाजात[8] का बंदोबस्त कर देते थे—उसके इख़ाजात बहुत ही कम थे; सुबह को चाय की एक प्याली और दो तोस; बाद दोपहर दो फुलके और थोड़ा-सा सालन; सारे दिन में एक पैकेट सिगरेट; बस सिर्फ़ इतना कुछ।

उसका कोई अजीज़ या रिश्तेदार नहीं था—बेहद ख़ामोशी पसंद था; जफ़ाकश[9] था; कई-कई दिन फ़ाक़ों से रह सकता था—उसके मुताल्लिक़ उसके दोस्त और कुछ नहीं तो इतना ज़रूर जानते थे कि वह बचपन ही में अपना घर-बार छोड-छाड़के निकल आया था और एक मुद्दत से बंबई के फ़ुटपाथों पर आबाद था।

ज़िंदगी में उसको सिर्फ़ एक चीज़ की हसरत थी—औरत की मुहब्बत की।

वह कहा करता था, अगर मुझे किसी औरत की मुहब्बत मिल गई तो मेरी ज़िंदगी बदल जाएगी।

उसके दोस्त उससे कहते : "काम तो तुम फिर भी न करोगे!"

वह आह भरकर जवाब देता : "काम मैं मुजस्सम[10] काम बन जाऊँगा।"

दोस्त कहते "तो शुरू कर दो किसी से इश्क।"

वह जवाब देता : "नहीं मैं ऐसे इश्क़ का कायल नहीं जो मर्द की तरफ से शुरू हो।"

उसने सामने दीवार पर क्लॉक की तरफ़ देखा—खाने का वक़्त करीब आ रहा था।

वह बाहर जाने के बारे में सोच ही रहा था कि टेलीफ़ोन की घंटी बजना शुरू हुई।

उसने रिसीवर उठाया और कहा "हैलो "

दूसरी तरफ़ से पतली-सी आवाज आई . "फ़ोर फ़ोर फ़ोर फ़ाइव सेवन।"

उसने जवाब दिया : "जी हाँ!"

निसवानी आवाज़ ने पूछा "आप कौन हैं?"

"मनमोहन फ़रमाइए।"

दूसरी तरफ़ से जब आवाज़ न आई तो उसने पूछा "फ़रमाइए, किससे बात करना चाहती हैं आप?"

आवाज़ ने जवाब दिया . "आपसे!"

उसने जरा हैरत से पूछा "मुझसे?"

"जी हाँ आपसे क्या आपको कोई एतिराज है?"

वह सिटपिटा-सा गया : "जी ? जी नहीं!"

आवाज़ मुसकराई : "आपने अपना नाम मदन मोहन बताया था?"

"जी नहीं मनमोहन।"

"मनमोहन!"

चंद लम्हात खामोशी में गुजर गए तो उसने कहा : "आप बातें करना चाहती थीं मुझसे?"

आवाज़ आई "जी हाँ!"

"तो कीजिए!"

थोड़े वक्फे के बाद आवाज आई "समझ में नहीं आता, क्या बात करूँ आप ही शुरू कीजिए ना कोई बात!"

"बहुत बेहतर " यह कहकर उसने थोड़ी देर सोचा "नाम अपना बता चुका हूँ; आरिजी तौर पर मेरा ठिकाना यह दफ्तर है पहले फुटपाथ पर सोता था, अब एक हफ़्ते से इस दफ़्तर की बड़ी मेज़ पर सोता हूँ।"

आवाज मुसकराई : "फ़ुटपाथ पर आप मसहरी लगाकर सोते थे?"

वह हँसा : "इससे पहले कि मैं आपसे मजीद[11] गुफ्तगू करूँ, मैं यह बात वाज़ेह कर देना चाहता हूँ कि मैंने कभी झूठ नहीं बोला है फ़ुटपाथों पर सोते हुए मुझे एक ज़माना हो गया है यह दफ़्तर तक़रीबन एक हफ्ते से मेरे कब्जे में है और आजकल मैं ऐश कर रहा हूँ।"

आवाज़ फिर मुसकराई : "कैसा ऐश ?"

उसने जवाब दिया : "एक किताब मिल गई थी इस दफ़्तर में आखिरी औराक़[12] गुम हैं, फिर भी बीस मर्तबा पढ़ चुका हूँ सालिम किताब कभी हाथ लग गई तो मालूम होगा कि हीरो और हीरोइन के इश्क़ का अंजाम क्या हुआ।"

आवाज़ हँसी : "आप बड़े दिलचस्प आदमी हैं।"

उसने तकल्लुफ़ से कहा : "आपकी ज़र्रानवाजी है।"

आवाज ने थोड़े तवक्क़ुफ़ के बाद पूछा . "आपका शग़ल क्या है ?"

"शगल ?"

"मेरा मतलब है, आप करते क्या हैं ?"

"क्या करता हूँ ? कुछ भी नही एक बेकार इसान क्या कर सकता है बस सारा दिन तस्लीमाता !"

आवाज ने पूछा . "यह जिंदगी आपको अच्छी लगती है ?"

"ठहरिए " वह सोचने लगा : "बात दरअसल यह है कि मैंने इस बारे मे कभी गौर ही नही किया अब आपने पूछा है तो मैं भी अपने आपसे पूछ रहा हूँ : 'यह जिंदगी तुम्हें अच्छी लगती है ?' "

"कोई जवाब मिला ?"

थोडे वक्फे के बाद उसने जवाब दिया · "जी नही, कोई जवाब नही मिला लेकिन मेरा खयाल है कि ऐसी जिंदगी मुझे अच्छी ही लगती होगी, जभी तो एक अर्से से बसर कर रहा हूँ।"

आवाज फिर हँसी।

उसने कहा : "आपकी हँसी बडी मुतरन्निम[13] है।"

आवाज शरमा गई : "शुक्रिया !"

और सिलसिला-ए-गुफ्तुगू मुनकता[14] हो गया।

वह थोड़ी देर रिसीवर हाथ में लिए खड़ा रहा, फिर उसने मुसकराकर रिसीवर रख दिया और दफ़्तर बंद करके बाज़ार की तरफ निकल गया।

दूसरे रोज़ सुबह आठ बजे टेलीफ़ोन की घंटी बजना शुरू हुई।

वह दफ्तर की बड़ी मेज पर सो रहा था—जम्हाइयाँ लेते हुए उसने रिसीवर उठाया और कहा : "हैलो फ़ोर फोर फोर फाइव सेवन।"

दूसरी तरफ़ से आवाज आई : "आदाब अर्ज़ मनमोहन साहब।"

"आदाब अर्ज़ " वह एकदम चौंका : "ओह आप आदाब अर्ज, तस्लीमा !"

आवाज आई · "आप गालिबन सो रहे थे ?"

"जी हाँ यहाँ आकर मेरी आदात कुछ बिगड़-सी रही हैं वापस फुटपाथ पर जाऊँगा तो बड़ी मुसीबत हो जाएगी।"

आवाज़ मुसकराई : "क्यों ?"

"वहाँ सुबह पाँच बजे से पहले-पहले उठना पडता है।"

आवाज़ हँसी।

उसने पूछा : "कल आपने एकदम फ़ोन बंद कर दिया।"

आवाज़ शरमा गई : "आपने मेरी हँसी की तारीफ़ क्यों की थी ?"

उसने कहा : "वाह साहब, यह भी अजीब बात कही आपने कोई चीज़ ख़ूबसूरत हो तो उसकी तारीफ़ नहीं करनी चाहिए।"

"बिलकुल नहीं !"

"यह शर्त आप मुझ पर आइद नहीं कर सकतीं मैंने आज तक कोई शर्त अपने ऊपर आइद नहीं होने दी आप हँसेंगी तो मैं जरूर तारीफ़ करूँगा।"

"आप तारीफ करेंगे तो मैं फ़ोन बंद कर दूँगी।"

"बड़े शौक़ से।"

"आपको मेरी नाराजगी का कोई ख़याल नहीं।"

"पहली बात, मैं आपको नाराज़ करना नहीं चाहता दूसरी बात, अगर मैं आपकी हँसी की तारीफ न करूँ तो मेरा जौक[15] मुझसे नाराज़ हो जाएगा और मेरा ज़ौक मुझे बहुत अजीज है !"

थोड़ी देर की ख़ामोशी के बाद दूसरी तरफ से आवाज़ आई : "माफ़ कीजिएगा, मैं मुलाजमा[16] से कुछ कह रही थी तो आपका जौक आपको बहुत अजीज है हाँ, यह तो बताइए, आपको शौक किस चीज़ का है ?"

"क्या मतलब ?"

"यानी कोई शगल कोई काम मेरा मतलब कि आपको आता क्या है ?"

वह हँसा : "मुझे कोई काम नहीं आता बस फोटोग्राफ़ी का थोडा-सा शौक़ है।"

"बहुत अच्छा शौक है।"

"इस शौक की अच्छाई या बुराई के बारे में कभी मैंने सोचा ही नहीं।"

आवाज ने पूछा : "कैमरा तो आपके पास बहुत अच्छा होगा ?"

वह हँसा : "मेरे पास अपना कोई कैमरा नहीं दोस्तों से माँगकर शौक पूरा कर लेता हूँ हाँ, एक कैमरा मेरी नजर में है अगर मैंने कभी कुछ कमाया तो ख़रीदूँगा।"

"कौन-सा कैमरा ?"

उसने जवाब दिया "एग्जैक्टा रिफ्लेक्स कैमरा है, मुझे पसंद है।"

थोड़ी देर खामोशी रही; फिर उधर से आवाज आई : "मैं कुछ सोच रही थी !"

उसने पूछा "क्या सोच रही थीं आप ?"

"आपने मेरा नाम पूछा न टेलीफोन नंबर दरयाफ्त किया !"

"मुझे जरूरत ही महसूस नहीं हुई।"

"क्यों ?"

"नाम आपका कुछ भी हो, क्या फर्क पडता है आपको मेरा फोन नंबर मालूम है, बस ठीक है हाँ, अगर आप चाहेंगी कि मैं आपको फोन करूँ तो अपना नाम और नंबर बता दीजिएगा।"

"मैं नहीं बताऊँगी।"

"वाह साहब, यह भी ख़ूब रही जब मैं आपसे पूछूँगा ही नहीं तो बताने या न बताने का सवाल ही कहाँ पैदा होगा?"

आवाज़ मुसकराई: "आप अजीबो-ग़रीब आदमी हैं।"

वह मुसकराया: "जी हाँ, कुछ ऐसा ही आदमी हूँ।"

चंद सैकेंड ख़ामोशी रही।

उसने कहा: "आप फिर सोचने लगीं?"

"जी हाँ कोई और बात सोच रही थी।"

"तो फ़ोन बंद कर दीजिए फिर सही!"

आवाज़ किसी क़दर तीखी हो गई: "आप बहुत रूखे आदमी हैं फोन बंद कर दीजिए', लीजिए बंद करती हूँ।"

उसने रिसीवर रख दिया और मुसकराने लगा।

आधे घंटे के बाद जब वह मुँह-हाथ धोकर, कपडे पहनकर बाहर निकलनेवाला था कि टेलीफ़ोन की घंटी बजी।

उसने रिसीवर उठाया और कहा: "फोर फोर फोर फाइव सेवन!"

आवाज़ आई: "मिस्टर मनमोहन?"

उसने जवाब दिया: "जी हाँ मनमोहन इरशाद?"

आवाज़ मुसकराई: "इरशाद यह है कि मेरी नाराज़गी दूर हो गई है।"

उसने बडी शिगुफ्तगी[17] से कहा: "मुझे बड़ी ख़ुशी हुई है।"

"नाश्ता करते हुए मुझे ख़याल आया कि आपके साथ बिगाड़नी नही चाहिए हाँ, आपने नाश्ता कर लिया?"

"जी नहीं बस ऐसे ही बाहर निकलनेवाला था कि आपका फोन आ गया।"

"ओह तो आप जाइए।"

"जी नहीं, मुझे कोई जल्दी नहीं, कोई काम भी नही और आज मेरे पास पैसे भी नही हैं आज मैं नाश्ता नहीं करूँगा।"

"आपकी बातें आप ऐसी बातें क्यों करते हैं मेरा मतलब है, क्या ऐसी बातें करने से आपका दुख कम हो जाता है।"

उसने एक लम्हे के लिए सोचा: "जी नहीं मुझे इल्म नहीं अगर मेरा कोई दुख-दर्द है तो मैं उसका आदी हो चुका हूँ।"

आवाज़ ने पूछा: "मैं आपको कुछ रुपए भेज दूँ?"

उसने जवाब दिया: "भेज दीजिए मेरे फाइनेंसरों की तादाद में इज़ाफ़ा हो जाएगा।"

"नहीं, मैं नहीं भेजूँगी।"

"आपकी मर्ज़ी!"

"मैं फ़ोन बंद कर रही हूँ।"

"बेहतर।"

उसने रिसीवर रख दिया और मुसकराता हुआ दफ्तर से निकल गया।

रात को दस बजे के क़रीब वह वापस आया और कपड़े बदलकर मेज पर लेट गया—थोड़ी देर के बाद उसने हाथ बढ़ाकर बीस मर्तबा पढ़ी हुई किताब उठाई और पढ़ने लगा; फिर पढ़ते-पढ़ते सोचने लगा : 'वह कौन है जो उसे फोन करती है आवाज से पता चलता है कि जवान है हँसी बहुत ही मुतरन्निम है गुफ्तगू से जाहिर होता है कि तालीमयाफ्ता और मुहज्जब[18] है'—बहुत देर तक वह सोचता रहा।

इधर क्लॉक ने ग्यारह बजाए, उधर टेलीफोन की घंटी बजी।

उसने रिसीवर उठाया "हैलो!"

दूसरी तरफ से वही आवाज आई "मिस्टर मनमोहन?"

"जी हाँ, मनमोहन इरशाद!"

"इरशाद यह है कि मैंने आज दिन में कई मर्तबा रिंग किया आप कहाँ गायब थे?"

"साहब, बेकार आदमी हूँ, लेकिन फिर भी काम पर जाता हूँ।"

"किस काम पर?"

"आवारागर्दी एक बड़ा काम है।"

"इस बड़े काम से कब लौटे?"

"दस बजे के करीब।"

"तब से क्या कर रहे थे?"

"मेज पर लेटे-लेटे आपकी आवाज से आपकी तसवीर बना रहा था।"

"बन गई मेरी तसवीर?"

"जी नहीं अभी नहीं।"

"मेरी तसवीर बनाने की कोशिश न कीजिए आपको मायूसी होगी मैं बड़ी बदसूरत हूँ।"

"माफ कीजिएगा, आप गलत फरमा रही हैं और अगर आप वाकई बदसूरत हैं तो फोन बंद कर दीजिए बदसूरती से मुझे नफरत है।"

आवाज मुसकराई "ऐसा है तो चलिए, मैं खूबसूरत हूँ मैं आपके दिल में नफरत पैदा करना नहीं चाहती।"

जरा की जरा खामोशी रही।

उसने पूछा "कुछ सोचने लगीं?"

आवाज चौंकी "जी नहीं मैं आपसे पूछनेवाली थी कि "

उसने आवाज काट दी "पहले सोच लीजिए अच्छी तरह कि "

आवाज हँस पड़ी "आपको गजल सुनाऊँ?

"जरूर।"

"जरा ठहरिए "

पहले उसने आवाज को गला साफ करते सुना, फिर उसको गालिब की गजल सुनाई दी 'नुक़्ता ची है गमे दिल '

धुन वही सहगलवाली थी—आवाज़ में दर्द और ख़ुलूस था।

जब ग़ज़ल ख़त्म हुई तो उसने दाद दी : "बहुत ख़ूब ज़िंदा रहो।"

आवाज़ शरमा गई : "शुक्रिया!"

टेलीफ़ोन बंद हो गया।

उसके दिलो-दिमाग़ में सारी रात गालिब की ग़जल गूँजती रही।

सुबह वह जल्दी उठा और फ़ोन का इंतज़ार करने लगा; तकरीबन ढाई घंटे वह कुर्सी पर बैठा रहा, मगर टेलीफ़ोन की घंटी न बजी—उसने एक अजीब-सी तल्ख़ी अपने हलक़ में महसूस की।

कुर्सी से उठकर वह कमरे में टहलने लगा; फिर वह मेज़ पर लेट गया।

थोड़ी देर के बाद उसने उस किताब की वर्क गिरदानी शुरू कर दी, जिसको वह मुताद्दिद बार पढ़ चुका था।'

लेटे-लेटे, वर्क़ गिरदानी करते-करते शाम हो गई—तक़रीबन सात बजे टेलीफोन की घंटी बजी।

उसने रिसीवर उठाया और तेज़ी से पूछा : "कौन है?"

वही आवाज़ आई : "मैं!"

"इतनी देर तुम कहाँ थीं?" उसका लहजा तेज़ रहा।

आवाज़ लरज़ी : "क्यों?"

"मैं सुबह से यहाँ झक मार रहा हूँ नाश्ता किया है न खाना खाया है, हालाँकि मेरे पास पैसे मौजूद हैं।"

आवाज़ आई : "जब मेरी मर्ज़ी होगी, फ़ोन करूँगी आप "

उसने बात काटकर कहा : "देखो जी, यह सिलसिला बंद कर दो फोन करना है तो एक वक़्त मुक़र्रर कर लो मुझसे इंतज़ार बर्दाश्त नहीं होता।"

आवाज़ मुसकराई : "आज की माफ़ी चाहती हूँ कल से बाकायदा सुबह और शाम फोन किया करूँगी आपको।"

"हाँ, यह ठीक है।"

आवाज़ हँसी : "मुझे मालूम नहीं था, आप इस क़दर बिगड़े-दिल हैं।"

वह मुसकराया : "माफ़ करना, इंतजार से मुझे बहुत कोफ़्त होती है और जब मुझे किसी बात से कोफ्त होती है तो मैं अपने आपको सज़ा देना शुरू कर देता हूँ।"

"वह कैसे?"

"अब देखो ना, सुबह तुम्हारा फ़ोन न आया चाहिए तो यह था कि मैं चला जाता, लेकिन मैं दिन भर बैठा अंदर ही अंदर कुढ़ता रहा; न कुछ खाया, न कुछ पिया बचपना है साफ़..."

आवाज़ डूब-सी गई : "काश! मुझसे यह ग़लती न हुई होती मैंने क़स्दन[19] सुबह फ़ोन नहीं किया था।"

"क्यों?"

"यह मालूम करने के लिए कि आप इंतज़ार करेंगे या नहीं!"

वह हँसा : "बहुत शरीर हो तुम ··अच्छा अब फ़ोन बंद कर दो···मैं खाना खाने जा रहा हूँ।"

"कब तक लौटिएगा?"

"आधे घंटे तक।"

आधे घंटे के बाद जब वह खाना खाकर लौटा तो टेलीफ़ोन की घंटी बजी।

देर तक बातें होती रहीं; फिर आवाज़ ने ग़ालिब की एक ग़ज़ल सुनाई; उसने दिल से दाद दी—फिर टेलीफ़ोन बंद कर दिया गया।

अब हर रोज सुबहो-शाम उसको फोन आता—घंटी की आवाज़ सुनते ही वह टेलीफ़ोन की तरफ लपकता—बाज़ औकात घंटों बातें जारी रहतीं।

इस दौरान में उसने न आवाज से उसका फ़ोन नंबर पूछा, न उसका नाम—शुरू-शुरू मे उसने आवाज ही की मदद से अपने तख़ैयुल[20] के पर्दे पर आवाज़ की तसवीर खींचने की कोशिश की थी, मगर अब वह आवाज ही से मुतमइन हो गया था—उसके लिए आवाज ही शक्ल थी, आवाज़ ही सूरत थी, आवाज ही जिस्म था, आवाज़ ही रूह थी।

एक दिन आवाज ने पूछा : "तुम मेरा नाम क्यों नहीं पूछते?"

उसने मुसकराकर कहा : "तुम्हारा नाम आवाज है···!"

आवाज हँसी : "और जो बहुत मुतरन्निम है।"

उसने कहा : "इसमे क्या शक है!"

एक दिन आवाज ने बड़ा टेढा सवाल किया : "मोहन, तुमने कभी किसी लडकी से मुहब्बत की है?"

उसने जवाब दिया : "नही!"

"क्यों?"

वह एकदम उदास हो गया : "इस क्यों का जवाब चद लफ्जों में नहीं दिया जा सकता··मुझे अपनी जिंदगी का सारा मलबा उठाना पडेगा···और अगर कोई जवाब न मिला तो बड़ी कोफ्त होगी···और कोफ्त होगी तो···"

"छोडो, जाने दो मोहन!"

टेलीफोन से रिश्ता कायम हुए तकरीबन एक महीना हो चुका था—बिला नागा दिन में दो मर्तबा उसको फोन आता।

फिर उसको अपने दोस्त का ख़त मिला कि क़र्ज़ का बंदोबस्त हो गया है और वह किसी भी दिन बबई पहुँच सकता है—दोस्त का ख़त पढ़कर वह अफ़सुर्दा[21] हो गया।

टेलीफ़ोन की घटी बजी तो उसने रिसीवर उठाकर कहा "सुनो, मेरी बादशाहत की ज़िंदगी अब चंद दिन और है।"

आवाज आई : "क्यों?"

उसने जवाब दिया : "मेरा दोस्त किसी भी दिन पहुँच सकता है··उसका ख़त आया है··दफ़्तर आबाद हो जाएगा और···"

"तुम्हारे किसी और दोस्त के घर में टेलीफ़ोन नहीं है ?"

"कई दोस्तों के घर में टेलीफ़ोन हैं, मगर मैं तुम्हें उनका नंबर नहीं दे सकता !"

"क्यों ?"

"मैं नहीं चाहता, यह आवाज़ कोई और सुने !"

"वजह ?"

"मैं बहुत हासिद[22] हूँ ।"

आवाज़ मुसकराई : "यह तो बड़ी मुसीबत हुई ।"

"बोलो, अब क्या किया जाए ?"

"अच्छा जिस दिन तुम्हारी बादशाहत खत्म होगी, उस दिन मैं तुम्हे अपना नबर बता दूँगी "

"हाँ, यह ठीक है ।"

उसकी सारी अफसुर्दगी दूर हो गई—वह उस दिन का इतज़ार करने लगा, जब उसका दोस्त लौट आए और उसकी बादशाहत ख़त्म हो ।

उसने न चाहने हुए भी आवाज़ ही की मदद से अपने तखैयुल के पर्दे पर आवाज की तसवीर खींचने की कोशिश की—कई तसवीरें बनीं, मगर वह मुतमइन न हुआ ।

उसने सोचा . 'चंद दिनो ही की तो बात है फोन नंबर मिल जाएगा तो पता भी मिल जाएगा फिर मैं उसको देख भी सकूँगा ' सोचते ही उसका दिलो-दिमाग़ सुन्न हो गया . 'मेरी जिंदगी का वह लम्हा कितना बडा लम्हा होगा '

अगले रोज सुबह जब टेलीफोन की घंटी बजी तो उसने कहा · "एक बात कहूँ तुम्हे देखने का इश्तियाक[23] पैदा हो गया है ।"

"क्यों ?"

"तुमने कहा था कि मेरी बादशाहत के आखिरी दिन तुम मुझे अपना फोन नबर बता दोगी ।"

"हाँ, कहा था !"

"इसका मतलब यह है कि मुझे तुम्हारा एड्रैस भी मिल जाएगा और मै तुम्हें देख भी सकूँगा "

"मोहन, तुम जब चाहो, मुझे देख सकते हो चाहो तो आज ही देख लो ।"

"नहीं-नहीं " फिर कुछ सोचकर उसने कहा : "मैं जरा अच्छे लिबास में तुमसे मिलना चाहता हूँ · आज ही एक दोस्त से कहूँगा कि वह मुझे एक सूट सिलवा दे !"

आवाज़ हँस पड़ी · "बिलकुल बच्चे हो तुम सुनो, जब तुम मुझसे मिलोगे तो मैं तुम्हें एक तोहफ़ा दूँगी ।"

उसने जज़्बाती अंदाज़ में कहा : "तुम्हारी मुलाक़ात से बढ़कर और क्या तोहफ़ा हो सकता है ?"

"मैंने तुम्हारे लिए एग्जैक्टा कैमरा ख़रीद लिया है ।"

"ओह !"

"लेकिन इस शर्त पर दूँगी कि तुम पहला फ़ोटो मेरा उतारोगे!"

वह मुसकराया : "इस शर्त का फ़ैसला मुलाक़ात पर करूँगा।"

थोड़ी देर और गुफ़्तगू हुई; फिर उधर से आवाज़ आई : "मैं आज शाम, कल और परसों तुम्हें फ़ोन न कर सकूँगी।"

उसने तश्वीश[24] भरे लहजे में पूछा : "क्यों?"

"मुझे अपने अज़ीज़ों के साथ कहीं बाहर जाना पड़ रहा है ··· दो दिन की इस ग़ैरहाज़िरी के लिए मुझे माफ़ कर देना ···"

रिसीवर रखने के बाद उससे उठा न गया।

तमाम दिन वह दफ़्तर से बाहर न निकला और रात भर बेचैन रहा।

दूसरे दिन सुबह जूँ-तूँ उठा तो उसने हरारत महसूस की—उसने सोचा, उसका इज़्मेहलाल[25] शायद इस वजह से है कि आज फ़ोन नहीं आएगा; या शायद इस वजह से है कि कहीं उसका दोस्त न आ जाए।

दोपहर तक हरारत तेज़ हो गई, बदन तपने लगा और उसकी आँखों से शरारे फूटने लगे—वह मेज़ पर लेट गया।

थोड़ी देर के बाद प्यास उसे बार-बार सताने लगी—वह उठता, नल से मुँह लगाकर पानी पीता और फिर लेट जाता।

शाम के क़रीब उसे अपने सीने पर बोझ-सा महसूस होने लगा।

सुबह हुई तो वह बिलकुल निढाल था; साँस बड़ी मुश्किल से आ रहा था, सीने की दुखन बहुत बढ़ गई थी।

कई बार उस पर हिज़्यानी[26] कैफ़ियत तारी हुई—बुख़ार की शिद्दत में उसने कई बार महसूस किया कि वह टेलीफ़ोन पर अपनी उस महबूब आवाज़ के साथ बातें कर रहा है।

शाम को उसकी हालत बहुत ज़्यादा बिगड़ गई—धुँधलाई हुई आँखों से उसने क्लॉक की तरफ़ देखा।

उसके कानों में अजीबो-ग़रीब आवाज़ें गूँज रही थीं—दरवाज़े पीटे जा रहे थे, टेलीफ़ोन बोल रहे थे—चारों तरफ़ आवाज़ें ही आवाज़ें थीं।

टेलीफ़ोन की घंटी बजी तो वह सुन न सका।

जब बहुत देर तक घंटी बजती रही तो वह चौंका।

लड़खड़ाता हुआ उठा और टेलीफ़ोन तक गया; दीवार का सहारा लेकर उसने काँपते हुए हाथों से रिसीवर उठाया और ख़ुश्क होंठों पर लकड़ी-सी ज़बान फेरकर कहा : "हैलो!"

दूसरी तरफ़ से वही आवाज़ आई : "हैलो ··· मोहन?"

उसकी आवाज़ लड़खड़ाई : "हाँ, मोहन।"

"ज़रा ऊँचा बोलो ···"

उसने जो कहना चाहा, उसके हलक़ ही में ख़ुश्क हो गया।

आवाज़ आई : "मैं जल्दी आ गई   बड़ी देर से तुम्हें रिंग कर रही हूँ   कहाँ थे तुम ?"

उसका सिर घूमने लगा।

परेशान आवाज़ आई : "क्या हो गया है तुम्हें ?"

वह बड़ी मुश्किल से इतना कह सका : "मेरी बादशाहत   मेरी बादशाहत   " उसके मुँह से ख़ून निकला और पतली लकीर की सूरत गर्दन तक दौडता चला गया।

आवाज़ आई : "ग़म न करो; मेरा नंबर नोट करो   फ़ाइव नाट थ्री वन फ़ोर   फ़ाइव नाट थ्री वन फ़ोर   सुबह मुझे फ़ोन करना   ज़रूर   "

फिर टेलीफ़ोन बंद हो गया।

वह औंधे मुँह टेलीफ़ोन पर गिर पड़ा   उसके मुँह से ख़ून के बुलबुले फूटने लगे।

---

1. जनानी; 2. कीड़ों द्वारा खाए हुए; 3 आधिपत्य, 4 अस्थायी; 5. स्थानांतरित, 6. निडर, 7. निष्कपट; 8. खर्चों; 9. शरीर पर कष्ट उठानेवाला; 10 साक्षात; 11. और ज्यादा; 12. पृष्ठ; 13. सुरीली; 14 टूटना, समाप्त होना; 15. रसिकता; 16 नौकरानी; 17 प्रसन्नता; 18. शिष्ट, 19. जान-बूझकर; 20. कल्पना, 21 चिंतित; 22. ईर्ष्या, 23. लालसा, 24 व्याकुलता; 25 खिन्नता, 26. बेहोशी।

साहबे-करामात

चौधरी मौजू बूढ़े बरगद की घनी छाँव के नीचे खुर्री चारपाई पर बडे इत्मीनान से बैठा अपना चमोडा पी रहा था। धुएँ के हल्के-हल्के बुक्के उसके मुँह से निकलते थे और दोपहर की ठहरी हुई हवा में हौले-हौले गुम हो जाते थे।

वह सुबह से अपने छोटे-से खेत में हल चलाता रहा था और अब थक गया था। धूप इस कदर तेज थी कि चील भी अपना अडा छोड दे, मगर वह इत्मीनान से बैठा अपने चमोडे का मजा ले रहा था, जो चुटकियों में उसकी थकन दूर कर देता था।

उसका पसीना खुश्क हो गया था, इसलिए वह ठहरी हुई हवा उसे कोई ठंडक नही पहुँचा रही थी, मगर चमोडे का ठडा-ठडा लजीज धुआँ उसके दिलो-दिमाग में नाकाबिले-बयान सुरूर की लहरें पैदा कर रहा था।

अब वक्त हो चुका था कि घर से उसकी इकलौती लडकी जैनाँ रोटी-लस्सी लेकर आ जाए—वह ठीक वक्त पर पहुँच जाती थी, हालाँकि घर में उसका हाथ बँटानेवाला और कोई नहीं था; उसकी माँ थी जिसको, दो साल हुए, मौजू ने एक तवील झगडे के बाद इंतिहाई गुस्से में तलाक दे दी थी।

मौजू की जवान इकलौती बेटी जैनाँ बडी फरमाबरदार लडकी थी; वह अपने बाप का बहुत ख़याल रखती थी; घर का काम-काज, जो इतना ज्यादा नही था, बडी मुस्तैदी से करती थी कि इस तरह जो खाली वक्त मिले, उसमें चर्खा चलाए और पूनियाँ काते, या अपनी सहेलियों के साथ, जो गिनती की थीं, इधर-उधर की खुशगप्पियों मे गुजार दे।

चौधरी मौजू की जमीन वाजिबी थी और उसके गुजारे के लिए काफ़ी थी—गाँव बहुत छोटा था और एक दूरउफ़तादा[1] जगह पर था, जहाँ से रेल का गुजर नही था; एक कच्ची सडक थी, जो उसे दूर के एक बड़े गाँव से मिलाती थी। चौधरी मौजू हर महीने दो मर्तबा अपनी घोडी पर सवार होकर उस बड़े गाँव में जाता था, जिसमें दो-तीन दूकानें थीं, और अपनी ज़रूरत की चीजें ले आता था।

पहले वह बहुत ख़ुश था; उसको कोई ग़म नहीं था; दो-तीन बरस उसको इस ख़याल ने अलबत्ता ज़रूर सताया था कि उसके यहाँ कोई नरीना[2] औलाद नहीं है, मगर फिर वह यह सोचकर शाकिर[3] हो गया था कि जो अल्लाह को मंजूर होता है, वही होता है—मगर जिस दिन से उसने अपनी बीवी को तलाक़ देकर मैके रुख़्सत कर दिया था, उसकी ज़िंदगी सूखा

हुआ नेचा-सी बनके रह गई थी; सारी तरावत जैसे उसकी बीवी अपने साथ ले गई थी।

चौधरी मौजू मज़हबी आदमी था, हालाँकि उसे अपने मज़हब के मुताल्लिक़ सिर्फ़ दो-तीन चीज़ों ही का पता था कि ख़ुदा एक है, जिसकी परस्तिश[4] लाज़िमी है और मुहम्मद उसके रसूल हैं, जिनके अहकाम[5] मानना फ़र्ज़ है और क़ुरआन पाक ख़ुदा का कलाम है, जो मुहम्मद पर नाज़िल[6] हुआ; और बस।

नमाज़-रोजे मे वह बेनियाज़ था—गाँव बहुत छोटा था, जिसमें कोई मस्जिद नहीं थी; दस-पंद्रह घर थे, वह भी एक-दूसरे मे दूर-दूर—लोग अल्लाह-अल्लाह करते थे; उनके दिल में उस ज़ाते-पाक का खौफ था और इससे ज्यादा और कुछ नहीं था—करीब-करीब हर घर में क़ुरआन मौजूद था, मगर पढना कोई भी नहीं जानता था; सबने उसे एहतिरामन जुजदान[7] में लपेटकर किसी ऊँचे ताक पर रख छोड़ा था; उसकी ज़रूरत सिर्फ उसी वक़्त पेश आती थी, जब किसी से कोई सच्ची बात कहलवानी होती थी, या किसी काम के लिए कोई हल्फ उठवाना होता था। गाँव में मौलवी की शक्ल भी उसी वक्त दिखाई देती थी, जब किसी लडके या लड़की की शादी होती थी—मर्ग पर नमाज़े-जनाजा वगैरह गाँव के लोग खुद ही पढ लेते थे, अपनी ज़बान में।

चौधरी मौजू ऐसे मौकों पर ज्यादा काम आता था, उसकी जबान में असर था, जिस अदाज से वह मरहूम की खूबियाँ बयान करता था और उसकी मग्फिरत[8] के लिए दुआ करता था, वह कुछ उसी का हिस्सा था।

पिछले बरस जब उसके दोस्त दीनू का जवान लडका मर गया था तो उसको कब्र में उतारकर उसने बड़े मुअस्सिर[9] अंदाज में यह कहा था : "क्या शीन जवान लडका था, थूक फेंकता था तो बीस गज़ दूर जाके गिरती थी, उसकी पेशाब की धार का तो आसपास के किसी गाँव-खेड़े में भी मुक़ाबला करनेवाला मौजूद नहीं था और बेनी पकड़ने में तो जवाब नही था उसका हे घसनी का नारा मारता और दो उँगलियों से यूँ बेनी खोलता जैसे कुर्ते का बटन खोलते हैं दीनू यार, तुझ पर आज कयामत[10] का दिन है, तू यह सद्मा कैसे बर्दाश्त करेगा यारो, उसे मर जाना चाहिए था ऐसा शीन जवान लड़का, ऐसा खूबसूरत गबरू जवान नीति सुनयारी-जैसी सुंदर और हठीली नार उसको काबू करने के लिए तावीज़-धागे कराती रही, मगर मर्हबा[11] है दीनू, तेरा लड़का लँगोट का पक्का रहा ख़ुदा करे, उसको जन्नत में सबसे खूबसूरत हूर मिले और वहाँ भी वह लँगोट का पक्का रहे अल्लाह मियाँ ख़ुश होकर उस पर अपनी रहमतें नाज़िल करे आमीन!"

चौधरी मौजू की यह छोटी-सी तक़रीर[12] सुनकर दस-बीस आदमी, जिनमें दीनू भी शामिल था, धाड़ें मार-मारकर रो पड़े थे—ख़ुद चौधरी मौजू की आँखों से भी आँसू रवाँ थे।

मौजू ने जब अपनी बीवी फाताँ को तलाक़ देना चाही थी तो उसने मौलवी बुलाने की ज़रूरत नहीं समझी थी। उसने बड़े-बूढ़ों से सुन रखा था कि तीन मर्तबा 'तलाक़, तलाक़, तलाक़' कह दो तो क़िस्सा ख़त्म हो जाता है—उसने अपना क़िस्सा इसी तरह ख़त्म किया था, मगर दूसरे ही दिन उसको बहुत अफ़सोस हुआ था, बड़ी नदामत[13] हुई थी कि उसने यह

क्या ग़लती की, मियाँ-बीवी में झगड़े होते ही रहते हैं, तलाक़ की नौबत तो नहीं आती; उसको दरगुज़र करना चाहिए था।

फाताँ उसको पसंद थी; गो वह उस वक़्त जवान नहीं थी, फिर भी उसको फातों का जिस्म पसंद था, उसकी बातें पसंद थीं—फिर वह उसकी बेटी जैनाँ की माँ थी··· मगर तीर कमान से निकल चुका था और वापिस नहीं आ सकता था—चौधरी मौजू जब भी उस किस्से के मुताल्लिक़ सोचता तो उसके चहीते चमोड़े का धुआँ उसके हलक़ में तल्ख़ घूँट बन-बनके जाने लगता।

जैनाँ ख़ूबसूरत थी, अपनी माँ की तरह। इन दो बरसों में उसने एकदम बढ़ना शुरू कर दिया था और देखते-देखते जवान मुटियार बन गई थी; उसके अंग-अंग से जवानी फूट-फूटके निकल रही थी—चौधरी मौजू को अब उसके हाथ पीले करने की फ़िक्र भी थी; यहाँ फिर उसको फातों याद आ जाती; वह यह काम कितनी आसानी से कर सकती थी।

खुर्री खाट पर चौधरी मौजू ने अपनी निशस्त और अपना तहमद दुरुस्त करते हुए चमोड़े से ग़ैर मामूली लंबा कश लिया और खाँसने लगा।

उसके खाँसने के दौरान में किसी की आवाज़ आई : "अस्सलाम अलैकुम वरहमतुल्लाहि व बराकातुहु !"

चौधरी मौजू ने पलटकर देखा—उसे सफ़ेद कपड़ों में एक दराज़ रेश[14] बुज़ुर्ग नजर आया।

उसने सलाम का जवाब दिया और सोचने लगा कि यह शख़्स कहाँ से आ गया है।

दराज़ रेश की आँखें बड़ी-बड़ी और बारोब थीं, जिनमें सुर्मा लगा हुआ था; लंबे-लंबे पटे थे; पटों और दाढ़ी के बाल खिचड़ी थे; सफ़ेद ज़्यादा और सियाह कम; सिर पर सफ़ेद अमामा था; काँधे पर रेशम का काढ़ा हुआ बसंती रूमाल; हाथ में चाँदी की मूठवाला मोटा असा था, पाँव में लाल खाल का नर्मो-नाज़ुक जूता।

चौधरी मौजू ने जब उस बुज़ुर्ग का सरापा ग़ौर से देखा तो उसके दिल में फ़ौरन ही एक एहतिराम पैदा हो गया—चारपाई पर से वह जल्दी-जल्दी उठा और बुज़ुर्ग से मुख़ातिब हुआ : "आप कहाँ से आए? कब आए?"

बुज़ुर्ग के लबों में कतरी हुई शरई[15] मुसकराहट पैदा हुई : "फ़क़ीर कहाँ से आएँगे उनका कोई घर नहीं होता··· उनके आने का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं, उनके जाने का कोई वक़्त मुक़र्रर नहीं··· अल्लाह तबारक तआला ने जिधर हुक्म दिया, चल पड़े और जहाँ ठहरने का हुक्म हुआ, वहीं ठहर गए।"

चौधरी मौजू पर उन अल्फ़ाज़ का बहुत असर हुआ—उसने आगे बढ़कर उस बुज़ुर्ग का हाथ बड़े एहतिराम से अपने हाथों में लिया, चूमा, अपनी आँखों से लगाया : "चौधरी मौजू का घर आपका अपना घर है।"

बुज़ुर्ग मुसकराता हुआ खाट पर बैठ गया और फिर अपने चाँदी की मूठवाले असा को दोनों हाथों से थामकर उस पर अपना सिर झुका दिया : "अल्लाह जल्ले शानहू को जाने तेरी कौन-सी अदा पसंद आ गई कि अपने इस हकीर और आसी बंदे को तेरे पास भेज दिया।"

चौधरी मौजू ने खुश होकर पूछा : "तो मौलवी साहब, आप उसके हुक्म से आए हैं ?"

मौलवी साहब ने अपना झुका हुआ सिर उठाया और किसी कदर ख़श्म आलूद[16] लहजे में कहा : "तो क्या हम तेरे हुक्म से आए हैं हम तेरे बंदे हैं या उसके, जिसकी इबादत में हमने पूरे चालीस बरस गुज़ारकर यह थोड़ा-बहुत रुतबा हासिल किया है ?"

चौधरी मौजू काँप गया—अपने मख़्सूस[17] गँवार लेकिन पुरख़ुलूस अंदाज़ में उसने मौलवी साहब से अपनी तक़सीर[18] माफ़ कराई और कहा : "मौलवी साहब, हम-जैसे इंसानों से, जिनको नमाज पढ़नी भी नहीं आती, ऐसी ग़लतियाँ हो जाती हैं हम गुनहगार हैं, हमें बख़्शवाना और बख़्शना आपका काम है।"

मौलवी साहब ने अपनी बड़ी-बडी सुर्मा लगी आँखे बद की और कहा : "हम इसीलिए आए हैं।"

चौधरी मौजू जमीन पर बैठ गया और मौलवी साहब के पाँव दबाने लगा।

इतने मे उसकी लडकी जैनाँ आ गई—उसने मौलवी साहब को देखा तो घूँघट छोड लिया।

मौलवी साहब ने मुँदी हुई आँखों से पूछा . "कौन है चौधरी मौजू ?"

"मौलवी साहब, मेरी बेटी जैनाँ।"

मौलवी साहब ने नीम वा आँखों से जैनाँ को देखा और मौजू से कहा . "इससे पूछो, हम फकीरो से कैसा परदा ?"

"कोई परदा नहीं मौलवी साहब परदा कैसा ?" फिर चौधरी मौजू अपनी बेटी से मुखातिब हुआ · "जैनाँ, यह मौलवी साहब हैं, अल्लाह के खास बंदे इनसे कैसा परदा उठा ले अपना घूँघट !"

जैनाँ ने अपना घूँघट उठा लिया।

मौलवी साहब ने अपनी सुर्मा लगी नजरे भरके जैना की तरफ देखा और मौजू से कहा . "तेरी बेटी ख़ूबसूरत है चौधरी मौजू !"

जैनाँ शरमा गई।

मौजू ने कहा : "अपनी माँ पर है मौलवी साहब !"

"कहाँ है इसकी माँ ?" मौलवी साहब ने एक बार फिर जैनाँ की जवानी की तरफ देखा।

मौजू सटपटा गया कि क्या जवाब दे।

मौलवी साहब ने फिर पूछा : "इसकी माँ कहाँ है चौधरी मौजू ?"

मौजू ने जल्दी से कहा · "मर चुकी है जी !"

मौलवी साहब की नजरे जैनाँ पर गड़ी हुई थीं—जैनाँ का रद्दे-अमल भाँपकर उन्होंने मौजू से कडककर कहा : "तू झूठ बोलता है !"

मौजू ने मौलवी साहब के पाँव पकड़ लिए और नदामत भरी आवाज में कहा . "जी हाँ जी हाँ, मैंने झूठ बोला था मुझे माफ कर दीजिए मैं बड़ा झूठा आदमी हूँ मैंने उसको तलाक दे दिया था मौलवी साहब . "

मौलवी साहब ने एक लंबी 'हूँ' की, नज़रें जैनाँ की चदरिया से हटाई और मौजू से मुख़ातिब हुए : "तू बहुत बड़ा गुनहगार है क्या कुसूर था उस बेज़बान का ?"

मौजू नदामत में ग़र्क़ था : "कुछ नहीं मौलवी साहब मामूली-सी बात थी जो बढ़ते-बढ़ते तलाक़ तक पहुँच गई मैं वाक़ई गुनहगार हूँ तलाक़ देने के दूसरे ही दिन मैंने सोचा था कि मौजू, तूने यह क्या झक मारी है पर क्या हो सकता था, चिड़ियाँ खेत चुग चुकी थीं पछतावे से क्या हो सकता था मौलवी साहब "

मौलवी साहब ने चाँदी की मूठवाला असा मौजू के काँधे पर रख दिया : "अल्लाह तबारक तआला की ज़ात बहुत बड़ी है वह बड़ा रहीम है बड़ा करीम है वह चाहे तो हर बिगड़ी बना सकता है उसका हुक्म हुआ तो यह हक़ीर फ़क़ीर ही तेरी निजात के लिए कोई रास्ता ढूँढ़ निकालेगा।"

ममनूनो-मुतशक्कर[19] चौधरी मौजू फ़ौरन ही मौलवी साहब की टाँगों के साथ लिपट गया और रोने लगा। मौलवी साहब ने जैनाँ की तरफ़ देखा—जैनाँ की आँखो से भी अश्क[20] रवाँ थे।

"इधर आ लड़की !" मौलवी साहब के लहजे में ऐसा तहक्कुम[21] था, जिसको रद्द करना जैनाँ के लिए नामुम्किन था; रोटी और लस्सी एक तरफ़ रखकर वह खाट के पास चली गई।

मौलवी साहब ने जैनाँ को बाज़ू से पकडा और कहा : "बैठ जा।"

जैनाँ ज़मीन पर बैठने लगी तो मौलवी साहब ने उसका बाज़ू ऊपर खींचा : "इधर मेरे पास बैठ।"

जैनाँ सिमटकर मौलवी साहब के पास बैठ गई।

मौलवी साहब ने उसकी कमर में हाथ देकर उसको अपने क़रीब किया और फिर ज़रा दबाकर पूछा . "क्या लाई है तू हमारे खाने के लिए ?"

जैनाँ ने एक तरफ हटना चाहा मगर मौलवी साहब की गिरफ़्त मज़बूत थी।

जैनाँ ने जवाब दिया . "जी जी रोटियाँ हैं, साग है और लस्सी।"

मौलवी साहब ने जैनाँ की पतली और मज़बूत कमर एक बार फिर दबाई : "चल ला खाना और हमें खिला !"

जैनाँ उठी तो मौलवी साहब ने मौजू के काँधे मे अपना चाँदी की मूठवाला असा नन्ही-सी जरब देने के बाद उठा लिया : "उठ मौजू, हमारे हाथ धुला।"

मौजू फ़ौरन उठा—पास ही कुआँ था—वह पानी लाया और उसने मौलवी साहब के हाथ बड़े मुरीदाना[22] तौर पर धुलाए।

जैनाँ ने चारपाई पर खाना रख दिया।

मौलवी साहब सबका-सब खाना खा गए और फिर उन्होंने जैनाँ को हुक्म दिया कि वह उनके हाथ धुलाए।

जैनाँ उदूलहुक्मी[23] नहीं कर सकती थी कि मौलवी साहब की शक्लो-सूरत और उनकी गुफ्तगू का अंदाज़ ही कुछ ऐसा तहक्कुम भरा था।

मौलवी साहब ने डकार लेकर बड़े ज़ोर से अलहमदोल्लिाह कहा, दाढ़ी पर गीला-गीला हाथ फेरा, एक और डकार ली और चारपाई पर लेट गए और एक आँख बंद करके दूसरी आँख से जैनाँ की ढलकी हुई चदरिया की तरफ़ देखते रहे।

जब जैनाँ जल्दी-जल्दी बरतन समेटकर चली गई तो मौलवी साहब ने आँखें बंद कीं और मौजू से कहा : "चौधरी मौजू, अब हम सोएँगे।"

मौजू कुछ देर तक उनके पाँव दाबता रहा—जब उसने देखा कि वह सो गए हैं तो एक तरफ़ जाकर उसने उपले सुलगाए और चिलम में तंबाकू भरकर भूखे पेट चमोड़ा पीना शुरू कर दिया—वह ख़ुश था; उसको ऐसा लग रहा था कि उसकी ज़िंदगी का कोई बहुत बड़ा बोझ दूर हो गया है—उसने दिल ही दिल में अपने मख़्सूस गँवार, मगर मुख़्लिस[24] अंदाज में अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया, जिसने अपनी जिनाब से मौलवी साहब की शक्ल में फ़रिश्ता-ए-रहमत[25] भेजा।

पहले उसने सोचा, मौलवी साहब के पास ही बैठा रहे कि शायद उनको किसी ख़िदमत की ज़रूरत हो, मगर जब देर हो गई और वह सोते रहे तो वह उठकर अपने खेत में चला गया और अपने काम में मश्ग़ूल हो गया। उसको क़त्अन ख़याल नहीं था वह भूखा है; उसको बेहद मसर्रत[26] थी कि उसका खाना मौलवी साहब ने खा लिया है और यूँ उसको इतनी बड़ी सआदत नसीब हुई है।

शाम होने से पहले-पहले खेत में काम ख़त्म करने के बाद जब वह बूढ़े बरगद के पास वापस लौटा तो उसको यह देखकर बड़ा दुख हुआ कि मौलवी साहब मौजूद नहीं हैं—उसने ख़ुद को बड़ी लानत-मलामत की कि वह क्यों चला गया था; उनके हुज़ूर बैठा रहता . 'शायद वह नाराज होकर चले गए हों और कोई बद्दुआ भी दे गए हों ' जब उसने यह सोचा तो उसकी सादा रूह लरज़ गई और उसकी आँखों में आँसू आ गए।

उसने इधर-उधर मौलवी साहब को तलाश किया, मगर वह न मिले—शाम गहरी हो गई, फिर भी उनका सुराग न मिला।

थक-हारकर अपने को दिल ही दिल में कोसता और लानत-मलामत करता वह गर्दन झुकाए घर की तरफ जा रहा था कि उसे रास्ते में गाँव के दो जवान लड़के घबराए हुए मिले।

उसने उनसे घबराहट की वजह पूछी तो उन्होंने पहले तो टालना चाहा, मगर फिर उसको असल बात बता ही दी : वह घूरे में दबा हुआ शराब का घड़ा निकालकर शराब पीने ही वाले थे कि एक नूरानी सूरतवाले बुज़ुर्ग एकदम वहाँ नमूदार हो गए और बड़ी ग़ज़बनाक निगाहों से देखते हुए यह पूछने लगे कि वे यह क्या हरामकारी कर रहे हैं; जिस चीज़ को अल्लाह तबारक तआला ने हराम क़रार दिया है, वह उसे पीकर इतना बड़ा गुनाह कर रहे हैं, जिसका कोई कुफ़्फ़ारा[27] ही नहीं—उनमें इतनी जुरअत ही नहीं थी कि कुछ बोल सकते; बस सिर पर पाँव रखकर भागे

मौजू ने उन दोनों नौजवानों को बताया कि वह नूरानी सूरतवाले वाक़ई अल्लाह को पहुंचे हुए बुज़ुर्ग हैं; फिर उसने अंदेशा ज़ाहिर किया कि जाने गाँव पर क्या क़हर नाज़िल

होगा—एक तो उसने मौलवी साहब को छोड़कर चले जाने की बुरी हरकत की थी, दूसरे गाँव के दो नौजवान हराम शै पीनेवाले थे।

"अब अल्लाह ही बचाए   अब अल्लाह ही बचाए मेरे बच्चो   " यह बड़बड़ाता हुआ मौजू घर की जानिब रवाना हुआ।

जैनाँ मौजूद थी, पर मौजू ने उससे कोई बात न की और खाट पर ख़ामोश बैठकर हुक़्क़ा पीने लगा—उसके दिलो-दिमाग़ में एक तूफ़ान बरपा था; उसको यकीन था कि उस पर और गाँव पर ज़रूर कोई खुदाई आफ़त आएगी।

शाम का खाना तैयार था और जैनाँ ने मौलवी साहब के लिए भी पकाया था।

जब जैनाँ ने मौजू से पूछा कि मौलवी साहब कहाँ हैं तो मौजू ने बडे दुख भरे लहजे में कहा : "गए ··· चले गए   हम गुनहगारों के हाँ उनका क्या काम!"

जैनाँ को अफ़सोस हुआ—मौलवी साहब ने कहा था कि वह कोई ऐसा रास्ता ढूँढ़ निकालेंगे, जिससे उसकी माँ वापस आ जाएगी; पर वह तो जा चुके थे; अब वह रास्ता ढूँढ़नेवाला कौन है—वह ख़ामोशी से पीढ़ी पर बैठ गई और खाना ठंडा होता रहा।

थोड़ी देर के बाद ड्योढ़ी में आहट हुई—बाप और बेटी, दोनो चौंके।

मौजू उठके बाहर गया—चंद लम्हात के बाद मौजू और मौलवी साहब सहन में थे।

दीए की धुँधली रोशनी में जैनाँ ने देखा कि मौलवी साहब लड़खड़ा रहे हैं और उनके हाथ में एक घडा है।

मौजू ने सहारा देकर मौलवी साहब को चारपाई पर बिठाया।

मौलवी साहब ने घड़ा मौजू को दिया और लुक्नत[28] भरे लहजे में कहा . "आज ख़ुदा ने हमारा बहुत कड़ा इम्तिहान लिया   तुम्हारे गाँव के दो जवान लड़के घूरे में से शराब का घड़ा निकालकर शराब पीने ही वाले थे कि हम पहुँच गए   वह हमें देखते ही भाग गए   हमको बहुत सद्मा हुआ कि इतनी छोटी उम्र और इतना बड़ा गुनाह   फिर हमने सोचा कि इसी उम्र में तो इंसान रास्ते से भटकता है ··· हमने उनके लिए अल्लाह तबारक तआला के हुज़ूर में गिड़गिड़ाकर दुआ माँगी कि उन बच्चों का गुनाह माफ़ किया जाए   जवाब मिला ·· जानते हो, क्या जवाब मिला?"

मौजू ने लरज़ते हुए कहा : "जी नहीं!"

"जवाब मिला : 'क्या तू उनका गुनाह अपने सिर लेता है   ?' हमने अर्ज़ की : 'हाँ बारी तआला   ' आवाज़ आई : 'तो जा यह सारा घड़ा शराब का तू पी   हमने उन लडकों को बख़्शा!' "

मौजू के रोंगटे खड़े हो गए : "तो आपने पी?"

मौलवी साहब का लहजा और ज़्यादा लुक्नत भरा हो गया : "हाँ पी   पी   उनका गुनाह अपने सिर लेने के लिए पी ·· रब्बुलइज़्ज़त की आँखों में सुर्ख़रू होने के लिए पी   घड़े में और भी पड़ी है   यह भी हमें पीनी है   रख दे इसे सँभाल के और देख   और देख, इसकी एक बूँद भी इधर-उधर न हो   "

मौजू ने घड़ा उठाकर अंदर कोठड़ी में रख दिया और उसके मुँह पर कपड़ा भी बाँध

दिया—जब वह वापस सहन में आया तो उसने देखा कि मौलवी साहब उसी तरह चारपाई पर बैठे हैं, जैनाँ उनके पास खडी है और उनका सिर दाब रही है; वह जैनाँ से कह रहे थे . "जो आदमी दूसरों के लिए कुछ करता है, अल्लाह जल्ले शानहू उससे बहुत खुश होता है वह इस वक्त तुझसे भी खुश है हम भी तुझसे खुश हैं।"

अपनी खुशी मे मौलवी साहब ने जैनाँ को अपने पास बिठाकर उसकी पेशानी चूम ली—जैनाँ ने उठना चाहा, मगर उनकी गिरफ्त मजबूत थी।

मौलवी साहब ने जैनाँ को अपने गले से लगाया और मौजू से कहा "चौधरी मौजू, तेरी बेटी का नसीबा जाग उठा है।"

मौजू सर-ता-पा ममनूनो-मुतशक्किर था · "यह सब आपकी दुआ है, आपकी मेहरबानी है।"

मौलवी साहब ने जैनाँ को एक मर्तबा फिर अपने सीने के साथ भीचा · "अल्लाह मेहरबान सो कुल मेहरबान जैनाँ, हम तुझे एक वजीफा बताएँगे वह पढा करना, अल्लाह हमेशा मेहरबान रहेगा जाओ, हमारे लिए खाना लाओ ।"

दूसरे दिन सुबह मौलवी साहब बहुत देर से उठे।

मौजू डर के मारे खेतो पर न गया, बस सहन में उनकी चारपाई के पास बैठा रहा।

जब वह उठे तो उनके लिए मिसवाक[29] तैयार थी, पानी, साबुन, सबकुछ तैयार था, नाश्ता भी।

काफी देर के बाद मौलवी साहब के इरशाद के मुताबिक मौजू ने शराब का घडा लाकर उनके पास रख दिया।

उन्होंने जेरे-लब कुछ पढा, घडे का मुँह खोलकर उसमे तीन बार फूँका और तीन कटोरियाँ शराब चढा गए, फिर उन्होने ऊपर आसमान की तरफ देखा, कुछ पढा और बुलद आवाज मे कहा "हम तेरे हर इम्तिहान मे पूरे उतरेगे मौला " फिर वह मौजू से मुखातिब हुए "मौजू जा हुक्म मिला है कि अभी जा और जैनाँ की माँ को ले आ रास्ता मिल गया है हमें।"

मौजू बहुत खुश हुआ—जल्दी-जल्दी उसने घोडी पर जीन कसी और कहा कि वह दूसरे रोज सुबह-सवेरे वापस पहुँच जाएगा, फिर उसने जैनाँ को ताकीद की कि वह मौलवी साहब की हर आसाइश का खयाल रखे और उनकी खिदमतगुजारी मे कोई कसर उठा न रखे।

जैनाँ बरतन माँजने मे मशगूल हो गई।

मौलवी साहब चारपाई पर बैठे उसे घूरते रहे, धीरे-धीरे कटोरियाँ भर-भर शराब पीते रहे और मोटे-मोटे दानोंवाली तस्बीह फेरते रहे।

जब वह काम से फारिग हो गई तो उन्होंने उससे कहा "जैनाँ, देखो, वुजू कर लो।"

जैनाँ ने बडे भोलेपन से जवाब दिया : "मुझे नही आता मौलवी जी!"

उन्होंने बडे प्यार से उसको सरजनिश[30] की "वुजू करना नही आता क्या जवाब देगी अल्लाह को " यह कहकर वह उठे और उन्होंने जैनाँ को वुजू कराया—वह ऐसी

निशस्त से और ऐसे अंदाज में उसको समझाते रहे थे कि उसके बदन का एक-एक कोना-खुदरा उनकी नज़रों की ज़द मे था।

वज़ू कराने के बाद उन्होंने जानमाज़ माँगी; वह न मिली तो फिर प्यार से डाँटा और थपथपाया।

उन्होंने खेस मँगवाया और अंदर कोठड़ी में बिछा दिया, फिर उन्होने जैनाँ से कहा कि वह बाहर के दरवाज़े की कुडी लगा दे। जब वह कुंडी लगाकर लौट आई तो उन्होने कहा कि वह घडा और कटोरा कोठडी में ले आए। जब वह दोनों चीज़े ले आई तो उन्होने इशारे से उसे खेस पर बैठने को कहा और तस्बीह फेरना शुरू कर दी।

बहुत देर तक वह आँखें बंद किए इसी तरह वज़ीफा करते रहे—जैनाँ उनके पास खामोश बैठी रही।

काफी देर के बाद उन्होने आँखे खोलीं, आधी कटोरी भरी, उसमें तीन फूँकें मारी और जैनाँ की तरफ बढ़ा दी : "पी जाओ इसे।"

जैनाँ ने कटोरी थाम ली, मगर उसके हाथ काँपने लगे।

मौलवी साहब ने बड़े जलाल भरे अंदाज़ मे उसकी तरफ देखा . "हम कहते हैं, पी जाओ इसे तुम.लोगों के सारे दिलद्दर दूर हो जाएँगे !"

जैनाँ काँपते हाथो से आधी कटोरी पी गई और उसका बदन सुलगने लगा।

मौलवी साहब अपनी दाढ़ी में मुसकराए : "हम फिर अपना वजीफ़ा शुरू करते हैं जब भी हम अपनी शहादत की उँगली मे इशारा करे तो घडे मे से आधी कटोरी भरकर फौरन पी जाना और पीती रहना समझ गईं?"

उन्होने जैनाँ को कुछ कहने का मौका ही न दिया और आँखें बद करके मुराक्बे[31] मे चले गए।

जैनाँ के मुँह का जाइका बेहद खराब हो गया था और उसके सीने मे आग-सी लग रही थी, वह चाहती थी कि उठकर ठडा-ठडा पानी पिए, पर वह कैसे उठ सकती थी।

एकदम मौलवी साहब की शहादत की उँगली उठी—जैनाँ ने एक नाकाबिले-फहम दबाव के तहत फौरन आधी कटोरी भरी और एक ही साँस मे पी गई; उसको उबकाई-सी आई, मगर उसने रोक ली; उसने लुआब थूकना चाहा, मगर निगल लिया; उसने जोर से आँखे भीची और फिर खोली—मौलवी साहब आँखे बद किए तस्बीह के दाने फेर रहे थे—जाने कितनी बार मौलवी साहब की शहादत की उँगली उठी, जाने कितनी बार जैनाँ ने आधी कटोरी भरकर पी—जैनाँ ने महसूस किया कि मौलवी साहब के चेहरे पर नूर बरस रहा है और उसके अपने बदन में लपटें-सी उठ रही हैं; एक रोशन-सी धुंध फैल रही है और उसकी आँखो को दिखाई देते हुए भी कुछ दिखाई नही दे रहा है; बस उसका बदन देख रहा है कि वह एक जवान, मजबूत, खूबसूरत मर्द की गोद में है और वह उसे जन्नत दिखाने ले जा रहा है

जब जैनाँ की आँखे खुलीं तो वह खेस पर लेटी हुई थी।

उसने नीम वा मख़मूर[32] आँखों से इधर-उधर देखा।

वह वहाँ क्यों लेटी हुई है, वह वहाँ कब लेटी थी—उसने सोचना चाहा तो उसे धुंध-सी नज़र आई और नींद आने लगी; उसका बदन दुख रहा था, लेकिन अनजाने तौर पर मुतमइन था।

और वह जन्नत ?

वह एकदम उठ बैठी—बाहर सहन मे आई तो उसने देखा कि दिन ढल चुका है और मौलवी साहब खुरे के पास बैठे वुज़ू कर रहे हैं।

आहट सुनकर उन्होने पलटकर जैनाँ की तरफ देखा और मुसकराए।

जैनाँ की समझ में कुछ न आया; वह वापस कोठडी में चली गई और खेस पर बैठकर अपनी माँ के मुताल्लिक सोचने लगी, जिसको वापस लाने उसका बाप गया हुआ था और पूरी रात बाकी थी उनकी वापसी में।

उसे सख़्त भूख लग रही थी, लेकिन एक बेनाम थकन के मारे उससे उठा नहीं जा रहा था, उसके छोटे-से मुज़्तरिब[31] दिमाग़ में धुंध मे लिपटी बेशुमार बाते आ रही थीं।

थोड़ी देर के बाद कोठड़ी में मौलवी साहब नमूदार हुए, उन्होंने कहा "हमें तुम्हारे बाप के लिए एक वज़ीफ़ा करना है सारी रात किसी कब्र के पास बैठना होगा सुबह आ जाएँगे तुम्हारे लिए भी दुआ माँगेंगे" और वह घडा उठाकर चले गए।

जैनाँ ने फिर सोचने की कोशिश की—जन्नत एक जवान, मजबूत, खूबसूरत मर्द की गोद

वह धुंध में खोई-खोई सो गई।

सुबह सवेरे उसकी नींद खुली ही थी कि मौलवी साहब आ गए—उनकी बडी-बडी आँखें, जिनमें सुर्मे की तहरीर ग़ायब थी, बेहद सुर्ख थी, उनके कदमों में लड़खडाहट थी—उन्होंने अंदर कोठडी में जाकर घडा रख दिया।

सहन में आते ही उन्होंने मुसकराकर जैनाँ की तरफ देखा और आगे बढ़कर उसको गले से लगा लिया; फिर उसकी पेशानी को चूमा और चारपाई पर बैठ गए।

जैनाँ एक तरफ़ कोने में पीढ़ी पर गुमसुम बैठ गई—उसको अपने बाप का इंतज़ार था, माँ का भी, जिससे बिछडे हुए उसे दो बरस हो चुके थे।

मौलवी साहब ने कहा : "जैनाँ, मौजू अभी तक नही आया ?"

वह ख़ामोश रही।

मौलवी साहब फिर उससे मुख़ातिब हुए : "हम सारी रात एक टूटी हुई कब्र पर सिर न्योढ़ाए सुनसान कब्रिस्तान में मौजू के लिए वजीफा पढते रहे कब आएगा वह क्या वह ले आएगा तुम्हारी माँ को ?"

जैनाँ ने सिर्फ इस कदर कहा : "जी, मालूम नहीं "

थोड़ी देर के बाद आहट हुई तो जैनाँ उठी—ड्योढ़ी में उसकी माँ खडी थी—वह उसे देखते ही उससे लिपट गई और रोने लगी।

फिर मौजू आया। उसने मौलवी साहब को बडे अदब और एहतिराम के साथ सलाम किया; फिर उसने अपनी बीवी से कहा : "फाताँ, सलाम करो मौलवी साहब को।"

फाताँ अपनी बेटी से अलग हुई, अपने आँसू पोंछती हुई आगे बढ़ी और उसने मौलवी साहब को सलाम किया।

मौलवी साहब ने अपनी लाल-लाल आँखों से फातों को घूरके देखा और मौजू से कहा : "हम सारी रात एक टूटी हुई कब्र के पास बैठकर तुम्हारे लिए वज़ीफ़ा पढ़ते रहे अभी-अभी उठके आए हैं अल्लाह ने हमारी सुन ली है सब ठीक हो जाएगा।"

मौज़ू ने फर्श पर बैठकर मौलवी साहब के पाँव दाबने शुरू कर दिए; वह इतना ममनूनो-मुतशक्किर था कि कुछ न कह सका—फातों से मुख़ातिब होकर उसने आँसुओं भरी आवाज मे कहा "तू ही मौलवी साहब का शुक्रिया अदा कर मुझे तो आता नही।"

फातों उसके पास ही बैठ गई और मौलवी साहब से सिर्फ इतना कह सकी . "हम गरीब लोग क्या अदा कर सकते हैं?"

मौलवी साहब ने गौर से फातों को देखा · "मौजू, तुम ठीक कहते थे फातों ख़ूबसूरत है; इस उम्र में भी जवान मालूम होती है, बिलकुल दूसरी जैनाँ उससे भी अच्छी " फिर वह फातों से मुखातिब हुए "हम सब ठीक कर देंगे फातों अल्लाह का फज़्लो-करम हो गया है।"

मौजू और फातों, दोनों खामोश रहे—मौजू मौलवी साहब के पाँव दबाता रहा, फातों उसके पास बैठी रही—जैनाँ चूल्हा सुलगाने में मसरूफ हो गई थी।

आखिर मौलवी साहब उठे, फातों के सर पर हाथ से प्यार किया और मौजू से मुखातिब हुए . "अल्लाह तआला का हुक्म है कि जब कोई आदमी अपनी बीवी को तलाक़ देने के बाद फिर उसको अपने घर बसाना चाहे तो उसकी सज़ा यह है कि पहले वह औरत किसी और मर्द से शादी करे, उससे तलाक ले, तब जाइज है।"

मौजू ने हौले-से कहा "यह मैं सुन चुका हूँ मौलवी साहब!"

मौलवी साहब ने मौजू को उठाया और उसके कंधे पर हाथ रखा : "लेकिन हमने खुदा के हुज़ूर गिडगिडाकर दुआ माँगी कि ऐसी कडी सज़ा न दी जाए गरीब मौजू को; उससे भूल हो गई है आवाज आई · 'हम तेरी सिफारिशें कब तक सुनते रहेंगे तू अपने लिए जो भी माँग, हम देने के लिए तैयार हैं ' हमने अर्ज की : 'मेरे शहनशाह बहरो बर[14] के मालिक हम अपने लिए कुछ नही माँगते तेरा दिया हमारे पास बहुत कुछ है हम मौजू के लिए माँगते हैं, इसलिए कि मौजू को फातों से मुहब्बत है ' इरशाद हुआ . 'तो हम उसकी मुहब्बत और तेरे ईमान का इम्तिहान लेना चाहते हैं एक दिन के लिए तू फातों से निकाह कर ले और दूसरे दिन उसे तलाक देकर मौजू के हवाले कर दे हम तेरे लिए बस सिर्फ यही कर सकते हैं कि तूने चालीस बरस दिल से हमारी इबादत की है' "

मौजू बहुत खुश हुआ · "मुझे मंजूर है मौलवी साहब, मुझे मंजूर है " फिर उसने फातों की तरफ तमतमाती आँखो से देखा "क्यों फातों?" उसने फातों के जवाब का इंतजार तक न किया : "हम दोनों को मंज़ूर है।"

मौलवी साहब ने आँखें बंद कर लीं और देर तक कुछ पढ़ते रहे; फिर उन्होंने आँखें

खोलकर मौजू और फातॉं, दोनों के फूँक मारी और आसमान की तरफ नज़रें उठाई : "अल्लाह तबारक तआला हम सबको इस इम्तिहान में पूरा उतारे " फिर वह मौजू से मुख़ातिब हुए : "अच्छा मौजू, हम अब चलते हैं तुम और जैनाँ आज की रात कहीं चले जाना और कल सुबह सवेरे लौट आना हम शाम को आएँगे " यह कहकर वह चले गए।

शाम हुई तो मौजू और जैनाँ तैयार हो गए।

शाम ढलने को थी कि मौलवी साहब वापिस आए—वह जेरे-लब कुछ पढ़ रहे थे।

काफ़ी देर के बाद जब उन्होंने इशारा किया तो मौजू और जैनाँ ड्योढ़ी से बाहर निकल गए।

मौलवी साहब उठे और ड्योढ़ी की कुडी चढ़ाने के बाद फातॉं से बोले : "फातॉं, तुम आज की रात हमारी बीवी हो जाओ अदर से बिस्तर ले आओ और चारपाई पर बिछा दो थोड़ी देर के बाद हम सोएँगे।"

जब फातॉं ने अंदर कोठडी से बिस्तर लाकर चारपाई पर बडे सलीके से बिछा दिया तो मौलवी साहब ने कहा : "तुम बैठो, हम अभी आते हैं।"

यह कहकर वह कोठड़ी में चले गए—दीया रोशन था और कोने मे बरतनों की मीनारे के पास उनका घड़ा रखा था।

उन्होंने घड़ा हिलाकर देखा—काफी बाक़ी थी।

घड़ा उठाकर, उसके साथ ही मुँह लगाकर उन्होंने कई बडे-बडे घूँट भरे; फिर घडा रखकर रेशमी फूलोंवाले बसंती रूमाल से मूँछे और होंठ साफ किए और सहन मे आ गए—घडा उनकी बग़ल में था और कटोरी हाथ में।

फातॉं चारपाई पर बैठी हुई थी—मौलवी साहब ने इशारे से फातॉं को बैठे रहने को कहा और उसके बिलकुल करीब फ़र्श पर बैठ गए।

आधी कटोरी भरने के बाद उसे अपने सामने रखकर वह काफ़ी देर तक कुछ पढ़ते रहे, फिर तीन दफ़ा फूँककर उन्होंने कटोरी उठाई और फातॉं की तरफ बढ़ाई : "लो एक साँस में इसे पी जाओ।"

फातॉं पी गई—उसे उबकाई आई तो मौलवी साहब तेजी से उठे और उसकी पीठ थपथपाते हुए कड़कदार आवाज़ में बोले : "ठीक हो जाओ फौरन।"

फातॉं सँभली और किसी क़दर ठीक हो गई।

मौलवी साहब ने कितनी ही बार आधी कटोरी भरी, फूँकी और फातॉं को दी।

फातॉं जब चारपाई पर बैठे-बैठे थक गई तो टाँगें फैलाकर लेट गई—मौलवी साहब उठे और फातॉं पर छा गए।

सुबह सवेरे जब मौजू और जैनाँ लौटे तो उन्होंने देखा कि ड्योढ़ी का दरवाज़ा खुला हुआ है, सहन में फातॉं सो रही है, चारपाई के पास ही घड़ा और कटोरी पडी है, मगर मौलवी साहब

मौजूद नहीं हैं।

मौजू ने सोचा : 'शायद बाहर गए होंगे खेतों में ' उसने आगे बढ़कर फाताँ को जगाया।

फाताँ ने गूँ-गूँ की, फिर 'जन्नत, जन्नत' बड़बडाते हुए आँखें खोल दीं—जब उसने मौजू और जैनाँ को देखा तो फौरन उठकर बैठ गई।

मौजू ने पूछा : "मौलवी साहब कहाँ हैं ?"

फातां आँखे फाड़े उनको देख रही थी "मौलवी साहब ? कौन मौलवी साहब ? ओह, वह यहाँ नहीं हैं क्या ?"

"नहीं ," मौजू ने कहा . "मैं उन्हें बाहर देखता हूँ।"

वह अभी ड्योढ़ी ही में था कि उसे फातां की हल्की-सी चीख सुनाई दी।

उसने पलटकर देखा—फातां तकिया उठाए कुछ देख रही थी।

जब वह करीब आया तो फातां ने पूछा "यह क्या है ?"

मौजू ने कहा . "बाल।"

जैनाँ ने कहा "मौलवी साहब की दाढ़ी और पटे !"

फातां ने कहा "हाँ, मौलवी साहब की दाढी और पटे !"

मौजू ने आगे बढकर दाढ़ी और पटे उठा लिए—"मौलवी साहब कहाँ हैं ?" फौरन ही उसके सादा लोह और बेलौस दिमाग मे एक खयाल आया "फातां जैनाँ, तुम नही समझी वह कोई करामातवाले बुजुर्ग थे हमारा काम कर गए और अपनी निशानी छोड गए "

उसने दाढ़ी और पटों को चूमा, आँखो मे लगाया और फिर उनको जैनाँ के हवाले करके कहा "देखो बेटी, इनको किसी साफ कपडे मे लपेटकर बडे सदूक मे हिफाजत से रख दो खुदा के हुक्म से घर मे बरकत ही बरकत रहेगी।"

जैनां दाढी और पटे लेकर अदर कोठडी में चली गई तो मौजू फातां के पास बैठ गया और बडे प्यार से कहने लगा . "मैं अब नमाज पढना सीखूँगा और मौलवी साहब के लिए दुआ किया करूँगा, जिन्होंने हम दोनो को फिर से मिला दिया।"

फातां खामोश रही।

1 दूर बेकार व अनउपजाऊ जमीन, 2 लडका, 3 कृतज्ञ, 4 पूजा-पाठ, 5 आदेश, 6 उतरना, 7 कुरआन शरीफ लपेटने या रखने का वस्त्र, 8 ईश्वर या अल्लाह द्वारा गुनाह माफ कर देना, 9. प्रभावित, प्रभावशाली, 10 महाप्रलय, 11 शाबाश, 12 भाषण 13 शर्मिंदगी, 14 बड़े-बड़े बालोंवाला, 15 धर्मसम्मत, 16 क्रोधित 17 विशिष्ट, 18 अपराध, गलती, 19 कृतज्ञ, 20. आँसू; 21 आदेश, 22 धर्मगुरु के प्रति श्रद्धा का भाव, 23. अवज्ञा, 24 निष्कपट, 25 दया का फरिश्ता; 26. खुशी, 27 प्रायश्चित, 28 लड़खड़ाहट, 29. दातुन, 30. फटकारना, डाँटना, 31. समाधि, ईश्वर से ध्यान लगाने की अवस्था, 32 नशे के कारण आधी खुमी, 33 बेचैन।

मम्मद भाई

फारस रोड से आप उस तरफ गली में चले जाइए, जो सफ़ेद गली कहलाती है तो उसके आखिरी सिरे पर आपको चंद होटल मिलेंगे—यूँ तो बबई में कदम-कदम पर होटल और रेस्तोराँ हैं, मगर जिन होटलो का मैं ज़िक्र कर रहा हूँ, इस लिहाज से बहुत दिलचस्प और मुन्फ़रिद[1] हैं कि यह उस इलाके मे वाके हैं, जहाँ भाँत-भाँत की रँडियाँ बसती हैं।

एक जमाना गुजर चुका है—बस आप यही समझ लीजिए कि कोई बीस बरस के करीब गुजर चुके हैं, जब मैं उन होटलों में चाय पिया करता था और खाना खाया करता था। सफेद गली से आगे निकलकर 'प्ले हाऊस' आता है, जहाँ दिन भर हाऊ-हू रहती थी; सिनेमा के शो दिन भर चलते रहते थे, चंपियाँ होती रहती थी। उस इलाके मे सिनेमाघर गालिबन चार थे और उनके बाहर घंटियाँ बजा-बजाकर बडे समाअत पाश[2] तरीके पर लोगो को मदऊ[3] किया जाता था 'आओ दो आने मे फस्ट क्लास खेल दो आने मे!' बाज औकात घंटियाँ बजानेवाले लोगों को जबर्दस्ती अदर धकेल देते थे।

सिनेमाओ के बाहर कुर्सियों और बैंचो पर चपी करानेवाले बैठे होते थे और उनकी खोपडियों की मरम्मत बड़े मार्ईर्टाफिक तरीके पर की जाती थी—मालिश अच्छी चीज है, लेकिन मेरी समझ मे यह नही आता कि बबई के रहनेवाले इसके इतने गरवीदा[4] क्यो हैं, दिन को और रात को, हर वक्त इन्हे तेल-मालिश की जरूरत महसूस होती है। आप अगर चाहें तो रात के तीन बजे भी बडी आसानी से तेल-मालिशया बुला सकते हैं; यूँ भी सारी रात, आप ख्वाह बबई के किसी कोने में हों, यह आवाज आप यकीनन सुनते रहेगे ''पी पी पी '' यह 'पी' चंपी का मुख़फ्फ़फ़[5] है।

फ़ारस रोड यूँ तो एक सडक का नाम है, लेकिन यह उस पूरे इलाके से मंसूब है, जहाँ बेसवाएँ बसती हैं। यह बहुत बडा इलाक़ा है और इसमें कई गलियाँ हैं, जिनके मुख़्तलिफ नाम हैं, लेकिन सहूलत के तौर पर हर गली को फारस रोड या सफेद गली कहा जाता है। इन गलियों में सैकड़ों जँगला लगी दूकानें हैं, जिनमे मुख़्तलिफ़ रंग व सिन[6] की औरते बैठकर अपना जिस्म बेचती हैं, मुख़्तलिफ़ दामों पर; आठ आने से आठ रुपए तक, आठ रुपए से सौ रुपए तक—हर दाम की औरत आपको इस इलाक़े में मिल सकती है। यहूदी, पंजाबी, मरहठी, कश्मीरी, गुजराती, बंगाली, एंग्लो इंडियन, फ़्रांसिसी, चीनी, जापानी, ग़र्ज यह कि हर क़िस्म की औरत आपको यहाँ से दस्तेयाब[7] हो सकती है। ये औरतें कैसी

होनी हैं, माफ कीजिएगा, इसके मुताल्लिक आप मुझसे कुछ न पूछिए, बस औरते होती हैं और इनको गाहक मिल ही जाते हैं।

इस इलाके मे बहुत-से चीनी भी आबाद हैं। मालूम नही, यह क्या कारोबार करते हैं, मगर रहते इसी इलाके मे हैं। बाज तो रेस्तोरॉं चलाते हैं, जिनके बाहर बोर्डों पर कीडो-मकोडो की शक्ल मे कुछ लिखा होता है, मालूम नही, क्या। इस इलाके मे बिजनेसमैन और हर कौम के लोग आबाद हैं—एक गली है, जिसका नाम अरबसीन है। वहाँ के लोग उसे अरब गली कहते हैं—उस जमाने मे, जिसकी मैं बात कर रहा हूँ, एक गली मे गालिबन बीस-पच्चीस अरब रहते थे, जो खुद को मोतियो का ब्योपारी कहते थे, बाकी आबादी पजाबियो और रामपुरियो पर मुश्तमिल[8] थी। उसी गली मे मुझे एक कमरा मिल गया था, जिसमे सूरज की रोशनी का दाखिला बद था, हर वक्त बिजली का बल्ब रोशन रहता था, उस कमरे का किराया नौ रुपए माहवार था।

आपका कयाम[9] अगर बबई मे नही रहा है तो आप मुश्किल ही से यकीन करेगे कि वहाँ किसी को किसी और से कोई सरोकार नही होता—अगर आप अपनी खोली मे मर रहे हैं तो आपको कोई नही पूछेगा, आपके पडोस मे कत्ल हो जाए, मजाल है जो आपको खबर हो जाए मगर वहाँ अरब गली में एक शख्स ऐसा था, जिसको अडोस-पडोस के हर शख्स से दिलचस्पी थी, उसका नाम मम्मद भाई था।

मम्मद भाई रामपुर का रहनेवाला था, अव्वल दर्जे का फेकत, गतके और बनोट के फन[10] मे यकता—मैं जब अरब गली मे रहने लगा तो होटलो मे उसका नाम अक्सर सुनने मे आया, लेकिन एक अर्से तक उससे मुलाकात न हो सकी।

मैं सुबह सवेरे अपनी खोली से निकल जाता था और बहुत रात गए लौटता था, अपनी मसरूफियत[11] के बावुजूद मुझे मम्मद भाई से मिलने का बहुत इश्तियाक[12] था कि उसके मुताल्लिक अरब गली में बेशुमार दास्तानें मशहूर थी बीस-पच्चीस आदमी अगर लाठियों से मुसल्लह होकर उस पर टूट पडें तो भी उसका बाल तक बीका नही कर सकते, बल्कि खुद एक मिनट के अदर-अदर चित हो जाते हैं और यह कि उस-जैसा छुरीमार सारी बबई मे कोई और नहीं है, ऐसे छुरी मारता है कि जिसके लगती है, उसको पता भी नही चलता, वह बस सौ कदम बगैर एहसास के चलता रहता है और फिर एकदम ढेर हो जाता है, यह सफाई है उसके हाथ की।

उसके हाथ की सफाई देखने का मुझे इश्तियाक नही था, लेकिन उसके मुताल्लिक बातें सुन-सुनकर मेरे दिल मे यह ख्वाहिश जरूर पैदा हो चुकी थी कि उसे देखूँ, उससे बाते चाहे न करूँ, लेकिन उसे करीब से देख लूँ कि वह दिखाई कैसा देता है।

उस तमाम इलाके पर उसकी शख्सियत छाई हुई थी—वह बहुत बडा दादा था, लेकिन इसके बावुजूद लोग उसकी तारीफें करते नही थकते थे उसने कभी किसी बहू-बेटी की तरफ आज तक आँख उठाकर भी नहीं देखा है, वह लँगोट का बहुत पक्का है, गरीबो के दुख-दर्द का शरीक है, अरब गली, सिर्फ अरब गली ही नही, आसपास जितनी गलियाँ हैं और उनमे जितनी नादार[13] औरतें हैं, सब उसको जानती हैं कि वह अक्सर उनकी माली

इमदाद करता रहता है, हालाँकि वह ख़ुद उनके पास कभी नहीं जाता है, बस अपने किसी ख़ुर्द साल शागिर्द को भेज देता है और उनकी ख़ैरियत दरयाफ़्त कर लेता है।

मुझे मालूम नहीं, उसकी आमदनी के क्या ज़राय थे—वह अच्छा खाता था और अच्छा पहनता था—उसके पास एक छोटा-सा ताँगा था, जिसमें एक बडा तदुरुस्त टट्टू जुता होता था; ताँगा वह ख़ुद चलाता था; साथ में दो या तीन शागिर्द होते थे, बड़े बाअदब। भिंडी बाज़ार का एक चक्कर लगाकर या किसी दरगाह में होकर वह उस ताँगे पर वापिस अरब गली आ जाता था और किसी ईरानी के होटल में बैठकर अपने शार्गिदों के साथ गतके और बनोट के मुताल्लिक़ बातों में मसरूफ हो जाता था।

मेरी खोली के साथ ही एक और खोली थी, जिसमें मारवाड का एक मुसलमान रक़्क़ास आशिक़ हुसैन रहता था। आशिक़ हुसैन ने मुझे मम्मद भाई की सैकड़ों कहानियाँ सुनाईं; उसने मुझे बताया कि मम्मद भाई एक लाख रुपए का आदमी है—आशिक़ हुसैन को एक मर्तबा गैस्ट्रो एंटाइटस हो गया था। मम्मद भाई को पता चला तो उसने फ़ारस रोड के तमाम डॉक्टर आशिक़ हुसैन की खोली में इकट्ठे कर दिए और उनसे कहा : 'देखो अगर आशिक़ हुसैन को कुछ हो गया तो मैं तुम्हारा सबका सफ़ाया कर दूँगा ' आशिक़ हुसैन ने बड़े अकीदतमंदाना लहजे में मुझसे कहा था : 'मंटो साहब, मम्मद भाई फ़रिश्ता है, फरिश्ता जब उसने डॉक्टरों को धमकी दी तो वह सब काँपने लगे और उन्होंने मेरा ऐसा लग के इलाज किया कि मैं दो दिन में ठीक-ठाक हो गया।'

मम्मद भाई के मुताल्लिक़ मैं अरब गली के गंदे और वाहियात होटलों में और भी बहुत कुछ सुन चुका था—एक शख़्स ने, जो ग़ालिबन मम्मद भाई का शागिर्द था और ख़ुद को बहुत बड़ा फेकत समझता था, मुझसे कहा था : 'मम्मद भाई अपने नेफे में हमेशा एक ऐसा आबदार ख़ंजर उड़स के रखता है, जो उस्तरे की तरह शेव भी कर सकता है और यह ख़ंजर नियाम[14] में नहीं होता, खुला होता है, बिलकुल नंगा और वह भी पेट के साथ चिपका हुआ उस ख़ंजर की नोक इतनी तीखी है कि अगर बातें करते हुए या झुकते हुए जरा-सी ग़लती हो जाए तो मम्मद भाई का एकदम काम-तमाम हो जाए।'

ज़ाहिर है कि मम्मद भाई को देखने और उससे मिलने का इश्तियाक़ दिन ब दिन मेरे दिलो-दिमाग़ में बढ़ता गया—मालूम नहीं, मैंने अपने तसव्वुर में उसकी शक्लो-सूरत का क्या नक़्शा तैयार किया था। अब इतनी मुद्दत के बाद मुझे सिर्फ़ इतना याद है कि उन दिनों मैं एक क़वी हेकल[15] शख़्स को अपनी आँखों के सामने देखता था, जिसका नाम मम्मद भाई था और जो मुझे हरक्यूलिस साइकिलों के इश्तिहारों मे नज़र आता था।

मैं सुबह सवेरे अपने काम पर निकल जाता था और खाने-वाने से फ़ारिग़ होकर रात को दस बजे के क़रीब वापिस आकर फ़ौरन सो जाता था—इन हालात में मम्मद भाई से कैसे मुलाक़ात हो सकती थी।

मैंने कई मर्तबा सोचा कि काम पर न जाऊँ, सारा दिन अरब गली में गुज़ारूँ और मम्मद भाई को देखने और मिलने की कोशिश करूँ, मगर मैं ऐसा न कर सका, कि मेरी मुलाज़मत ही बड़ी वाहियात क़िस्म की थी।

उन्हीं दिनों अचानक मलेरिया ने मुझ पर ज़बर्दस्त हमला किया; ऐसा हमला कि मैं बौखला गया।

अरब गली के एक डॉक्टर ने कहा : 'खतरा है कि मलेरिया बिगड़कर नमूनिया में तब्दील न हो जाए।'

मैं बिलकुल तने-तन्हा था—मेरे साथ मेरी खोली में जो एक शख़्स रहता था, उसको पूना में नौकरी मिल गई थी और अब उसकी रफ़ाकत[16] मुझे नसीब नहीं थी।

मैं बुख़ार में फुँक रहा था; इस क़दर प्यास लग रही थी कि जो पानी खोली मे रखा था, वह मेरे लिए नाकाफ़ी था और दोस्त-यार कोई पास था नही जो मेरी देखभाल करता।

मैं बहुत सख़्तजान हूँ, देखभाल की मुझे अमूमन जरूरत महसूस नही हुआ करती, मगर मालूम नहीं, वह किस क़िस्म का बुखार था, किस क़िस्म का मलेरिया था कि उसने मेरी रीढ की हड्डी तक तोड दी थी और मैं बिलबिला रहा था—मेरे दिल में पहली मर्तबा यह ख्वाहिश पैदा हुई कि कोई मेरे पास मौजूद हो और मुझे दिलासा दे; दिलासा न दे तो कम अज कम अपनी शक्ल ही दिखाता रहे; मुझे यह ख़ुशगवार एहसास तो हो कि मुझे पूछनेवाला कोई है।

दो दिन तक मैं बिस्तर में पडा तकलीफ़ भरी करवटे लेता रहा, मगर कोई न आया—आना किसे था, मेरी जान-पहचान के लोग ही कितने थे; दो, तीन या चार और वह इतनी दूर रहते थे कि उनको मेरी मौत तक का इल्म नहीं हो सकता था, फिर बबई मे कौन किसको पूछता है; कोई मरे या जिए, बला से।

मेरी बहुत बुरी हालत थी—रक्क़ास आशिक हुसैन की बीवी बीमार थी और वह अपने वतन जा चुका था; यह मुझे होटल के छोकरे ने बताया था—अब मैं किसको बुलाता।

मैं बडी निढाल हालत में था और सोच ही रहा था कि जैसे-तैसे खुद नीचे उतरूँ और किसी से बात करूँ कि दरवाजे पर दस्तक हुई।

मैंने खयाल किया कि होटल का छोकरा होगा, जिसे बबई की जबान मे 'बाहरवाला' कहते हैं—मैंने बडी मरियल आवाज़ में कहा "आ जाओ!"

दरवाजा खुला और एक छरेरे बदन का आदमी, जिसकी मूँछे मुझे सबसे पहले दिखाई दीं, अदर दाख़िल हुआ।

उसकी मूँछें ही सबकुछ थीं—मेरा मतलब यह है कि अगर उसकी मूँछें न होतीं तो बहुत मुम्किन है, वह कुछ भी न होता; उसकी मूँछों ही ने, ऐसा मालूम होता था, उसके सारे वुजूद को जिंदगी बख़्श रखी है।

वह अंदर दाख़िल हुआ और अपनी कैसर विलियम-जैसी मूँछो को एक उँगली से ठीक करते हुए मेरी खाट के करीब आया—उसके पीछे तीन-चार आदमी और थे, अजीबो-ग़रीब वज़ा क़ता[17] के।

मैं हैरान था कि वह लोग कौन हैं और मेरे पास क्यों आए हैं।

कैसर विलियम-जैसी मूँछों और छरेरे बदनवाले आदमी ने मुझसे बडी नर्मो-नाजुक आवाज़ में कहा : "वमटो साहब, आपने हद कर दी साला मुझे इत्तला क्यों न दी?"

'मंटो' का 'वमटो' बन जाना मेरे लिए कोई नई बात नहीं थी; फिर मैं इस मूड में भी नहीं

था कि उसकी इस्लाह[18] करता—मैंने अपनी नहीफ़ आवाज में उसकी मूँछों से सिर्फ इतना पूछा : "आप लोग कौन हैं ?"

उसने मुख़्तसर-सा जवाब दिया : "मम्मद भाई !"

जाने मुझे क्या हुआ, मैं आपसे आप उठकर बैठ गया : "मम्मद भाई ? आप मम्मद भाई हैं ! मशहूर दादा " मेरे मुँह से निकल तो गया, लेकिन फौरन मुझे अपने बैंडेपन का एहसास हुआ और मैं रुक गया।

मम्मद भाई ने छोटी उँगली से अपनी मूँछो के करख़्त बाल जरा ऊपर किए और मुसकराया : "हाँ वमटो भाई, मैं मम्मद भाई हूँ, यहाँ का मशहूर दादा मुझे बाहरवाले से मालूम हुआ कि तुम बीमार हो साला यह भी कोई बात है कि तुमने मुझे खबर न की मम्मद भाई का मस्तक फिर जाता है जब कोई ऐसी बात होती है।"

मैं कुछ कहने ही वाला था कि उसने अपने साथियों मे से एक से मुख़ातिब होकर कहा "अरे, क्या नाम है तेरा जा, भाग के जा और क्या नाम है उस डॉक्टर का समझ गए ना, उससे कह कि मम्मद भाई बुलाता है एकदम जल्दी आए, एकदम सब काम छोड दे और जल्दी आए, और देख, साले से कहना, सब दवाएँ लेता आए।"

मम्मद भाई ने जिसको हुक्म दिया, वह एकदम चला गया।

मैं चुप था, सोच रहा था, उसको देख रहा था—वह तमाम दास्तानें मेरे बुखारआलूदा दिमाग में चल-फिर रही थीं, जो मैं उसके मुताल्लिक लोगो से सुन चुका था, लेकिन गडमड सूरत मे कि उसकी तरफ नज़र उठते ही उसकी मूँछें सब दास्तानो पर छा जाती थीं। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि उस चेहरे को, जिसके खद्दोखाल बडे मुलायम और नर्मो-नाज़ुक हैं, सिर्फ खौफनाक बनाने के लिए वह मूँछे रखी गई हैं; मैंने अपने बुख़ारआलूदा दिमाग मे सोचा कि मम्मद भाई दर हकीकत इतना खौफनाक नहीं, जितना उसने खुद को जाहिर कर रखा है।

खोली मे कोई कुर्सी नहीं थी; मैंने मम्मद भाई से कहा कि वह मेरी चारपाई पर बैठ जाए, मगर उसने इनकार कर दिया और बडे रूखे-से लहजे में जवाब दिया. "नही हम खड़े रहेगे।" फिर उसने टहलते हुए—हालाँकि खोली में टहलने की ऐयाशी की कोई गुंजाइश नही थी—अपने कुर्ते का दामन उठाकर पाजामे के नेफ़े में उड़सा हुआ ख़ंजर निकाला। मैं समझा, ख़ंजर चाँदी का है, इस क़दर लिश्क रहा था कि आपसे क्या कहूँ खंजर निकालकर पहले उसने अपनी कलाई पर फेरा : जो बाल खंजर की जद में आए, सब साफ़ हो गए, उसने इत्मीनान का साँस लिया और नाख़ून तराशने लगा।

मुझे महसूस हुआ, उसकी आमद ही से मेरा बुख़ार कई दर्जे नीचे उतर गया है—मैंने किसी क़दर होशमद हालत में उससे कहा : "मम्मद भाई, यह ख़ंजर तुम इस तरह अपने नेफे में यानी बिलकुल अपने पेट के साथ चिपकाकर रखते हो और यह इस क़दर तेज़ है क्या तुम्हें खौफ़ महसूस नहीं होता ?"

उसने खंजर से अपने नाख़ून की एक काश बडी सफाई से उड़ाते हुए जवाब दिया :

"यह ख़ंजर दूसरों के लिए है और यह अच्छी तरह जानता है···साला अपनी ही चीज़ है, अपने को नुक़सान कैसे पहुँचाएगा ?"

ख़ंजर से जो रिश्ता उसने क़ायम किया था, वह कुछ ऐसा ही था जैसे कोई माँ या बाप कहे कि यह मेरा बेटा है, या मेरी बेटी है, इसका हाथ मुझ पर कैसे उठ सकता है।

इतने में डॉक्टर आ गया—उसका नाम पिंटो था और मैं वमटो था।

उसने 'मम्मद' भाई को अपने ख़ास क्रिश्चियन अंदाज़ में सलाम किया और पूछा कि मामला क्या है।

जो मामला था, वह मम्मद भाई ने बयान कर दिया; मुख़्तसर, लेकिन कड़े अल्फ़ाज़ में, जिनमें तहक्कुम[19] था : "देखो, अगर तुमने वमटो भाई का इलाज अच्छी तरह न किया तो तुम्हारी ख़ैर नहीं।"

डॉक्टर पिंटो ने फ़रमाबरदार लड़के की तरह अपना काम किया—उसने मेरी नब्ज़ देखी; स्टेथोस्कोप लगाकर मेरे सीने और पीठ का मुआइना किया, ब्लड प्रैशर देखा, मुझसे मेरी बीमारी की तमाम तफ़सील पूछी। फिर उसने मुझसे नहीं, मम्मद भाई से कहा : 'फ़िक्र की कोई बात नहीं···मलेरिया है···मैं इंजेक्शन लगा देता हूँ।"

मम्मद भाई मुझसे कुछ फ़ासले पर खड़ा था—उसने डॉक्टर पिंटो की बात सुनी और ख़ंजर से अपनी कलाई के बाल उड़ाते हुए कहा : "मैं कुछ नहीं जानता··· इंजेक्शन देना है तो दे दो, लेकिन अगर इसे कुछ हो गया तो···"

डॉक्टर पिंटो काँप गया : "नहीं मम्मद भाई, सब ठीक हो जाएगा।"

मम्मद भाई ने ख़ंजर अपने नेफ़े में उड़स लिया : "तो ठीक है।"

"तो मैं इंजेक्शन लगाता हूँ।" डॉक्टर पिंटो ने अपना बैग खोला और सिरिंज निकाली।

"ठहरो··· ठहरो···" मम्मद भाई जैसे घबरा गया।

डॉक्टर पिंटो ने सिरिंज फ़ौरन बैग में वापस रख दी और मिमयाते हुए मम्मद भाई से मुख़ातिब हुआ : "क्यों, क्यों··· ?"

"बस मैं किसी के सुई लगते नहीं देख सकता···" यह कहकर मम्मद भाई खोली से बाहर चला गया—उसके पीछे-पीछे उसके साथी भी चले गए।

डॉक्टर पिंटो ने मुझे कूनेन का इंजेक्शन लगाया; बड़े सलीक़े से; बस उतना ही दर्द हुआ, जितना कि होता है, वर्ना मलेरिया का यह इंजेक्शन बड़ा तकलीफ़देह होता है। जब डॉक्टर पिंटो फारिग हुआ तो मैंने उससे फ़ीस पूछी।

उसने कहा : "दस रुपए।"

मैंने तकिए के नीचे से बटवा उठाया और दस रुपए का एक नोट निकालकर उसकी तरफ़ बढ़ाया। डॉक्टर पिंटो ने नोट थामा ही था कि मम्मद भाई खोली के अंदर आ गया—उसने ग़ज़ब आलूद निगाहों से मुझे और डॉक्टर पिंटो को देखा और गरजकर कहा : "यह क्या हो रहा है ?"

मैंने कहा : "फ़ीस दे रहा हूँ।"

मम्मद भाई ज़रा घूमकर डॉक्टर पिंटो से मुख़ातिब हुआ : "साले, यह फीस कैसी ले रहा है ?"

डॉक्टर पिंटो बौखला गया : "मैं कब मैं कब ले रहा हूँ ये दे रहे हैं ।"

"साले, हमसे फीस लेते हो वापिस करो यह नोट " मम्मद भाई के लहजे में उसके ख़ंजर-ऐसी तेजी थी ।

डॉक्टर पिंटो ने नोट मुझे वापिस कर दिया और बैग उठाकर मम्मद भाई से माजरत[20] तलब करते हुए खोली से बाहर निकल गया ।

मम्मद भाई ने एक उँगली से अपनी काँटों-ऐसी मूँछो को ताव दिया और मुसकराया . "वमटो भाई, यह भी कोई बात है कि इस इलाके का डॉक्टर तुमसे फीस ले तुम्हारी कसम, मैं अपनी मूँछें मुँडवा देता अगर उस साले ने फीस ली होती यहाँ सब तुम्हारे गुलाम हैं ।"

थोडे-से तवक्कुफ[21] के बाद मैंने उससे पूछा "मम्मद भाई, तुम मुझे कैसे जानते हो ?"

उसकी मूँछे थरथराईं · "मम्मद भाई किसे नही जानता ! हम यहाँ के बादशाह हैं प्यारे, और अपनी रिआया का ख़याल रखते हैं हमारी अपनी सी. आई. डी. है और वह हमे बताती रहती है, कौन आया है, कौन गया है कौन अच्छी हालत मे है, कौन बुरी हालत मे तुम्हारे मुताल्लिक हम सबकुछ जानते हैं ।"

मैंने अज-राहे-तफन्नुन[22] पूछा · "क्या जानते हो ?"

"साला हम क्या नहीं जानता तुम अमृतसर का रहनेवाला है, कश्मीरी है; यहाँ एक फटीचर अख़बार मे काम करता है तुमने बिस्मिल्लाह होटल के दस रुपए देने हैं, इसीलिए तुम उधर से नही गुजरते भिंडी बाजार मे एक पानवाला तुम्हारी जान को रोता है, उससे तुम बीस रुपए दस आने के सिगरेट लेकर फूँक चुके हो ।"

मैं पानी-पानी हो गया ।

उसने अपनी करख़्त[23] मूँछों पर उँगली फेरी और मुसकराकर कहा · "वमटो भाई, तुम कुछ फिक्र न करो तुम्हारे सब कर्जे चुका दिए गए हैं और अब तुम नए सिरे से मामला शुरू कर सकते हो मैंने उन सालो से कह दिया है ख़बरदार, जो वमटो भाई को तंग किया और मम्मद भाई तुमसे कहता है कि इंशाल्लाह कोई तुम्हे तंग नहीं करेगा ।"

मेरी समझ में नही आ रहा था कि उससे क्या कहूँ—मैं बीमार था; कुनेन का टीका मुझे लग चुका था, जिसके बायस मेरे कानों मे शायँ-शायँ हो रही थी; और फिर मैं उसके ख़ुलूस के नीचे बेहद दब चुका था। मैं सिर्फ इतना कह सका · "मम्मद भाई, ख़ुदा तुम्हे जिंदा रखे तुम हरदम ख़ुश रहो ।"

उसने अपनी मूँछों के बाल जरा ऊपर किए और कुछ कहे बगैर चला गया—उसके साथी भी चले गए ।

डॉक्टर पिंटो हर रोज़ सुबहो-शाम आता रहा—मैंने उससे कई मर्तबा फ़ीस का जिक्र किया, मगर उसने हर मर्तबा कानों को हाथ लगाकर कहा . "नही मिस्टर मंटो, मम्मद भाई का मामला है मैं एक डेढ़िया भी नहीं ले सकता ।"

मैं हरदम एक ही बात सोचता रहता कि मम्मद भाई ज़बर्दस्त आदमी है, यानी ख़ौफनाक; जिससे डॉक्टर पिंटो भी, जो बड़ा ख़सीस है, डरता है, इस हद तक कि इंजेक्शनो पर अपनी जेब से खर्च करता है और मुझसे फ़ीस तक नही लेता।

मेरी बीमारी के दौरान में मम्मद भाई भी बिला नाग़ा आता रहा—वह कभी सुबह आता था, कभी शाम को, अपने शागिर्दों-साथियो के साथ।

वह मुझे हर मुम्किन तरीके से ढारस देता . "तुम डॉक्टर पिंटो के इलाज से इंशाल्लाह बहुत जल्द ठीक-ठाक हो जाओगे।"

पंद्रह रोज के अंदर-अंदर मैं ठीक-ठाक हो गया, मलेरिया भी दूर हो गया और कमजोरी भी चली गई—इस दौरान में मम्मद भाई का हर खद्दोखाल मुझ पर अच्छी तरह वाजेह हो चुका था।

जैसा कि मैं इससे पेशतर कह चुका हूँ, वह छरहरे बदन का आदमी था; उम्र यही कोई पच्चीस-तीस के दरमियान होगी; पतली-पतली बाँहे; टाँगें भी पतली-पतली थी, हाथ बला के फर्तीले थे—उन हाथों से वह अपना तेज धार खंजर इस सफाई से अपने दुश्मनो को मारता था कि उनको पता भी नहीं चलता था—यह मुझे अरब गली के लोगो ने बताया था।

उसके मुताल्लिक़ बेशुमार बातें मशहूर थीं—छुरीमार वह अव्वल दर्जे का था, वह बनोट और गतके का माहिर था—सब कहते थे कि वह सैकडो क़त्ल कर चुका है, मगर मैं यह अब भी मानने को तैयार नहीं हूँ—लेकिन आज भी जब मैं उसके मुताल्लिक सोचता हूँ तो मेरे तन-बदन पर झुरझुरी-सी तारी हो जाती है—वह ख़ौफनाक हथिया वह क्यो हर वक्त अपनी शलवार के नेफे मे उड़से रहता था।

मैं जब बिलकुल अच्छा हो गया और चलने-फिरने के काबिल हो गया तो एक दिन अरब गली के एक थर्ड क्लास चीनी रेस्तोराँ मे मेरी उससे मुलाक़ात हो गई—वह उसी खंजर से अपने नाखून काट रहा था।

मैंने कहा · "मम्मद भाई, आजकल बदूक़-पिस्तौल का जमाना है और तुम यह ख़ंजर लिए फिरते हो!"

उसने अपनी करख्त मूँछों पर एक उँगली फेरी और कहा : "बमटो भाई, बदूक़-पिस्तौल में कोई मजा नही; इन्हें कोई बच्चा भी चला सकता है घोडा दबाया और ठाह इसमे कोई मजा नही यह चीज, यह खजर, यह छुरी, यह चाकू, मज़ा आता है खुदा की कसम यह वह है तुम क्या कहा करते हो, हाँ आर्ट इसमें आर्ट है मेरी जान जिसको ख़ंजर या छुरी चलाने का आर्ट न आता हो, वह एक कंडम दादा है पिस्तौल क्या है, बस खिलौना है, जो नुक़सान ज़रूर पहुँचा सकता है, पर उसमें कोई लुत्फ़ नहीं, जरा लुत्फ नहीं तुम यह ख़ंजर देखो, इसकी तेज़ धार देखो " यह कहकर उसने अँगूठे पर लब लगाया और फिर अँगूठा ख़ंजर की धार पर फेरा : "इससे कोई धमाका नही होता इसको बस यूँ पेट के अंदर दाख़िल कर दो, सफ़ाई से कि साले को मालूम तक न हो बदूक-पिस्तौल तो बकवास है "

अब हर रोज किसी न किसी वक्त उससे मुलाकात हो जाती थी, या यूँ समझ लीजिए

कि मैं जूँ-तूँ उससे मिल लेता था—मैं उसका ममनूने-एहसान था।

मैं जब कभी उसके एहसान का जिक्र करता, वह नाराज़ हो जाता और कहता . "मैंने तुम पर कोई एहसान नहीं किया है मैंने बस अपना फर्ज निभाया है।"

जब मैंने कुछ तफतीश की तो मुझे मालूम हुआ कि वह फारस रोड के इलाके का एक किस्म का हाकिम था, ऐसा हाकिम जो हर शख्स की खबरगीरी करता है—कोई बीमार हो, किसी को कोई तकलीफ हो, वह फौरन पहुँच जाता था—यह उसकी सी.आई डी. का काम था कि उसको हर बात से बाखबर रखे।

वह दादा था, एक खतरनाक गुंडा—मेरी समझ मे अब भी नही आता कि वह किस लिहाज से गुंडा था।

खुदा वाहिद-शाहिद है कि मैंने कभी उसमे कोई गुंडापन नहीं देखा; एक सिर्फ उसकी मूँछे थी जो उसकी सूरत को हैबतनाक बनाए रखती थीं। उसको अपनी मूँछों से प्यार था, वह उनकी परवरिश इस तरह करता था, जिस तरह कोई अपने बच्चे की करता है।

उसकी मूँछो का एक-एक बाल खड़ा था—मुझे किसी ने बताया था कि मम्मद भाई हर रोज अपनी मूँछो को बालाई खिलाता है, और जब खाना खाता है तो सालन भरी उँगलियों से अपनी मूँछे जरूर मरोड़ता है कि बुजुर्गों के कहने के मुताबिक यूँ मूँछ के बालो में ताकत आ जाती है—मैं कह चुका हूँ कि उसकी मूँछे बड़ी खौफनाक थीं, दरअसल उन मूँछो का नाम मम्मद भाई था, या उस तेज धार खंजर का नाम मम्मद भाई था जो उसकी तंग घेरे की शलवार के नेफे में हर वक्त मौजूद होता था—मुझे उसकी उन दोनों चीजो से डर लगता था, न मालूम क्यों।

वह यूँ तो उस इलाके का बहुत बड़ा दादा था, लेकिन वह सबका हमदर्द था—मालूम नहीं, उसकी आमदनी के क्या जराए थे, पर वह हर हाजतमंद की बरवक्त मदद करता था।

उस इलाके की तमाम रंडियाँ उसको अपना पीर मानती थी—वह एक माना हुआ गुंडा था, लाजिम था कि उसका ताल्लुक किसी रंडी से होता, मगर मेरी इत्तिला के मुताबिक इस क़िस्म के सिलसिले से उसका कभी दूर का ताल्लुक भी नहीं रहा था।

वह अनपढ़ था—मेरी और उसकी बड़ी दोस्ती हो गई थी, जाने क्यो वह मेरी इतनी इज्ज़त करता था कि अरब गली के बेशतर आदमी मुझसे रश्क खाते थे।

एक दिन सुबह सवेरे दफ्तर जाते वक्त मैंने चीनी रेस्तोराँ में किसी से सुना कि मम्मद भाई गिरफ्तार कर लिया गया है—मुझे बहुत ताज्जुब हुआ, इसलिए कि थानेवाले उसको जानते थे।

मैं सोच मे पड़ गया कि क्या वजह हो सकती है—मैंने उस आदमी से पूछा, जो मम्मद भाई की गिरफ्तारी की बात कह रहा था।

उस आदमी ने मुझसे कहा "इसी अरब गली मे एक औरत रहती है, शीरी बाई उसकी एक जवान लड़की है उस लड़की को कल एक आदमी ने खराब कर दिया, उसकी इस्मतदरी कर दी बस शीरी बाई रोती-रोती मम्मद भाई के पास पहुँची और

कहने लगी : 'तुम यहाँ के दादा हो मेरी बेटी से फ़लाँ आदमी ने बुरा किया है और तुम घर में बैठे हो ''लानत है तुम पर ''' मम्मद भाई ने यह मोटी गाली उस बुढ़िया को दी और उससे पूछा : 'तुम क्या चाहती हो'' ?' बुढ़िया ने कहा : 'मैं चाहती हूँ, तुम उस हरामज़ादे का पेट चाक कर दो ''' मम्मद भाई उस वक्त पाव क़ीमा खा रहा था उसने अपने नेफ़े में से ख़ंजर निकाला, अँगूठा फ़ेरकर धार देखी और बुढ़िया से बोला : 'जा, तेरा काम हो जाएगा'' ' और बुढ़िया का काम हो गया जिस आदमी ने बुढ़िया की लड़की की इस्मतदरी की थी, आधे घंटे के अंदर-अंदर उसका काम तमाम हो गया !''

मम्मद भाई को गिरफ़्तार तो कर लिया गया था, मगर उसने वह काम इतनी होशियारी और चाबुकदस्ती से किया था कि उसके ख़िलाफ कोई शहादत[24] मौजूद नहीं थी; यह अलग बात है कि अगर कोई ऐनी शाहिद मौजूद होता तो वह भी कभी कोई बयान न देता—दो ही दिनों में मम्मद भाई को जमानत पर रिहा कर दिया गया।

वह दो दिन हवालात में रहा था और उसको वहाँ कोई तकलीफ़ न हुई थी—इंस्पेक्टर, सब-इंस्पेक्टर, सिपाही, सब उसको जानते थे—लेकिन जब वह ज़मानत पर रिहा होकर बाहर आया तो वह उखडा हुआ था; उसे अपनी ज़िंदगी का सबसे बड़ा धचका पहुँचा था। मैंने महसूस किया कि उसकी मूँछें, जो खौफ़नाक तौर पर हमेशा ऊपर को उठी होती थी, किसी कदर झुकी हुई हैं—और उसके कपडे, जो हमेशा उजले होते थे, मैले थे।

थाने से बाहर निकलने के बाद हम लोग चीनी रेस्तोराँ में चले गए—मैंने उससे क़त्ल के मुताल्लिक़ कोई बात न की।

उसने ख़ुद कहा ''वमटो साहब, अफसोस इस बात का है कि साला देर से मरा, मुश्किल से मरा खंजर उतारने में मुझसे ग़लती हो गई थी मेरा हाथ ज़रा टेढ़ा पडा था वह भी साला उसका कुसूर था, साला एकदम मुड़ गया था इसी वजह से तो सारा मामला कंडम हो गया था बस साला मर गया, पर बड़ी तकलीफ के साथ इस बात का मुझे बहुत अफ़सोस है।''

आप ख़ुद सोच सकते हैं कि मम्मद भाई की बात सुनकर मेरा रद्दे-अमल क्या हुआ होगा—उसको अफ़सोस था कि वह उस आदमी को बतरीक़े अहसन[25] क़त्ल न कर सका था, और यह कि उस आदमी को मरने में तकलीफ़ हुई थी।

मुकद्दमा तो खैर चलना ही था।

मम्मद भाई मुक़द्दमे के डर से बहुत घबरा रहा था—उसने अपनी ज़िंदगी में अदालत की शक्ल कभी नहीं देखी थी—जहाँ तक मेरी मालूमात का ताल्लुक़ है, वह अदालत, मैजिस्ट्रेट, वकील और गवाह, किसी के मुताल्लिक़ कुछ नहीं जानता था कि उन लोगो से उसका साबिक़ा कभी पड़ा ही नहीं था—तभी तो मैं कहता हूँ कि मालूम नहीं, उसने इससे पहले क़त्ल किए भी थे या नहीं।

वह बहुत फ़िक्रमंद था।

पुलिस ने जब केस पेश किया और तारीख़ मुक़र्रर हो गई तो वह बहुत परेशान हो गया।

अदालत में मैजिस्ट्रेट के सामने कैसे हाज़िर हुआ जाता है, इसके मुताल्लिक़ उसको क़त्अन मालूम नहीं था—बार-बार वह अपनी क़ब्त मूँछों पर उँगली फेरता और मुझसे कहता : "वमटो भाई, मैं मर जाऊँगा, पर कोर्ट में नहीं जाऊँगा   मालो मालूम नहीं, कैसी जगह है ?"

उसके शार्गिदों-साथियों ने उसको ढारस दी कि मामला संगीन नहीं है, कोई शहादत मौजूद नहीं है, बस एक सिर्फ़ उसकी मूँछें हैं, जो मैजिस्ट्रेट के दिल में उसके खिलाफ कोई मुख़ालिफ़ जज़्बा पैदा कर सकती हैं।

जैसा कि मैं इससे पेशतर कह चुका हूँ, उसकी वह मूँछे ही थीं, जो उसको खौफनाक बनाती थीं—अगर उसकी वह मूँछें न होतीं तो वह हरगिज-हरगिज दादा दिखाई न देता।

उसकी जमानत थाने ही में हो गई थी और अब उसे अदालत मे पेश होना था—वह मैजिस्ट्रेट का सामना करने के ख़याल ही से घबरा रहा था।

मैंने महसूस किया कि वह बहुत परेशान है—उसको अपनी मूँछों के मुताल्लिक बडी फिक्र थी, वह सोचने लगा था कि अगर वह उन मूँछों के साथ अदालत में पेश हुआ तो बहुत मुम्किन है, उसको सजा हो जाए।

आप समझते होगे, यह कहानी है, मगर यह वाका है कि मम्मद भाई बहुत परेशान था।

उसके तैमाम शागिर्द-साथी हैरान थे, इसलिए कि वह कभी हैरान व परेशान नही हुआ था—उसके बाज करीबी दोस्तो ने भी उससे कहा था . 'मम्मद भाई, कोर्ट मे जाना है तो इन मूँछो के साथ न जाना   मैजिस्ट्रेट तुमको अंदर कर देगा।'

वह हर वक्त सोचता रहता था कि उसकी मूँछों ने उस आदमी को कत्ल किया है या उसने, लेकिन वह किसी नतीजे पर पहुँच नही पाता था। एक दिन उसने अपना तेज धार खजर, जो मालूम नहीं, पहली मर्तबा खून आश्ना हुआ था या इससे पहले भी हो चुका था, अपने नेफे में से निकाला और रेस्तोराँ के बाहर गली में फेंक दिया।

मैंने हैरत भरे लहजे मे कहा   "मम्मद भाई, यह क्या ?"

"कुछ नहीं वमटो भाई, सब घोटाला हो गया है   कोर्ट में जाना है   सब कहते हैं, मैजिस्ट्रेट मेरी मूँछें देखकर मुझे जरूर सजा देगा   बोलो, मैं क्या करूँ ?"

मैं क्या बोलता—मैंने उसकी मूँछो की तरफ़ देखा, जो वाक़ई बड़ी ख़ौफनाक थीं। मैंने कहा : "मम्मद भाई, बात तो कुछ ठीक लगती है   तुम्हारी मूँछें मैजिस्ट्रेट के फैसले पर असर अंदाज हो सकती हैं   अगर कुछ हुआ तो तुम्हारे खिलाफ नहीं, तुम्हारी मूँछों के खिलाफ़ होगा।"

"तो मुँड़वा दूँ ?" उसने अपनी चहेती मूँछों पर बडे प्यार से उँगली फेरी।

मैंने पूछा : "तुम्हारा अपना क्या ख़याल है ?"

"मेरा खयाल जो कुछ भी है, वह तुम न पूछो   यहाँ सबका ख़याल है कि मैं इन्हें मुँड़वा दूँ कि वह साला मैजिस्ट्रेट मुखालिफ न हो जाए   तो मुँड़वा दूँ वमटो भाई ?"

मैंने कुछ तवक्कुफ़ के बाद कहा : "अगर तुम मुनासिब समझते हो तो मुँडवा दो   यह

सच है कि इन मूँछो के साथ तुम खतरनाक दिखाई देते हो।"

दूसरे दिन मम्मद भाई ने अपनी मूँछे, अपनी जान से अजीज मूँछे मुँडवा डाली।

मिस्टर एफ़ एच टेल की अदालत मे उसका मुकद्दमा पेश हुआ—मूँछों के बगैर मम्मद भाई हाजिर हुआ, मैं भी मौजूद था।

मम्मद भाई के खिलाफ कोई शहादत मौजूद नही थी, लेकिन मैजिस्ट्रेट ने उसकी फाइल देखने के बाद उसको खतरनाक गुडा करार देते हुए तडी पार, यानी सूबाबदर कर दिया—उमको सिर्फ एक दिन दिया गया कि वह अपने मामलात तय करने के बाद बबई छोड दे।

अदालत से बाहर निकलने के बाद उसने मुझसे कोई बात न की—उसकी छोटी-बडी उँगलियाँ बार-बार उसके बालाई[26] होठ की तरफ बढ़ती थी, मगर वहाँ कहाँ कोई बाल था।

अगली शाम जब उसे बबई छोडकर कही और जाना था, मेरी और उसकी आखिरी मुलाकात चीनी रेस्तोराँ मे हुई—उसके शागिर्द-साथी उसके आसपास कुर्सियो पर बैठे चाय पी रहे थे—मूँछो के बगैर वह बहुत शरीफ आदमी दिखाई दे रहा था, लेकिन मैंने महसूस किया कि वह बहुत मगमूम[27] है।

मैंने उसके पास बैठकर कहा "क्या बात है मम्मद भाई ?"

उसने एक बहुत बडी गाली खुदा मालूम जाने किसको दी और कहा "साला अब मम्मद भाई ही नही रहा।"

मैंने कहा "कोई बात नही मम्मद भाई यहाँ नही तो किसी और जगह सही।"

जो जगहें उसकी जबान पर आईं, उसने उनको बेशुमार गालियाँ दी "साला अपन को यह गम नही यहाँ रहूँ या किसी और जगह रहूँ यह साला मूँछे क्यो मुँडवा दी ?" फिर उसने उन लोगों को, जिन्होंने उसको मुँछे मुँडवाने का मशवरा दिया था, एक करोड गालियाँ दी और कहा "साला अगर मुझे तडी पार ही होना था तो मूँछों के साथ क्यो न हुआ।"

मुझे हँसी आ गई।

वह आग-बबूला हो गया "साला तुम कैसा आदमी है बमटो भाई खुदा की कसम, हम सच कहता है, हमे फाँसी लगा देते पर यह बेवकूफी तो हमने खुद की साला आज तक हम किसी से न डरा था साला हम अपनी ही मूँछों से डर गया " यह कहकर उसने दोहत्थड अपने मुँह पर मारा "मम्मद भाई, लानत है तुझ पर साला अपनी ही मूँछों से डर गया अब जा अपनी माँ के "

उसकी आँखों मे आँसू आ गए जो उसके बिना मूँछों के चेहरे पर कुछ अजीब-से दिखाई दे रहे थे।

---

1 अद्वितीग बजाड 2 जिसे मब मुन मकें जार से 3 आमंत्रित 4 लट्टू होना, 5 वह शब्द जिसमें अक्षर करके मंक्षिप्त कर दिए गए हों, 6 आयु, 7 उपलब्ध होना, प्राप्त होना; 8. शामिल, 9. लिबास, 10. कला, आर्ट, 11. व्यस्तता, 12 लालमा, 13 दरिद्र, 14 म्यान, 15 लम्बे-चौड़े विशालकाय, 16 महकारिता, महायता, 17 वेशभूषा के; 18 मशोधन; 19 आदेशात्मक, 20 माफी, 21. अतगत 22 मजाक में; 23. मस्त; 24 गवाही; 25 अच्छे तरीके से, 26 ऊपरी, 27. उदास।

मंज़ूर

जब उसे हस्पताल में दाखिल किया गया तो उसकी हालत बहुत खराब थी।

पहली रात उसे ऑक्सीजन पर रखा गया—जो नर्स ड्यूटी पर थी, उसका खयाल था कि वह नया मरीज सुबह होने से पहले-पहले मर जाएगा।

उसकी नब्ज़ की रफ्तार गैर यकीनन थी; कभी जोर-जोर से फड़फड़ाती और कभी लंबे-लंबे वक्फ़ों के बाद चलती—पसीने में उसका बदन शराबोर था; एक लहजे के लिए भी उसे चैन नहीं मिलता था; कभी वह इस करवट लेटता और कभी उस करवट, जब घबराहट बहुत ज्यादा बढ़ जाती तो उठकर बैठ जाता और लंबे-लंबे साँस लेने लगता—रंग उसका हल्दी की गाँठ की तरह जर्द था, आँखें अंदर धँसी हुई थीं, नाक का बाँसा बर्फ की डली था; और सारे बदन पर रअशा[1] था।

सारी रात उसने बड़े शदीद करब[2] में काटी; ऑक्सीजन बराबर दी जा रही थी; सुबह हुई तो उसे किसी क़दर इफाका[3] हुआ और वह निढाल होकर सो गया।

उसके दो-तीन अजीज आए, कुछ देर उसके पास बैठे और फिर चले गए—डॉक्टर ने उन्हें बताया कि अभी उसके मर्ज की तश्खीस[4] नहीं हुई है।

जब वह उठा तो उसे टीका लगाया गया—उसके दिल में बदस्तूर मीठा-मीठा दर्द हो रहा था; शानों के पट्ठे अकड़े हुए थे, जैसे रात भर उन्हें कोई कूटता रहा हो, ज़िस्म की बोटी-बोटी दुख रही थी—उसको यकीन था कि उसकी मौत दूर नहीं, वह आज नहीं तो कल जरूर मर जाएगा।

उसकी उम्र बत्तीस बरस के क़रीब थी, इन बरसों में उसने कोई राहत नहीं देखी थी, जो उस वक्त उसे याद आती और उसकी सुऊबत[5] में इजाफा करती—उसके माँ-बाप उसके बचपन ही में दागे-मुफारकत[6] दे गए थे; मालूम नहीं, उसकी परवरिश किसी खास शख्स ने की थी, बस वह ऐसे ही इधर-उधर ठोकरें खाता उस उम्र तक पहुँच गया था और एक कारखाने में मुलाज़िम होकर पच्चीस रुपए माहवार पर इंतिहा दर्जे की इफ्लासजदा[7] जिंदगी गुज़ार रहा था।

अगर उसके जिस्म में टीसें न उठतीं तो वह अपनी तंदुरुस्ती और बीमारी में कोई नुमायाँ फ़र्क महसूस न करता, क्योंकि सेहत उसकी कभी भी अच्छी नहीं थी और कोई न कोई आरजा उसे जरूर लाहिक़ रहता था।

वह एक बहुत बड़े वार्ड में था जिसमें उसकी तरह और कई मरीज़ भी लोहे की चारपाइयों पर लेटे हुए थे—उसके दाहिने हाथ नौ-दस बरस का एक लड़का कंबल में लिपटा हुआ उसकी तरफ़ देख रहा था और उसका चेहरा तमतमा रहा था।

"अस्सलामुअलैकुम" लड़के ने बड़े प्यार से कहा।

उसने लडके के प्यार भरे लहजे से मुतास्सिर होकर जवाब दिया : "वालैकुमअस्सलाम"

लडके ने कंबल में करवट बदली : "भाई जान, अब आपकी तबीयत कैसी है ?"

उसने इख्तिसार से कहा . "अल्लाह का शुक्र है।"

लड़के का चेहरा और ज्यादा तमतमा उठा . "आप बहुत जल्दी ठीक हो जाएँगे आपका नाम क्या है ?"

"मेरा नाम ?" उसने मुसकराकर लडके की तरफ़ बिरादराना शफक़त[8] से देखा "मेरा नाम अख्तर है।"

"मेरा नाम मंज़ूर है।" यह कहकर लड़के ने एकदम करवट बदली और उस नर्स को पुकारा, जो उधर से गुज़र रही थी : "आपा आपाजान !"

नर्स रुक गई—मंजूर ने माथे पर हाथ रखकर उसे सलाम किया—नर्स उसके करीब आई और उसे प्यार करके चली गई।

थोड़ी देर के बाद हाऊस सर्जन आया—मजूर ने उसको भी सलाम किया . "डाक्टर जी, अस्सलामुअलैकुम।"

हाऊस सर्जन उसके सलाम का जवाब देकर उसके पास ही बैठ गया और देर तक उसका हाथ अपने हाथ में लेकर बातें करता रहा।

मंज़ूर को अपने वार्ड के हर मरीज से दिलचस्पी थी, उसको मालूम था, किसकी हालत अच्छी है और किसकी हालत ख़राब है, कौन आया है, कौन गया है; सब नर्सें उसकी बहनें थीं और सब डॉक्टर उसके दोस्त, मरीजों में कोई उसका चचा था, कोई मामू और कोई भाई—सब उससे प्यार करते थे।

उसकी शक्ल-सूरत मामूली थी, मगर उसमें एक गैर मामूली कशिश थी, हर वक़्त उसके चेहरे पर तमतमाहट खेलती रहती, जो उसकी मासूमियत पर हाले का काम देती, वह हर वक्त खुश रहता—वह बहुत ज्यादा बातूनी था।

अख्तर के मर्ज़ की तश्खीम नहीं हुई थी और वह बहुत चिर्डचिडा हो गया था; मगर मंजूर की बाते उसे खलती नही थीं।

मंजूर का बिस्तर अख्तर के बिस्तर के पास ही था, इसलिए वह थोड़े-थोडे वक्फों के बाद अख्तर से गुफ्तगू शुरू कर देता, जो छोटे-छोटे जुमलो पर मुश्तमिल[9] होती।

"भाई जान, आपके भाई-बहन हैं ?"

"मैं अपने माँ-बाप का इकलौता लडका हूँ।"

"आपके दिल में अब दर्द तो नही होता ?"

"मुझे मालूम नही, दिल का दर्द कैसा होता है !"

"आप बिलकुल ठीक हो जाएँगे दूध ज्यादा पिया करें !"

"मैं बड़े डॉक्टर जी से कहूँगा कि आपको मक्खन भी दिया जाए।"

बडा डॉक्टर भी मजूर से बहुत प्यार करता था—सुबह जब वह राउड पर आता तो कुर्सी मँगाकर मजूर के पास थोडी देर तक जरूर बैठता और उसके साथ इधर-उधर की बातें करता रहता।

मजूर का बाप दर्जी था—वह दोपहर को पद्रह-बीस मिनट के लिए आता, सख्त अफरा-तफरी के आलम मे, वह मजूर के लिए फल वगैरह लाता और जल्दी-जल्दी उसे खिलाकर, उसके सिर पर मुहब्बत का हाथ फेरकर चला जाता।

शाम को मजूर की माँ आती और बुरका ओढ़े देर तक उसके पास बैठी रहती।

अख्तर ने उसी वक्त मजूर से दिली रिश्ता कायम कर लिया था, जब मजूर ने उसको सलाम किया था और मजूर से बातें करने के बाद यह रिश्ता और भी मजबूत हो गया था।

अख्तर ने एक दिन रात की खामोशी मे सोचा था और महसूस किया था कि उसको जो थोडा-बहुत इफाका हुआ है, मजूर की दुआओ ही का मौजजा[10] है—जब उसे हस्पताल मे दाखिल किया गया था तो उसकी हालत बहुत खराब थी, उसकी नब्ज गैर यकीनी थी और डॉक्टर मायूस थे, वह सिर्फ चद घडियो का मेहमान था—यह उसे बाद मे पता चला कि उसके दाखिल होते ही मजूर ने अपने दिल ही दिल मे कई मर्तबा दुआ माँगी थी कि खुदा उस पर रहम करे—उसने महसूस किया था कि यह मजूर की दुआओ ही का नतीजा है कि वह बच गया है।

अख्तर को यकीन था कि वह ज्यादा दिनो तक जिदा नही रहेगा, इसलिए कि उसका मर्ज मोहलिक[11] भी था और अभी उसकी तश्खीस भी न हो सकी थी—अब उसके दिल मे इतनी ख्वाहिश जरूर पैदा हो गई थी कि वह कुछ दिन और जिदा रहे—वह नही चाहता था कि मजूर से उसका रिश्ता इतनी जल्दी टूट जाए।

कई रोज गुजर गए—मजूर हस्बे-मामूल सारा-सारा दिन चहकता रहता, कभी नर्सों से बाते करता, कभी डॉक्टरो से और कभी जमादारो से—जमादार भी मजूर के दोस्त थे।

अख्तर को तो यूँ महसूस होता था कि वार्ड की बदबूदार फजा का हर जर्रा मजूर का दोस्त है—मजूर जिस शै की तरफ देखता था, वह फौरन उसकी दोस्त बन जाती थी।

अख्तर की हालत जब जरा सँभली थी और जब उसे मालूम हुआ था कि मजूर का निचला धड मफ्लूज[12] है तो उसे सख्त सद्मा पहुँचा था, उसको हैरत भी हुई थी कि इतने बडे नुकसान् के बावुजूद मजूर खुश क्योकर रहता है—बाते मजूर के मुँह से बुलबुलो के मानिंद निकलती थी, उन्हे सुनकर कौन कह सकता था कि मजूर का निचला धड गोश्त-पोस्त का एक बेजान लोथडा है।

अख्तर ने मजूर से उसके फालिज के मुताल्लिक कोई बात न की, इसलिए कि मजूर से ऐसी बात के मुताल्लिक पूछना बहुत बडी हिमाकत होती—मजूर खुद अपने फालिज से कत्अन बेखबर मालूम होता था—अख्तर को किसी और जरिए से इतना जरूर मालूम हो गया कि एक दिन मजूर खेल-कूदकर घर आया था और ठडे पानी से नहाया था और फिर एकदम उसका निचला धड़ मफ्लूज हो गया था।

मंज़ूर अपने मां-बाप का इकलौता लड़का था—उन्हें बहुत दुख हुआ था, शुरू-शुरू में उन्होंने हकीमों से इलाज कराया था, मगर कोई फ़ायदा न हुआ था; फिर उन्होंने टोने-टोटकों का सहारा लिया था ? आख़िर किसी के कहने पर उन्होंने मंज़ूर को हस्पताल में दाख़िल करा दिया था।

डॉक्टर मायूस थे, उन्हें मालूम था कि मंज़ूर के जिस्म का मफ्लूज हिस्सा कभी दुरुस्त न हो सकेगा, मगर फिर भी वह उसके वालदैन का जी रखने के लिए उसका इलाज कर रहे थे; उन्हे हैरत थी कि वह इतने दिन जिंदा कैसे रहा है, इसलिए कि फालिज के शदीद हमले ने उसके बदन के बहुत से नाज़ुक आज़ा तक को न छोडा था, वह उस पर तरस खाते थे और उससे प्यार करते थे—मंज़ूर ने सदा खुश रहने का गुर अपनी शदीद अलालत[13] से सीख लिया था, उसके मासूम दिमाग ने खुश रहने का तरीक़ा ख़ुद ईजाद किया था कि उसका दुख दब जाए।

चंद दिनों के बाद अख़्तर को फिर एक दौरा पडा—यह दौरा पहले दौरे से ज्यादा तकलीफ़देह और खतरनाक था, मगर उसने सब्र और तहम्मुल[14] से काम लिया और मंज़ूर की मिसाल सामने रखकर अपने दुख-दर्द से गाफिल रहने की कोशिश की और कामयाब हुआ।

डॉक्टरों को सौ फीसदी यकीन था कि दुनिया की कोई ताक़त अख़्तर को नहीं बचा सकती, मगर मौजज़ा रूनुमा हुआ और जब रात की ड्यूटी पर मुताऐयिन नर्स ने सुबह सवेरे उसे दूसरी नर्स के सुपुर्द किया तो उसकी गिरती हुई नब्ज सँभल चुकी थी और वह जिंदा था।

रात भर अख़्तर मौत से कुश्ती लड़ता रहा था, सुबह निढाल होकर जब वह सोने लगा तो उसने नीम मुंदी हुई आँखों से मंज़ूर की तरफ देखा—मंज़ूर महवे-ख्वाब था और उसका चेहरा दमक रहा था।

अख़्तर ने अपने कमजोर और नहीफ़ दिल में मंज़ूर की पेशानी को चूमा और सो गया।

जब उसकी आँख खुली तो मंज़ूर चहक रहा था और उसी के मुताल्लिक एक नर्स से कह रहा था . "आपा, अख़्तर भाई जान को जगाइए उनकी दवा का वक्त हो गया है।"

"सोने दो अख़्तर को आराम की जरूरत है।"

"नहीं, वह बिलकुल ठीक हैं आप उन्हें दवा दीजिए"

"अच्छा बाबा, देती हूँ।"

मंज़ूर ने जब अख़्तर की तरफ देखा तो अख़्तर की आँखें खुली हुई थीं। बहुत खुश होकर मंज़ूर ने बआवाज़े बुलंद कहा . "अस्सलामुअलैकुम।"

अख़्तर ने तक़ाहत भरे लहज़े में जवाब दिया · "वालैकुमअस्सलाम।"

"भाई जान, आप बहुत सोए ?"

"हाँ · शायद !"

"आपा आपके लिए दवा ला रही हैं।"

अख़्तर ने महसूस किया कि मंज़ूर की बातें उसके नहीफ़ दिल को तक़वियत[15] पहुँचा रही हैं।

थोडी देर के बाद अख़्तर भी मंजूर की तरह चहकने-चहकारने लगा—उसने मंज़ूर से पूछा : "इस मर्तबा भी तुमने मेरे लिए दुआ माँगी थी ?"

मज़ूर ने जवाब दिया : "नही।"

"क्यों ?"

"मैं रोज-रोज़ दुआएँ नही माँगा करता बस एक दफा माँग ली, काफ़ी है मुझे मालूम है, आप ठीक हो जाएँगे" मज़ूर के लहज़े में तयक्कुन[16] था।

अख़्तर ने जरा छेडने के लिए कहा : "तुम दूसरों से कहते रहते हो कि ठीक हो जाओगे, ख़ुद क्यों नहीं ठीक हो-हुआकर घर चले जाते।"

मज़ूर ने थोड़ी देर सोचा और फिर कहा• "मैं भी ठीक हो जाऊँगा बडे डॉक्टर जी कहते थे कि मैं एक महीने तक चलने-फिरने लगूँगा देखिए ना, अब मैं नीचे और ऊपर खिसक सकता हूँ।"

मंज़ूर ने कंबल के नीचे ऊपर-नीचे खिसकने की नाकाम कोशिश की।

अख़्तर ने फौरन कहा . "वाह मंज़ूर मियाँ, वाह एक महीना क्या है, बस यूँ गुजर जाएगा "

मज़ूर ने चुटकी बजाई और ख़ुश होकर हँसने लगा।

एक महीने से ज्यादा अर्सा गुजर गया—इस दौरान में अख़्तर ने दर्द व करब के दो-तीन दौरे सहे, जो ज्यादा शदीद नहीं थे, अब उसकी हालत बेहतर थी, नक़ाहत दूर हो रही थी, आसाब मे पहला-सा तनाव भी नही था; दिल की रफ्तार ठीक थी।

डॉक्टरों का ख़्याल था कि अब अख़्तर ख़तरे से बाहर है, लेकिन उनका ताज्जुब बदस्तूर कायम था कि वह बच कैसे गया।

अख़्तर डॉक्टरों के ताज्जुब पर दिल ही दिल में हँसता था, उसके ख़याल मे उसे मालूम था कि उसे बचानेवाला कौन है, और वह कोई इजेक्शन नही था, कोई दवा नही थी; उसको बचानेवाला मज़ूर था, मफ्लूज मजूर जिसका निचला धड बिलकुल नाकारा हो चुका था और जिसे यह ख़ुशफहमी थी कि उसके गोश्त-पोस्त के बेजान लोथडे मे ज़िंदगी के आसार पैदा हो रहे हैं।

अख़्तर और मज़ूर की दोस्ती बहुत बढ़ गई थी—मज़ूर की जात अख़्तर की नजरों मे मसीहा का रुतबा रखती थी कि उसी ने उसको दुबारा ज़िंदगी अता की थी और उसके दिलो-दिमाग़ से वह तमाम काले बादल हटा दिए थे, जिनके साए मे वह इतनी देर तक घुटी-घुटी ज़िंदगी बसर करता रहा था; उसकी क़नूतियत[17] रजाइयत[18] मे तब्दील हो गई थी, उसे ज़िंदा रहने से दिलचस्पी हो गई थी; वह चाहता था कि बिलकुल ठीक होकर हस्पताल से निकले और एक नई सेहतमंद ज़िंदगी बसर करनी शुरू कर दे।

उसे बड़ी उलझन होती थी जब वह देखता था कि मज़ूर वैसे का वैसा है—मंज़ूर के जिस्म के मफ़्लूज हिस्से पर हर रोज़ मालिश होती थी, बिजली लगाई जाती थी, टीके दिए

जाते थे, दवाइयाँ पिलाई जाती थी, मगर कोई तब्दीली रूनुमा नहीं होती थी; जूँ-जूँ वक़्त गुज़रता जाता था, उसकी ख़ुश रहनेवाली तबीयत शिगुफ़्ता से शिगुफ़्तातर होती जा रही थी—और यह बात अख़्तर के लिए हैरत और उलझन का बायस थी।

एक दिन बड़े डॉक्टर ने मंज़ूर के बाप से कहा कि अब वह मंज़ूर को घर ले जाए, क्योंकि अब उसका इलाज नहीं हो सकता—मंज़ूर को सिर्फ़ इतना बताया गया कि अब उसका इलाज हस्पताल के बजाय घर पर होगा और वह बहुत जल्द तंदुरुस्त हो जाएगा, मगर उसे सख़्त सदमा पहुँचा—वह घर जाना नहीं चाहता था।

अख़्तर ने जब उससे पूछा कि वह हस्पताल में क्यों रहना चाहता है तो उसकी आँखों में आँसू आ गए : "वहाँ मैं अकेला रहूँगा अब्बा दूकान पर चले जाते हैं और माँ हमसाई के यहाँ जाकर कपड़े सीती है मैं घर में किससे खेला करूँगा, किससे बातें किया करूँगा ?"

अख़्तर ने बड़े प्यार से कहा : "तुम अच्छे जो हो जाओगे मंज़ूर मियाँ चंद दिनों ही की तो बात है, फिर तुम बाहर अपने दोस्तों के साथ खेला करना।"

"नहीं-नहीं।" मंज़ूर ने कंबल से अपना सदा तमतमानेवाला चेहरा ढाँप लिया और रोना शुरू कर दिया।

अख़्तर को बहुत दुख हुआ—वह देर तक मंज़ूर को चुमकारता-पुचकारता रहा।

आख़िर मंज़ूर की आवाज़ गले में रुँध गई और उसने करवट बदल ली।

शाम को हाउस सर्जन ने अख़्तर को बताया कि बड़े डॉक्टर साहब ने उसको डिस्चार्ज कर देने का आर्डर दिया है और वह सुबह जा सकता है।

मंज़ूर ने अख़्तर के डिस्चार्ज होने के बारे में सुना तो बहुत ख़ुश हुआ—उसने इतनी बातें कीं, इतनी बातें कीं कि थक गया, उसने हर नर्स को, हर जमादार को बताया कि भाई जान अख़्तर ठीक होकर जा रहे हैं।

रात को भी वह अख़्तर से देर तक ख़ुशी से भरपूर नन्ही-नन्ही मासूम बातें करता रहा और आख़िर थक-हारकर सो गया।

अख़्तर जागता रहा और सोचता रहा कि मंज़ूर कब ठीक होगा, क्या दुनिया में कोई ऐसी दवा मौजूद नहीं है जो ऐसे प्यारे बच्चे को तंदुरुस्त कर दे।

उसने मंज़ूर की सेहत के लिए सदक़ दिल से दुआ माँगी, मगर उसे यक़ीन था कि उसकी दुआ क़ुबूल नहीं होगी कि उसका दिल मंज़ूर का-सा पाक दिल नहीं था।

मंज़ूर और उसकी जुदाई के बारे में सोचते हुए अख़्तर को बहुत दुख हो रहा था; उसे यक़ीन नहीं आ रहा था कि वह सुबह मंज़ूर को छोड़कर चला जाएगा और अपनी नई ज़िंदगी तामीर करने में मसरूफ़ होकर उसे अपने दिलो-दिमाग से महव[19] कर देगा—क्या ही अच्छा होता कि वह मंज़ूर की 'अस्सलामुअलैकुम' सुनने से पहले ही मर जाता, उसकी नई ज़िंदगी जो मंज़ूर की अता करदा[20] थी, वह किस मुँह से उठाकर हस्पताल से बाहर ले जाएगा।

सोचते-सोचते अख़्तर सो गया।

सुबह वह देर से उठा।

नर्सें वार्ड मे इधर-उधर तेजी से चल-फिर रही थी।

करवट बदलकर उसने मजूर के बिस्तर की तरफ देखा।

मजूर के बजाय एक बूढ़ा हड्डियों का ढाँचा लेटा हुआ था।

एक लहजे के लिए उस पर सन्नाटा-सा तारी हो गया—फिर पास से गुजरती हुई नर्स से उसने करीब-करीब चिल्लाकर पूछा "मजूर कहाँ है?"

नर्स एकदम रुक गई, थोडी देर खामोश रहने के बाद उसने बडे अफसोसनाक लहजे में जवाब दिया "बेचारा सुबह साढ़े पाँच बजे मर गया।"

अख्तर को इस कदर सद्मा पहुँचा कि उसका दिल बैठने लगा, उसके बदन से सारी ताकत जाती रही; उसने समझा कि यह आखिरी दौरा है—मगर उसका ख्याल गलत साबित हुआ।

वह ठीक ठाक था।

थोडी ही देर के बाद उसे हस्पताल से रुख्सत होना पडा कि उसकी जगह लेनेवाला मरीज दाखिल कर लिया गया था।

---

1 कँपकँपाहट 2 बेचैनी, 3 राहत, रोग में लाभ 4 जाँच, खोज, 5 व्यथा, पीडा, 6 जुदाई, 7 फालिज गिरी पीड़ा भरी, 8 सहानुभूति, हमदर्दी 9 आधारित, 10 चमत्कार, 10 खतरनाक, घातक 12 फालिज गिरने के कारण निर्जीव, 13 बीमारी 14 सब्र के साथ, 15 ताकत, शक्ति, 16 विश्वास, भरोसा, 17 निराशावादी, 18 आशावादी, 19 दूर करना, निकाल फेंकना 20 दी हुई देन।

फ़रिश्ता

सुर्ख़ खुरदुरे कंबल में उसने बड़ी मुश्किल से करवट बदली और अपनी मुँदी हुई आँखें आहिस्ता-आहिस्ता खोलीं।

कमरे की दबीज़[1] चादर में कई चीजे लिपटी हुई थी, जिनके सही ख़द्दोखाल[2] नजर नही आ रहे थे; एक लबा, बहुत ही लंबा, न ख़त्म होनेवाला दालान था या शायद कमरा, जिसमे धुँधली-धुँधली रोशनी फैली हुई थी, ऐसी रोशनी जो जगह-जगह मैली हो रही थी—दूर, बहुत दूर जहाँ शायद यह कमरा या दालान खत्म हो रहा था, एक बहुत बडा बुत था जिसका दराज़ क़द छत को फाडता हुआ बाहर निकल गया था—उसको बुत का सिर्फ़ निचला हिस्सा नज़र आ रहा था जो बहुत पुरहैबत[3] था, उसने सोचा कि शायद मौत का देवता है जो अपनी हौलनाक शक्ल दिखाने से कमदन गुरेज कर रहा है।

उसने होंठ गोल करके और जबान पीछे खींचकर उस पुरहैबत बुत की तरफ़ देखा और सीटी बजाई, बिलक़ुल उसी तरह जिस तरह कुत्ते को बुलाने के लिए बजाई जाती है। सीटी का बजना था कि उस कमरे या दालान की धुँधली फजा मे अनगिनत दुमें लहराने लगीं; लहराते-लहराते वह सब एक बहुत बडे शीशे के मर्तबान में जमा हो गईं जो गालिबन स्प्रिट से भरा हुआ था; आहिस्ता-आहिस्ता वह मर्तबान धुँधली फज़ा में बगैर किसी सहारे के तैरता, डोलता उसकी आँखों के पास पहुँच गया; अब वह एक छोटा-सा मर्तबान था जिसमें स्प्रिट के अदर उसका दिल डुबकियाँ लगा रहा था और धडकने की नाकाम कोशिश कर रहा था।

उसके हलक़ से दबी-दबी चीख़ निकली—उस मकाम पर, जहाँ उसका दिल हुआ करता था, उसने अपना लरजता हुआ हाथ रखा और बेहोश हो गया।

मालूम नहीं, कितनी देर के बाद उसे होश आया, मगर जब उसने आँखें खोलीं तो कोहरा ग़ायब था और वह देव हेकल बुत भी—उसका सारा जिस्म पसीने में शराबोर था और बर्फ़ की तरह ठंडा, मगर उस मकाम पर जहाँ उसका दिल था, एक आग-सी लगी हुई थी—उस आग में कई चीज़ें जल रही थीं, बेशुमार चीज़ें, अनगिनत जानी-पहचानी और अजनबी-अनजानी चीज़ें तो चटख़ रही थीं, मगर उसके अपने गोश्त-पोस्त और उसकी

अपनी हड्डियों पर कोई असर नहीं हो रहा था, उस झुलसा देनेवाली तपिश में भी वह यख़बस्ता[4] था।

उसने एकदम अपने बर्फ़ीले हाथों से अपनी ज़र्द रू बीवी और सूखे के मारे हुए बच्चो को उठाया और आग मे फेंक दिया। अब आग के उस अलाव में अर्ज़ियों के पुलंदे के पुलदे जल रहे थे, हर जबान मे लिखी हुई अर्जियाँ; उन पर उसके अपने हाथ के लिखे हुए दस्तखत वगैरह सब जल रहे थे, आवाज पैदा किए बग़ैर।

आग के शोलों के पीछे उसे अपना चेहरा नजर आया, पसीने से, सर्द पसीने से तर ब तर; उसने आग का एक शोला पकडा और उससे अपने माथे का पसीना पोंछकर एक तरफ फेंक दिया; अलाव मे गिरते ही वह शोला भीगे हुए स्पज की तरह रोने लगा—उसको शोले की यह हालत देखकर बहुत तरस आया।

अर्जियाँ जलती रही और वह देखता रहा।

थोडी देर के बाद उसकी ज़र्दरू बीवी आग में से नमूदार हुई; उसके हाथों में गुँधे हुए आटे का थाल था; जल्दी-जल्दी उसने पेडे बनाए और आग में डालना शुरू कर दिए, जो आँख झपकने की देर मे कोयले बनकर सुलगने लगे—उन्हें देखकर उसके पेट में ज़ोर का दर्द उठा; झपट्टा मारकर उसने थाल मे से आखिरी पेड़ा उठाया और अपने मुँह में डाल लिया; आटा ख़ुश्क था, रेत की तरह; उसका साँस रुकने लगा और वह फिर बेहोश हो गया।

उसकी बद सोई हुई आँखों के बेदार पर्दे पर तसवीरो का एक सिलसिला शुरू हो गया।

एक बहुत बड़ी मेहराब[5] थी जिस पर जली हुरूफ में यह शेर लिखा था :

रोजे-महशर के जाँ गुदाज बूद
अव्वलीं पुरसिश नमाज़ बूद[6]

वह फ़ौरन पथरीले फर्श पर सजदे[7] मे गिर पड़ा, नमाज बख़्शवाने के लिए उसने दुआ माँगना चाही, मगर भूख उसके मेदे को इस बुरी तरह डसने लगी कि वह बिलबिला उठा।

इतने मे किसी ने बडी बारीक आवाज मे उसे पुकारा : 'अताऊल्लाह !'

वह खडा हो गया।

मेहराबो के पीछे, बहुत पीछे ऊँचे मिंबर[8] पर एक शख़्स खड़ा था, मादरज़ाद बरहना, उसके होंठ साकित थे, मगर आवाज आ रही थी : 'अताऊल्लाह, तुम क्यों ज़िंदा हो? आदमी सिर्फ़ उस वक्त तक ज़िंदा रहता है, जब तक उसे कोई सहारा हो हमे बताओ, कोई ऐसा सहारा है जिसका तुम्हें सहारा हो ? तुम बीमार हो; तुम्हारी बीवी आज नहीं तो कल बीमार हो जाएगी वह जिनका कोई सहारा नही होता, बीमार होते हैं, ज़िंदा दरगोर[9] होते हैं तुम्हारी बीवी ख़त्म हो रही है, तुम्हारे बच्चे भी ख़त्म हो रहे हैं कितने अफसोस की बात है कि तुमने अब तक ख़ुद अपने आपको ख़त्म नहीं किया है, अपने बच्चों और अपनी बीवी को ख़त्म नहीं किया है···क्या इस ख़ात्मे के लिए भी तुम्हें किसी की ज़रूरत है तुम रहमो-करम के तालिब हो ·बेवकूफ़, कौन तुम पर रहम करेगा···मौत को क्या

पड़ी है कि वह तुम्हें मुसीबतों से निजात दिलाए; उसके लिए यह मुसीबत ही क्या कम है कि वह मौत है···वह किस-किसको आए; एक सिर्फ़ तुम ही अताऊल्लाह नहीं हो; तुम-ऐसे लाखों अताऊल्लाह इस भरी दुनिया में मौजूद हैं· जाओ, अपनी मुसीबतों का इलाज ख़ुद करो दो मरियल बच्चों और एक फ़ाक़ाज़दा बीवी को हलाक करना कोई मुश्किल काम नहीं· ·इस बोझ से हल्के हो जाओ तो मौत शर्मसार होकर ख़ुद ब ख़ुद तुम्हारे पास चली आएगी '

वह ग़ुस्से से थर-थर काँपने लगा· 'तुम तुम सबसे बडे जालिम हो बताओ, तुम• कौन हो इससे पेशतर कि मैं अपनी बीवी और बच्चों को हलाक करूँ, मैं तुम्हारा खात्मा कर देना चाहता हूँ।'

मादरजाद बरहना शख़्स ने क़हकहा लगाया और कहा 'मैं अताऊल्लाह हूँ गौर से देखो क्या तुम अपने आपको भी नहीं पहचानते ?'

उसने उस नंग-धड़ंग आदमी की तरफ देखा और उसकी गर्दन झुक गई—वह , वह खुद ही था, बगैर लिबास के !

उसका ख़ून खौलने लगा—फर्श में से उसने अपने बढ़े हुए नाख़ूनो से खुरच-खुरचकर एक पत्थर निकाला और तानकर मिंबर की तरफ फेंका।

उसका सिर चकरा गया—माथे पर हाथ रखा तो उसमें से लहू निकल रहा था।

वह भागा, पथरीले सहन को उबूर[10] करके जब बाहर निकला तो हुजूम ने उसे घेर लिया—हुजूम में हर कोई अताऊल्लाह था और हर एक का माथा लहूलुहान था।

बडी मुश्किलों से हुजूम को चीरकर वह बाहर निकला और एक तग व तार सडक पर देर तक चलता रहा।

सडक के दोनों किनारों पर हशीशा और थोहर के पौदे उगे हुए थे और उनमे कही-कही दूसरी ज़हरीली बूटियाँ भी थीं।

उसने जेब से बोतल निकालकर थोहर का अर्क जमा किया, फिर जहरीली बूटियो के पत्ते तोड़कर बोतल में डाले और बोतल हिलाता-हिलाता उस मोड पर पहुँच गया, जहाँ से कुछ फासले पर उसका मकान था, शिक़स्ता ईंटों का ढेर।

टाट का बोसीदा[11] परदा हटाकर वह अदर दाखिल हुआ।

सामने ताक में रखी मिट्टी के तेल की कुप्पी से काफी रोशनी निकल रही थी—उस मटियाली रोशनी में उसने देखा कि झिलंगी पलँगडी पर उसके दोनों मरियल बच्चे मरे पडे हैं।

उसको बहुत नाउम्मीदी हुई—बोतल जेब में रखकर जब वह पलँगडी के पास गया तो उसने देखा कि वह फटी-पुरानी गुदडी जो उसके बच्चों पर पडी हुई है, आहिस्ता-आहिस्ता हिल रही है।

वह बहुत खुश हुआ—वह ज़िंदा थे—बोतल जेब मे निकालकर वह फर्श पर बैठ गया।

दोनों लड़के थे; एक चार बरस का; दूसरा पाँच का; दोनों भूखे थे; दोनों हड्डियों का ढाँचा थे।

गुदड़ी एक तरफ़ हटाकर जब उसने उनको गौर से देखा तो उसे ताज्जुब हुआ कि इतने सूखे बच्चे इतनी सूखी हड्डियों पर इतनी देर से कैसे ज़िंदा हैं।

उसने थोहर के अर्क की बोतल एक तरफ़ रख दी और उँगलियों से एक बच्चे की गर्दन टटोलते-टटोलते उसे एक ख़फ़ीफ़-सा झटका दिया—हल्की-सी तड़ाख़ हुई और उस बच्चे की गर्दन एक तरफ लुढ़क गई।

वह बहुत खुश हुआ कि इतनी जल्दी और इतनी आसानी से काम तमाम हो गया—इसी ख़ुशी में उसने अपनी बीवी को पुकारा : 'जैनाँ, जैनाँ, इधर आओ, देखो मैंने कितनी सफाई से रहीम को मार डाला है कोई तकलीफ नहीं हुई उसको।'

उसने इधर-उधर देखा।

जैनब कहाँ है ? मालूम नहीं, कहाँ चली गई है ? शायद बच्चों के लिए किसी से खाना माँगने गई है या हस्पताल में उसकी खैरियत दरयाफ़्त करने ?

वह हँसा, मगर हँसी फौरन दब गई, जब दूसरे बच्चे ने करवट बदली और अपने भाई को पुकारना शुरू किया 'रहीम रहीम '

भाई न बोला तो उसने अपने बाप की तरफ देखा—हड्डियो की छोटी-छोटी सियाह पियालियो मे उसकी आँखे चमकी 'अब्बा, तुम आ गए।'

उसने हौले-से कहा. 'हाँ करीम, मैं आ गया।'

करीम ने अपने उस्तुख्वानी[12] हाथ से रहीम को झँझोडा 'उठो रहीम, अब्बा आ गए हस्पताल मे।'

उसने करीम के मुँह पर हाथ रख दिया : 'खामोश रहो वह सो गया है।

करीम ने उसका हाथ हटाया : 'कैसे सो गया है हम दोनों ने अभी तक कुछ खाया ही नही।'

'तुम जाग रहे थे ?'

'हाँ अब्बा !'

'तुम भी सो जाओगे।'

'कैसे ?'

'मैं सुलाता हूँ तुम्हे।' उसने अपनी सख़्त उँगलियाँ करीम की गर्दन पर रखी और उसको मरोड़ा, मगर तड़ाख़ की आवाज पैदा न हुई।

'यह आप क्या कर रहे हैं ?' करीम की आवाज मे उसे दर्द दिखाई दिया।

वह हैरतजदा था कि उसका दूसरा लडका इतना सख़्तजान क्यो है : 'क्या तुम सोना नही चाहते ?'

करीम ने अपनी गर्दन सहलाते हुए जवाब दिया : 'सोना चाहता हूँ कुछ खाने को दो, सो जाऊँगा।'

उसने अर्क की बोतल उठाई 'पहले यह दवा पी लो।'

'अच्छा।' करीम ने अपना मुँह खोल दिया।

उसने सारी बोतल करीम के हलक मे उँडेल दी और इत्मीनान का साँस लिया : 'अब

तुम गहरी नींद सो जाओगे।'

करीम ने उसका हाथ पकडा और कहा . 'अब कुछ खाने को दो।'

उसको बहुत कोफ़्त हुई : 'तुम मरते क्यों नही ?'

करीम यह सुनकर सिटपिटा-सा गया : 'क्या अब्बा ?'

'तुम मरते क्यों नही मेरा मतलब है, अगर तुम मर जाओगे तो नीद भी आ जाएगी तुम्हें।'

करीम की समझ में कुछ न आया कि उसका बाप क्या कह रहा है 'मारता तो अल्लाह मियाँ है अब्बा !'

'मारा करता था कभी अब उसने यह काम छोड़ दिया है चलो उठो।'

पलँगडी पर से करीम थोडा-सा उठा तो उसने करीम को अपनी गोद मे ले लिया और सोचने लगा कि वह अल्लाह मियाँ कैसे बने।

टाट का परदा हटाकर जब वह बाहर गली में निकला तो उसे यूँ महसूस हुआ, जैसे-आसमान उस पर झुका हुआ है और उसमें जा-बजा मिट्टी के तेल की कुप्पियाँ जल रही हैं।

अल्लाह-मियाँ जाने कहाँ है, और ज़ैनब भी मालूम नही, कहाँ चली गई है कही से कुछ माँगने गई होगी वह हँसने लगा—फौरन ही उसे ख़याल आया कि उसे अल्लाह मियाँ बनना है।

सामने मोरी के पास बहुत-से पत्थर पड़े थे—करीम को अगर इन पर दे मारूँ तो

उसने महसूस किया, उसमें इतनी ताक़त नहीं है—करीम उसकी गोद मे था; उसने कोशिश की कि करीम को अपने बाजुओ में उठाए और अपने सिर से ऊपर ले जाकर फिर पत्थरों पर पटक दे, मगर उसकी रही-सही ताक़त भी जवाब दे गई।

उसने कुछ सोचा और अपनी बीवी को आवाज दी . "जैनाँ जैनाँ "

कहाँ है वह ? कहीं वह उस डॉक्टर के साथ तो नही चली गई, जो हर वक्त उससे हमदर्दी का इजहार करता रहता है वह जरूर उसके फ़रेब में आ गई होगी मेरे लिए उसने कही खुद को बेच तो नही दिया ?

उसका खून खौल उठा—करीम को पास बहती हुई बद रो[13] मे फेककर वह हस्पताल की तरफ भागा, और इतना तेज दौड़ा कि चंद मिनट मे हस्पताल पहुँच गया।

रात निस्फ से ज़्यादा गुज़र चुकी थी और चारों तरफ सन्नाटा था। जब वह अपने वार्ड के बरामदे मे पहुँचा तो उसे दो आवाज़ें सुनाई दीं।

एक आवाज उसकी बीवी की थी; वह किसी से कह रही थी 'तुम दगाबाज हो, तुमने मुझे धोखा दिया है उससे जो कुछ तुम्हें मिला है, तुमने अपनी जेब मे डाल लिया है।'

दूसरी आवाज़ किसी मर्द की थी 'तुम गलत कहती हो तुम उसको पसद नही आईं, इसलिए वह चला गया।'

उसने महसूस किया, उसकी बीवी दीवानावार चिल्ला रही है : 'तुम बकवास करते

हो ठीक है कि मैं दो बच्चों की माँ हूँ और मेरा वह पहला-सा रंग-रूप भी नहीं रहा, लेकिन लेकिन वह मुझे कुबूल कर लेता, अगर तुम भांजी न मारते तो तुम बहुत ज़ालिम हो बड़े कठोर हो '

वह साफ़ देख रहा था कि उसकी बीवी की आवाज़ रुँधने लगी है : 'मैं कभी तुम्हारे साथ न चलती मैं कभी इस ज़िल्लत मे न गिरती, अगर मेरा ख़ाविंद बीमार और मेरे बच्चे कई दिनों के भूखे न होते तुमने क्यो मुझ पर यह जुल्म किया ?'

उसने मर्द की आवाज सुनी 'वह वह कोई ओर नही था, मैं ख़ुद था जब तुम मेरे साथ चल पड़ीं तो मैंने ख़ुद को पहचाना फिर मैंने तुमसे कहा, वह चला गया है, वह जिसके लिए मैं तुम्हे लाया था मुझे मालूम है कि तुम्हारा ख़ाविंद मर जाएगा तुम्हारे बच्चे मर जाएँगे और तुम भी मर जाओगी; लेकिन '

'लेकिन क्या ?' उसे महसूस हुआ, उसकी बीवी की आवाज तीखी है ।

'मैं मरते दम तक जिंदा रहूँगा अगर मैं तुम्हें कहीं ले जाता तो मैं ज़िल्लत की जिंदगी मे फँस जाता, जो मौत से कहीं ज्यादा खौफनाक होती चलो आओ, अताउल्लाह को देखें ।'

'अताउल्लाह यहाँ खडा है ।' उसने भिंची हुई आवाज में कहा ।

दो साए उसकी तरफ पलटे ।

उससे कुछ फासले पर वही डॉक्टर खडा था, जो उसकी बीवी से हमदर्दी का इज़हार किया करता था ।

डॉक्टर के मुँह से सिर्फ इस कदर निकल सका 'तुम !'

'हाँ मैं मैं तुम्हारी सब बातें सुन चुका हूँ ' फिर उसने अपनी बीवी की तरफ देखा 'जैनाँ, मैंने रहीम और करीम दोनों को मार डाला है अब मैं और तुम बाक़ी रह गए हैं ।'

ज़ैनब चीखी 'मार डाला तुमने दोनो बच्चो को ?'

उसने बडे पुर सुकून लहजे मे कहा "हाँ उन्हें कोई तकलीफ नही हुई मेरा खयाल है, तुम्हे भी कोई तकलीफ नही होगी डॉक्टर साहब जो मौजूद हैं ।"

डॉक्टर काँपने लगा ।

वह आगे बढा और डॉक्टर से मुखातिब हुआ 'ऐसा इंजेक्शन दो कि फ़ौरन मर जाए ।'

डॉक्टर ने काँपती हुई आवाज में करीब से गुजरती हुई नर्स को एक खास इंजेक्शन लाने के लिए कहा और घबराहट मे टहलने लगा ।

नर्स के लौटते ही डॉक्टर ने जैनब को इंजेक्शन दिया ।

डॉक्टर ने ज़ैनब के बाज़ू से सुई निकाली ही थी कि वह फ़र्श पर गिर पड़ी और मर गई—ज़ैनब की ज़बान पर आखिरी अल्फाज 'मेरे बच्चे मेरे ' थे, जिन्हें वह अच्छी तरह अदा न कर सकी ।

उसने इत्मीनान का साँस लिया 'चलो यह भी हो गया अब सिर्फ मैं बाकी रह गया

हूँ

'लेकिन अब हमारे पास ऐसा और कोई इंजेक्शन बाकी नहीं बचा है ' डॉक्टर क लहजे में बड़ी तेज़ी थी।

वह परेशान हो गया, फिर,सँभलकर,उसने डॉक्टर से कहा 'कोई बात नहीं मैं अंदर अपने बिस्तर पर लेटता हूँ ··· तुम इत्मानान से इंतिज़ाम करो '

बिस्तर पर सुर्ख खुरदुरे कंबल में लिपटे-लिपटे उसने बडी मुश्किल से करवट बदली और आहिस्ता-आहिस्ता अपनी मुँदी हुई आँखें खोलीं।

कोहरे की चादर में कई चीजें लिपटी हुई थीं और उनके सही खद्दोखाल नजर नही आ रहे थे। एक लंबा, बहुत लबा, न खत्म होनेवाला दालान था या शायद कमरा, जिसमे धुँधली-धुँधली रोशनी फैली हुई थी, ऐसी रोशनी, जो जगह-जगह मैली हो रही थी—दूर, बहुत दूर एक नन्हा फ़रिश्ता खड़ा था। जब वह उसकी तरफ़ बढ़ने लगा तो वह बडा होता गया और उसकी चारपाई के पास पहुँचकर डॉक्टर बन गया, वही डॉक्टर जो उसकी बीवी से हर वक़्त हमदर्दी का इजहार किया करता था और बडे प्यार मे दिलासा भी दिया करता था।

उसने उठने की कोशिश की 'आइए डॉक्टर साहब!'

मगर डॉक्टर एकदम ग़ायब हो गया।

वह लेट गया।

उसकी आँखें खुली हुई थीं—कोहरा दूर हो चुका था—मालूम नही, कहाँ गायब हो गया था।

उसके दिमाग़ में कुछ भी न था, या शायद बहुतकुछ था।

एकदम वार्ड में शोर बुलंद हुआ।

सबसे ऊँची आवाज़, जो चीख़ से मुशाब्ह[14] थी, ज़ैनब की थी, उसकी बीवी की—वह कुछ कह रही थी, मालूम नहीं क्या कह रही थी।

उसने उठने की कोशिश की, ज़ैनब को आवाज देने की कोशिश की, मगर नाकाम रहा—धुंध फिर छाने लगी—दालान या कमरा लंबा, बहुत लंबा होता चला गया।

फिर ज़ैनब आई; उसकी हालत दीवानों की-सी हो रही थी।

ज़ैनब ने अपने दोनों हाथों से उसको झँझोडना शुरू कर दिया 'मैंने उसे मार डाला है मैंने उस हरामजादे को मार डाला है '

'किसको ?'

'उसी को, जो मुझसे इतनी हमदर्दी जताया करता था उसने मुझसे कहा था कि वह तुम्हें बचा लेगा वह झूठा था, दग़ाबाज था उसका दिल तवे की कालिख से भी ज़्यादा

काला था उसने मुझे उसने मुझे ' इसके आगे जैनब कुछ न कह सकी।

उसके दिमाग में बेशुमार खयालात आ गए और आपस में गड्डमड्ड हो गए 'तुम्हें तो उसने मार डाला था?'

ज़ैनब चीखी : 'नही मैंने उसे मार डाला है '

वह चद लम्हे खला[15] में देखता रहा, फिर उसने जैनब को हाथ से एक तरफ हटाया 'तुम उधर हो जाओ वह आ रहा है।'

'कौन?'

'वही डॉक्टर वही फरिश्ता '

वह उसकी चारपाई के करीब आया—उसके हाथ में सिरिंज थी।

वह मुसकराया : 'ले आए?'

उसने इस्बात[16] मे सिर हिलाया 'हाँ ले आया।'

उसने अपना लरज़ाँ बाज़ू उसकी तरफ बढ़ा दिया 'तो लगा दो।'

उसने सुई उसके बाज़ू म घोंप दी।

वह मर गया।

जैनब उसे झँझोडने लगी उठो उठो करीम-रहीम के अब्बा, उठो यह हस्पताल बहुत बुरी जगह है चलो घर चलें।

थोडी देर के बाद हस्पताल के अमले न जैनब को उसके खाविंद की लाश से बमुश्किल अलग किया।

1 मोटा, भारी, 2 नैन-नक्श, 3 भयानक, 4 ठडा, 5 डाटवाला गोल दरवाजा मस्जिद का वह धनुषाकार स्थान जहाँ पर खडा होकर इमाम नमाज पढ़ाता है, 6 अस्तित्व को विलीन कर देनेवाले कयामत के दिन, सबसे नमाज के विषय मे पूछताछ की जाएगी, 7 श्रद्धा मे माथा टिकाना, 8 मस्जिद मे निर्मित तीन सीढ़ियो का वह छोटा चबूतरा, जहाँ पर खडे होकर इमाम धर्मोपदेश देता है, 9 जीवित ही कब्र मे दफन होना; 10 पार करके, 11 जर्जर, पुराना, 12 हड्डियो का, मास रहित, 13 बरी लहर, 14 मिलती-जुलती, 15 शून्य, 16 स्वीकारोक्ति।

फंदने

कोठी से मुलहिका[1] वसी व अरीज[2] बाग मे झाडियो के पीछे एक बिल्ली ने बच्चे दिए थे, जो बिल्ला खा गया था—फिर एक कुतिया ने बच्चे दिए थे, जो बडे-बड़े हो गए थे और दिन-रात कोठी के अदर-बाहर भौकते और गदगी बखेरते रहते थे, उनको जहर दे दिया गया था; एक-एक करके सब मर गए थे, उनकी माँ भी; उनका बाप मालूम नही कहाँ था, वह होता तो उसकी मौत भी यकीनी थी।

जाने कितने बरस गुजर चुके थे।

कोठी से मुलहिका[1] बाग की झाडियाँ सैकडो-हजारो मर्तबा कतरी-ब्यौंती, काटी-छाँटी जा चुकी थीं; कई बिल्लियो और कुत्तियों ने उनके पीछे बच्चे दिए थे, जिनका नामो-निशान भी न रहा था—उसकी अक्सर बद आदत मुर्गियाँ वहाँ अडे दिया करती थी, जिनको वह हर सुबह उठाकर अदर ले जाती थी।

उसी बाग मे किसी आदमी ने उसकी नौजवान मुलाजिमा को बडी बेदर्दी से कत्ल किया था—उसके गले में उसका फुदनोवाला सुर्ख रेशमी इजारबंद[3], जो उसने दो रोज पहले फेरीवाले से आठ आने मे खरीदा था, फँसा हुआ था; इस जोर से कातिल ने पेच दिए थे कि उसकी आँखे बाहर निकल आई थी—उसको देखकर उसे इतना तेज बुखार चढ़ा था कि वह बेहोश हो गई थी, और शायद अब तक बेहोश थी। लेकिन नही, ऐसा क्योंकर हो सकता था, इसलिए कि उस कत्ल के देर बाद मुर्गियो ने अडे, नही, बिल्लियो ने बच्चे दिए थे, और एक शादी हुई थी। एक कुतिया थी, जिसके गले मे लाल दुपट्टा था, मुकैशी झिलमिल-झिलमिल करता। उसकी आँखे बाहर निकली हुई नही थी, अदर धँसी हुई थी।

बाग मे बैंड बजा था—सुर्ख वर्दियोवाले सिपाही आए थे, जो रग-बिरगी मशके बगलो मे दबाए अजीब-अजीब आवाजे निकालते थे, उनकी वर्दियो के साथ कई फुदने लगे हुए थे, जो गिर-गिर पडते थे और जिन्हे उठा-उठाकर लोग अपने इजारबदो मे लगाते जाते थे—पर जब सुबह हुई थी तो उनका नामो-निशान तक नही था, सबको जहर दे दिया गया था।

दुल्हन को जाने क्या सूझी, कमबख्त ने झाड़ियो के पीछे नही, अपने बिस्तर पर सिर्फ एक बच्चा दिया, जो बडा गुल-गुथना लाल फुदना था—उसकी माँ मर गई; बाप भी; दोनो

को बच्चे ने मारा; उसका बाप मालूम नही कहाँ था; वह होता तो उसकी मौत भी दोनो के साथ हो जाती।

सुर्ख वर्दियोवाले सिपाही बडे-बडे फुदने लटकाए जाने कहाँ गायब हुए कि फिर न आए—बाग में बिल्ले घूमते थे, जो उसे घूरते थे, उसको छीछडो की भरी हुई टोकरी समझते थे, हालाँकि टोकरी में नारंगियाँ थी।

एक दिन उसने अपनी दो नारंगियाँ निकालकर आईने के सामने रख दी और उनके पीछे होकर उनको देखा, मगर वह नजर न आईं। उसने सोचा, छोटी हैं, मगर वह उसके सोचते-सोचते ही बडी हो गई और उसने रेशमी कपडे मे लपेटकर आतिशदान पर रख दी।

अब कुत्ते भौंकने लगे और नारंगियाँ फर्श पर लुढकने लगी, कोठी के हर फर्श पर उछली, हर कमरे में कूदी, और उछलती-कूदती बडे-बडे बागो मे भागने-दौडने लगी—कुत्ते उनमे खेलते और आपस मे लडते-झगडते रहते।

जाने क्या हुआ, उन कुत्तो मे दो जहर खाकर मर गए, जो बाकी बचे, वह उनकी अधेड उम्र की हट्टी-कट्टी मुलाजिमा खा गई—वह उस जवान मुलाजिमा की जगह आई थी, जिसको किसी आदमी ने कत्ल कर दिया था, गले में उसके ही फुंदनोंवाले इजारबद का फदा डालकर।

उसकी माँ थी, अधेड उम्र की मुलाजिमा से उम्र मे छ -सात बरस बडी; उसकी तरह हट्टी-कट्टी नही थी; हर रोज सुबह-शाम मोटर में सैर को जाती थी और उसकी बद आदत मुर्गियों की तरह दूर-दराज बागों मे झाडियो के पीछे अडे देती थी, उनको वह खुद उठा के लाती थी न ड्राइवर।

ऑमलेट बनाती थी, जिसके दाग कपडो पर पड जाते थे; सूख जाते तो उनको बाग मे झाडियो के पीछे फेंक देती थी, जहाँ से चीलें उठाकर ले जाती थीं।

एक दिन उसकी सहेली आई, पाकिस्तान मेल, मोटर नबर 9612 पी. एल।

बडी गर्मी थी—डैडी पहाड पर थे; मम्मी सैर करने गई हुई थी—पसीने छूट रहे थे।

उसने कमरे मे दाखिल होते ही अपना ब्लाउज उतारा और पंखे के नीचे खडी हो गई—उसके दूध उबले हुए थे, जो आहिस्ता-आहिस्ता ठडे हो गए, उसके दूध ठडे थे, जो आहिस्ता-आहिस्ता उबलने लगे, आखिर दोनो दूध हिल-हिल के कँगने हो गए और खट्टी लस्सी बन गए।

उस सहेली का बैंड बज गया—वह वर्दीवाले सिपाही फुदने नचाते न आए, उनकी जगह पीतल के बर्तन थे, छोटे और बडे, जिनसे आवाजें निकलती थीं, गरजदार और धीमी, धीमी और गरजदार।

वह सहेली जब फिर मिली तो उसने बताया कि वह बदल गई है—वह सचमुच बदल गई थी, उसके अब दो पेट थे; एक पुराना, दूसरा नया; एक के ऊपर दूसरा चढा हुआ था, उसके दूध फटे हुए थे।

फिर उसके भाई का बैंड बजा—अधेड़ उम्र की हट्टी-कट्टी मुलाजिमा बहुत

गोई—उसके भाई ने उसको बहुत दिलासा दिया—बेचारी को अपनी शादी याद आ गई थी।

रात भर उसके भाई और उसकी दुल्हन में लड़ाई होती रही—वह हँसता रहा, वह रोती रही।

सुबह हुई तो अधेड़ उम्र की हट्टी-कट्टी मुलाज़िमा उसके भाई को दिलासा देने के लिए अपने साथ ले गई।

सुबह ही दुल्हन को नहलाया गया—उसकी शलवार में उसका लाल फुंदनोंवाला इज़ारबंद पडा था; मालूम नही, वह दुल्हन के गले में क्यो न बाँधा गया था—उसकी आँखे बहुत मोटी थीं; अगर गला ज़ोर से घोटा जाता तो वह जिबह किए हुए बकरे की आँखो की तरह बाहर निकल आतीं और उसको बहुत तेज़ बुखार चढ़ जाता, मगर पहले बुख़ार तो अभी तक उतरे नही थे, हो सकता है, उतर गए हों और यह नया बुखार हो, जो धीरे-धीरे चढ़ रहा हो और उसको अभी तक होश न हो।

उनकी अधेड उम्र की हट्टी-कट्टी मुलाजिमा उसके भाई को दिलासा देती थी और उसकी माँ मोटर ड्राइवरी सीख रही थी—बाप होटल मे रहता था; कभी-कभी आता था और अपने लडके से मिलकर चला जाता था।

उसका भाई कभी-कभी अपनी दुल्हन को घर बुला लेता था—अधेड उम्र की हट्टी-कट्टी मुलाजिमा को हर दूसरे-तीसरे दिन कोई याद सताती थी तो रोना शुरू कर देती थी।

उसका भाई उसे दिलासा देता था, वह उसे पुचकारती थी—दुल्हन चली जाती थी।

फिर वह और दुल्हन भाभी, दोनो सैर को जाने लगी, सहेली भी, पाकिस्तान मेल, मोटर नबर 9612 पी एल।

वह सैर करते-करते अजता जा निकलती थीं, जहाँ तसवीरें बनाने का काम सिखाया जाता था—तसवीरें देखते-देखते तीनो तसवीरे बन जाती थी, रग ही रग; लाल, पीले, हरे, नीले, सबके-सब चीखनेवाले—उनको उन रगो का खालिक[4] चुप कराता था—उसके लबे-लबे बाल थे; सर्दियों और गर्मियो मे ओवरकोट पहनता था, अच्छी शक्लो-सूरत का था; अदर-बाहर हमेशा खडाऊँ इस्तेमाल करता था—रंगो को चुप कराने के बाद खुद चीख़ना शुरू कर देता था; उसको वह तीनो चुप कराती थी; वह चुप होता था तो वह तीनो चिल्लाने लगती थी।

तीनों अजंता मे मुर्जर्रिद[5] आर्ट के सैकडो नमूने बनाती रही।

एक की हर तसवीर में दो पेट होते थे, मुख्तलिफ रगों के।

दूसरी की तसवीरों में एक ही औरत होती थी, अधेड उम्र की हट्टी-कट्टी।

तीसरी की तसवीरों में फुंदने ही फुदने, इजारबदो के गुच्छे।

मुजर्रिद तसवीरे बनती रहीं, मगर तीनो के दूध सूखते रहे।

बडी गर्मी थी, इतनी कि तीनो पसीने मे शराबोर थी।

खस लगे कमरे के अंदर दाखिल होते ही तीनो ने अपने-अपने ब्लाउज उतारे और पखे के नीचे खडी हो गई, पखा चलता रहा, दूधो मे ठडक पैदा हुई न गर्मी।

उसकी मम्मी दूसरे कमरे में थी—ड्राइवर उसके बदन से मोबिल आयल पोंछ रहा था।

उसका डैडी होटल में था—लेडी स्टेनोग्राफर उसके माथे पर यू डी क्लोन मल रही थी।

वह पंखे के नीचे दुल्हन भाभी और सहेली के साथ खडी थी—उसके दूध न ठंडे हो रहे थे न गर्म।

एक दिन उसका भी बैंड बज गया।

उजाड बाग फिर बारौनक हो गया—गमलों और दरवाजो की आराइश अजंता के रंगो के खालिक ने की; बडी-बडी गहरी लिपस्टिके उसके चीखते हुए रंग देखकर उड गईं, एक जो ज्यादा सियाही माइल थी, इतनी उडी कि वहीं गिर पडी और उसकी शागिर्द हो गई—उसके उरूसी लिबास का डिजाइन भी उसने तैयार किया; उसने हज़ारो समतें[6] पैदा कर दी : ऐन सामने से देखो तो मुख्तलिफ़ रंगों के इजारबदों का बंडल, ज़रा इधर हट जाओ तो फलो की टोकरी, एक तरफ हो जाओ तो खिडकी पर पडा फुलकारी का परदा; अकब[7] में चले जाओ तो कुचले हुए तरबूजों का ढेर, जरा ज़ाविया बदलकर देखो तो टमाटो सॉस से भरा हुआ मर्तबान, ऊपर से देखो तो यगाना आर्ट, नीचे से देखो तो मीराजी की मुबहम[8] शाइरी।

उरूसी लिबास मे फनशनास[9] आँखो ने उसको देखा तो अश-अश कर उठी।

दुल्हा इस कदर मुतास्सिर[10] हुआ कि शादी के दूसरे रोज़ ही उसने तहैया[11] कर लिया कि वह मुजर्रिद आर्टिस्ट बनेगा—वह अपनी दुल्हन के साथ, उसके साथ, अजंता गया और वही का हो रहा और वही उसको मालूम हुआ कि उसकी शादी हो चुकी है और उसकी दुल्हन वही गहरे रंग की लिपस्टिक है जो अजंता की दूसरी लिपस्टिकों के मुकाबले मे ज्यादा सुर्खी माइल है- शुरू-शुरू में चंद महीनों तक उसके दुल्हा को उससे और मुजर्रिद आर्ट से दिलचस्पी रही, लेकिन जब लिपस्टिको की भीड़भाड़ में अजंता खो गया और रंगो के खालिक की कहीं से भी सुन-गुन न मिली तो उसके दुल्हा ने नमक का कारोबार शुरू कर दिया, जो बहुत नफाबख्श साबित हुआ।

नमक के रंगीन कारोबार मे उसके दुल्हा की मुलाकात एक कत्थई नमक की डली से हो गई, जिसके दूध सूखे हुए नहीं थे और उसको पसंद आ गए, बैंड न बजा, लेकिन शादी हो गई।

उसने अपने ब्रुश उठाए और कोठी में लौट आई।

वह नाचाक़ी[12] पहले तो उसके लिए तल्ख़ी का मूजिब[13] हुई, लेकिन बाद में एक अजीबो-गरीब मिठास में तब्दील हो गई—उसकी सहेली पाकिस्तान मेल, मोटर नंबर 9612 पी. एल. ने, जो दूसरा शौहर तब्दील करने के बाद सारे योरोप का चक्कर लगा आई थी और अब दिक़ की मरीज थी, उस मिठास को क्यूबिक[14] आर्ट में पेंट किया : साफ़-शफाफ़ चीनी के बेशुमार क्यूब थे, जो थोहर के पौदों के दरमियान इस अंदाज़ से ऊपर-तले रखे थे कि दो शक्लें उभर रही थीं और उन पर शहद की मक्खियाँ बैठी रस चूस रही थीं।

फिर उसकी सहेली ने ज़हर खाकर ख़ुदकुशी कर ली—जब उसको यह अलमनाक ख़बर मिली तो उसे बहुत तेज़ बुख़ार चढ़ गया; मालूम नहीं, वह बुख़ार नया था, या वही

पुराना जो अब तक उतरा नहीं था।

वह तप रही थी और उसका बाप यू डी क्लोन में था; जहाँ उसका होटल उसकी लेडी स्टेनोग्राफ़र का सिर सहलाता था।

उसकी मम्मी ने कोठी का सारा हिसाब-किताब अधेड़ उम्र की हट्टी-कट्टी मुलाजिमा के हवाले कर दिया था—अब उसको ड्राइविंग आ गई थी, मगर वह बहुत बीमार हो गई थी; फिर भी उसको ड्राइवर के बिन माँ के पिल्ले का बहुत ख़याल था, वह उसको अपना मोबिल आयल पिलाती थी।

उसकी दुल्हन भाभी और उसके भाई की ज़िंदगी बहुत अधेड़ और हट्टी-कट्टी हो गई थी; दोनो आपस में बडे प्यार से मिलते थे—अचानक एक रात, जबकि अधेड़ उम्र की हट्टी-कट्टी मुलाजिमा के साथ उसका भाई हिसाब-किताब कर रहा था, उसकी दुल्हन भाभी नमूदार हुई; वह मुजर्रिद थी; उसके हाथ में क़लम था न ब्रुश, लेकिन उसने उन दोनों का हिसाब साफ़ कर दिया।

सुबह कमरे मे से जमे हुए लहू के दो बड़े-बडे फुदने निकले, जो उसकी दुल्हन भाभी के गले मे बाँध दिए गए।

उसे महसूस हुआ, उसका बुख़ार क़दरे उतर गया है—अपने दुल्हा से नाचाकी के बायस उसकी जिंदगी तल्ख बन जाने के बाद एक अजीबो-गरीब मिठास मे तब्दील हो गई थी, जिसे उसकी सहेली पाकिस्तान मेल ने क्यूबिक आर्ट में पेंट किया था—उसने उस मिठास को फिर थोडा-सा तल्ख़ बनाने की कोशिश की; उसने शराब पीना शुरू कर दी, मगर तल्ख़ी थी कि पास न फटकती थी; शायद शराब की मिक़दार कम थी; उसने मिक़दार बढ़ा दी, हत्ता के वह उसमें डुबकियाँ लगाने लगी—लोग समझने लगे कि वह अब गर्क हुई, अब गर्क हुई मगर वह फिर सतह पर उभर आती, मुँह मे शराब पोंछती हुई और कहक़हे लगाती हुई।

सुबह को जब वह उठती तो उसे महसूस होता, रात भर उसके जिस्म का ज़र्रा-जर्रा धाडे मार-मारकर रोता रहा है—उसके वह सब बच्चे जो पैदा हो सकते थे, उन कब्रों में जो उनके लिए बन सकती थी, उस दूध के लिए जो उनका हो सकता था, बिलक-बिलककर रो रहे हैं—मगर उसके दूध कहाँ थे, वह तो जंगली बिल्ले पी चुके थे।

वह और ज़्यादा पीने लगी कि अथाह समंदर में डूब जाए, मगर उसकी ख़्वाहिश पूरी नही होती थी—वह जहीन थी, पढ़ी-लिखी थी; जिसी मौज़ूआन[15] पर बगैर किसी तसन्नो[16] के बेतकल्लुफ़ गुफ्तगू करती थी, मर्दो के साथ जिस्मानी रिश्ता कायम करने में कोई मुजायका[17] नहीं समझती थी—मगर फिर भी कभी-कभी रात की तन्हाई मे उसका जी चाहता था कि अपनी किसी बद आदत मुर्गी की तरह झाडियों के पीछे जाए और एक अंडा दे आए।

जब वह सिर्फ़ हड्डियों का ढाँचा रह गई और खोखली हो गई तो लोग उससे दूर रहने लगे—वह सब समझती थी; वह किसी के पीछे न भागी और अकेली रहने लगी—सिगरेट पर सिगरेट फूँक्ती, बोतलों की बोतलें शराब पीती और जाने क्या-क्या सोचती रहती—रात को

बहुत कम सोती; बस कोठी के इर्द-गिर्द घूमती रहती।

सामने सर्वेंट क्वार्टर में ड्राइवर का बिन माँ का बच्चा मोबिल आयल के लिए रोता रहता था, जो उसकी माँ के पास ख़त्म हो गया था।

ड्राइवर ने एक्सीडेंट मार दिया था—मोटर गेराज में, ड्राइवर मोरचरी[18] में और उसकी माँ हस्पताल में पडी थी, जहाँ उसकी एक टाँग काटी जा चुकी थी और दूसरी काटी जानेवाली थी।

वह कभी-कभी सर्वेंट क्वार्टर के अंदर झाँककर देखती तो उसको महसूस होता, उसके दूधों की तलछट में हल्की-सी लरज़िश पैदा हुई है, मगर लरज़िशज़दा बदज़ाइका तलछट से मुसलसल[19] रोते होते बच्चे के सूखे होंठ तर न हो सकते थे।

उसकी माँ की दूसरी टाँग काटी गई और वह मर गई—उसका बाप यू डी क्लोन ही मे रहा।

क्वार्टर मे बच्चा सूख गया—बिन माँ के बच्चे की माँ पहले ही हस्पताल में मर चुकी थी।

अब वह बिलकुल तन्हा थी; कोई बोझ, सिवाय उसके ख़यालों के, बाक़ी न रहा था।

वह चाहती थी कि आहिस्ता-आहिस्ता उसे ख़यालों से भी छुटकारा मिल जाए।

कभी-कभार जब वह महसूस करती कि दरवाज़े पर दस्तक हुई है तो वह अदर से चिल्ला उठती 'चले जाओ जो कोई भी तुम हो, चले जाओ मैं किसी से मिलना नही चाहती '

सेफ में उसको अपनी माँ के बेशुमार कीमती ज़ेवरात मिले, उसके अपने भी थे, जिनसे उसको कोई रगबत[20] न थी--अब वह रात को घंटो आईने के सामने नंगी बैठकर वह तमाम जेवरात अपने बदन पर सजाती और शराब पीकर कनसुरी[21] आवाज में फहश गाने गाती—वीराने की उजाड़ कोठी में उसकी आवाज आज़ाद थी।

अपने जिस्म को तो वह कई तरीक़ो से नंगा कर चुकी थी, अब वह चाहती थी कि अपनी रूह को भी नंगा कर दे, मगर इस अमल में वह ज़बर्दस्त हिजाब[22] महसूस करती थी, और इस हिजाब को दबाने के लिए सिर्फ़ एक ही तरीक़ा उसकी समझ में आता था कि पिए और ख़ूब पिए और इस हालत में अपने नंगे बदन से मदद ले—अलमिया[23] यह था कि उसका बदन आख़िरी हद तक नंगा होकर सतरपोश[24] हो गया था।

एक संदूकचे में उसको पेंटिंग का सामान मिला, जो एक अर्से से बंद पड़ा था—वह तसवीरें बना-बनाकर बहुत पहले थक चुकी थी—अब उसने सब रंग निकाले, तमाम ब्रुश धो-धाकर एक तरफ रखे और आईने के सामने नंगी खड़ी हो गई।

उसने अपने नंगे बदन पर ख़द्दोख़ाल[25] बनाने शुरू कर दिए—उसकी यह कोशिश अपने वुजूद को मुकम्मल तौर पर उरियाँ[26] करने की थी।

वह अपने बदन का सिर्फ़ सामने का हिस्सा ही पेंट कर सकती थी—दिन भर वह, नंगे कैनवस पर उसका बदन था, बिन खाए, बिन पिए, आईने के सामने खड़ी, मुख़्तलिफ़ रंग जमाती और टेढ़े-बंगे ख़ुतूत बनाती रही—उसके ब्रश में ऐतिमाद[27] था।

आधी रात के क़रीब उसने जरा पीछे हटकर आईने में अपना बग़ौर जायज़ा लिया और इत्मीनान का साँस खींचा—इसके बाद उसने तमाम ज़ेवरात एक-एक करके अपने रंगों से लुथड़े हुए बदन पर सजाए और आईने में एक बार फिर ग़ौर से देखा।

अभी वह रंगो से लुथडे हुए बदन पर सजे हुए ज़ेवरात के बारे में कुछ सोच भी न सकी थी कि एकदम एक आहट-सी हुई।

उसने पलटकर देखा।

पहले पल उसने देखा, कोई हाथ मे छुरा लिए, ठाटा बाँधे खड़ा है।

दूसरे पल उसने सुना और देखा, वह ठाटे में चीख़ा, छुरा उसके हाथ से गिर पडा, वह अफ़रा-तफ़री के आलम में इधर-उधर लपका और भाग निकला।

फिर जाने क्या हुआ कि वह उसके पीछे भागी, चीख़ती हुई, पुकारती हुई.

'ठहरो ठहर जाओ मैं तुमसे कुछ नहीं कहूँगी ठहरो '

मगर उसने, जो न जाने क्या चुराने आया था, उसकी एक न सुनी और दीवार फाँदकर गायब हो गया।

वह मायूस होकर वापिस आ गई।

दरवाज़े की दहलीज के पास उसका ख़ंजर पड़ा था।

उसने खंजर उठा लिया और कमरे मे चली गई।

अचानक उसकी नजरें आईने से दो-चार हुई—जहाँ उसका दिल था, वहाँ म्याननुमा चमडे का खोल बँधा हुआ था।

उसने खोल पर खंजर रखकर देखा—खोल बहुत छोटा था।

उसने ख़ंजर फेंक दिया और बोतल मे से शराब के चार-पाँच बडे घूँट पीकर इधर-उधर टहलने लगी—वह कई बोतले पी चुकी थी और खाया कुछ भी न था।

देर तक टहलते रहने के बाद वह फिर आईने के सामने आई—उसके गले में जेवरात तले इज़ारबंदनुमा गुलूबंद था, जिसके फुंदने बड़े-बडे थे।

दफ़अतन उसको महसूस हुआ कि गुलूबंद तंग होने लगा है और आहिस्ता-आहिस्ता उसके गले के अंदर धँसने लगा है।

वह ख़ामोश खड़ी आईने मे आँखें गाडे रही, जो बाहर निकलने लगी थीं।

थोड़ी ही देर मे उसके चेहरे की तमाम रगें फूल गईं।

फिर एकदम उसने चीख मारी और औंधे मुँह फर्श पर गिर पड़ी।

---

1 साथ लगे, मलग्न, 2 लबे-चौड़े 3 कमरबद, 4. सृष्टिकर्त्ता, रचना करनेवाला, 5 अमूर्त; 6 आकार, शक्लें, 7. पीछे, 8 अस्पष्ट; 9 कला पारखी; 10. प्रभावित; 11 दृढ़ निश्चय, पक्का इरादा, 12 मनमुटाव, रोग, 13 कारण, हेतु, 14 घनाकार; 15 विषयो, पहलुओ, 16 मकोच, 17 एतराज़, आपत्ति; 18 मुर्दे रखने की जगह, 19 निरंतर, लगातार, 20 लगाव, आकर्षण, 21 बगैर लय या तर्ज के, 22 मकोच, शर्म; 23 दृष्टांत, 24 छुपाना, ढकना; 25 नैन-नक्श; 26. नगा; 27 भरोसा।

बराए नाम

Read in order to live.
Gustave Flaubert

तमाशा

डार्लिंग

आँखें
वो लड़की

क़ीमे की बजाय बोटियाँ

एक भाई एक वाइज़

औलाद

अंजामबख़ैर

बिजली पहलवान

बराये-नाम

"मैं इंशाअल्लाह थोड़े ही दिनों मे मर जाऊँगा। अगर ख़ुद नहीं मरूँगा तो ख़ुद-ब-ख़ुद मर जाऊँगा। क्योंकि जहाँ आटा रुपए का पौने-तीन सेर मिलता हो, वहाँ बड़ा ही बेग़ैरत इंसान होगा जो ज़िंदगी के रवायती (पारंपरिक) चार दिन गुज़ार सकें।"

मंटो

मंटो ने अपने सामान्य मानवीय जीवन और सृजनात्मक जीवन की सीमाएँ आपस में मिलाकर जीवित रहने का संघर्ष किया। यह उसका निजी निर्णय और कर्म था। मगर इस संघर्ष का परिणाम यह भी हुआ कि मटो के साहित्यिक व्यक्तित्व को उसके सामान्य मानव-व्यक्तित्व के कई कष्ट झेलने पड़े।

जल्दबाज़ी मे लिखी हुई कहानियाँ, किसी सच्ची सृजनात्मक प्रेरणा के बिना लिखी हुई कहानियाँ, ऐसी कहानियाँ जिनका उद्देश्य न तो किसी सृजनात्मक अनुभव की अभिव्यक्ति था और न ही आंतरिक दबाव का परिणाम—मंटो की साहित्यिक पूँजी में इस ढर्रे की कहानियाँ भी शामिल हैं।

इसमें शक नहीं कि बड़े-से-बडा साहित्यकार भी हमेशा एक ही स्तर की रचनाएँ लिखने में समर्थ नहीं होता, लेकिन अधिकांश बड़े लिखनेवाले कभी-कभी यह जाने बिना बुरा लिखते हैं कि वे बुरा लिख रहे हैं। इसके विपरीत मंटो अपने साहित्यिक जीवन के किसी भी चरण में और सक्रियता के किसी भी क्षण में अपने कर्म की वास्तविकता से अपरिचित नहीं रहा। इसका कारण यह है कि मंटो के यहाँ अपनी मानसिक, सृजनात्मक और सामान्य मानवीय गतिविधियों की वास्तविकता की अनुभूति हमेशा जीवित रही। ऐसी रचनाएँ जो जीवन की साधारण आवश्यकताओं के वश होकर लिखी गईं और जिनके पीछे किसी आंतरिक दबाव का संकेत नहीं मिलता, उन्हें हम केवल नाम-मात्र के लिए मंटो की कहानियाँ कह सकते हैं। इस वर्ग में आनेवाली कहानियों के विषय चाहे कितने ही बड़े और गहरे क्यों न हों, ये कहानियाँ छोटी हैं—इन कहानियों में मंटो का चिंतन और अनुभव तो परिपक्व हैं, मगर शैली और अभिव्यक्ति की पकड़ ख़ासी दोषपूर्ण और कमज़ोर है।

इस भाग में एक कहानी ऐसी भी शामिल है जिसे हम मंटो की सृजनात्मक अनभ्यस्तता और कलात्मक अपरिपक्वता के चरण की यादगार कह सकते हैं, और वह कहानी है 'तमाशा', जो उसकी पहली कहानी है।

मंटो के बारे में एक बात ध्यान में रखनी आवश्यक है, और वह यह है कि पूरे मंटो से परिचय के लिए उसकी सफल और असफल, तमाम रचनाओं को सामने रखना होगा।

मंटो दरवेश नहीं था, मगर अस्तित्व की एकता में उसका विश्वास इतना पक्का था और उसके मानव-प्रेम के अर्थ मे इतनी व्यापकता थी कि उसमें हर मानवीय अनुभव की समाई संभव थी। अपनी रोज़मर्रा की ज़रूरतों के कारण मंटो ने कई दर्जन कहानियाँ केवल एक-एक दिन के अंतर से लिखीं और कभी-कभी तो एकदम क़लम रखे बिना लिखीं। लेकिन इन कहानियों में भी हमारा सामना ज़िंदगी की किसी-न-किसी बुनियादी सच्चाई से होता है। इन कहानियों के माध्यम से भी मटो के समग्र व्यक्तित्व, चिंतन और अनुभूतियो की दुनिया के किसी-न-किसी कोने तक हमारी पहुँच अवश्य होती है। जिस तरह मंटो के बोध की व्यापकता अँधेरे और उजाले को एक ही तरह से स्वीकार करती है, उस तरह मंटो की हर रचना, वह अच्छी हो या बुरी. मटो को समझने में हमारी सहायक होती है। मंटो के किसी भी सृजनात्मक पक्ष की अनदेखी करना, मंटो के अपने व्यक्तित्व की समग्रता के किसी-न-किसी अश से आँखें फेर लेने के बराबर होगा।

तमाशा

दो-तीन रोज से तैयारे[1] सियाह उकाबों की तरह पर फैलाए खामोश फजा मे मँडला रहे थे, जैसे वह किसी शिकार की जुस्तजू[2] में हो। सुर्ख आँधियाँ वक्तन-फवक्तन किसी आनेवाले खूनी हादिसे का पैगाम ला रही थी। सुनसान बाजारों मे मुसल्लह[3] पुलिस की गश्त एक अजीब हैबतनाक[4] समाँ पेश कर रही थी। वह बाजार जो आज से कुछ अर्से पहले लोगों के हुजूम से पुर हुआ करते थे, अब किसी नामालूम खौफ की वजह से सूने पडे थे।

शहर की फजा पर एक पुरइसरार खामोशी मुसल्लत[5] थी—भयानक खौफ राज कर रहा था।

खालिद घर की खामोश और पुरसुकून फजा से सहमा हुआ अपने वालिद के करीब बैठा बाते कर रहा था "अब्बा, आप मुझे स्कूल क्यो नही जाने देते?"

"बेटा, आज स्कूल मे छुट्टी है।"

"मास्टर साहब ने तो हमे बतलाया ही नही वह तो कल कह रहे थे कि जो लड़का आज स्कूल का काम खत्म करके अपनी कॉपी न दिखाएगा, उसे सख्त सजा दी जाएगी।"

"वह इत्तिला देनी भूल गए होगे।"

"आपके दफ्तर मे भी छुट्टी है?"

"हाँ, हमारा दफ्तर भी आज बद है।"

"चलो अच्छा हुआ आज मै आपसे कोई अच्छी-सी कहानी सुनूँगा।"

यह बाते हो रही थी कि तीन-चार तैयारे चीखते हुए उनके सिर से गुजर गए—खालिद उनको देखकर बहुत खौफजदा हुआ। वह दो-तीन रोज से उन तैयारो की परवाज को बगौर देख रहा था मगर किसी नतीजे पर न पहुँच सका था। वह हैरान था कि यह जहाज सारा दिन धूप मे क्यो चक्कर लगाते रहते हैं।

आखिर उनकी रोजाना नकलो-हरकत से सख्त तग आकर वह बोला : "अब्बा, मुझे उन जहाजो से सख्त खौफ मालूम हो रहा है आप इनके चलानेवालो से कह दे कि वह हमारे घर पर से न गुजरा करे।"

"खौफ ? कही पागल तो नही हो गए खालिद?"

"अब्बा, यह जहाज बहुत खौफनाक हैं आप नहीं जानते, यह किसी न किसी दिन हमारे घर पर गोला फेक देगे।"

"यह तुमने किससे सुना ?"

"कल सुबह मामा ही तो अम्मीजान से बातें कर रही थी कि इन जहाजवालो के पास बहुत-से गोले हैं अगर इन्होने इस क़िस्म की शरारत की तो याद रखे कि मेरे पास भी एक बदूक है, वही जो आपने मुझे पिछली ईद पर लाकर दी थी।"

"मामा तो पागल है मैं उससे दरयाफ्त करूँगा कि वह ऐसी बाते क्यो किया करती है इत्मीनान रखो, वह ऐसी बाते कभी नही करेगी।" खालिद के अब्बा ने अपने लडके की गैर मामूली जसारत[6] पर हँसते हुए कहा।

अपने वालिद से रुख़्सत होकर ख़ालिद अपने कमरे मे चला गया और हवाई बंदूक़ निकालकर निशाना लगाने की मश्क करने लगा, ताकि उस रोज जब कि हवाई जहाजवाले गोले फेंकें तो उसका निशाना खता न जाए और वह पूरी तरह इंतिकाम ले सके—काश, यही नन्हा इंतिक़ाम हर शख़्स मे तकसीम हो जाए।

इसी अर्से में जबकि एक बच्चा अपने इंतिक़ाम लेने की फिक्र मे डूबा हुआ तरह-तरह के मसूबे बाँध रहा था, घर के दूसरे हिस्से मे खालिद का अब्बा अपनी बीवी के पास बैठा हुआ मामा को हिदायत कर रहा था कि वह आइदा घर मे इस किस्म की कोई बात न करने पाए जिससे खालिद को दहशत हो। मामा और बीवी को इस किस्म की मजीद[7] हिदायत देकर वह अभी बडे दरवाजे से बाहर जा ही रहा था कि खादिम एक दहशतनाक खबर लाया कि शहर के लोग बादशाह के मना करने पर भी शाम के करीब एक आम जलसा करनेवाले हैं और यह तवक्को की जाती है कि कोई न कोई वाका जरूर पेश होकर रहेगा।

खालिद का अब्बा यह सुनकर बहुत खौफजदा हुआ—अब उसे यकीन हो गया कि फजा का गैर मामूली सुकून, तैयारो की परवाज़, बाजारो मे मुसल्लह पुलिस की गश्त, लोगो के चेहरो पर उदासी का आलम और खूनी आँधियो की आमद किसी खौफनाक हादिसे की पेशखेमा[8] हैं।

'वह हादिसा किस नौइयत[9] का होगा ?'

यह खालिद के अब्बा की तरह किसी को भी मालूम न था, मगर फिर भी सारा शहर किसी नामालूम खौफ मे लिपटा हुआ था—बाहर जाने के खयाल को मुलतवी करके खालिद का अब्बा कपडे तब्दील करने भी न पाया था कि तैयारों की आवाज ने उसे खौफजदा कर दिया। उसे ऐसा मालूम हो रहा था जैसे सैकडो इसान हमआहग[10] आवाज में दर्द की शिद्दत[11] से कराह रहे हैं।

खालिद तैयारों का शोरो-गुल सुनकर अपनी हवाई बदूक सँभालता हुआ कमरे से बाहर दौड आया और उन्हे गौर से देखने लगा, ताकि वह जिस वक्त गोला फेकने लगे तो वह अपनी हवाई बदूक की मदद से उन्हे नीचे गिरा दे।

उस वक्त सात साल के बच्चे के चेहरे पर आहनी इरादे और कवी इस्तिकलाल[12] के आसार नुमायाँ थे जो कम हकीक़त बदूक का खिलौना हाथ मे थामे जैसे एक जरी सिपाही को शर्मिंदा कर रहा हो। मालूम हो रहा था कि वह अब उस चीज को, जो उसे अर्से से खौफज़दा कर रही थी, मिटाने पर तुला हुआ है।